

प्रकाशक—

भीमन्त छेठ सिद्धाचार्य सहस्रीचन्द्र,

वैद्य-साहित्योद्धारक-पत्र-व्यवस्थापक

बनारसी ( बंगल )



छापक—

टी. एच् पाटील

प्रिन्टर

बनारसी प्रिंटिंग प्रेस, बनारसी.

# THE ŚATKHANDĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

---

VOL VIII

BANDHA-SWAMITVA-VICAYA

*Edited*

*with introduction translation, indexes and notes*

By

Dr HIRALAL JAIN M. A., LL. B., D. Litt.

C. P. Educational Service, Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur

---

*ASSISTED BY*

Pandit Balchandra Siddhanta Shastri.

*with the cooperation of*

Pandit DEVAKINANDAN  
Siddhanta Shastri

\*

Dr A. N. UPADHYE  
M. A., D. Litt.

*Published by*

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra  
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya,  
AMRAOTI (Berar).

---

1947

Price rupees ten only

---

प्रकाशक—

भीमन्त छेठ सिताबराय सहसीचन्द्र,

बैन-छादित्पेट्टारक-कड सर्पाछम

बामरावती ( बर )



मुद्रक—

टी. एम् पाटील

मैत्र

सारावती प्रिंटिंग प्रेस, बामरावती.

10

# THE ŚATKHANDĀGAMA

OF  
PUṢPADANTA AND BHŪTABALI  
WITH  
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VIRASENA

---

## VOL VIII BANDHA-SWAMITVA-VICAYA

*Edited*  
*with introduction translation indexes and notes*

*By*  
Dr. HIRALAL JAIN M. A., LL. B., D. Litt.,  
C. P. Educational Service, Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur

---

*ASSISTED BY*  
Pandit Balchandra Siddhanta Shastri.

*with the cooperation of*  
Pandit DEVAKINANDAN                      Dr. A. N. UPADHYE  
Siddhanta Shastri                      M. A., D. Litt.

*Published by*  
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,  
Jain Sahitya Uddharakī Fond Haryālaya,  
AMBAOTI (Berar).

---

1947

Price rupees ten only

---



*Published by—*

**Shrimant Seth Shitalpral Laxmichandra,**

**Jaina Sahitya Uddhakar Prasad Karyālaya.**

**AMRAOTI [ Berar ].**



*Printed by—*

**T. M. Patil, Manager**

**Saraswati Printing Press,**

**AMRAOTI ( Berar ).**

# विषय-सूची



	पृष्ठ
१ प्रारम्भ ...	१
१ प्रस्तावना Introduction	
१ विवरणीय ...	१
२ वक्ष्यनिर्वाणीय विवरणीय ...	९
३ छन्द ...	१७
२ मूल, अनुवाद और विषय-वर्णन-विषय	१-३०८
१ शेषी अ ग व र नि र ...	१
२ शेषी " " ...	११
३ दीप्ति	
१ अक्षर-विवरणीय-वर्णन ...	१
२ अक्षर-वर्णन-वर्णन ...	२१
३ अक्षर-विवरणीय ...	२
४ अक्षर-वर्णन ...	२२
५ अक्षर-विवरणीय ...	२



## प्राक्-कथन



बट्टकम्पागम सारतमै माग हुरगमके प्रकाशित होनेके दो वर्ष पश्चात् यह  
 आठवें माग बन्धस्वामित्व-विषय पाठनोंके साथ पढ़ाया गया है । इस मागके  
 साथ बट्टकम्पागमके प्रथम तीन कण्ड पूर्णतः बिदाससरके सम्मुख उपस्थित हो  
 गये । कर्मब, मुद्रण व व्यवस्थादि सम्बन्धी अनेक कठिनाइयों व असुविधाओंके  
 होते हुए भी यह कार्य गतिशील बना ही रहा है, इसका जेय प्रबन्धमात्रके  
 संस्थापक श्रीमन्त सेठजी व अन्य अधिकारी, भेरे सहयोगी व सहचरजी साथी  
 तथा सत्कवी प्रेसके मैनेजर श्रीकुल टो एम्, पाटीलको है जो इस कार्यके विशेष  
 कष्टों और कष्टोंके साथ निपटते जा रहे हैं । इन सबका मैं इससे अनुगृहीत हूँ ।  
 जहाँके सहयोगके कारण आगेका कार्य भी समुचित रूपसे चलाया होगा, ऐसा  
 आशा है । नवें मागका मुद्रण प्रारम्भ हो गया है ।

**प्रस्तावना**

# INTRODUCTION

---

The present volume contains the complete third part ( Khanda ) of the *Satkhandagama*. It is called *Bandha-samitta vicaaya* which means Quest of those who bind the Karmas. Out of the 148 varieties of Karmas, it is only 120 that are capable of being produced directly by the soul. The author of the *Sutras* has mentioned, in the form of questions and answers, the spiritual stages ( *Gunasthanas* ) and the detailed conditions of life and existence ( *Marganasthanas* ) in which specified Karmas may be forged. Forty-two *Sutras* are devoted to the *Gunasthana* treatment, and the rest 282 to the *Margana-sthana*. The commentator has enlarged the scope of the treatment of the subject by raising twentythree questions and answering them in relation to all the Karmas. In this way good many details about the Karma Siddhanta have been exposed and the whole work is very important for a thorough study of Jain Philosophy.

---

## विषय-परिचय

इस खण्डका नाम बन्धस्वामित्व-विषय है, जिसका अर्थ है बन्धके स्वामित्वका विषय अर्थात् विचारना, धीमासा या परीक्षा। तदनुसार यहाँ यह विवेचन किया गया है कि कौनसा बन्धकम्ब किस किस गुणस्थानमें व मार्गास्थानमें सम्मल है। इस खण्डकी उत्पत्ति इस प्रकार बताई गई है —

इति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें छठवें अनुयोगद्वारका नाम बन्धन है। बन्धनके चार भेद हैं—बन्ध, बन्धन, बन्धनीय और बन्धविधान। बन्धविधान चार प्रकारका है—प्रकृति, स्थिति, अनुमाग और प्रवेश। इनमें प्रकृतिबन्ध दो प्रकारका है—मूल प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध। सत्प्रत्ययणा पृष्ठ १२७ के अनुसार उत्तर प्रकृतिबन्ध भी दो प्रकारका है, एकैकोत्तरप्रकृतिबन्ध और अव्योभातुत्तरप्रकृतिबन्ध। एकैकोत्तरप्रकृतिबन्धके समुत्पत्तिनादि चौबीस अनुयोगद्वार हैं जिनमें बारहवाँ अनुयोगद्वार बन्धस्वामित्व-विषय है।

इस खण्डमें ३२४ सूत्र हैं। प्रथम ४२ सूत्रोंमें बंध अर्थात् केवल गुणस्थानानुसार प्रत्ययण है, और शेष सूत्रोंमें आदेश अर्थात् मार्गानुसार गुणस्थानोंका प्रत्ययण किया गया है। सूत्रोंमें प्रभोक्त कथसे केवल यह बताया गया है कि कौन कौन प्रकृतिवर्ग कितने कितने गुण स्थानोंमें बन्धसे प्राप्त होती हैं। किन्तु बन्धानुसारने सूत्रोंको देशामर्शक मानकर बन्धमुत्पत्तेद आदि सन्तन्त्री तैत्तिरीय प्रश्न और ठठारे हैं और उनका समाधान करके बन्धोदयमुत्पत्तेद, स्थोदय-परोदय, सन्तन्त्र-निरुत्तर, स्रज्जय अस्त्यय, गति-संयोग व गति-स्थानिध, बन्धाग्राम, बन्ध-मुत्पत्तिस्थान, सान्नि अनादि व ध्रुव-अध्रुव बन्धोंकी व्यवस्थाका स्पष्टीकरण कर दिया है, जिससे विषय सर्वांगपूर्ण प्रकटित हो गया है। इस प्रत्ययणाकी कुछ विशेष व्यवस्थायें इस प्रकार हैं—

सन्तन्त्रबन्धी—एक सप्प बधकर द्वितीय समयमें त्रिनका बन्ध विहाय हो जाता है वे सन्तन्त्रबन्धी प्रकटित हैं। वे ३४ हैं—असाद्यवेनीय, सौमि, मृत्सकवेन, अरति, सोन, मरुतमि, ऐकेन्द्रियादि ४ जाति, समबन्धप्रसंस्करणको छोड़ दोन ५ सरवान, बर्धर्मनायक सहननरो छोड़ दोन ५ सहनन, नरकगयालुपुत्री, आत्मान, उद्योग, अग्रशस्त्रविहायोगति, स्वाध्या, सूत्र, अर्पण, साधारणशरीर, करिवा, अग्रुम, दुर्मग, दुस्तर, अनारिय और अपराधीनि।

निरन्तरबन्धी — जो प्रकृतिषु जगत्पक्षे भी कर्तृगुह्यं कदा तक निरन्तर रूपसे बँसी है वे निरन्तरबन्धी हैं। वे ५४ हैं — धुक्कभी ४७ (देखिये पृ. ३), आयु ४, तीक्ष्ण, आहारकक्षीर और आहारकक्षीरगोपांग।

सान्तर-निरन्तरबन्धी — जो जगत्पक्षे एक समय और उत्कर्षत एक समयसे लेकर कर्तृगुह्यंके आगे भी बँसी जाती हैं वे सान्तर-निरन्तरबन्धी प्रकृतिषु हैं। वे १२ हैं — सात्यकेदनीय पुरुषकेर हात्य, रति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, गणेश्वरिणी, वीरारिः-शरीर, वैदिकिबन्धीर, समचतुरकसत्त्वान औरारिकक्षीरगोपांग, वैदिकिबन्धीरगोपांग, बर्धन-रहन्त, तिर्यग्गत्यान्तुर्नी, मनुष्यगत्यान्तुर्नी देवगत्यान्तुर्नी परात्त, उच्छ्रयस प्रशस्तधित्वोगति, प्रस, बन्धर, पर्याप्त, प्रत्येकक्षीर, तिर, धुम धुमग, सुस्तर आदेय, यस्त्वर्ति, नीचगोन और कचगोन।

गतिसंयुक्त — प्रकृति उचरते यह बताया गया है कि विवक्षित प्रकृतिके बन्धके साथ बार गतियोंमें कौनसी गतियोंका सम्बन्ध होता है। जैसे — निष्पाद्यति बीज ५ ज्ञानाकरणको चारों गतियोंके साथ, उच्छ्रयसको मनुष्य व देवगतिके साथ, तथा बन्धरतिसे नरकगतिके बिना होय १ गतियोंसे संयुक्त बँकते हैं।

गतिस्वामित्वमें विवक्षित प्रकृतियोंको अपनेबाके कौन कौनसी गतियोंके बीज हैं यह प्रकृतिसे किया गया है। जैसे — ५ ज्ञानाकरणसे निष्पाद्यतिसे अक्षय गुणत्वान तक चारों गतियोंके, संयतासंयत तिर्यक् व मनुष्य गतिके, तथा प्रशस्तधित्व उपरिम गुणत्वानकर्तृ मनुष्यगतिके ही बीज बँकते हैं।

जगत्पक्षमें विवक्षित प्रकृतिके सम्बन्ध किस गुणत्वानसे किस गुणत्वान तक होता है, यह प्रकृतिसे किया गया है। जैसे — ५ ज्ञानाकरणका सम्बन्ध निष्पाद्यतिसे लेकर सूक्ष्मात्मन्य गुणत्वान तक होता है।

साक्षि बन्ध — विवक्षित प्रकृतिके सम्बन्ध एक बार स्पष्ट हो जानेपर जो उपसमवेगादि भय हुए चीजों पुन उचरत सम्बन्ध प्राप्त हो जाता है वह साक्षि बन्ध है। जैसे — उपसमत्त बराय गुणत्वानसे भय होकर सूक्ष्मात्मन्य गुणत्वानको प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानाकरणका सम्बन्ध।

जगत्पक्ष — विवक्षित कर्मके सम्बन्ध स्पष्टित्वानको नहीं प्राप्त हुए चीजोंके जो उचरत सम्बन्ध होता है वह जगत्पक्ष सम्बन्ध कहा जाता है। जैसे — अपने सम्बन्धस्पष्टित्वान रूप सूक्ष्मात्मन्य गुणत्वानके अन्तिम समयसे नीचे सर्वत्र ५ ज्ञानाकरणका सम्बन्ध।

**सुख बन्ध**—अमर्ष जीवोंके जो सुखबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध होता है वह अनादि अनन्त होनेसे सुख बन्ध कहा जाता है ।

सुखबन्धी प्रकृतियाँ ४७ हैं— ५ ज्ञानाकरण, ९ दर्शनाकरण, मिथ्यात्व, १६ कदाच, मय, बुगुप्ता, तैजस व कर्मण सरीर, कर्म, मन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपधातु, निर्माण और ५ अन्तराय ।

**असुख बन्ध**—मर्ष जीवोंके जो कर्मबन्ध होता है वह विनश्य होनेसे असुख बन्ध है ।

असुखबन्धी प्रकृतियाँ—सुखबन्धी प्रकृतियोंसे शेष ७१ प्रकृतियाँ असुखबन्धी हैं ।

इन्में सुखबन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, सुख और असुख चारों प्रकार तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व असुख बन्ध ही होता है ।

उक्त व्यवस्थायें यथासम्भव जागेकी तालिकाओंमें स्पष्ट की गई हैं—

### बन्धोदय-तालिका

श्रंका	प्रकृति	स्वोदयबन्धी जाति	साम्प्रतबन्धी जाति	बन्ध किस गुणस्वात्मके किस गुणस्वात्मके तक	बन्ध किस गुणस्वात्मके किस गुणस्वात्मके तक	पृष्ठ
१-५	ज्ञानाकरण ५	स्वो बन्धी	निरन्तरबन्धी	१-१०	१-१२	७
६-९	असुखदर्शनाकरणादि ४	"	"	"	"	"
१०-११	मिथ्या, प्रपञ्चा	स्व-परि	"	१-८	"	१५
१२-१४	मिथ्यानिग्रहादि ३	"	"	१-२	१-६	२०
१५	सत्प्रपञ्चेदनीय	"	सा निर.	१-११	१-१४	३८
१६	असत्तावेदनीय	"	साम्प्रतबन्धी	१-६	"	४०
१७	मिथ्यात्व	स्वो	नि	१	१	४२
१८-२१	अनन्तानुबन्धी ४	स्व-परि	"	१-२	१-२	१०
२२-२५	अप्रपञ्चास्पानाकरण ४	"	"	१-४	१-४	४६
२६-२९	प्रपञ्चास्पानाकरण ४	"	"	१-५	१-५	५०
३०-३२	सम्बन्धनप्रोपादि ३	"	"	१-९	१-९	५२-५५
३३	सम्बन्धनकोम	"	"	"	१-१०	५८



संख्या	ग्रन्थसि	स्वोद्योग्यवर्गी वर्ग	सामान्यवर्गी वर्ग	वर्ग जिस गुणस्थानके वर्ग	वर्ग जिस गुणस्थानके वर्ग	पृष्ठ
३४ ३५	हास्य, रति	स्व-परो	सा. नि	१-८	१-८	९५
३६ ३७	कवि, शोक	"	सा	१-९	"	१०
३८ ३९	मय, अगुप्ता	"	नि	१-८	"	५९
४०	मनुसंस्कृत	"	सा.	१	१-९	४२
४१	अभिद	"	"	१-९	"	३०
४२	पुरुषोत्तम	"	सा नि	१-९	"	५२
४३	नारदगु	परो	नि	१	१-४	४२
४४	सिंहगु	स्व-परो.	"	१-९	१-५	१०
४५	मनुष्यागु	"	"	१, २, ४	१-१४	६१
४६	देवगु	परो	"	१-७	१-४	६४
				(६४ को छोड़)		
४७	नरकगति	"	सा.	१	"	४२
४८	सिंहगति	स्व-परो.	सा नि	१-२	१-५	१०
४९	मनुष्यागति	"	"	१-४	१-१४	४६
५०	देवगति	परो	"	१-८	१-४	६६
५१ ५४	एकेश्वरवादि ४ वर्ग	स्व-परो.	सा.	१	१	४१
५५	एकेश्वरवादि वर्ग	"	सा. नि	१-८	१-१४	६६
५६	बौद्धिकवादी	"	"	१-४	१-११	४६
५७	बौद्धिकवादी	परो.	"	१-८	१-४	६६
५८	बौद्धिकवादी	"	नि	७-८	६	७१
५९	बौद्धिकवादी	स्वो.	"	१-८	१-११	६६
६०	बौद्धिकवादी	"	"	"	"	१
६१	बौद्धिकवादी	स्व-परो.	सा. नि	१-४	"	४६
६२	बौद्धिकवादी	परो.	"	१-८	१-४	६६
६३	बौद्धिकवादी	"	नि	७-८	६	७१

६४	निर्माण	स्थो	मि	१-८	१-१३	६१
६५	समयतुरससम्पान	स्व-परो	सा मि	"	"	"
६६	न्यग्रोपपरिमण्डलसम्पान	"	सा	१-२	"	२०
६७	स्थापितस्थान	"	"	"	"	"
६८	कुम्भकसम्पान	स्व-परो	सा	१-२	१-१३	२०
६९	शामनसंस्थान	"	"	"	"	"
७०	हृण्डकसम्पान	"	"	१	"	४२
७१	वज्रवृद्धमनासम्पान	"	सा मि	१-४	"	४६
७२	वज्रनाशसंस्थान	"	सा	१-२	१-११	२०
७३	नाशसंस्थान	"	"	"	"	"
७४	अर्धनाशसंस्थान	"	"	"	१-७	"
७५	कीर्तिसंस्थान	"	"	"	"	"
७६	अस्मात्पुत्रपाटिकासंस्थान	"	"	१	"	४२
७७	स्पर्श	स्थो.	मि	१-८	१-१३	६६
७८	रस	"	"	"	"	"
७९	गन्ध	"	"	"	"	"
८०	वर्ण	"	"	"	"	"
८१	नरकाल्पातुर्ध्वी	परो.	सा.	१	१, २, ४	४२
८२	तिर्यग्गाल्पातुर्ध्वी	स्व-परो	सा-मि	१-२	"	२०
८३	मनुष्यगाल्पातुर्ध्वी	"	"	१-४	"	४६
८४	देवगाल्पातुर्ध्वी	परो	"	१-८	"	६६
८५	अगुरुगन्धु,	स्थो.	मि	"	१-१३	"
८६	उपवास	स्व-परो.	"	"	"	"
८७	पत्वात	"	सा मि	"	"	७५
८८	अस्तम्य	"	सा	१	१	४२
८९	उद्योत	"	"	१-२	१-५	२०
९०	उद्योत	"	सा मि	१-८	१-१३	६६
९१	प्रसस्तविद्यमोगति	"	"	"	"	"

पं.सं.	प्रति	स्वोद्योगकी आदि	साधारणकी आदि	वर्ग क्रि.सं. पुनस्तान्त्रिक वर्ग	वर्ग क्रि.सं. पुनस्तान्त्रिक वर्ग	पृ.
९२	अप्रवृत्तिमोक्षगति	स्व-परो	सा.	१-२	१-११	१०
९३	प्रत्येकस्वरूप	"	सा नि	१-८	"	११
९४	साधारणस्वरूप	"	सा	१	१	१२
९५	अस	"	सा नि	१-८	१-१४	१३
९६	स्वात्म	"	सा.	१	१	१४
९७	सुमग	"	सा नि	१-८	१-१४	१५
९८	कुर्मग	"	सा	१-२	१-४	१०
९९	सुस्वर	"	सा नि	१-८	१-१३	१६
१००	दुरस्वर	"	सा.	१-२	"	१०
१०१	सुम	स्वो	सा. नि	१-८	"	१६
१०२	असुम	"	सा	१-३	"	१०
१०३	वाक्	स्व-परो	सा. नि	१-८	१-१४	१६
१०४	सुस्म	"	सा	१	१	१२
१०५	पर्याप्त	"	सा. नि.	१-८	१-१४	१६
१०६	अपर्याप्त	"	सा	१	१	१२
१०७	स्वित	स्वो	सा नि	१-८	१-१३	१६
१०८	अस्वित	"	सा	१-३	"	१०
१०९	आग्नेय	स्व-परो	सा. नि	१-८	१-१४	१६
११०	अग्नेय	"	सा.	१-२	१-४	१०
१११	यज्ञाग्नि	"	सा नि	१-१०	१-१४	७
११२	अयज्ञाग्नि	"	सा	१-३	१-४	१०
११३	सौर्य	परो	नि	४-८	१३-१४	७३
११४	असौर्य	स्व-परो	सा. नि	१-१०	१-१४	७
११५	नीचमोक्ष	"	"	१-२	१-५	१०
११६	अनीचमोक्ष	स्वो.	नि	१-१०	१-१२	७

# प्रत्यय-तालिका ( पृ १९-२४ )

पुनरावृत्ति	मिथ्यात्व ५	विविधता ११	कथा २५	श्री १५	समस्त ५७
मिथ्यात्व	५	१२	२५	१३ आहारद्विकसे रहित	५५
सासादन		११	११	११	५०
मिश्र	--	११	११ अनन्तानुबन्धितुषसे रहित	१० आ. द्विक, औ. मि., वै. दि. व कर्मणसे रहित	४९
असम्पत्		११	११	१३ आहारद्विकसे रहित	४९
देहसम्पत्	---	११	१७ अप्रत्याख्यानबन्धुषसे रहित यम रहित	९ आ. द्विक, औ. मि., वै. दि. व कर्मणसे रहित	१७
प्रमत्त	--		१३ प्रत्याख्यानबन्धुषसे रहित	११ आहारद्विकसे सहित उपर्युक्त	१४
अप्रमत्त	---		११	९ आहारद्विकसे रहित उपर्युक्त	२२
अद्वैतत्व	--	--	११	११	११
अनिवृत्ति करण मा. १	---		७ नेलचाम ९ से हीन	११	१९
मा २	--	---	९ मपुसकतेदसे हीन	११	१५

प्रकरण	दिनांक	विवरण	वर्ष	योग	कुल
बनिय- काय मा ३	..	..	५ बनिय- काय	१२ या बिक, बी मि, वे, डि व कर्मगोसे रहित	१४
मा ४	..	..	४ पुनःसे- काय	..	११
मा ५	..	..	३ संगठनकायसे- काय	..	११
मा ६	..	..	२ संगठनकायसे- काय	..	११
मा ७	..	..	१ संगठनकायसे- काय	..	१०
सुसमाय- काय	..	..	..	..	९
उपशास- काय	..	..	..	..	९
अन्यो- काय	..	..	..	..	७
सयोग- काय	..	..	..	७ सत्य व अनुमय मन और बचन, बी बिक, कर्मग	७
अयोग- काय	..	..	..	..	..

# विषय-सूची



क्रम नं	विषय	पृष्ठ	क्रम नं	विषय	पृष्ठ
१	ध्वजाक्षरका मंगलाचरण	१	१४	भुवबन्धी प्रकृतियोंका निर्देश	१७
२	बन्ध स्वामित्व-विषयका वा प्रकाशसे निर्देश	"	१५	निरन्तरबन्ध और भुवबन्धमें विशेषता	"
३	बन्ध-स्वामित्व विषयका अथार	२	१६	मूल और उत्तर प्रत्ययोंकी विस्तृत प्रकृष्टता	१९
४	बन्ध व मोक्षका स्वरूप	३	१७	गतिर्धनयोगादिविषयक प्रश्नोंका उत्तर	२८
५	बन्ध स्वामित्व विषयका निरूपण	'	१८	मित्रानिमित्रादिक पक्षीय प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३०
६	मोक्षसे बन्ध स्वामित्व-विषयके बौद्ध जीवजमात्रोंका निर्देश	४	१९	मित्रा और प्रच्छा प्रकृतिके बंध स्वामित्व आदिका विचार	३१
७	बौद्ध धर्मस्थानोंमें प्रकृतिबन्ध ध्युच्छेदकी प्रतीका	५	२०	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३८
८	ध्युच्छेदके मेव और उनका निरूपण	"	२१	असातावेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४०
९	प्राचीन जपेक्षा बन्धस्वामित्व	७ ९२	२२	मिथ्यात्व आदि सोलह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४२
१०	प्रकृतियोंकी उद्भवधुच्छिष्टि	७	२३	अप्रत्याक्ष्याभावरणीय आदि नौ प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४३
११	प्रकृतियोंके बन्धोद्भवकी पूर्वा परता	९	२४	प्रत्याक्ष्याभावरणीयधनुषके बन्ध स्वामित्व आदिका विचार	५०
१२	प्राचीन ज्ञानावरणीयादिकोंके बंधके स्थानी व उसके ध्युच्छेदस्थानकी प्रकृष्टता करते हुए उन तीनों प्रश्नोंका उत्तर	११	२५	पुरपदेव और संज्वलनप्रयोगके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५१
१३	सांख्य निरन्तर और सांख्य निरन्तर रूपसे बंधनेवाली प्रकृतियोंका निर्देश	१६	२६	संज्वलनमान और मायाके बन्ध स्वामित्व आदिका विचार	५५

क्रम सं	विषय	पृष्ठ क्रम सं	विषय	पृष्ठ
२७	संन्यस्तन शोभके बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	५८	४१ तीर्थंकर प्रकृतिक बन्ध स्वामित्वका विचार	१०३
२८	हास्य रति भय और कुमुत्पाद बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	५९	४२ प्रथम तीन पृथिवियोंमें बन्ध- स्वामित्वका विचार	१४
२९	मनुष्याणुके बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	६१	४३ अनुसृत पंचम और छठी पृथिवीमें बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	१०५
३	देवामुक बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	६४	४४ सातवीं पृथिवीमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"
३१	देवगति आदि सत्ताईस प्रकृति बौद्ध बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	६९	४५ आठवीं पृथिवीमें मित्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१९
३२	आहृतकशरीर और आहारक शरीरानुपयोगके बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	७२	४६ नानावीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११
३३	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिष्व विचार	७३	तिर्यगतिमें—	
३४	तीर्थंकर प्रकृतिके विशेष कारणोंकी आलोचना	७५	४७ तिर्यच पंचमिन्द्रिय तिर्यच पंचे द्रिय तिर्यच पर्याप्त और पंच द्रिय तिर्यच योगिमतिबौद्धोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११३
३५	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके सांख्य कारणोंकी प्रकल्पना	७८	४८ मित्रानिद्रा आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	११५
३६	तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका महत्त्व	९१	४९ मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२३
अनेकशरीर अनेक बन्धस्वामित्व ९३ ३९८ गतिमार्गका			५ अमरत्वाग्धावावरणचतुष्के बन्ध- स्वामित्वका विचार	१२५
३७	नरकमांसमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९३	५१ देवामुक बन्धस्वामित्वका विचार	१२६
३८	मित्रानिद्रादिके बन्धस्वामित्वका विचार	९८	५२ पंचमिन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२७
३९	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११	मनुष्यगतिमें—	
४०	मनुष्याणुके बन्धस्वामित्वका विचार	११३	५३ मनुष्य मनुष्यबाल और मनुष्यनिर्वासोंमें जोषके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकल्पना	१३

क्रम सं	विषय	पृष्ठ क्रम सं	विषय	पृष्ठ
५४	मनुष्य अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्रकृपणा	१३४	११ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१५४
५५	देवगतिमें—		१७ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
५६	देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्यामित्व आदिके विचार	१३७	१८ मनुष्योंसे छेकर सर्वार्थसिद्धि तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
५७	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४०	इन्द्रियमार्गजा	
५८	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४३	१९ पंचेन्द्रिय, वादर, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त विक्रमत्रय पर्याप्त अपर्याप्त तथा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	१५८
५९	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४	७० पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वके विचारमें बन्धक आदि विषयक तेइस प्रश्नोंके एकत्रिसंयोगादि अंगोंकी प्रकृपणा	१७०
६०	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिके विचार	१४५	७१ उक्त अर्थोंमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७३
६१	मन्त्रवासी ज्ञानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व आदिकी प्रकृपणा	१४६	७२ निद्रा और प्रथमाके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७७
६२	सौख्य और ईशान कल्पवृक्षी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	१४७	७३ साक्षात्देवीयके बन्धस्वामित्वका विचार	"
६३	मन्त्रनुमादमे छेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें प्रथम पृथिवीस्थ नारकियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्रकृपणा	१४८	७४ असाक्षात्देवीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
६४	ज्ञान कल्पवृक्ष छेकर भी प्रियेयक तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९	७५ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८०
६५	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५२	७६ असाक्षात्ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८२
६६	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५३		



क्रम नं	विषय	पृष्ठ क्रम नं	विषय	पृष्ठ
२७	संन्यस्त होमके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	५८	४१ तीर्थकर प्रकृतिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१३
२८	हास्य वृत्ति मय और मनुष्याके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	५९	४२ प्रथम तीन पृथिवियोंमें बन्ध-स्वामित्वका विचार	१४
२९	मनुष्यापुके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६१	४३ चतुर्थ पंचम और छठी पृथिवीमें बन्धस्वामित्व आदिक विचार	१०५
३	देवापुके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६४	४४ सातवीं पृथिवीमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"
३१	देव्यति आदि सत्ताईस प्रकृति बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६६	४५ सातवीं पृथिवीमें मित्रावित्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१९
३२	आहारकशरीर और आहारक शरीरान्गोपांगके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६९	४६ सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११
३३	तीर्थकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	७१	विषयविषय—	
३४	तीर्थकर प्रकृतिक विशेष करबौद्धी आद्यकर	७३	४७ विषय पंचेन्द्रिय विषय पंचेन्द्रिय विषय पञ्चोत्त और पंचेन्द्रिय विषय बोधिमितियोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११२
३५	तीर्थकर प्रकृतिके बन्धके सातह करबौद्धी प्रकृति	७६	४८ मित्रावित्रा आदिके बन्ध-स्वामित्वका विचार	११५
३६	तीर्थकर प्रकृतिके उद्यम आहारमय	९१	४९ मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२३
बहिःशरीर बन्धस्वामित्व ९३-१९८ प्रतिमार्गाणा			५० अग्रत्वाख्यानावरणचतुष्टये बन्ध स्वामित्वका विचार	१२५
३७	अरुणगतिमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९३	५१ देवापुके बन्धस्वामित्वका विचार	१२६
३८	मित्रावित्रादिक बन्धस्वामित्वका विचार	९८	५२ पंचेन्द्रिय विषय अर्वात्तोमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२७
३९	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११	मनुष्यगतिमें—	
४०	मनुष्यापुके बन्धस्वामित्वका विचार	११२	५३ मनुष्य मनुष्यपञ्चांग और मनुष्यमियोंमें शोभके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृति	१३

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
५४	मनुष्य अपराधोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपराधोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१३४	११	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१५४
	देशगतिमें—		१७	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध-स्वामित्वका विचार	"
५५	देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्व आदिक का विचार	१३७	१८	मनुष्योंसे लेकर सर्वायसिद्धि तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
५६	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४१		इन्द्रियमार्गोंका	
५७	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४३	१९	पंचेन्द्रिय, वाह्य, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त विकृतत्रय पर्याप्त अपर्याप्त तथा पंचेन्द्रिय अपराधोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपराधोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१५८
५८	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४	७०	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वके विचारमें बन्धक आदि विषयक छेड़स प्रश्नोंके एक-द्विचयोंगादि भर्गोंकी प्ररूपणा	१७०
५९	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिक का विचार	१४५	७१	उक्त बीजोंमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७४
६०	मन्नवासी ज्ञानमन्तर और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व आदिकी प्ररूपणा	१४६	७२	निद्रा और प्रथमके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७७
६१	नीचम और ईशान कस्पवासी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१४७	७३	सातावेदमीयक बन्धस्वामित्वका विचार	"
६२	समस्तुमारन लेकर सहस्रार कस्प तकके देवोंमें प्रथम पृथि बीस्व नादिकोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१४८	७४	मसातावेदमीय आदि छह प्रकृतिपोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
६३	मानस कस्पस लेकर मौ प्रवेपक तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९	७५	मसातावेदमीय आदि छह प्रकृतिपोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१८०
६४	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५१	७६	मसातावेदमीय आदि बन्धस्वामित्वका विचार	१८१
६५	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५३			

क्रम नं	विषय	पृष्ठ क्रम नं	विषय	पृष्ठ
७७	प्रत्याख्यापारवचनानुष्ठाके वन्ध स्वामित्वका विचार	१८४	योगमार्गमा	
७८	पुरुषवेद और संन्यस्तन्योपदेके वन्धस्वामित्वका विचार		८९ पांच मयोयोगी पांच बन्धवयोर्गी और काययोगी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके वन्धस्वामित्वकी मोषके समान प्रकृपणा	२०१
७९	संन्यस्तन्य मान और मायाके वन्धस्वामित्वका विचार	१८५	९० उक्त जीवोंमें सातावेदनीय विषयक वन्धस्वामित्वकी कुछ विशेषता	२०२
८०	संन्यस्तन्य छोड़के वन्धस्वामित्वका विचार	"	९१ भौतिककाययोगियोंमें मनुष्य यतिके समान वन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	२०३
८१	हास्य रति मय और सुगुप्ताके वन्धस्वामित्वका विचार	१८६	९२ उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके वन्धस्वामित्वकी मनोबोधिपोंके समान प्रकृपणा	२०५
८२	मनुष्यायुके वन्धस्वामित्वका विचार		९३ भौतिकमिथकाययोगियोंमें पांच ब्रानावरणीय भादिके वन्धस्वामित्वका विचार	"
८३	देहायुके वन्धस्वामित्वका विचार	१८७	९४ मिथ्यामिथ्या भादिके वन्धस्वामित्वका विचार	२०६
८४	देवमति भादिके वन्धस्वामित्वका विचार	"	९५ सातावेदनीयके वन्धस्वामित्वका विचार	२०७
८५	माहारकशरीर और माहारक अयोपामके वन्धस्वामित्वका विचार	१८८	९६ मिथ्यात्व भादिके वन्धस्वामित्वका विचार	२०८
८६	तीर्थंकर प्रकृतिके वन्धस्वामित्वका विचार	१८९	९७ देवबलानुष्ठाके वन्धस्वामित्वका विचार	२०९
क्रममार्गमा			९८ वैदिककाययोगियोंमें देवगतिके समान वन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	२१०
८७	पृथिवीकायिक, अक्षकायिक, वनस्पतिकायिक, मिथोद् जीव बाहर रहन पर्याप्त अपर्याप्त तथा बाहर वनस्पतिकायिक प्रत्यक्षशरीर पर्याप्त अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय निर्बन्ध अपर्याप्तोंके समान वन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	१९०	९९ वैदिकमिथकाययोगियोंमें देवगतिके समान वन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	२११
८८	देवकायिक व वायुकायिक बाहर रहन पर्याप्त अपर्याप्तोंमें कुछ विशेषताके साथ पंचेन्द्रिय निर्बन्ध अपर्याप्तोंके समान वन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	१९१	१०० उक्त जीवोंमें निर्वंशायु और मनुष्यायुके वन्धस्वामित्वकी विशेषता	२१२

क्रम नं	विषय	पृष्ठ क्रम नं	विषय	पृष्ठ
१०१	आहारक य आहारकमिश्रकाय योगियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६०	११४ हास्य य रतिसे छेकर तीर्थेकर प्रकृति तक भोगके समान प्रकृपणा	२५४
१०२	काम्यकाययोगियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६५	११५ अपगतवेदियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६४
१०३	निद्रानिद्रा आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६७	११६ सातावेदमीपके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६५
१०४	सातावेदमीपके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६८	११७ संन्यसनयोगके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६६
१०५	मिथ्यात्व आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६९	११८ संन्यसन मान और भावाके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६७
१०६	वेदगति आदिक बन्धनत्वामित्यका विचार	२७१	११९ सम्पन्नसामके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६८
वेदमार्गणा			कथावमार्गणा	
१०७	स्त्री पुरुष और मनुष्यके वेदियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	२७२	१२० ओषधकायी जीयोंमें पाँच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	२६९
१०८	निद्रानिद्रा आदि द्विस्वामिक प्रकृतियोंके बन्धनत्वामित्यकी भाषके समान प्रकृपणा	२७५	१२१ द्विस्वामिक प्रकृतियोंकी ओषधके समान प्रकृपणा	२७२
१०९	निद्रा और प्रसन्नकी ओषधके समान प्रकृपणा	२७८	१२२ निद्रासे छेकर प्रत्याख्यानवरण बन्य तक भाषके समान प्रकृपणा	२७४
११०	असातावेदमीपकी ओषधके समान प्रकृपणा	२७९	१२३ पुरुषवेदियोंकी ओषधके समान प्रकृपणा	२७५
१११	मिथ्यात्व आदिक एकस्वामिक प्रकृतियोंकी भाषके समान प्रकृपणा	"	१२४ हास्य य रतिम भकर तीर्थेकर प्रकृति तक भोगके समान प्रकृपणा	"
११२	अप्रत्याख्यानवरणीयकी ओषधके समान प्रकृपणा	२८१	१२५ मानवकायी जीयोंमें पाँच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धनत्वामित्यका विचार	"
११३	प्रत्याख्यानवरणीयकी भाषके समान प्रकृपणा	२८४	१२६ द्विस्वामिक आदि प्रकृतियोंकी भाषके समान प्रकृपणा	२७६

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
१२७	हास्य रति आदिषी ओषधे समान प्रकरण	२७७	१४०	ममःपययद्यानिर्गोम पांच ज्ञाना वरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२९५
१२८	मायाकपायी जीर्णोम पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४१	निद्रा और मयछाके बन्ध- स्वामित्वका विचार	"
१२९	ह्रिस्वानिक आदिषी ओषधे समान प्रकरण	"	१४२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्व का विचार	२९६
१३०	हास्य रति आदिषी ओषधे समान प्रकरण	२७८	१४३	शेष प्रकृतियोंकी कुछ बिरो पताके साथ ओषधे समान प्रकरण	
१३१	सोमकपायी जीर्णोम पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४४	केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२९७
१३२	शेष प्रकृतियोंकी ओषधे समान प्रकरण	"		संयममार्गका	
१३३	धकपायी जीर्णोम सातावेद नीयके बन्धस्वामित्वका विचार	"	१४५	संपन्न जीर्णोम मन पर्य यज्ञानियोंके समान बन्ध- स्वामित्वकी प्रकरण	२९८
	ज्ञानमार्गका		१४६	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ बिचारता	"
१३४	मतिजज्ञानी श्रुतमज्ञानी और विर्मगज्ञानियोंमें पांच ज्ञानावर णीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२७९	१४७	सामायिक छन्दोपस्थापनशुद्धि- संपन्नोम पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१३५	एकस्वामिक प्रकृतियोंकी ओषधे समान प्रकरण	२८५	१४८	शेष प्रकृतियोंके बन्ध- स्वामित्वकी मनापर्ययज्ञानियों के समान प्रकरण	३००
१३६	आभिधिबोधिक, श्रुत और मयछिपानी जीर्णोम पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	२८६	१४९	परिहायुद्धिसंबन्धोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	३३
१३७	निद्रा व मयछाकी ओषधे समान प्रकरण	२८७	१५०	असातावेदनीय आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	३५
१३८	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२८८	१५१	वेद्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	३६
१३९	शेष प्रकृतियोंकी ओषधे समान प्रकरण	२८९	१५२	आहारशरीर और आहार शरीरोंगोपांयके बन्धस्वामित्व का विचार	३७

क्रम सं	विषय	पृष्ठ क्रम सं	विषय	पृष्ठ
१४३	सूक्ष्ममात्रापर्यायिक संयुक्तोंमें पाँच प्रानापरणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३८	१४१ तत्त्व भार पद्मसेद्यापासोंमें पाँच प्रानापरणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३३३
१५४	यथाक्यातविहाररुद्रिर्मयतामें सातावेदनीयके बन्धन्यामित्यका विचार	३०९	१४२ द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी भाषक समान प्रकृपणा	३३७
१५५	संयुक्तसंयुक्तोंमें पाँच प्राना परणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३१०	१४३ असंयुक्तसंयुक्तोंकी भाषक समान प्रकृपणा	३३९
१५६	असंयुक्त जीवोंमें पाँच प्राना-परणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३१२	१४४ मिथ्यात्व भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३४०
१५७	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओषक समान प्रकृपणा	३१७	१४५ अमृत्याक्यानापरणीयकी भाषके समान प्रकृपणा	३४१
१५८	एकस्थानिक प्रकृतियोंकी भाषके समान प्रकृपणा	"	१४६ प्रत्याक्यानापरणीयकी ओषक समान प्रकृपणा	३४३
१५९	मनुष्यायु और देवायुके बन्धन्यामित्यका विचार	"	१४७ मनुष्यायुकी ओषक समान प्रकृपणा	"
१६०	तीर्थंकर प्रकृतिक बन्धन्यामित्यका विचार	३१८	१४८ देवायुकी ओषक समान प्रकृपणा	३४४
	दशमभागणा		१४९ आहारकशरीर और आहारक शरीरगतोपांगके बन्धन्यामित्यका विचार	"
१६१	बभ्रुवृक्षानी और मन्त्रवृक्षानी जीवोंमें भाषके समान बन्धन्यामित्यकी प्रकृपणा	"	१५० तीर्थंकर प्रकृतिक बन्धन्यामित्यका विचार	३४५
१६२	सातवेदनीयके बन्धन्यामित्यमें कुछ विचारता	३१९	१५१ पद्मसेद्यापासोंमें मिथ्यात्व बन्धनकी भादिकोंके समान प्रकृपणा	३४६
१६३	अपविष्टानी जीवोंमें अपविष्ट प्रानियों और कपमृष्टानी जीवोंमें कपनजानियोंके समान बन्धन्यामित्यकी प्रकृपणा		१५२ पुत्रसंसारपासोंमें तीर्थंकर प्रकृति तत्त्व भाषक समान प्रकृपणा	"
	तेन्याभागणा		१५३ उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धन्यामित्यकी मनोपागियोंके समान प्रकृपणा	३४९
१६४	हृत्पक्ष मीन और बापालमृष्टा यन्त्रोंमें अमृतताके समान बन्धन्यामित्यकी प्रकृपणा	३२०	१५४ द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी अप्रत्यक्षविमान यानी दृष्टोंके समान प्रकृपणा	"

क्रम नं	विषय	पृष्ठ	क्रम नं	विषय	पृष्ठ
मध्यमागम					
१७	मध्य त्रीषोमे भाषक समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	३५४	१९१	सातावेदनीयक बन्धस्वामित्वका विचार	३७१
१८	अमध्य त्रीषोमे पांच ज्ञाना वरणीय भाषिक बन्ध स्वामित्वका विचार	३५५	१९२	असातावेदनीय भाषिक बन्धस्वामित्वका विचार	३७१
सम्पत्सम्बन्धी					
१८१	सम्पत्सम्बन्धियोंमें न्याय त्रीषोमे भाषिकबोधिक ज्ञानियोंके समान बन्ध- स्वामित्वकी प्रकृपणा	३५३	१९३	अप्रत्याख्यावरणीयकी अवधिज्ञानियोंके समान प्रकृपणा	"
१८२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	३५४	१९४	उक्त त्रीषोमे भाषिक बन्धका अभाव	३७३
१८३	वदकसम्बन्धियोंमें पांच ज्ञानवरणीय भाषिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	"	१९५	अप्रत्याख्यावरणीयकुछके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८४	असातावेदनीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३५७	१९६	पुरुषवेद और संवत्सरकोषके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१८५	अप्रत्याख्यावरणीय भाषिक बन्धस्वामित्वका विचार	३५९	१९७	संवत्सर मान और भाषाके बन्धस्वामित्वका विचार	३७८
१८६	प्रत्याख्यावरणीयकुछके बन्ध स्वामित्वका विचार	३७०	१९८	संवत्सरकोषके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८७	वेदकुछके बन्धस्वामित्वका विचार	३७१	१९९	हास्य रति भय और सुगुप्ताके बन्धस्वामित्वका विचार	३७९
१८८	आहारकशरीर और आहारक शरीरगोपणके बन्धस्वामित्वका विचार	३७२	२००	वेदगति भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८९	उपशमसम्बन्धियोंमें पांच ज्ञानवरणीय भाषिक बन्ध स्वामित्वका विचार	"	२०१	आहारकशरीर और आहारक- शरीरगोपणके बन्धस्वामित्व का विचार	३८८
१९०	मित्रा और प्रबन्धक बन्ध स्वामित्वका विचार	३७४	२०२	साक्षात्सम्बन्धियोंकी प्रति- भाषियोंके समान प्रकृपणा	३८३
			२०३	सम्पत्सम्बन्धियोंकी अर्ध- पक्षोंके समान प्रकृपणा	३८३
			२०४	मिथ्याहणियोंकी अमध्य त्रीषोमे समान प्रकृपणा	३८६
			२०५	संज्ञी त्रीषोमे जोषके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	"





पृष्ठ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
४३	११	विरपगहपाभोगाशुभिक	विरपगह विरपगहपाभोगाशुभिक
"	२६	नारकायु और	नारकायु नारकायु और
४९	७	पुनर्वधा ।	पुनर्वधा
"	१७-२१	सर्ग काय --- कयो मही पापा जाय ।	सर्ग --- सर्ग काय --- --- जीवितिकर्तृत्वा पुनर्वधा और अनारिक कय भी कयो मही पापा जाय ।
"	२३	अनादि कयसे पुनर्वधा	अनादि एवं पुनर्वधा
५५	४	वधा ॥ २० ॥	वधा । पद वधा अथसेसा अर्धधा ॥ २० ॥
"	१५	कयन है ॥ २० ॥	कयन है । ये कयन हैं, दोय अकयन है ॥ २० ॥
५९	५	पुनर्वधापादो	पुनर्वधापादो
"	१८	दो प्रत्यये कयनका	पुनर्वधा
"	२५	x x x	१ प्रतिपु पुनर्वधापादो इति पाठः ।
५४	६	नयनकयन	नयनकयन
"	२०	नयनकयन है, नयन कयन प्रत्यय ऊपर कयन ही पुनर्वधा है,	नयनकयन है
"	२३	अनुमागेदयसे अथवा अनन्तयुग	अनुमागेदयसी अथवा अनन्तयुगे इति
"	३०	x x x	१ प्रतिपु नयनकयन इति पाठः ।
५५	२	कयोकि, कय	कयोकि, [ मिथ्याच और साद्यद्वन युग स्थानमे ]
७८	१४	अन्तर्गत	अन्तर्गत
९१	१	साद्यद्वन	साद्यद्वन
"	"	अन्तर्गतका वृत्तिगता	अन्तर्गतका वृत्तिगता वृत्तिगता
"	१५	अन्तर्गत वृत्तिगता,	अन्तर्गत वृत्तिगता, वृत्तिगता
९२	१९	पांच मुद्रियों कयोत् अन्तर्गत	पांच मुद्रियों कयोत् पांच अन्तर्गत
९९	४	कयो	कयो
१०४	२२	द्वितीय दण्डकमे (१)	द्वितीय दण्डक कयोत् द्वितीय द्वितीय द्वितीय द्वितीय द्वितीय

पृष्ठ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१०९	३	असकित्ति निमिष	असकित्ति अजसकित्ति-निमिष
"	१६	यशस्वीर्ति, निर्माण	यशस्वीर्ति अयशस्वीर्ति, निर्माण
११३	११	अत्यगवीर्य	अत्य गवीर्य
"	२५	अर्धगतिसे	इस गतिमें
१२१	९	उप्यज्ज्वाणं सणकुमारोदि	उप्यज्ज्वाणं ओपल्लिपसरीरमगोर्पगरस सणकुमारोदि
१२१	२४	जीबोके, और सनकुमारोदि	जीबोके उपर्युक्त प्रहृनियोक्त, तथा औदा- रिकास्तोगोपांगका सनकुमारोदि
"	"	मी इनका निरन्तर	मी निरन्तर
१२२	७	मशुस्साह-मशुसगहपामोगाणु पुष्पीमो	मशुस्साह [ मशुसगह ] मशुसगह पामोगाणुपुष्पीमो
"	८	तिरिक्खाह-तिरिक्खगहपामो गाणुपुष्पीमो	तिरिक्खाह [ तिरिक्खगह ] तिरिक्ख गहपामोगाणुपुष्पीमो
"	२१	मनुष्यासु एव	मनुष्यासु, [ मनुष्यगति ] एव
"	२२	तिर्यगासु, तिर्यगगतिप्रायोग्यानु पूर्वी	तिर्यगासु, [ तिर्यगगति ], तिर्यगगति प्रायोग्यानुपूर्वी
१२७	७	पग्गत्त-पत्तेय	पग्गत्त-अपग्गत्त पत्तेय
"	१९	पर्याप्त, प्रपेक	पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रपेक
१३०	३	धुवबंधित्तादो । x x x	धुवबंधित्तादो । अयसेसार्णं सादि अयुवा अयुवबंधित्तादो ।
"	१५	धुनवन्धी हैं । x x x	धुनवन्धी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि और अयुव बन्ध होता है, क्योंकि, व अधुनवन्धी हैं ।
१३४	११	अपर्यसणा-सोससकसाय	अपर्यसणापरणीय-सादासाद-मिच्छत्त- सोससकसाय
१३६	९	[ तिर्यग्गह-तिर्यग्गहपामोगाणु पुष्पी- ]	[ तिरिक्खगह तिरिक्खगहपामोगाणु- पुष्पी ]
१४९	८	विमिणं वंरत्तदाहपाणं	विमिणं उक्खमागाह-वंरत्तदाहपाणं
"	२०	निर्माण और	निर्माण, उक्खगोद और
१५०	१०	सादासाह	सादासाह
१५१	१२	पडिक्ख	पडिक्ख

पृष्ठ	पं	अनुय	शुद्ध
१७४	१	सांतर निरंतरा ।	सांतर-निरंतरो
१९४	५	आनेय अक्षिति	आनेय [ अनानेय ] अक्षिति
"	१७	आनेय, पद्यतीर्ति	आनेय, [ अनानेय ], पद्यतीर्ति
१९७	३	आपगईय	आप गईय
"	१७	अर्षापत्तिसे	इस पर्यापत्ते
१९९	५	पञ्चरात्रपञ्चानं	पञ्चरात्रपञ्चानं
२३४	८	मिच्छाद्वीप्त	मिच्छाद्वीप्त
२७८	११	॥ १ ५ ॥	॥ १ ५ ॥
२१०	२	रति-सोप	रति-अरति सोप
"	१५	रति, शोक	रति, अरति, शोक
२१९	२४	मरकागति	मरकाति
२५८	४	वेष्टिगुणदि	वेष्टिगुणदि
२६७	१	अक्षितिनामात्रं	अक्षितिनामात्र
"	२७	अपद्यतिर्ति	अपद्यतीर्ति
२८०	१	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि
"	१९	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि
"	२३	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि
"	२३	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि	अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि
"	२४	× × ×	१ गतिरु अक्षिजसम्प्रतिपिप्यद्वि



सिरि भगवत-गुणवन्त भूषणलि पणीवो

## छवखंडागमो

सिरि-भरसेणाहरिय विरहय घबला-टीका-समणिवो  
तस्स तवियल्लो

### बंधसामित्तविचओ

माहुवन्नाहरिए भरहंते वरिउण<sup>१</sup> सिद्ध वि ।

जे पंच लोणवाल वोन्ठे बंधस्स सामित्त<sup>२</sup> ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिदेसो  
ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमइमिदं सुतं बुद्धदे ? संबंधामिहेयं-यमोमणपदुण्णावणं । जो सो बंधसामित्तविचओ

साधु उपाध्याय आचार्य भरहंत और सिद्ध ये जो पंच लोणवाल मर्णाद  
लोच्यत्तम परमेष्ठी हैं उनको नमस्कार करके बंधके व्यामित्तत्व कहा है ।

जो बंधस्यामित्तविचय है उसका यह निर्देश आप और आदेशकरी अपेक्षासे दो  
प्रकार है ॥ १ ॥

संक्षेप—यह सूत्र क्यों कहा जाता है ?

समाधान—सम्यग्ध अभिधाय और प्रयात्तमके यत्तमानके लिये उक्त सूत्र कहा  
गया है ।

जो यह बंधस्यामित्तविचय है इसमें सम्यग्ध कहा गया है । यह इस प्रकार

१ मत्ति वरिउण इति पाठः ।

२ अभावो लोणालो इति पाठः ।

३ मत्ति लोणालो इति पाठः ।

नामेति प्रेक्ष्य सवधा कहिदो । तं जहा— कदि-वेदयादिचतुर्वीसअभिभोगातेसु तत्स बंध-  
मिदि छट्ठमणिभोगात्तरं । तं चउत्थिहं बंधा बंधगा बंधपिजं बंधविहाणमिदि । तत्स पधो नाम  
जीवस्स कम्मात्ते च संबधं बन्धमस्सिद्धं परूवेदि । बंधगो ति कहियसो एकासअभिभोगातेहि  
बंधग परूवेदि । बंधपिजं भाग कहियात्तं तेवीसवग्गणादि बंधजोगामबंधजोगां च योगलब्धे  
परूवेदि । जं तं बंधविहाणं तं चउत्थिहं पयडि-डिदि अणुयाग-पदेसवधो चेदि । तत्स  
पयडिबधो दुविहो मूलमयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो चदि । जो सो मूलमयडिबंधो सो दुविहो  
एगामूलमयडिबंधो अव्योगात्तमूलमयडिबंधो चेदि । जो सो अव्योगात्तमूलमयडिबंधो सो दुविहो  
सुबगारबधो पयडिद्वयबंधो चदि । तत्स उत्तरपयडिबंधस्स समुच्चित्तपान्थो चतुर्वीसअभिभोग-  
हात्तरं भवति । तेसु चतुर्वीसअभिभोगातेसु बंधसमितं नाम अभिभंगात्तरं । तस्सेव बंध  
सामित्वविषयो ति सण्णा । जो सो बंधसामित्वविषयो बंध-बंधविहाणमपसिद्धो [ सो ]  
प्पाहसकूपेव अन्नमिहो । जो सो ति वयणं जेण सो समात्तिहो तेण एसो निरेसो  
संबधपरूवेत्ता । एसो बंध अभिहयेपरूवेत्ता वि । तं जहा— जीव-कम्मात्ते निष्ठत्तसंबध-  
कसाय-अतोहि एयत्तपरिणामो बंधो । उतं च—

हे— इति वेदना आदि जीवीस अनुयोगात्तरंमे बन्धन नामक जो छत्त अनुयोगात्तर हे वह  
कार प्रकार हे— बंध बंधक, बन्धनीय और बन्धविधान । उनमें बन्ध नामक अधिकार  
जीव और कर्मके सम्बन्धका लक्ष्यो अपेक्षा करके निरूपण करता है । बन्धक अधिकार  
ग्यारह अनुयोगात्तरोंसे बन्धनीय निरूपण करता है । बन्धनीय नामक अधिकार तीस  
वर्णजातीसे बन्धयोग्य और अवबन्धयोग्य पुत्राद्य ऋष्याद्य प्रकल्प करता है । जो बन्ध-  
विधान है वह कार प्रकार है— प्रकृतिबंध स्थितिबंध अनुमागबन्ध और प्रवेशबन्ध ।  
उनमें प्रकृतिबन्ध दो प्रकार है— मूलप्रकृतिबन्ध और उत्तरप्रकृतिबंध । जो मूलप्रकृतिबन्ध  
है वह दो प्रकार है— एक-एकमूलप्रकृतिबन्ध और अव्योगात्तमूलप्रकृतिबन्ध । जो  
अव्योगात्तमूलप्रकृतिबन्ध है वह दो प्रकार है— सुजगारबंध और प्रकृतिस्थानबन्ध ।  
इनमें उत्तरप्रकृतिबन्धके समुत्पत्तिहं करनेवाले जीवीस अनुयोगात्तर है । उन जीवीस  
अनुयोगात्तरोंमे बन्धस्वामित्व नामक अनुयोगात्तर है । उनका ही नाम बन्धस्वामित्वविषय  
है । जो बन्धस्वामित्वविषय बन्धन अनुयोगात्तरके अन्तर्गत बन्धविधान अधिकारके अन्तर्  
प्रसिद्ध है वह प्रवाहकपक्ष अनादिनिमित्त है । जो सां इस बन्धनसे कौंकि वसका स्मरण  
करता गया है इसीनिमित्त वह निर्दिष्टा सम्बन्धका निरूपक है और यही अभिधेयका भी  
निरूपक है । वह इस प्रकार है— जीव और कर्मका मिश्रितत्व अर्त्तबन्ध कपाव और  
पागीस जो एतत्त्व परिणाम होता है उस बन्ध कहत है । कहा भी है—

वधेण य सत्रोगो योग्यतदभ्येण होइ जीवस्स ।

वधो पुण विण्णेओ वधविजोओ पमोक्खो<sup>१</sup> दु ॥ १ ॥

एदस्स पंधस्स सामिच्च वधसामिच्चं, तस्स विचमो [ वधमामित्तविचमो, विचमो ] विचारणा मीमांसा परिक्षा इदि एयहे । तस्स वधसामिच्चविचयस्स इमो दुविहो गिरेसो ति वेपेद सुत्तं देसामासिय तणेत्थ पभोजणं पि परूवेदथ्व । किमभूमेत्थ वधस्स सामिच्चं उच्चवेदे ? संत-दव्व-सेत्त-पेत्तेसण-कळत्तर-मायप्पापहुव-गहरागइवंधगत्तेण अवगयाणं चोइसगुणट्ठाणाणं अपवगदे वंधविसेसे वधगतं वधककरणगहरागईजो च सम्मं ण पथ्वति ति कज्जम् चोइस-गुणट्ठाणाणि अहिकिच्च अप्पाउमाणमणुगइत्तं पंधविसेसो उच्चवेदे । तस्स गिरेसो दुविहो ओपदेसमेण्ण । तिविहो किम्प होदि ? ण, वयणपभोगो हि पाम्म परहे । प च परो वि दुजयवदिरितो अस्सि जेण तिविहा एयविहा वा परूवणा होन्व ति । ओवणिरेसो दव्व-ट्ठियपयाणुमाइकरो, इयरो वि पज्जवट्ठियणयस्स ।

जीवका पुद्गल द्रव्यसे जो बन्ध सहित संयोग होता है उसे वन्ध भीर बन्धके वियोगको मोक्ष ज्ञानना चाहिये ॥ १ ॥

इस बन्धका जो स्वामित्व है वह बन्धस्वामित्व है । उसका जो विचय है वह बन्धस्वामित्वविचय है । विचय विचारणा मीमांसा भीर परीक्षा ये समानार्थक शब्द हैं । उस बन्धस्वामित्वविचयका यह दो प्रकारका निर्देश है कि यह सब देशामर्शक है इस लिये यहाँ प्रयोजन भी कहना चाहिये ।

शुक्र—यहाँ बन्धके स्वामित्वको किस लिये कहा जाता है ?

समाधान—सत्त्व द्रव्य क्षेत्र स्थान काळ अन्तर, माय अव्यवबुत्त्व और गत्या गति बन्धक रूपसे जाने गये बीजह गुणस्थानोंके बन्धविरोधके अज्ञान होमेपर पन्धकत्थ व बन्धमिमित्तक गति आगतिकर भल प्रकार ज्ञान नहीं हो सकता ऐसा ज्ञानकार बोद्ध गुणस्थानोंका अधिकार कटके अस्यायु शिष्योंके अनुग्रहके लिये बन्धविरोध कहा जाता है । उसका निर्देश मोक्ष और आवेशक मेइसे दो प्रकार है ।

शुक्र—वह निर्देश तीन प्रकारका क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता क्योंकि बन्धका प्रयाग परके लिये होता है और पर भी दो लयोंको छोड़कर है नहीं जिससे तीन प्रकार या एक प्रकार प्ररूपणा होसके ।

ओषनिर्देश द्रव्यार्थिक मयबालोंका और इतर अथात् आहृतनिर्देश पर्यायार्थिक मयबालोंका अनुग्रहकता है ।

१. वटियु पमोक्खा इति वाक्य ।

ओषेण वधसामिच्चविचयस्स चोदसजीवसमासाणि णादव्वाणि  
भवति ॥ २ ॥

‘बहो उरेसां तदा विरेसा’ इति वाचावप्यङ्गमायमेषि उच्यते । वधसामिच्चविचयस्सेषि  
संबन्धे छट्टी इत्युच्यते । अथवा, वधसामिच्चविचय इति विसयतन्त्रयमचमीय छट्टीविरेसो  
रुच्यते । पुष्पमवगम्या येव चोदसजीवसमासा, पुणो ते एव किमिदं पठन्निबन्धते ? न एव  
हेतोः, विस्मरणादुभयस्त्वसंयुक्तमङ्गुलादा ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी सम्मामिच्छाद्विष्टी असजदसम्माद्विष्टी  
सजदासजदा पमत्तसंजदा अपमत्तसजदा अपुत्तकरणपइद्ववसमा  
स्त्वा अणियद्विष्टादरसांपराइयपइद्ववसमा स्त्वा सुहुमसांपराइयपइद्व  
वसमा स्त्वा उवससकसायवीयरागळुदुमत्था स्त्रीणकसायवीयरायळुदु  
मत्था सजोगिकेवली अजोगिकेवली ॥ ३ ॥

वोधस्य अवेक्षा वन्धस्वामित्वविचयक चोदह जीवसमास जानने योग्य है ॥ २ ॥

ऐसा उद्देश्य ऐसा निवेदन होता है । इसके द्वारा अर्थ ओषमे देखा गया है ।  
वधस्वामित्वविचयक यह सम्बन्धमें पढ़ी विमर्श आसना चाहिये । अथवा वन्ध-  
स्वामित्वविचयक इस प्रकार विषयव्यक्तिकरण अथवा सप्तमी विमर्शके स्वरूपमें पढ़ी  
विमर्शक निवेदन करना चाहिये ।

संज्ञा—चोदह जीवसमास पूर्वमें आने ही जा चुके हैं फिर उनकी यहाँ प्रकृष्टता  
विस्तारित की जाती है ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि, यह कथन विस्मरणशील शिष्योंके  
स्मरण करनेके लिये है ।

मिथ्यापण्डि, सासाधनसम्यग्पण्डि, सम्यग्मिथ्यापण्डि, अर्धस्तसम्यग्पण्डि, संयत्तसंयत्त,  
प्रमत्तसंयत्त, अमत्तसंयत्त, अपूर्वज्ञप्रविष्ट उपश्रमक व क्षमक, अनिष्टविषादरसाम्प्रत्ययिक  
प्रविष्ट उपश्रमक व क्षमक, सूक्ष्मात्मरायिकप्रविष्ट उपश्रमक व क्षमक, उपश्रान्तकृपाय वित  
रागद्वन्द्वम्, क्षीणकृपाय वितरागद्वन्द्वम्, संयोगिकेवली और अयोगिकेवली, ये चोदह जीव  
समास हैं ॥ ३ ॥

एदस्स सुचस्स भत्तो जहा जीवहृणो वित्थरेण परूविदी सहा एत्थ परूवेदथो,  
विसेसामावाधो । एव चोदसण्ह जीवसमासाणं सरूय समात्थि वधसामिचपरूवणहमुचसुच  
मणदि—

एदेसि चोदसण्ह जीवसमासाण पयडिग्रधवोच्छेदो कादज्जो  
भवदि ॥ ४ ॥

अदि जीवसमासाण पयडिग्रधवोच्छेदो चेव उच्चदि तो एदस्स-गंवस्स वधसामिच-  
विचयसण्णा कव घइदे ? ण एस दोसो, एदस्मि गुणहृणो एदासि पयडिग्रधवोच्छेदो हेदि  
चि कइदे हेडिस्सगुणहृणाणि तासि पयडिग्रधवसामिमाणि चि सिदीदो । किं च वोच्छेदो  
हुविहो उप्पादानुच्छेदो अनुप्पादानुच्छेदो चेदि । उत्ताद सत्त्व, अनुच्छेदो विनाश भमाव  
नीरूपिता इति भावस् । उत्ताद एव अनुच्छेद उत्तादानुच्छेद, भाव एव भमाव इति यावत् ।  
एसो दन्वडियणपव्ववहरो । ण च एमो एयतेण चप्फभो, उत्तरकाले अपिदपन्मायस्स

इस सूत्रका अर्थ जैसे जीवस्थानमें विस्तारस कहा गया है वैसे ही यहां भी  
कहना चाहिये क्योंकि जीवस्थानसे यहां कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार चौदह  
जीवसमासोंके स्वरूपका स्मरण करतकर बन्धस्वामित्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

इन चौदह जीवसमासोंके प्रकृतिबन्धव्युच्छेदक कथन करने योग्य है ॥ ४ ॥

शंकर—यदि यहां जीवसमासोंका प्रकृतिबन्धव्युच्छेद ही कहा जाता है तो फिर  
इस प्रत्यक्ष बन्धस्वामित्व यह नाम कैसे घटित होगा ?

समाधान—यह कोई शंका नहीं है क्योंकि, इस गुणस्थानमें इनकी प्रकृतिबोध्य  
बन्धव्युच्छेद होता है येम्हा कहनेपर उसमें नायिक गुणस्थान उस प्रकृतियोंके बन्धक  
क्यामी है यह स्वयमंथ सिद्ध हो जाता है । दूसरी बात यह है कि व्युच्छेद दो प्रकारका  
है—उत्पादानुच्छेद और अनुत्पादानुच्छेद । उत्पादक भय सत्त्व और अनुच्छेदक अर्थ  
विनाश भमाव भयना भीकरीपना है । उत्पाद ही अनुच्छेद उत्पादानुच्छेद ( इस  
प्रकार यहां कर्मधारय समास है ) । उक्त कथनका अभिप्राय भावको ही भमाव पतलाना  
है । यह प्रत्यार्थिक मयके आशित व्यवहार है । और यह पञ्चांगत रूपस भयात् सव्या  
मिध्या भी नहीं है क्योंकि उत्तरकालमें विवक्षित पचापक विनाशसे विविष्ट द्रव्य पूर्व



विषासेन विमिष्टदृष्यस्य पुनित्कच्छते वि उक्तमादौ । इन्द्रियव्ययमि सताम पञ्चासार्थं कथममात्रो ? को यत्रदि तेमि तत्त्वामात्रा चि, किन्तु ते तस्य व्यपक्षणा अविबन्धिता अभिप्राया इति तेमि दृष्यमेव य तस्य पञ्चासार्थ । कथमभिव्यवसेन अदृश्यार्थं पञ्चासार्थं दृष्यार्थं ? न, इन्द्रो एतत्तु तेमि पुनर्मृणालमुवर्तमादौ, दृष्यसहाकारं चेनुवर्तमा । यदि एवं तो मातस्य दुर्चरिमादिसु समस्तु चरिममम इव अमात्रव्यवहारो किम्प कीरते ? न एव होमो, दुर्चरिमादीष चरिमममयमेव अमात्रेण सह पञ्चासुचीए अमात्रादौ । दृष्यद्विमल कथममात्र-रवदृष्टा ? न एव होमो, 'यदस्ति न तद् द्रव्यमतिठप्य वस्तु' इति हो वि यष अविबन्धितान् द्विद्वेगममयस्य मात्रामात्र-व्यवहारविराहामात्रादौ । अनुत्याद् असत्यं, अनुच्छाद्

कच्छमें भी पाया जाता है ।

संक्ष—द्रव्यार्थिक नयमें विद्यमान पर्यायोंका अभाव कैसे होता है ?

समाधान—यह बीज कहना है कि उनका वहाँ अभाव होता है किन्तु वे वहाँ व्यपक्षान् अविबन्धित अवका अनर्थित हैं, इसलिये उनके द्रव्यपणा ही है, पर्यायपणा वहाँ नहीं है ।

संक्ष—द्रव्यार्थिक नयक बशमे द्रव्यसं मिश्र पर्यायोंक द्रव्यत्व कैसे सम्भव है ?

समाधान—यह बीज ठीक नहीं क्योंकि, पर्याय द्रव्यमे सवषा मिश्र नहीं पायी जाती किन्तु द्रव्यस्वरूप ही वे उपलब्ध होती हैं ।

संक्ष—यदि ऐसा है तो फिर पर्यायक अन्तिम समवक अमात्र द्विचरमादि समर्थोंमें भी अभावका व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—यह कार्य बाध नहीं है क्योंकि, द्विचरमादिक समर्थोंके अन्तिम समवक अमात्र अभावक साथ प्रत्यासत्ति नहीं है ।

संक्ष—द्रव्यार्थिकर्षा अपेक्षा पर्यायोंम अभावका व्यवहार कैसे होता है ?

समाधान—यह कार्य बाध नहीं क्योंकि, जो है वह वातावा अन्तिममय कर नहीं रहता इस लिये वाता अपावा माध्यकर स्थित नैयममयक माय न अभाव रूप व्यवहारमें कार्य विपक्ष नहीं है ।

अनुत्यादा अर्थ असत्य और अनुच्छादा अर्थ विनाश है । अनुत्याद् ही अनुच्छाद्

विनाश, अनुत्पाद एव अनुच्छेद ( अनुत्पादानुच्छेद ) असत् अभाव इति यावत्, सत् असत्विरोधात् । एते पञ्चवर्ण्यण्यवधारो । एते पुन उपादानुच्छेदमस्तिदूष ज्ञेय सुचकारेण अभावव्यवहारं करो तेन भावो चैव पयद्विषयस्त परविवेको । तेभ्यस्त गमस्त बभसामितविचयसम्प्रा पठति च ।

पचण्ण णाणावरणीयाण चटुण्ह दसणावरणीयाण जसकित्ति उन्वागोद पचण्हमतराइयाण को वंधो को अवंधो ? ॥५॥

बंधो बंधो चि मणिदं होदि । पयडिमसुभिकचणाए णाणावरणादीणं सत्त्वं परविवेद मिति मेह परविविन्दे, पठणसुचियदो । को बंधो को अवंधो चि पियेसदो एद पुच्छ-सुचमासकियसुच वा । किं मिच्छाद्वी बंधो किं सासणसम्माद्वी किं सम्मामिच्छाद्वी किं असन्नदसम्माद्वी एव गतूण किं अयोगी किं सिद्धो बंधो चि तेकेण पुच्छ कयप्पा । एद देसामासियसुच । किं बंधो पुण्वं वोच्छिन्नद्वि किमुदो पुण्वं वोच्छिन्नद्वि किं दो चि समं वोच्छिन्नजति, किं सोदएण एवासिं बंधो किं परोदएण किं स-परोदएण, किं सांतरे बंधो किं

अर्थात् असत्का अभाव होता है क्योंकि सत्के असत्त्वका विरोध है । यह पर्यायाधिक नयके आश्रित व्यवहार है । यहाँपर बूँकि सूचकारने उत्पादानुच्छेदका आशय करके ही अभावका व्यवहार किया है इसलिये प्रकृतियन्त्रका सम्भाव ही निरूपित किया गया है । इस प्रकार इस ग्रन्थका बन्धस्वामित्वविषय नाम संगत ही है ।

पाँच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उन्वागोत्र और पाँच अन्तराम, इनका कौन बन्धक है और कौन अवन्धक है ? ॥ ५ ॥

बन्ध शब्दसे यहाँ बन्धकका अभिप्राय प्रकृत किया गया है । बूँकि महत्तिसनु त्थीर्तन बूँकिजमें कामावरणाधिक्यका स्वरूप कहा जा चुका है अत एव अब इनका स्वरूप यहाँ नहीं कहा जाता क्योंकि ऐसा करनेसे पुनरुक्ति-दोष आवेगा । कौन बन्धक और कौन अवन्धक इस निर्वाचने यह पृच्छमसूत्र अथवा आदर्शसूत्र है ऐसा समझना चाहिये । इसीलिये क्या मिष्पाद्वि बन्धक है क्या सासावनसम्पाद्वि बन्धक है क्या सम्मग्गिप्पाद्वि बन्धक है क्या असंघतसम्पाद्वि बन्धक है इस प्रकार जाकर क्या अयोगी बन्धक है क्या सिद्ध जीव बन्धक है ऐसा यहाँ प्रश्न करना चाहिये । यह वेदामर्शक सूत्र है । इसलिये यहाँ क्या बन्धकी पूर्वमें व्युत्पत्ति होती है ( १ ) क्या उदयकी पूर्वमें व्युत्पत्ति है ( २ ) या क्षमोक्ती साथ ही व्युत्पत्ति होती है ( ३ ) क्या अपने उदयके साथ इनका बन्ध होता है ( ४ ) क्या पर महत्तियोंके उदयके साथ इनका बन्ध होता है ( ५ ) या अपने व पर क्षमोंके उदयके साथ इनका बन्ध होता है ( ६ )

भिरंतरं वंवा किं सांत्तभिरंतरो, किं सपञ्चओ किमपञ्चओ, किं गृहमनुत्ता किमगृहमनुत्ते,  
कदिगदिया मयिओ अमयिओ, किं वा वधद्वार्थं, किं परिमममए वंवा वेष्टिञ्जदि किं पद-  
समाए किमपदमवपरिमममा वंवा वाञ्छिञ्जदि, किं सादिगो वंवा किं अणादिओ, किं पुओ किमद्वो  
धि, तेपदाओ तेवीसपुञ्जओ पुणित्थुञ्जाए अंतम्भदाओ धि दठम्भाओ । एत्थुवउम्भदीओ  
अरिमगाहाओ—

वरा वंवादिहो पुण सामित्तदाण पञ्चपमिहो य ।

पदे पंचणिओमा मगगणगणसु म्भोउजा<sup>१</sup> ॥ २ ॥

अण्णवग्गुण्ण व सुंमगणिस्सर कउ व ॥ ३ ॥

पञ्चय-सामित्तदिहो सनुत्तदाणण्य तह वंवा ।

सामित्त णेमा<sup>२</sup> पयडेल ठाणमासउव ॥ ४ ॥

वंवादिहो पुणे ग म्भ व सग्गणेए तनुमण्य ।

सुत्त गित्त वा अरिमिहो मादिअदीवा ॥ ५ ॥

कथा सत्कार वन्ध हाता है (७) कथा निरुत्तर वन्ध होता है (८) वा सत्कार-निरुत्तर  
वन्ध हाता है (९) कथा सन्निमित्तक वन्ध होता है (१०) वा अनिमित्तक (११) कथा  
गतिमनुत्त वन्ध हाता है (१२) वा गतिमनुत्तगम रहित (१३) निजनी यतिबाळ जीव  
स्वामी है (१४) और निजनी गतिबाळ स्वामी नहीं है (१५) वन्धावत्त किनमा है अर्थात्  
वन्धकी सीमा किन शुक्लस्थल तक है (१६) कथा अन्तिम समयमें वन्धकी वृत्तिउत्ति होती  
है (१७) कथा प्रथम समयमें वन्धकी वृत्तिउत्ति होती है (१८) वा बीचक समयमें  
(१९) वन्ध कथा सादि है (२०) वा कथा अनादि (२१) कथा म्रुव वन्ध हाता है (२२)  
वा अम्रुव (२३) व तरेल प्रथम वर्षीक प्रथम अस्तगत है एसा ज्ञानना आदिप । यहाँ  
उपपुनः आर गाथाएँ—

वन्ध वन्धविधि वन्धव्याप्तिक वन्धात्त वन्धात्त वन्धनीमा और प्रत्ययविधि य  
पांच निषेध मार्गण्यार्थोमे ग्राजन वाण है ॥ २ ॥

वन्ध पूर्वमे है उद्य पूर्वमे है वा वन्धी साथ है किन कर्मक वन्ध निजके उद्यक  
साथ हाता है किनका वन्ध साथ और किनका अन्धकार उद्यक साथ कीन प्रहृति  
सत्कारवन्धानी है और कीन निरुत्तरवन्धानी प्रत्ययविधि स्वामित्वविधि तथा गति  
मनुत्त वन्धावत्तक साथ प्रहृतिपरिके व्याप्तिक व्यापक स्वामित्व अन्तमा आदिप ॥३-५॥

वन्ध पूर्वमे उद्य पूर्वमे या वन्धी साथ हाता है वह वन्ध व्यापके परोद्यम वा  
द्वारिके उद्यम हाता है उद्य वन्ध सत्कार है वा निरुत्तर वह अन्तिम समयमें हाता है  
वा एतल समयमें तथा वह सादि है वा अनादि है ॥ ५ ॥

एत्थ एत्थसु पुच्छसु विसमपुच्छमन्त्वो मुच्चदे । तं जहा- वधवोच्छेदो एत्थेव  
सुचसिदो ति तं मोत्तण पयडीणमुद्रयबोच्छेद ताव चत्तास्सामो । मिच्छत-एत्थदिय-यत्थदिय  
तीहदिय-चउरिदियनदि-आदाव-पावर-मुद्रम-अपचव-साहारणाण दसण्ह पयडीणं मिच्छमिद्विस्स  
परिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो । एसो महाकम्मपयडिआहुडउदयवो । पुणिसुत्तकत्ताराणमुवपेण  
पंचण पयडीणमुद्रयबोच्छेदो, चउवादि-पावरणा सासणसम्मादिद्विद्वि उदयवोच्छेदमुवगमादो ।  
अपंतणुषधिकेह-माण-माया-येहाणं सासणसम्माद्विपरिमसमप उदयवोच्छेदो । सम्मा-  
मिच्छतस्स सम्मामिच्छमिद्विद्वि उदयवोच्छेदो । अपचवसापावरणकोह-माण-माया-येह-पिरयाठ  
देवाठ-मिरयगह-देवगह-वेठवियसरीर-वेठवियसरीरवगोवग-चत्तारिणाणुपुवि-मुमग-अपदेज्ज-  
अजसकितीणं सत्तरसण्णमेदासिं पयडीणं असंजदसम्मादिद्विद्वि उदयवोच्छेदो । पचवसापा-  
वरणकोह-माण-माया-येह-तिरिक्खाठ तिरिक्खगह-उज्जोव-भीवागोराणमहुम्पं पयडीणं सज्जदा  
संजदम्मि उदयवोच्छेदो । पिदापिहा-पयत्तपयत्त-वीणगिदि-आहारसरीरदुगार्ण पचण पयडीणं

इन प्रसंगोंमें विषय प्रसंगोंका अर्थ कहत हैं । वह इस प्रकार है— बूँकि वन्ध-  
मुच्छेद यहां ही सूचत सिद्ध है मत एव उसको छोड़कर प्रकृतियोंके उदयमुच्छेदको  
कहते हैं । मिथ्यात्व, एकस्मिन्त्रय द्वीस्मिन्त्रय त्रीस्मिन्त्रय चतुरिस्मिन्त्रय आति आताप स्वावर,  
सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इन द्वा प्रकृतियोंका उदयमुच्छेद मिथ्याद्वि गुण  
स्वात्मके अस्तिम समयमें होता है । यह महाकर्मप्रकृतिमामृतका उपदेश है । बूँदिसूत्रोंके  
कर्ता वसिष्ठप्रमाचार्यक उपदेशसे मिथ्यात्व गुणस्वात्मके अस्तिम समयमें पाँच प्रकृतियोंका  
उदयमुच्छेद होता है क्योंकि चार आति और स्वावर प्रकृतियोंका उदयमुच्छेद  
सासाधनसम्यग्द्वि गुणस्वात्ममें प्राप्त गया है । अनन्तानुबन्धी कोष मान माया और  
छोमका उदयमुच्छेद सासाधनसम्यग्द्वि गुणस्वात्मके अस्तिम समयमें होता है ।  
सम्यग्मिथ्यात्वका उदयमुच्छेद सम्यग्मिथ्याद्वि गुणस्वात्ममें होता है । अमत्पाप्याना-  
वरण कोष मान माया छोम नारकपु देवापु नरकगति देवगति वैक्रियिकशरीर,  
वैक्रियिकशरीरांगोपांग चार आनुषंगी पुर्मग जननेय और अपशकौति इन सत्तर  
प्रकृतियोंका उदयमुच्छेद संसृतसम्यग्द्वि गुणस्वात्ममें होता है । मत्पाप्यानावरण  
कोष मान माया छोम तिर्यगापु तिर्यगगति उपोत और नीच गोत्र इन आठ प्रकृतियोंका  
उदयमुच्छेद संसृतसंसृतगुणस्वात्ममें होता है । मित्रानिन्त्रा प्रचलप्रचला स्थानगुधि  
आहारशरीर और आहारशरीरांगोपांग इन पाँच प्रकृतियोंका उदयमुच्छेद प्रमत्तसंसृत

१ मरिचु कमिज्जवपाएण हनि पाठ ।

२ मिच्छे मिच्छावत्त सुदयपिण सामने बर्णवती । वातरपिपक मिले मिले च व उदयवेदिभज्जया ॥  
को क २१५

३ अथवे विविधकथाया वैश्वविपत्तक मिले वैश्व । मद्रव तिरिपाहुपुत्ती इत्थमनदेज्ज अज्जमव ॥  
को क २१६

७ ५ २



योच्छेदो' । हेवेदणीय-गणुस्साठ-गणुस्सगाह-सर्चिदियजादि-संस-भावर पञ्चस-सुमग-आवेज्ज  
असगिचि-सित्थपर ठच्चागोदाणं तेरसण्हं पयङ्गीणमजोगिकेवलिमिह उदयवोच्छेदो' । एत्थ  
उवससरगाह—

दस चदुरिणि सत्तारस अठ्ठ य तह पच पेय चउरो य ।

छण्डक एग दुग दुग चोदस ठगुतीस तेसुदयग्रिही' ॥ ६ ॥

एवमुदयवोष्मेदे परुषिय कसिं पयडीण षषो उदए फिडे वि होदि, कसिं पयडीणं  
 षषि फिडे वि उदमो होदि, कसिं षषोदया सम बोधिञ्जति ति बुञ्चदे । तं जहा—  
 देवाठ-देवगइ-वेठधियसरि-वेठधियजगोवग-देवगइपाओम्माणुपुवि-आहारदुग-अजसकित्तीण  
 , मइण्य पयडीणं पइममदमो बोधिञ्जदि पञ्च षषो । एत्थ उवसहारगहा—

देवात-देवचतस्रह्मादुध च अनेसमदृष्टम् ।

पद्ममुञ्जो विणत्सि पञ्च बधो मुण्येष्वो ॥ ७ ॥

मनुष्यगति पंचोद्भियः प्राप्तिं वसु बलवर, पर्याप्त सुखं आशेष यथाकामं तिर्यङ्कर और  
उच्छ्वासा इति तत्त्वं प्रकृतियोग्यं उदयमुष्णोदययोगिकेवली गुणस्यामर्मे होता है। यहां  
उपसंहाराग्या—

इश बार, एक सत्तरह आठ पाँच बार, सह सह एक, दो दो बीवह,  
उनतीस और तेरह (इस प्रकार क्रमशः मिथ्यावादि आदि बीवह गुणस्थानोंमें उदयधुस्त्रिंश  
मन्त्रियोंकी संख्या है) ॥ १ ॥

इस प्रकार उदयस्युच्छेदको कहकर अब किन प्रकृतियोंका वन्य उदयके मध्य होनेपर भी होता है किन प्रकृतियोंका उदय वन्यके मध्य होनेपर भी होता है और किन प्रकृतियोंका वन्य व उदय दोनों साथ ही स्पुष्टिष्ट होते हैं इस बातको प्यते हैं। वह इस प्रकार है— देवायु, देवगति वैदिक्रियकाटीर, वैदिक्रियकागोपांग देवगतिप्रायेतयाजु पूर्वी आहारकशरीर, आहारकमांगोपांग और अथशकीर्ति इन आठ प्रकृतियोंका प्रथम उदयका विच्छेद होता है, पञ्चाश वन्यका। यहाँ उपसंहारगथा—

देवाय देववत्तुष्क अर्थात् देवगति इव गत्यानुपूर्वी वैकिणिकशरीर और वैक्रियिक  
आंगोपांग तथा आहारकशरीर, आहारक आंगोपांग एवं अयशस्विति इव भात प्रकृतियोंका  
पहिले उदय भग्न होता है, पश्चात् बन्ध देसा जानमा चाहिये ॥ ७ ॥

१ तन्निवेकमन्त्रमिति निर्णयं शिरः कृत्वा सरासि उवाच वैजयन्त । सतामः शरण्यसुखसङ्गपतेषु श्रीमिहि ॥  
 यो क २७२

२. परिचयक मन्त्रबन्धो परिशिष्ट-समय तस्य निवर्तिता । अथ निच महाबाहू उच्यते च अजीविष्यति ।  
 को. २. २७३                      ३. को. २. २७४

४ देवदत्तकृतसुपुष्पसहस्रनामगीतं श्री पञ्चा । ओ. ४.



तराह्यान्मेगासीदिपयहीनें पदमे वंधो वोच्छिज्जदि, पच्छ उदधो । एत्थ उवसंहारगाहा—

पुम्भुत्तसेसाओ एगासीनी हवति पयटीओ ।

साण वपुच्छेदो पुम्भ पच्छेत्तच्छेत्ते ॥ १० ॥

सेसाणं जहाजसरमत्थं भणिस्सामो ।

मिच्छादिट्ठिण्हुडि जाव सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदेसु उवसमा  
खवा वंधा । सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदद्वाए<sup>१</sup> चरिमसमय गतूण वंधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुबदे । त जहा— 'मिच्छादिट्ठिण्हुडि जाव सुहुमसांपराह्य  
खवा' ति एदेव वपवेष जदामं जणाविदं । 'एदे वधा, अवसेसा वंधा' ति 'एदेव  
वंधस्स सामिं जणाविद' । 'सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदद्वाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छि  
ज्जदि' ति एदेव वि 'किं चरिमसमय वंधो वोच्छिज्जदि' ति 'पुच्छय एदम [वपवम—]  
अचरिमपडिसेहसुहेय पडिउत्तो दिण्णो । अवसेसाण पुच्छयणं ण परिच्छेदो करो । वेगेद

और पांच अन्तराय इन इक्यासी प्रकृतियोंका पहिल बन्ध मर होता है एवमात् उदय ।  
यहां उपसंहारगाथा—

पूर्वोक्त प्रकृतियोंस शेष ओ इक्यासी प्रकृतियां रहती हैं उनका बन्धपुच्छेद्  
पहिले और उदयपुच्छेद् एवमात् होता है ॥ १० ॥

शेष प्रकृतियोंका मर्थ यथावसर करेगा—

मिथ्यादष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत उपशमक व क्षपक तक उपर्युक्त  
ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परायिककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध  
पुच्छिज्ज होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवशक हैं ॥ ६ ॥

इस सूत्रका मर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— मिथ्यादष्टिस लेकर सूक्ष्मसाम्प-  
रायिक क्षपक तक इस बन्धनसे बन्धावसान जापित किया है । ये बन्धक हैं शेष अवशक  
हैं इससे बन्धका स्वात्मिक जापित किया है । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम  
समयमें जाकर बन्ध पुच्छिज्ज होता है इससे भी क्या करम समयमें बन्ध पुच्छिज्ज  
होता ? इस प्रश्नका प्रथम और [अप्रथम] अक्षरम समयके प्रतिपद्युक्तसे मत्पुत्तर  
दिया गया है । शेष प्रश्नोंका मर्थय यहाँ सूत्रमें नहीं किया गया । इसीछिये यह दशमार्शक





वञ्चति । पषदसणावरणाय-देवेदणीय सोल्लभकसाय णवणोकसाय तिरिक्खाउ-मणुस्साउ तिरिक्खगइ-मणुस्साइ पइदिय बीइदिय-तीइदिय चउरिंदिय-पडिंदियजादि-ओरात्थियसरीर छ-संयण ओरात्थियसरीरअगेवग छसषण्ण-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओमगाणुपुब्बि-उषवाद् परषाद्-सस्सास-आदाव उञ्जोव-देविहामगदि तस थावर-आवर-सुहुम-पञ्चत्त अपञ्चत्त-पत्तेय-साधारण सरीर-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेव्ज-अणोदेव्ज-जसक्कि-अजसक्कि-पीपुञ्चागोदमिदि एदाओ वासीदिपयडीओ सादय-परोक्षेण वञ्चति । एत्वं उवसंहारगाहाओ —

गाणनगय-सण-पिराणिउ-सज्जक्कमेहाइ ।

णिमिण अगुदुल्लुअ ण्णवउक्क च मिच्छत्त ॥ १० ॥

सत्ताप्पेणाओ ब्रह्मति इ सात्पण पयणीओ ।

सादय-परोक्षेण वि ब्रह्मवससियाओ इ ॥ ११ ॥

एतन् भाषावरणतत्पश्यदसपयडीओ दसणावरणसु चत्तारि पयडीओ चैव ब्रह्ममाणानि । सव्वगुणहृण्णामि सोदएण चैव वचति, मिच्छइट्ठिप्पहुडि जाव खीप्पकसाया त्ति एदासि पिरतरोदयओ सोदएण वञ्चमाणपयडीणमम्मंतरे पादाओ वा । असक्किं मिच्छइट्ठिप्पहुडि

सत्ताईस प्रकृतिषां स्तोत्रयसे वचती है । पांच दर्शनावरणीय ओ देवनीय सोल्लभ कषाय नी नोकषाय तिर्यगायु मनुष्यायु तिर्यग्गति मनुष्यगति एकस्त्रिय द्वीस्त्रिय त्रीस्त्रिय चतुरि स्त्रिय पंचस्त्रिय जाति भावार्थिकतापीर छह संख्याम भौतार्थिकछरीरांगापांग छह संहमन तिर्यग्गतिप्रायोम्यानुपूर्वी मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी उपपात परपात उच्छ्वास आताप उद्योत ओ विहायोगति जन स्वाधर वात्र सूक्ष्म पयान अपर्याप्त प्रत्यक्ष साधारण शरीर, सुमग दुर्भग सुस्थर, दुस्वर, अज्ञेय अज्ञादेय यशकीर्ति अयशकीर्ति नीचगोत्र और उच्छ्वगात्र य व्याप्ती प्रकृतिषां स्वाक्षय परोक्षय दानां प्रकजरसे वचती है । यहाँ उपसंहारगाथायै—

पांच ज्ञानावरण पांच अन्तराय दर्शनावरण चार, स्थिर आदिक चार, तैजस और काम्य शरीर, निर्माण अगुरुकलसुक, वर्णादिक चार और मिच्छान्त य सत्ताईस प्रकृतिषां ओ स्तोत्रयसे वचती है और शेष प्रकृतिषां व्याख्य परोक्षयसे वचती है ॥ १२-१३ ॥

यहाँ ज्ञानावरण य अन्तरायकी दश प्रकृतिषां तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतियां बंधनेवाली हैं । ये अपने बन्ध याम्य सब गुणस्थानोंमें स्तोत्रयसे ही वचती हैं क्योंकि मिच्छादृष्टि सत्तर शीघ्रकषाय गुणस्थान तत्र इत्यत्र निरन्तर उद्यय रहता है अथवा इनच पतन स्तोत्रयम बधमवाली प्रकृतियोंक भीतर है । यदाकीर्ति प्रकृतिषा मिच्छादृष्टि

देसाभासिपसुत्तं, सम्हा एत्थं लीणरथाय परूवणं कस्सामो । तं जह्म— किं षंघो पुनं  
 वोच्छिज्जदि, किमुदयो पुण्णं वोच्छिज्जदि, किं दा वि समं वाञ्छिज्जति, एदासिं तिण्णं पुञ्जयं  
 वुत्तो वुत्ते । एदासिं सेत्तयुण्णं पयडीयं षंघो पुण्णं वोच्छिज्जदि सुद्धुमसांपरादयपरिममए,  
 उदया पण्णं वाञ्छिज्जदि, पयपाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-यंचंतरादयानं स्त्रीयकसाय-  
 चरिममए, असक्खिं उवागोदणमजोगिचरिममए उदयवाञ्छेददसणादो । किं सेदएण,  
 किं परोदएण, किं सेदयपरोदएण एदासिं षंघो ति पुण्णमस्सिदणं वुत्ते । एत्थं ताव एदेय  
 संपवेण सेदएण परोदएण सेदय परोदएण वच्चमाणपयडिपरूवणं कस्सामो । तं जह्म— मिरयाठ  
 देवाठ-मिरयगद्देवगद्देवठियवसरी माहारसरी-वेठियव-माहारसरीरोगोवंग-मिरयगद्देवगद्देव-  
 पाजोमाजुपुण्ण-तित्थपरमिदि एदाभो एक्कमसपयडीयो परोदएण वच्चति । एत्थं उय  
 संइममाह—

निष्पत्ति-पिरय-बाउअ-वेठमिप्यल्लरु दा रि अहारा ।

एकवक्त्रमप्यङ्गीणं यजो हु फलान्णं बुद्धा ॥ ११ ॥

पंचपात्रावरणीय- [ अठदसपात्रावरणीय ] मिश्रित-तन्त्रा-कम्पाहयमणोर-वज्रपठनं  
 षण्णभज्जु-विश्व-सुहासुह-विमिश्र-पञ्चतण्डुलमिदि एताभ्यो सत्तुसप्तस्यो सत्तुसप्त

मुख है और ब्रह्ममण्डल होनेसे यहां तीन अर्थात् अन्तर्निहित अर्थात् प्रकृत्या करते हैं।  
 वह इस प्रकार है— क्या बन्ध पूर्वमें स्फुटिउभ होता है क्या उद्वय पूर्वमें स्फुटिउभ होता  
 है या क्या दोनों साथ स्फुटिउभ होता है? हम तीन प्रसंगों पर चर करते हैं— हम सोचते  
 प्रकृतियोंका बन्ध उद्वयस्फुटिउभसे पहिले सूक्ष्ममात्मापरिणित गुणस्थानके अन्तिम समयमें  
 स्फुटिउभ होता है तत्पश्चात् उद्वयही स्फुटिउभ होता है। क्योंकि पांच ज्ञानावरणीय  
 बार ब्रह्मावरणीय और पांच धन्तगण हम जीवह प्रकृतियोंका शीघ्ररूपाय गुणस्थानके  
 अन्तिम समयमें तथा यदातीति व उद्वयगण हम ही प्रकृतियोंका अयोगिकेबसीके अन्तिम  
 समयमें उद्वयस्फुटिउभ होता जाता है। क्या लोकसे क्या परलोकमें या क्या लोक  
 परलोकसे हमका बन्ध होता है? इस प्रसंगका भाव्यकर चर करते हैं। जन यहां पहिले इस  
 सम्बन्धमें लोक परलोक और लोक परलोकमें बंधमेबसी प्रकृतियोंका निरूपण करते  
 हैं। वह इस प्रकार है— नाटकपु देवायु मरकगति देवगति वैदिकिकराटीट, माहारक-  
 राटीट, वैदिकिकराटीटगोपांग माहारकराटीटगोपांग मरकगत्यानुपूर्वा देवगत्यानुपूर्वा  
 और लीयकट, ये ग्यारह प्रकृतिपर परलोकसे बंधती हैं। यहां उपसंहारमाया—

तीर्थङ्ग, नारकपु, देवापु, वैदिकिन्द्रादीनादि लह और दोनों आहारक, रम  
प्यारह मनुष्योक्त्य बन्ध परावृत्तने कहा गया है ॥ ११ ॥

पांच ब्रह्मावरणीय [चार वर्ज्यावरणीय] मिथ्यत्व हेतुत और कर्मज शक्ति, वर्जादिक चार, मनुष्यकण्ठपुच्छ, शिखर, मास्थिपट, गुम जगुम निर्माज और पांच अन्तःप, ये

पञ्चति । पचदमणावरणीय-द्वेषेदणीय सोटसकसाय णवणोकसाय तिरिक्खाउ-मणुस्साउ तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ पइदिय बीइदिय-तीइदिय चउरिंदिय-पधिंदियजादि-भेसात्थिसरीर छ-सअण-भेसात्थिसरीरअंगावग छसपइण-तिरिक्खगइ मणुस्सगइपाभोगाणुपुब्बि उषघाद सभाद-उत्सास-भादाय उज्जोव-वेविहायगदि तस थावर-पादर-सुहुम-प अत्त-अपञ्चत्त-पत्तेम-साधारण सरीर-सुमग-दुमग-सुम्सर-दुस्सर अप्पेज्ज-अणदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-पीपुञ्चागोदमिदि एदामो वासीत्थिपयडीओ सोदय-परोदण पञ्चति । एत्थ उवसहारगाहाओ—

णार्णमगय-मण-पिगिच्च-तज्जम्माहा ।

णिमिण अगुइलइअ दण्णवग्ग च मिच्छत्त ॥ १० ॥

सत्तात्थेणाओ यत्थेति इ सत्तण पयणीओ ।

सत्तय-परोदण वि वज्जनससियाओ दु ॥ ११ ॥

एत्थ णाणवरणंतराइयदसपयडीओ दसणावरणस चत्तारि पयडीओ चेव वधमाणापि । सव्वगुणहृणापि सोदण चेव भवति, मिग्गइट्ठिणहुडि जाव खीणकसमा ति एदसिं भिरंतरोदयादो सोदण वज्रमाणपयडीपममन्तेरे पादयेो वा । असकित्ति मिच्छइट्ठिणहुडि

सत्तारिअ प्रकृतिपां स्तोत्रयसे वचती है । पांच वदानावरणीय वा वेदनीय सोटसकसाय नी भोक्त्राय तिर्यगाय मनुष्यायु तिर्यगाति मनुष्यगति पक्कम्भिय छीम्भिय त्रीम्भिय यत्तुरि म्भिय पंचम्भिय आति भौतारिकशरीर, छह सम्मान भौतारिकशरीरपांगपांग छह संहनन तिर्यगातिप्रायास्यानुपूर्वी मनुष्यगतिप्रायास्यानुपूर्वी उपपात परपात उच्छवास आताप उपात बो विहापागति जस ग्याधर, पादर, सूक्ष्म पयान भयपान प्रत्येक साधारण शरीर, सुमग दुमग सुम्सर, दुम्सर आयेय अनायेय यदाकीर्ति भयदाकीर्ति मीचगोत्र और उच्छगात्र य प्यासी प्रकृतिपां स्वादय परादय नामो प्रकरसे वंचती है । यहाँ उपसंहारगाथायें—

पांच वदानावरण पांच अन्तराय वदानावरण चार, स्थिर आदिक चार, वैश्रम और कार्मण शरीर, निर्माण अगुक्कलसुक, यणादिक चार और मिथ्यात्व य सत्तारिअ प्रकृतियां ता स्वादयसे वंचती है और शाय प्रकृतियां स्वादय परादयसे वंचती है ॥ १२-१३ ॥

यहाँ वदानावरण य अन्तरायकी वद प्रकृतियां तथा वदानावरणकी पार ही प्रकृतियां वंचनपाती है । ये भयम बन्ध याग्य सत्र गुणम्यानांमो स्वादयसे ही वचती है क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे स्वरु क्षीणकयाय गुणम्यान लउ इनका निरन्तर उदय रहता है अथवा इनका पतन स्तोत्रयसे वंचनयामी प्रकृतियोंक भीतर है । यणाकीर्ति प्रकृतिको मिथ्यादृष्टिसे

प्राप्तं नवसदसम्माहृतिं ति सोदण्यं नि परादण्यं नि वधति, एतेषु दोषं एकद्वारसुदस-  
च्छेदो । तद्विमा सोदण्यं चैव वधति, सज्जदसंज्जदप्यनुष्ठितवर्तिमसु गुणसामसु नवसमिति-  
सदयामावाधो । उच्छागोदं मिच्छाहृतिं पनुष्ठि जाव सज्जदसंज्जदो ति एते सोदण्यं परादण्यं  
नि वधति, एतच्च दण्यं गोण्यमुच्छागोदमावाधो । तद्विमा पुन सोदण्यं चैव वधति, तच्च  
वीचागोदसुदयामावाधो । तस्मा नवसमिति-उच्छागोदामि सोदय-परादयवधा इति सिद्ध ।

एदासि वंधा किं सांतरो किं विरतरो किं सांतर निरतरो ति एदासि पुच्छं पत्रिवण्यं ।  
एतच्च एतेषु अत्यंतवंधेण ताव सांतर-विरतर-सांतरविरतरेण वन्धमाभयडीभो ज्ञानमेवो ।  
त जज्ञ — पञ्चपञ्चरणीय-नवदसपञ्चरणीय मिच्छत-सोत्तमकसाय-मय दुग्धं जाठचउक्क  
आह्वर-तेजा-कम्मइयसरी-आह्वरसरीरवगोका-वण्य-गध-रस-फास-अगुरुवल्बुज-उवचाद विमि-  
तित्वयर-पंचतराह्यमिति एदाभो चउवण्यं पयडीभो विरतर वन्धति । तत्त्व उच्छागरमाह —

सत्ताव भुजाओ तित्वफाह्वर-जाठचचरि ।

चउवण्यं पयडीभो वन्धति विरतर सभा ॥ १७ ॥

छेकर असेवममम्यरहृतिं तच्च स्वात्पमे मी बांधत है और परादयसे मी बांधते हैं क्योंकि,  
इस गुणस्यानाम यशस्वीति और अयशस्वीतिमिच्छ किसी प्रकार उदय रहता है । असेवम-  
सम्प्राप्तमिच्छा अपरक गुणस्यानामकी जीव सात्पसे ही बांधते हैं क्योंकि, संयतासंयतसं-  
यकर उपरि गुणस्यानामिच्छा अयशस्वीतिमिच्छा उदय नहीं रहता । उच्छागोदमे मिच्छाहृतिमे  
छेकर संयतासंयत तच्च जीव स्वात्पमे और परादयसे मी बांधते हैं क्योंकि यहाँ दोनो  
गात्रोंका उदय सम्भव है । परन्तु इससे अपरके जीव स्वात्पसे ही बांधते हैं क्योंकि,  
यहाँ भीचगात्रका उदय नहीं रहता । इस कारण यशस्वीति और उच्छागोद प्रवृत्तिपां  
स्वात्प परादयन वधनेवाली है यह सिद्ध होता है ।

अथ उक्त्वा आसन्नं प्रवृत्तिवैजा नन्ध कया सांतर है कया निरतर है और कया  
सांतर निरतर है ? ये तीन प्रश्न प्राप्त होते हैं । यहाँ इस नवसदसम्प्राप्तमे पत्रिवे सात्पद,  
निरतर और सांतर निरतर रूपसे वधनेवाली प्रवृत्तिवैजा बांध करत है । वह इस  
प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय मी वर्धनावरणीय मिच्छात्वा सात्पद कयाय अथ पुग्धना  
जापु चार, आहारकशरीर, शैत्यकशरीर, कर्मणशरीर, आहारकशरीरचंगोपांग वधे गन्ध  
रस स्पर्श अगुरुकमबुद्ध, उपधात निर्माण तीर्थकर और पांच अस्तारय ये बीजम  
प्रवृत्तिपां निरतर वंधती है । यहाँ उपसंहारमाथा—

सैतालीसं भुजप्रवृत्तिपां तीर्थकर, आहारकशरीर, आहारकशरीरचंगोपांग और  
चार जापु ये सब बीजम प्रवृत्तिपां निरतर वंधती है ॥ १४ ॥

कर्मो ध्रुवधियपयडीओ ? एदाओ चेव आउचठक्क-तित्थयउहारदुमविरहिदाओ ।  
एदासि पक्खणगाहाओ—

णाणत्तायत्तसय दसुण णर मिच्छ सांख्य कमाया ।

मयत्तम दुगुच्छा वि य तेआ कम्म च वण्णपद् ॥ १५ ॥

अगुरुजलदुग्धघातं निमिषं नाम च ह्येति सगदाह ।

बनो चन्द्रिष्यन्तो ध्रुवध्वीग पयटिक्का ॥ १६ ॥

गिरंतरबंधस्तं ध्रुवबंधस्तं को विसेसो ? जिस्से पयडीए पक्खओ जत्थ कत्थ वि जीवे  
अणादि-ध्रुवमत्थेण लब्धं सा ध्रुवबंधपयडी । जिस्से पयडीए पक्खओ<sup>१</sup> नियमेण सादि अद्भुतो  
अंतोमुहुतादिकरत्नवद्वाहं सा गिरंतरबंधपयडी । जिस्से जिस्से पयडीए अद्भुतपणं वधवोच्छेदो  
संभवइ सा सातरबंधपयडी । असादावेदणीय इत्थि-गजुसयवेद अइ-सोग-गिरयगइ-आइचठक्क-  
हेट्ठिमपचसंखण-बंधमपडण-गिरयगइपाआम्माणुपुत्ति-आणुओ-अप्पसत्थविहायगइ-थावर

शुक्र—ध्रुवबन्धी प्रकृतियां कौलसी हैं ?

समाधान—आर आयु रंथिंकर और दो आहारसे रहित ये उपर्युक्त प्रकृतियां ही  
हृष्यप्रकृतियां हैं । इन प्रकृतियोंकी निकषक शाखायें—

ज्ञानावरण और अंतराशरीरी बन्धन की ब्रह्मज्ञानावरण मिथ्यात्व खालि कपाय मयत्तमं  
दुगुच्छा वैदस्य और कामज शरीर, वर्णादिक धार, अगुरुजलधु, उपघात और निमान  
सामकर्म य सैतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं । इनका प्रकृतिबन्धन नादि अनादि ध्रुव पर  
अध्रुव रूपस धार प्रकारका हाता है ॥ १५-१६ ॥

शुक्र—गिरंतरबंध और ध्रुवबंधमें क्या भेद है ?

समाधान—जिस प्रकृतिका प्रत्यय जिस किसी भी जीवमें अनादि एवं ध्रुव मायम  
पाया जाता है वह ध्रुवबंधप्रकृति है और जिस प्रकृतिका प्रत्यय नियमस सादि एवं अध्रुव  
तथा अस्तमुह्यत मादि फल तक अवस्थित रहनेपाया है वह गिरंतरबंधप्रकृति है ।

जिस जिस प्रकृतिका कालक्षयसे पञ्चगुण्ठश्च सम्भव है यह साम्प्रत्यक्षप्रकृति  
है । अनादावेदनीय त्वेति नर्पुमरुषश्च अस्ति धातु, मरकजानि आनि धार, अयस्मन  
पांच संस्थान पांच संहनन मरकजतिप्रापाण्यानुपूर्वा आनाय उद्यम अमनासविहाया-

१ आदिनि मिच्छ कमाया मय हेज-गुण विनिज कमाओ । सगदाह-गुणा बहूना तनाय द इया ॥  
नो च ११४

२ मतिगु पओजच इति पाठ ।

३ मतिगु पचआ इति पाठ ।

सुहृन्-अपञ्चत साहस्र-अधिर असुह-दुभग-दुस्तर मयाप-ज-अशसकिष्ठी एवमो योवीसप्त  
 शीमो सन्तर वञ्चति । अशसेमाशो यतीस पयडीशो सांतर शिरन्तर वञ्चति । तस्मिन् यस्मिन्निरो  
 म्निरे । तं पदा— सप्तशतकीय पुरिसवेद इस्स-रदि-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-देवमइ-पयिदि-  
 पादि माराडिय-वेउअधियसरीर-समन्तरससठण-आराडिय-वेउअधियसरीरजोगेवण वञ्चरिस्स  
 मरणापयममरिससठण-निरिक्खगइ मणुस्सगइ-देवगइ-पाम्माणुपुअ-मवाडुस्सस-समत्त-  
 विहायमइ-सम उदर-य-अश-पत्तयसरीर-धिर-सुह-सुभग सुस्तर आदेअये असकिदि-मीपुअमइ-  
 मिदि सांतर-मिरन्तरण वञ्चमाणपयडीशो । एव उवमंहारगाहाओ—

इमि-गउमपयन्ता जाअउरन्ता अस्तार गिरयदुगं ।

आदाउ-जोगाइ-सोगासुइ पयमठगा ॥ १७ ॥

पयसुइमन्ता मिहापगइ अपसन्धिया अणे ।

पय-सुहमसुदरम चापीमिह सन्तरा वरा ॥ १८ ॥

यति स्थावर, सूक्ष्म अवस्था साधारण अस्थिर, अशुभ पुनर्ग दुस्तर, अमृत्यु भौत  
 अयशस्विति य योवीस प्रहृतिषां सात्तर रूपसे वंचती है । शेष वहीन प्रहृतिषां  
 सात्तर निरन्तर रूपसे वंचती है । उनका नामनिर्देश दिया जाता है । यह इस प्रकार  
 है—सत्ताज्जवीय पुरपयइ इत्येव यति निर्यगति मनुज्यगति वृक्षगति पथेन्द्रियजालि  
 भौतारिकशरीर, भौतियिकशरीर, समन्तरपयमस्थान भौतारिकशरीरपंगपांग भौतियिक  
 शरीरपंगपांग यज्जमयज्जमाराजशरीरमहत्तम निर्यगतिप्रापाम्मानुपूर्वी मनुज्ययति  
 प्रापाम्मानुपूर्वी वृक्षगतिप्रापाम्मानुपूर्वी पयपाल उच्छ्रयात्त यदास्तपिहायोगति व्रम,  
 यत्तर, पयोज प्रयज्जशरीर, स्थिर शुभ सुभग सुस्तर, अशय यदाशक्ति  
 मीवगाइ भौत उच्छ्रयात्त य सात्तर निरन्तर रूपसे वंचनवासी प्रहृतिषां है । यही  
 उपनिषद्-आचार्य—

यतिवद अशुभकथं जाति चार, अमलाज्जवीय मरुगति मरुगतिप्रापाम्मानु  
 पूर्वी अमला उद्यान यतिषां शाक, अशुभ यथैव स्थान पांश यशुभ महत्तम अमला  
 मिहापगति स्थावर सूक्ष्म यति अशुभ जाति अशय यदा इमं प्रचार ये वीतीस  
 प्रहृतिषां यदा सात्तर पयमठगा ॥ १७-१८ ॥

१ गिरयदुगं गिरयदुगं गिरयदुगं गिरयदुगं ॥ दुस्तरपयमठगा पायमठगा अशययतिषो । यही  
 वीतीस यति अमला यति योवीस ॥ यो क. ४ ४ ४ ४

२ यति-सुहमसुदरम चापीमिह सन्तरा वरा ॥

३ एव उवमंहारगाहाओ— ॥ यतिवद अशुभकथं जाति चार, अमलाज्जवीय मरुगति मरुगतिप्रापाम्मानु  
 पूर्वी अमला उद्यान यतिषां शाक, अशुभ यथैव स्थान पांश यशुभ महत्तम अमला  
 मिहापगति स्थावर सूक्ष्म यति अशुभ जाति अशय यदा इमं प्रचार ये वीतीस  
 प्रहृतिषां यदा सात्तर पयमठगा ॥ १७-१८ ॥









[५७] । एतत् आहारदुग्मविविदे मिच्छादृष्टिपडिषट्पञ्चया पंचवचसां ह्येति [५८] । एदेहि पञ्चपण्डि मिच्छादृष्टी सुषुप्तमात्मपयदीभो वचदि । एतत् पंचमिच्छतपञ्चयेषु वच विदेसु पंचायपञ्चया ह्येति [५९] । एदेहि पञ्चपण्डि सामणसम्मादृष्टी सुषुप्तमात्मपयदीभो वचदि । पंचायपञ्चयसु ओराटियमिम्म-वठम्भियमिस्म कम्मइय-अपतल्लुपंभिनउत्तकंसु वच विदसु तदात्त पञ्चया ह्येति [६०] । एदेहि पञ्चपण्डि सम्मामिच्छादृष्टी सेत्तमपयदीभो वचदि । सेदात्तपञ्चयसु आराटियमिम्म-वठम्भियमिस्म कम्मइयपञ्चयसु पत्तिउत्तेसु छादात्त पञ्चया [६१] । एदेहि पञ्चपण्डि जमज्जसम्मादृष्टी अपिदमात्तमपयदीभो वचदि । एदसु जमज्जसम्मादृष्टि-पञ्चयसु अपञ्चयत्तज्जपठत्त आराटियमिस्म वेत्तम्भिय-वेत्तम्भियमिस्म-कम्मइय तमामज्जंसु वचविदसु सत्तत्तमपञ्चया ह्येति [६२] । एदेहि पञ्चपण्डि सुवदामंजदं अपिदत्तत्तम-पयदीभो वचदि । एषेसु सुवदामंजदस्य सत्तत्तमपञ्चयसु पञ्चयत्तज्जपठत्त एककपस-असंजमपञ्चयसु वचविदसु अवमेमा पत्तीम, तत्त आहारदुगे पत्तिउत्ते वउत्तीस पञ्चया ह्येति [६३] । एदेहि पञ्चपण्डि पमत्तमज्जं अपिदसोत्तमपयदीभो वचदि । एदेसु वउत्तीम-पञ्चयसु आहारदुग्मविविदे पत्तीम पञ्चया ह्येति [६४] । एदेहि पञ्चपण्डि अपमत्तमज्जं

— — —

इतमेवे आहारकं धीर आहारकमिच्छते अतः कर्त्तव्येन मिच्छादृष्टिने सम्यक् प्रत्यय पञ्चयन (५७) इति । इत प्रत्ययान् मिच्छादृष्टि मृषात्त सामह प्रवृत्तिर्गोचरा वाच्यता । इतमेव पांच मिच्छादृष्टिप्रत्ययान् अतः कर्त्तव्येन पञ्चाय (५८) प्रत्यय इति । इत प्रत्ययान् सामाजिकमप्यदृष्टि मृषात्त सामह प्रवृत्तिर्गोचरा वाच्यता । इत पञ्चाय प्रत्ययान् आहारिकमिच्छा वैविधिकमय कम्मय धीर चार अनन्तानुपगम्य प्रत्ययान् अतः कर्त्तव्येन तन्मात्रेण प्रत्यय इति (५९) । इत प्रत्ययान् सामाजिकमिच्छादृष्टि सामह प्रवृत्तिर्गोचरा वाच्यता । तन्मात्रेण प्रत्ययान् आहारिकमिच्छा वैविधिकमिच्छा धीर चारमय प्रत्ययान् मिच्छादृष्टि उपासीय प्रत्यय इति (६०) । इत प्रत्ययान् असंयतमप्यदृष्टि विवक्षित सामह प्रवृत्तिर्गोचरा वाच्यता । इत असंयतमप्यदृष्टिक प्रत्ययान् चार अतः प्रत्याख्यापयत्त आहारिकमिच्छा वैविधिक, वैविधिकमिच्छा चारमय धीर वसतामंयत इत मी प्रत्ययान् वच कर्त्तव्येन रीतीय प्रत्यय इति (६१) । इत प्रत्ययान् संयतानंयत विवक्षित सामह प्रवृत्तिर्गोचरा वाच्यता । इत संयतानंयत रीतीय प्रत्ययान् चार प्रत्याख्यापयत्त धीर व्याहृ असंयत प्रत्ययान् वच कर्त्तव्येन इत्य चारमय इति । इतमेव आहारकं चार आहारकमिच्छा मिच्छा इत्येव चारीय प्रत्यय इति (६२) । इत प्रत्ययान् सम्यक्तमंयत विवक्षित सामह प्रवृत्तिर्गोचरा वाच्यता । इत चारीय प्रत्ययान् आहारक विवक्षा वच कर्त्तव्येन चारीय प्रत्यय इति (६३) । इत प्रत्ययान् असंयतानंयत धीर

अपुत्रकर्मपद्मद्वयसमा<sup>१</sup> सत्वा च अपिदसोत्सपयडीमो वधति । एदेसु सेव छण्णोकसाएसु  
 अवणिदेसु सोत्स हति । १६ । एदेहि पञ्चएहि पदमअणियडी सोत्स पयडीमो वधदि । एत्थ  
 गवुसयवदे अवणिदे पण्णारस हति । १५ । एदेहि पञ्चएहि विरियमणियडी अपिदपयडीमो  
 वधदि । एदेसु इत्थिवदे अवणिदे चोहस हति । १४ । एदेहि पञ्चएहि तदियमणियडी  
 अपिदपयडीमो वधदि । एत्थ पुरिसवदे अवणिदे तेरह हति । १३ । एदेहि पञ्चएहि  
 चठत्थअणियडी अपिदपयडीमो वधदि । पुणो एत्थ काधसज्जले अवणिदे चारस हति  
 । १२ । एदेहि चारसपञ्चएहि पंचमअणियडी अपिदपयडीमो वधदि । पुणो एत्थ माण-  
 सज्जले अवणिदे एकचारस हति । ११ । एदेहि पञ्चएहि छट्ठअणियडी अपिदपयडीमो  
 वधदि । एदेहितो मायासज्जले अवणिदे दस हति । १० । एदेहि पञ्चएहि सत्तमअणियडी  
 अपिदपयडीमो वधदि । एदेहि सेव दसहि पञ्चएहि सुहुमसांपराह्यो<sup>२</sup> वि अपिदसोत्सपयडीमो  
 वधदि । दससु लेमसज्जले अवणिदे णव हति । ९ । एदे उवसंतकसाय-खीणकसाएहि  
 पञ्चमाणपयडीर्ण पञ्चया । एदेहितो मन्निमदो-दोमणवचिजोगे अवणिय ओरात्थियमिस्स

मपूर्वकरणमविष्ट उपशमक एवं क्षयक जीव विधक्षित सोलह प्रकृतियोंके बांधते हैं ।  
 इन्हीं प्रत्ययोंमेंसे छह नोकपायोंको अलग करवनेपर सोलह होते हैं (१६) । इन प्रत्ययोंसे  
 प्रथम अग्निवृत्तिकरण सोलह प्रकृतियोंको बांधता है । इनमेंसे नपुंसकपदेका अलग कर-  
 वनेपर पन्द्रह होते हैं (१५) । इन प्रत्ययोंसे द्वितीय अग्निवृत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंके  
 बांधता है । इनमेंसे स्त्रीपदेका कम करवनेपर चौदह होते हैं (१४) । इन प्रत्ययोंसे तृतीय  
 अग्निवृत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंको बांधता है । इनमेंसे पुरुषपदेको अलग करवनेपर  
 त्त्रह होते हैं (१३) । इन प्रत्ययोंसे चतुर्थ अग्निवृत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंके बांधता  
 है । पुनः इनमेंसे बोधसंज्ञकको अलग करवनेपर बारह होते हैं (१२) । इन बारह  
 प्रत्ययोंसे पंचम अग्निवृत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंको बांधता है । पुनः इनमेंसे मानसज्ज-  
 लका कम करवनेपर ग्यारह होते हैं (११) । इन प्रत्ययोंसे छठा अग्निवृत्तिकरण विधक्षित  
 प्रकृतियोंको बांधता है । इनमेंसे मायासज्जकको अलग करवनेपर दस होते हैं (१०) । इन  
 प्रत्ययोंमें सप्तम अग्निवृत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंके बांधता है । इन्हीं दश प्रत्ययोंसे  
 सहस्रमाग्यपयिक मी विधक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है । इन दश प्रत्ययोंमेंसे  
 सामसंज्ञकको अलग करवनेपर नौ प्रत्यय होते हैं (९) । ये नौ उपशान्तकपाय और  
 शीघ्रकपाय जीवोंके द्वारा बांधी जानेवाली प्रकृतियोंके प्रत्यय हैं । इनमेंसे मध्यम

१ जर्नी अपुत्रकर्मपद्मद्वयसमा इति पाठ ।

२ मरिचु चापयका इति पाठ ।

कर्मव्यवहारयोगसु पवित्रतेषु सतं ह्येति । ७ । अदेहि सखि पश्यहि सखिनिने  
वेषि । एष उपसंहारमाह्वयो —

चतुष्पञ्चगो वयो पञ्चमे उपसिनिह निपञ्चयो ।

मिस्तुगमिञ्चो उग्रमिदुग च सेसेगदिसिहि ॥ २० ॥

उग्रमित्पञ्चपुण पुण दुपञ्चयो जोगपञ्चयो तिप्यं ।

सामगपञ्चया खलु अङ्गुणं ह्येति कम्मणं ॥ २१ ॥

पणउण्णा इर वण्णा तिइल छाशुल सत्ततीत्ता य ।

चदुरीस दु वारीत्ता सोलस एगुग जल नय सव ॥ २२ ॥

संपदि एगुमव्यउत्तरुत्तरपञ्चप चोइसवीत्तसमासेसु मपिस्तामो । तं पञ्च—

दो दो अर्थात् नृपा और मन्त्रसुपा मन और कर्मन योनोंको मलय करके औदारिकमित्र व  
कर्मन कर्मयोगको मित्रा वनपर सात होते हैं (७) । इन सात मन्त्रयोस सपेणी जिन  
[ एक सातवेदनीयको ] बोलते हैं । यहाँ उपसंहारगाथायें—

प्रथम शुक्लस्यामोमं चार्ये मन्त्रयोसे वन्य होता है । इससे ऊपर तीन शुक्लस्यामोमं  
मिन्त्रात्मको छोड़कर दोष तीन मन्त्रवचसुक वन्य होता है । देशांमन्त्र शुक्लस्यामोमं  
मिन्त्ररूप अर्थात् विष्णुविरतकर द्वितीय मन्त्रय और कगाय व पांम ये दोष दोनों उपरिम  
मन्त्रय रहते हैं । इनके ऊपर पांच शुक्लस्यामोमं कपाय और पांग इन दो मन्त्रयोके मिन्त्रात्त  
वन्य होता है । पुनः उपसंहारमोहादि तीन शुक्लस्यामोमं कर्मस योगमिन्त्ररूप वन्य होता  
है । इस मन्त्रर शुक्लस्याम कर्मसे आठ कर्मोके ये सामान्य मन्त्रय हैं ॥ २०-२१ ॥

पञ्चवर्न पञ्चामे तताम्बीस छयासीस सैतीस बीचीस दो बार बार्डस'  
संमह' और इनके आगे भी लक एक एक कर्म अर्थात् पञ्चरु चैवद ठेरद शाह  
न्यायद दहा दया' बी' बी' और साम' इस प्रकार कर्मसे मिन्त्रान्यादि अष्टादश  
तक आठ शुक्लस्यामोमं अभिजुतिकरणके जाल मालोमें तथा सुइमसाम्ययादि सपेणी  
केवली तक दोष शुक्लस्यामोमं वन्यमन्त्रयोसे संख्या है ॥ २२ ॥

अब एक समर्थमें राजेनाम उत्तरोत्तर मन्त्रयोको बान्ह जीवसमाप्तोमें बहते हैं ।

१ बर्नी पञ्चवीरपञ्चरुओ बानी पञ्चविह वैव वन्यरुओ इति पाठ ।

२ बर्नी सेनेनेदि बर्नी देनरीनेदि इति पाठ । चतुष्पञ्चगो वयो परमे वन्योने  
मिन्त्रादिदि पञ्चमिदुग च देनरीनेदि ॥ बी व ७८७

३ बी क ७८८

४ वन्यरुओ वन्यरुओ मिदुग कायात्त लण्णीता व । चदुरीता वारीता वारीत्तुदहायो दि ॥ दूने  
लोन्मयदुरी दूरन जात हादि दन दन । चदुरीत्तु दन नय वीरिदि नयता ॥ बी व ७८९-७९०

५ बर्नी -वन्यरु इति पाठ ।

तस्य ताव मिथ्याद्विद्वत्स जहण्णेण दस पञ्चया । पञ्चसु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इदिएण एक्कं कय्य जहण्णेण विराहेदि [ति] दोष्णि असज्जमपञ्चया । अण्णानुपवि षउक्क विसज्जेविय मिच्छत्त गयस्स आवलियमेत्तकालमण्णतानुपविचउक्कस्सुदयामावादो धारससु कमाएसु तिप्पि कमायपञ्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रदि-अरदि-सोगदोसु जुगळेसु एक्कदर जुगल । दससु जोगेसु एक्को जोगो । एवमेदे सव्वे वि जहण्णेण दस पञ्चया [१०] । पञ्चसु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इदिएण छक्कए विराहेदि ति सत्त असज्जम पञ्चया । सोत्थेसु कमाएसु चत्तारि कमायपञ्चया [४] । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रदि-अरदि-सोगो-जुगळेसु एक्क जुगल । मय दुगुळाओ दोष्णि । तेरसेसु जोगपञ्चएसु एक्को । एवमेदे सव्वे वि अट्ठमस होति [१८] । एवमेदेदि दस अट्ठसवहण्णुक्कस्सपञ्चएदि मिच्छा-इत्थि अप्पिदमेत्तसपयहीओ षवइ ।

एक्कमिदिएण एक्कं कय्य विराहेदि ति दोमसज्जमपञ्चया । सोत्थेसु कमाएसु चत्तारि कमायपञ्चया । तिसु वेदेसु एक्कं वेदपञ्चा । हस्स-रदि-अरदि-सोगदो-जुगळेसु एक्कदर जुगलं । तेरससु जोगेसु एक्को । एव जहण्णेण सासणस्स दस पञ्चया होति [१०] । उक्कत्तेज सत्तस पञ्चया होति, मिच्छत्तस्सुदयामावादो [१७] । एवमेदेदि जहण्णुक्कस्स

वह हस प्रकार है- उनम मिथ्याद्विद्वत् जघम्यम द्वा प्रत्यय होते हैं । पाँच मिथ्यातर्कोंमेंसे एक मिथ्याद्विद्वत् एक इन्द्रियम एक कायकी जघम्यम विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, अनग्तानुबन्धितपुरुषका धर्मय जन करक मिथ्यातर्क प्रान्त हुए जीवक मापमीमात्र कास तक अनग्तानुबन्धितपुरुषका उद्भय न रहनस बाह्य कार्योंमें तीन कयाय प्रत्यय तीन यद्गोंमें एक हान्य रति और भरति छोड इन दो युगलोंमेंसे एक युगल तथा द्वा योंमें एक याग हस प्रकार य मय ही जघम्यम द्वा प्रत्यय होते हैं (१०) । पाँच मिथ्यात्वोंमें एक एक इन्द्रियम छद कार्योंकी विराधना करता है अतः सात असंयम प्रत्यय स्वाल्ह कयायम चार कयाय प्रत्यय तीन यद्गोंमें एक हान्य रति और भरति-ताक इन दो युगलोंमें एक युगल मय य जुगल्मा दो तर्ह याग प्रत्ययोंमेंसे एक हस प्रकार य ममी मडाहद हस है (१८) । हस प्रकार इन जघम्य द्वा भाग उट्टए मडाहद प्रत्ययोंस मिथ्याद्वि जिय विविशित स्वाल्ह प्रदियोंकय विधिना है ।

एक इन्द्रियम एक कायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय सोमह कार्योंमें चार कयाय प्रत्यय तीन यद्गोंमें एक यद् प्रत्यय हान्य रति और भरति शाह इन दो युगलोंमें एक युगल तर्ह योंमें एक याग हस प्रकार स्वाल्हदमगम्यद्विद्वत् जघम्यम द्वा (१०) चार उट्टरग सत्तए प्रत्यय हस हैं । योंकि उगप मिथ्यातर्क उद्भय मही रहता (१७) । हस प्रकार अमस हस जघम्य भाग उट्टए द्वा य सत्तए प्रत्ययोंसे

दस सत्कारमपञ्चण्डि सासणसम्मादिद्वी अपिदसेत्तमपयवीओ वंघदि ।

एकैषिदिपण एक कय विराहदि ति दा असजगपञ्चया । जणतलुचि  
 चदुक्कवदिरित्तपत्तसकमापसु तिणि कयापञ्चया । तिसु वदेसु एकै । हस्स रदि वरदि  
 सोगादोडुगलेसु एकै । दससु जागेसु एकै । एवमदे सञ्चे वि ज्ञ होति [९] ।  
 एकैषिदिपण छत्तरण विराहदि ति मत्त असजगपञ्चया । जणतलुचिचिरिदिचारमकमापसु  
 तिणि कयापञ्चया । तिसु वदेसु एकै । हस्स रदि वरदि-सोगादोडुगलेसु एकै  
 जुगत्तं । दो मय दुगुछमो । दससु जागेसु एकै । एवमदे सोत्तम पञ्चया [१०] । एरदि  
 जहन्नुक्कम्मज्ज सौत्तसप चण्दि सम्मामिच्छइही असज्जदसम्माइही च अप्पिमोत्तमपयसीमो  
 मेवदि ।

एतन्नेभिर्दिण्य एकं कर्म विराहति ति दा भयजमपञ्चया । जगतामुपनि-  
 चन्त्याल्लभतन्कविरहिदमदृक्सायसु हो कर्मापञ्चया । तिसु वदसु एतन्ने । इत्य-  
 सागदोऽनुगतसु एतन्ने । जगज्जगसु एतन्ने । एवमदे अत्र ॥ ८ ॥ एतेभिर्दिण्य पंचकस्य  
 विराहति ति अजसंजमपञ्चया । दा कर्मापञ्चया । एतन्ने वदपञ्चमा । इत्य-  
 रदि-भरति सोमा

साक्षात्तनमम्यगृहि विधित्तन नम्यह मरुतिर्योका वाधन। हे ।

एक इन्द्रियम एक वायवी विगद्यता करता है इस प्रकार दो असेवम प्रत्यय अनन्तानुरन्धिष्यपुपका उाङ्कर द्वार बाह्य कयायम तीन कराध प्रत्यय तीन यदामे एक, हास्य एति और अरुण शाक इन वा पुगमासम एक, इसा पायामेस एक इस प्रकार दो सभी भी प्रत्यय दाल है (१०) । एक इन्द्रियम उह वायवी विगद्यता करता है इस प्रकार सल असेवम प्रत्यय अनन्तानुरन्धीय गहिल वरुह कयायाम तीन कराध प्रत्यय तीन यदामे एक, हास्य एति और अरुण शाक इन वा पुगमासम एक पुगमासम भौर पुगुत्ता व वा इसा पायामेस एक, इस प्रकार व सामह प्रत्यय दाल है (११) । इन अक्षय और उरुह भी और स मह प्रत्ययोंन वक्ष्यमिष्याद्वि मात असपतनस्यगद्वि शीव विरहित सामह प्ररुतिर्योवा वांघता है ।

एक इन्द्रियम एक कायकी विगणना करता है इस प्रकार वा मनसम प्रत्यक्ष  
अज्ञानानुबन्धितानुसृत्य और सम्प्रत्यान्वयमात्रजनकानुसृत्यम रहित वाच्य कर्माद्योय वा कर्माद्य  
प्रत्यक्ष तत्त्व बहामें एक, हास्य रहि और अगति ताक इस वा युगमाये एक ही पागोंमें  
एक, इस प्रकार व भाव प्रत्यक्ष जान है ( - ) । एक इन्द्रियम पांच कायकी विगणना  
करता है इस प्रकार छह मनसम प्रत्यक्ष वा कर्माद्य प्रत्यक्ष एक वय प्रत्यक्ष हास्य रहि  
भार बहामें ताक इस वा युगमायेंम एक मय और सुशुभता तथा ही पागोंमेंम एक, इस

दोण्ह जुगत्थणमेक्कदर । मय दुगुल्लओ । णवजोगेसु एकके । एवमेदे चोइस । १४ । एदेहि जहण्णुक्कस्सपच्च-चोइसपच्चण्हि सन्नदासन्नदो अपिदसोत्तसपयडीओ यधदि ।

चतुसंजलणेसु एकके कमायपच्चओ । तिसु वेदेसु एकके । हस्स-रदि-अरदि-सोग दोण्ह जुगत्थणमेक्कदर । णवसु ओगेसु एकके । एवमेदे पच जहण्णेण पच्चया । ५ । एकके कमायपच्चओ । एक्के वेदपच्चओ । हस्स रदि-अरदि-सोगदोण्ह जुगत्थणमेक्कदर । मयदुगुल्लओ । णवसु ओगेसु एकके । एवमेदे सत्तुक्कस्सपच्चया । ७ । एवमेदेहि जहण्णुक्कस्सपच्च-सत्त-पच्चण्हि पमत्तसंजदो अपमत्तमज्जदो अपुण्यकरणो च अपिदपयडीओ यधदि ।

एक्के सजलणकमाओ । एकके ओगे । एवमेदे जहण्णेण दो पच्चया । २ । उक्कत्सेण तिणि वेदेण सह । १ । एदेहि जहण्णुक्कस्सणे-तिणिपच्चण्हि अभियद्दी अपिदसोत्तसपयडीओ यधदि ।

ओमकमाओ एकके । [ एकके ] ओगपच्चओ । एवमेदेहि जहण्णेण उक्कत्सेण वि दोहि पच्चण्हि सुहुमसांपराहओ अपिदपयडीओ यधदि । उवति उवसत्तकमाओ खीक्कमाओ सजेगी च एककेण चैव ओगेण यधति । एत्थ उवसहारगाहा—

प्रकार ये चौदह प्रत्यय हैं । इन जघम्य और उत्कृष्ट भाठ य चौदह प्रत्ययोंसे संयतानंयत जीव विपक्षित साम्ह प्रवृत्तियोंको बांधता है ।

चार स-चननोंमेंसे एक कपाय प्रत्यय तीन यदोंमेंसे एक हास्य-रति और अरति शाक इन दो युगलोंमेंसे एक तथा नी यागोंमेंसे एक इस प्रकार जघम्यसे य पांच प्रत्यय हैं (५) । एक कपाय प्रत्यय एक वेद प्रत्यय हास्य-रति और अरति शाक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल मय और सुगुप्ता तथा नी । यागोंमेंसे एक इस प्रकार ये सात उत्कृष्ट प्रत्यय हैं (७) । इस प्रकार इन जघम्य और उत्कृष्ट पांच य तीन प्रत्ययोंसे प्रयत्नसेयत अप्रयत्नसेयत और अव्ययकरण गुणस्थानधर्मों जीव विपक्षित साम्ह प्रवृत्तियोंको बांधता है ।

एक सजलमकपाय और एक पांग इस प्रकार ये जघम्यसे या प्रत्यय (२) तथा उत्कृष्टसे येवक साय तीन (३) इस प्रकार इन जघम्य और उत्कृष्ट दो य तीन प्रत्ययोंसे अनित्यविकरण गुणस्थानधर्मों जीव विपक्षित साम्ह प्रवृत्तियोंको बांधता है । सोमकपाय एक और एक पांग प्रत्यय इस प्रकार इन जघम्य य उत्कर्षमें भी दो प्रत्ययोंसे नृममभाण्य चाधिक तीन विपक्षित प्रवृत्तियोंको बांधता है । इसमें ऊपर उपशांतकपाय शीणकपाय और सपांगिकपल्ली कथ्य एक पांगमें ही सम्पन्न हैं । यहां उपसहारगाया—



दस अक्षरस्य सप्त सप्त सप्त साक्षस्य च षोडशं तु ।

अष्ट य चास्य षण्य सप्त निष्टु निष्टु एवमेव च ॥ २१ ॥

किमिदं ब्रूय ? एतिस्ते पुष्पस्य चोदसमीयसमासपञ्चिबद्धो उत्तरो वृत्तपदे । तं  
ब्रूय— मिच्छादिष्टी चतुर्दशितुत पंधदि । पंधरी उच्चागोर्दं गिरय तिरिक्छगर्दं मातृष  
दुगदिमंतुत पंधदि । जसकिंति गिरयगर्दि मातृष तिगदिमंतुत पंधदि । सप्तसो चोदस-  
पंधीभा गिरयगर्दं मोतृष तिगदिमंतुत पंधदि । उच्चागोर्दं गिरय-तिरिक्छगर्दं मोतृष  
दुगदिमंतुत पंधदि । जसकिंति पुन गिरयगर्दं मातृष तिगदिमंतुत पंधदि । सम्भामिच्छादिष्टी  
जसंजदसम्भादिष्टी च सप्तसपंधीभा गिरयगर्दं तिरिक्छगर्दं मातृष दुगदिमंतुत पंधदि ।  
संजदसंजदपंधि जाव अपुननननननन संजदं भागं गंतुं द्विष्टा सि अपिदसंजदसपंधीभा  
देवगदिमंतुत पंधदि । उवरिगा अगदिमंतुत पंधदि ।

कदिमदीया सामिपो ? एतिस्म पुष्पस्य परिहरो वृत्तपद— मिच्छादिष्टी चतुर्दशिया

मिच्छादिष्टी वृत्तस्थानम वा य अठारह नात्वाद्वनम स्या य सप्तारह वा गुणस्थानम  
अथान मिश्रं भौर अविशानस्यगर्दिम मा य नासद संघसानयतमं भाव  
भौर बीद्व ममसंघसानद्विष्टी तानमं पांथ य नात् अतिरुक्तिरजमं वा य तान गुरुम  
नाम्नरायमं वा तथा उपगामनकाय शीनकाय एव स्यागिजयमी गुणस्थानम एकमात्र  
इत प्रचार एक जीवक एक समयम अथय य उरुष्ट वनप्रमथय य य जान ॥ २१ ॥

बनितरी गतिग संयुक्त वन्यक है ? इत प्रभका र्थाह जीवसमाप्त सप्तार  
उत्तर ब्रूय है । यह इत प्रभका है— मिच्छादिष्टी और पाता यातर्बोस रायुक्त उक्त  
महानिर्घोका वन्यक है । मिच्छा इतना है कि उच्चागावद्धा मरकगति और निर्वगगति  
छाड़कर राय वा गतिर्घोका संयुक्त बांधता है । यदाबनितरा मरकगतिवा छड़कर तीन  
गतिपात संयुक्त बांधता है । नागादन गुणस्थानम यातर्द महानिर्घोका मरकगति  
छाड़ तीन गतिपात संयुक्त बांधता है उच्चागावद्धा मरक य निर्वगगतिवा छड़ राय  
वा गतिपात संयुक्त बांधता है । विष्णु गताजीनका मरकगतिवा छड़ राय तीन गतिपाते  
संयुक्त बांधता है । मरकगतिवा छड़ और धर्मपतनस्यगर्दि जीव नातर्द महानिर्घोका  
मरकगति य निर्वगगतिवा छड़ वा गतिर्घोका बांधता है । गतागतपतन सप्तार धर्मपतन  
बातर्द संघसान यदुमात्र अ वर गतिग जीव निर्वगगति मरक महानिर्घोका वन्यक संयुक्त  
बांधता है । इतना उक्त और भगतिर्घोका बांधता है ।

उक्त महानिर्घोका विगत गतिपात जीव गतामी इत है ? इत प्रभका परिहार  
ब्रूय है— मिच्छादिष्टी वृत्त स्थानम वा य अठारह नात्वाद्वनम स्या य सप्तारह वा गुणस्थानम

सामिषो । सासणसम्माइही सम्माभिच्छादही असज्जदसम्माइहिणो वि चटुगदिया सामिषो । दुगदिसज्जदसज्जदा सामिषो । उवरिमा मणुसगदिया चेष । अट्ठाणं सुत्तसिद्धं । पढम अपढमचरिम चरिमसमयपधवोच्छेदपुच्छविषयपरुषणा वि सुत्तसिद्धा चेष ।

किं सादिभो किमपादिमा किं ध्रुवो किमद्भुवो यधो वि एदिस्से पुच्छए पुच्छदे—  
चोइसपयसीणं यधो मिच्छाइष्टिस्स सादिभो, उवसमसेहिमिह पधवोच्छेद कद्रूप हेहा ओइरिय वधम्मादिं करिय पडिबणमिच्छत्ताण सादियवधोवत्तमादो । अणादिगो, उवसम-  
सेहिमपात्तुमिच्छादिज्जीवाणं वधस्स आदीए अमावादो । ध्रुवो यधो, अमविषमिच्छादिद्वीप  
वधस्स वोच्छेदामावादो । अद्भुवो, उवसम-खवगसेहिं वडणपाओगमिच्छाइष्टिपधस्स ध्रुवत्ता  
मावादो । असकिवि उच्चागोइयाणं पि एवं चेष । यवरि अणादि ध्रुववत्ता गत्थि, अजसकिवि  
णीचागोइयाणं पडिवन्त्ताण समवादो । सव्वगुणद्वाप्पेसु सेससु चोइसपुवपयसीणो सादि-अणादि  
अद्भुवमिदि तिहि विषयेहि वज्झति । ध्रुवमगो गत्थि, तेसिं मविषाणं गियमेण वधवोच्छेद

इति श्रीत मसंयतसम्यग्दृष्टि मी चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं । दो गतियोंके  
संप्रताद्यत जीव स्वामी हैं । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव स्वामी हैं ।  
बन्धाध्यक्ष सूत्रसं सिद्ध है । प्रथम अग्रधम अचरम और चरम समयमें होनेवाले बन्धपुच्छ  
सम्बन्धी प्रत्यक्षविषयक प्रकृपणा मी सूत्रसिद्ध ही है ।

अथ क्या सादिक बन्ध होता है क्या अनादिक बन्ध होता क्या ध्रुव बन्ध  
होता है या क्या मधुव बन्ध होता है ? इस प्रश्नका उत्तर कहत हैं— श्रीब्रह्म मनुष्योंका  
बन्ध मिथ्यादृष्टिके सादिक होता है क्योंकि उपशमधेयीमें पण्यपुच्छेत् करके पुनः नव्वि  
उत्तरकर बन्धका प्ररम्भ करके मिथ्याग्रन्थे प्राप्त हुए जीवोंके सादिक बन्ध पाया जाता है ।  
अनादिक बन्ध होता है क्योंकि उपशमधेयीपर नहीं चढ़े हुए मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धने  
सादिक अभाव है । ध्रुव बन्ध होता है क्योंकि, अमध्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धका कभी  
पुच्छ नहीं होता । मधुव बन्ध होता है क्योंकि उपशम और क्षयके धेयीपर चढ़नेके  
योग्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका बन्ध ध्रुव नहीं होता । यथाश्रित्य और उच्छेदोत्तर मनुष्योंका मी  
मिथ्यादृष्टिके इसी प्रकार ही बन्ध होता है । विशेषतया है कि इन दोनों मनुष्योंका उत्पन्न  
अनादि और ध्रुव बन्ध नहीं होता क्योंकि इसकी प्रतिपक्षभूत अयथाश्रित्य और नीच  
ग्राहका बन्ध सम्भव है । दोष वर गुणस्थानोंमें श्रीब्रह्म ध्रुवमनुष्यों सादि अमादि और  
अध्रुव इन तीन विकल्पोंमें वधती है । यहाँ ध्रुव मंग नहीं है क्योंकि, उन मध्य जीवोंके

समवाये । अस्तित्वि-उष्णमादाय पुन वधो सम्बन्धगुणद्वयेषु सादि मद्धो येन ।

णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणताणुबधिकोह-माण-  
माया-लोम-इत्येवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगह-वउसठाण-वउसघटण-  
तिरिक्खगहपाओग्गाणुपुन्वि उज्जोव अप्ससत्यविहायगह दुभग-दुस्सर  
अणादेज्ज-णीवागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ७ ॥

एवं पुन्यसुचं देसाम्मासियं च । तेज किं मिच्छन्ही वधो किं सात्तपसम्माह्वी  
वधो किं सम्मासिन्नाह्वी वधो एवं गत्तु किमयोगी किं सिद्धो वधो, किमदेसिं कम्मा  
वधो पुनं वच्छिन्न-इति, किमुदो किं दो वि समं वोच्छिन्न-इति, एहाओ किं सादएण वच्छति  
किं परोदएण, किं सादय-परोदएण किं सातरं वच्छति, किं गिरतरं वच्छति, किं सातरं किरतरं  
वच्छति, किं पच्छएहि वच्छति, किं पच्छएहि विहा वच्छति, किं गहसंजुसं वच्छति, किमगह  
संजुसं वच्छति, कदिगदिया प्देसिं वधसामिणो होति, कदिगदिया न होति, किं वा वधद्वयं,  
किं वरिसमए वधो वोच्छिन्न-इति, किं पढममए, किमपढम-अवरिसमए वधो वोच्छिन्न-इति,

विषयसं वच्छन्नुच्छेदं सम्भवति । परन्तु यथाकीर्ति और उच्छवगोच प्रकृतियोरत्र वध सर्व  
गुणस्थानां सति और अशुच ही होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रवत्प्रवत् स्त्यानष्टि, अनन्ताणुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोम,  
रुवेद, निर्यगायु, निर्यगति, चार सम्मान चार संहनन, निर्यग्मातिप्रत्योम्यानुपूर्वी, उषोव,  
अप्रवृत्तिविहायेतानि, दुर्मम दुस्तर, अनन्दय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोरत्र क्वेन वन्दक  
है और क्वेन अवन्दक ? ॥ ७ ॥

यह पृच्छएव मी वचसाम्मासिक है । अतएव क्या मिच्छाएहि वन्दक है क्या सात्ता-  
वज्जमयगह वन्दक है क्या सम्मासिन्नाह्वी वन्दक है इस प्रकार जाकर क्या अवोपी  
वन्दक है क्या मिद्ध वन्दक है, क्या इन कर्मोंका वन्द्य पूर्वमिं व्युत्थिष्ठ होता है क्या  
उत्तर पूर्वमिं व्युत्थिष्ठ होता है क्या दोसों साथ ही व्युत्थिष्ठ होते हैं ये प्रकृतियों क्या  
स्वात्मयमे वधती है क्या परस्परयस वधती है क्या वधादय-परस्परयस वधती है, क्या  
सात्तर वधती है क्या गिरत्तर वधती है क्या सात्तर गिरत्तर वधती है, क्या प्रत्ययोंसे  
वधती है क्या रिता प्रत्ययोंक वधती है, क्या गतिसेपुक्त वधती है क्या अगतिसेपुक्त  
वधती है, इन कर्मोंक वन्दक क्याही किन गतिसेपुक्त होते हैं व किन गतिसेपुक्त नहीं  
होते, वन्धाज्जान किमता है, क्या वरिस समयमे वन्द्य व्युत्थिष्ठ होता है क्या प्रथम  
समयमे वन्द्य व्युत्थिष्ठ होता है क्या अग्रथम मन्तरम समयमे वन्द्य व्युत्थिष्ठ होता है

किमेदासि सादिशो वधो, किमपादिशो, किं ध्रुवो, किमद्रुवो वधो ति ण्वाशो पुष्पमो एत्य  
अदन्वाशो । एदासि पुष्पममुत्तरपरूषणद्रुमुत्तरसुत्तं मणदि—

मिच्छाहृष्टी सासणसम्माहृष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा  
अवधा ॥ ८ ॥

एदं समाप्तिपुत्तं, सामित्पदापपरूषणगोरेण पुष्पसुत्तुद्विष्टसम्बन्धपरूषणादो ।  
सामित्पदाप व सुत्तादो वेष गन्धदि ति ण तेमित्त्यो वुच्चदे । किमेदासि वधो पुष्पं  
वोष्णिज्जदे, किमुद्रो पुष्पं वोष्णिज्जदे, एदस्म्यो वुष्पदे— धीमगिदितियस्स पुष्पं वधो  
वोष्णिज्जो, पम्प उदयस्स वोष्णेदो, सासणसम्मादिद्विचरिममए वधे किंते स्ते पम्प  
उवरि गतूण पमत्सज्जदमि उदयवोष्णेदोवलेमादा । अफ्तापुवविचठक्कत्तस्स वधोदया सम  
किद्वि, सासणसम्मादिद्विचरिममए एदेसि वधोदयाण जुगव वोष्णेददसपादो । इरियवदस्स  
पुष्पं वधा पच्छा उदयो वोष्णिज्जो, सासणमि वधे वोष्णिज्जं पच्छा उवरि गतूण अणि  
यद्वि उदयवोष्णेदो । एव तिरिक्खाठ-तिरिक्खाह तिरिक्खाहपाओगापुप्वि-उज्जोव

क्या इन प्रकृतियोंका सादिक बन्ध है क्या अनादिक बन्ध है क्या ध्रुव बन्ध है या  
क्या अग्रव बन्ध है न प्रकृत य प्रकृत यहाँ करना चाहिये । इन प्रकृतोका उत्तर कहनेके  
लिप भगवा सूत्र कहत है—

उपयुक्त प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि जीव वचक है । ये वचक  
हैं, श्रेय जीव अवन्धक है ॥ ८ ॥

यह देशामाग सूत्र है क्योंकि बन्धक स्वामित्य और अस्मानकी प्रकृति ब्राह्म  
यह पृच्छासूत्रमें उद्दिष्ट वध अर्थोका निरूपण करता है । बन्धस्वामित्य और अस्मान  
क्यों मृत्यु ही जाना जाता है अतः इन वान्तोका अर्थ यहाँ नहीं कहा जाता । 'क्या इनका  
बन्ध पहिले व्युत्पिष्ठ होता है या उदय पहिले व्युत्पिष्ठ होता है ? इसका अर्थ कहने  
है—स्वामित्य आदि तीन प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध व्युत्पिष्ठ होता है तत्पश्चात् उदयका  
व्युत्पिष्ठ होता है क्योंकि सामादनसम्यग्दृष्टिके अरम समयमें बन्धक नष्ट होनेपर पश्चात्  
ऊपर जाकर प्रमत्तसमयमें इनका उदयका व्युत्पिष्ठ पाया जाता है । अमत्तानुबन्धित  
एयका बन्ध और उदय दोनों साथ नष्ट होता है क्योंकि, सामादनसम्यग्दृष्टिके अरम  
समयमें इनका बन्ध और उदयका एक साथ व्युत्पिष्ठ होता जाता है । स्त्रीधका पूर्वमें  
बन्ध पश्चात् उदय व्युत्पिष्ठ होता है क्योंकि, सामादनगुणस्यानमें बन्धक व्युत्पिष्ठ  
होनेपर तत्पश्चात् ऊपर जाकर अमिद्विद्विद्वरण गुणस्यानमें उदयका व्युत्पिष्ठ होता है ।  
इसी प्रकार तिरंगापु तिरंगाणि निवर्गतिप्रायोगानुपूर्वी उद्योत और नीचगात्र प्रकृति



गहपाओम्मापुपुब्बि-उज्जेये मिच्छाद्दही सासणो च तिरिक्खगइसंजुचं वधंति । चउसअण  
चउसंघइणाणि मिच्छाद्दही सासणसम्माद्दही तिरिक्ख-मणुसगइसंजुचं वधंति । अप्सत्य-  
विहायगइ दुमग दुस्सर-अणदेज्ज पीचगोदाणि मिच्छाद्दही देवगईए विणा तिगइसजुच, सासणो  
देव-भिरयगईहि विणा दुगदिसजुच वधदि ।

अदि गदिया सामिणा चि पुत्ते बीणगिद्धितिय-अणतापुवचिचउक्कअदिपयईपं वधस्स  
चउमाइमिच्छाद्दहि-सासणसम्माविद्धिणो सामी । वधद्वारं सासणचरिमसमए वधवोञ्छेओ च  
सुचभिरिहो चि न पुणो बुचचे ।

किमेवासिं पयईप साविओ वधवो चि पुच्छासवओ अतो बुचचे । तं जहा—  
बीणगिद्धितिय अणतापुवचिचउक्कअणं वधो मिच्छाद्दहिदि सादिओ अणादिओ पुवो अद्वो  
च । सासणम्मि अणाइपुवेण विणा दुवियणो । सेसणं पयईल वधो मिच्छाद्दहि-सासणैसु  
सादिओ अद्वो च ।

**निद्रा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ ९ ॥**

एदं पुच्छसुच देसामासियं, सपेत्य पुब्बिस्सपुच्छाओ सव्वाओ पुब्बिअव्वाओ ।

तिर्यग्गतिप्रयाग्यानुपूर्वी और लघोलको मिथ्यादृष्टि और सामान्यनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गतिमे  
संयुक्त बांधते है । चार संस्थान और चार संज्ञानोंको मिथ्यादृष्टि और साक्षात्त  
सम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसंयुक्त बांधते हैं । अग्रस्तव्यिहायोगति दुर्गम दुस्वर,  
अमाद्य और लीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि वैवर्गलिक बिना तीन गतिधर्मोंसे संयुक्त और सामा  
न्यसम्यग्दृष्टि वैवर्ग लरक गतिक बिना दो गतिधर्मोंसे संयुक्त बांधता है ।

जिन गतिबाधे जीव न्यामी होते है वेसा कहनेपर उत्तर कहते हैं—स्थान  
पृथिव्य और मनस्मानुबन्धिचतुष्क आदि प्रकृतियोंक बन्धके चारों गतिधर्मोंमे मिथ्या  
दृष्टि और साक्षात्तसम्यग्दृष्टि स्वामी है । बन्धाध्यान और सामान्यनके चरम समयमें होने  
वाला बन्धपुच्छत्त्व स्वसे निर्विघ्न है अतः उस फिरसे नहीं कहते ।

क्या इन प्रकृतियोंका साविक बन्ध है ? इस प्रश्नसे सम्यग्धर्म के कहते हैं ।  
यह इस प्रकार है—स्थानपृथिव्य और मनस्मानुबन्धिचतुष्कका बन्ध मिथ्यादृष्टि शुल  
स्थानमें साविक, अमादिक, भुव और अधुव रूप होता है । साक्षात्त शुलस्थानमें अनादि  
और लुप्तके बिना दो प्रकारका होता है । दोय प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सामान्यन  
धानों शुलस्थानोंमे साविक व अधुव होता है ।

**निद्रा और प्रचल प्रकृतियोंका तीन बन्धक है और तीन अवन्धक ? ॥ ९ ॥**

यह पुच्छान्त्र दशामशोक है अनणव पहां सब पूर्णक प्रश्न पूछना चाहिये ।

बीजागादाणि, सामयमि बंधवाच्छेदे जाद पञ्च उचरिं गतूष संप्रशर्ममदमि उदय  
वाच्छेदादा, निरिच्छासुपूर्णाग भयज्जदमम्मादिदिह उदयपोच्छेदुवत्तमादो । एवं मन्त्रिम-  
चदुमंयथाणि, सामयमि बंधे बन्धके सने उचरिं गतूष सजागिमिह उदयवा उदादा । एवं  
पंच मन्त्रिमचदुमंयथाणि, सामयमि बंधे बन्धके सने उचरिं ब्रमत-उचमवतकसमसु कसंय  
दाण्ण दाण्णमुदयसउयमणादो । एवं मणमयविहायगदीण, सामयमि बंधे बन्धके सने  
उचरिं मजागिमिह उदयपोच्छेदादो । एवं दुमग मणादेज्जाण बसय, सामयमि बंधे बन्धके  
उचरिं ब्रमंजदमम्मादिदिह उदयवाच्छेदा । एवं दुस्सरस्म रि वतन्, सामयमि बंधे बन्धके  
सजागिकवत्तिदिह उदयवाच्छेदा ।

किं संपण्ण किं फलण्ण किमुमण्ण वज्जंति सि पुच्छए उत्तरा पुच्छे । तं जह-  
वीजगिद्धित्तिपमिदिबेज निरिच्छाउजं निरिसमाद चदुमयथाणि चदुमंयथाणि निरिच्छ  
मदिपामाम्मागुपुवि उजां ब्रमय बविहायगदिमंयथाणुपविचकुफं दुमग-दुस्सर मणादेज्ज  
बीजागादाणि य मिच्छादि-सामयमम्मादिदिहा सावण्ण रि पण्णएण वि पंचंति, निरिहा

योंका पूर्वमें बन्धनुच्छेद होता है तत्पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है क्योंकि सामा  
जनगुणस्वान्तमें बन्धका व्युच्छेद हो जानपर पश्चात् ऊपर जाकर संपतासेयत गुणस्वान्तमें  
उदयका व्युच्छेद होता है तथा निर्यगानिप्रायाग्यानुपूर्वी उदयका व्युच्छेद असंपत  
सम्पत्तदि गुणस्वान्तमें पाया जाता है । इसी प्रकार मरण बार संख्यामाका पूर्वमें बन्ध  
व्युच्छेद होता है तत्पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है क्योंकि सामान्जन गुणस्वान्तमें  
बन्ध के एक जानपर ऊपर जाकर संपागकेधमी गुणस्वान्तमें उदयका व्युच्छेद होता है ।  
इसी प्रकार ही मरण बार संहसन है क्योंकि, सामान्जनगुणस्वान्तमें एक बन्धक एक  
जानपर ऊपर सम्पत्तसेयत भव उपान्तात्तयाग गुणस्वान्तमें क्रमसः वा वा संहननोवा  
उदयभव द्वारा होता है । इसी प्रकार सम्पत्तान्तात्तयागानिक्क मी कथन करना चाहिय  
क्योंकि सामान्जनगुणस्वान्तमें बन्धक एक जानपर ऊपर संपागकेधमीमें उदयका व्युच्छेद  
होता है । इसी प्रकार दुमम र्थ मनादयका कथन करना चाहिय क्योंकि सामान्जनमें  
बन्धक एक जानपर ऊपर भयज्जदमम्मादिदिह उदयका व्युच्छेद होता है । इसी प्रकार  
दुमयग्य मी ब्रमा जातिव क्योंकि सामान्जनमें बन्धक एक जानपर संपागकेधमीमें  
उदयका व्युच्छेद होता है ।

उत्तरुणं मइनिगो कया म्मादयम कया पण्णयम वा कया कउ पण्णय उमयकपण  
बंधनी है" इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं । यह इस प्रकार है—व्याप्तानुच्छिन्नप र्वाय निर्य  
गायु निर्यगानि पण्ण संख्याम बार संहनन निर्यगानिप्रायाग्यानुपूर्वी उदात्त सम्पत्तान्  
विहायगानि सनम्मानुपविचयनुक्क पूर्वय दुस्सर मनादय मी बीजागाद इव मइनिगोका  
मिच्छादि भीर सामान्जनसम्पत्तदि म्मादयम मी भीर पण्णयम मी बाधन है क्योंकि

**भावाद्वा ।**

किं सातर किं गिगतर किं सांतर पितर बन्धंति ति एदस्मयो वुष्पदे— थीण  
मिद्धितियेमणताणुषविठक्क च गिगतरं बन्धइ, धुवपविसाणे । इत्थिवेदो मिच्छाद्वि-सासण  
सम्मादिट्ठिहि सातरं बन्धइ, बधगद्दाए खाणाए पियमेण पडियक्खपयईणं बंधममवादो ।  
तिरिस्खाठयं मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिट्ठिहि पितरं बन्धइ, अद्दाभयत्तणं बधस्स सककणा  
मावान् । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुप्पीओ सातरं पितरं बन्धंति ।

होदु संतरबधो, पडिवक्खपयईत्थं पपुवल्मादां ण भिरंतरबधो, तस्म करमाणु-  
वल्मादां चि वुत्ते वु च्चेदं— ण एम दोसा, तठक्कइय-वाठक्कइयमिच्छइद्दीणं सत्तमपुडवि-  
पेरइयमिच्छइद्दीणं च मवपडिषद्वयकिल्लेमेण भिरतरबधोवल्मादां । सामणम्मइद्दिपो दाणं  
पयडीयमेदासिं कवं भिरंतरबधया ? ण, सत्तमपुडवियामणाण तिग्गिन्वगईं मोत्तपण्णगइण पपा  
मावादां ?

इसमें कोई बिछड़ नहीं है।

उत्त प्रवृत्तियाँ क्या साम्प्रत क्या निरन्तर या क्या साम्प्रत निरन्तर बंधती हैं? इसका ज्ञापन कहत हैं—म्यात्रपुष्टिप्रय और सममानुपस्थितपुष्टि निरन्तर बंधती हैं क्योंकि, य प्रपञ्चर्था प्रवृत्तियाँ हैं। सौवर्धका मिथ्याहृदि और सामाद्वनसम्पद्दि साम्प्रत बाधत हैं क्योंकि बन्धककालक सौवर्धक हानिपर नियमन प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका बन्ध सम्भव है। मिथ्यागुच्छे मिथ्याहृदि और सामाद्वनसम्पद्दि निरन्तर बाधत हैं क्योंकि, कालके क्षयमे बन्धक रक्तक सम्राप है। नियगाति और नियगतिप्रायाग्यानुपूर्वीका साम्प्रत निरन्तर बाधत हैं।

शुक्र—प्रतिपक्षभूत ग्रहणियोंक वरुणकी उपलब्धि हानम भास्वर वरुण मन्द ही है किन्तु निम्नतर वरुण नहीं दो मरुता क्योंकि उसक कागर्जोक्ष मभाव है !

[illegible]

शुक्र—साम्बादित्यप्रवृत्ति इमं वामं ग्रहणियोक्तं निम्नरूपेण च ।

समाधान—यह टीका ठीक नहीं क्योंकि गतम पूर्णपक्ष गामादनमध्यस्थिपक्ष  
निर्पेक्षातिषा छाहकर भव्य गतपक्षोंका बन्ध ही नहीं होना ।

१ अ अन्धरा मित्रि हति वाड ।

५ अ-आद-पौ. संवत् १८८१ च-विषय हाँ पत्र ।



पदुसठाप-बहुसंपन्न-उन्मेष-अपसरविद्यामगदि-दुमग-दुस्तर भवादेऽस्मान्मिति  
वेदमेगा, मानरविच पदि भेदाभावात् । श्रीभागोदस्म तिरिक्खादिभगो, तेठ-बाउक्करप्पु  
यत्तमपुष्पिणरप्पु य श्रीभागोदस्म भित्तरं बहुपठेत्ताम् ।

किं पच्छएहि पण्णति किं तेहि विष्ठा एदस्सयो बुष्पद्— मिष्सादिह्मि मिष्सा  
सज्जम-कमाय भोगमणिद्वयदुहि मूलपञ्चएहि पणवणुत्तरपञ्चएहि इस-भहारसएगसमय  
संमतिमहणुत्तस्वपञ्चएहि य एदाभो पयडीआ वपदि । सासपसम्मद्वि मिष्सां मातृव  
तीहि मूलपञ्चएहि पचासुत्तरपञ्चएहि एगममयर्समिदइस मत्तारसज्जहणुत्तस्वपञ्चएहि य  
एदाआ पयडीआ वपदि । ववरि तिरिक्खाउअस्म वेठम्विपमिस्म-कम्मइयपञ्चएहि विष्ठा  
तेवण्ण भोउत्तिमिस्मेव च विष्ठा सत्ताउ पञ्चया मिष्सादिह्मि-स्वसमाय' ह्वेति ।

गमंनुत्तपुष्पाय अर्यो बुधेदे । तं अहं — श्रीगदिदित्य-अनेतापुर्बविषयठक्कं  
च मिष्सादिह्मि चउगइमनुत्तं, साम्पा विरयगईण विष्ठा तिगइसंतुत्तं बंधइ । इतिबेदे मिष्सा  
दिह्मि नामआ च विरयगईण विष्ठा तिगइमनुत्तं बंधइ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खाइ तिरिक्ख

चार संख्याय चार संख्यान उपाय प्रप्रशस्नविद्यापागति बुधेग दुस्तर भार  
भवाइय ग्रन्थियां श्रीरक्ष समाम है कथोकि सत्तरवर्षिष्यत्वर प्रति हम ग्रन्थियोमें  
उदीपयने अइ मेह मही है । श्रीगगाव निर्यगानिक समाम है कथोकि, तज्जकायिक और  
बापुकायिक तथा सत्तम पुषिपीक माउकिचोमें श्रीगयोत्रका निरन्तर बन्ध गावा जाला है ।

अप मृजाल ग्रन्थियां क्या प्रत्ययोंस बंधनी है या क्या उन्ने पिमा ? इसका  
अर्थ बहुत है—मिष्याएहि जीव मिष्याय प्रत्ययम कयाय और पात संघाचाम चार मूल  
प्रत्यकार पचवन उत्तर प्रत्ययान तथा एक समयमें सम्यय हानवाक इहा मीर अठारह  
अप्य प उगृह प्रत्ययोंस हम ग्रन्थियाका बांधन है । सामाज्जनसम्पदहि मिष्यायका  
छाडकर हाव तीन मूल प्रत्ययोंस पचान उत्तर प्रत्ययोंस तथा एक समयमें सम्यय इहा  
आर सत्ताउ अप्य प उगृह प्रत्ययाय हम ग्रन्थियोंका बांधन है । पिजाय यह कि निर्ब  
गायुक् केविचिमिभ और कार्यक कायपायक विष्ठा मिष्याएहि निरयम तथा केविचि  
मिभ कामक और भीदार्जिमिभक विष्ठा सामाज्जनसम्पदहि संज्ञानीस प्रत्यय हान है ।

गतिर्ययुक् प्रत्यय उल्लेख बहुत है । यह हम प्रचार है—म्यामगृहि भादि तीन  
तथा प्रमगानुबन्धिष्यत्तु'का मिष्याएहि जीव आर्यो गतिर्ययुक् और सामाज्जन  
सम्पदहि तज्जकायिक विष्ठा तीन गतिर्ययुक् र्ययुक् बांधना है । श्रीरक्ष मिष्याएहि और  
सागाज्जनसम्पदहि तज्जकायिक विष्ठा तीन गतिर्ययुक् र्ययुक् बांधना है । निर्यगानु निर्यगानि

गइपाभोगाणुपुम्बि-उज्जवे मिच्छाईदी सासणो च तिरिक्खगइसज्जुत्त वधति । चउसंयप  
चउसंघइणापि मिच्छाईदी सासणसम्माईदी तिरिक्ख-गणुसगइसज्जुत्त वधति । अप्सत्थ  
विहायगइ दुमग दुस्सर-अण्णेज्ज णीचागोदापि मिच्छाईदी देवगईए विणा तिगइसज्जुत्त, सासणो  
देव-भिरयगईहि विणा दुगदिसज्जुत्त वधति ।

कदि गदिया सामिणा ति जुते धीणगिदितिय अणताणुवधिवउक्कदिपयईण वंधस्स  
चउगइमिच्छाईदि-सासणसम्मादिद्विओ सामी । वधद्वार्यं सामुणवरिमसमए वंधवोन्नेओ च  
सुउगिदिओ ति न पुणे वुचचे ।

किमदासिं पयईण सादिओ वंधओ ति पुच्छसवदो अत्थो वुचचेद । तं जहा—  
धीमिदितिय अणताणुवधिवउक्कण वंधा मिच्छाईदिद्वि सादिओ अणादिओ-धुवो अद्वो  
च । सामुणम्मि अणाइधुवेण विणा दुविययो । सेमाणं पयईण वंधा मिच्छाईदि-सासणसु  
सादिओ अद्वो च ।

णिहा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ ९ ॥

एदं पुच्छसुचं देसामासियं, तणस्य पुम्बिस्तुच्छजो सज्जाओ पुम्बिद्व्याओ ।

तिर्यग्गतिप्रपाग्यानुपूर्वी और उद्योतको मिथ्याहृदि और सामान्यनसम्प्रादिति तिर्यग्गतिमे  
संयुक्त बांधत है । बार संन्यास और बार संहननोंको मिथ्याहृदि और सामान्यन  
सम्प्रादिति तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । अग्रशस्त्रविहायोगति दुर्मग दुस्वर,  
अनाश्रय और नीचगात्रको मिथ्याहृदि देवगतिके बिना तीन गतियोंसे संयुक्त और सामान्य  
नसम्प्रादिति देव व नरक गतिके बिना दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है ।

किन्तु गतिबाल जीव स्वामी होते हैं ऐसा कहनेपर उत्तर कहते हैं—स्थान  
पृथिव्य और अनन्तानुबन्धितगुण आदि प्रकृतियोंके बन्धक वारों गतियोंबाले मिथ्या  
हृदि और सामान्यनसम्प्रादिति स्वामी हैं । बन्धाण्णाम और सामान्यनके वरम समयमें हमें  
बाह्य बन्धमुच्छन्न स्वप्ने निर्विघ्न है अतः उक्त फिरसे नहीं कहने ।

क्या इन प्रकृतियोंका नादिक बन्ध है ? इस प्रश्नस सम्बन्ध बर्णन करते हैं ।  
यह हम प्रश्नर है—स्थानपृथिव्य और अनन्तानुबन्धितगुण बन्ध मिथ्याहृदि गुण  
स्थानमें नादिक, अनादिक भूव और अधुव रूप होता है । सामान्यन गुणस्थानमें अनादि  
और भूवके बिना दो प्रकारका होता है । दो प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याहृदि और सामान्यन  
बालों गुणस्थानमें नादिक व अधुव होता है ।

निद्रा और प्रत्यक्ष प्रकृतियोंका कर्त्तव्य बन्धक है और कर्त्तव्य अवबन्धक ? ॥ ९ ॥

यह पृच्छाण्ण वृत्तामर्शक है अनन्त यहाँ सब पृथोक्त प्रश्न पूछना चाहिये ।

पुण्ड्रसिंहासस्य संदेहविनाशणद्वयस्यैव मणदि

मिच्छाद्विष्णुद्वि जाव अपुन्वकरणपविट्टसुदिसजदेसु उवसमा  
स्ववा वधा । अपुन्वकरणद्वाए सखेज्जदिम भाग गतूण वधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १० ॥

एदं पि देसामासियसुते, देवदार्ण देवसामि-असामिणो च अपुम्भकरनडाए अपदम  
अचरिमसमए देवकाच्छेदं च मणिदूष सेसरथ सुधिय अवद्वान्ता । अपुम्भकरनडाए पदम  
सुत्तममते जिहा पयल्लपे देवो धक्कदि ति एरथ वसुध्वं । कषमेदं जम्बवे ? परमगुरूपएसरी ।

किमेवेति कम्मात्वे षष्ठो पुण्यं पञ्चमं समुदयस्य वाच्यमिति पुञ्चमं विष्णोः  
कीरेत् । एतद्वि षष्ठो पुण्यं विणस्सति, पञ्चम उदयस्य बोध्योः, अपुण्यकरणद्वय पदमसत्तम  
भागे षष्ठे षष्ठे संते उचरि गंतुं खीनकमायसं दुष्परिमसमयमिदं उदयवोच्यमिदं ।

किं सोदय्य षोडशस्य सोदय-परादयस्य बन्धति ति पुष्पाय उपपदे- एवमो दो वि  
पयहीमो सोदय-परादयस्य बन्धति, जायान्तरायपंचकस्तेव गृहार्तिं पुत्रादयस्तत्प्राप्तो । किं

श्रीमद्युक्त शिष्यक सम्बोधनो वृत्त करजक शिष्ये उत्तर सूत्र अतः है—

मिम्याद्यसि ठेकर अपूर्णकरअप्रतिष्ठादिसंयतोर्मे उपशमक और क्षपक तक बन्धक है । अपूर्णकरअक्षयके सम्प्रसारणे माग जाकर बन्धमुच्छेद होता है । ये बन्धक है, धन जीव अबन्धक है ॥ १० ॥

यह भी हेतुमार्गक सूच है क्योंकि वह बन्धुप्राप्त बन्धुव्यामी मत्वा भी तप्य  
मूर्धकरवक्रकके मध्यम मन्त्रम समयमें होनेवाले बन्धुमुच्छेदको कहकर शेष मर्त्यो  
सूचित कर व्यवस्थित है। मूर्धकरवक्रकके मध्यम न्तम भागमें निम्न और मन्त्र  
मूर्धकियोक्त बन्धु दक जाला है, ऐसा धर्मा कहना चाहिये।

शुक्ल—यह कैसे जाता जाता है ?

समाधान—यह परम शुद्धके उपदेशस आता आता है ।

क्या हम दोनों क्योंकि वन्य उदयसे पूर्व पश्चात् भयभीता सायमें व्युत्थित होता है ! इस प्रश्नका निर्णय करते हैं—वन्य वन्य पूर्वमें लपट होता है तत्पश्चात् उदयका व्युत्थित होता है क्योंकि अपूर्वकरणका एक प्रथम मासमा मासामें वन्यके रक्त जानेपर ऊपर जाकर हीनकृत्य गुणस्थानके शिखरमा समयमें उदयका व्युत्थित होता है ।

'बोम। कर्म प्रकृतिपां क्या स्वीकृत या क्या स्वीकृत परीक्षण के अधीन है ?'  
इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—वे दोनों ही प्रकृतिपां स्वीकृत परीक्षण के अधीन हैं। नवतंत्रिक, पांच  
बलावरण और पांच जलवायुके समान इह दोनों प्रकृतिपां प्रयोगपर्यन्त समाप्त है ।

सत्तरं गिरं सत्तरं गिरं गन्तंति ? एताभ्यो गिरं गन्तंति, सत्तेतात्तुपयसीसु पादाभ्यो । किं पयस्यपि वषदि ति पुच्छय पुच्छे— मिच्छाद्दृष्टी चदुहि मूलपयस्यपि पयवष्मणाणा सम्युत्तरपयस्यपि दस मद्गासपयसमयजहण्युक्तसपयस्यपि, सासणो मिच्छसेण विजा तिहि मूलपयस्यपि पंचामुत्तरपयस्यपि दस सत्तारसपयसमयजहण्युक्तसपयस्यपि, सम्मामिच्छाद्दृष्टी तिहि मूलपयस्यपि तेदात्तुत्तरपयस्यपि पयसमयपय-सोत्सजहण्युक्तसपयस्यपि, वत्तजदसम्माद्दृष्टी तिहि मूलपयस्यपि छ्मात्तुत्तरपयस्यपि पयसमयपय-सोत्सजहण्युक्तसपयस्यपि, सज्जदसंजदो मिस्मा-संजयेण सहिदकसाय जोगदोमूलमन्वपि सत्ततीमुत्तरपयस्यपि पयसमयमद्द चोत्सजहण्युक्तसपयस्यपि, पयससंजदो दोहि मूलपयस्यपि चदुवीमुत्तरपयस्यपि पयसमयपय-सत्तजहण्युक्तसपयस्यपि, अपयससंजदो अपयसकणो च दोहि मूलपयस्यपि वावीमुत्तरपयस्यपि पयसमयपय-सत्तजहण्युक्तसपयस्यपि वपति ।

संज्ञा—उक्त दोनों प्रकृतियों क्या भ्रान्तर, निरन्तर या साम्प्रत-निरन्तर बंधती हैं?

समाधान—य दोनों प्रकृतियों निरन्तर बंधती हैं, क्योंकि, ये सैतालीस भूच प्रकृतियोंक अन्तर्गत हैं ।

‘य प्रकृतियों किम किम प्रत्ययोंसे बंधती हैं ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—मिथ्या दृष्टि जीव और मूल प्रत्ययोंस पञ्चम भागा समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्ययोंस तथा दश और मठारह एक समय सम्बन्धी अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंस मित्रा एवं प्रबन्ध प्रकृतियोंको बांधते हैं । सासणसम्यग्दृष्टि मिथ्यात्वके बिना तीन मूल प्रत्ययोंसे पञ्चम उत्तर प्रत्ययोंसे तथा दश और सत्तरह एक समय सम्बन्धी अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । सम्मिमिथ्यादृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे सैतालीस उत्तर प्रत्ययोंस तथा एक समय सम्बन्धी मी व सासण अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंस उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । मत्तपतसम्यग्दृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंस छ्मासीम उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी मी और सासण अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । संयतामयत मित्र मत्तपम (संयता संयम) क साध करण एवं योग रूप दो मूल प्रत्ययोंसे सैतीस उत्तर प्रत्ययोंसे तथा एक समय सम्बन्धी भाट व धौत्तह अर्धम्य और उत्कृष्ट प्रत्ययोंस उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । प्रमत्तसंयत दो मूल प्रत्ययोंसे, चौपीस उत्तर प्रत्ययोंस तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सासण अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । अममत्तसंयत और अपूर्वकरजगुलस्यामयी जीव दो मूल प्रत्ययोंसे चारस उत्तर प्रत्ययोंस तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सासण अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं ।

गइसंजुतर्बपुञ्जए यरयो— मिप्पइही चउगइसंजुतं, साममो सिगइसंजुतं, सम्मामिप्पइही बमअदसम्माइही इय-मजुस्समइयजुतं, उवरिमा देवगइसंजुतं मिहा-ययत्थमो हो वि बंधंति । कइदिगदिया सामी, एदिस्सं पुञ्जए बुद्धे— मिप्पइही ससपमम्माइही सम्मामिप्पइही भसंअदसम्माइही चउगइया, दुगदिसंअदासंअदा, उवरिमा मजुस्सयइया सामी । अइयं सुगम । वोप्पिप्पणपदमो वि सुगमो । किं सादिमा ति पुञ्जए बुद्धे— मिप्पइहिमिहि मिहा-ययत्थं बंधो मारिमां अणादियो धुवो अइयो वि चउवियणो । सासुत्ताविगुणद्वाम्भु ति वियणो, बुवत्तामावाओ । सेसं सुगमं ।

### सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ ११ ॥

बंधो बंधवो वि चउत्थो । एदं पुञ्जमुत्तं देसामामिधं, समिपुं ङं पिठिसिद्धं सेम-  
पुञ्जविसयजिहेसत्तमादा । तेणत्थं सज्जपुञ्जमो मिहिसिद्धवामो । पुठिअदिसिस्समंमयपुञ्जव-  
मुत्तमुत्तं मयदि—

गतिचंपुक्कं वण्णसम्भन्धी प्रज्ञकं अर्थं कइतं हि— मिप्पाइहि जीव चारो गतिचोत्ते  
संपुक्कं सासावजसम्यग्गहि तीम गतिचोत्ते संपुक्कं सम्यग्मिप्पाइहि जीव असेवत  
सम्यग्गहि देव व मज्जुअ गतिमे संपुक्कं तथा उपरिम जीव देवगतिम संपुक्कं मिहा व  
प्रचक्षा दोमो प्रकृतिचोत्ते बांधते हि ।

किंयं गतिचोत्ते जीव वक्कं वामो प्रकृतिचोत्ते स्वामी हि ? इउ  
प्रज्ञकं उत्तर कइते हि— मिप्पाइहि, सासावजसम्यग्गहि, सम्यग्मिप्पाइहि जीव  
असेवतसम्यग्गहि चारो गतिचोत्ते हो गतिचोत्ते संपत्तासंपत्तं तथा उपरिम  
जीव मज्जुअमतिचोत्ते स्वामी इअतं हि । वण्णसम्भन्धं सुगमं हि । अरम समयाविरूप वण्ण  
मुठ्ठिअमवेधो मी सुगमं हि । वक्कं प्रकृतिचोत्ते वण्ण कया सादि हि ? इउ प्रज्ञकं  
उत्तर कइते हि— मिप्पाइहि गुणस्यामो मिहा जीव प्रचक्षा प्रकृतिचोत्ते वण्ण सादिक्,  
अमार्तिकं अउ वीर मज्जुअ इअ प्रकार चारो लउइअ होता हि । सासावजादि गुणस्यामो  
अउ वण्णके व होमेअ होय तीम प्रकारक वण्ण होता हि । होय सुचार्यं सुगमं हि ।

### सादावेदनीयक कोन वण्णक जीव कोन अवण्णक हि ? ॥ ११ ॥

वण्णं हावसे वण्णकइय मर्यं गइण करना चाहिये । यह पुञ्जमसूत्र देसामार्थक  
हि कपोत्ति, यह स्वप्नविशेषक पुञ्जाका निर्देश करक होय पुञ्जाविरूपक निर्देश नहीं  
करता । इसादिप यहां सब पुञ्जार्थोका निर्देश करना चाहिये । होकावुक्कं शिष्यके संशयको  
हूट करनक किये उत्तर गइ कइतं हि—

मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव सजोगिकेवलि ति वधा । सजोगि  
केवलिअद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ १२ ॥

एवं वि सुतं देसामासियं, सामित्तमद्वाणं वधविणासद्वाणं च भणित्पण्णेसिमत्थापम  
णिरमादो । तेपिदोसिं परूवणा करिदे । तं जहा— एतस्स वधो पुण्यमुदो पञ्चम  
वोच्छिज्जदि, सजोगिचरिमसमये वधे वोच्छिज्जणं सते पञ्चम सजोगिचरिमसमये उदयवोच्छेदादो ।  
सादावर्णीय मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव सजोगिकेवलि ति सोदणं परेदणं वि बन्धदि,  
सादावर्णीयपं परावर्त्तिदसणादो, म-परोदणदि वधविरोहामावादो च । मिच्छाद्विष्टिपुष्टि  
जाव पमवो ति सांतरो वधा, तत्थ पडिवक्खपयडीए वधममवादो । उवरि पिरंतरो,  
पडिवक्खपयडीए वधामावादो । जम्हि जम्हि गुणहाणे जत्तिया जत्तिया मूल्यवया पाणा-  
समयउत्तरपञ्चया एगसमयमहण्णुकत्तसपञ्चया च बुत्ता ताणि गुणहाणाणि तेत्तिपदि  
पचपदि सादावर्णीयं वधति ।

मिथ्यावृष्टि सेकर सयागिकवली तक सादावर्णीयके बन्धक है । सयोगिकेवलिभक्तके  
अन्तिम समयका प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, क्षप जीव बन्धक  
है ॥ १२ ॥

यह भी सूत्र वराहमिहिक है क्योंकि यह स्वामिन्ध बन्धाध्याय और वधविनाश  
स्थानको कहकर अन्य अर्थोंका निर्वेदा नहीं करता । इस कारण अन्य अर्थोंकी प्रकल्पना  
करन है । यह इस प्रकार है— आतावेदनीयका बन्ध पूर्वम आर उदय परवान् व्युच्छिन्न  
होता है क्योंकि सयागिकवलीक अन्तिम समयमें वन्धक व्युच्छिन्न होनपर पीछ अयाग  
केवलीक अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छिन्न होता है । आतावेदनीय मिथ्यावृष्टि सेकर  
सयागिकवली तक स्थानपम और परावर्त्तने भी वधता है क्योंकि यहाँ आता और  
मसाताक उदयमें परिवर्तन देखा जाता है तथा स्व परावर्त्तन बन्ध हममें कार विरोध भी  
नहीं है । मिथ्यावृष्टिसे लकर प्रमत्त गुणस्थान तक आतावेदनीयका बन्ध साम्प्रत है  
क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्ति ( अमाता ) का वन्ध सम्प्रत है । प्रमत्त गुणस्थानम ऊपर  
मिगतर वन्ध है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्ति बन्धका अभाव है । जिन जिन गुणस्थानमें  
जितन जितन मूढ प्रत्यय आता समय सम्प्रत की उत्तर प्रत्यय और एक समय सम्प्रत की अग्र  
प उत्तर प्रत्यय कह गये हैं, ये गुणस्थान उतन प्रत्ययोंस आतावेदनीयका बाधन है ।

मिच्छाद्वि विरयमण्य विणा तिगदमंजुतं । अप्यसत्थाय तिरिक्सगण्य सह कर्ष  
सत्तर्षो ? न, विरयमण्य व अर्षवियभ्यसम्भत्तामावायो । एव सत्तर्षो वि । सम्मामिच्छाद्वि  
अर्षवदसम्माद्वि दुगदमंजुतं वंषति विरय-तिरिक्सगण्य विणा । उपरिमा दधमर्षसंजुतं ।  
अपुष्पकरणस्य परिमसत्तमागप्यद्वि ठवरी अगदिसंजुतं वंषति । मिच्छाद्वि-सामपसम्माद्वि  
सम्मामिच्छाद्वि-अर्षवदसम्माद्विणो अगदिसंजुतं, अगदिसंजुतमंजुतं सामिपो, सेमा मजुम-  
गरीय वेव । वंषद्वानं वंषवोच्छेदार्थं च सुमर्म सुतुच्छता । सम्भेमु गुणद्वानु सत्ता-  
कदपीत्यस्य वंषो सति-अद्वाना, सत्तासत्तात्वं परवत्तनसंरूपेण वंषादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग अथिर असुह-अजसकित्तिणामाण  
को वधो को अवधो ? ॥ १३ ॥

एवं पुच्छसुते हेमामासियं, तपस्य सध्वपुच्छमा कस्यव्यामा । अवधा, वार्त्तिक्य

मिच्छाद्वि जीव नरकगतिकं विना तीन गतिपोंसे संयुक्त सत्तावेदनीयक्य  
वांचते हैं ।

सुक्त—अप्रहास्य विधगगतिकं साय कैस सत्तावेदनीयक्य वन्ध होता स-मन्ध है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि तिर्षमाति नरकगतिकं वयान् अत्यन्त अप्रहास्य नहीं है ।

इसी प्रकार सामाह्यसम्भगुधि की तीन गतिपोंसे संयुक्त सत्तावेदनीयक्य  
वांचते हैं । सम्भमिच्छाद्वि और अर्षवदसम्भगुधि वरक और तिरिक्सगण्य विना दो  
गतिपोंसे संयुक्त वांचते हैं । उपरिमा जीव वंषगणिये संयुक्त वांचते हैं । अपूर्वक्यक्य  
अन्तिम सत्तम भागसे छेकन ऊपरके जीव अगदिसंयुक्त वांचते हैं । मिच्छाद्वि, सामा-  
ह्यसम्भगुधि, सम्भमिच्छाद्वि एवं अर्षवदसम्भगुधि चारों गतिपोंवाक तथा दो गतिपों-  
वाके संवत्तासंयत स्वामी हैं । बाप जीव मजुमगणिये ही स्वामी हैं । वन्धमाध्याम और  
वन्धपुच्छद्वयान सूत्रोक्त होनेसे सुगम है । मन्ध गुणस्थानोंसे सत्ता और असाताक्य  
परिवर्तित वन्ध होनेसे सामावेदनीयक्य वन्ध साधि और मजुम है ।

असातावेदनीय, अरति, साक, अथिर, मजुम और अयशक्ति नामक्यक्य कील  
वन्धक और कील अकन्धक है ? ॥ १३ ॥

यह पूछाएव वेदामरीक है इसलिये यहाँ सब मन्त्रोंको करना चाहिये । अथवा

सुत्तमेदमिदि दृष्टव्व । तण्णिण्णयअण्णपट्टमुत्तरमुत्त मण्णि —

मिच्छादिद्विप्पहुडि जाव पमत्तसज्जदा वधा । एदे वधा, अवसेसा  
अवधा ॥ १४ ॥

एद देसामामिय सुत्तं, पुच्छिद्वन्थाणमगादम छिविद्वण अवहाणादा । तण्णेय सुहृदत्थाय  
अरपपरूणा कीरेदे । असादावेदर्णीयस्स पुच्छं वधा उदयो पच्छा धाप्पिण्णो, पमत्तसज्जदमि  
वधवोच्छेदे स्ति पच्छा अज्जेगिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । एवमरदि-सोगार्णं, पमत्त  
सज्जदमि वधं वहु मेत अपुप्पचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । अभिर-अमुहाण वि  
एव वध वत्तप्पं, पमत्तमि वधे विण्णे मज्जागिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । अज्जमिच्छीप्  
पुप्पमुदयो वोप्पिद्वन्नि पच्छा वधो, असज्जदमम्मानिद्विहि उदय वहु पच्छ पमत्तसज्जदमि  
वधवोच्छेदादो ।

असादावेदर्णीय अरदि-सागा मोदय पगदएहि वन्धति, उदयम्य पुवत्तमावादा ।

यह भाषाएँ सूत्र है देसा समग्रमा चाहिय । उमक निश्चयात्पादमाय उत्तर सूत्र कहत हैं—

मिप्पाद्युत्थि त्मक प्रमत्तमेयत तक वन्धक है । य वन्धक है, शेष जीव अवन्धक  
हैं ॥ १४ ॥

यह दृष्टान्तक सूत्र है क्योंकि, वह पूछ हुए अर्थोंक एक दशक छुकर अव  
स्थित है । इस कारण इसक द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा भी जानी है । असादावेद्  
नीयक पूर्वमें वन्ध भार पड्यान् उदय व्युत्पिठ्य होता है क्योंकि प्रमत्तगुणस्थानमें  
वन्धव्युत्पिठ्य हाजानपर पीछ अवोक्तवन्धीक अन्तिम समयमें उदयक व्युत्पिठ्य होता है ।  
इसी प्रकार अरति भीर दावक वन्ध पूर्वमें भीर उदय पड्यान् व्युत्पिठ्य होता है क्योंकि,  
प्रमत्तमेयतमें वन्धक मए हाजानपर पीछ अपूयकवन्धक आन्तम समयमें उदयक व्युत्पिठ्य  
होता है । अस्तिग मीर अज्जम प्रहृतिवोक्क भी इमी प्रकार ही वन्धावयवव्युत्पिठ्य कइना  
चाहिय क्योंकि प्रमत्तमेयतमें वन्धक मए हाजपर सयागकवन्धीक अन्तिम समयमें उदयक  
व्युत्पिठ्य होता है । अयज्जमिच्छीप् पुवमें उदय व्युत्पिठ्य होता है पड्यान् वन्ध  
क्योंकि अमेयतमम्यगहि गुणस्थानमें उदयक मए हाजानपर पीछ प्रमत्तमेयत गुणस्थानमें  
वन्धक व्युत्पिठ्य होता है ।

अमातावद्भीय अरति भीर दाव प्रहृतिवो क्वाद्य पगदयस वधनी है क्योंकि



मिथ्यादृष्टि प्रियगृह्य विना विगृह्यंभुतं । अप्सरस्थाए तिरिक्खगृह्य सह कपं  
सादृशं ? य, प्रियगृह्यं य अक्षतियधण्यमत्तयामादो' । एव सासजो वि । सम्मामिथ्यादृष्टि  
असंज्ञदसम्मादृष्टि दुगृह्यंभुतं वंथेति प्रिय-तिरिक्खगृह्य विना । उपरिमा देवगृह्यंभुतं ।  
अपूर्वकरकस्म परिमसत्तममागण्णुद्वि उवरि अगदिमंभुतं वंथेति । मिथ्यादृष्टि-सासजसम्मादृष्टि-  
सम्मामिथ्यादृष्टि-असंज्ञदसम्मादृष्टिणो अगुदिया, दुगृह्यसंज्ञात्तंज्ञा मामिषो, ससा मणु-  
गरीए वेव । वंथदत्त वंथवोप्पेददृष्टं च सुगमं सुपुत्तयो । सप्पेसु गुणद्वयेसु सादा-  
वद्वीप्तिस्म वंथा सादि-अद्वुवा, यथासादात्तं परवत्तणमकूळं वंथा ।

असादावेदणीय अरदि-सोग-अधिर असुद-अजसकित्तिणामाणं  
को वधो को अवधो ? ॥ १३ ॥

एह पुच्छसुते देसाम्मायिं वंथेरव मय्यपुच्छमा कयप्पाओ । अवधा, अमंथेन

मिथ्यादृष्टि जीव नरकगतिके विना तीन गतिषोस संबुद्ध सातावदनीयका  
वांथते है ।

सक-अमशस्म निर्पणसिक साध केस नातावेदनीयका वन्ध होना स मथ है ।

समाधान-नहीं क्योंकि निर्पणसि नरकगतिके समान अत्यन्त अमशस्म नहीं है ।

इति प्रथम सासावमसम्मादृष्टि मी तीन गतिषोसे संबुद्ध सातावदनीयका  
वांथते है । सम्मामिथ्यादृष्टि और अमंथतमम्यादृष्टि नरक और निर्पणसिके विना दो  
गतिषोस संबुद्ध वांथते है । उपरिमा जीव देवगणित संबुद्ध वांथते है । अपूर्वकरक  
अन्विम मत्तम मागस मेका ऊपरक जीव अगति संबुद्ध वांथते है । मिथ्यादृष्टि, सासा-  
वमसम्मादृष्टि, सम्मामिथ्यादृष्टि एवं असंज्ञतसम्मादृष्टि चारों गतिषोसाक तथा दो गतिषो  
वासे संवत्तासंयत क्वासी है । हाय जीव मणुप्यगणिक ही स्वामी है । वन्धावधान और  
वन्ध-पुच्छइस्यान सूत्राक हानमे सुगम है । सब गुणधामोमे साता और असाताका  
परिचरित वन्ध हानमे सातावेदनीयका वन्ध सादि और अशुद्ध है ।

असातावेदनीय अरति शोक, अम्भिर, अनुम और अयसईमि नामकमका केन  
वन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ १३ ॥

एह पुच्छस्म देसाम्माओक है इसविषये यहाँ सब प्रश्नोंका क्रमा चाहिये । अथवा

सुतमेरमिदि ददृश्य । तण्णिण्णयमणण्हमुत्तरमुत्त भण्णि —

मिच्छादिद्विष्टाहुहि जाव पमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा  
अवधा ॥ १४ ॥

एद देसामामिय सुत्तं, पुच्छिन्नस्थाणमगदम मिदिद्वय अवघ्राणादा । तपदेण सुहृदयाण  
अत्यपरुषणा कीदे । असात्तावेदर्णीयस्स पुच्छं वधो उदयो पच्छम बोधिच्छज्जो, पमत्तसजदमि  
वधवोच्छेदे सति पच्छम अजोगिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । एवमरवि-सोत्तापं, पमत्त  
सजदमि वधं गह मंत अपुच्छचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । अधिर-असुहाण पि  
एव वद वत्तव्यं, पमत्तमि वधे बिणट् सज्जागिचरिममयमि उदयवोच्छेदादो । अबसमिस्सीप्  
पुच्छमुदयो बोधिच्छज्जिदि पच्छम वधो, असजदमम्मादिद्विष्टि उदय गह पच्छम पमत्तसजदमि  
वधवोच्छेदादो ।

असात्तावेदर्णीय-अरवि-सागा मोत्तय पगदएहि वन्धति, उदयम्य पुवत्तामावादा ।

यह भाषाका सूत्र है यन्मा समसमा चाहिय । उसका निश्चयपत्त्यावसाय उत्तर सूत्र कहत हैं—

मिथ्याद्यष्टिम लङ्ग प्रसक्तमयत तक वचक है । य वचक है, शेष जति अवचक  
है ॥ १४ ॥

यह वदामर्शक सूत्र है क्योंकि, यह पूछ डुप अर्थोंक एक वदका छुकर भव  
स्थित है । हम कारण हमक छारा सुचित अर्थोंकी प्रकृषणा की जानी है । असात्तावेद्  
मीयका पूर्वमें वध और पश्चात् उदय व्युत्पत्ति होता है क्योंकि, प्रसक्तगुणस्थानमें  
वधव्युत्पत्ति हाजानपर पीछ अवोगकर्मिक अन्तिम समयमें उदयका व्युत्पत्ति होता है ।  
हमी प्रकार भवति और शोकका वध पूर्वमें और उदय पश्चात् व्युत्पत्ति होता है क्योंकि  
प्रसक्तस्थानमें वधक नष्ट हाजानपर पीछ अप्रकृत्यक अन्तिम समयमें उदयका व्युत्पत्ति  
होता है । अस्थिर और मनुष्य प्रवृत्तियोंकी भी हमी प्रकार ही वधादयव्युत्पत्ति कहमा  
चाहिय क्योंकि प्रसक्तस्थानमें वधक नष्ट होतपर सथागकर्मिक अन्तिम समयमें उदयका  
व्युत्पत्ति होता है । अवदाकीर्तिका पुषमें उदय व्युत्पत्ति होता है पश्चात् वध  
क्योंकि अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयक नष्ट हाजानपर पीछ प्रसक्तमयत गुणस्थानमें  
वधका व्युत्पत्ति होता है ।

असात्ताउद्गीय भवति और ताक प्रवृत्तियों वधादय परादयन वधनी है क्योंकि

एवमसक्तिर्हि वि, उच्यते अद्वयतत्वेन भवामावादा । जवरि सज्जसज्जदप्यद्वि सवरी  
 प्रोदपमेव वेधो, तत्त्व असक्तिरिति मोक्षाय अवधारण उदमाभावात् । जवरि-असुहाय सोदप्यव  
 वेधो, धुवोदयत्वात् । एदासि सम्पन्न पयडीयं मिच्छाद्विष्टिप्यद्वि क्षुप्ति वि गुणदोमेसु सांतेये  
 वेधो । कुरो ? एदासि पडिबधसपयडीयमेव वेधवाप्तेशमावादा । जापावरणादिसेत्सपयडीयं  
 जे पचय्या प्फुविदा एदसु क्षुप्ति गुणदोपमे तेहि चव पचयहि एदाया कप्ययडीया बन्धति ।  
 असद-अदि-संगे मिच्छाद्वि चउगइसेसुत्त, सासण्या निरयगई मोक्षाय तिगइससुत्त, सम्मा-  
 मिच्छाद्वि असदसम्मादिद्विषा देव-भगुमगइसेसुत्त, उवरिमा देवगइससुत्त बंधेति । एव  
 जवरि असुय-असक्तिर्हि भवामावादा । चउगइमिच्छाद्वि-सासण्यासम्मादिद्वि-सम्मानिच्छाद्वि  
 असदसम्मानिद्विषा सामी । दुगइसेजदासेजदा सामी । पमत्सेजदा भगुसा चव । वेधद्वय  
 बधवेत्तेद्वयं च सुगम । एताजो छ वि पयडीयो बधेण सादि भदुवाजो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ निरयगइ एहदिय-वेहदिय-तीह-  
 दिय-चउरिंदियजादि-हुडसठाण-असपत्तसेवट्टसरीरसघडण निरयगइ-

इतन्ना उच्यते नृप नहीं है । इसी प्रकार अवधारणांति भी स्वात्म्य परोक्षसे बंधती है क्योंकि,  
 उच्यते अद्वयतत्वेन भवामावादा इत्येक उक्त तीनों प्रकृतियोंसे कोई भेद नहीं है । विचार  
 इतना है कि संबतासंयतन छेकन भाव इत्येक तन्त्र परोक्षसे ही होता है क्योंकि, जहाँ  
 वराकीर्तिका छादकर अवधारणांति उच्य नहीं रहता । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका  
 बन्ध स्वल्पसे ही होता है क्योंकि, व अवधारणा प्रकृतियाँ हैं । इन छहों प्रकृतियोंका मिच्छा-  
 द्वि भावि छह । गुणस्वात्मानों के अन्तर बन्ध होता है । इसका कारण यह है कि यहाँ इनकी  
 प्रतिपक्ष प्रकृतियाँ बन्ध-मुच्छेदका अभाव है । आचार्यादि सासद प्रकृतियाँ आ प्रत्यय  
 इन छह गुणस्वात्मानों के रह गये हैं उन्हीं प्रत्ययान ही ये छह प्रकृतियाँ बंधती हैं । असात्ता-  
 कर्त्तव्य भवति और साक प्रकृतियोंके मिच्छाद्वि जीव चारों गतियोंसे संयुक्त सामा  
 इत्येकगद्वि मरकगति का छादकर तीन गतियोंसे संयुक्त सम्प्रतिमिच्छाद्वि और असेयत  
 तन्त्रगद्वि देव भगुम्य गतियोंसे संयुक्त तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।  
 इसी प्रकार अस्थिर अशुभ और अवधारणांति प्रकृतियोंका भी गतिसेयुक्त बन्ध आनना  
 काहित्य क्योंकि उनसे इतक व ह भेद नहीं है । चारों गतियोंके मिच्छाद्वि, सामाद्वि  
 तन्त्रगद्वि सम्प्रतिमिच्छाद्वि और असेयततन्त्रगद्वि क्यामी हैं । वे गतियोंके संपत्ता-  
 संयत स्थामी हैं । प्रमत्तमेवम भगुम्य ही क्यामी जान है । पम्पाचाल और बन्धमुच्छेद  
 स्थान सुगम है । ये छहों प्रकृतियाँ पन्धन सादि एवं अग्रय हैं ।

मिच्छात्त, नृपमन्त्रेव नारकयु नरकयति, तन्त्रेन्द्रिय, द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुन्द्रिय  
 जति, दुष्टमन्धान, अर्थात्तमृपात्तिकमंदन, मरुगतिप्राप्यानुपूर्ति, आनाय, म्पावर,

पाओग्गाणुपुब्बि-आदाव थावर-सुहुम-अपञ्जत्त-साहारणसरीरणामाणं  
को वधो को अवधो ? ॥ १५ ॥

एद पुच्छासुत्तं देसामासिय, तपेत्थ सन्वपुच्छाओ कयव्वाओ । पुच्छिदसिस्सस्स  
संसयणिणासणद्धसुत्तसुत्त मणदि—

मिच्छाद्दही वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १६ ॥

एद देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणां दोण चैव परूवणादो । तपेत्थेण सहदत्थाण  
परूवण कीरदे— मिच्छत्तस्स वधोदया सम वोच्छिज्जति, मिच्छाद्दहिचरिमसमए वधोदयवोच्छेद  
दंसपादो । एद्दिय-वीद्दिय-तीद्दिय चउरिंदियजादि आदाव थावर-सुहुम-अपञ्जत्त-साहारण  
सरीरण मिच्छत्तमगो, मिच्छाद्दहिम्हि वधोदयवोच्छेद पडि एदासि मिच्छत्तेण सह भेदामावादो ।  
अवुसयवदस्स पुव वधवोच्छेदो पच्छ उदयस्स, मिच्छाद्दहिम्हि वधे जेठे स्ते पच्छ अपि  
यद्दिम्हि उदयवोच्छेदादो । एव गिरयाउ-भिरयगइपाओग्गाणुपुब्बिणाणां वत्थ्वं, मिच्छाद्दहिम्हि

सस्स, अपयात्त और साधारणसरीर नामकमक कैन वन्धक है और कैन अवन्धक है ?  
॥ १५ ॥

यह पुच्छात्त वदामाशक है इनछिये यहां पूर्वांक सब प्रश्नोंको करना चाहिये ।  
पूछनेवाले शिष्यका भ्रमय मष्ट करनेक छिये उत्तर सज कहते हैं—

मिध्यादृष्टि जीव वन्धक है । ये वन्धक हैं, क्षप जीव अवन्धक है ॥ १६ ॥

यह वदामाशक सज है क्योंकि, यह वन्धस्वामित्व और वन्धाप्पाम इन दोनोंका  
ही प्रकल्प करता है । इस कारण इसमें सूचित अर्थोकी प्रकल्पना करते हैं—मिध्यात्व  
महत्तिका वन्ध और उदय दोनों भाव व्युत्पिन्न हात है क्योंकि मिध्यादृष्टि गुणस्थानके  
अन्तिम समयमें इसक वन्ध और उदयका व्युत्पन्न देखा जाता है । एके भ्रिय द्विभ्रिय  
त्रिभ्रिय चतुर्भिः श्रिय आति आताप स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारणसरीर  
महत्तियोंक वन्धोदयव्युत्पन्न मिध्यात्व महत्तिक ही समान है क्योंकि मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें  
होनेवाले वन्धोदयव्युत्पन्नके प्रति हमका मिध्यात्वके साथ कोई भेद नहीं है । मनुमकबंधका  
पूर्वमें वन्धव्युत्पन्न और पश्चात् उदयका व्युत्पन्न होता है क्योंकि, मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें  
वन्धके मष्ट होजानेपर पीछे अभिहितकरण गुणस्थानमें उदयका व्युत्पन्न होता है । इसी  
प्रकार मारकापु और मरकगमिमायाग्यानुपूर्वी नामकमका वन्धोदयव्युत्पन्न कहना चाहिये  
क्योंकि, मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें वन्धके मष्ट होजानेपर पीछे अर्मयनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें

बंधे बड़े संते पच्छ अमंजइसम्मात्तिमिदि उदयवाग्गेदादो । एव हुइसंछप-असंपत्तेवइ-  
सरीसंपइपार्थे पि वत्तम्, मिच्छइहिमिदि बंधे सिद्धे मते पच्छ महाक्रमेव सज्जेमिक्केवत्ति-  
अपमत्तमंजइसु उदयवाग्गेदादो ।

मिच्छत्तम् सोदएयेव बंधो । मियाठ विरयमइ-विरयमइपाभोग्मासुपुम्बिचामाओ एउ-  
दएयेव बन्धति, सोदएय सगवत्तम् विरोहादो । पधुममक्के-परिदिय बीरदिय-सीरदिय-चउरि  
दियबदि-हुइसंछप असंपत्तेवइसरीसंपइव-आदाव-आवर-सुहुम-अपग्गत्त-माहारममरीयपि  
सोदव-परिदइ बन्धति, उमयथा वि विरोहाभावादो ।

मिच्छत्त मियाठम प विरंतरवधियो, धुववधितादा अडाकत्तएव वधनिजमा-  
मावादो । अवसेससम्पपवधीओ सांतरे बन्धति, तामि पडिक्कत्तपयडिबंजमंमवादो ।

बहुदि मूलीपपइ पिबबंधाममापत्तमवठत्तरपपपइ इम अइतरसत्ताममपअइसु-  
क्कत्तपपपइ य मिच्छइही पदानो पयधीओ बंध । अवरि वेउम्बिय-वेउम्बियमित्स-  
आरत्तियमित्स-कम्मइयपपपइ विना द्दगबंधामपपपइ मियाठम वधइ ति वत्तम् । एवं

इसक उदयका म्मुच्छेइ हाता है । इसी प्रकार हुइसम्मात्त भी असमात्तपुपाटिकासंहनवध  
मी कहना चाहिये क्योंकि मिच्छादहि गुणस्यागमे वन्धक नष्ट होजायेपर पीछे वधा-  
क्रममे सर्वोपकेवमी भी असमात्तमवध गुणस्यागमे इसक उदयका म्मुच्छेइ होता है ।

मिच्छात्तका स्वोदयस ही वन्ध हाता है । नारकापु वरकमाति मीर वरकमाति  
मायोपापुपुर्वा नामकमे परत्तयम ही बंधने हैं क्योंकि, स्वोदयस इसक अपने वन्धका  
विरोध है । अपुंसकवइ एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्न्द्रिय अति हुइसंस्थान  
असमात्तपुपाटिकासंहनन जाताप क्यावर, त्थम अयथाप्य मीर साधारणकारीर स्वोदय  
परोदयमे बंधने हैं क्योंकि, दोनों प्रकारस मी इसका वन्ध हात्तमें कोई विरोध नहीं है ।

मिच्छात्त मीर नारकापु प्रकृतिपा निरन्तर बंधनेवाली हैं क्योंकि प्रकृतिभी  
हात्तसे कालक्रममे इसक वन्धविनाशका जमाव है । सोप सब प्रकृतिपा स्वात्तर बंधती  
हैं क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतिपाके वन्धकी सम्भावना है ।

बार मूळ प्रत्ययोस पञ्चकन नामा समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्ययोस तथा द्वाव व मडा-  
रइ एक समय सम्बन्धी अग्रव्य एवं वत्तइ प्रत्ययोसे मिच्छादहि इव प्रकृतिपाके बांधता  
है । विहाय इतना है कि वैदिकिक, वैदिकिकमिध भीदिकमिध मीर कर्मव कवचपोम  
मावबौक किना वह हत्तापन प्रत्ययोस नारकापुके बांधता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी

[ पिरयगइ ] गिरयगइ पाओमगाणुपुष्पीण । वेइंदिय-तेइंदिय-चठरिंदिय-सुहुम-साहारण अपञ्चतार्ण  
वेठभियदुगेण विजा तेवण्णा पच्चया ।

मिच्छतं चठगइसत्तुतं, जतुंसयवेइं देवगइए विजा तिगइसत्तुत, पिरयाउ-गिरय  
यइ-पिरयगइ पाओमगाणुपुष्पिणामाओ गिरयगइसत्तुतं, हुंढमत्तण देवगइं मोत्तण तिगइसत्तुतं,  
असपत्तसेवइमरीरसचडण-अपञ्चतणामाओ तिरिक्ख-अजुमगइसत्तुत, समाओ तिरिक्खगइ  
सत्तुत वंचति ।

मिच्छत-जतुंसयवेइ-हुंढमत्तण-असपत्तसेवइमरीरसचडण/चठगइमिच्छइइ सीमी ।  
एइंदिय-आदाव यत्तण्णामाण भवस्स पिरयगइ मोत्तण तिगइमि-छइइ सीमी । सेसाणं पयइीयं  
तिरिक्ख-अजुमगइमिच्छइइ सीमी । वंचडाणं वंचवोप्पेइइहाणं च सुगम । मिच्छतस्म वंचा  
सादि अयादि-भुव-अदुवमेण्ण चठभिये । मेसाणं वंचा सादि अदुवो ।

—

प्रकार [ नरकगति और ] नरकगतिप्राप्त्यनुपूर्वकं भी इत्याचन प्रत्यय है । द्वीन्द्रिय  
त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय मूल्य भाषण और अपर्याप्त प्रकृतियों के वैविधिकृतिके बिना  
निरपन प्रत्यय है ।

मिथ्यात्वके चार गतिषोमे संयुक्त नपुंसकवेइके देवगतिके बिना तीन गतिषोसे  
संयुक्त, नारकाधु नरकगति और नरकगतिप्राप्त्यनुपूर्वकं नामकर्मके नरकगतिसे संयुक्त,  
हुंढमंस्थानके देवगतिके छोड़ तीन गतिषोमे संयुक्त अक्षयान्तरादिकाशरीरसंभवन  
और अपर्याप्त नामकर्मके निर्वगति च अनुप्यगतिमे संयुक्त तथा शय प्रकृतियोंके  
निर्वगतिसे संयुक्त वांचते हैं ।

मिथ्यात्व नपुंसकवेइ हुंढमंस्थान और अक्षयान्तरादिकाशरीरसंभवन  
प्रकृतियां चारों गतिषोके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । एकत्रिय अनाप और इत्याच नामकर्मके  
वर्णक नरकगतिसे छोड़ शय तीन गतिषोके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । शय प्रकृतियोंके  
नियगति च अनुप्यगतिके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । पञ्चाद्यान और वण्णपुण्ड्रस्थान  
सुगम हैं । मिथ्यात्वक वंच सादि अनापि छव और अजुय मेइस चार प्रकार हैं । शय  
प्रकृतियोंका वंच सादि और अजुय होता है ।

—

१ अनाप नपुंसकवेइ व देवगत्तु इति पाठ ।

२ इति वचनप्रतिष्ठापन इति पाठ ।

अपचक्षणावरणीयकोध माण म  
लियसरीर-ओरालियसरीरअगोवग-वज्ज  
मणुसगइपाओरगाणुपुब्बिणामाण को वधे  
मुग्ग ।

मिच्छाद्विष्टुद्धि जाव असजदम  
अवसेसा अवधा ॥ १८ ॥

एह देसमाप्तिमुत्ते, सामित्तद्विष्टुद्धि<sup>१</sup> चेव प  
स्सरेदे । तं जहा— अप चक्षणावरणवत्कस्म मणु  
समे वाप्तिम्वति, पन्थमिदं अमज्जसम्मादिदिमिदं<sup>२</sup> दास्ये ।  
बंदो पच्च उदयो वाप्तिम्वतो, अमज्जसम्मादिदिमिदं<sup>३</sup> व  
उदयस्योपपत्तं । पवसेतालिस्सरीर-सातालिस्सरीरभंतो  
ववरि सजोगिचरिमम्मए उदयवोप्पेत्थो ।

अप्रत्यास्थानावरणीय कोध, मान, माया, स्म,  
रिक्खरीरंगोपांग, वज्जपमवज्जनाराचमइहनन और मनुष्यग  
बन्धक और कैल अवधक है । ॥ १७ ॥

एह सूच मुग्ग है ।

मिथ्याद्विष्टि लेकर अमयनसम्पदद्वि तक वचन  
वचन्धक है ॥ १८ ॥

एह देशात्मक सूच है क्योंकि वह केवल व च  
विरूपण करता है । इसी कारण इस सूचस सूचित जल  
प्रकार है—अप्रत्यास्थानावरणवत्क और मनुष्यगणिताय  
उद्य पदार्थों साधनें व्युत्पिन्न होते हैं क्योंकि, एक अमयन  
विनाश पाये जाते हैं । मनुष्यगणिका पूर्वमें वन्ध और पन्थ,  
क्योंकि अमयनसम्पदद्वि शुचस्थानमें वन्धके मय हलेपर  
समयमें उद्यका व्युत्पन्न होता है । इसी प्रकार औत्तारिक्क  
और वज्जपमवज्जनापचमइहननका पूर्वमें वन्ध और पन्थान् उद्य  
हता है कि संपादिक अस्तित्व समयमें उद्यका व्युत्पन्न होता

१ यस्मिं वासित्तद्विष्टि इति पाठ ।

२ यस्मिं विना

३ यस्मिं -अप्यादिदि इति पाठ ।

अपञ्चकस्त्राणावरणचतुष्कर्त्रीण मध्यसि मोक्ष-परोदणहि यथा, विराहामावाधो ।  
 पवरि सुम्भामिच्छाङ्कि-अमञ्जसम्मादिष्टीमु मणुमगइदुगोलातियदुग-वज्जमिमहमपइण्णाण परो  
 दयो यथा । अपञ्चकस्त्राणावरणचतुष्कयधो भिर्तरो, धुववधिसाधो । मणुमगइ-मणुमगइपा  
 ओमाणुपुव्वियथा मिच्छाङ्कि-मासणमम्माइष्टीणं मानर-भिर्तरो, आण्णान्दिवमु गितरबंध  
 ठदण अण्णत्थ सातरयधुवत्तमाधो । मम्भामिच्छाङ्कि-अमञ्जसम्माइष्टीमु भिर्तरो, देव-भेरइयं  
 अपिदनेगुणट्ठपेसु अण्णगइ आणुपुव्वीण यथामावाधो । एवमागतियमरीर-आगतियमरीर  
 अगोवग वज्जमिमहमपइण्णाणं वत्त'व । कुत्ता ? आगतियमरीरस्स मध्वदेव-गण्डपसु तउ  
 वाउकाइणसु च गितर धंघुवत्तमाधो, अण्णत्थ मानरयधमपण्णे भेरत्तियमरीरअगोवगम्स  
 सव्वभेरइणसु सपक्कमागान्दिवेषु च गितर धंघं ठदण इमाणान्दिह्मिदवाण मिच्छाङ्कि-  
 मासणसु तिक्कित्त-मणुस्सेसु च मानरयधुवत्तमाधो, वज्जमिमहमपइण्णम्स देव-गण्डयमम्मा-  
 मिच्छाङ्कि-अमञ्जसमम्माइष्टीमु भिर्तरो धंघं ठदण अण्णत्थ मानरयधुवत्तमाधो ।

अप्रत्यापानावरणचतुष्क आदिक् मयक्क व्यात्य परदयस बन्ध हाता हे क्योकि  
 यथा हानम कह बिगध मर्हो हे । विनाय यह हे कि मय्यमिच्छादि और अमयतमम्य  
 गदि गुणस्यान्तमे मनुपगनिष्ठिध आदित्किष्ठिक परं वज्जमममहननत्थ परदय बन्ध  
 हाता हे ।

अप्रत्यापानावरणचतुष्कटा पन्ध निरन्तर हे क्योकि य चार्गे प्रतियया धुव  
 बन्धी हे । मनुप्यगति और मनुप्यगतिप्रवायानुपूर्वीका पन्ध मिच्छादि और मानात्त  
 सभ्यगदिक मान्तर निरन्तर हे क्योकि मानतादि द्योमे निरन्तर बन्धक मानकर अन्यत्र  
 मान्तर पन्ध पाया जाता हे । मय्यमिच्छादि और अमयतमम्यगदि गुणस्यान्तमे निर  
 न्तर बन्ध हे क्योकि द्योमे य मानक्रियोके इम विधक्षित वा गुणस्यान्तमे अन्य गति य  
 आनुपूर्वीके पन्धका समाय हे । इत्थं प्रज्ञा आदित्किष्ठिकारी आदित्किष्ठिकारीगायांग और  
 वज्जमममहननत्थ भी कहमा चाहिय । इत्थका कारण यह रि आदित्किष्ठिकारीका मय दय  
 मानर्ध तथा तज्जत्रियि य वायुकायिक जीयोमे निरन्तर बन्ध पाया जाता हे अन्यत्र  
 पदो पन्ध मान्तर इत्थं जाता हे । आदित्किष्ठिकारीगायांगका मय मानक्रियोमे और  
 मानानुमान परं माहण्ड कयक् द्योमे भी निरन्तर बन्ध पाकर इत्थमात्तक अधमन द्योके  
 मिच्छादि य मानात्त गुणस्यान्तमे तथा नियंथ और मनुप्योमे मान्तर पन्ध पाया जाता  
 हे । वज्जमममहननत्थ दय और पारवी मय्यमिच्छादि य अमयतमम्यगदि गुणस्यान्तमे  
 निरन्तर पन्ध पाकर अन्यत्र मान्तर पन्ध पाया जाता हे ।



अपञ्चनस्त्राणावरणीयकोध माण माया-लोभ-मणुसगह-ओरा-  
लियसरीर-ओरालियमरीरअगोवग-वज्जरिमहवहरणारायणसघडण-  
मणुमगडपाओरगाणुपुब्बिणामाण को वधो को अवधो ? ॥ १७ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विट्ठिपट्टि जाव अमजदमम्माद्विट्ठि वधा । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ १८ ॥

एह दमामाभियसुत्त, सामित्ताणत्थं चेव पक्खवाटो । तेजदेण सुइइवपक्खवा  
कीरे । तं जहा— अपञ्चनस्त्राणावरणीयकोध मणुमगहपाओरालियमणुपुब्बिणामाए वधोदया  
समे वाटिउत्तति, एउउत्ति अमजदमम्माद्विट्ठि दाणा विणामुवर्त्तमादा । मणुमगहए पुत्रं  
वधो पप्पम उदयो वोप्पिउत्ता, अमजदमम्माद्विट्ठि वधे जह पप्पम अजागिचरिममममि  
उदयवाउत्तादा । एवमोराटियमरीर भाराटियमरीरजंगारंग-वज्जरिमहवहरणारायणमणुमगडपाओ  
वधेरि सजागिचरिमममए उदयवोउत्ता ।

अप्रत्याप्त्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, त्रम, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदा-  
रिकशरीरमांसांग, वज्रर्पमवज्रनापचमहनन और मनुष्यगतिप्राप्त्योम्भानुपूर्वी नामकर्मका कौन  
बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ १७ ॥

यह सच सुगम है ।

मिप्पाद्यट्ठिमे लेख अमयतमम्यगट्ठि तक बंधक है । य प-पक है, क्षय की  
अवधक है ॥ १८ ॥

यह देशात्मक मूल है अर्थात् वह केवल बन्धन्यामित्य और बन्धन्यात्मक ही  
निरूपण करता है । इसी कारण इस मूलम स्थिति अर्थात् प्रत्यक्ष करता है । यह इस  
प्रकार है—अप्रत्याप्त्यानावरणीयक्रोध और मनुष्यगतिप्राप्त्योम्भानुपूर्वी नामकर्मका बन्ध और  
उदय दोनों प्राप्योम्भानुपूर्वी होने हैं अर्थात्, एक अमयतमम्यगट्ठि गुणस्थानमें दोनों  
विनाश पाये जाते हैं । मनुष्यगतिप्राप्त्योम्भानुपूर्वी बन्ध और यथाज्ञान उदय स्थितिमें होता है,  
अर्थात्, अमयतमम्यगट्ठि गुणस्थानमें वक्ष्यक मय हस्तपर पीछे अयोगात्तबन्धके अन्तिम  
समयमें उदयक स्थितिमें होता है । इसी प्रकार औदारिकशरीर, औदारिकशरीरमांसांग  
और वज्रर्पमवज्रनापचमहनन प्राप्योम्भानुपूर्वी बन्ध और यथाज्ञान उदय स्थितिमें होता है । विशेष  
इतना है कि न्यायार्थक अन्तिम समयमें उदयक स्थितिमें होता है ।

१ मणु उदयिउत्ताति एति पाठ ।

२ मणु विणामाउत्ताति एति पाठ ।

३ मणु वज्जरिमहवहरणारायणमणुमगडपाओ

अपञ्चकखाणावरणचउक्कादीणं सुव्वसिं सोडय-परोदण्हि वधो, विराहामावादो ।  
 पवरि सम्मामिच्छइडि-असंजदसम्मादिईसु मणुमगाइदुगोरात्थिदुग-वञ्जरिसहसंधण्णो परो  
 दओ वंधो । अपञ्चकखाणावरणचउक्कवधो निरतरो, धुववधिसादो । मणुसगइ मणुमगइपा  
 ओमाणुपुत्थिवंधो मिच्छइडि-सामणसम्माइणी सार-भिरतरो, आण्णदिदेवेषु भिरतरवंध  
 लद्ध अण्णत्थ सांतरवधुवत्तमादो । सम्मामिच्छइडि असंजदसम्माइरीसु भिरतर, देव णेरइयं  
 अपिदोरोणुपट्ठापेसु अण्णगइ आणुपुत्थीणं वंधामावाणे । एवमेरात्थिसरीर-आरात्थिसरीर  
 अगेवग-वञ्जरिसहसंधण्णो वत्तवंध । कुदो ? आरात्थिसरीरस्स सुव्वदेव-भरइण्णु तेठ  
 वाठकरइण्णु च भिरत वधुवत्तमादो, अण्णत्थ सांतरवधदसण्णो ओरात्थिसरीरवंगोवगस्स  
 सव्वकेइण्णु सणक्कुमारदिदेवेषु च भिरत वध लद्ध इसाणदिइडिमइवाण मिच्छइडि-  
 सासणेसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु च सांतरवधुवत्तमादो, वञ्जरिसहसंधण्णस्स देव-भरइयसम्मा  
 मिच्छइडि-असंजदसम्माइरीसु भिरतरं वंध लद्ध अण्णत्थ सांतरवधुवत्तमाणे ।

ममत्प्राप्त्यन्तावरणचउक्क आश्रित सबका स्वोदय परोक्षसे वन्ध होता है क्योंकि,  
 एना हानमें कोई विगम नहीं है । बिनाय यह है कि मम्यमिध्याहृदि और अर्सेपतसम्य  
 गृहि गुणस्थानमें मनुष्यगतिष्ठिक औदारिकष्ठिक एव ब्रह्ममसंहननका परोक्ष वन्ध  
 होता है ।

ममत्प्राप्त्यन्तावरणचउक्कका वन्ध निरन्तर है क्योंकि य वारों प्रकृतिपां भुव  
 वन्धी है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्राप्तागत्यनुपूर्विका वन्ध मिध्याहृदि और मानावन  
 सम्यगृहिके मान्तर निरन्तर है क्योंकि अज्ञानादि देशोंमें निरन्तर वन्धन प्राप्तकर अन्त्य  
 सन्तर्ग वन्ध पाया जाता है । सम्यगिध्याहृदि और अर्सेपतसम्यगृहि गुणस्थानोंमें निर  
 न्तर वन्ध है क्योंकि वहाँ व नारकियेके म विवक्षित हो गुणस्थानोंमें अन्त्य गति व  
 आनुपूर्विक वन्धका समावह । इसी प्रकार औदारिकशरीर औदारिकशरीरोंपांग और  
 ब्रह्ममसंहननका भी कहना चाहिये । मन्त्र कारण यह कि औदारिकशरीरका सर्व द्रव्य  
 नारकी तथा तेजकायिक व वायुकायिक जीवामें निरन्तर वन्ध पाया जाता है अन्त्य  
 यही वन्ध सान्तर देखा जाता है, औदारिकशरीरोंपांगका सब नारकियोंमें और  
 सान्तरकुमार एवं माहंस्त्र कस्यक देशोंमें भी निरन्तर वन्ध पाकर इत्यामादिक अधन्तन वर्योंके  
 मिध्याहृदि व मानावन गुणस्थानोंमें तथा नियेक और मनुष्योंमें सान्तर वन्ध पाया जाता  
 है ब्रह्ममसंहननका द्रव और नारकी मम्यमिध्याहृदि व अर्सेपतसम्यगृहि गुणस्थानोंमें  
 निरन्तर वन्ध पाकर अन्त्य सान्तर वन्ध पाया जाता है ।



पञ्चमो । सेसकसायाणमुदमो ओगो च पञ्चमो ण होदि, एतो उवरि तेसु संतेसु वि एदासि  
 वंधामावादे । ण मिच्छत्ताणंताणुयंधि-अप-चक्खसाणावरणाणमुदमो वि एदासि वंधस्स पञ्चमो  
 तेण विणा वि वंधुवत्तमादे । जस्सण्णय-वदिरगेहि जस्सण्णयवदिरगा हंति [तं] तस्स कम्मियं  
 च करणं । ण चरं पञ्चक्खानादयं मुग्धा अपणत्थसि तम्हा पञ्चक्खानोदमो चैव  
 पञ्चमो ति सिद्ध । मिच्छादिद्विहि पट्टबंधमोलसपयडीण यवस्स मिच्छतोदमो चैव पञ्चमो,  
 तेण विणा तामि यवाणुवत्तमादे । सामणम्मि पट्टबंधपणुवीसपयडीण अपताणुवधीणमुदमो  
 चैव पञ्चमो, तेण विणा तामि यवाणुवत्तमादे । असंजम्ममादिद्विहि पट्टबंधणवपयडीणं  
 वंधस्स अपञ्चक्खानोदमो करण, तेण विणा तामि वंधाणुवत्तमादे । पमत्तसंजदम्मि पट्टबंध  
 छप्पयडीर्ष बंधम्म पमादो पञ्चमो, तेण विणा तदणुवत्तमादे । एवमभ्यत्थ वि आणिय  
 वत्तम् ।

एताभो पयडीभो मिष्ठाहृद्दि चउगइमंहुतं, याम्भो भिरयगईण विष्ठा तिगाइसंहुतं.

दोष कर्मायोक्त उक्त और याग प्रत्यय नहीं है क्योंकि पांचवें गुणस्थानक ऊपर उनके रहस्यपर भी इनका वन्ध नहीं होता। मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी और अप्रत्यापनावरण प्रकृतियोंका उक्त भी इन प्रकृतियोंके वन्धका प्रत्यय नहीं है क्योंकि, उनके उक्तके बिना भी इनका वन्ध पाया जाता है। जिसके अन्वय और ध्यातिरक्तक माय जिसका अन्वय और ध्यातिरेक हुआ है वह उनका काय और नृमरा काय होता है। और यह वात प्रत्यापनावरणक उक्तको छोड़कर सम्भव है नहीं इसलिये प्रत्यापनावरणका उक्त ही अपने वन्धका प्रत्यय है यह बात सिद्ध हुई। मिथ्यादि गुणस्थानमें ध्युच्छिन्न सौलभ प्रकृतियोंके वन्धका प्रत्यय मिथ्यात्वका उक्त ही है क्योंकि उसके बिना उन सौलभ प्रकृतियोंका वन्ध पाया नहीं जाता। आभावरणगुणस्थानमें ध्युच्छिन्न पक्षीय प्रकृतियोंके वन्धका अनन्तानुबन्धितनुष्णका उक्त ही प्रत्यय है क्योंकि, उसके बिना इन पक्षीय प्रकृतियोंका वन्ध पाया नहीं जाता। अन्वयमन्मद्गदि गुणस्थानमें ध्युच्छिन्न सौ प्रकृतियोंके वन्धका अप्रत्यापनावरणका उक्त कारण है क्योंकि, उसके बिना उनका वन्ध पाया नहीं जाता। प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें ध्युच्छिन्न छह प्रकृतियोंके वन्धका प्रत्यय प्रमाद है क्योंकि, उनका बिना उनका वन्ध पाया नहीं जाता। इसी प्रकार सम्भव भी जानकर कहना चाहिये।

इमं प्रकृतिर्षोको मिथ्याहृदि आरों गनिर्यामे संयुक्तं आत्माद्वयमभ्यहृदि नरक

पञ्चवस्त्राणावरणीयकोध माण-माया-लोमाण को वंधो को  
अबंधो ? ॥ १९ ॥

सुगममेवं सुष ।

मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव सजदामजदा वधा ॥ २० ॥

एदं द्वादशमासिपुष्टि, साधितद्वाराणामेव फलवणादा । तथेत्य अत्रुत्तरार्धे पञ्चवस्त्रा  
कर्मदे । त अत्र— एवासि पञ्चवस्त्रा वंधादया सम धास्त्रिणा, सज्जदामजदमि वंधस्त्रे  
उदयवोष्पेद्वदमणादा । एवासि चउत्तर पि वंधो सोदय-वरादएहि, कंधादीन वंधकाले तस्त्रे  
उदए वि होद्वमिमिदि नियमाभावात् । एवासि चउत्तर पि कितरो वंधो, सज्जदामजदमि  
बंधपञ्चमीसु पादात् । मिच्छाद्विष्टिमादिपञ्चगुणद्वारेषु अ पञ्चया फलविदा मूलस्त्रमेपव तदि  
पञ्चपदि एतावा वन्धति सि तेषु तेषु गुणद्वारेषु त ते केव पञ्चया वन्ध्या, वन्धस्त्र  
पञ्चयसमूहकज्जकदा । अथवा, एवासि पञ्चमीसु वंधस्त्र पञ्चवस्त्राणपञ्चमी उदयमामन्व

प्रत्याख्यानावरणीय वंध, मान, माया और लोपका कौन वन्धक और कौन अवन्धक  
है ? ॥ १९ ॥

यह पूरा सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टि उकर संयतासिपत तक वन्धक है ॥ २० ॥

यह वंशामर्शक सूत्र है क्योंकि यह वन्धस्त्रासिपत और वन्धाध्यायका ही निरूपण  
करता है । इस कारण यहाँ अनुक्त अर्थोंकी प्रकृषणा करते हैं । यह इस प्रकार है—इन  
चारों प्रकृतियोंका वन्ध और उदय दोनों साथ ही व्युत्पिद्यते होते हैं क्योंकि संपत्तासंयत  
गुणस्थानमें वन्धक समान इनके उदयका भी व्युत्प्रेक्ष्य देका जाता है । इन चारों ही  
प्रकृतियोंका वन्ध स्वोदय परावपसे जाता है क्योंकि कंधादिर्ध्वनि वन्धकालमें उदयका ही  
उदय भी होकर बाहिये येका कार्य निष्पन्न नहीं है । इस कारणका ही निरन्तर वन्ध होता है  
क्योंकि ये चारों प्रकृतियाँ नितालीस भुजगनी प्रकृतियोंमें जाती है ।

मिच्छाद्विष्टि मादि पाँच गुणस्थानोंमें जो मूल व उत्तर प्रत्यय कहे  
गये हैं इन प्रत्ययोंस व प्रकृतियाँ वधती हैं अत एव उन उन उन गुण  
स्थानोंमें उन्हीं उन्हीं प्रत्ययोंका वधमा बाहिये क्योंकि, वन्ध प्रत्ययसमूहका कार्य  
है । अथवा इन प्रकृतियोंके वन्धका प्रत्यय प्रत्याख्याल प्रकृतिक उदयसामान्य है ।

पञ्चभो । सेसकसायाणमुदभो जोगो च पञ्चभो ण होदि, एणे उवरि तेसु संतेसु वि एदासि वधामावादो । ण मिच्छताणैताणुववि-अपञ्चकस्त्राणवर्णाणमुदभो वि एदासि वधस्स पञ्चभो, तेण विणा वि वधुवलमादो । जस्सणय-वदिरेगेदि जस्सणयवदिरेगा होति [तं] तस्स कम्मियरं च करण । ण चेदं पञ्चकस्त्राणेदर्यं मुच्चा अण्णत्पत्तिं तम्हा पञ्चकस्त्राणेदभो चेव पञ्चभो ति सिद्धं । मिच्छादिदिमिह णट्टवधसोलसपयडीण वधस्स मिच्छोदभो चेव पञ्चभो, तेण विणा तासि वंधाणुवर्तमादो । सासणमि णट्टवधपणुवीसपयडीण अपताणुवधीणमुदभो चेव पञ्चभो, तेण विणा तासि वंधाणुवर्तमादो । असज्जदसम्मादिदिमिह णट्टवधवपयडीण वधस्स अपञ्चकस्त्राणेदभो करण, तेण विणा तासि वंधाणुवर्तमादो । पमत्तसज्जदमि णट्टवध छप्पयडीण वधस्स पमादो पञ्चभो, तेण विणा तदणुवर्तमादो । एवमण्णत्प वि जाणिय वत्तव ।

एदाभो पयडीभो मिच्छादिदि चउगइमंजुत्त, मामगो विरयगइण विणा तिगइसंजुत्तं,

दोष करार्योंका उद्बय और घाग प्रत्यय नहीं है क्योंकि, पाँचवें गुणस्थानक ऊपर उनके रहस्यपर भी इनका बन्ध नहीं होता । मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याक्ष्याभावप्रकृतियोंका उद्बय भी इन प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय नहीं है क्योंकि उनके उद्बयके बिना भी इनका बन्ध पाया जाता है । जिसके अन्वय और व्यतिरेकका साथ जिसका अन्वय और व्यतिरेक होता है वह उसका कार्य और दूसरा कारण होता है । और यह बात प्रत्याक्ष्याभावप्रकृतियोंके उद्बयके छोड़कर अन्वय है नहीं इसलिये प्रत्याक्ष्याभावप्रकृतियोंका उद्बय ही अपन बन्धका प्रत्यय है यह बात सिद्ध हुई । मिथ्यादिदि गुणस्थानमें व्युत्थित सोलह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय मिथ्यात्वका उद्बय ही है क्योंकि उसके बिना उन सोलह प्रकृतियोंका बन्ध पाया नहीं जाता । साम्बावसगुणस्थानमें व्युत्थित पचीस प्रकृतियोंके बन्धका अनन्तानुबन्धितानुक्तका उद्बय ही प्रत्यय है क्योंकि उसके बिना इन पचीस प्रकृतियोंका बन्ध पाया नहीं जाता । अन्वयतसम्पत्तिदि गुणस्थानमें व्युत्थित भी प्रकृतियोंके बन्धका अप्रत्याक्ष्याभावप्रकृतियोंका उद्बय कारण है क्योंकि, उसके बिना उनका बन्ध पाया नहीं जाता । प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें व्युत्थित छह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय प्रमाद है, क्योंकि, उसके बिना उनका बन्ध पाया नहीं जाता । इसी प्रकार अन्वय भी जानकर कहना चाहिये ।

इन प्रकृतियोंके मिथ्यादिदि चारों गणियोंसे संयुक्त साम्बावसगुणस्थानमें व्युत्थित मरक



सामितं पंचदशान च परुविद् । 'अणियद्विवादरदाए संसे सखेन्जामार्गं गंतूण पंचो धोच्छिन्नदि' ति एदेण पंचविण्णट्टाणं परुविद् । तं अहा— संसे अत्तरकणे कदे जा सेसा अणियद्विअद्या तम्मि सेम सखेन्जसुडे कदे तत्थ बहुसंजलाणि गंतूणगसंजलसेसे पुरिसवेद-कोषसजलणायं पंचो धोच्छिण्णो ति उच होदि । एदे तिणिणं भेव अत्था एदेण परुविदां सि देसामासिय सुसमेदं । तेणेदस्मियरत्थायं परुवणा ब्रिग्दे—

पुरिमवद-कोषसजलणायं पचोदया समं वाचिन्नजति, पुरिसवेद-कोषसजलणायं उदए संतप्पस्यएज्जसमेण वा गण्टे यथाणुवल्माणो । ससारावत्थाए सोदएण विणा वि पंचो उक्त्तम्मादिं ति न सादयाविणामावी एदामिं पचो ति बुचं होदु तथा तत्थ, इच्छिन्नमाणत्तादो । एत्थ पुण पडिवन्त्तपयिद्विषेण विणा पचविण्णट्टाणे पच उदयविणामासिो एगाम्हि काले होण्ण विणामो न विरुत्तदे ति । एदामिं दोण्ण पयडीयं सोत्थपरेदएहि पंचो, सोदएण विणा वि पंचोवल्मादो । कोषमंजलणस्य पचो भिरंतरो, मत्तेत्तात्थिसुवयं वपयडीयं मन्धे

सुधावयवमे गुणस्थानगत बन्धस्थानित्वा और बन्धाध्यानका निरूपण किया है । 'मनिवृत्ति बावरकाळके शायमें संख्यात यहभाग आकर बन्ध भ्युच्छिन्न होता है इससे बन्धभ्युच्छेद स्थानका निरूपण किया है । यह इस प्रकार है— शाय अर्थात् अन्तरकरण करणपर जो भवशाप मनिवृत्तिपाळ रहता है उस शाय कात्मक मर्यादा काण्ड करणपर उसमें बहुत काण्ड आकर एक काण्ड अर्थात् एहमेपर पुरुषवेद जीर संज्वलनकांधका बन्ध भ्युच्छिन्न होता है यह उसका ममिमाय है । ये तीन ही अर्थ इस सूत्र छाय कह गये हैं, मत एव यह देशामर्शक सूत्र है । इसी कारण हमक भग्न अर्थोकी प्रमथणा की जाती है—

पुरणयेद और संज्वलनकोष इनके बन्ध व उदय दोनों साथ भ्युच्छिन्न हात है क्योंकि पुरणयेद और संज्वलनकोषके उदयक सारवक्ष्यमे या उपगममे मष्ट होनेपर उन दोनोंका बन्ध नहीं पाया जाता ।

सूत्र—संसारवस्थामें स्यादयक विना भी बन्ध पाया जाता है मत यय इनका बन्ध स्यादयका अभिनाभावी नहीं है ?

समाधान—एमी दोऊ करणपर उत्तर वन है कि संसारवस्थामें पैसा मळे हो हा क्योंकि वहां पैसा हट है । परणु यहापर मनिपस पठनिके बन्धके विना बन्ध भ्युच्छेदस्थानमें ही उदयका भ्युच्छेद जानन एक कायमें दोनोंका भ्युच्छेद विरुद्ध नहीं है ।

इस दोनों प्रकृतियोंका स्यादय परावृत्तमे बन्ध रहता है क्योंकि स्यादयक विना भी इनका बन्ध पाया जाता है । संज्वलनकांधका बन्ध निरन्तर है क्योंकि यह सैताकीस



पादादौ । पुरिसवेदपथो सांतेऽपि । कुदो ? मिच्छाद्दृष्टि सासपेसु पश्चिक्कपयदीये वेपु-  
बलेमादौ । भिंत्तरो वि, पम्म-सुक्कलेस्मियतिरिक्ख-मणुसमिच्छाद्दृष्टि-सासपसम्मादिद्दीसु सम्म-  
मिच्छाद्दृष्टिमादिठवरिमणुण्णेषु च भिंत्तरवंपुवलेमादौ ।

एदासि पचयपरूवणं कीरमाणे पुष पुष जे पचया मृत्तुत्तरणणेमसमयमेयमिणा  
गुण्णहाणामं परूविदा ताणि गुण्णहाणाणि तेदि पचपहि एदाओ पयडीओ वधति चि पुष-  
परूवणा वरिष, मेदापुवलेमादौ । अबवा पुरिसवेदो गमपचओ, अवगइवेदेसु तप्पेपापु  
बलेमादौ । कोपसंजत्तओ संबत्तपक्यायस्स तिप्पालुमागोदयपचओ, उवसमसेहिन्दि कोष  
परिमाणामोदयाओ अणेतगुण्णहीणच मूणाणुमागोदयण कोपसंजत्तपस्स ववापुवलेमादौ ।  
मिच्छाद्दृष्टी सासपे च चियगईव विणा पुरिमवेदं तिगहंसंबुच वधइ । विरगईव सह  
पुरिसवेदो किंण वन्हेदे ? न, अर्हतामावेण पडिसिद्धतादौ । सम्मामिच्छाद्दृष्टी वसेवर  
सम्मादिद्दी च दुमइसंजुत्तं, तेसिं पिरय तिरिक्खगईण वधामावादा । संबदासंजदपपुडि उवरिमा

पुषवन्धी प्रकृतियोंके मध्यमें आया है । पुरुषवेदका वन्ध सात्तर है । इसका कारण यह कि  
मिच्छादृष्टि और सामान्य गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है । वही वन्ध  
निम्नतर भी है क्योंकि, पक्ष एवं शुद्ध केस्वावास्तव निर्वच व मनुष्य मिच्छादृष्टि और  
सांख्यिकमन्वन्धद्विषयोंमें तथा सम्यग्मिच्छादृष्टि आवि उपरिम गुणस्थानोंमें भी निरन्तर  
वन्ध पाया जाता है ।

इन दोनों प्रकृतियोंके प्रत्यक्षोंका प्रकटन करमपर मूल उत्तर तथा ज्ञाना व एक  
समय सन्नन्धी प्रत्यक्षोंके मध्यमें निज पृथक् पृथक् दो प्रत्यक्ष जिन गुणस्थानोंके कहे गये हैं वे  
गुणस्थान वन प्रत्यक्षोंने इन प्रकृतियोंका बांधते हैं अतः इनकी पृथक् प्रत्यक्षप्रकटन नहीं है  
क्योंकि, उवस यहां कोई मेव नहीं पाया जाता । अथवा पुरुषवेद गतप्रत्यक्ष है अर्थात्  
उसका प्रत्यक्ष ऊपर बता ही चुके हैं क्योंकि, अपगतवर्तियोंमें उत्तरा वन्ध नहीं पाया  
जाता । संज्ञकनकोषका वन्ध संज्ञकनकोषावके तीन अनुभागावधनिमित्तक है क्योंकि,  
अपगतवर्तियोंमें कोषके अस्तिम अनुभागावधने अथवा अस्तगतगुणहासिन् हीन अनुभागावधने  
संज्ञकनकोषका वन्ध नहीं पाया जाता ।

मिच्छादृष्टि और सामान्यमन्वन्धद्विषयगतिके बिना पुरुषवेदको तीन गतियोंसे  
संयुक्त बांधते हैं ।

संज्ञक—नरकगतिके साथ पुरुषवेद क्यों नहीं बांधता ?

समाधान—नहीं बांधता क्योंकि, यह अग्न्यन्तामाय रूपसे प्रतिपिद्ध है ।

सम्यग्मिच्छादृष्टि और असेवतमन्वन्धद्विषय गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि,  
नरकगतिके और तिर्यग्गतिके वन्धका अभाव है । संयन्तावधने केकर उपरिम भी

देवगइसंजुत्त, सेमगइण तत्थ वंधामावादो । अपुत्थकणसत्तमसत्तभागप्पहुडि उवरिमा  
अगणिंसंजुत्त पर्वति, तत्थ गइक्कम्मस्स वंधामावादो । एवं कोषमजलणम्म वि वत्तव्व । पवरि  
मिप्पमइत्ती चउगइसंहत्ते बधइ, तत्थ गिरयगइए सह बधविरोहामावादो । पुगिसेदवपस्स  
चउगइमिच्छाइट्ठि-मायणमम्माइट्ठि-मम्मामिच्छाइट्ठि अमंजदमम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइसंजदा  
संजदा सामी, देव-गिरयगइमु तत्थावादा । उवरिमा मणुसगइए सामी, अण्णत्थ पमत्तादीण-  
ममावादो । पुगिसेदवंधो मध्यगुणद्वारेण सु मादिगो बद्धुवो, पडिवक्खपमईणं वंधुवत्तमादो ।  
पियमेण सम्मामिच्छाइट्ठिणहुडि उवग्गिमेसु वंधविणासदसपादो । कावसंजलणम्म मिप्पमइट्ठिमि  
पठम्विहो वंधो, धुवपवित्तदो । उवग्गिमेसु ति विहा, धुवसामावादो ।

माण मायसजलणाण को वंधो को अवंधो ? ॥ २३ ॥

सुगममेदं ।

देवगतिसे संयुक्त बांधन है क्योंकि वहाँ नाव गतियोंका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकल्पसे  
सातवें सप्तम भागसे लेकर उपरिम जीव अगतिसंयुक्त पुरुषवैश्वदेवों पांचते हैं क्योंकि  
यहाँ गतिकर्मका बन्ध नहीं होता । इन्हीं प्रकार सम्बलनकोषके भी कहना चाहिये ।  
विरोध इतना है कि मिष्पाइट्ठि उन्ने चार गतियोंसे संयुक्त बांधना है क्योंकि यहाँ  
परकालिके साथ उसका बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

पुरुषवैश्वदेवों के बन्धक चारों गतियोंवाले मिष्पाइट्ठि, सात्तात्तमम्यगइट्ठि, मय्य  
गिमिप्पाइट्ठि और अमंजदसम्यगइट्ठि स्वामी हैं । दो गतियोंवाले संयतामयत्त स्वामी हैं  
क्योंकि वृक्ष व लकड़ गतिमें संयतामंयनोंका अभाव है । ऊपरका जीव मनुष्यगतिके ही  
स्वामी हैं क्योंकि, वृक्षही गतियोंमें प्रमत्तमंयनाधिकोंका अभाव है । पुरुषवैश्वदेवों का बन्ध लव  
गुणस्थानोंमें सादिक व अधुय है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका बन्ध पाया जाता है  
नियमसे सम्मगिमिप्पाइट्ठिमें लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका बन्ध  
पिनाश दत्ता जाता है । संबलनकोषका मिष्पाइट्ठि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध  
होता है क्योंकि, वह छयवन्धी है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है  
क्योंकि, वहाँ भ्रुय बन्धका अभाव है ।

सम्बलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २३ ॥

यह छय सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्टउवसमा  
स्ववा वधा । अणियद्विवादरद्वाए सेसे सेसे सखेज्जाभाग गतूण वधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २४ ॥

‘मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्टउवसमा एवा वधा’ एवम  
सुवावयवेण वपद्वयं गइगण्ण विना गुणहाणयवपसामित्तं व बुद्धं । ‘अणियद्विवादरद्वाए  
सेसे स्म संसेज्जामासं गतूण वधा वोच्छिज्जदि’ एदेय सुवावयवेण वपविमट्टहाण फलविदं ।  
कोप्पसंजत्ते विषये जो अवसेसा वपियद्विवादराए मंरेज्जदिमाणां तम्हि संसेज्ज खंडे कद  
तत्त बहुभागे गतूण एवमागतसंसे माणमंज्जणस्स वधवाप्पेदो । पुनो तम्हि एगखंडे  
संसेज्जखंडे कद तत्त बहुखंडे गतूण एगखण्वसेमे मायामज्जमवधवोप्पेदो ति । कम्मदं  
वध्वे ? ‘सेम स्मे मंरेजे मागे गतूणति’ निष्प्रभिरसात् । कत्तायपाहुडसुत्तवेदं सुत्तं  
विरुद्धं ति सुत्ते सखं विरुद्धं, किंतु एयंतगहो एत्थ ज कस्यप्यो, इदमव तं वेव

मिथ्याघट्टे ठरु अनिवृत्तिरूपपादगमाम्भरविकल्पिष्ठ उपशमक व क्षपक तत्त  
वन्धक है । अनिवृत्तिवादरकालक क्षप क्षपे संख्यात बहुभाग जाकर वच व्युच्छिज्ज हाता  
है । व वन्धक है, मय और ववन्धक है ॥ २४ ॥

मिथ्याघट्टेन केकर अनिवृत्तिरूपवत्तत्ताम्यराधिकमविष्ट उपशमक व क्षपक  
तत्त वन्धक है । इस सूत्रावयवसे वन्धाभाव और गतिगत वन्धरुजामित्तक विना गुण  
स्वातगत वन्धरुजामित्त मी कहा गया है । अनिवृत्तिरूपकाकालक क्षप क्षपे संख्यात  
बहुभाग जाकर वन्ध व्युच्छिज्ज होता है । इस सूत्रावयव द्वारा वन्धविमट्टम्यतली  
प्रकपना की गई है । संख्यजनकोषके विमट्ट हानपर जो क्षेप अनिवृत्तिवादरकालक  
संख्यातकी माग रहता है उसमें संख्यात एवम करजेपर वन्ध बहुमात्रोंकी विताकर एक  
भाग क्षेप रहनेपर संख्यजनमात्रका वन्ध व्युच्छिज्ज होता है । पुनः एक वन्धके संख्यात  
वन्ध करजेपर उनमें बहुत वन्धोंकी विताकर एक वन्ध क्षेप रहनेपर संख्यजनमात्रका  
वन्ध व्युच्छिज्ज होता है ।

शंकर—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्षेप क्षेपम संख्यात बहुभाग जाकर इस बीसा जर्मान वा बार  
निर्देशमें वन्ध प्रकार वन्धों प्रकृतिपोंका व्युच्छिज्जमाना जाता है ।

शंकर—कयायमाहुलके सूत्रम तो यह सूत्र विरोधका मान्य होगा ?

समाधान—यही आशंका हानपर करते हैं कि सबमुक्तमें कयायमाहुलक सूत्रम  
यह सूत्र पिच्छ है, परन्तु वहाँ एकान्तग्रह नहीं करना चाहिय क्योंकि, यही सत्य है

सम्पदिदि सुदकेवलीहि पञ्चकखणाणीहि वा विणा अवहारिन्जमाणे मिच्छत्तपसंगादो ।  
कथं सुत्तापं विरोहो ? ण, सुतोवसहस्राणमसयलसुद्धचारयाहरियपरतताण विरोहसमवदसपत्तो ।  
उवसहस्राणं कथं पुण सुत्तसं जुज्जेवे ? ण, अमियसायरजलस्स अलिजर-घट्ट-घटी-सरासुद्धेषण  
गयस्स वि अमियतुवलमाणे ।

संपदि एदेण सुद्धत्थाण परूवणा कीरद । त जहा— एदासि द्वाण्ण पयसीण  
पपोदया अक्कमेण वोच्छिन्नंति, उद्दए विणेत्रे वषाणुवल्मादो । ण च उदयदाक्खएण  
उदयस्स विपासो एत्थ विवक्खिन्नो, सतोवसम-स्रएहि समुप्पण्णुदयामावेण अहियारादो ।  
एदासि सोदय-यरोदएहि बंधो, पिरंतरवंधीण सांतस्सुदयार्ण सोदण्णेव वषविरोहादो । पिरतर  
बंधीओ, पुवर्पंधीहि सह पात्तादो । मिच्छद्दट्ठिण्णुद्धि जे पक्खया मृत्तुत्तरणमेगसमयमेयमिप्पा  
पुव्वं परूविदा तग्गुणविमिद्धजीवा तेहि वेष पच्चएहि एदामो पयसीओ बंधंति, पच्चयतरा

या ' घटी सत्य है येना धुतकवमियों अथवा प्रत्यक्षानियों विना निश्चय करनपर  
मिथ्यात्यक्त प्रमस होगा ।

श्रुंकर—सूत्रोंक विरोध कैम हो सकता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं क्योंकि मरु धुतक धारक भाषायोंक परतंत्र  
सूत्र व उपसंहारोंके विरोधकी सम्भावना देखी जाती है ।

श्रुंकर—उपसंहारोंक सूत्रपना कैम उचित है ?

समाधान—यह भी शका ठीक नहीं क्योंकि अलिंजर ( पदविशेष ) घट्ट घटी  
शराय व उक्खन भात्रिमें स्थित भी अमृतसागरक जलमें अमृतत्व पाया ही जाता है ।

अब इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्रकृपणा करत हैं । यह इस प्रकार है— इन  
शानों प्रकृतियोंका बन्ध और उद्ध्य दोनों एक साथ व्युत्पिष्ठ होते हैं क्योंकि इनके उद्ध्यक मरु  
हानेपर फिर बन्ध नहीं पाया जाता । और यहाँ उद्ध्यकासक अथवा हेमोबाका उद्ध्यका पिनाश  
वियक्षित नहीं हैं क्योंकि सत्त्वोपशम या सत्यसत्यस उन्त्यस उद्ध्यामावका अधिकार है ।  
इन दोनों प्रकृतियोंका व्योद्ध्य परोद्ध्यम बन्ध होता है क्योंकि, निरन्तरबन्धी और साम्तर  
उद्ध्यवासी प्रकृतियोंका स्वाद्ध्यम ही बन्ध हानका विरोध है । व निरन्तरबन्धी प्रकृतियां हैं  
क्योंकि, व भुवबन्धी प्रकृतियोंके साथ मानी हैं । मिथ्यादृष्टि सत्कर मूळ उत्तर व माना  
पर्य एक समय सद्गन्धी मेक्षोंम मिथ आ प्रत्यय पूर्वमें कह जा चुके हैं उन गुण  
स्थामोंम विशिष्ट जीव उन्हीं प्रत्ययोंम हम प्रकृतियोंका बांधन हैं क्योंकि अन्य प्रत्ययोंका

१ अत्रता सुतात्मचारणा आचारता सुतात्महाणा इति वात ।  
२ अ-अत्रतो उद्ध्यवाच वात्रता नहिदयार्ण इति पाठ ।

भावाद्दे । अथवा, पर्याप्ति संजलणोदयनिसेयो येव पश्यन्ना, तेष विष्णु वपासुतेमारा ।

मिच्छादिद्वी चउगइसंभृत, तस्स सप्यगइयेपेहि विराहामावादे । सामजो तियाइसंभृत,  
तस्स अरयगइयेपे सह विराहान् । सम्मामिच्छादिद्वी असज्जसम्मादिद्वी च दुगइमेभुत्त वपति,  
तेसिं विरय-तिरिक्कगइहि सह विराहान् । उवरिमा देवगइ जगइमेभुत्त वा वपति, तेसिं सेम्यइहि  
सह विराहान् । मिच्छादिद्वी मायणमम्मादिद्वी सम्मामिच्छादिद्वी असज्जसम्मादिद्वी चउगइया,  
दुगइमबदामज्जदा, सेमा मणुस्मगइया मायी । वषट्ठाण वषवाप्पिज्जण-णं च सुसुरिद्धिमि  
सुम्म । मिच्छादिद्विस्स चउविदो ववा, पुववपित्तादा । सेमाण निविहा, पुवत्तामावत्ता ।

लोभसजलणस्म को वधो को अवधो ? ॥ २५ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिद्विप्पद्वि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्ठउवसमा  
स्त्वा वधा । अणियद्विवादरद्दाए चरिमसमयं गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ २६ ॥

अभाव है । अथवा इन प्रकृतियोंका संज्ञकत्वका अन्वयविषय ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके  
बिना इनका वन्ध पाया नहीं जाता ।

मिथ्यादिदि ईर्ष्य और गतिषोस संयुक्त बांधता है, क्योंकि, उसके सब गतिषोस  
वन्धके साथ ईर्ष्य विरोध नहीं है । साधुजनसम्पत्ति और गतिषोस संयुक्त बांधता है  
क्योंकि, उसके नरकगतिसम्पत्तिके साथ विरोध है । सम्पत्तिमिथ्यादि और असंपत्तिसम्पत्ति दो  
गतिषोसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि उनके मध्य व तिर्यग्गतिके साथ वन्ध होममें विरोध  
है । अपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त वा गतिसंयोगन रहित बांधते हैं क्योंकि उनके दोष  
गतिषोके साथ वन्ध होममें विरोध है । मिथ्यादिदि, साक्षात्तसम्पत्तिदि, सम्पत्तिमिथ्यादिदि और  
असंपत्तिसम्पत्तिदि चारों गतिषोबाधों वा गतिषोबाध संभवासंयत और दोष गुणस्थानवर्ती  
जीव मनुष्यगतिषोस कामी हैं । वन्धाध्याय और वन्धप्युच्छिज्जितस्थान कृत्ति सूत्रप्रतिपत्ति है  
अतः सुगम है । मिथ्यादिद्विके इनका चारों प्रकारका वन्ध होना है क्योंकि, वे भुववन्धी  
प्रकृतियाँ हैं । दोष जीवोंके भुववन्धका अभाव होमसे तीन प्रकारका हो वन्ध होता है ।

संज्ञकत्वलेमक कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २५ ॥

यह सत्र सुगम है ।

मिथ्यादिदिमे लेकर अनिष्टविचारसाम्प्रदायिकप्रविष्ट उपसमक और अपक तक वन्धक  
हैं । अनिष्टविचारकत्तके अन्तिम समयके प्राप्त होकर जब व्युच्छिज्ज होता है । ये वन्धक  
हैं, दोष जीव अपवन्धक हैं ॥ २६ ॥

‘मिच्छाद्विष्यद्वि०’ एदेण सुत्तावयवेण वधद्वारं गुणद्वारमयसामितं च परुविदं ।  
 ‘अणियद्विवादर०’ एदेण वधविणद्वारपक्षणा कदा । एदेसि तिण्ण चैवरयाणं परुवणा  
 कदा सि देसामायियसुत्तेरं । तेनेरण सुदत्थाण परुवणा कीरदे । तं जहा—

पंचो पुत्रे वोच्छिञ्चदि पञ्च उदयो, अणियद्विचरमिसमए वधि वोच्छिण्णे सुहुम  
 सापराह्यपरिमसमए उवयवोच्छेदुवत्तादो । सेमसजलणस्स सोदय-परोदएदि पंचो, पुवो  
 दवत्तामावादो । गिरतरो पंचो, पुवपंचित्तादो । पञ्चयपरुवणाए माणसजलणमंगो । गइसंहुत्त  
 सामित्तद्वार-वधवोच्छिञ्चद्वारपक्षणाभो सुगमाभो । मिच्छाद्विस्म चठम्बिहो पंचो, पुव  
 पंचित्तादो । सेमापं तिचिहो पंचो, पुवत्तामावादो ।

हस्त-रति भय-दुगुछाण को वधो को अवधो ? ॥ २७ ॥

सुगम ।

मिथ्याद्विषये केकर अनिबृत्तिबाधरत्नामयरायिकप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक  
 पञ्चक है इस सूत्राज्ञा द्वारा वधोपशम और गुणस्थानगत वधवस्थामित्वकी प्ररूपणा  
 की गई है । ‘अनिबृत्तिबाधरत्नामक अस्तिम समयक प्राण हाकर पञ्च व्युत्पिष्ठ होता है  
 इस सूत्राज्ञा द्वारा वधव्युत्पिष्ठितिव्यापक निरूपण किया गया है । चूंकि मूत्र द्वारा इन्हीं  
 तीन भयोंकी प्ररूपणा की गई है अतएव यह वेशामशक सूत्र है । इस कारण इसक द्वारा  
 स्पष्टित भयोंका निरूपण करने है । यह इस प्रकार है—

मंत्रमनसोमक वध पूर्वमें व्युत्पिष्ठ होता है पश्चात् उदय । क्योंकि अनिबृत्ति  
 करणक अस्तिम समयमें वधके व्युत्पिष्ठ हाजामपर वृहत्तमाग्यरायिकक अस्तिम समयमें  
 उदयक व्युत्पिष्ठ पाया जाता है । मंत्रमनसोमक व्योदय-परादयन वध होता है  
 क्योंकि, उनक ध्रुवोदयत्वका अभाव है । वध उनक निरन्तर है क्योंकि, यह ध्रुववर्धी  
 है । प्रत्येकी प्ररूपणा मंत्रमनसोमक समाप्त है । गतिमैयुक्तता ध्यामित्य अप्यान और  
 वधव्युत्पिष्ठितिव्यापक प्ररूपणायें सुगम हैं । मिथ्याद्विक भागें प्रकाशक वध होता है  
 क्योंकि यह भयवर्धी प्रकृति है । शय जीवोंक तीन प्रकारका वध होता है क्योंकि,  
 उनक ध्रुववधका अभाव है ।

हाम्प, रति, भय और दुगुप्ता प्रकृतिपोंस कान वधक है और कौन अवधक  
 है ? ॥ २७ ॥

यह मूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टदुष्टि जाव अपुञ्चकरणपविट्टवसमा स्त्वा वंधा ।  
अपुञ्चकरणद्वय चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,  
अवसेसा अवधा ॥ २८ ॥

एदेव बंधद्वय गुणगवर्धनमिति यंधविषद्वयं च परबिंद । तेमेई हेसाम्मसिंध  
द्विष्टमम्यद्वय सेसत्वापमेत्वं समवामावाधो । तेणदेव सुद्वयपरवत्तना कीरदे— हस्स-एरे  
मय-दुगुण्णं वंधोदया सम वाच्छिज्जति, अपुञ्चकरणचरिमसमं चदुण्णं वोच्छेदुवत्तमाधो ।  
सौदय-परोदएदि वंधो, धुवोदयत्तमावाधो परोदए वि पचविरोहावाधो । मय-दुगुण्ण  
सम्बगुण्णोसु भित्तरो वंधो, धुवबंधिवाधो । हस्स-रदीण मिच्छाद्विष्टदुष्टि जाव पमत्तसंजो  
सि सान्ते वंधो, एत्वं पविचकस्यपयविंधुवत्तमाधो । उपरि पिरंतो, पविचकस्यपयविंधुवत्तमा-  
वाधो । पचयपरवत्तनाए वाणावरणमगो । मिच्छाद्विष्टं वडगइससुत्त, एदासि वंधस्स  
वडगइवंधेण सह विरोहावाधो । जवरि हस्स-रदीयो तिगइसंजुत्त वधइ, तन्ववत्त

मिच्छाद्विष्टे केकर अपूर्णकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बंधक हैं । अपूर्ण-  
करणस्तके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बंध स्पृष्टिज्ज होता है । ये बन्धक हैं, क्षय भीत  
अवन्धक हैं ॥ २८ ॥

इस सूत्रके द्वारा बंधावस्थान गुणस्वात्मगत बन्धरसामित्य और बन्धस्पृष्टिचित्स्थानकी  
प्रकृष्टता की है, इसीप्रकार इस देशामशक सूत्र समझना चाहिये सम्यक्ता वहाँ शाय  
अर्थकी सम्भावना नहीं है । अतएव इसका द्वारा सूचित अर्थकी प्रकृष्टता करते हैं— हास्य  
एति मय और दुगुण्ण इमं बन्ध और उच्च नामों साथ स्पृष्टिज्ज हास्य हैं क्योंकि अपूर्ण  
करणके अन्तिम समयमें उक्त वारों प्रकृतियोंने बन्ध और उच्च नामों की स्पृष्टिचित् पायी  
जाती है । इनका बन्ध स्वोत्पन्न परोक्षम होता है क्योंकि वे धुवोदयकी प्रकृतियाँ नहीं हैं बल्कि  
इनके परोक्षपक्ष में बन्ध होमेम कार्य विरोध नहीं है । मय और दुगुण्णका सब गुणस्वात्मोंमें  
मिरत्तर बन्ध है क्योंकि, वे धुवबंधी हैं । हास्य और एतिका मिच्छाद्विष्ट केकर प्रमत्त  
संपत्त तक सामान्य बन्ध है, क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है ।  
प्रमत्तसंपत्तम ऊपर मिरत्तर बन्ध है, क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धका जमाव  
है । अत्यंतकी प्रकृष्टता सामान्यतक समान है ।

मिच्छाद्विष्ट वारों गतिबोले संयुक्त बांधने हैं क्योंकि मिच्छाद्विष्ट इनका बन्धका  
वारा गतिबोले बन्धके साथ कार्य विरोध नहीं है । विशेष हमना है कि हास्य और एतिको  
तीन गतिबोले संयुक्त बांधता है क्योंकि, इनके बन्धका प्रकृतिक बन्धका साथ विरोध

भिरयगइवपेण सह विरोहादो । सासणो तिगइसहुत्त, तत्त्व भिरयगईए वंधामावादो । सम्मा मिच्छाद्वि असज्जदसम्मादिट्ठिणो दुगइसहुत्त, एदेसिं भिरय-तिरिक्खगईए वंधामावादो । उव रिमा देवगइमहुत्त वधंति, तेसु अण्णगइए वंधामावादो । जयरि अपुप्पकरणद्वए चरिमे सत्तमे मागे वट्टमाणा अगइसहुत्त वधंति ति यत्तव्व । चउगइमिच्छाद्वि-सासणसम्माद्वि-सम्मामिच्छाद्वि-असज्जदसम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइमज्जदसज्जदो, देव-गेरएएसु अणुप्यईएममावादो । उव रिमा मणुस्सा थेव होदए एदासिं पवस्स सामी, अण्णस्य पमत्तादीणममावादो । वंधद्वार्ण वंध विजट्टद्वार्ण च सुगमं । मय-दुगुंकाण मिच्छाद्विभिह चउभिरहो वंधो, पुववधित्तदो । उव रिमेसु तिविहो वंधो, पुवत्तामावादो । इस्म-रदीण वंधो सादि-अदुवो, पडिक्खत्तपयडिक्खजुवत्तमादो ।

## मणुस्साउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ २९ ॥

एव देसामासियं पुच्छासुत्तं । तेण को वधो को अवधो, किमेदस्स वंधो पुप्प वेत्थिक्खदि किमुदो किं दो वि सम वेत्थिक्खति, किं सोदण्ण परोदण्ण किं सोदय

है । सामान्यतमसम्यग्दृष्टि तीन गतिर्षोभ संयुक्त बांधना है क्योंकि, वहां नरकगतिक बन्ध नहीं रहता । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असम्यक्तमस्यग्दृष्टि दो गतिर्षोभ संयुक्त बांधत हैं क्योंकि इनके नरकगति और निर्यग्गतिक बन्धका समाप है । उपरिम और देवगतिते संयुक्त बांधत हैं क्योंकि उनमें सम्यग् गतिर्षोभका बन्ध नहीं होता । चिदाय इनका है कि मयूर्व करणकावक प्रमितम न्यस्तम मागमें वर्तमान जीव अगतिमयुक्त बांधत हैं ऐसा कहना चाहिये ।

चार गतिर्षोभान्म मिथ्यादृष्टि, सामान्यतमसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असम्यक्तसम्यग्दृष्टि स्वामी है । दो गतिर्षोभान्म संयत्तार्थयत्त स्वामी है क्योंकि देव और मारुत्तयोमें अनुमनियोक्त समाप है । उपरिम और मनुष्य ही हाकर इनके बन्धके स्वामी है क्योंकि, सम्यक् प्रमत्तादिकोका समाप है ।

वर्णाश्रान्म और बन्धगुण्ठेद्वस्थान सुगम हैं । मय और पुगुप्पनाक्य मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, ये अक्षयणी महतिर्षा हैं । उपरिम गुणस्थानोम तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वहां छह बन्धका समाप है । हान्य और रतिक बन्ध सादि अक्षय्य है क्योंकि इनकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तिर्षोभका बन्ध उपलब्ध है ।

मनुष्यायुका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ २९ ॥

एव देसामसकं पृच्छासुत्तं है । इस कारण तीन बन्धक तीन अवधक, क्या हमका बन्ध पूर्वमें स्फुटिष्ठ होना है क्या उद्यं या क्या दामो ही नाय स्फुटिष्ठ होत है, क्या स्थोदयम क्या परोदयम या क्या व्योदय परोदयम बन्ध होना है, क्या हमका



परोक्षपण, किं सांतरं किं विरंतरं किं सांतर-विरंतरं, किं पञ्चपट्टि किं त्रेहि विना, किं गश्तंठपं किमगश्तंठपं बद्धह, एदस्म वचस्स कदिगदिया सामी बसामी वा, किं वचशरणं, किं परिमसमए वचो वोच्छिञ्चहि किं पढमसमए किमपढम-अपरिमसमए वचो वोच्छिञ्चहि, किं सदिभो किमपदिभो किं भुवो किमदुवो वचो सि एदाओ पुप्फभो एत्थ कयम्माओ । पुप्फे पुच्छिञ्चज्जपुमाहट्ठं उत्तसुत्तं भणदि—

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असंजदसम्माहट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३० ॥

एत्थ वचशरणं गुणज्ञाप्यापि अस्मिन्नूच वचसामितं च उच, तेज इदरत्तायं फलवन्ना करिरे । त जह्म— ममुस्माउभस्स पुत्थ वचो वोच्छिञ्चहि पञ्च उदभो, असंजदसम्मा- रिट्ठिहि वद्धवचस्स ममुसाउभस्स वजागिपरिमसमए उदयवोण्ठेनुवठंभाओ । मिच्छाहट्ठि- सासणसम्मारिट्ठिभो सोदएण परोक्षपण वि मनुमाउभं वधंति, अविरिह्हाओ । वधंजदसम्माहट्ठी परोक्षपणेव, सोदएण सह तत्थ वधविण्हाओ । विरंतरो वचो, वज्जमाणमव पडिबक्खपयस्सिए

वच्य साम्बर, क्या विरन्तर, वा वधा साम्बर-विरन्तर है, क्या प्रत्यर्थीमे वा क्या उनके बिना ही वच्य होता है क्या गतिसेयुक्त वा क्या अगतिसेयुक्त वच्य होता है इनके वच्यके फलवन्ना गतिप्राप्तिके स्वामी अथवा अस्वामी हैं वच्यव्यापन क्या है क्या कारण समयमें वच्य व्युत्पिन्न होता है क्या प्रथम समयमें वा क्या अग्रथम अकारण समयमें वच्य व्युत्पिन्न होता है। क्या सांख्यिक, क्या अनाख्यिक, क्या सुब वा क्या मनुष्य वच्य होता है। इन प्रश्नोंका वहाँ करना चाहिये । फिरसे पृच्छायुक्त जनोंके अनुग्रहके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिप्यात्तदि, सासाह्वनमम्यग्गदि जीव अमयतमम्यग्गदि वच्यक है । ये वच्यक हैं, भेष जीव वच्यक हैं ॥ ३ ॥

इस सूत्रमें वच्यव्यापन और गुणस्वान्तोंका आशयकर वच्यस्वामित्व ही कहा गया है इसलिये वच्य मर्षाकी प्रकृतिवा करते हैं । वह इस प्रकार है— मनुष्यायुक्त पूर्वमें वच्य व्युत्पिन्न होता है पश्चात् उदय क्याकि, अर्धवतसम्यग्गदि गुणस्वात्ममें मनुष्यायुक्त वच्यके व्युत्पिन्न होजायेपर अयोगकेवर्षोंके अन्तिम समयमें उदयके व्युत्पिन्न पाया जाता है । मिप्यात्तदि और सासाह्वनमम्यग्गदि राज्ञ्य और परोक्षयस भी मनुष्यायुक्तों बांधते हैं क्याकि, इसमें कोई विरोध नहीं है । अर्धवतसम्यग्गदि परोक्षयस ही मनुष्यायुक्तों बांधते हैं क्योंकि स्वोदयके साथ वच्य होनेका इस गुणस्वात्ममें विरोध है । इसका वच्य विरन्तर है क्योंकि, वच्यमान भवमें प्रतिपन्न प्रकृतिके वच्यके बिना इनके वच्यकी

संघेन विषा संघपरिसुमत्तिदमणा । संघविरोहा अनगमिदि किण्ण पेप्पदे ? न, पडिवक्ख  
 पयस्सिधकदत्तेण एत्थ पभोजणाने । मिक्खदिट्ठिस्स मूलत्तण्णणेममयजहणुत्तकस्सपप्पया  
 पाणावरणहि सुत्ता पेत्त होंति । नत्ति पाणाममयउक्कस्सपप्पया तेक्कण्ण होंति, वेउम्भिय  
 मित्थ कम्मइयाणममाया । मासुणस्स पाणाममयउक्कस्सपप्पया मत्तेताळिस्स, ओरात्तियमित्थ  
 वेउम्भियमित्थ-कम्मइयाणममाया । अयंजदसम्माइडिस्स मणुस्माउअ संघमाणम्स मूतपप्पया  
 निग्गि, मिच्छत्तामायादे । एगममइयजहणुत्तकस्सपप्पया पत्त मोत्तम् । पाणाममयउत्तरपप्पया  
 चादाउ, आरात्तिय-ओरात्तियमित्थ-वउम्भियमित्थ-कम्मइयाणममायादे । निग्गि वि गुणट्ठाणाणि  
 मनुस्सगाइमेज्जुत्तं चरंति, तत्तंथम्स अण्णगइहि सह विरोहादे । चउगइमिच्छइडि-सासुण  
 सम्माइडिमे मासी । दुगइजमेज्जुत्तं सम्माडिडिषा सासी, निरिक्ख-मणुस्सगाइदिदअसजद  
 सम्मदिट्ठिण मनुस्माउअंघेण विरोहादा । संघदाण सुगमं । संघवोच्येने अंसजदमम्मादिडिस्स  
 अपइम-अचग्गिममए । मणुस्माउअस्स संघा माडि-अदुवो, संघस्स धुवत्तामायादे ।

समानि बरती जाती ह ।

शुक्र—बन्धक पिगध ही अन्तर है एसा क्यों नहीं ग्रहण करत ?

समाधान—येसा ग्रहण इस्सलिय नहीं करत कि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक बन्ध  
 टाप किये गय अन्तरम् प्रयाजन है ।

मिथ्यादृष्टिक मूल और उत्तर जाना य एक समय सम्बन्धी अन्तर एवं उत्कृष्ट  
 प्रत्यय जानावरणमें वह रूप ही दाते हैं । विशेष इतना है कि जाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट  
 प्रत्यय निरूपत हाते हैं क्योंकि धैर्यिकमिध और कार्यय कायपागका यहाँ अभाव है ।  
 सासात्नसम्पदृष्टिक जाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय बीजासीन हाते हैं क्योंकि, यहाँ  
 औत्तारिकमिध धैर्यिकमिध और क्रमण काययोगीका अभाव है । मनुष्यायुक्त बांधने  
 पाते अर्धयतसम्पदृष्टिक मूल प्रत्यय तीन हाते हैं क्योंकि उसके मिथ्यात्वका अभाव है ।  
 एक समय सम्बन्धी अन्तर य उत्कृष्ट प्रत्यय नी और सामाह होते हैं । जाना समय सम्बन्धी  
 उत्तर प्रत्यय व्याप्तीस हाते हैं क्योंकि यहाँ औत्तारिक, औत्तारिकमिध धैर्यिकमिध  
 और कार्यय कायपागोंका अभाव है ।

तीनों ही गुणस्थान मनुष्यगतिने संयुक्त बांधत हैं क्योंकि, उसके बन्धक  
 अन्ध गतिपोंके साथ विशेष है । बांध गतिपोंका मिथ्यादृष्टि और सासात्नसम्पदृष्टि  
 स्वासी है । दो गतिपोंका अर्धयतसम्पदृष्टि स्वासी है क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्य  
 गतिमें स्थित अर्धयतसम्पदृष्टिपोंके मनुष्यायुक्तबांधने विशेष है । बन्धात्मान सुगम है ।  
 बन्धायुक्ते अर्धयतसम्पदृष्टिक अग्रयम अन्तर समयमें हाता है । मनुष्यायुक्त बन्ध  
 सावि-अदुव है क्योंकि, उसके बन्धक धुवताका अभाव है ।

देवाउमस्स को घधो को अबधो ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विटी सासणसम्माद्विटी असजदसम्माद्विटी संजदासजदा  
पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तमजदद्वाए सखेज्जदिभाग  
गतूणं घंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३२ ॥

‘ मिच्छाद्विटीपुट्टि ’ एदेण सुत्तायसेण वधद्वारं गुणगयसामिसे व परुविदे ।  
‘ अप्पमत्तमजदद्वाए ’ एदेण वधविज्जद्वारं परुविदे । तिप्पं येव परुवणादो दसम्मासिक्ख-  
सुत्तमिण । तेपेदेण सुत्तत्वे मणिस्सामो । त अहा — एदस्स पुप्फमुदयो बोधिसिद्धिदि पञ्च  
बंधो, देवाउमस्स असंजदसम्मादिद्विचरिमसमए बोधिसिद्धिद्वयस्स अप्पमत्तद्वाए सखेज्जदिभागे  
गतूणं वधवोप्पेदुवलंभादो । परोदएणेन वधो, सोदएणदस्स तित्थपरस्सेव बंधविरोहादो ।  
मिरतणे वधो, पडिवक्खपयद्विषयकवर्तकमावादो ।

मिच्छाद्विस्स देवाउम वधतस्स चत्थारि मूत्तपण्णया । एगममइया जहणुक्कस्स-

देवासुक्क कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टि, सासणानमस्यगद्विष्टि, असंयतसम्यगद्विष्टि, संयतार्थयत, प्रमत्तमयत, और  
अप्रमत्तमयत बन्धक हैं । अप्रमत्तमयतकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युत्पिन्न होता  
है । ये बन्धक हैं, उपेय जीव अबन्धक हैं ॥ ३२ ॥

मिच्छाद्विष्टि भावि अप्रमत्तमयत तक बन्धक है इस सूत्रांग द्वारा बन्धा-  
प्याव और सुखरूपानगत क्वामित्वादी प्रकृत्या की गई है । अप्रमत्तसंयतकालके  
संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युत्पिन्न होता है इससे बन्धविज्जद्वारमयी प्रकृत्या की  
है । इस तर्जि मयीही ही प्रकृत्या करमे यह सूत्र वैज्ञानिक है । इस कारण इससे  
राखित मयीका कहन है । वह इस प्रकार है — बंधावुक्क पूर्वमे जन्म व्युत्पिन्न होता है  
पश्चात् बन्ध वपीणि असंयतसम्यगद्विष्टिक अस्तिम समयमे इसक उदयक व्युत्पिन्न  
हानपर पश्चात् अप्रमत्तकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्धव्युत्पिन्न पाया जाता है ।  
इसका बन्ध पराद्वयम ही हागा है क्योंकि तीर्थंकर प्रवृत्तिक समान क्वाद्वयमे इसक  
बन्ध हानका पिदाध है । बन्ध इसका निरन्तर है वनाकि प्रतिपन्न प्रवृत्तिक बन्धस किसे  
नय मन्तरका यही अमाय है ।

इपायुका बांधनपास मिच्छाद्विष्टिक मूल प्रत्यय का हान है । एक समय सत्यगंधी

पञ्चया दस अट्टारस । पाणासमयउक्कस्सपञ्चया एककर्वचास, वेठविय-वेठवियमिस्स-ओरात्थिमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणं तत्थाभावादो । सासणसम्मादिट्ठिस्स पञ्चया देवाउअ वधमाजस्स पाणावरणवधतुत्थ । जयरि पाणासमयउक्कस्सपञ्चया छाशाल, वेठविय-वेठ वियमिस्स-ओरात्थिमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिपञ्चयपरूवणाए पाणावरणमगो । जयरि पाणासमयउक्कस्सपञ्चया वाशाल, वेठविय-वेठवियमिस्स-ओरा त्थिमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । उवरिमेषु गुणद्वेषेषु पञ्चया देवाउअस्स पाणा वरणतुत्थ ।

सखे देवगइसज्जुत्तं, अण्णगइवंधेण देवाउअवंधस्स विरोहइत्तो । तिरिक्ख-मणुस्सगइ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदसंजइत्ता सामी । उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ महव्वयाणमपुवत्तंमात्तो । वंधद्वारं सुगमं । अपमत्तद्वए संखेज्जदिमागे गदे देवाउअस्स वधवोच्चइत्तो । अपमत्तद्वए संखेज्जसु मागेसु गदेसु देवाउअस्स वंधो वोच्चिज्जदि ति केसु नि सुत्तपोत्थएसु उवलम्माइ । ततो एत्थ उवपसं उट्ठण वत्थ । देवाउअस्स वंधो सादिओ भद्धो, भद्धवधविचारो ।

अधन्य व उट्ठए प्रत्यय क्रमशः दृष्ट और अटारइ हाते हैं । नाना समय सम्बन्धी उट्ठए प्रत्यय इत्यादि हाते हैं क्योंकि यहाँ वैश्विक वैश्विकमिथ और आहारिकमिथ और कर्मण प्रत्ययोंका समाव है । देवायुका बांधनेवाले आत्मात्मसम्बन्धिके प्रत्यय ज्ञानावरणके बन्धके समान हैं । विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उट्ठए प्रत्यय हयालीन हाते हैं क्योंकि वैश्विक वैश्विकमिथ और आहारिकमिथ और कर्मण प्रत्ययोंका यहाँ समाव है । असंयतसम्बन्धिकी प्रत्ययप्रकृति ज्ञानावरणके समान है । विशेषता यह है कि नाना समय सम्बन्धी उट्ठए प्रत्यय हयालीन हैं क्योंकि वैश्विक वैश्विकमिथ और आहारिकमिथ और कर्मण प्रत्ययोंका यहाँ समाव है । उपरिम गुणस्वानोंमें देवायुके प्रत्यय ज्ञानावरणके समान हैं ।

समी जीव दृक्गतिन संयुक्त बांधत हैं क्योंकि जन्म शांतपाके बन्धके साथ देवायुके बन्धका विरोध है । निर्वन्ध और मनुष्य गतिके मिथ्याहृदि, सासाहससम्बन्धिके असंयतसम्बन्धिके और संयतसंयत स्थानी हैं । उपरिम जीव मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि वृक्षरी गतियोंमें महामर्तोंका समाव है । बन्धाध्वज सुगम है । अपमत्तद्वएके संख्यातके मागके भीत जानेपर देवायुका बन्ध-पुच्छेव होता है । अपमत्तद्वएके संख्यात बहुतमागोंके भीत जानेपर देवायुका बन्ध प्युच्छिन्न होता है ऐसा किन्ही खूबपुस्तकोंमें पाया जाता है । इस कारण यहाँ उपरिम प्राप्तरूप कहना चाहिए । देवायुका बन्ध सादि व अष्टव है क्योंकि वह मनुष्यबन्धी है ।

देवगह-पचिंदियजाति-वेउत्रिय नेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस  
सउण-वेउत्रियमरीर-अगोवग वण्ण गध रस फास देवगइपाओग्गाणु-  
पुब्बि अगुरुवलहुव उवघाद परघाद उस्सास-पसत्थविहायगइ-त्तस वादर  
पज्जत्त पत्तेयसरीर थिर-सुम-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज णिमिणणामाण का  
वधो को अयंधो ? ॥ ३२ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्णुद्वि जाव अपुब्बकरणपइद्वउवममा स्ववा वधा ।  
अपुब्बकरणदाए मम्बेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,  
अवसेसा अयधा ॥ ३४ ॥

अपेय सुत्थ वधदाए गुणगयमामित्त वधविज्जद्वत्तं नि य सुत्तं तवई देमामामिय ।  
तदा एत्थं सुइद्वअपुब्बका कइद्व— देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बि-वेउत्रियमरीर-वेउत्रिय  
अगोवगणामाण पुब्बसुत्ता वाप्पि अदि पच्छ वधो, अमंजइमम्मानिद्विद्वि अइद्वयाअमंजि  
अउण्णं पयईणमपुब्बअदाए मंजउअसु भागसु गइसु वधवाण्डुवत्तंमादा । तदा-कम्मइय-

देवगणि वेउत्रियजाति, अक्रियिरु, तेजस व कामज शरीर ममचतुरसमम्भान,  
वेउत्रियिअउगोवापंता, वण गंध रस, मग, देवगणिप्रायोम्यानुपूरी, अगुरुत्तु, उपवाल,  
परवाल, उच्छ्वास, प्रशस्तिविहायगति त्रम पाण, पयास, प्रत्येकशरीर, स्मिर, सुम, सुभग,  
सुम्बर, भाद्रय भैर निमाज इन नामकम प्रकृतियोंअ केन वधक और केन अवन्धक  
है ? ॥ ३३ ॥

वह म्ब सुगम है ।

मिथ्यापठिम तस अपुब्बकरणप्रतिष्ठ उपसमरु व क्षपक तरु वन्धक ॥ अपुब्बकम  
कम्भक मंज्यात बहुमागोअ विनाअ इनका वध प्पुच्छिअ हाता है । य वन्धक है, उप  
जीन अवन्धक है ॥ ३४ ॥

पूजा इत म्बक हाता वधवाप्याज गुणगयाजगम कामिअ और वधविज्जद्वत्तमाज  
है निरौन विषा गया है मतपव वह इजामरीक म्ब है । इस कारण हमक हाता म्बित  
अपीकी प्रकामा करत है—देवगणि देवगणिप्रायोम्यानुपूरी वेउत्रियमरीर भार वेउत्रिय  
मरीरगोवापंता मामकर्मका पुष्पे उदयवपुच्छिअ हाता है पद्याज वध क्योंकि अमंजयतमम्भ  
गद्वि गुणगयाजमे इत पाया प्रहजियोंअ उपपव म्ब हातामपर पद्याज अपुब्बकाप्याजमक  
मंज्यात बहुमागोअ विनाअ इनका वधपुच्छिअ पाया जाता है । तेजस व कामज शरीर,

सरीर-समवतरससंयण-वण-गध-रस-फास-अगुरुअल्लुअ-उवधाद परधाद उस्सास-पसत्तविहाय  
गद्-पत्तेयसरीर विर-सुम सुस्सर-णिमिणणामाण पु-व वैषो वोच्छिञ्जदि पञ्च उदओ, अपुव  
करणदि पट्टवचाय एदामि पयणीणं सज्जोचिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदुयलंभादो । पंचिदिय  
जादि तस-यादर पञ्जस-सुमगादेज्जाण पि एव वैव । उवरि एदासिमज्जोचिचरिमसम ए उदओ  
वोच्छिण्णो ।

देवगद्-देवगद्भाभोग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअगोर्वगणामाणं परोदएण  
सव्वगुणद्वेणेषु वैषो, परोदएण वज्जमाणएक्कमपयणीदि सह पादादो । तेजा-कम्मइय-वण  
गध-रस फस मगुरुअल्लुअ विर-सुम णिमिणणामाभो सोदएणेव वज्जति, धुवादयत्तादो । पंचि  
दियजादि-तस-यादर-पञ्जत्तण मिच्छाइद्विदि वैषो सोदय परावओ । उवरि सोदओ वैव,  
तत्थ पडिवक्खुदयामावादो । समवतरसमयण-पसत्तविहायगद्-सुस्सरणं सव्वगुणद्वेणेषु  
सोदय परोदओ, पडिवक्खुदयसंभवादो । सुमगादेज्जाणं मिच्छाइद्वि-सासणयम्माइद्वि-सम्मामिच्छा  
इद्वि असंजदमम्मानिद्वीसु सोत्थ परोदओ । उवरि सोदओ वैव, पडिवक्खुदयामावादो । उवधाद

समवतरसमयस्य एव गच्छ रस स्यदा अगुरुअल्लुअ उवधात परधात उच्छ्वात  
प्रगल्भविहायागणि प्रत्येकशरीर स्थिर शुभ सुस्वर और निर्माण नामकमका पूर्वमें बन्ध  
व्युच्छिन्न होता है पश्चात् उदय कर्षोकि अपूर्णकरणमें बन्धके मष्ट हाडा:नपर पश्चात्  
सयोगकयमीके अन्तिम समयमें इन प्रकृतियोंका उदयव्युच्छिन्न पाया जाता है । पंचन्द्रिय  
जाति त्रस बाह्य पर्याप्त सुमग भार भाव्य इनका भी बन्धव्युच्छिन्न इन्हीं प्रकार है ।  
विशयता यह है कि इनका उदय अयोगकयमीके अन्तिम समयमें व्युच्छिन्न होता है ।

इयगणि देवगणिप्रायोग्यामपूर्वी वैनिपिऊन्तीर भार बनिपिऊन्तीरगांवापांगका  
बन्ध भव गुणस्यात्मोऽपरोक्ष्यम होता है कर्षोकि य प्रकृतियों परादयमे वैचनेषामी ग्यारह  
प्रकृतियाँ काय मार्गी है । तैजसयकामज शरीर, वज गच्छ रस स्यदा अगुरुअल्लुअ स्थिर  
शुभ भार निर्माण य नामकमप्रकृतियों स्वादयमे ही बधती है कर्षोकि य अयोग्यी है ।  
पंचेन्द्रिय जाति त्रस बाह्य और पर्याप्त प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याएदि गुणस्यात्मोऽपरोक्ष्य  
परोक्ष्यम होता है । इसके ऊपर स्वादयमे ही होता है कर्षोकि यहां प्रतिपक्ष  
प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । समवतरसमयस्य प्रगल्भविहायागणि और सुस्वरका  
मष्ट गुणस्यात्मोऽपरोक्ष्य परादय बन्ध है कर्षोकि इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयकी  
अभावात्ता है । सुमग और भाव्य प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याएदि नामाइनसम्यगदि,  
सम्यग्मिथ्याएदि एवं असंयतसम्यगदि गुणस्यात्मोऽपरोक्ष्य परादयम होता है । इसके  
ऊपर स्वेदयमे ही होता है कर्षोकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

परचाद-उत्सास-पक्षेपसरीराण मिच्छाद्वि-साधनसम्माद्वि-असंजडसम्मादिद्वीसु सादय-परोक्षो  
 षो; अपन्त्रत्कले परचादुत्सासाभ्युदयभावे वि, विम्वहगदीय उवचाद पक्षेपसरीराण  
 उदयभावे वि, मिच्छाद्वि-पक्षेपसरीराण सहायनसरीरोदय सते वि षंभुवत्मादो । अत्र  
 सेमान सादयो वेव, अपन्त्रस-साहायनसरीरोदयान्मभावादो । अत्र परचादुत्सासान् पञ्चमि  
 सोदय-परोक्षो षो ।

तेजा-कम्पइयसरी-अण्ण-गंव रस-फास-अगुरुवत्तुव उवचाद-विमिषाण गिरतरं षो,  
 सुवर्चविषयो । देवग-देवगइयायोम्याणुपुवि येउध्वियसरी-अउध्वियसरीरंमोबगाण मिच्छ-  
 द्वि-साधनसम्मादिद्वीसु सांतर गिरतरो । कुत्रो ? अस्सेन्यवासाउभतिरिक्त मणुस्सेसु चिंत  
 षंभुवत्मादो । उवति गिरतरो वेव, एगसमण षंभुवरमाभावादो । समचउरससंयन-पसत्त-  
 विहायग-सुमग-सुम्सर आयेन्जाण सांतर-गिरतरो मिच्छाद्वि-साधनसम्मादिद्वीसु, मोममूपसु  
 चिंतषंभुवत्मादो । उवति चिंतं पडिक्कउपपडिवंभाभावादो । पंचिदियवादि-सस-वातर

उपचात परचात उच्यते चौर प्रत्यक्षचारी प्रकृतिषोऽपि मिष्याद्वि सासाधनसम्माद्वि  
 और अर्थात्तसम्माद्वि गुणस्थानमें स्वोदय परोक्ष बन्ध है क्योंकि अपचातकाळमें परचात  
 और उच्यते प्रकृतिषोऽपि उच्यते अभाव होनेपर भी उच्यते बन्ध विम्वहगतिमें उपचात और  
 प्रत्यक्षचारीके उच्यते अभाव होनेपर भी उच्यते बन्ध तथा मिष्याद्वि गुणस्थानमें  
 प्रत्यक्षचारीके साधारणचारीके उच्यते होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । होय गुणस्थान  
 परी जीवोंके उच्यते बन्ध उच्यते ही है क्योंकि वहां अपचात और साधारणचारीके  
 उच्यते अभाव है । विशेषतः यह है कि परचात और उच्यते प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष गुणस्थानमें  
 स्वोदय परोक्ष बन्ध है ।

तैजस व काम्य चारी, बर्च बन्ध रस स्वर्ग अगुरुवत्तु उपचात और निर्माज  
 इत्यत्र गिरतरं बन्ध है क्योंकि ये प्रत्यक्ष प्रकृतिषोऽपि । देवगति देवगतिप्रत्यक्षानुपुर्वी  
 वैकिकिचारी और वैकिकिचारीराग पाग इत्यत्र बन्ध मिष्याद्वि और सासाधनसम्मा  
 द्वि गुणस्थानमें सात्तर गिरतर है । इत्यत्र कारण यह है कि अर्थात्तचारीगुण स्थित  
 और मनुष्योंमें गिरतर बन्ध पाया जाता है । इससे ऊपर गिरतर ही बन्ध है क्योंकि,  
 एक समयसे बन्धका नाश नहीं होता । समचउरससंस्थान प्रत्यक्षविहायगति सुमग  
 सुस्वग और अयेव प्रकृतिषोऽपि बन्ध मिष्याद्वि और सासाधनसम्माद्विषोऽपि सात्तर  
 गिरतर है क्योंकि, मोममूपसुमें उच्यते गिरतर बन्ध पाया जाता है । ऊपर  
 गिरतर ही बन्ध है क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिषोऽपि बन्धका अभाव है । पंचेन्द्रिय-

पञ्चत पत्तेयसरीरणं मिच्छद्दृष्टिम्ह सांतर गिरंतरो यंचो । कुदो ? सणक्कुमारदिदेव गेरइएसु  
भोगमूमीएसु च गिरतरयधुवल्मादो । सासणादिसु गिरंतरो, पडिवक्खपयडिवंधामावादो ।  
परघादुस्सासाण मिच्छद्दृष्टिम्ह सांतर-गिरंतरो, देव-गेरइएसु भोगमूमीए च गिरंतरयधुवल्मादो ।  
सासणादिसु गिरंतरो, अपञ्जसयधामावादो । बिर-सुमार्य मिच्छाद्दृष्टिप्पहुडि जाव पमतो सि  
सांतरो । उवरि गिरंतरो, पिण्डिवक्खपयडिवंधादो ।

देवगद-देवगदपाओग्गालुपुप्पि-वेउप्पियदुगाण मिच्छद्दृष्टि-सासणसम्मादिहीसु ओरा-  
द्वियमित्तं कम्म-त्य-वेउप्पियदुगामावादो एक्कंवाचम-अण्णदात्तियपञ्चया । सम्मामिच्छ  
दिद्विम्ह चादात्तियपञ्चया, वेउप्पियदुगाणामावादो । असज्जदसम्मादिद्विम्ह चोदात्तिय  
पञ्चया, वेउप्पियदुगामावादो । अवसेसाण पयहीणं पञ्चया सब्बगुणद्वारेणु [ पाणावरण- ]  
पञ्चयतुत्थ, विससकरणामावादो । अदि अत्थि तो चित्थिय बसन्थो ।

देवगद-देवगदपाओग्गालुपुप्पीओ सप्पगुणद्वारेणजीवा देवगदसज्जं वधत्ति, अण्णगद्वि  
सह विरोहादो । वेउप्पियसरीर वेउप्पियमरीरभगोवणाणि मिच्छद्दृष्टी देव-गेरइएगदसज्जं ।

जाति बस वत्तर पयास और प्रत्येकशरीरक मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें सामान्तर निरन्तर बन्ध  
है। इसका कारण यह है कि समस्तभूताराणि देवों सापक्षियों और भोगभूमिओंमें निरन्तर बन्ध  
पाया जाता है। सामान्तर भादि उपरिभ गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है क्योंकि वहाँ  
प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका समावेश है। परन्तु और उक्तस्थासक मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें  
निरन्तर निरन्तर बन्ध है क्योंकि देव जातकी और भोगभूमिओंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता  
है। सामान्तर भादि उपरिभ गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है क्योंकि वहाँ अपर्याप्तके  
बन्धका समावेश है। स्थिरभारभूम प्रकृतियोंका बन्ध मिध्यादृष्टिसे छेकर प्रसक्त एक सामान्तर  
है। ऊपर निरन्तर है क्योंकि वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है।

वृक्षगति देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और वैकल्पिकशक्तिके प्रत्यय मिध्यादृष्टि और  
सासाज्जसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इत्यादि और छयाछीस है क्योंकि वहाँ  
औद्यारिकमिध आर्षेण और वैकल्पिकशक्ति प्रत्ययोंका समावेश है। सम्यग्मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें  
छयाछीस प्रत्यय है क्योंकि वहाँ वैकल्पिक आयोगका समावेश है। अर्थात्सम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानमें चयाछीस प्रत्यय है क्योंकि वहाँ वैकल्पिकशक्तिकका समावेश है। शेष प्रकृतियोंके  
प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें [ ज्ञानावरणके ] प्रत्ययोंके समावेश है क्योंकि विशेष कारणोंका  
समावेश है। और यदि है तो विचारकर कहना चाहिये।

देवगति और वृक्षगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सब गुणस्थानोंके जीव देवगतिसे संयुक्त  
बांधते हैं क्योंकि भाग्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विशेष है। वैकल्पिकशरीर और  
वैकल्पिकशरीरानुपांगको मिध्यादृष्टि जीव देवगति वधत्तगतिसे संयुक्त बांधते हैं। उपरिभ





सामी । वधदाण सुगम । अपुवकरणसु सत्तखहाणि कज्जण सुत्तहाणि ठवरि चडिय र  
 सुहावसेमे वधो वोच्छिज्जदि । सुत्तामावे सत्त चेव सुहाणि कीरति ति कष णप्पदे ।  
 आहरियपरपरामदुवदेसायो । तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फाग-अगुरुत्वभुव-उव  
 विमिषणामात्मं मिच्छादिदिग्धि चउम्बिहो वधो, धुववधित्तादा । उवरिमणुपेसु ति  
 धुवसमावाधो । अवसेसाओ पयडीओ सादि-अद्भुतियाओ, पडियक्खपयडिवधसंमवाधो,  
 धादुम्मासाणमफज्जसत्तवत्त वधमाणकाले पडिवक्खवधपयडीण अमाव वि पंधामावुवल्लमा

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवगणामाण को वंधो  
 अवधो ? ॥ ३५ ॥

सुगममेवे ।

अण्णमत्तसज्जा अपुवकरणपट्टुवसमा खवा वधा । अण्  
 करणदाण सत्तेजे भागे गत्तुण वधो वोच्छिज्जदि । एदे व  
 अवसेसा अवधा ॥ ३६ ॥

प्रमत्तसंयतादिक स्वामी है । वग्धाणाम सुगम है । अपूर्वकरणकाटक सात खण्ड करव  
 खण्ड करर खड़कर सातवे खण्डक शप रहनपर उमका वग्ध भुम्भित्त हाता है ।

शुद्ध—खुदके अभावमें सात ही खण्ड किस जाने हैं यह किम प्रकार  
 होता है ?

समाधान—नहीं यह आचार्यपरम्परागत उपदेशान्त्र जात हाता है ।

तैस्म य कामेण शरीर वर्जं गन्ध रस स्पर्श अगुरुत्वभु उपधात और नि  
 नामकमोक्ष मिध्यादधि-गुणस्यागमं धारो प्रकारका वग्ध है क्योंकि ये भुयस्वभी प्रक  
 है । उपरिम गुणस्यागमं तीन प्रकारका वग्ध है क्योंकि वही भुय रग्ध नहीं है ।  
 प्रकृतियां साधि व अभुव वग्धसं युक्त है क्योंकि उमकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वग्ध स  
 है । परमात्मा और उच्छ्वासाको अपर्णा संयुक्त बाधनक कालमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके व  
 अभावमें भी उमका वग्ध नहीं पाया जाता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपांग नामकमोक्ष कौन वन्धक और  
 अक्वक है ? ॥ ३५ ॥

यह सुख सुगम है ।

अप्रमत्तप्रयत्न और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपक्रमक व क्षपक वन्धक है । अपूर्व  
 कालके संस्कार बहुभागोंके बिताकर वग्ध भुम्भित्त होना है । ये वन्धक हैं, उप  
 वन्धक हैं ॥ ३६ ॥

एवं दशमासिष्यसूतं, पञ्चदश, सामित विणहृद्रात्र वि य परूषपादा । तेवरुष  
सूत्रद्वयपरूषका कीरद— एवमित्युदयो पुनं योच्छिञ्चदि पच्छा बंधो, पमत्तमत्रमि  
महोदयानमेदामिपुष्पकणमि बध्नोच्छिञ्चदुवर्तमादा । परादणव एदात्रा बन्धनि, ब्रह्म  
दुगादयविरहिदयपमत्तसु चैव पयोउलमादो । भिगतरं बन्धति, पडिवस्तुपयडीव बधेव निव  
बंधमात्रदा । पञ्चपपरूषपाए मूलुतमाजोगममयबहणुत्तस्मप चया गाभारबन्ध  
बन्धमा । [यदि] चतुसंजलन-बध्नोक्तसाय-भोगा पाषास चंभ आहारदुगस्य पञ्चमा तो समसु  
अपमत्तपुष्पकणसु आहारदुगबंधन होदर्थ । न भव, तद्वापुवर्तमादा । तदा बन्धहि नि  
पञ्चएहि होदर्थमिति ? न एय दासो, इच्छिञ्चमाणतादो । के ते बन्ध पञ्चमा जहि आहार  
दुगस्य बंधा होदि ति युते बुचद— नित्यपराहरिष-बहुसुद-पययपापुरमा आहारदुग  
पञ्चमो । अपमादो वि सपमादोसु आहारदुगबंधनगुवर्तमादो । अपुष्पस्तुवरिसत्तममम

यह देशात्मक सूत्र है क्योंकि यह बन्धाध्वान् आमित्य और बन्धधिनप्रस्थानना  
ही प्रकृपण करता है । इसी कारण हम सूत्रसंश्लेषित अर्थोंमें प्रकृपणा करते हैं— हम दोनों  
प्रकृतिधर्मोंका उदय पूर्वमें स्फुटिष्ठ होता है पश्चात् बन्ध क्योंकि प्रमत्तसंपत्तमें इनका  
उदयक नष्ट होजाएपर अपूर्वकरणमें बन्धन्युच्छिञ्च पाया जाता है । ये दोनों प्रकृतिधर्मों पर  
इयत्त बंधनी है क्योंकि, आहाररहितके उदयसं रहित प्रमत्तसंपत्तमें अथात् प्रमत्त और  
अपूर्वकरण गुणस्थानमें ही इनका बन्ध पाया जाता है । उक्त दोनों प्रकृतिधर्मोंका बन्ध  
विरह्यत होता है क्योंकि प्रमत्तसंश्लेषित प्रकृतिधर्मोंका बन्धके बिना इसका बन्धका सत्माव पाया  
जाता है । प्रत्ययप्रकृपणमें मूल ब उदय माना एवं एक समय सत्त्वगुणों अथवा उदय प्रत्यय  
बन्धाध्वान्के समान ही कहना चाहिये ।

संक्षेप—आर संश्लेषण नी मोक्षपाय और नी योग इस प्रकार यदि बार्त ही  
आहाररहितक प्रत्यय है ता सर्व प्रमत्त और अपूर्वकरण संपत्तमें आहाररहितका बन्ध  
होना चाहिये । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि, बिना पाया नहीं जाता । अत एव बन्ध नी  
प्रत्यय होना चाहिये ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि अन्य प्रत्ययोंका मानना भवाद ही है ।

संक्षेप—वे बन्ध प्रत्यय कीमत है त्रिभक्त द्वारा आहाररहितका बन्ध होता है ?

समाधान—इस शंकाका उत्तर यह कहते हैं— तीर्थंकर, आचार्य बहुभूत वर्णित  
उपाध्याय और प्रवचन इनमें अनुशासन कर्मा आहाररहितका कारण है । इसका अतिरिक्त  
प्रमादका भभाव भी आहाररहितका कारण है क्योंकि प्रमाद सहित जीवोंमें आहाररहितका  
बन्ध पाया नहीं जाता ।

किंण पघो ? ण, तत्थ तित्थयरणारिय-यहुमुद-पवयणविसयरणज्जिदससकराभावादो । देवगाइसुत्तुपो आहारदुगपघो, वण्णगर्हहि सह तथ्यपथित्तादो । मणुसा वेव सामी, वण्णग्ग तित्थयरणारिय-यहुमुदरागस्स सज्जममहिदस्स वणुवत्तमादो । वधद्वार्य पधविणट्टद्वार्य प सुगम, सुत्तणिदिट्टत्तादो । सात्थिओ वद्धो च पघो, आहारदुगपन्वयस्स मादि-सपप्पवसाणत्त-दंसणादो ।

तित्थयरणामस्स को वधो को अवधो ? ॥ ३७ ॥

सुगमं ।

असज्जदसम्माइट्ठिप्पट्ठि जाव अपुव्वकरणपट्टउवसमा स्त्वा वधा । अपुव्वकरणट्ठाए सस्सेज्जे भागे गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३८ ॥

एदं देसमासियसुत्तं, म्यामित्त-बंधद्वार्य-बंधविणट्टद्वार्यण चेव पक्खवादा । तत्पदेव

श्रुक्—अपूर्वकरणक उपरिम सप्तम भागमें इनका बन्ध क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होगा क्योंकि वहां तीर्थकर, मात्मार्य बहुभुत और प्रवचन विषयक रागसे उत्पन्न हुए संस्कारोंका अभाव है ।

आहारश्रिकका पन्ध देवगतित्ते संयुक्त होता है क्योंकि मध्य गतिपाक साथ उत्पन्न बन्ध होनेका विरोध है । इनके बन्धक मनुष्य ही स्वामी है क्योंकि मध्यम तीर्थकर, मात्मार्य और बहुभुत विषयक राग स्वयं चाहित पाया नहीं जाता । बन्धाप्याप्त और बन्धविनष्टस्याप्त सुगम है क्योंकि ये स्वयं ही निर्दिष्ट हैं । वनों प्रवृत्तियोंका सादिक और अग्रज बन्ध होता है क्योंकि, आहारश्रिकका प्रत्यक्ष सादि और स्वयंस्वयमान देखा जाता है ।

तीर्थकर नामकमकर कैन वधक और कैन अवधक है ? ॥ ३७ ॥

यह मूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दर्शित्ते लेख अपूर्वकरणप्रतिष्ठ उपशमक और क्षण तक वधक है । अपूर्वकरणकालके संस्थात बहुमागोंके विताक पप स्पृष्टिमान होना है । ये वधक हैं, शेष जीव अवधक हैं ॥ ३८ ॥

यह वरामगक सूत्र है क्योंकि वह व्याप्तिय बन्धाप्याप्त और बन्धविनष्टस्याप्तका

सूक्ष्मत्ववशवत् कृत्स्नायो— तिथ्यपरस्स पुण्य बंधो वांछिन्नमिदं पञ्चम उद्देशो, अपुण्यकरण  
 छस्सममागपरिमसमण षट्ठबंधस्त तिथ्यपरस्स सज्जीगिपडमसमण उदयस्सार्दि क्खरू  
 बज्जीगिचरिममण उदयबोच्छेदुवर्लमादो । परोदयेणैव बंधो, तिथ्यपरकमुदयसंभवहन्तु  
 सज्जीगि बज्जीगिजिणेषु तिथ्यपरबंधाणुवत्त्मादो । विरतरो बंधो, सगबधकरणे संते' बद्धकसएव  
 बंधुकरमावादादो । असंभवसम्मादिद्वी दुग्गसंखुणं बधति, तिथ्यपरनधस्स विरय तिरिक्खग  
 बंधेहि सह विरोहादो । उवरिमा देवगइसंखुण, भणुसगइद्विदजीवाण तिथ्यपरबंधस्त देवमई  
 मोसूण अण्णमईहि सह विरोधानो । तिगदिअसंभवसम्मान्धिणी सामी, तिरिक्खगइए तिथ्यपरस्स  
 बधामावादा । मा हादु तत्थ तिथ्यपरकम्मबंधस्स पारमो, जिणाणममावादा । किंतु पुण्यं  
 बद्धतिरिक्खाउत्तम पण्ठा पडिवण्णमम्मत्ताविगुणेहि तिथ्यपरकम्म बधमाणाण पुणो तिरिक्खे  
 सुप्पण्णापं तिथ्यपरस्स बधस्स सामितं उप्पमि सि खुत्ते— ज, बद्धतिरिक्ख-मणुस्साउत्तम  
 जीवाण बद्धभिय देवाउत्तम जीवाण व तिथ्यपरकम्मस्स बधामावादा । तं पि

ही प्रकपय करता है । इसी कारणसे इसका द्वाप सुचित अर्थोक्त वर्णन करते हैं—  
 तीर्थकर नामकर्मका पूर्वमें बन्ध स्युच्छिद्य होता है पश्चात् उक्त कर्मोंकि अपूर्वकरके छठे  
 सत्तम भागके अन्तिम समयमें बंधक भए हाजनेपर तीर्थकर नामकर्मका सयोगकेबलीके  
 प्रथम समयमें उद्घाटन प्रारम्भ करके अयोगकेबलीके अन्तिम समयमें उद्घाटन  
 पाया जाता है । इसका बन्ध परोक्ष्यसे ही होता है क्योंकि, जहाँ तीर्थकरकर्मका उद्घाटन  
 सम्भव है उन सयोगकेबली और अयोगकेबली जिनमें तीर्थकरका बन्ध पाया नहीं जाता ।  
 बन्ध इसका मिरल्लर है क्योंकि अपन कारणक होनेपर कलसबसे बन्धका विग्राम  
 नहीं होता । असंयतसम्प्रादृष्टि इस दो गतिथियोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि तीर्थकर प्रकृतिके  
 बन्धका नरक व तीर्थक गतिथीके बन्धके साथ विरोध है । उपरिम जीव वृद्धगतिसे संयुक्त  
 बांधते हैं क्योंकि मनुष्यगतिमें स्थित जीवोंके तापकर प्रकृतिके बन्धका देवगतिसे  
 छेदकर अन्य गतिथीके साथ विरोध है । तीम गतिथीके असंयतसम्प्रादृष्टि जीव इसका  
 बन्धके स्वामी है क्योंकि तीर्थगतिथीके साथ तीर्थकरके बन्धका समाप है ।

शुद्ध—तिर्यग्गतिम तीर्थकरकर्मके बन्धका प्रारम्भ भक्त ही व हा क्योंकि बहा  
 जिनोंका समाप है । किन्तु जिन्होंने पूर्वम तिर्यग्गायुका बांध सिधा है उनके पीछे सम्य  
 क्कादि गुणोंके प्राप्त होजानेसे तीर्थकरकर्मको बांधकर पुनः तिर्यगोंमें उत्पद्य हासेपर  
 तीर्थकरके बन्धका स्वामिपना पाया जाता है ।

समाधान —इसके उत्तरमें कहते हैं कि ऐसा होना सम्भव नहीं है क्योंकि,  
 जिन्होंने पूर्वमें निपद्य व मनुष्य आयुका बन्ध करलिया है उन जीवोंके नरक व देव आयुओंके  
 बन्धसे संयुक्त जीवोंके समान तीर्थकरकर्मके बन्धका समाप है ।

शुद्ध—बह भी कैसे सम्भव है ?



कदिहि कारणेहि जीवा तित्ययरणामगोद कम्म वंभंति ?

॥ ३९ ॥

कथं तित्ययरस्स णामकम्मानयनस्स गादमग्गा ? ज, उप्पागोदयंपविविवाभवित्तप  
तित्ययरस्स वि गोत्तमिदीदो । मयकम्माणं पप्पण अमणिदूण निरवयरणामकम्मम्भ किमिदि  
पप्पवपरूवणा भिमे ? मात्तकम्माणि मिच्छत्तपयाणि, मिच्छत्तोदण्ण विणा एदमिं वंषा  
मावत्तो । पणुदीमकम्माणि अज्जानुवंपिपयाणि, तदुदण्ण विणा तमिं वंषाणुवत्तमादो ।  
इम कम्माणि अमज्जमपप्पयाणि, अपप्पसग्गाणावरणादण्ण विणा तमिं वंषाभावात्ता ।  
पप्पवत्ताणवरणचदुक्क ममयामग्गादयपप्पय, तेण रिवा तत्त्वंपाणुवत्तमात्ता । अत्तकम्माणि  
पमादपप्पयाणि, पमादण विणा तमिं वंषाणुवत्तमादो । व्वाउअ मात्तिमविम्वहिपप्पइय,  
अप्पमत्तदण्ण मउअदिमाग गोवे अइविमाहिइत्तमगावेदुप्प मात्तिमविमाहिइत्तम पेव देवाउअस्स

किन्तु कर्मणो वीच तीर्थकर नाम-गानकमक्य बाधते है ? ॥ ३० ॥

शंकर—नामकमक्य अवयवभूत तीर्थकर कर्मकी गान संज्ञा कल स्वम्भ है ?

सम्प्रदान—यह शंकर ठीक नहीं क्योंकि उद्य गावक बन्धका भवितामात्री हानसे  
तीर्थकरकर्मको भी गावक मिद्ध है ।

शंकर—होय कर्मके प्रत्ययोंका न कहकर कलम तीर्थकर नामकमकी ही प्रत्यय  
प्रकल्पना क्यों की जाती है ?

सम्प्रदान—सोछह कर्म मिथ्यात्वमिमित्तक है क्योंकि, मिथ्यात्वक उद्यक बिना  
इनके बन्धका समाप्त है । पच्छीम कर्म अमन्तानुबन्धितमिमित्तक है क्योंकि, अमन्तानु  
बन्धी कथापक उद्य बिना उनका बन्ध नहीं पाया जाता । व्वा कर्म असंयममिमित्तक है,  
क्योंकि, अमत्याकथावावरणक उद्य बिना उनका बन्ध नहीं होता । प्रत्याप्यामावरण  
कथुक अपने ही प्रामाण्य उद्यविमित्तक है क्योंकि, उद्यक बिना प्रत्याप्यामावरण  
कथुकका बन्ध पाया नहीं जाता । छह कर्म प्रमत्तमिमित्तक है क्योंकि, प्रमत्तक बिना  
उनका बन्ध नहीं पाया जाता । देवाधु मज्जम विगुक्षितमिमित्तक है क्योंकि, अममत्तकका  
नैक्यात्मकी माग वीच जातेपर अतिहाय विगुक्षिक कथानको न पाकर प्रम्यम विगुक्षि

१ तित्ययरण्यामगोदकम्म—तीर्थकरमितिचय माय तीर्थकमत्त नच वीच न कर्मतिचय  
एव ब्रह्मरूपमात्तीर्थकरनामगीतम् । अ ए पृ २३२२

२ अ-आत्मीय तत्त्वज्ञाणाद्वरण्यादौ वाग्मी नरद्वयाद्वरण्यादौ इति वाच ।

वैषवोच्छेदसणादो । आहमदुग विसिद्धरागसमण्डितसंज्ञमपञ्चइयं, तेण विना तत्त्वंपाणु  
 वलमादो । परमवनिषवसुतावीसकम्माणि हस्स-रदि मय-दुगुछा पुरिसवेद-वदुसजलप्याणि च  
 कमायविसेसपञ्चइयाणि, अण्णहा एवेसिं मिण्णज्जणेसु वचवोच्छेदाणुवयसीदो । सोलसकसामाप्ति  
 सामण्णरञ्चइयाणि, अणुमेतकसाए वि मने तेसिं वधुवलमादो । सादत्वेदणीय जोगपञ्चइयं,  
 सुहुमज्जेगे वि तस्स वधुवलेमादो । तण सञ्चकम्माण पञ्चया ज्ञुसिचलेण गण्वति ति प  
 मभिरा । एदस्स पुण तित्थयरणामकम्मस्स वचपञ्चवो ज गण्वदे— जेद मिच्छत्तपञ्चइयं,  
 तत्त्व वधानुवलेमादो । आमजमपञ्चइयं, संजेदसु वि वचदसणादो । ज कसामसामण्णपञ्चइयं,  
 कमाय सते वि वचवोच्छेदसणादो वचपारमाणुवलेमादो वा । ज कसाममंददा करणं,  
 तित्थकसाएसु वेगइसु वि वचदसणादो । ज तित्थकसाओ करण, मदकसाएसु सञ्चइदेवेसु  
 अपुण्वकत्तेसु च वचदसणादो । ज मुम्मस तन्वचकरण, सम्मादिट्ठिस्सं वि तित्थयरस्स  
 वधानुवलेमादो । ज केवल दमपविमुञ्जता करणं, मीणादमणोहणं पि केमिं वि वधानु

स्याममें ही देखापुक्त पञ्चस्युच्छेद करण जाता है । आहारपिंडक विशिष्ट रागस संयुक्त  
 सयमक निमित्तसे वंधता है क्योंकि येमे संपमके बिना उसका बन्ध नहीं पाया जाता ।  
 परमवनिषयक सत्ताईस कर्म एवं हास्य रति मय सुगुप्ता पुत्रपेद और चार संज्वसन  
 कराय ये सब कर्म करायविशेषके निमित्तसे वंधनबाने हैं, क्योंकि, इसके बिना उनके  
 मित्र स्थानोंमें बन्धस्युच्छेदकी उपपत्ति नहीं बनती । सोलह कर्म करायसामान्यके  
 निमित्तसे वंधनेवाले हैं क्योंकि अजमाव करायक भी होनेपर उसका बन्ध पाया जाता  
 है । मानावेदनीय योगनिमित्तक है क्योंकि, सूक्ष्म योगसे भी उसका बन्ध पाया जाता  
 है । इस प्रकार भूति सब कर्मोंके प्रत्यय पुनिकलसे जाने आते हैं अतः उनका यहां कथन  
 नहीं किया गया । किन्तु इस तीर्थकर नामकमका बन्धप्रत्यय नहीं जाना जाता— कारण कि  
 यह मिथ्यात्वनिमित्तक ता हो नहीं सकता क्योंकि मिथ्यात्वक होनेपर उसका बन्ध नहीं  
 पाया जाता । असंयमनिमित्तक भी नहीं है क्योंकि, संयमोंमें भी उसका बन्ध देखा जाता  
 है । करायसामान्यनिमित्तक भी यह नहीं है क्योंकि करायके होनेपर भी उसका बन्ध  
 सुगुच्छेद देखा जाता है अथवा करायक होनेपर भी उसके बन्धका मारभ्य नहीं होता । कराय  
 मन्त्रानिमित्तक भी इसका बन्ध नहीं हो सकता क्योंकि तीर्थकरायवाले मारकीयोंक  
 भी उसका बन्ध देखा जाता है । तीर्थ कराय भी इसके बन्धका कारण नहीं है क्योंकि,  
 मन्त्रकरायवाले सत्ताईसिष्टिधिमामवासी देवों और अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंमें भी  
 उसका बन्ध देखा जाता है । सम्यग्ज्ञ भी उसके बन्धका कारण नहीं है क्योंकि सम्य  
 ग्दृष्टिके भी तीर्थकर कर्मका बन्ध नहीं पाया जाता । केवल वर्तमानविशुद्धता भी उसका  
 कारण नहीं है क्योंकि वर्तमानमोहका हय करणकेसाथे भी किसी जीवोंके उसका बन्ध



बलमादो । तदो एदस्स वंषकारणं वत्तणमेव । अथवा, वसंजव पमत-सजोमिमन्नामो धं एदं सुत्तमंसीवयं सम्बकम्माणं पच्चयपरुवणाणं ति एदं सुत्तमागदं । अदिहि करणेहि— किमेककेण किं होदि किं तिहिमेवं पुच्छा अयन्ना । एवविहंसंसयमिं हिदणं विच्छम अयनइमुत्तरमुत्तं ययदि—

तत्थ इमेहि मोल्लसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदकम्मं वंघंति ॥ ४० ॥

तत्र मनुस्सगदीयं चैव तित्थयरकम्मस्स वंषपरमो होदि, य अण्णत्थेति ज्ञात्वावगई तत्थेति वुत्तं । अण्णत्थीसु किञ्च पारमो होदि ति वुत्ते — य होदि, केवलज्ञापोवत्तविस्सयवीव दण्णसइहकरिक्करणस्स तित्थयरणामकम्मवंषपरमस्स तेष विणा समुत्पत्तिविरोहादो । अथवा, तत्र तित्थयरणामकम्मवंषकरणाणि ययामि ति अयिद् होदि । सोल्लसेति करणार्थं संज्ञा-मिदसे करो । पच्चयपरुवणाणं अथविज्जमाणे तित्थयरकम्मवंषकरणाणि सोल्लसं थव होति । इण्णत्थियणं पुत्र अवल्लविज्जमाणे एककं ति होदि, दो वि होति । तदो एत्थ सोल्लसं चैव

नहीं पाया जाता । अतएव इसके बन्धका कारण कहना ही चाहिए । अथवा वसंजव प्रमत्त और सयोगी संज्ञाओंके समान यह सूत्र सब कर्मोंकी उत्पत्त्यप्रकरणोंमें अन्तर्हीयक है इसीप्रकार यह सूत्र भावा है । जिसके कारणोंसे— क्या प्रकृत क्या होचे क्या तीनसे इस प्रकार यहाँ प्रसन्न करना चाहिये । इस प्रकार संशयमें स्थित जीवोंके निश्चययोग्यत्वार्थ उत्तर सूत्र करते हैं—

यहां इन सोल्लस कारणोंसे जीव तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मको बांधते हैं ॥ ४० ॥

मनुष्यगतिमें ही तीर्थंकरकर्मके बन्धका प्रारम्भ होता है, अन्यत्र नहीं इस बातके बावजाय सूत्रमें कहा देखा कहा गया है ।

शङ्क—मनुष्यगतिके निवाच अन्य गतियोंमें उसके बन्धका प्रारम्भ क्यों नहीं होता ?

समाधान—इस शङ्काके उत्तरमें करते हैं कि अन्य गतियोंमें उसके बन्धका प्रारम्भ नहीं होता कारण कि तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके प्रारम्भका सहकरी कारण केवलज्ज्ञानसे उपलक्षित जीव ब्रह्म है, अतएव मनुष्य गतिके बिना उसके बन्ध प्रारम्भकी उत्पत्तिअविरोध है । अथवा उनमें तीर्थंकरनामकर्मके बन्धके कारणोंका कहते हैं, यह अविशय है । सोल्लस इस प्रकार कारणोंकी संख्याका निर्देश दिया गया है । एकापार्थिक मन्त्रका अन्वयजन करनेपर तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके कारण सोल्लस ही होते हैं । किन्तु द्व्यपार्थिक मन्त्रका अन्वयजन करनेपर एक ही कारण होता है, दो भी होते हैं । इसप्रकार यहाँ सोल्लस ही कारण होते हैं ऐसा अन्वयजन नहीं करना



मलवदिगित्तमम्भरंमपमावा दमणविमुञ्जदा नाम । कथं ताण एक्कण चव तित्थयराम  
कम्मस्स बंधा, मत्थयम्माइहीणं तित्थयरामकम्मपपयंगामो चि ? सुच्चरे— ण तिम्भ  
बलत्तट्ठमलवदिगोहि चव दमणविमुञ्जदा मुदणयाहिप्पाणण हादि, किंतु पुग्गित्तगुणी  
सरूवं तट्ठण द्विदमम्भरंमपमावा माहणं पासुअपरिष्वाणे साहणं समाहिमवाणे माहणं वा  
बच्चजगे भरदवमतीण बहुमुदमणी पवयणमतीण पवयणवच्छन्दए पवयण पहाव  
अभिकसुणं आपावजोमहुत्तये पवहावणं विसुञ्जदा नाम । तीण म्भविमुञ्जदाण एक्कण  
॥ तित्थयरकम्मं बंधंति ।

अथवा, विषयसंपन्नदाण चव तित्थयरामकम्मं बंधंति । तं जहा— विषया  
निविहा पाव-ईमण-परित्तविषया ति । तस्य पावविषयो नाम अभिस्सुअभिस्सुअं आपाव  
जोमहुत्तदा बहुमुदमती पवयणमती च । ईमणविषया नाम पवयणगुणद्विदमम्भमानमहणं  
तिम्भदाओ अमापमममलत्तट्ठणमगहन-मिद्धमती एण-त्तवपडिमुञ्जदा त्पडिमीवमसंपन्नदा

नम्यन्दां माव हाता ई उअ वजानविमुञ्जता कहने ई ।

संक्षेप—कथम उअ एक वजानविमुञ्जतामे ही तीर्थेकर नामकमका वज्र वेल  
मम्मव ई कथं कि एसा माननेम एव नम्यन्दिहाक तीर्थेकर नामकमेक वज्रवा प्रमेग  
मावाग ।

समाधान—इम इच्छक उत्तरमे कहन ई कि गुज वज्रक अभिप्रायत तं न  
मुञ्जताओ भीग भाड मळोस रहिन हातण ही वज्रानविमुञ्जता महीं हाती किन्तु  
पूर्वोक्त गुणाने अथ निज्जट्ठयका प्राणकर स्थित नम्यन्दिहाकी साधुमेका साधुक  
परित्याग साधुमाही समाधिपधमाका साधुमेकी पैपाहूनिवा मयाग भरदवमणि  
बहुमुदमणि प्रवचनमणि प्रवचनवम्भजता प्रवचनप्रभावत भीर अमीदवजानोपयोग  
मुक्ततामे प्रवचनका नाम विमुञ्जता ई । उअ एक ही वज्रानविमुञ्जतामे तीर्थ तीर्थेकर वमका  
वापन ई ।

अथवा विजयमग्नधमाव ही तीर्थेकर नामकमका वापन ई । यह इम प्रकारत-  
जालविनय वज्रानविनय भीग चारिअविनयक भइस विनय तीम प्रकार ई । उअमे पारंवार  
जालापगाम मुक्त रहनक साथ बहुधनमणि भीर प्रवचनमणिवा नाम जालविनय ई ।  
भागमाइदिह सर्व पहायोक धज्जामक साथ तीम मुदनाभाग रहिन हाता भाड मळोका  
अमुता मगहनमणि मिद्धमणि अत्र नववमिमुञ्जता आर मत्थयणमगहनधमाका वज्रान

१ अन्तु वज्रपट्टव वजरी तत्त्वपट्टव इति वात ।

आवासी इत्यनेन इति वात ।

२ अ वासी इतिवाचनं वाजरी वज्रमन्त्रा इति वात ।

च । चरितविषयो नाम सीलव्ययेषु शिरदिचारदा आवासणम् अपरिहीणदा अहायामे तदा तयो च । साहूण पापुगपरिच्चाओ तेसिं समाहिंसधारणं तेसिं वेज्जावच्चजोगद्धुत्तदा पवयण वत्तल्लदा च पाप-दसण-परिचारणं पि विषयो, तिरयणसमूहस्स साहु-पवयणं च ववएसो । तदे विषयसंपण्णदा एक्कं चि होदूण सोलसाधववा । तेणेदीए विणयसंपण्णदए एक्कए चि तिरयणपामकम्म मणुआ वधति । देव-पेरइयाण कपमेसा समवदि ? ज, तस्य चि पाप दसणविषयार्णं समवदसपादे । कच तिसमूहकर्जं दोहि चेव सिज्जेदे ? ज एस दोसो, मट्ठिमा जल-सूरणकटिहिंतो समुप्पजमाणसूरणकंदकुनस्स तंकरं दुरिणेहिंतो चेव समुप्पजमाणसुवत्तंमादो, दोहि तुरंगेहि कट्ठिजमाणसदणस्स अलवत्तेणेकेणेव देवेण विजाहरेण मणुएण वा कट्ठिजमाण-

विनय कहते हैं । शील-अर्थोंमें निरतिचारता आपदपक्षोंमें अपरिहीनता अर्थात् परिपूर्णता और शास्त्रनुसार तपकर्म नाम चारित्रविनय है । साधुओंके लिये प्राप्तुक आहारविकल्प इतना कमकी समाधिक्य धारण करना, उनकी वैयावृत्तिमें उपयोग लगाना और प्रवचन वत्सकता यह ज्ञान वर्णन एवं चारित्र तीनोंके ही विनय है क्योंकि, एतन्मय समूहको साधु व प्रवचन संका प्राप्त है । इसी कारण ब्रूँकि विनयसम्पन्नता एक मी होकर सोलह अवयवोंसे सहित है अतः उस एक ही विनयसम्पन्नतासे मनुष्य तीर्थकर नामकर्मके बांधते हैं ।

शुक्र—यह विनयसम्पन्नता केव-भारिक्योंके कैसे सम्भव है ?

समाधान—उक्त शंका ठीक नहीं क्योंकि, देव-भारिक्योंमें भी ज्ञानविनय और धर्मान्वितपक्षी सम्भावना देखी जाती है ।

शुक्र—तीनों विनयोंके समूहसे मित्र होनेवाला कार्य दोस ही कैसे सिद्ध हो सकता है ?

समाधान—यह कोई श्रेय नहीं है क्योंकि, मट्ठी जल और सूरणकंदसे उत्पन्न होने वाला सूरणकंदका भंडुर उसके फल्य और दुरिंन अर्थात् वर्णन ही उत्पन्न होता हुआ पाया जाता है अथवा दो घोड़ोंसे खींचा जानवाला रथ बलवान् एक ही केव विद्याधर या मनुष्यसे

१ आदित मित्र वेदव हरे व नम्ये च तापुषो व । आश्रित उवन्ताए तपपयो दग्धे पाणि ॥ मरी एवा इन्द्रवधन च पत्न्यमवत्पुत्रादस्य । असादयवर्हिगो दग्धविपत्रो तवज्ज ॥ म आ ४७-४८

२ अतिष्ठु शिगिष्य इति पाठ ।

३ अमरी कट्ठिजमाणपेरवधत्त अमरी अदि-जवागमिदवत्त पायश कट्ठिजमाणसे दत्तवत्त इति पाठ ।

सुखसमाप्तो वा । यदि दाहि चेव तित्थपरणामकम्मं बम्भइ तो चरितविषयो किमिदि  
तत्तपरमिदि सुखे ? न एस दोसो, पाण-वसणविषयकम्मविरोहिचरणविषयो न होदि ति  
पहुप्पमणफट्ठत्तादो ।

अनुवा, सीलम्भवेसु निरदिचारदाए चेव तित्थपरणामकम्मं बम्भइ । तं जइ—  
हिंसात्म्य-भोन्नम्भ-परिगोहेहिं तो विरयी यदं पाप्म । यदपरिरक्खमं सीलं नाम ।  
सुउपाय-मांसमन्त्रण कोह माण-माया-लोह-हस्स-रह-सोग मय-नुगुंछिय-पुरिस-असुसयेवाति  
अयो अदिचरो, एदेसि विनासो निदिचारो संपुण्णदा, तस्स मावो निरदिचारदा । तीरे  
सीलम्भवेसु निरदिचारदाए तित्थपरकम्मस्स चो होदि । कथमेव सेसपम्भरसम्भं  
संभवो ? न, सम्मसंसेव खण-उपविबुद्धण-अदिसवेयसंपुण्णत्त-साहुसमादिसपा-

लीया गया पाया जाता है ।

शंकर—यदि वो ही विनयोसे तीर्थंकर नामकर्म बांधा जा सकता है, तो फिर  
चारित्र्यविषयको उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई बात नहीं क्योंकि आज-वर्तमानविषयक कर्मका विशेषी  
चारित्र्यविषय नहीं होता इस बातको सूचित करनेके लिये चारित्र्यविषयको भी कारण मान  
लिया गया है ।

अथवा शीक मतमें निरतिचारतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बांधा जाता है । यह इस  
प्रकारसे—हिंसा, भ्रष्टत्व और भ्रष्टाचार और परिग्रहसे विरत होनेका नाम मत है । मतोंकी  
रक्षाको शीक कहते हैं । सुउपान मांसमन्त्रण कोष मान माया लोभ हास्य रति,  
शोक, मय सुगुणा लोभह पुत्रपुत्र एवं नपुंसकवेद इनके त्याग न करनेका नाम  
निरतिचार और इनके विनाशका नाम निरतिचार या सम्पूर्णता है इसके मानको निरति  
चारता कहते हैं । शीक मतमें इस निरतिचारतासे तीर्थंकर कर्मका बन्ध होता है ।

शंकर—इसमें तो पन्द्रह भावनाओंकी सम्माकला कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह शीक नहीं क्योंकि क्षण-कल्पतिबुद्धता लघि संवेदसम्प्रभता

१ कर्मी -परिवर्तन आ-व्यक्ती परिवर्तन इति वाच ।

२ अहिंसादि अंतर्गुह्यगुणानां च नीत्यर्थमादिषु शब्देषु निरूपणा वृत्ति ईदं अंतर्गुह्यनिचार ।  
इति १ २४ चारित्र्यविषयकेषु शीक मतेषु निरूपणा वृत्ति शीक मतेष्वनतिचारः—अहिंसादि  
मतेषु × × × नित्या वृत्ति अपर वाच्यता ईदं अंतर्गुह्यनिचार इति वचने । उ उ १ २४ ३ अहिंसा च  
मरुति च ईदं मरुत्त वराणि सवाताम्य परिपत्त एव ईदमिति उपायुता मतमि वृत्तुता तेषु निरतिचार-  
कं तीर्थंकरात्मकं वचनामिति निगमनम् । अत एव २

३ कर्मी निरतिचारतायां आ-व्यक्ती निरतिचार ताया इति वाच ।

रणयेमावञ्चनेनामुत्त-पासुमपरिष्ठाग-अरहत-महुसुद पवयणमसि-पवयणपहावणत्तम्भुत्तसुदि  
 सुत्तेण विणा सीलम्भदाणमणविचारत्तस्स अणुववत्तीदो । असंखेज्जमुणाए । सेदीए-कम्म  
 पिञ्जरणहेद्द यदं माम । न च सम्मत्तेण विणा हिंसात्थि-चोन्व-धमपरिग्गहविग्गमेत्तेण सा  
 गुणत्तेडिभिग्गरा होदि, दोहिंतो चेसुप्पन्जमाणकम्भस्स तत्थेस्सदो समुप्पत्तिविरोहादो । होदु  
 माम एदेसिं समवो, न जाणविणयस्स ? न, छद्म-धवपदत्तवसमूह-तिहुवणविसएण भमिक्खण  
 भमिक्खणमुवज्जेगविसयमापन्जमाणेण जाणविणएण विणा सीलम्भदमिर्बधसम्मत्तुप्पत्तीए  
 अणुववत्तीदो । न तत्थ चरणविणयामावो वि, ब्रह्मायामतवत्तासयापरिहीणत्त-पवयणवच्छत्त  
 छम्भणचरणविणएण विणा सीलम्भदगिरिदिचारत्ताणुववत्तीदो । तम्हा तदियमेद तित्थयर  
 णामकम्मवधस्स करणं ।

आत्मासएसु अपरिहीणदाए— समदा-धर्व-वदण-पट्टिक्कमण-पक्कत्ताण-विमोसमामेएण

साधुसमाधिधारण वैयासत्ययोगयुक्ता प्रासुकपरिष्ठाग अरहतमसि बहुभुतमसि,  
 प्रयत्नमसि और प्रयत्नप्रभावना लक्षण शुद्धिसे युक्त सम्मन्धानके बिना हीस मतोंकी  
 निरतिधारणा कम नहीं सकती । दूसरी बात यह है कि जो असंख्यत गुणित जेपीसे  
 कर्मनिर्वाणक कारण है वही मत है । और सम्मन्धानक बिना हिंसा-असत्य,-धीर्य,  
 अग्रह और परिग्रहसे विरत होने मात्रसे वह गुणजेपीभिग्गरा हो नहीं सकती-क्योंकि,  
 दोनोंसे ही उत्पन्न होनेवाले कार्यकी उनमेंसे एकके द्वारा उत्पत्तिका विरोध है ।

शुद्ध—इनकी सम्भावना यहाँ भले ही हो पर ज्ञानविनयकी सम्भावना नहीं  
 हो सकती ।

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि उह द्रष्टा भी पदार्थोंके समूह और त्रिभुवनको  
 विषय करतयाल पर्य बार बार उपयोगविषयकी प्राप्त होनेवाले ज्ञानविनयक बिना हीस  
 मतोंके कारणभूत सम्मन्धानकी उत्पत्ति नहीं बन सकती ।

हीस मतविनयक निरतिधारतामें आतिविनयक भी अभाव नहीं कहा जासकता  
 है क्योंकि पदार्थकि तप आग्रहकापरिहीणता और प्रयत्नवत्तमता असल आति  
 विनयक बिना हीस मतविनयक निरतिधारताकी उत्पत्ति ही नहीं बनती । इस कारण यह  
 तीर्थकर नामकमेंके बगधका तीसरा कारण है ।

आग्रहकमेंमें अपरिहीणतास ही तीर्थकर नामकम रचना है—समता-असद,

कृत्यासुया ह्येति' । सनु-मित-भवि-पाहाण-सुवण्ण-महिप्पासु राग-देसामावो सम्मा पाम' । तीरा-  
 बागद-वड्ढामाणकउत्तविस्सयपपरमेसरारणं भेदमकउण णमो बरहताणं णमो जिणाणमिवादिक्का-  
 नकरो दम्पट्ठियविषयणो भवो' नाम । उसहात्रिय-संगमाहिपण्ण-सुमइ-पउमण्ण-सुपास  
 णंदण्ण-सुण्णदंत-सीयत्त-सेयंस-धासुण्ण-विमत्तणत्त-धम्म-संति-कुसु-जर-महि-मुनिसुवय-भमि-  
 पेमि-पास-वड्ढामाणदित्ठिययराणं बरहादिकेयलीणं बाहुरिय-वड्ढात्तादीणं मेम कउण  
 यमाककरो गुणमयभेदमत्तीणो' सहकत्तावाउत्ते गुणाणुसरणसरूवो वा वदपा' नाम । पेव-  
 महम्मणसु चउरसीदित्तमसुगुणगणकत्तिणसु समुपण्णकत्तमसुखात्ता पठिक्कमणं पाम ।

पद्मना प्रतिष्ठाप्य प्रत्याप्याप्त और द्युत्सर्गके मेवस छह आचक्ष्यक होते हैं । शत्रु मित्र  
 भवि पापाप और सुखर्ष मुक्तिधर्म रागद्वेषके समापद्ये समता कहते हैं । अतीत  
 अनागत और वर्तमान कास विषयक पांच परमेष्ठियोंके भक्को न करक बरहन्तीको  
 ममस्कार, विनीको ममस्कार इत्यादि द्रव्यार्थिकनिवृत्तन ममस्कारका नाम छह है ।  
 ज्ञयम अजित सम्माय अभिन्नान्न सुमति, पद्मप्रम सुपासं चन्द्रप्रम पुण्यवत्त  
 शीतल भेषांस धासुण्य विमल अमन्त धम दान्ति कुण्डु अट, महि मुनिसुमत  
 ममि नेमि पार्थ और धर्ममानादि तीर्थंकर तथा भरतादिक केवली आचार्य एवं धैत्याकपा-  
 त्रिकके मेवका करक अथवा गुणगत मेवके आश्रित शत्रुक्सापसे व्याप्त गुणा-  
 स्मरण रूप ममस्कार करनेको कद्मना कहते हैं । बीरसी छात्र गुणोंक समूहने संयुक्त  
 पांच महावर्तमें उत्पन्न हुए मलको बोलेका नाम प्रतिष्ठमण्य है । महावर्तोंके विनाश व

१ उवाच कौ व वदन पवित्रमन होय वादन । पद्मस्थान स्थितौ कर्त्तव्य वदन् वदति ॥  
 सूत्र १५ सामान्य वदतीत्यत्र वदन् पवित्रमन । पद्मस्थान व उवाच वाचोन्मयी इति श्री ॥ सूत्र-  
 ७ १५ वदन्त्यवस्था — सामाजिक चतुर्विधतिलक कदा प्रतिष्ठाप्य प्रत्याप्याप्त कर्त्तव्यमिति । उ उ  
 १ २४ ११ तं वि उ वाजस्तव । आस्तव अयम् पद्म उ उवाच — सामान्य वदतीत्यत्र वदन् पवि-  
 त्रमन वाजस्तवो पद्मस्थान ते उ वास्तव । वदतीत्यत्र २४

२ कर्त्तव्य पवित्रात् वा वाचोन्मयी मतिशालु इति पाठ ।

३ वीरिद वदने क मास्त्रे तजोव विषयौ व । वदति तद्दुःखगतिदुःख उवाच सामान्य वाच ॥  
 सूत्र २१ उव सामाजिक उवाचपदार्थानिद्विधतिलक विदित्तव्येन इति मतिशालु । उ ग १ २४ ११

४ उवाचविदित्तवत्त नामविदित्त गुणावस्थिति व । वाजस्तव अयम् पद्म व विदित्तवत्तौ कौ वदो ॥  
 सूत्र ४ चतुर्विधतिलक तीर्थंकरचतुर्वर्त्तनम् । उ उ १ २४ ११

५ कर्त्तव्य उवाचपदार्थानि । वा वाचोन्मयी वदन्त्यवस्थाविति इति पाठ ।

६ वास्तव विदित्तवत्ता उवाचपदार्थानि उवाच । विदित्तवत्तौ कौ वदो ॥  
 सूत्र २५ वदन् विदित्त वदन्त्यवस्था च विदित्तवत्तौ कौ वदो ॥  
 उ उ १ २४ ११

मतिशालु उवाचपदार्थानि इति पाठ ।

वदने वदने कौ व वदन्त्यवस्थाव । विदित्तवत्तौ कौ वदो ॥  
 सूत्र २६ वदन्त्यवस्थाविति वदन्त्यवस्थाव । उ उ १ २४ ११

महश्चयार्थं विनासण-मल्लोहणकारणाणि जहा ण होसंति तहा करेमि चि मण्येणाल्लेचिय षठ  
रसीदिल्लकखदसुद्धिपडिग्गहो पच्चक्खाण णाम । सरीराहारेसु हु मण-वयण-पवुत्तीनो  
ओसारिय ख्ययमि एअग्गेण चित्थिणोहो विओसम्मो<sup>१</sup> णाम । एदेसिं छण्णमावासयाण  
अपरिहीणदा अखडदा आवासयापरिहीणदा । तीए आवासयापरिहीणदाए एक्कए वि  
तित्थयरणमकम्मस्स बंधो होदि । ण च एत्थ सेसकारणाणमभावो, ण च देसजविमुद्धि  
विणयसंपत्ति-वदसीत्थिपरिदिचार-खणत्त्वपडिबोह ल्खिदेसविगसंपत्ति-जहायामतव-साहुसमाहिसंघा -  
रण-वेअवयवचोण-पासुअपरिस्वागारहत-वहुमुद पवयणमत्ति-पवयणवच्छ-प्पहावणामिक्खण-  
णालोबजोगहुत्तादि विणा अवासएसु पिरिदिचारदा णाम समवदि । तम्हा एदं तिरयय  
णामकम्मवधत्स षट्त्थकारणं ।

खण-त्त्वपडिबुच्छणदाए— खण-त्त्वा णाम कत्थविसेसा । सम्मएसज-आण-वद-सीत्-  
गुणानमुज्जालण कल्लकमक्खाल्लणं संघक्खण वा पडिबुच्छण णाम, तस्स भावो पडिबुच्छणदा ।  
खण त्व पडि पडिबुच्छणदा खण-त्त्वपडिबुच्छणदा । तीए एक्कए वि तिरययणामकम्मस्स

महात्पादनक कारण जिस प्रकार न होने देखा करता है देसी मनसे मासोपना करके  
चीपसी मास मतोंकी दृष्टिके प्रतिग्रहका न म प्रत्याकमान है । शरीर व आहारमें मन एव  
वचनकी प्रकृतियोंको हटाकर ध्येय वस्तुकी ओर एकाग्रतासे चित्तका निरोध करनेको ध्युत्सर्ग  
कहते हैं । इन छह आवश्यककी अपरिहीनता अर्थात् अलपण्डितात्त नाम आवश्यकपरि-  
हीनता है । उस एक ही आवश्यकतापरिहीनतासे तीर्थंकर नामकर्मका वन्ध होता है । इसमें  
शेष चारकी अभाव भी नहीं है क्योंकि वर्तमानजिगृहि चित्तवसम्पत्ति मत-शीलनिर्णित  
आरता सज सबप्रतिबोध लयि संवेगसम्पत्ति यथादाति तप, साधुसमाधिसंघारण  
वैषामत्ययोग प्राप्तुकपरित्याग अखण्डमत्ति बहुभुतमत्ति प्रवचनमत्ति प्रवचनयत्सलता  
प्रवचनप्रभावना और अमीत्य ज्ञानोपयोगमुक्तता इनक बिना छह आवश्यकमें निर्णित  
आरता सम्भव ही नहीं है । इस कारण यह तीर्थंकर नामकर्मके बन्धका बहुतुर्थ कारण है ।

क्षण सबप्रतिबुद्धतासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— क्षण और सब ये कल्लविनोपके  
नाम हैं । सम्यग्दर्शन ज्ञान मत और शील गुणोंको उज्ज्वल करने मलका घाने अथवा  
असलेका नाम प्रतिबोधन और इसके भावका नाम प्रतिबोधमता है । अत्येक क्षण व सबमें  
होनेवासे प्रतिबोधका क्षण-सबप्रतिबुद्धता कहा जाता है । उस एक ही क्षण सबप्रतिबुद्धतासे

१ नादापीनं कण्ठे जजीयपविज्जणं तिवरणं । पच्चक्खाण वेव अवावण वायणं कण्ठे ॥ पूजा १७  
अनापतदीपापोहनं मन्वाक्कामप । उ रा १ २४ १२

२ मत्ति सुरीपहातु इति पाठ ।

३ वैरस्तिवस्तिपमासिदु जहुतयापेण वचकम्मिदि । मिज्जवपितवहतो वागल्लया उहस्तिम्यो ॥  
पूजा २८ वासिदवकविपवा क्खीरेमममिदुत्ति कावोनर्ग ॥ उ ॥ १ २४ १२



बोधो । एतन् वि पुण्यं यं सेसकर्मणामेतदभ्यासो हरिसेदम्यो । तदो एवं तित्त्वपरनामकम्-  
बचस्स पंचमं कारण ।

अद्विसंवेगसंपण्णद्वय— सम्मार्हसण-आण-भरणेसु जीविस्स समागमो उद्धी पाम ।  
हरिसो संतो संवेगो नाम । उद्धीए संवेगो अद्विसंवेगो, तस्स संपण्णदा संपत्ती । तीए तित्त्वपर-  
नामकम्मस्स एक्कए वि बघो । कथं अद्विसंवेगसंपयाए सेसकर्मणाम् समवो ? यं सेस-  
कर्मणेदि विवा अद्विसंवेगस्स संपया नु बवे, विरोहादो । अद्विसंवेगो नाम तिरयमरोहत्तो,  
यं सो रंसचविसुब्बदादीहि विणा संपुण्णो हादि, विणाहिसेहमरो हिरण्य-सुवण्णप्रीदि विवा  
वहो' प । तदो बण्णो अतोखिसेसकर्मणा अद्विसंवेगसंपया कट्टं क्कर्म ।

ब्रह्मण्ये तद्वा तवे— बन्धे वीरियं नामो इदि एवमे । तवो दुविहो बाहिरो बन्धं  
तरो वेदि । बाहिरो भण्यगुणविधो अन्धतरो विणयादिबो । एसो सम्मो वि तवो वारसविहो ।  
ब्रह्मण्ये तद्वा तवे स्ति तित्त्वपरनामकम् बन्धइ । कुदो ? ब्रह्मण्येतवे सयत्सेसतित्त्वपरं

तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध होता है । इसमें भी पूर्वक समान दोष कारणोंका अन्तर्भाव  
दिखायाना चाहिये । इसीलिये यह तीर्थंकर नामकर्मके बन्धका पांचवां कारण है ।

अधिसंवेगसम्पन्नतास तीर्थंकर कर्मका बन्ध होता है— सम्मार्हसणं सम्मार्हसणं  
भीरं सम्मार्हचारिणं वा जीविकसं समागमं होता है उसे अन्ध कहत हैं । भीरं हर्षं व  
सात्त्विक प्राबल्य नाम संवेग है । अन्धिये या अन्धिये संवेगका नाम अधिसंवेग भीर  
इसकी सम्पन्नताका अर्थ संग्रहाति है । इन एक ही अधिसंवेगसम्पन्नतास तीर्थंकर  
नामकर्मका बन्ध होता है ।

प्रश्न—अधिसंवेगसम्पन्नतामें दोष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, दोष कारणोंके बिना विकृत होनेसे अधिसंवेगकी सम्पन्नता  
संयोग ही नहीं होसकता । इसका कारण यह कि एतद्वचसमित हर्षका नाम अधिसंवेग है ।  
भीरं वह वर्तमानविशुद्धताकीर्णके बिना सम्पूर्ण होता नहीं है क्योंकि, इसमें हिरण्य सुवर्ण-  
मिर्चोंके बिना ब्रह्मण्य हर्षके समान विरोध है । अत एव दोष कारणोंको नष्ट करनेपर तीर्थंकर  
कर्मकाही अधिसंवेगसम्पन्नता तीर्थंकर कर्मबन्धका उठा कारण है ।

आत्मनुसार तपसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— बह वीर्यं भीरं धाम (स्वामन्)  
ये समानार्थक शब्द हैं । तप दो प्रकार है— बाह्य भीर आत्मन्तर । इसमें अज्ञानादिकका  
नाम बाह्य तप भीर विनयादिकका नाम आत्मन्तर तप है । छह बाह्य एवं छह आत्मन्तर  
इस प्रकार मिसकर यह सब तप बारह प्रकार है । जैसा बह हो वैसा तप करनेपर तीर्थंकर  
नामकर्म बंधता है । इसका कारण यह है कि यथाशक्तितपमें तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके

करणार्ण संभवादो, जदो जहाभामो णाम बोधयत्तस्स धीरस्स णाणदसणकत्तिदस्स होदि ।  
 य च तस्य दंसणविमुञ्जवादीणमभावो, तद्वा तवत्तस्स अण्णहाणुवन्तीदो । तदो एदं  
 सत्तम करणं ।

साहृणं पासुअपरिच्चागदाए—अणंतपाण-दसण-वीरिय निरह-सहयसम्मत्तादीण साहया  
 साहू णाम । पग्ग्रा भोत्तरिदा भासवा अम्हा त पासुअ, अथवा अं निरवन्मं तं पासुअं ।  
 किं ? णाण-दसण-चरित्तादि । तस्स परिच्चागो विसन्नेण, तस्स भावो पासुअपरिच्चागदा ।  
 दयाशुखीए साहृणं णाण-दंसण-चरित्तपरिच्चागो दाण पासुअपरिच्चागदा णाम । य चेदं  
 करण वरत्थेसु संभवदि, तस्य चरित्ताभावादो । तिर्यग्गोवेदसो वि य वरत्थेसु अरिष, तेसिं  
 दिट्ठिवादादित्तवरिमसुत्तवदंसणे बहियाराभावादो । तदो एदं करणं महसिण चेव होदि ।  
 ग च एत्थ सेसकमपाणमसंभवो । य च अरहतादिषु अमत्तिमं जवपदत्थविसयसहजेषुमुक्के  
 सादिचारसीत्तवदे परिहीणात्तासए निरवक्को णाण-दसण-चरित्तपरिच्चागो संभवदि, विरोहादो ।  
 तदो एदमहमं करणं ।

समी होय कारण सम्मभ है क्योंकि यथायाम तप ज्ञान-दर्शनसे युक्त सामान्य ब्रह्मज्ञान  
 और और व्यक्तिक होता है और इसलिये उसमें दर्शनवि-गुणतादिकोंका समावेश नहीं  
 होसकता क्योंकि ऐसा होनेपर यथायाम तप वन नहीं सकता । इस कारण यह तीर्थंकर-  
 नामकर्मबन्धका सातवां कारण है ।

साधुओंके द्वारा विहित प्राप्तुक्त अर्थात् निरवयव ज्ञान-दर्शनादिकके त्यागसे तीर्थंकर  
 नामकर्म बंधता है—अनन्तज्ञान अनन्तदर्शन अनन्तधीय विरति और साधिक  
 सम्यक्त्वादि गुणोंके जो साधक हैं वे साधु कहलाते हैं । जिसस मात्तव्य वृत्त हो गये हैं  
 उसका नाम प्राप्तुक है अथवा जो निरवयव है उसका नाम प्राप्तुक है । यह ज्ञान दर्शन व आरिक्का  
 विक ही तो सकते हैं । उनके परित्याग यथा- विचर्यन करनको प्राप्तुकपरित्याग और  
 इसका भावको प्राप्तुकपरित्यागता कहते हैं । अर्थात् दयाशुखिसे साधुओं द्वारा किये जाने  
 वाले ज्ञान दर्शन व आरिक्क परित्याग या दानका नाम प्राप्तुकपरित्यागता है । यह कारण  
 गृहस्थोंमें सम्मभ नहीं है क्योंकि उनमें आरिक्क समावेश है । एतन्नयका उपदेश श्री  
 गृहस्थोंमें सम्मभ नहीं है, क्योंकि, ब्रह्मिवादिक्क अपरिम सुत्तने उपपन्न वनमें अनन्त अधिकार  
 नहीं है । अत एव यह कारण महर्षियोंके ही होता है । इसमें दोष कारणोंकी महत्मावना  
 नहीं है क्योंकि महाहतादिकोंमें मणिसे रहित और पद्मपयिपयक अस्त्रानसे अमुक्त  
 सातिचार शीम-मत्तोंमें साहित और आवदपकोंकी हीनतासे अयुक्त होनेपर निरवयव ज्ञान,  
 दर्शन व आरिक्क परित्याग विरोध हान्यम सम्मभ ही नहीं है । इसी कारण यह तीर्थंकर  
 नामकर्म बन्धका आठवां कारण है ।

साङ्ख्य समाहिसधारणद्वय— ईदृश पात्र परिचेषु सम्ममवद्भाष्यं समाही नाम । समं साङ्ख्य धारणं संधारण । समाहीए संधारण समाहिसधारण, तस्स भावा समाहिसधारणरा । ताए तिरवयरपाप्मकर्म बन्धदि ति । केण वि करणेण पदंति समाहिं बह्व्य सम्मादिही पक्वण वच्छन्ते पक्वणपद्दावओ विवयसंपण्णो सीत्त-वदादिधारवग्निओ अरहंतोदिस्स मत्तो संतो जमि पोरि ति समाहिसधारणं । कुदो एदमुवत्तम्भे ? सं-सङ्गपठअणादो । तेण बन्धदि ति वृत्तं होदि । य च एरथ सेसकरणापमभावो, तदस्वित्तस्स दरिसिद्धादो । एवेनें ववर्म करणं ।

साङ्ख्य वे जावच्छयोगजुत्तराए— व्यावृते यत्किपते तद्वैद्यावृत्त्यम् । वेण सम्मत्त-नाम अरहंत-बहुसुंदमति-पक्वणवच्छन्तादिणा जीवो जुग्गह वेन्नात्तव्णे सो वेन्नात्तव्णेसो ईदृश-विमुत्तरादि, तेण जुत्तरा वे जावच्छयोगजुत्तरा । ताए एवंविद्वाए एकए वि तिरवयरपाप्मकर्म बंध । एरथ सेसकरणां अहासंभवेण अतप्भावो वत्तव्यो । एवेनें

साङ्ख्योकी समाधिसंधारणतासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है— दर्शन ज्ञान व चारित्र्यमें सम्यक् अवस्थानका नाम समाधि है । सम्यक् प्रकरणसे धारण या साधनका नाम संधारण है । समाधिका संधारण समाधिसंधारण और उत्तक मावका नाम समाधि संधारणता है । इससे तीर्थकर नामकर्म बंधता है । किसी भी कारणसे मिली हुई समाधिका ऐक्यकर सम्मत्तदि, प्रवचनवत्तस्य प्रवचनप्रमाणक, विनयसम्यक् शोक मत्ता विचारवर्जित और अरहंतादिर्गमै भक्तिमाम् हाकर कृति वसे धारण करता है इसीछिये वह समाधिसंधारण है ।

संक्ष—वह कहाँसे जाना जाता है ?

सम्प्रधान—वह संधारण पदमें किये गये 'सं' शब्दक प्रयोपसे जाना जाता है ।

इस समाधिसंधारणसे तीर्थकर नामकर्म बंधता है वह अनिमात्र है । इसमें शेष कारणोंका अभाव नहीं है, क्योंकि वनजा अस्तित्व वही दिखता ही चुके है । इस प्रकार वह तीर्था कारण है ।

साङ्ख्योकी वैयामत्ययोगयुक्ततासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है— व्यावृत्त अर्थात् योगादिस व्याकुल साङ्ख्य विषयमें जो किया जाता है उत्तका नाम वैयामत्य है । जिस सम्यक् ज्ञान अरहन्तमति बह्व्युत्तमति एवं प्रवचनवत्तस्यवत्तादिस जीव वैयामत्यमें खमता है वह वैयामत्ययोग अर्थात् दर्शनविशुद्धतादि शुभ है वनसे संयुक्त इमेका नाम वैयामत्ययोगयुक्तता है । इस प्रकारकी वस एक ही वैयामत्ययोग युक्ततासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है । वही शेष कारणोंका एवात्तमव अन्तर्भाव कहना

दसमें कारण ।

अरहतमतीए—स्वविद्यादिकम्मा केवलणणेष त्रिदसम्पदा अरहता पाम । अथवा, विद्विद्वद्वक्कम्माणं पाद्विद्वद्वक्कम्माणं च अरहतेति सम्भा, अरहणं पडि होम्हं मेदा भावदो । तेषु मती अरहतमती । ताए तित्थपरकम्मं वञ्छइ । कवमेत्थं सेसकारणं संभवो ? सुप्पदे—अरहतपुत्तालुत्ताणुवत्थं तदनुप्राणपासो वा अरहतमती गाम । प च एसा ईसणविसुम्भदादीहि विणा संमसइ, विरोहादो । तदो एसा एककारसमं कारण ।

बहुसुदमतीए—वारसगपारया बहुसुश पाम, तेषु मती तेहि वक्खाभिद भागमत्ताणुवत्थं तदनुप्राणपासो वा—बहुसुदमती । ताए वि तित्थपरकम्मं वञ्छइ, ईसणविसुम्भदादीहि विणा एदिस्से असमवादो । एद वारसमं कारण ।

बाहिसे । इम प्रकार यह वृक्षा का कारण है ।

अरहन्तमण्डिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है—जिन्होंने प्रातिपाकर्मोंको मरु कर केवल-ज्ञानके द्वारा सम्पूर्ण पदार्थोंको देख लिया है वे अरहन्त हैं । अथवा, भाठों कर्मोंको मरु कर देनेवाले और प्रातिपा कर्मोंको मरु करनेवालोंका नाम अरहन्त है, क्योंकि कर्म-शत्रुके विनाशके प्रति दोनोंमें कोई मरु नहीं है । (अथत् 'अरहन्त' शब्दका अर्थ कृत् 'कर्म-शत्रुको मरु करनेवाला' है मरु एव जिस प्रकार बार प्रातिपा कर्मोंको मरु कर देनेवाले सपोपी और भयोगी जिन अरहन्त शब्दके बाध्य हैं उसी प्रकार भाठों कर्मोंको मरु कर देनेवाले सिद्ध भी अरहन्त शब्दके बाध्य होसकते हैं क्योंकि निवस्यर्थको अपेक्षा दोनोंमें कोई मरु नहीं है ।) इन अरहन्तोंमें जो गुणानुपगम्य भक्ति होती है वही अरहन्तमण्डि कहलाती है । इम अरहन्तमण्डिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है ।

शुक्र—इसमें दोय कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—इस शंकाका उत्तर देने हैं कि अरहन्तके द्वारा उपविष्ट अनुष्ठानक अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्शको अरहन्तमण्डि कहते हैं । और यह दर्शनविशुद्धताविकोंके बिना सम्भव नहीं है क्योंकि, एसा हमेंमें विरोध है । अतएव यह तीर्थंकर कर्मबन्धका व्याख्या का कारण है ।

बहुभुतमण्डिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है—जो बारह बीगों परागामी हैं वे बहुभुत को जाते हैं उनके द्वारा उपविष्ट मागमार्थके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानक स्पर्श करनेको बहुभुतमण्डि कहते हैं । उससे भी तीर्थंकर नामकर्म बंधता है क्योंकि, यह भी दर्शनविशुद्धताविक दोय कारणोंक बिना सम्भव नहीं है । यह तीर्थंकर नामकर्मबन्धका व्याख्या का कारण है ।

पञ्चममस्त्री— मिदं तो वारहगाणि पञ्चपणं, प्रकृष्टं प्रकृष्टम्य वचनं प्रवचनमिति श्रुम्यते । तस्मिन् मत्तौ तस्य पटुण्यादिदशाणुद्धारणं । न च अण्यद्वा तरय मत्तौ समवद, नमेषुण्य सपुण्यवहारविरोधान्ते । तीरे तिष्ठपरणामकम्म पञ्चइ । एरव मेमत्तरणापमनभ्मावो वत्तमो । एवमद तेरसम करणं ।

पञ्चपणवच्छ्रुत्वा— पञ्चपणं मिदं तो वारहगाई, तस्य मत्ता देम-महम्मदो नमेश्र सम्माइद्विणो च पञ्चपणा । कुतो एरव आत्तरस्य अस्समणं ? 'एण छत्थ समावा' विं मुत्तेव आदिउत्तुप्पि कपपकात्तावो । तमु भजुरागो आत्तरा ममेदमावो पञ्चपणवच्छ्रुत्वा ज्ञाम । तीरे तिष्ठपरकम्म पञ्चइ । कुतो ? पञ्चमहम्मदादिभागमत्थनिमपस्सुत्तकहापुत्तात्स दंसवविमुत्तवादीदि अविनामात्तावो । तेणइ बोइममं करणं ।

प्रवचनमस्ति तैर्येकर नामकर्म वचना है— मिदं तो वा वारह गंगां वा नाम प्रवचन है क्योंकि प्रकृष्ट वचन प्रवचन वा प्रकृष्ट (सर्वत्र) के वचन प्रवचन है देसी श्रुत्यसि है । उस प्रवचनमें कह हुए अर्थका अनुष्ठान करना यह प्रवचनमें मक्ति कही जाती है । इसका बिना अन्य प्रकारसे प्रवचनमें मक्ति सम्भव नहीं है क्योंकि, असम्पूर्वमें सम्पूर्वके व्यवहारका विरोध है । इस प्रवचनमस्ति तैर्येकर नामकर्म वचना है । इसमें शेष करवाका अन्तर्भाव कहना चाहिये । इस प्रकार यह तरहका कारण है ।

प्रवचनवत्सकतासे तैर्येकर नामकर्म वचना है— सिद्धास्त वा वारह गंगां वा नाम प्रवचन है । इसमें होमेबाके वचनाती महाजनी और अर्धवत्सम्प्रादिति प्रवचन बड़े आते हैं ।

संक्षेप— इसमें आचार्यका प्रवचन क्यों नहीं होता । अर्थात् प्रवचनमें होमेबाके इस विमर्शके अनुसार प्रवचन होना चाहिये न कि प्रवचन ?

समाधान— न वा इ ई उ ऊ, ए छह स्वर और ए, ओ व वा सप्तवसर, इस प्रकार ये आठों स्वर अधिकोद्य मावसे एक वृक्षरक स्थानमें आवेदाको प्राप्त हात है । इस छत्रसे आदि वृक्षरूप का क स्थानपर न का आत्मा हा गया है ।

कम प्रवचनमें अर्थात् वेदावती महावती और अर्धवत्सम्प्रादियोंमें जो अनुष्ठान आर्कासा अथवा 'ममेव' बुद्धि होती है उसका नाम प्रवचनवत्सकता है । इससे तैर्येकर कर्म वचना है । इसका कारण यह है कि पाँच महावत्ताधिकार नामाचार्यविषयक उरुह्य अनुष्ठानका द्वावविमुत्तवादिर्कोके साथ अविनामाव है अर्थात् एक प्रकार प्रवचनवत्सकता वार्धनविमुत्तवामि शेष शुचोके बिना नहीं बन सकती । इसीलिए यह बोद्धवा कारण है ।

१ प्रवचन इत्येवाह उच्यते नामकर्मवत्तमो वा प्रवचनम् । अत्र पृ ८२

२ इह कस्य तथाना दीमि न सम्भवति इति चेत् । अन्वीयन्त्यसिरोहा उच्यते इति इत्येवम् ।

पवयण्यहावणदाए— आगमहुस्स पवयणमिदि सण्णा । तस्स पहावणं पाम  
वण्णज्जणं तप्पुत्तिहरणं च, तस्स भावो पवयण्यहावणदा । तीए तित्थयरकम्म पच्चइ,  
उक्कट्टपवयण्यहावणस्स देसणविसुच्चदादीहि अणिणामावादो । तेणेदं पण्णरसमं करण ।

अभिकखणमभिकखण णाणोवजोगलुत्तदाए — अभिकखणमभिकखणं पाम बहुवार  
मिदि मणिदं होदि । णाणोवजोगो ति मावमुदं दप्पमुदं धावेक्खदे । तेसु मुहुम्ममुलुत्तदाए  
तित्थयरणामकम्मं पच्चइ, दसणविसुच्चदादीहि विणा एरिस्से अणुववत्तीरो । एवेहि सोल्लेहि  
करणेहि बीया तित्थयरणामकम्मं बर्बनि । अथवा, मम्मइमणे सेते सेसकरणाणं मन्हे एग  
दुगादिंसजेतोण पच्चइ<sup>१</sup> ति वत्तणं ।

जस्स इण तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदएण सदेवासुर  
माणुसस्स लोकस्स अच्चणिज्जा वदणिज्जा णमसणिज्जा णेदारा  
धम्म-तित्थयरा जिणा केवल्लिणो हवति ॥ ४२ ॥

प्रवचनप्रमावनासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— आगमार्थक नाम प्रवचन है, उसके वर्णजनम अर्थात् कीर्तिविस्तार या बृद्धि करनेका प्रवचनकी प्रमावना और उसके भावसे प्रवचनप्रमावनाता कहते हैं । उससे तीर्थंकर कर्म बंधता है क्योंकि, उक्तप्र प्रवचनप्रमावनाका वृक्षमविशुद्धतादिकोंके साथ अधिनाभाव है । इसीलिये यह पद्मप्रवर्ण करण है ।

अमीक्ष्य-अमीक्ष्य ज्ञानोपयोगयुक्ततासे तीर्थंकर कर्म बंधता है— अमीक्ष्य-अमीक्ष्यका अर्थ बहुत पार है । ज्ञानोपयोगसे भावपुत्र अथवा द्रव्यभूतकी अपेक्षा है । उन (भाव व द्रव्य भूत) में बार बार उगुल रहनेसे तीर्थंकर नायकर्म बंधता है क्योंकि, वृक्षमविशुद्धतादिकोंके बिना यह अमीक्ष्य अमीक्ष्य ज्ञानोपयोगयुक्तता बन नहीं सकती ।

इत सोल्लह कारणोंसे जीव तीर्थंकर नामकर्मसे बंधते हैं । अथवा सत्पद्मवर्णके हानेपर छेप कारणोंसेमे एक दो भादि कारणोंके संयोगसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है ऐसा कहना चाहिये ।

जिन जीवोंके तीर्थंकर नाम-गात्रकर्मका उदय होता है वे उसके उदयसे देव, असुर और मनुष्य लोकके अर्बनीय, वंदनीय, नमस्करणीय, नेता, धर्म-तीर्थके कृता जिन व केवली होते हैं ॥ ४२ ॥

१ तप्पेताणि वोक्खजाणाणि सम्पप्पायमानाणि प्लसामि समस्ताणि च तीर्थंकरावर्ण्यन्मकराणि मनीरप्पामि । ४ मि १ २४ त ए १ २४ २४ तीर्थंकरावर्ण्यणि भाव्य त-अत्ताययूवनिअए । प्पण्णवि कवलाणि च मवन्ति उल्लानवामाणि ॥ ४ पु २४ १०९ २१ इणा सवला प्लसा वा तीर्थंकरात्म्य आचरा मक्खीणि । ४ पु भाव १ २४

निरुधरपद्ममगोदकमस्त्येति एव 'उदयो तपोति' दोष्णं पद्ममगोदकस्यो, यन्मह्य धरणावतमाद्यो । अस्त्येति नीत्याय इणं पदस्त्य निरुधरपद्ममगोदकमस्त्य उदयो तेन उदपण सदेवासुर-भालुमस्त्येति स्त्रोसम्य अन्वयिन्ना सि मन्थयो कल्पन्त्या । अरु-वन्नि-पुष्प फल-मन्थ-भूत-रत्नान्दीहि सगमतिपगासां अन्वयणा नाम । एदाहि मह्य अद्भुतम कल्परात्र मह्यमह-सम्पदोमर्दिमहिमविहाणे पूजा नाम । तुहुं मिहविषयकृत्मा कवत्तपापेन विहृतसन्धो वम्मुम्मुहसिहृगोष्टीण पुद्गमयदान्यो सिद्धपरिवातयो दुहविगादका देव ति पर्यमा कंदरा नाम । पंढि मुद्दीहि विभिदकल्पेभु निवदये जर्मयण । धम्मो नाम सम्मदलन-नाक-चरित्ताभि । एदेहि संसार-सापरं तरति सि एदापि निरुध । एदस्म धम्म-निरुधस्म कवरा विषा केवलिभो वेदाया न मन्थति ।

एवमागुणमो समता ।

धर्मों तीर्थकर नाम गोत्रकर्मका यहां उक्थ और उमस इन दो पदोंका अन्वयार्थ करना चाहिये अन्वयका अर्थको उपसर्गिण नहीं होती । जिसके अर्थान् जिन जीर्णों, यह अर्थान् इस तीर्थकर नाम गोत्रकर्मका उक्थ होता है वे उसके उक्थसे देव असुर एवं मनुष्योंमें परिपूर्ण कर्माके अर्थनीय होते हैं देवा समस्त्य करना चाहिये । अरु, वन्नि पुष्प फल गन्ध मूल और बीज आदिमेंसे अपनी भक्ति प्रकाशित करनेका नाम कर्मा है । इनके साथ ऐश्वर्यवत् कल्पवृक्ष मह्यमह और सर्वतोमह इत्यादि महिमा-विषयको पूजा कहते हैं । आप मह्य कर्मोंको मह्य करनेवाले केवलज्ञानसे समस्त पदार्थोंको देखनेवाले धर्मोन्मुख शिष्टोंकी गोष्ठीमें समयवत्न लेनेवाले शिष्टपरिपालक और दुष्टनिग्रहकारी देव हैं देवी प्रशंसा करनेका नाम कर्मना है । पांछ मुष्टिर्षी अर्थान् जंगोंसे जिनमह्य देवके वरनोंमें गिरनेको समस्त्यकर कहते हैं । धर्मका अर्थ सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चरित है । अर्थ इससे संसार-सागरको तरण ॥ इनीमिये इन्हें तीर्थ कहा जाता है । इस धर्म तीर्थके कर्मा जिन केवली और वेता होते हैं ।

इस प्रकार ओषाधुषम समाप्त हुआ ।

१ उदयि दाम-वृत्ताभि कर्म कर्मन्तरा हि ॥ १ अ १

२ अ नाम एव चरित्तमात्री उन्निवन्ममात्री । अन्वयार्थो न उदय तेन व सापदी स्थि ॥ विषा १ १८

आदेसेण गदियाणुवादेण गिर्यगदीए णेरइएसु पचणाणावरण  
छदसणावरण-सादासाद-चारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-  
मय-दुगुछा मणुसगदि-पचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-  
ममचउरमसठाण ओरालियसरीरअगोवग-वच्चरिसहसघडण-वण्ण गध  
रस-फाम-मणुसगइपाओग्गाणुपुवि-अगुरुलहुग-उवघाद-परघाद-  
उत्सास-यसत्यविहायगदि-त्तस-चादर-पच्चत्त-पतेयसरीर-थिरायिर-सुहा-  
सुह-सुभग-सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-  
पचतराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ ४३ ॥

एद देसामासियपुच्छासुत्त, तणेरेण सुहदमवपुच्छावो एय वत्तप्पावो । एवं  
पुच्छिसिस्सिप्पिच्छमज्जणमहुमुत्तरसुत्तं मणदि—

मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाव असजन्मम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,  
अवधा णत्थि ॥ ४४ ॥

एद देसामासियसुत्त, मामिस्सद्वाणाय वेव पक्खणत्तो । तणेरेण सुहदत्वायं पक्खणं

अदेइकी अपेक्षा गतिमागणानुसार नरकगतिमें नारकिर्णमें पाँच ज्ञानावरण, छह  
इक्ष्णावरण, सात्तावेदनीय, असात्तावेदनीय, धारह कपाय, पुस्सवेद, हास्य, रति, वरत्ति, शोक,  
मय, दुगुप्पा, मनुप्यगति, वचेन्द्रियजाति, आहारिक तत्रस व क्रमण क्षरि, समचतुरससंस्मान,  
बौदारिकशरीरगोपांग, बज्रपममहनन, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुप्यगतिप्रायाम्पातुपूर्वी,  
अगुरुबलधुक, उपपात्त, परपात्त, उच्छ्वास प्रसस्तविहायोगति, व्रस, चादर, कपात्त, प्रत्येक-  
क्षरि, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आयेय, यत्तकीर्ति, वयशकीर्ति, निर्माण,  
उच्छगोत्र और पाँच अन्तराय, इन कर्मोकर कौन पचक और कौन अवन्धक है ? ॥ ४३ ॥

यह पृच्छासुत्त देशामर्णक है इसी कारण इसका छारा सूचित सब पृच्छाओंके  
पहल कहना चाहिये । इस प्रकार पृच्छासुत्त शिष्यक मिश्रपञ्चममार्थ उत्तर सूत्र करते हैं—

मिप्पाघट्टिके आदि लेकर अमयतसम्यग्घटि तक पन्धक हैं । ये पन्धक हैं, अवन्धक  
नहीं हैं ॥ ४४ ॥

यह देशामर्णक सूत्र है क्योंकि, यह बन्धस्वामित्व और बन्धारण्यमका ही मिरूपण  
करता है । इसी कारण इसके छारा सूचित अर्थोंकी प्रकण्ण करते हैं— पाँच ज्ञानावरणीय,



कस्तामो—पंचज्यावरणीय-ऊर्ध्वसजावरणीय-सादासाद-वासकस्ताम-हस्त-रदि-अरदि-सोम-मय-  
हुगुब्ध-पंचिदियजाति तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस फास-अगुरुगच्छुब्ध-उवपाद-परपाद-  
उत्तास-तस-बादर-यमस पत्तेयसरीर-विरागिर-सुहासुह-अजमकिंति-विमिष-पंचतण्डमानं ऐदंति  
मेत्थ वंचेत्थयवोच्छेदो भरिष, विरोहाभावो । पुरिमवेद-मजुसगइ-भोरालिमसरीर-समवतरस-  
सय्यज-भोरालिमसरीरभगोवंध-वज्जरिसहसंधण-मजुमगइपाओगागुपुम्भि-पसत्थमिहमगइ-  
सुमग-सुस्वर अदेम्म-असकिंति-उच्छाभोदानमुदो एत्थ पत्ति चेव, विरोहाओ । तम्हा एत्थ  
यदसु पयसीसु वंचेत्थयवोच्छेदान पुष्पापुष्पविचारो पत्ति ।

पंचज्यावरणीय-जहुवसजावरणीय-पंचिदियजाति-तेजा-कम्मइय वण्ण गंध-रस-फस-  
अगुरुगच्छुब्ध-तस-बादर-यमस-विरागिर-सुमासुम अजमकिंति विमिष पंचतण्डमानं सोदो  
वंधो । विर-यमस सादासाद-वासकस्ताम हस्त-रदि-अरदि-सोम मय-हुगुब्धो सोदय प्ते-  
इपदि वच्चंति सव्वगुणहात्थसु पणवत्तेयवोत्थो । उवपादं मिष्साइदि असजइसम्मइदि  
सोदय-परोइपदि वच्चइ, निम्हाइगदीए उदयायत्ताओ । सत्थवसम्मइदि-सम्ममिष्साइदि  
सोदय वच्चइ, तेसिं तत्थ उप्पच्छीए अमावाओ । परपादुत्तास-पत्तेयसरीरमि मिष्साइदि

इह वर्धनावरणीय सादावरणीय असतावेदनीय वायु कपाय हास्य एति अरति शोक, मय जुगुप्सा पंचेन्द्रियजाति तज्जस व कामंज शरीर, बर्ध गन्म रस स्पर्श  
अगुरुगच्छु वपघात परघात उच्छ्वास अस वत्तर, पर्वोत्त स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ  
अपराधीर्ति निर्माण और पांच अस्तारव इनके वन्ध और उच्छ्वास पहां  
पुच्छेद नहीं होता क्योंकि इसमें कोई विरोध नहीं है अर्थात् इनका वन्धोदय-पुच्छेद  
वयासम्भूत उन उपरिम गुणस्थानोंमें होता है जो नरकगतिम सम्भूत नहीं हैं । पुदपवेद  
मनुष्यगति भौतिकशरीर, समवतरकर्मस्थान भौतिकशरीर-गोपांग अजयममंजन  
मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वी प्रयासविहायोगति सुमग सुप्पर, अत्तेय पशुकीर्ति और  
उच्छाभोत्त इन कर्मोंका उच्छ पहां है ही नहीं क्योंकि नाटकिपोंमें इनके उच्छका विरोध  
है । इसलिये पहां इन प्रकृतिपोंम वन्धपुच्छेत् और उच्छपुच्छेत्की पूर्वापरताका विचार  
नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय आर वर्धनावरणीय पंचेन्द्रियजाति तज्जस व कामंज शरीर,  
बर्ध गन्म रस स्पर्श अगुरुगच्छु अस वत्तर, पर्वोत्त स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ  
अपराधीर्ति निर्माण और पांच अस्तारव इनका स्वेत्थ वन्ध है । मित्रा प्रबन्ध साता  
व असता वेदनीय वायु कपाय हास्य एति अरति शोक, मय और जुगुप्सा ये प्रकृतिपां  
स्वेत्थ-परोदपसे वंधती है क्योंकि, इनका सब गुणस्थानोंमें परिवर्तित उच्छ रहता है ।  
वपघात प्रकृति मिष्साइदि और अजमवत्सम्भइदि गुणस्थानोंमें स्वेत्थ परोदपसे वंधती  
है क्योंकि, विद्रव्यमयिमें इसका वन्ध नहीं रहता । सासादवत्सम्भइदि और सम्ममिष्सा-  
इदि गुणस्थानोंमें वही प्रकृति स्वेत्थपसे वंधती है क्योंकि सासादवत्सम्भइदि और  
सम्ममिष्साइदिपोंकी नाटकिपोंमें उत्पत्ति नहीं है । परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर

असंजदसम्मादिहीसु सोदय-परोदएहि बन्धति, अपन्जयफले एदेसिमुदयामावाहो । भवति पत्तेयसरीरस्स उववाहमंगो, विग्गहगदीए चेव उदयामावाहो । सेसेसु दोसु सोदपप्पेव एवासि बंधो, तेसि तत्थ अपन्जयतकात्थमावाहो । पुरिसवेद-मणुसगइ ओरात्थियसरीर-समचउरसंसअण ओरात्थियसरीरअंगोवंग वज्जरिसइसंधहण-मणुसगइपाभोग्गाणुपुब्बि-पसत्थविहायगइ सुमग-सुस्सर आदेव्व-असकित्ति-उप्पवागोदानं चदुसु गुणहापेसु परोपपेव बंधो, गिरएसु एदासिमुदय विरोहहो ।

पञ्चणाभावरणीय-छन्दसणावरणीय-वारमकसाय-भय दुगुण-पंचिदियवादि-ओरात्थिय-तेजा-कम्मइयसरीर ओरात्थियसरीरअंगोवंग-वण-गंध-रस फल-अशुक्लत्तुग-उववाह-परवाह-उत्सास-तस-वाह-पन्जय-पत्तेयसरीर-भिभिन्न पंचतरात्थयानं गिरसरो बंधो, गिरयगइहि विरतर बंधिवाहो । सादामाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-धिगधिर-सुमासुम-असकित्ति-अवसकित्तीयं सांतरो बंधो, सम्बगुणहापेसु पडिवक्खपयहीए बंधुवत्तमाहो । पुरिसवेद-मणुसगइ समचउरसंसअण वज्जरिसइसंधहण-पसत्थविहायगइ-सुमग-सुस्सर-आदेव्व-मणुसगइपाभोग्गाणुपुब्बि-उप्पवागोदानं मिष्सादिद्धि-सासभसम्मादिहीसु सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधुवत्तमाहो । भवति मणुसगइ

प्रकृतिषां मिथ्याएहि और असंयतसम्प्रादृष्टि गुणस्थानोंमें स्वेच्छय परोक्षयसं बंधती हैं क्योंकि, अपर्णात्तकाष्ठमें इनका उद्भव नहीं रहता । विहाय इतना है कि प्रत्येकशरीरका बन्ध उपधातके समान है क्योंकि, केवल विप्रवृत्तिमें ही उसका उद्भव नहीं रहता । शाय दो गुणस्थानोंमें स्वेच्छयसे ही इनका बन्ध होता है क्योंकि शाय दोनों गुणस्थान नारदियोंके अपर्णात्त काष्ठमें होते नहीं हैं । पुरुषवेद मनुष्यगति औदारिकशरीर, समचतुराससंस्थान, औदारिकशरीरगोपांग वज्रर्ममर्हजन मनुष्यगतिमापोन्पाजुपूर्वी प्रशस्तविहायोगति सुमग सुस्वर, आवेष वशाकीर्ति और उच्छवाग प्रकृतिषोका चारों गुणस्थानोंमें परोक्षयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, नारदियोंमें इनके उद्भवका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वर्णमावरणीय बाह्य कथाय भय दुगुणा पंचिन्द्रिय जाति, औदारिक त्रैलस व कार्यय शरीर औदारिकशरीरगोपांग बर्ग गन्ध रस स्पश मगुदसधु उपधात परमात उच्छवास तस वाह पर्याप्त प्रत्येकशरीर, निर्माज और पांच भस्तरय इनका निरन्तर बन्ध है क्योंकि ये प्रकृतिषां मरकगतिमें निरन्तर बंधती हैं । साता व असाता जेदनीय हास्य रति अरति शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ वशाकीर्ति और अवशाकीर्ति प्रकृतिषोका सातार बन्ध है क्योंकि, सर्व गुणस्थानोंमें इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतिषोका बन्ध पाया जाता है । पुरुषवेद मनुष्यगति समचतुराससंस्थान वज्रर्ममर्हजन प्रशस्तविहायोगति सुमग सुस्वर, आवेष मनुष्यगतिमापोन्पाजुपूर्वी और उच्छवाग इनका मिथ्याएहि और सासादनसम्प्रादृष्टि गुणस्थानोंमें सातार बन्ध है क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतिषोका बन्ध पाया जाता है । विधेयता इतनी है कि तीर्थकर

मनुमग्नपात्रोन्मात्सुपुष्पीष मिच्छादिद्रिष्टि तित्थयस्मदकम्भयमि गिरतो वि बभो तम्भदि ।  
सम्भामिच्छादिद्रि-भसंभदसम्भामिद्रिष्टिमु भित्तो नैपो, एतामि पडिवक्त्रपयडीन नैपाम नारो ।

एतामा पयडीमा नैपमाणमिच्छादिद्रिष्टिस्म चत्वारि मूलपञ्चया । पाषाणमयउत्तरपञ्चया  
एकवर्षास, ओराठिय ओराठियमिस्म-इति पुरिमपञ्चयाणमभावाद्दो । एगसमयबह्व्गुक्तसपञ्चय  
अह्नाक्रमेण दस अष्टमस । सामयस्म मूलपञ्चया तिग्नि, मिच्छाद्यामावाद्दो । पाषाणमयउत्तर  
पञ्चया चतुर्वेत्तास्त्रीय, ओराठिय ओराठियमिस्म-वेत्ताभियमिस्म-कम्भय-इति-पुरिमपञ्च-  
याममभावाद्दो । एगसमयबह्व्गुक्तसपञ्चया अह्नाक्रमेण दस सप्तमस । सम्भामिच्छादिद्रिष्टि  
मूलपञ्चया तिग्नि, मिच्छाद्यामावाद्दो । पाषाणमयउत्तरपञ्चया चत्वारि, ओपेसु पञ्चपसु  
ओराठिय इति-पुरिमपञ्चयाणमभावाद्दो । एगसमयबह्व्गुक्तसपञ्चया अह्नाक्रमेण दस  
सोत्तम । भसंभदसम्भामिद्रिष्टिस्म मूलपञ्चया तिग्नि, मिच्छाद्यामावाद्दो । पाषाणमयउत्तरपञ्चया  
चत्वारि, ओपपञ्चपसु ओराठिय ओराठियमिस्म-इति-पुरिमपञ्चयाणमभावाद्दो । एगसमय-  
बह्व्गुक्तसपञ्चया अह्नाक्रमेण दस सोत्तम ।

महतिर्हो स ता रजनबास मिच्छादिद्रिष्टि जीवमे मनुष्यगनि भीर मनुष्यगनिप्रापान्मानुपूर्वीका  
निरन्तर भी बभम पाया जाता ह । सम्भामिच्छादिद्रिष्टि भीर भसयतसम्भामिद्रिष्टि गुणस्थानोमे  
उक्त प्रकृतियोंका निरन्तर बभम है क्योंकि यहाँ इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बभम  
वहीं होता ।

इस प्रकृतियोंको बांधनेवाला मिच्छादिद्रिष्टि नामकी जीवक मूल प्रत्यय कारो होता है ।  
जाना समय सम्भन्धी उत्तर प्रत्यय इत्यायन हात है क्योंकि, उसके औद्धारिक, औद्धारिक  
मिन्न स्त्रिबिद् और पुरुषबद् इन बाण प्रत्ययोंका अभाव है । एक समय सम्भन्धी अण्व्य  
और उरुहृ प्रत्यय क्रममे दस भीर अठारह हाते है । सासत्त्वसम्भामिद्रिष्टि मूल प्रत्यय  
तीन हात है क्योंकि, उनका मिच्छात्त्वका अभाव है । जाना समय सम्भन्धी उत्तर प्रत्यय  
चत्वारिहात हात है क्योंकि, उनका औद्धारिक औद्धारिकमिन्न पैविषिकमिन्न काममे स्त्रिबिद्  
और पुरुषबद् इन उरु प्रत्ययोंका अभाव है । एक समय सम्भन्धी अण्व्य व उरुहृ प्रत्यय  
क्रममे दस भीर सत्तर हात है । सम्भामिच्छादिद्रिष्टि मूल प्रत्यय तीन हात है क्योंकि,  
उनका मिच्छात्त्वका अभाव है । जाना समय सम्भन्धी उत्तर प्रत्यय चत्वारिहात हाते है क्योंकि,  
ओपप्रत्ययोंमेम औद्धारिक, स्त्रीबद् और पुरुषबद् प्रत्यय महीं हात । एक समय सम्भन्धी  
अण्व्य व उरुहृ प्रत्यय क्रममे भी भीर सत्तर हात है । भसयतसम्भामिद्रिष्टि मिच्छात्त्वका  
अभाव हावमे मूल प्रत्यय तीन हात है व जाना समय सम्भन्धी उत्तर प्रत्यय चत्वारिहात हात  
है क्योंकि, ओपप्रत्ययोंमेम औद्धारिक, औद्धारिकमिन्न स्त्रीबद् और पुरुषबद् इन बाण  
प्रत्ययोंका अभाव है । एक समय सम्भन्धी अण्व्य व उरुहृ प्रत्यय चत्वारिहात हो और  
सत्तर हात है ।

पंचपाणावरणीय-छत्रसपावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-गुरिसवेद-हस्त-रुद्रि-वरुद्रि-  
सोग मय-दुर्गुल्ल-पंचिदिययादि-ओरातिम-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठण-ओराटियसरीर  
अंगोवंग-यअरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस फास-अगुरुल्लुव-उवपाद-परपादुत्तास-पसत्पविहाय  
गह-सस-वाहर-पन्नज-पत्तेयसरीर-थिरामि-सुभासुम-सुमग-सुस्तर-अदेज्ज-असंकिचि-मिमिण-  
पंचतराह्याणि मिच्छइहि-सासणसम्मादिहिणो दुगाइसल्लत, सम्मामि-आइहि-असंजदसम्मा-  
दिहिणो मनुसगाइमज्जुं वंधंति, सेसगईण बंधामावाधो । मनुसगाइ-मनुसगाइपाओमाणुपुत्वि  
उच्चानोदाणि सच्चे मनुसगाइसंजुं वेव वधति, सेसगईहि सह विरोहाधो ।

एवासिं सप्पासिं पि पयडीण बंधस्स येखाया चेव सामी । बंधद्वारं सुगमं । एवासिं  
येखायां गुणद्वाराणं परिभाचरिमद्वारेणु बंधवोच्छेदो जति । सम्मपयडीणं बंधो सादि-अदुवो,  
अनादि ध्रुवजेइयाज्जमावाधो । अथवा, पंचपाणावरणीय-छत्रसपावरणीय-वारसकसाय मय,  
दुर्गुल्ल-वण्णचउरस-अगुरुल्लुव-उवपाद-तेजा-कम्मइय-मिमिण-पंचतराह्याणि मिच्छइहिमिह  
चउव्विहो वंधो, उवसमसेहीदो ओयरिय गिरयं पइइमि सादि अदुवबंधदसमाधो । सेस  
गुणद्वारेणु पुवं जति, बंधवोच्छेदमकुप्पमाजसासणाडीणममावाधो । सेसपयडीणं बंधो सादि

पांच ज्ञानावरणीय छत्र वर्णमावरणीय साता व असाता वेदनीय बारह कपाय  
पुत्रयवेद हास्य रति भरति शोक, मय जुगुप्सा पचेमियजाति औदारिक तैजस व  
कर्मण शरीर, समचउरससंठण औदारिकशरीरंगोपांग बज्जर्मसहजन बर्ग गण  
रस स्वर्ग अगुरुल्लु, उपपात परमात उच्छवास प्रशस्तविहस्योपति बस बत्तर,  
पवाप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्तर, अदेय पक्षकीर्ति निर्माण  
और पांच अन्तराय इन प्रकृतियोंको मिच्छादहि एवं सासाधनसम्यग्दहि दो [ तिर्यक्  
और मनुष्य ] गतिपोंसे संयुक्त बांधते हैं । सम्मगिमिच्छादहि और असंयतसम्यग्दहि  
मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधत है क्योंकि उनके शेष गतिपोंका बन्ध नहीं होता । मनुष्यपति  
मनुष्यगतिपायोग्यानुपूर्वी और उच्छवगोत्रको समी मारकी मनुष्यपतिसे संयुक्त ही बांधते  
हैं क्योंकि उनके शेष गतिपोंके साथ इनका बांधनेका विरोध है ।

इन सभी प्रकृतियोंके बन्धक माग्गी जीव ही स्थामी हैं । बन्धाध्याम सुगम है ।  
इन प्रकृतियोंका मारकियोंके गुणस्थानोंके बरम व अबरम स्थाधोम बन्धमुच्छेद नहीं है ।  
अर्थात् इन प्रकृतियोंका बन्धमुच्छेद मारकियोंके सम्मब बार गुणस्थानोंमें नहीं होता ।  
सब प्रकृतियोंका बन्ध साभि-असुख है क्योंकि अनानि और शुभ मारकियोंका अमाव है ।  
अथवा पांच ज्ञानावरणीय छत्र वर्णमावरणीय बारह कपाय मय जुगुप्सा वर्णादिक  
जाट, अगुरुल्लु, उपपात तैजस व कर्मण शरीर, मिमाण और पांच अन्तराय इनका  
मिच्छादहि गुणस्थानमें जाते प्रकारका बन्ध है क्योंकि, उपशममेयीसे उतरकर मारक्यों  
परिह रूप जीवमें सादि व अजुव बन्ध देखा जाता है । शेष गुणस्थानोंमें शुभ बन्ध नहीं  
है क्योंकि बन्धमुच्छेदको न करनेपाके सासाधनसम्यग्दहि आदिकोंका अमाव है । शेष

अद्वैतो वेधे, अद्वैतवैधिकादा ।

णिदाणिहा-पयलापयला-शीजगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-  
माया-लोभ-इत्यिवेद तिरिक्खात-तिरिक्खगह-चउसठाण-चउसघट्टण-  
तिरिक्खगहपाओग्गाणुपुब्बि-उच्चोव अप्पसत्थविहायगह दुभग दुस्सर-  
अणादेज्ज णीचागोदाण को वधो को अउधो ? ॥ ४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा  
॥ ४६ ॥

सन्धानि वपसामित्तमुत्तानि देमाम्मापियाणि चि दहप्याणि । तेपेदेव सुहरवक्कवर्ष  
कस्सामो । तं वहा— अणताणुवधिकउहस्स वधेदवा समं वोप्पिच्छन्ति, सासणवरिमसमवमि  
एदस्स सम वधेदववोप्पेदुवर्लमादा । धीवमिच्छित्तिव-इत्यिवेद तिरिक्खात-तिरिक्खगह-चउ  
सठाण चउसघट्टण-तिरिक्खगहपाओग्गाणुपुब्बि-उच्चोव अप्पसत्थविहायगह उद्वो वधि, विरोहादो ।

प्रकृतिबोधक वन्ध सावि अमुच ही हे कयोकि ये प्रकृतिर्वा अमुकवन्धी हे ।

निद्रा-निद्रा, प्रवृत्त-प्रवृत्त, स्त्यानगृहि, अनन्ताणुवन्धी क्षेत्र, म्यान, माया, क्षेत्र,  
स्वविद, विर्यगायु, विर्यमाति, चार संस्थान, चार संहनन, विर्यमातिप्राप्त्याम्बुपूर्वी, उघोत,  
अप्रसन्नविज्ञयोगति, दुर्मग, दुस्सर, अनादेव और नीचयोग, इन प्रकृतिर्वाक्य क्षेत्र वन्धक  
और क्षेत्र वन्धक है ? ॥ ४५ ॥

यह सुख सुगम है ।

मिप्पात्ति और सामादगसम्यग्गहि वन्धक है । ये वन्धक हैं, उघे नारकी वन्धक  
है ॥ ४६ ॥

वन्धव्यामिश्रके सब सूत्र वेद्यामर्शक है देसा समग्रता चाहिये । इसी कारण  
इस सूत्रसे सुचित अर्थकी प्रत्यक्षा करते हैं । यह इस प्रकार है— अनन्ताणुवन्धी  
अणुवन्धी वन्ध और वधे दोनों साधने प्युप्पिच्छ होते हैं कयोकि सामान्यगुणस्वात्मके  
कारण समयमें अनन्ताणुवन्धीअणुवन्धी माय ही वन्धव्यामिश्रक्य पाया जाता है । स्थान  
गुणिक जादिक तीन स्वीदे विर्यगायु, विर्यमाति चार संस्थान चार संहनन विधायति  
प्राप्त्याम्बुपूर्वी और उघात इनका नरकगतियें वधे नहीं है कयोकि, देसा इत्थेमें विरोध

सदो एदासि पुन्य पञ्चम वा बंधोदयबोन्धेदविचारो पत्ति, संतासंतार्ण सभिकसविरोहयो ।  
अप्यसत्यविहायगद् दुमग-दुस्सर-अणदेवज-गीचागोदाण पुर्व्य बंधो बोन्धिउज्ज-पञ्चम उदयो,  
सासभमि गद्दवचाण असज्जदसम्मादिद्विम्हि उदयबोन्धेदुवल्मादो ।

अप्यसत्यविहायगद्-दुस्सर-अणताणुबंधिचठककण सोदय-परोदण बंधो, मद्दुदय  
चादो । जवरि अप्यसत्यविहायगदि-दुस्सराण सासणसम्मादिद्विम्हि सोदयो भेव । अस्ति ।  
तिरिक्खाठ-तिरिक्खगद्-चठसठण चठसंघण-तिरिक्खगद्पाओग्माणुपुब्बि ठन्जेव-भीमगिदि-  
तियाण परोदणेव बंधो, एत्थ एदेसिमुदयामावादो । दुमग-अणदेवज-गीचागोदाण सोदण्णेव  
बंधो, भेरपसु एदेसि पडिवक्खाण उदयामावादो ।

भीमगिदितिय अणताणुबंधिचठकण पिरतरो बंधो । इरियवेद चठसठण-चठसंघण-  
उज्जोव-अप्यसत्यविहायगद् दुमग-दुस्सर अणदेव्याण सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधसमवादो ।  
तिरिक्खाठअस्स पिरतरो बंधो, पडिवक्खपयडिवघेण विजा बंधविरामुवल्मादो । तिरिक्खगद्  
पाओग्माणुपुब्बि तिरिक्खगद्-गीचागोदाण सांतर गिरंतरो बंधो, छसु पुडवीसु सांतरो होदण  
सठमपुडविम्हि पिरंतरोवेव बंधदसमादो । अदि पडिवक्खपयडिबंधमस्सिदण मक्कमाणबंधा

है । इमीछिये इन प्रकृतियोंके पूर्वमें अथवा पश्चात् बन्धावयवपुच्छवका विचार नहीं है,  
क्योंकि, सत् और असत् वस्तुके सभिकर्यका विरोध है । अग्रशस्त्रविहायोगति दुर्मग,  
दुस्सर, अनार्य और मीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध व्युत्पन्न होता है पश्चात् उदय  
क्योंकि, साक्षात्तगुणस्थानमें बन्धके मय होजाणेपर असंयतसम्पगदधि गुणस्थानमें इनका  
उदयव्युत्पन्न पाया जाता है ।

अग्रशस्त्रविहायोगति दुस्सर और अग्रशस्त्रविहायोगतिगुणस्थान स्थोदय-परोदयसे  
बन्ध होता है क्योंकि, ये अग्रवाच्यी प्रकृतियाँ हैं । विशेष इतना है कि अग्रशस्त्रविहायोयति  
और दुस्सरका साक्षात्तसम्पगदधि गुणस्थानमें स्थोदय ही बन्ध होता है । तिर्यगायु,  
तिर्यगाति और संस्थान और संहनन तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी उद्योत और  
स्थानगुक्तिबध इनका परोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनके उदयका अभाव  
है । दुर्मग अनादेय और मीचगोत्रका स्थोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, नाटकियोंमें  
इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

स्थानगुक्ति आदिक तीन और अग्रशस्त्रविहायोगतिगुणस्थान स्थोदय-परोदयसे  
रुचिद और संस्थान और संहनन उद्योत अग्रशस्त्रविहायोगति दुर्मग दुस्सर और  
अनादेय इनका साक्षर बन्ध होता है क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव  
है । तिर्यगायुका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिक बन्धका बिना इसके  
बन्धकी विधासि पायी जाती है । तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी निवगति और मीचगोत्रका  
साक्षर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यह पृथिवियोंमें इनका साक्षर बन्ध होकर साक्षरी,  
पृथिवीमें निरन्तर रूपसे ही बन्ध देखा जाता है ।

सांतरर्षपययी बुधदि तो उ भोवस्म पडिवस्सर्षपययीए अपुन्जोवसरूवाए भवावाओ उन्जोवेव भित्तरर्षपिण्ण होदव्वमव र्षपविण्णतो भव्वि सि जदि सांतरर्ष बुधदि तो तिस-  
यउत्तरहुगाठभानं पि सांतरर्ष पस अदि सि ? एत्थ परिहरो बुधदे— वं बुध पडिवस्स  
पयडिर्षपमस्सिदूए वन्कमाणर्षया सांतरर्षपि णि तं सांतरर्षपीसु पडिवस्सपयडिर्षपविण्णामाणं  
इद्वण भुत्तं । परमस्सरो पुण एगसमयं र्षपिदूए भिद्वियसमए जिस्से वषविण्णो दिस्सदि स  
सांतरर्षपययी । जिस्से र्षपकस्से जइण्णो वि अंतोमुहुत्तमेस्से सा भित्तरर्षपययी' पि  
वेत्तणं ।

पञ्चयस्वरूपे क्षीरमाषे चठ्ठावियपयडिर्षगा । श्वरि तिरिक्खाउभस्म सिक्खहिदि  
एगुवर्षपास पञ्चया, वेठवियमिस्स-कम्मइयप चयाधममावाओ ।

संक्षेप—यदि प्रतिपन्न प्रकृतिके वन्यका आश्रय करके वन्यविश्रांतिको प्राप्त  
होनेवाली प्रकृति साम्तरवन्धी प्रकृति कही जाती है तो उद्योतकी प्रतिपन्नभूत अनुपात-  
स्वरूप प्रकृतिका अभाव होनेसे उद्योतको निरन्तरवन्धी प्रकृति होना चाहिये । अथवा  
वन्यका विनाश है इस कारणसे यदि साम्तरका कही जाती है तो फिर तीर्थङ्कर, माहात्म्यिक  
और मायु कर्मीक भी साम्तरका प्रसेग आता है ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शङ्काका परिहार कहत हैं — प्रतिपन्न प्रकृतिके वन्यका  
आश्रय करके वन्यविश्रांतिको प्राप्त होनेवाली प्रकृति साम्तरवन्धी है इस प्रकार को  
कहा है वह साम्तरवन्धी प्रकृतियोंमें प्रतिपन्न प्रकृतिक वन्यके भक्षिमाभारके देखकर  
कहा है । वास्तवमें तो एक समय र्षपकर द्वितीय समयमें जिस प्रकृतिकी वन्यविश्रांति  
देखी जाती है वह साम्तरवन्धी प्रकृति है । जिनका वन्यग्रस्त ज्ञाप्य ही अन्तर्मुद्रितमात्र है  
वह निरन्तरवन्धी प्रकृति है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

प्रत्ययप्रकरण का कल समग्र अतुल्यात्मिक ( ज्ञान शुद्धस्थानोंमें रचनेवाली )  
प्रकृतियोंके समान ही प्रत्ययप्रकरण का कला चाहिये । बिनाय इतना है कि तिर्यगायुके  
मिथ्यावृत्ति शुद्धस्थानमें यहाँ उभयान्त प्रत्यय है क्योंकि, वैदिकमिथ्य और कर्मज  
प्रत्ययोंका अभाव है ।

१ अतुल्य कला इति वाक्य ।

२ वन्य प्रकृति का अर्थ उभयवर्ण वन्य उत्पन्नः समवायारूपे वारन्तर्मुद्रितं न परत ता  
कावत्तया अतुल्यमप्येति तावत् सिद्धं ब्रह्मकावत्तया वन्यो वान्ता ता तावत् इति सुस्पष्टः ।  
अतुल्यमप्येति सिद्धिबलवत्कृत्यातिमल साम्तरवा इति कथितम् । ××× अन्वयेति वा अतुल्यं  
'वाप्येति' वन्येति ता वारन्तया विरिध्यात्तावत्तुल्यमप्येति वारन्तया वन्य तावत् वन्यो वान्तामिति  
सुस्पष्टं अतुल्यमप्येति सिद्धिबलवत्कृत्यातिमल इति वाक्यम् । क म ह २१ २५

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गानुपुब्बि-उउओवाणि मिच्छइडि-सासण  
सम्मादिद्वियो तिरिक्खगइसत्तुवं वंधति । सेसाओ दुग्गणपयडीओ दुग्गइसत्तुवं वंधति । सम्मासिं  
पयडीण केरइया सामी । वंधद्वापं वंधविणइद्वापं च सुगमं । धीणगिद्वितिय अरंतत्तुबंधि  
चउक्कणं मिच्छइडि चउब्बिहो वंधो । सासणे सादि-अद्वो । सेसाणं पयडीणं वंधो  
सादि अद्वो वंध ।

मिच्छत्त-णवुसयवेद-हुइसठाण असपत्तसेवट्टसरीरसघडणगामाण  
को वंधो को अवंधो ? ॥ ४७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइटी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ४८ ॥

एदेण सुइदत्थाण परूवणा कीरे— मिच्छत्तस्स वंधोदया सम वोब्बिज्जंति,  
मिच्छइडिचरिमसमए वंधोदयवोच्छेददंसणादो । णवुसयवेद-हुइसठाण अरंतत्तसेवट्टसरीरसघडण-  
गामाण पुग्गं वंधो वोब्बिज्ज-अदि पच्छा उदयो मिच्छइडिचरिमसमए णट्टबंधाणमेदासिं  
असंभदसम्मादिद्विहि उदयवोच्छेदुवत्तमादो । णवरि असंपत्तमेवट्टसरीरसंघडणस्स पुप्पावर

तिपगायु, तिर्यग्गणि तिर्यग्गतिमायोगयानुपूर्वी और उद्योत प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि  
एवं साक्षात्कृतसम्यग्दृष्टि निर्यग्गतिसे संयुक्त बांधने हैं । शेष द्विस्थान प्रकृतियोंको दो  
गतियोंक संयुक्त बांधने हैं । सब प्रकृतियोंक नारकी स्वामी हैं । वन्धाप्यल और वन्ध  
चित्तस्थान सुगम हैं । न्यामगृह्णित्य और भवमानुपनिषत्तनुष्कस मिथ्यादृष्टि  
गुणस्थानमें बापों प्रकारका वन्ध होता है । न्यामात्ममें सावि और अशुब वन्ध होता है ।  
शेष प्रकृतियोंका वन्ध सावि व अशुब ही होता है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुइसंस्थान और अरंतप्राप्तगुणिकसरीरसहनन नामकमक  
कौन वन्धक और कौन अवन्धक हैं ? ॥ ४७ ॥

एह मूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष नारकी जीव अवन्धक हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं — मिथ्यात्वप्रकृतिक वन्ध और  
वन्ध दोनों एक साथ व्युत्पिद्य होते हैं क्योंकि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके अरत समयमें  
इसक वन्ध और वन्धन व्युत्पेद देया जाता है । नपुंसकवद् हुइसंस्थान और  
अरंतप्राप्तगुणिकसरीरसहनन नामकमोंका पूर्वमें वन्ध व्युत्पिद्य होता है पश्चात् उदय,  
क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके अरत समयमें वन्धके लक्ष हा जानपर असंपत्तसम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानमें इनका उदयव्युत्पेद पाया जाता है । विशेष इतना है कि अरंतप्राप्त



वन्देयवैष्णवेर्विचारो यत्किं, वंशं योजय उद्गमामात्रो ।

मिच्छन्-अनुमयवेद-हुण्डसंस्थानार्थं सोदयो वधो । वधरि हुण्डसंस्थानस्य स-फोदयो वि,  
विम्वहगदीप' तस्सुद्गमामात्रो । अर्थात्समेकमपिरसंप्रदणस्य फोदयो वधो, तत्त्व संव  
द्वयसुद्गमामात्रो । मिच्छन्स्य भित्तो वधो, पुनर्वधितादा । सेमात्र विन्मं सांतो, एगसमस्य  
वन्तुवामदंसपादो ।

पञ्चयो वउष्टमिययविपञ्चणहि समा । एराजो पयडीभो वत्तारि वि हुण्डसंस्थानं  
वन्ति । भेदया समी । [ वंशद्वय ] वंशविपञ्चद्वयं च सुगमं । मिच्छन्स्य वउष्टमि  
वधो, पुनर्वधितादो । सेमात्र सादि मद्रुवा, पुनर्वधितामात्रो ।

मणुस्साउभस्स को वधो को अवधो ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

सुगमिच्छात्परीरसंहननके पूव या पञ्चान् वण्णान्पयुच्छेत् हानका विचार नहीं है क्योंकि,  
वन्धको छोड़कर वहाँ इसके उद्भवका अभाव है ।

मिच्छात्वं अनुमयवेद और हुण्डसंस्थानका साक्ष्य वन्ध होता है । विशेष यह है  
कि हुण्डसंस्थानका वन्ध स्वाभाव्य परोक्षमे भी होता है क्योंकि, विम्वहगदीप उक्तका उद्भव  
वहीं रहता । अर्थात्सामान्यविचारपरीरसंहननका वन्ध परोक्षमे होता है, क्योंकि,  
बापकेमैंमें संहननका उद्भव नहीं रहता । मिच्छात्वंका वन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वह  
जुववन्धी मरुति है । हाथ तीन मरुतियोंका साम्प्रत वन्ध होता है क्योंकि, एक समयमें  
उनका वन्धका विग्राम गया जाता है ।

प्रत्ययाधी मरुतयान् अनुसामिक मरुतियौकि प्रत्ययैकि समात्र है । वे बापों ही  
मरुतियों का मरुतियौ सौकुच वंशनी हैं । मातृकी जैव स्वामी हैं । [ वन्ध्याम्बा ] और  
वन्धविम्वहस्याद सुगम है । मिच्छात्वंमरुतिका वन्ध बापों मरुतयका होता है, क्योंकि, वह  
जुववन्धी मरुति है । दोन मरुतियोंका सादि व अनुमय वन्ध होता है, क्योंकि, व जुववन्धी  
नहीं है ।

मणुप्पापुत्त कीन वन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ ४९ ॥

वह सुव सुगम है ।

१ मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी असंजदसम्माद्विष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ५० ॥

एदेण सुहृदत्वस्स परूवण कस्सामो—एव वधोदयाण पुष्पावरवोच्छेदविचारो मत्थि, बंधं मोक्षं उदयामावादे । परोक्षेण बंधंति, नित्यगदीय मनुस्साउभस्स उदयोविरोहादे । विरंतरं बंधंति, एगसमएण संभुवरमाभावादे । मिच्छाद्विष्टस्स एगवण्णपण्णया, वेठ म्वियमित्स्स-कम्मइयपण्णयाणमभावादे । सासणस्स चोहत्त असंजदसम्मादिद्विष्टस्स पात्थिस्स पण्णया । सेसं सुगमं । मणुसगाइससुत्तं बंधंति । वेरइया सामी । बंधद्वयं वधविप्लवद्वयं च सुगमं । सादि-अद्वया बंधो, अद्वयबंधिच्छादे ।

नित्यरणात्मकमस्तु को वधो को अवधो ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्माद्विष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ५२ ॥

नित्यरणात्मकमस्तु उदयादे पुष्पं पण्ण वोच्छेदो होइ ति सण्णिकसो मत्थि, नित्यर

मिथ्याद्विष्टि, सासादनसम्यग्द्विष्टि और असंजदसम्यग्द्विष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी जीव अबन्धक हैं ॥ ५० ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थको प्रकटपणा करत हैं — यहाँ बन्ध और उदयक पूर्व या पश्चात् व्युत्पन्न होनेका विचार नहीं है क्योंकि बन्धको छोड़कर नारकीयोंमें इसका उदय नहीं पड़ता है । नारकी जीव इसे परोक्षसे बांधत हैं क्योंकि नारकगतिमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है । मिरत्तर बांधते हैं क्योंकि एक समयमें इसके बन्धका विनाश नहीं होता । मिथ्याद्विष्टिके उन्मूलन प्रत्यय होते हैं क्योंकि वैकल्पिकमित्र और कामेय प्रत्ययोंका यहाँ अभाव है । सासादनके आवाहीन और असंजदसम्यग्द्विष्टिके आवाहीन प्रत्यय होते हैं । शेष प्रत्ययप्रकटपणा सुगम है । मनुष्यायुके नारकी जीव मनुष्यमतिसे संयुक्त बांधते हैं । नारकी जीव स्वामी हैं । बन्धाप्याय और बन्धविनाशस्थान-सुगम हैं । इत्येव बन्ध सादि च समुच्च होना है; क्योंकि, यह अमृत्वबन्धी प्रकृति है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजदसम्यग्द्विष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अबन्धक हैं ॥ ५२ ॥

तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका उदयसे पूर्व अथवा पश्चात् व्युत्पन्न होता है इस प्रकार

सेत्सुदयामावादे । सेवेन परोक्षो भवो । भिरंतरो भवो, एगसमरण नपुंसरमावादे । पञ्चा  
ईसणिसुञ्चरा त्रिदिविगसंपञ्चरा अरहत-महुमु-पवयणमतिमात्रो । मनुसगदिसंभुतं ।  
पेक्षया सामी । नपञ्चरा नपविषद्वद्वार्थं च सुगमं । भवो सादि-अद्भुता, अद्भुतभविष्यदे ।

एव तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेयञ्च ॥ ५३ ॥

एवं नवसामिनि [सामान्य] पञ्च च उच्यते । त्रिसेसे पुण अवतविन्नमात्रं भेदा भवि । तं  
भविस्सामं- मनुसग-मनुसगहपाभोम्मानुपुष्पीण सांतर-भिरंतरो मिच्छादृष्टिभिः पदमाय पुढवीए  
भवो जसि, सांतरो भेव; तिन्धयरमेतद्धमियमिच्छादृष्टीणमथावादे । विदियदंभयभिः [तिरिक्त्वा  
गह ] तिरिक्त्वागहपाभोम्मानुपुष्पी-बीचागोदाण सांतर-भिरंतरो भवो जसि, सांतरो भेव, 'सत्तमं  
पुढवि मुचा अणत्तव त्रिययदीए एदासि भिरतरवधामावादे । एसा भेदो पदम-विदिय-तदिय  
पुढवीसु । विदिय-तदियपुढवीसु उवपाद-परपाद-उस्मान-पत्तेयसरीताक्रमसंभदसम्मादिद्विभि  
सोदयो भेव भवो, तत्तव नपञ्चतत्तव असमदसम्मादृष्टीयं अमावादे । मनुसगहदुगं तित्त्वपरसंव

गुह्यता यहाँ नहीं है क्योंकि तीर्थंकर प्रकृतिका यहाँ नास्तिकीयोंमें उद्भूत नहीं होता । इसी  
कारण इसका परोक्षसे बन्ध होता है । बन्ध इसका निरन्तर होता है क्योंकि एक  
समयमें इसके बन्धका विग्रह नहीं होता । हमके मतमें वर्तमानविशुद्धता अन्ध-संज्ञा  
सम्बन्धता अरुन्तमकि बहुभुतमकि और प्रकृतनमकि नास्तिक हैं । मनुष्यगतिसे  
संयुक्त इसका बन्ध होता है । नास्ती जीव स्वामी है । बन्धान्तर और बन्धविनष्टस्यान  
सुगम है । इसका बन्ध सादि च मनुष्य होता है क्योंकि, यह मनुष्यबन्धी प्रकृति है ।

इम प्रकार यह व्यवस्था उपरिम तीन पृथिवियोंमें जानना चाहिये ॥ ५३ ॥

यह बन्धव्याप्तिय [ सामान्यकी ] अपेक्षासे कहा गया है । किन्तु विशेषताका  
अवसम्भन करकेपर भव है । उस कहते हैं— मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वीका  
बन्ध प्रथम पृथिवीमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर नहीं है, किन्तु सान्तर ही है।  
क्योंकि यहाँ तीर्थंकर प्रकृतिक सम्बन्धसे मिथ्यादृष्टि नास्ती और नहीं होते हैं । द्वितीय  
दण्डकमें (१) [निर्यगति] निर्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वी और बीचागोद प्रकृतिपोंका सान्तर निर  
न्तर बन्ध नहीं होता किन्तु सान्तर ही होता है; क्योंकि सप्तम पृथिवीके छोड़कर अन्यत्र  
निर्यगतिम इन प्रकृतिपोंके निरन्तर बन्धका अभाव है । वह सेव प्रथम द्वितीय और  
तृतीय पृथिवियोंमें है । द्वितीय और तृतीय पृथिवियोंमें अपघात परधान उच्छेदान और  
प्रत्येकशरीर, इन प्रकृतिपोंका असंपतसम्बन्धदि गुणस्थानमें स्वीकृत ही बन्ध होता है  
क्योंकि यहाँ अपघातसम्बन्धमें असंपतसम्बन्धियोंका अभाव है । मनुष्यगति और

कम्मियमिच्छाद्द्वीण पिरतर, सेसाण सांतरा असजदसम्मादिद्विस्स चात्तीस पच्चया, वेठविय  
मिस्सकम्मइयप चयाणममावादे । एत्तिओ चेव भेदो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

चउत्थीए पचमीए छट्ठीए पुढवीए एव चेव णेदज्ज । णवरि  
विसेसो तित्थयर णत्थि' ॥ ५४ ॥

तित्थयरम्म बयो किमिदि णत्थि चि उत्ते तित्थयरं बंधमाणसम्माद्द्वीण मिच्छत्तं  
गंतूण तित्थयरसत्तकम्मण सह वित्थियत्तदियपुढवीसु व उप्पज्जमाणममावादे । एदेणेव  
कारणेण मनुस्साइदुगं मिच्छादिद्वी सांतरं वचइ । णत्थि अण्णो भेदो ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय  
सादासाद-चारसकसाय पुरिसवेद-हस्स रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुछा-  
पर्विदियजादि ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचत्तरससठाण-ओरा-

मनुष्यगतिप्राप्त्यर्थानुपूर्वीं तीर्थंकर प्रकृतिं सत्तावाल मिथ्यादृष्टिर्निरस्तं वचती है  
इय तात्त्विकोंके सास्तर बंधती है । असंप्रतसम्पदृष्टिके बाधोत्त प्रत्यय हाते है क्योंकि  
वैरुथिकमिथ्य और कर्मण प्रत्ययोंकर यहाँ अमाय है । इतना ही मेव है सम्पन्न कर्त्ता और  
कोइ मेव नहीं है ।

चतुश्च, पंचम और छठी पृथिवीमें इसी प्रकार आनना चाहिये । विशेषता केवल यह  
है कि इन पृथिवियोंमें तीर्थंकर प्रकृति नहीं है ॥ ५४ ॥

शुक्र—तीर्थंकर प्रकृतिका वण्ण यहाँ क्यों नहीं होता ?

समाधान—इस शब्दक ज्ञानपर उत्तर देते हैं कि जिस प्रकार तीर्थंकर प्रकृतिका  
बांधनवाल सम्पदइष्टि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त होकर तीर्थंकर प्रकृतिं सत्ताके साथ  
द्वितीय व तृतीय पृथिवियोंमें उत्पन्न हाते है वैसे इन पृथिवियोंमें उत्पन्न नहीं हाते । इसी  
कारणसे ही मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्राप्त्यर्थानुपूर्वींको मिथ्यादृष्टि सास्तर बांधते हैं ।  
और कोई मेव नहीं है ।

सातवीं पृथिवीके नारिकेलोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता और  
असाता वेदनीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, भरति, शोक, भय, शुगुप्सा,  
पंचन्द्रियजाति, औदारिक तेजय व कर्मण शरीर, समचत्तरससंस्थान, औदारिकशरीरामोपांग,

लियसरीरअगोवग-वच्चरिसहसघटण वण्ण गंध-रस-फास-अगुखलहुव  
उवघाद परघाद-उस्सास पमत्यविहायगह-तस-चादर-पच्चत्त-पत्तेयसरीर-  
यिराधिर [ सुहा ] सुह-सुगम-सुस्मर आदेज्ज-जसक्खिणि णिमिण-पच  
तराहयाण को वधो को अवधो? ॥ ५५ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यद्बुद्धि जाव असजदसम्मादिद्वी वधा । एदे वधा,  
अवधा णत्थि ॥ ५६ ॥

एदेण देसमाप्तिपसुत्तेण सुह-रस-पठुवण कस्सामो— एत्थ उदयादो वधा पुणं  
पच्च वा वोप्पिम्भो ति विचारो णत्थि, एत्थ तस्म मसंमवाधो । पचवाणत्तरणीय-वठईसवा-  
कणीय-पचिदियवादि-त्तवा-कम्मइय-वण्ण गंध-रस-फास-अगुखलहुव-तस-चादर-पच्च विरा-  
धिर सुमासुम अजसक्खिणि णिमिण पंचतराहयाण सोदभो वधो, एदेसिं सुवोदयत्तादा । मिहा-  
पयत्त-सत्तामाद-वासरकस्साम-इस्स-वि-अदि-सोम मय-हुगुछाणं सोदय-परोदभो वधो, अज्जो-  
दयत्तादो । उवचत्त-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराण मिच्छाद्विद्धि सोदय परोदभो वधो । सेत्ते

वज्रपमसहनन, वज्र, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुखल्यु, उपवात, परवात उच्छ्वास, प्रवृत्तिविहायो  
गति, व्रस, वादर पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्तर, आदेव,  
वसुधैवि, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥५५॥

यह सब सुगम है ।

मिष्पाद्यन्ते तेकर असयतमम्यमधि तक कन्धक है । ये कन्धक हैं, अवन्धक नहीं  
हैं ॥ ५६ ॥

इस देशामर्थक सूत्रके द्वारा सूचित अर्थकी प्रकल्पना करता है— यहाँ उदयसे  
वन्ध पूर्वमे वा पश्चात् स्थितिउप होता है यह विचार नहीं है, क्योंकि यहाँ उदयसे  
सम्भावना नहीं है । पांच आनावरणीय चार वर्णानावरणीय ऐवेन्द्रियजानि तजस व  
कार्मण शरीर, वज्र गन्ध रस स्पर्श अगुखल्यु वस वादर, पर्याप्त स्थिर, अस्थिर,  
शुभ अशुभ अयशस्वीति निर्माण और पांच अन्तराय इसका उदाहरण कन्ध होता है,  
क्योंकि, ये सुवोदयी प्रकृतिपां हैं । मित्रा प्रवृत्ता शास्ता व असत्ता वधनीय वादर कपाय  
हास्य एति मरति शोक, मय और हुगुप्ताका स्वोदय परोदय कन्ध होता है क्योंकि,  
ये अशुभादयी प्रकृतिपां हैं । उपवात परवात उच्छ्वास और वसुधैवकार, इसका मिष्पा-

सोदमो देव, तेसिमेरय अपञ्जतकठे जमावादे । पुरिसवेद भोरालियसरीर समचठरससंअण  
भोरालियसरीरभंगोवण-वञ्जसिहसपडण-पसस्थविहायगइ-सुमग-सुस्सर-भादेज्ज असकिचीण  
परादमो धंधो, एदेसिमुन्यस्स एत्थ विरोहादे ।

पंचपात्रपरणीय छदसपात्रपरणीय-यासहकसाय मय-दुग्धुंछा-पचिंदियजादि-भोरालिय-  
तेजा-कम्मइयससि भोरालियसरीरभंगोवण-वण्णचउत्तम अगुरुवत्तुव-उवधाद-परधाद-उत्सास-  
तस-भाद-पञ्जस-यत्तेयसरीर-पिमिण-यचतराह्यामं गिरतरो वधो, एत्थ धुवधंवितादे । साडा-  
साद-हम्म-दि भरदि-सोग-यिराधिर-सुगासुम-जसकिचि-जअसकिचीणं सान्ते धंधो, सम्मगुण  
हापेसु एदासिमिगणेषुसमयवधसमवाओ । पुरिसवेद-समचठरससंअण-व-जिमहसंयडण-पसरय  
विहायगइ सुमग सुस्सर भादञ्जाण मिच्छन्निट्ठि-मायणमम्माट्ठिटीसु सान्ते धंधो, एगाणेषु  
समयवधसंमवाओ । सम्मामिच्छन्निट्ठि-असंजदसम्माट्ठिटीसु भिरतरो वधा, पडिवक्खपयडीणं  
धंधामावादे ।

एदामो पयडीमो धंधंतेमिच्छन्निट्ठिस्स मूलपच्चया चत्तारि । जाणाममयउत्तरपच्चया

इति गुणस्थानमें स्वीकृत परोक्ष वग्ध होता है । दात गुणस्थानोंमें स्वीकृत ही वग्ध होता  
है क्योंकि मिथ्यावादिका छोड़कर दात गुणस्थान यहाँ अथवाजगत्कालमें नहीं होते ।  
पुरुषवत् औदारिकारीर, समग्रतुरन्मस्थान औदारिकारीरगोपांग यज्ञयमसहस्रम,  
प्रान्तविहायोगति सुमग सुस्सर, भादय आर यज्ञकीर्ति प्रट्टिनियोंका परोक्ष वग्ध होता  
है क्योंकि, इनका उक्तय यहाँ विरोध है ।

पांच प्रान्तपरणीय छद पात्रपरणीय वारह कथाय भव जुगुप्सा पंचन्द्रिध  
ज्ञानि औदारिक तेजस्य प कामज शरीर, औदारिकारीरगोपांग वधादिक धार, अगुरु  
छपु उवधात परधात उक्त्याम भम बादर, पर्याज प्रयत्नसरीर, निर्माण और पांच  
अन्नराय इनका निरन्तर वग्ध होता है क्योंकि, ये प्रट्टिनियाँ यहाँ धुपवन्धी हैं । नाना प  
असाता यत्नीय क्षाम्य इति अराति शाब्द, स्थिर मस्थिर, शुभ अशुभ यज्ञकीर्ति  
और अयज्ञकीर्ति प्रट्टिनियोंका सामान्य वग्ध होता है क्योंकि, ये गुणस्थानोंमें इनका एक  
और भन्नक समय तक वग्ध नम्मप है । पुरुषवत् समग्रतुरन्मस्थान यज्ञयमसहस्रम  
प्रान्तविहायागति सुमग सुस्सर और भादय इन प्रट्टिनियोंका मिथ्यावादि य भामाइन  
मम्यगदि गुणस्थानोंमें आन्तर वग्ध होता है क्योंकि यहाँ इनका एक भन्नक समय तक  
वग्ध नम्मप है । मम्यगिमिथ्यावादि और ममयनमम्यगदि गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर  
वग्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनकी प्रतिपक्ष प्रट्टिनियों वग्धका अभाव है ।

इन प्रट्टिनियोंको बांधमयान मिथ्यावादि प्राणीक मूल प्रत्यय धार जाना समय

एकव्यसाम । एतसमयमहण्युक्तस्मयपचया दस अक्षरम् । सामयममादिद्विस् मृत्यवर्षा  
विणिज, पापसमयउत्तरपचया चतवेत्तातीस, एतमयमहण्युक्तस्मयपचया दस सत्तारम् ।  
समामिच्छादिद्वि-असंभदसमामिच्छीसु मृत्यवर्षा विणिज, उत्तरपचया चालीस, प्रथममय-  
महण्युक्तस्मयपचया जव सोत्तम् ।

एतामो सप्यपयदीमो मिच्छाद्वि-सामयममादिद्विजो च तिरिक्खगत्तसंभुत्तं वंति,  
समामिच्छादिद्वि-असंभदसमामिच्छीसु मणुग्गाइसंभुत्तमुमय च अण्णगाइलं वंषामावादे ।  
नेइया मामी । वंषादणं ववविणइइणं च सुगमं । पंषणावावरणीय-अदमपारणीय-वत्तसं  
कमत्त-मय-दुगुंछा तेआ-कम्मइव-अण्ण-गर रम-पय-अगुदवत्तु-उवपाद विमिय-पंषंत्ता-  
इयापं मिच्छाद्विदि चउत्तिहो पंपो, पुववंषितादो । संमगुणइयेसु पुववंषा वरिष,  
पंषवाप्पेदमसुपमाकसासपानीजममावादे । अउसेमालं पयईलं वंषा सम्मगुणइयेसु सारि  
वदुंषा, अदुववंषितादो ।

सम्यग्धी उत्तर प्रत्यय इच्छाजन तथा एक समय सम्यग्धी अण्ण व उत्तर प्रत्यय इहा भीर  
महात्त हात है । सासात्मसम्यग्द्वि मूळ प्रत्यय तीन नामा समय सम्यग्धी उत्तर प्रत्यय  
वचसीत्त आर एक समय सम्यग्धी अण्ण व उत्तर प्रत्यय इहा भीर सत्तर हात है ।  
सम्यग्मिच्छाद्वि भीर असंयतसम्यग्द्वि गुणस्यानाम मूळ प्रत्यय तीन उत्तर प्रत्यय  
वानीज तथा एक समय सम्यग्धी अण्ण व उत्तर प्रत्यय ना भीर सोत्त हात है ।

इह सब प्रकृतिपाके मिच्छाद्वि भीर सासात्मसम्यग्द्वि तिर्यग्गतिसे संभुत्त  
वांछते है, तथा सम्यग्मिच्छाद्वि भीर असंयतसम्यग्द्वि मनुष्यगतिसे संभुत्त वांछते है,  
क्योंकि दोनों अंग प्रत्यय गतिपाके वन्धन अभाव है । नारकी जीव इनके वन्धनसे स्वासी  
है । वन्धाप्याव भीर वन्धविनष्टस्याल सुगम है ।

पांच उल्लाखणीय छह वर्तमानवर्णीय बारह कपाय भय जुगुप्सा तैजस व  
आर्मेज हाटीर, कर्म गन्ध दस स्वर्ग अगुत्तमसु, उपधान निर्माण भीर पांच अन्तपय  
इहका मिच्छाद्वि गुणस्यानाम बाटो प्रकटवन्ध वन्ध होता है क्योंकि, ये छहवन्धी प्रकृतिपाके हैं।  
होय गुणस्यानाम पुत्र पन्ध नहीं है क्योंकि, इनके वन्धमनुष्येवकी न करनेवाले सासात्म  
सम्यग्द्वि आदिर्कोय अभाव है । पांच प्रकृतिपाके वन्ध सब गुणस्यानाम सवि भीर  
अमुच होता है क्योंकि ये प्रकृतिपाके अमुचगणी है ।

णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिदि-अणताणुवंधिकोधे-माण  
माया-लोभ इत्यिवेद-तिरिक्खगइ चउसठाण-चउसघडण-तिरिक्खगइ-  
पाओग्गाणुपुब्बी-उज्जोव-अप्पसत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर अणादेज्ज-  
णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ५७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा  
अवधा ॥ ५८ ॥

एदस्स जत्थो उच्चदे— अणताणुवधिकउपक्कस्स वपोदया सम वोच्छिण्णा, सासणे  
वेष दोण वोच्छेदुवल्लमादा । अप्पसत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण पुब्बं  
वधो पच्छ उद्वो वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठिदि वधे वोच्छिण्णे संते पच्छ असंजद  
सम्मादिट्ठिदि उद्ववोच्छेदुवल्लमादे । थीणगिदितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउ

निद्रानिद्रा, प्रचलप्रचल, स्थानगृदि, अनन्तानुबन्धी क्लेश, मान, माया, लोभ,  
श्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उषोत्त, अग्रशस्त  
विद्यायोगति, दुमग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन  
अवन्धक है ? ॥ ५७ ॥

यइ सुअ सुगम है ।

मिप्पाघटि और सासादनसम्पग्घटि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, छप जीव अवन्धक  
हैं ॥ ५८ ॥

इन सूत्रका अर्थ कहते हैं— अमन्तानुबन्धितपुण्यकर्म बन्ध और उद्व वानों साय  
प्युच्छिन्न हात हैं क्योंकि सासादन गुणस्थानमें ही वानोंका प्युच्छिन्न पाया जाता है ।  
अग्रशस्तविहायांगति दुर्मग पुम्बर, अनादय और नीचगोत्र इनका पूर्वमें बन्ध और  
पश्चात् उद्व प्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सासादनसम्पग्घटि गुणस्थानमें बन्धक प्युच्छिन्न  
होइमेपर तत्पश्चात् अमन्ततसम्पग्घटि गुणस्थानमें उद्वका प्युच्छिन्न पाया जाता है ।  
स्थानगृदि आदिक तीन लोभेद नियमगति चार संस्थान चार संहनन नियमातिप्रायो



संघटन-क्षिरिसप्तमहाभोगाणुपुष्पी-उम्बोवाण पुष्प पञ्चम वषोदयसोम्वेदविपाते नस्ति,  
परासिमेत्वं उदयमावाप्तो ।

अप्यतगुर्भविचउकस्त सोदय-परोदण्य भवो, अद्भुतोदयत्तादो । अप्यसरविहागद  
दुस्तरणं मिष्ठाद्विदि सोदय-परोदण्य भवो, अप्यसक्तं पदासिमुदयामावाहो । सासने  
सोदययेव भवो, तस्सेस्य अप्यसक्तमावाहो । तुभ्य-अप्यदे-अ-पीचायोदानं सोदययेव  
भवो, मुदोदयत्तादो । धीमगिद्वितीय-द्वितीय-तिरिक्खगद-अउसंअ-अउसंअ-तिरिक्खगद  
पात्रोगागप्य-उन्धोत्तान परोदययेव भवो । कुदो ? विस्सुत्तादो ।

धीमहिदितिय-अर्णतापुर्णचिचठक्क-तिरिक्खगह-तिरिक्खमइपाजांगमासुपुब्बी-वीया-  
योत्ताण भित्तरो वंघो । कुदो ? एत्थं पुवर्णचिच्छरो । सेसाणं सांतरो, एगस्समएण हि वंघवोच्छे-  
द्वत्तंभरो । पच्चया चठहाणपयडिपच्चयसमा । एदाओ सम्भपयडीओ तिरिक्खमइसंहुव-  
र्चंति । नेहया सामी । वंघद्यां वंघविणपट्टहाणं च सुगमं । धीमहिदितिय-अर्णतापुर्णचि-  
चठक्कणं मिच्छद्दिन्दि चठमिहो वंघो, पुवर्णचिच्छरो । सासणम्मि साहि-अद्दो । सेसाणं

ग्यानुपूर्वी भीर उपोत हबकं पूर्वमें या पश्चात् बम्बान्पम्बुच्छन् हानेका बिचार नहीं है  
क्योंकि, वहाँ इनके उद्गमका अभाव है।

अनन्तानुबन्धितगुणका स्तोत्रपरोक्षसे वक्ष्य होता है क्योंकि, व प्रकृतियों हैं। अग्रहस्तुतिवाङ्मणि और सुस्वरका मिश्रणदि गुणस्थानमें स्वाक्ष्य परोक्षसे वक्ष्य होता है क्योंकि अपर्याप्तकाक्रमे इनका उद्भव नहीं रहता। सामान्य गुणस्थानमें स्तोत्रपसे ही इनका वक्ष्य होता है क्योंकि इस गुणस्थानका वहाँ अपर्याप्तकाक्रमे अभाव है। पुर्मग अनाद्य और लीङ्गोत्र इनका स्वाक्ष्य ही वक्ष्य होता है क्योंकि, व प्रकृतियों प्रबोद्धी हैं। स्यादपुदि भाषिक तीन शीघ्र निर्यगति चार संस्थान चार संहमन निर्यगतिप्रामोभ्यानुपूर्वी और उद्यान इनका परोक्षसे ही वक्ष्य होता है। इसका कारण स्वभाव ही है।

सप्तमयुधि आदि त्रीन अक्षराण्युच्यन्ते इति निर्णयति निर्णयति प्राप्तेष्वपि पूर्वी और नीचमोच इत्यत्र निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ वे जुबबन्धी हैं। शेष प्रकृतियोंका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसम इत्यत्र बन्ध-सुप्पन्न पाया जाता है। प्रत्ययोंकी प्रकृति अतुल्यादिक प्रकृतियोंका समान है। इन सब प्रकृतियोंका निर्णयतिसे कृष्ण बाँधत है। भारती और इत्यत्र बन्धका स्थानी है। कर्माणां और कर्माणां प्रकृतयः सुगम हैं। सप्तमयुधि आदि त्रीन और अक्षराण्युच्यन्ते इति निर्णयति प्राप्तेष्वपि पूर्वी और नीचमोच इत्यत्र निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ वे जुबबन्धी प्रकृतियाँ हैं। नासाक्षराण्युच्यन्ते



सम्पामिच्छादृष्टी अमजदसम्मादृष्टी उधा । एदे वधा, अबसेसा  
अवधा ॥ ६२ ॥

एदस्स वरयो वुच्चदे— एत्थ वंधादा उदया पुर्व पञ्च वा वाक्छिन्ने वि  
विचारो पत्ति, एदस्सिमेत्थ उदयामावादे । एदस्सि परदण्व वंधो, निरयगदीए उदया-  
मवादा । पित्तो वंधो, एगसमण्य वंधुकरमावादा । पञ्चया अठ्ठाणियपयडिपञ्चमत्तुत्थ ।  
ममुमगत्तत्तत्तं सम्पामिच्छादृष्टि-अमजदसम्मादिदृष्टो वंधनि । वेरइया सामी । वंधादं  
बंधविबुद्धात्तं च सुगमं । सादि अदुवबंधो, अदुवबंधविचारो सम्पामिच्छादृष्टि-अमजदसम्मा  
इद्विपिवात्तुवगमे पियमादो वा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पचिंदियतिरिक्खा पचिंदियतिरिक्ख  
पज्जत्ता पचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पचणाणावरणीय-छदसणावर  
णीय-सादासाद-अट्टकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि अरदि-सोग भय-दुगुंछ  
वेवगह-पचिंदियजादि-वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर-समवउरससअण

सम्पामिच्छादृष्टि और अमजदसम्मादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, ऐसे गुणस्वरूपकी  
बन्धक हैं ॥ ६२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— बन्धसे उदय पूर्वमें व्युत्पिच्छ होता है या पश्चात् वह  
विचार नहीं नहीं है क्योंकि, इनका नहीं उदय नहीं है । इनका परोक्षपक्ष ही बन्ध होता  
है क्योंकि, नरकपतिमें हमका उदयका अभाव है । बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, एक  
समयसे इसके बन्धका विनाश नहीं होता । इनका प्रत्यक्ष अनुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्यक्षोंके  
समान हैं । सम्पामिच्छादृष्टि और अमजदसम्मादृष्टि अनुपपत्तिसे संयुक्त बांधते हैं ।  
कारण स्वामी हैं । बन्धात्मान और बन्धविनाशस्थान सुगम हैं । सादि य अदुव बन्ध होता  
है क्योंकि वे अनुपपत्ति हैं, अथवा सम्पामिच्छादृष्टि और अमजदसम्मादृष्टियोंके  
व्युत्पिच्छमार्गमें निबध होमेने यी सादि य अनुप बन्ध होगा है ।

तिर्यग्गतिमें तिर्यक्, पंचेन्द्रिय तिर्यक् पंचेन्द्रिय तिर्यक् पचाप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यक्  
योनिप्रतियोगि पांच ज्ञानावरणीय, छह दृशनावरणीय, साप्ता व वसत्रा वेदनीय, नाठ कपाय  
पुरुमेद, हास्य, रति, अरति, शोक, मय, सुगुप्ता, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकल्पिक वैजय

वेठवियसरीरअगोवग-वण्ण गध-रम-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुब्बी-  
अगुरुलहुव उवघाद-परघाद-उस्साम पसत्थविहायगढ-तस-चादर-  
पज्जत्त-पत्तेयसरीर [ थिरा ] थिर-सुहासुह सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-जस  
कित्ति अजसकित्ति णिमिण-उच्चागोद पचतराहयाण को वधो को  
अवधो ? ॥ ६३ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्णुहृदि जाव सजदासजदा वधा । एदे वधा, अवधा  
णत्थि ॥ ६४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अरवो तुक्कदे— देवगइ-वठवियसरीर वेठवियसरीरअगोवग-देवगइ-  
पामोमाणुपुब्बि उच्चागोदाण तिरिक्खेसु उदयामावादो पुब्ब पञ्चा बघोदयवोच्चेदविचारो  
णत्थि, सतासंताण सण्णिकसविरोहोदो । अवसेसपपणीसु वि एस विचारो णत्थि, अरयगदीए  
एदासि बघोदयवोच्चेदामावादो । पंचणामावरणीय चतुदसणावरणीय-वेठविय-तेजा-कम्मइय  
सरीर-वण्ण-गंध-रम-फास-अगुरुलहुव [ थिरा ] थिर-सुमासुम णिमिण-पचतराहयाण सोदओ

व कर्मज शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरगोपांग, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति  
प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, ठपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रस्रस्तविहस्योगति, त्रस, चादर,  
पपात्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्वर, आदेय, यत्नक्रीति,  
अयत्नक्रीति, निमाण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराग, इनका कौन बन्धक और कौन अपन्धक  
है ? ॥ ६३ ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्पाद्येसे ठेकर संयतामयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अपन्धक नहीं  
हैं ॥ ६४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवगति वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरगोपांग  
देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्छ्वासोच इनका निर्यथोमं उच्च म हानसे बन्धादपन्धुच्छेदकी  
पूर्वापरताका विचार नहीं है क्योंकि सन् और असत्की समामताका विरोध है । रात्र  
महतिगोमं भी यह विचार नहीं है क्योंकि अथगतिसे इनके बन्धोदयपुच्छेदका समाप है ।

पांच सामान्य और दशमावरण वैक्रियिक तैजस व कर्मज शरीर, यण गन्ध  
रस स्पर्श, अगुरुलघु स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराग

वंधो, ध्रुवोदयस्तथो । विहा-पयत्वा-सादासाद-अष्टकसाय पुरिसवेद-हस्त-रश्मि-मरिचि सोग मन्-  
दुगुल्ल-समन्तरमसंश्रय-पसत्पविहायगह-सुम्पराणं सव्यद्वारेषु सोदय-परोदयो वंधो । वरि  
जोषिणीसु पुरिमवेदबंधो परावंधो । उपपादबंधो मिच्छादिदि सामनसम्मादिदि-असंश्रयसम्मा-  
दिदीप सोदय परोदया, विग्गहयदीप उपपादस्तुदयायावंधो । सम्मामिच्छादिदि-संश्रय-  
संश्रयाय सोदयो वंध, तसिमप-असंश्रयायावंधो । परपादुस्यास-परोपसरीराण मिच्छादिदि-  
सासकसम्मादिदि-असंश्रयसम्मादिदीसु सोदय-परोदयो, एदासिमपञ्चकाले उदयायावंधो ।  
ससदागुणद्वारेषु सोदयो वंधो । वरि जोषिणीसु असंश्रयसम्मादिदी एदायो सोदयक  
बंधदि, तत्वेदस्य अप-असंश्रययावंधो । तस वावर पञ्चत पंचिदियवादीयो मिच्छादि  
सोदय-परोदय वंध, पडिबन्तपयदीप उदयसंभवाधो । अवसेसा सादयेव, तत्वं पडि  
बन्तपयदीपमुदयायावंधो । पंचिदियतिरिक्त्वा-पंचिदियतिरिक्त्वापञ्चत-पंचिदियतिरिक्त्वा  
जोषिणीसु सोदयक सव्यगुणद्वारेषु वंधो, एतव पडिबन्तपयदीपमुदयायावंधो । वरि  
पंचिदियतिरिक्त्वासु मिच्छादिदीपं पञ्चतस्य सादय-परोदयो वंधो तत्वं पडिबन्तपयदीप  
उदयसंभवाधो । सुमगादेज्ज असंश्रयं मिच्छादिदि-सासकसम्मादिदि-सम्मामिच्छादिदि-

इतका सोदय वन्ध होता है क्योंकि वे सुभाषणी प्ररतिवा हैं । निम्ना प्रथमा साता व  
अमाता वेदनीय भाठ वयाव पुण्यवेद हास्य एति अरति शाक मय दुगुल्ला समन्तर  
रससंस्थान प्रशान्तिहापागति और सुन्दर, इतका सब गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय  
वन्ध होता है । विहाय इतमा है कि यात्रिमर्ग, तिर्यकोमें पुण्यवेदका वन्ध परोदयसे होता  
है । उपपातका वन्ध मिच्छादिदि सामानसम्मादिदि और असंश्रयसम्मादिदि जीवोंके  
स्वादय परोदय होता है क्योंकि, त्रिमहर्गतिमें उपपातका उदय नहीं होता । सम्मामिच्छा  
दिदि भार संपत्तार्थपताक स्वादय ही वन्ध होता है क्योंकि, उनके अथवास्तव्यमका अमाव  
है । परपात अष्टकसाय भार प्रत्यक्षशरीरका वन्ध मिच्छादिदि सामानसम्मादिदि और  
असंश्रयसम्मादिदि गुणस्थानोंमें स्वादय परोदय होता है क्योंकि, इन प्ररुतिपोंका अथवा  
काममें उदय नहीं होता । वरि वा गुणस्थानोंमें स्त्रोदय वन्ध होता है । विगपता यह है कि  
यात्रिमर्गियोंमें असंश्रयसम्मादिदि जीव इन्हें स्वादय ही बांधता है क्योंकि, यात्रिमर्गियोंमें  
अथवास्तव्यमका असंश्रयसम्मादिदि गुणस्थानका अमाव है । वरि वावर, पर्याप्त भार एक  
मित्रक जानि इतका मिच्छादिदि जीव स्वादय परोदय ही बांधता है क्योंकि यहां इतकी  
प्रतिपक्ष प्ररुतिपोंका उदय सम्भव है । वरि गुणस्थानियोंका स्वादय ही बांधता है क्योंकि  
उन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्ररुतिपोंके उदयका अमाव है । एकमित्रक तिर्येव एकमित्रक  
तिर्येव वरि और एकमित्रक तिर्येव यात्रिमर्गियोंमें स्वादय ही सब गुणस्थानोंमें वन्ध  
होता है क्योंकि, इनमें प्रतिपक्ष प्ररुतिपोंके उदयका अमाव है । विगपता यह है कि  
यहां प्रतिपक्ष प्ररुतिपोंमें मिच्छादिदिपर्याप्त पर्याप्त अरुतिका स्वादय परोदय वन्ध होता है क्योंकि  
यहां प्रतिपक्ष प्ररुतिपोंका उदय सम्भव है । सुमग, आदय और अष्टकशरीरका वन्ध मिच्छा-

मसंजदसम्मादिहीसु यवो सोदयपरोदओ, एत्थ पडिवक्खसुदयत्तसणाओ । संजदासंजदेसु सोदओ  
 चेव, तत्थ पडिवक्खसुदयत्तसणाओ । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-  
 मसंजदसम्मादिहीसु मससकिट्ठीए भंघो सोदय-परोदओ, एत्थ पडिवक्खसुदयत्तसणाओ । संजदा-  
 सजदेसु परोदओ, तत्थ पडिवक्खसुदयत्तसणाओ । देवगत्ति-वेत्थियसरीर  
 वेत्थियसरीरभंगोवग-देवगत्तिपाभोगाणुपुब्बी-उच्चागोदाण परोदओ यवो, एदामित्त एत्थ-  
 विरोहाओ ।

पचणाणावरणीय-छद्मणावरणीय अट्ठकसाय-भय-हुगुळा तेजा-कम्मइयसरीर-धण्ण-गाध  
 रस-फस अगुम्माठहुव-उवचाद-गिमिण-पचतरात्तयाण विरतरो यवो, पुव्वपचित्ताओ । सात्तासाद  
 हम्म रत्ति-ज्जदि-ओग-यिगविर-सुमासुम-जसकिट्ठि मससकिट्ठीण सान्तो यवो, एगसमएण  
 पुव्वमत्तसणाओ । सुरिसवेदम्म मिच्छादिट्ठि-सासणेसु सारतो गिरतरो च भंघो, पम्म-सुक्क  
 छेम्मिएसु गिरंतरवचसणाओ । सेसगुणह्मणेसु गिरतरो, पडिवक्खसुदयत्तसणाओ । पच्चि

इदि सात्तात्तजसम्यग्इदि, मय्यतिमय्यग्इदि च अमय्यतसम्यग्इदि गुणस्यानोमि स्तोदय परोदय  
 हाता है क्योंकि, इन गुणस्यानोमि प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका उदय देखा जाता है । संयतासंयतोमि  
 इनका स्तोदय ही वक्ष्य हाता है क्योंकि उनमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उदयका अभाव है ।  
 मिप्याइदि आत्तात्तजसम्यग्इदि सम्यग्इदि-एदि और असंयतसम्यग्इदि गुणस्यानोमि  
 अपदाकीर्तिका वक्ष्य स्तोदय परोदय होता है क्योंकि इन गुणस्यानोमि उनमें प्रतिपक्ष  
 प्रवृत्तिका भी उदय देखा जाता है । मय्यतासंयतोमि उनका परोदय वक्ष्य हाता है क्योंकि,  
 उनमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका ही उदय देखा जाता है । वचगति-वच्चियसरीर, वच्चियस-  
 रीरत्तगापत्ता वचगतिप्रायाग्यामुपूब्बी और उच्चयोव इनका परोदय वक्ष्य होता है क्योंकि,  
 तियत्तोमि इनके उदयका विरोध है ।

पांच आत्तावरणीय छद्म आत्तावरणीय आठ जगत्त भय-हुगुळा तेजस व कामज  
 शरीर, वच गन्ध रस रुचि अगुम्माठहु उपपन्न निम्माण और पांच अमत्तराए इनका  
 निम्माट पक्ष हाता है क्योंकि, ये पुव्ववन्धी प्रवृत्तियाँ हैं । सात्ता च अमाता येदमीए,  
 हास्य रत्ति मरत्ति दोक स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ यशस्वीर्णि और अपदाकीर्ति इनका  
 साम्तर वक्ष्य होता है क्योंकि, एक समयमें इनके वक्ष्यका विधाय वप्ता जाता है ।  
 पुग्गवेदका मिप्याइदि और आत्तात्तजसम्यग्इदियोमि आत्तर व निरम्तर वक्ष्य हाता है  
 क्योंकि, पद्म और हुम्माठ सद्दवाचम औप्योमि निरम्तर वक्ष्य वप्ता जाता है । दोए गुण  
 स्यानोमि निरम्तर वक्ष्य हाता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके वक्ष्यका अभाव है ।

दिय-तस-वाहर-य-वत-यतेषसरीराण यषो मिच्छाद्विष्टिं मातर-भिरंतरे, तेउ-यम्म-सुक्क-  
 स्वेत्तिपयसु भिरंतरवधईसणादो । सेसुवरिमगुणह्येषेसु भिरंतरो, तत्थ पडिवन्धरपडिवंधामावादो ।  
 समभउरसमंअणत्तस यषो मिच्छाद्विष्टि-सामनेसु सांतर-भिरंतरो, असखे-अवासाउएसु तउ-यम्म-  
 सुक्कस्वेत्तिपयसंखे-अवासाउएसु य भिरंतरवधईसणादो । उपरिमगुणेषु भिरंतरो, तत्थ पडि-  
 वन्धरपडिवंधामावादो । परपाडुस्सासाण मिच्छाद्विष्टिं सांतर-भिरंतरो यषो, अपगजत्तसंहुत-  
 वंधामावादो तेउ-यम्म-सुक्कस्वेत्तिपयसु संखे-अवासाउएसु असंखे-अवासाउएसु य भिरंतर-  
 वधईसणादो । उवरिमगुणसु भिरंतरो यषो, तत्थ अपगजत्तस वंधामावादो । पसरविहम्म-  
 माईए मिच्छाद्विष्टि-सामनेसु सांतर-भिरंतरो, सुहनिअस्मियसंखे-अवासाउएसु भिरंतर-  
 वधईसणादो । उवरिमगुणेषु भिरंतरो, पडिवन्धरपडिवंधामावादो । सुम-सुत्तर प्रदेन्याव-  
 मिच्छाद्विष्टि-सामनेसु सांतर-भिरंतरो, सुहसिअस्मियसंखे-अवासाउएसु भिरंतरवध-  
 ईसणादो । उवरि भिरंतरो, पडिवन्धरपडिवंधामावादो । देवमदिदुग-नेउन्निपडुप-

पंचेन्द्रिय वस वाहर, पर्याप्त और अत्यन्तहीन, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि तेज पक्ष और शुक्ल छेदवावाले जीवोंमें इनका निरन्तर  
 बन्ध देखा जाता है। दोष उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहां  
 प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। समभउरअसंख्यस्थानका बन्ध मिथ्यादृष्टि और  
 साक्षात्तनसम्पन्नादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर होता है क्योंकि, अक्षरपक्षवर्षाशुक्ल और  
 तेज पद्म एवं शुक्ल छेदवावाले त्रिपक्षोंके इन गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है।  
 अपरिम गुणस्थानोंमें अक्षर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके  
 बन्धका अभाव है। परपाट और अणुवास प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि अपर्याप्तके बन्धसे संयुक्त इनके बन्धका अभाव होनेसे  
 तेज पद्म एवं शुक्ल छेदवावाले संख्यातवर्षाशुक्ल और अक्षरपातवर्षाशुक्लोंमें निरन्तर  
 बन्ध देखा जाता है। अपरिम गुणस्थानोंमें दोनों प्रकृतियोंका निरन्तर बन्ध होता है  
 क्योंकि, इनमें अपर्याप्तके बन्धका अभाव है। प्रशम्यविहायोगतिका मिथ्यादृष्टि और  
 साक्षात्तनसम्पन्नादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, शुभ तीव्र छेदवावाले  
 संख्यातवर्षाशुक्ल और अक्षरपातवर्षाशुक्लोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। उपरिम  
 गुणस्थानोंमें उच्च निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका  
 अभाव है। शुभ सुत्तर और नाक्ष्य प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तनसम्पन्नादृष्टियोंमें  
 सान्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, शुभ तीव्र छेदवावाले संख्यातवर्षाशुक्ल और  
 अक्षरपातवर्षाशुक्लोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,  
 वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। देवगति देवगमिमात्येपाशुपूर्णा वैकल्पिक-

उन्हागोदाप मिष्काइहि सासणेसु सांतर गिरतरो वंचो, मुहतिहस्तिवसंखेज्जासखेज्जवासाउएमु  
भिरंतरयंपुवळमादो । उवरि भिरंतरो वंचो ।

तिरिक्खेसु मि ऊदहीण मूलपञ्चया चत्तारि । उत्तरपञ्चया तेववास, वेठविय  
वेठवियमित्पपञ्चयाणममात्रादो । पवरि देवगइचउमकत्स पमकवपास पञ्चया, वेठविय  
वेठवियमित्स भोराळियमित्स-कम्मइयपञ्चयाणममात्रादो । एगसमयजइण्णुक्कत्सपञ्चया दस  
अट्ठारस । सासणत्स मूलपञ्चया तिण्णि, उत्तरपञ्चया अट्ठेत्तात्तिस्स । वेठविय  
चउमकत्स छाएत्तात्तिस्स, पुब्बित्त्तण चेवामात्रादो । एगसमयजइण्णुक्कत्सपञ्चया  
दस सत्तारस । सम्मामिन्हाइहि असज्जइसम्मादिहीण मूलेपपञ्चया चव । पवरि सम्मामिन्ध  
इहिहि वेठवियकयजोगो असज्जइसम्मादिहिहि वेठविय-वेठवियमित्सजोगो अवणे  
दव्वा । सज्जइसज्ज ओषपञ्चया चव । एव चउमवहाण पञ्चयपकूवणा कदा । पवरि  
पंचिदियतिरिक्खजोभिणीसु पुरिस-पवुंसयपञ्चया अवणेदव्वा । असज्जइसम्माइहिहि भोराळिय  
मित्स-कम्मइयपञ्चया अवणेदव्वा ।

छापर, वैद्विषिकशरीरगोवाग और उच्चगोवाका मिष्काइहि एवं सासादनसम्पदद्विषोमं  
सांतर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि शुभ तीन क्षेत्रापाळे संख्यातवर्षायुक्त और  
अनस्यतवर्षायुक्तोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है ।

तिरिक्खोमं मिष्काइहिषोके मूळ प्रत्यय चार हातें हैं । उत्तर प्रत्यय तिरपन्न होने हैं  
क्योंकि, यहां वैद्विषिक और वैद्विषिकमिश्र प्रत्ययोंका अभाव है । विशेष इतना है कि  
इवगतिकतुक्क इत्यादि प्रत्यय होने हैं क्योंकि, वैद्विषिक वैद्विषिकमिश्र औदारिक  
मिश्र और काम्य प्रत्ययोंका अभाव है । एक समय सम्पन्धी अथवा च उक्त प्रत्यय  
क्रमसे दश और अठारह होते हैं । सासादनसम्पदद्विषिक मूळ प्रत्यय तीन और उत्तर  
प्रत्यय अठ्ठासीस होते हैं । वैद्विषिकतुक्कके उत्तर प्रत्यय दशासीस होते हैं क्योंकि,  
पूर्वोक्त प्रत्ययोंका ही अभाव रहता है । एक समय सम्पन्धी अथवा च उक्त प्रत्यय क्रमसे  
दश और सत्तरह होते हैं । सम्पन्मिष्काइहि और असपत्तसम्पदद्विषिके मूलेप प्रत्यय ही  
होते हैं । विशेषता यह है कि सम्पन्मिष्काइहि गुणस्थानमें वैद्विषिकप्रयोग और असपत्त  
सम्पदद्विषिकमें वैद्विषिक और वैद्विषिकमिश्र योगोंको कम करना चाहिये । संयतासंयत  
गुणस्थानमें बाध प्रत्यय ही होते हैं । इस प्रकार चार प्रकारके तिरिक्खोमं प्रत्ययोंकी प्रकृष्टता  
की है । विशेषता यह है कि पंचेत्थिय तिरिक्ख यानिमतिषोमं पुदयवद और मपुंसकवेद  
प्रत्यय कम करना चाहिये । असपत्तसम्पदद्विषिक गुणस्थानमें औदारिकमिश्र और काम्य  
प्रत्ययोंका कम करना चाहिये ।



पंचजामावरणीय-सर्पसृणावरणीय अहकसाय-अग्नि-सोम भय-द्रुगुष्म-पश्चिरियवर्द्धि-  
 तेजा-कम्पावसरीर-अक्ष-गन्ध-रस-कास मगुरुगलद्रुग-उवघाद-परपाद-उस्सास-तस-बाह-पञ्च-  
 पतेपमरीर विमिश्र-यंबंतउद्ग्याभं मिच्छाद्दृष्टी चउगद्गसंभुत्ताय, सासणो विरयगर्ह्य विद्या तिग  
 संभुत्ताण, सेमा देवगद्गसंभुत्ताण वंधया । सादवेदणीय-इस्स-ररीओ मिच्छाद्दृष्टी सासणो च विरय  
 गर्ह्य विद्या तिगद्गसंभुत्त, सेमा देवगद्गसंभुत्तं वंधंति । एवं असंविद्धिं पि वंधंति, विसेसामावरो ।  
 अमावेदणीय अमसकिंसीओ मिच्छाद्दृष्टी चउगद्गसंभुत्त, सासणो तिगद्गसंभुत्तं, सेमा देवमद्गसंभुत्तं ।  
 पुरिमवेद मिच्छाद्दृष्टी सामणो च विरयगर्ह्य विद्या तिगद्गसंभुत्तं, सेमा देवगद्गसंभुत्तं वंधंति ।  
 समचउरससंभुत्त-पसुरयविहायगद्ग सुमग सुम्मर आदे-बाणमेव वेव वत्तव्यं । देवगद्गि देव-  
 गद्गिपामोम्माणुप्पीओ सुव्ये देवगद्गसंभुत्तं वंधंति । [ वेठणियसंजि ] वेठणियसरीर  
 अगोवंगणि मिच्छाद्दृष्टी देव-विरयगद्गसंभुत्त, सेमा देवगद्गसंभुत्तं । विर-सुभाज सादमो ।  
 अविर-असुहाज असदमो । उच्छागोदं मिच्छाद्दृष्टी सासणसम्माद्दृष्टिओ देव ममुसमद्गसंभुत्तं,  
 सेमा देवगद्गसंभुत्तं वंधंति ।

पांच जामावरणीय छह सर्पनावरणीय अह कसाय अग्नि शोक भय द्रुगुष्मा  
 पश्चिश्चर्या इति तैजस्य च कामेज शरीर वर्जं गन्ध रस स्पर्श जगुरुल्लभु उपपन्न  
 परपान उच्छवास जस बाहः पर्वाज प्रत्यक्षशरीर, निर्माण और पांच अस्तराय इव  
 प्रकृतिबोके मिच्छादृष्टि चारों गतिबोले संयुक्त सामान्यनसम्पददृष्टि नरकगतिके बिना  
 तीन गतिबोले संयुक्त और शाय तीन देवगतिमे संयुक्त बंधक हैं । सातावर्णीय हास्य  
 और एतिके मिच्छादृष्टि एवं सामान्यनसम्पददृष्टि नरकगतिके बिना तीन गतिबोले संयुक्त  
 तथा शाय तीन देवगतिमे संयुक्त बंधने हैं । इसी प्रकार पञ्चार्थिके भी  
 बंधने हैं क्योंकि, हमक कार विज्ञापता नहीं है । अमानवेदनीय और अपशब्दैतिके  
 मिच्छादृष्टि चारों गतिबोले संयुक्त सामान्यन तीन गतिबोले संयुक्त और शाय तीन  
 देवगतिमे संयुक्त बंधने हैं । पुण्यवर्द्धके मिच्छादृष्टि और सासावर्णनसम्पददृष्टि नरकगतिके  
 बिना तीन गतिबोले संयुक्त और शाय तीन देवगतिमे संयुक्त बंधने हैं । समचतुरस्र  
 संस्वान प्रान्तपिहापागणि सुमग सुम्पर और अग्रेष प्रकृतिबोके गतिबंधयोग भी इसी  
 प्रकार बहना चाहिये । देवगति और देवगतिपायागानुगुर्तिके सब देवगतिमे संयुक्त  
 बंधने हैं । [ पश्चिर्विकारात् ] और पश्चिर्विकारात्गावोगका मिच्छादृष्टि रूप च नरकगतिके  
 संयुक्त तथा शाय देवगतिमे संयुक्त बंधने हैं । स्थिर और शुभ प्रकृतिबोके गतिबंधयोग  
 सामान्यनार्थक समान है । अश्विर और अगुम प्रकृतिबोके गतिबंधयोग अमानावर्णीयक  
 समान है । उच्छवात्रक मिच्छादृष्टि और सामान्यनसम्पददृष्टि रूप च अमुष्य गतिमे संयुक्त  
 तथा शाय निर्बंध देवगतिमे संयुक्त बंधने हैं ।

सम्भासिं पयडीण बधस्स तिरिक्खा चेव सामी । यधद्दाण वधविण्ठट्ठाण च सुगमं ।  
पंचणापावरणीय छद्मणावरणीय अट्टकमाय भय-शुगुत्ता-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गध-रस-फास-  
मणुस्यलहुव-उवषाद-णिमिण पचतरइयाण मिच्छाइट्ठिहि चउध्विहो बधो, ससेसु तिबिहो,  
पुषामावादो । अवसेसाण पयडीणं सादि मद्दुवो ।

गिदाणिदा-पयत्तपयत्ता-थीणगिद्धि-अणत्ताणुवधिकोध-माण-  
माया-लोम-इत्थिवेद तिरिक्खाउ मणुमाउ तिरिक्खगइ मणुसगइ ओरा  
लियसरीर-चउसठाण ओरालियसरीरअगोवग-पचसघट्ठण-तिरिक्खगइ  
मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी उब्बोव अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-  
अणादेज्ज णीचागोदाण को वधो को अयधो ? ॥ ६५ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी उधा । एदे वधा, अवसेसा अनधा  
॥ ६६ ॥

अथ प्रकृतियोंके बन्धक तिर्यक ही क्यामी हैं । बन्धावसान और धर्माचिनष्टस्यान  
सुगम हैं । पांच ज्ञानावरणीय छद्म वर्तनावरणीय आह कयाय भय शुगुत्ता तेजस च  
कामय गरीर यम मन्ध रस कर्मा मणुस्यसु उपधान विमाय और पांच धम्मराय  
इनका मिच्छादष्टि शुभस्यात्ममें चारी प्रकारका बन्ध होता है । शय शुभस्यात्ममें तीन  
धम्मरका बन्ध होता है क्योंकि, उनमें भय बन्धक अमाय है । शय प्रकृतियोंका साहि च  
अष्टव बन्ध होता है ।

निगानिद्रा, प्रयत्तप्रवत्त, स्थानगृद्धि, अनन्तानुपधी श्लेष, मान, माया लोम,  
स्त्रीवद, तिर्यगायु, मनुष्यायु नियगति मनुष्यगति, भौदारिकशरीर, चार सम्भान, भौदारिक  
शरीरागोपांग, पांच मंहनन, नियगानिप्रायाग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी, उपात,  
अप्रसस्तविहयोगमि, दुभग, दुस्सर, अनादय य नीयगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन  
अपपक है ? ॥ ६५ ॥

यद मूय सुगम है ।

मिप्पादष्टि और सासादनसम्पदष्टि बन्धक हैं । य बन्धक हैं, शय चार अपपक  
हैं ॥ ६६ ॥

एतेन सूत्रभाषण परवत्ता कथिते — यीषगिदितिय-इषियद-तिरिक्ताउ-तिरिक्ता-  
गइ भोत्तलियमरि चउर्यग्रम भासलियमरीअगोवम पंचमयइण-तिरिक्तागइपाओगासुपुम्मी-  
उ भोत्त अणसम्भविहायगइ दुम्मर-वीषागोदार्ण तिरिक्तागइए उदयवोच्छेदा ऋषि, साम  
वचवोच्छेदो चेत् । अत्रि तिरिक्तागइपाओगासुपुम्मीए पुणं वचो वेच्छिअयो पञ्च उदयो,  
असंजदसम्मादिदिग्धि उदयवोच्छेदात् । अत्रेताणुरंधिचउरकम्म वेदोदया समं बोधिअण्ण,  
सामवसम्मादिदिग्धिरिममपमि उमववाअरुदंसणादो । मनुमाउ-मनुमगइपाओगासुपुम्मीं  
तिरिक्तागइए उदयो चेत् ऋषि, सिंहादो । तथइति वचंइयात् पुणं पञ्चा वाच्छेद  
विचो ऋषि । दुमग अवादे-वायं पुणं वचो बोधिअण्णदि पञ्चा उदयो, सामव वाच्छिअ-  
वचत्त अजदसम्मादिदिग्धि उदयवाच्छेदंसणादो ।

यीषगिदितिय अमताणुरंधिचउर इषियेद चउरग्रम-वचमपइण-उच्चोत्त अणसम्भ-  
विहायगइ दुमग दुम्मर अवादेअत्रा सोदय-उरएहि वचो । अत्रि तिरिक्ताओविपीसु इषि  
वेदम्भ सेत्तएत्त वचो । तिरिक्ताउ-तिरिक्तामइ वीषागोदार्ण गोत्तएत्त वचो । मनुस्ताउ

इमं शास्त्रं सूचितं मयोक्ते प्रकृत्या कृतं हि— स्थानपूर्विक आदिकं तीक्ष्णं  
स्त्रीषिदं तिर्यगायु तिर्यग्माति औदारिकरापीर, चार संस्थान औदारिकरापीरंगोपांग  
पांच सहजत तिर्यगतिपाय स्थानपूर्वी उपात अग्रसम्भविहायगतिं तुम्बर और मीषगोत्र  
इमं तिर्यगतिमि उदयवोच्छेद नहीं है । सामादमगुणस्थानमि केवल पञ्चपुच्छेद ही है ।  
विशेष इतना है कि तिर्यगतिपायस्थानपूर्वीका पूर्वमि वच्यं व्युच्छिद्य होता है पश्चात्  
उदय वच्यंकि [सामादमगुणस्थानमि वच्यके मर हो जानेपर तत्पश्चात्] अन्त्यतस्तस्मादपि  
गुणस्थानमि उदयवोच्छेद होता है । अन्त्यानुरंधिचउरका वच्य और उदय दोनों  
साथमि व्युच्छिद्य होता है क्योंकि, सामादमगुणस्थानमि चारम समयमि दोनोंका व्युच्छेद  
देखा जाता है । मनुप्याय और मनुपगतिपायस्थानपूर्वीका तिर्यग्मातिमि उदय ही नहीं है  
क्योंकि, यही इमं उदयका विचार है । इसी कारण इमके वच्य और उदयके पूर्व का  
पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है । पुर्मग और नमादेयका पूर्वमि वच्य व्युच्छिद्य  
होता है पश्चात् उदय वच्यंकि सामादमगुणस्थानमि इमं वच्यके मर हो जानेपर असंपत  
सम्भविदिमि उदयवोच्छेद देखा जाता है ।

स्थानपूर्विक आदिकं तीक्ष्णं अन्त्यानुरंधिचउर, स्त्रीषिदं चार संस्थान पांच  
सहजत उपात अग्रसम्भविहायगतिं तुर्मग तुम्बर और अमादेय इमका साक्ष्य परेत्तपसे  
वच्य होता है । किन्तु विशेष इतना है कि तिर्यक् बोधिमतिपीमि स्त्रीषिदका लोभपसे ही  
वच्य होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्माति और मीषगोत्रका लोभपसे ही वच्य होता है ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बीण पराएण्व चधो । ओरात्थियसरीरमगोवगाण  
सोत्थ-परोदएण चधो, विग्गहगदीए उट्यामावाधो । तिरिक्खगणिपाओग्गाणुपुब्बीण वि सोदय  
परोदएण चधो, विग्गहगदीए विजा अणस्य उदयामावाधो ।

वीणगिद्धित्तिय अणसाणुवंधिचउक्कण भिरंतरो यधो, धुवचधित्तो । इत्थिवेद  
मणुसगइ-चउसउयण-चचसचहण मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-उज्जेव-अप्पमस्यविहायगइ-डुमग-  
दुस्सर भणदेन्दाणं सान्तरो यधो, एगसमएण वंधुवरमदसणादो । तिरिक्खाउ-मणुस्साउआणं  
गिरंतरो यधो, जहण्ण वि एगसमयवधानुवउमादो । तिरिक्खगइ मोरात्थियदुग-तिरिक्ख-  
गइपाओग्गाणुपुब्बी-पीचागोदाणं सानर-भिरंतरो, तेउ-वाउकत्त्याण तेउ-वाउकइय-सत्तम  
पुडवणिउण्हितो आगतुण पंधिदियतिरिक्ख-तण्णव-ओपिपीसु उप्पज्जाणं सुणक्कुमारदि  
देव-ओइण्हितो तिरिक्खेसुप्पज्जाण च भिरंतरवचदसणादो । जवरि सासये सानरो येव, तस्स  
तेउ-वाउकइयसु अमावाधो सत्तमपुडवीदो तग्गुणेष गिगमभावाधो च । मोरात्थियदुगस

मनुष्यासु मनुष्यगति भीर मनुष्यगतिप्राप्त्यानुपूर्वीका परादयन बन्ध होता है ।  
भौतिकशरीर भीर भौतिकशरीरपंगोपांगका स्वादय परोदयमे बन्ध होता है क्योंकि,  
विमहगतिये इनका उदय नहीं रहता । तिर्यगतिप्राप्त्येवानुपूर्वीका भी स्वादय परोदयसे  
बन्ध होता है क्योंकि, विमहगतिका लाङ्कन अन्धकार उदय उदयका अभाव है ।

स्वयानुपुद्भिर्भय भार समस्तानुबन्धिबन्धुक्कण निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि ये  
धुवबन्धी हैं । स्वीय मनुष्यगति भार स्वयान पांच स्वेहम मनुष्यगतिप्राप्त्येवानुपूर्वी  
उपोल अमशस्तविहायोगति धर्मग दुग्धर भीर अनोदय इनका नास्तर बन्ध होता है  
क्योंकि एक समयमें इनके बन्धका विधाम हुआ जाता है । नियगासु भीर मनुष्यासुका  
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, जन्ममे भी इनका एक समय बन्ध नहीं पाया जाता ।  
तिर्यगति भौतिकशरीर, तिर्यगतिप्राप्त्येवानुपूर्वी भीर भीखगात्र इनका नास्तर-निरन्तर  
बन्ध होता है क्योंकि, तत्त्वगतिक य वायुकायिकोंके तथा तेजकायिक धातुकायिक व मज्जम  
पृथिवीक कारकिर्षोमें आकर ऐकेन्द्रिय निषेध भीर उदयक पर्याप्त य यामिमनियोमें उत्पन्न  
हुए जीवोंके भार मज्जानुमागदि देव व कारकिर्षोमें निषेधोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके भी इनका  
निरन्तर बन्ध बना जाता है । यिगयना यह है कि सामान्य गुणस्थानमें सामान ही बन्ध  
होता है क्योंकि, यह गुणस्थान तेजकायिक भार वायुकायिक जीवोंमें होता नहीं है तथा  
मज्जम पृथिवीक इन गुणस्थानक नाथ निर्गमन भी नहीं होता । भौतिकशरीरका

१ चान्दा तिरिक्खगदीए अ-आदका तिरिक्खगदीए इति वाह ।

२ इति उयणा जोगविचरणीअदीरव उपपज्जादि इति वाह ।

संतत-विरतये ।

एवासि पृथ्वया सम्बगुणसु पंचद्वानियपयडिपच्यएहि तुस्तम् । जवरि तिरिक्ख  
मनुस्साउभाणं मिच्छाइडिम्हि कम्मइयपच्यया जग्गि । पंचिद्वियतिरिक्खपच्य-पंचिद्विज  
तिरिक्खजग्गिणीसु ओरात्थिमिस्स-कम्मइयपच्यया जग्गि । अउच्चिइमु तिरिक्खउसु सामम  
ओरात्थिमिस्स कम्मइयपच्यया जग्गि, अप-अत्तकत्ते तस्माउपपाप्मावादा ।

धीजगिदितिय जणैताणुपंचिचउत्तकत्तण मिच्छाइडिम्हि अउगइमहुत्तं, मयमो सिग्ग  
संहुत्तं वंचयो । इत्थिपेइं थिरयगइए विणा तिगइमहुत्तं, मणुमाउ-मणुमगइपाअत्तगाणुपुष्पीअ  
मणुसगइसंहुत्त, तिरिक्खत्त-तिरिक्खगइपाओगाणुपुष्पी उच्चोवाणि तिरिक्खउत्तमंहुत्तं, ओरा  
त्थिमसिग्ग-चउत्तकत्त-अरात्थिमयतिअगोवंग-पंचसचइयाणि तिरिक्ख-मणुमगइमंहुत्त, अपसत्थ  
विद्वयमइ-हुमग हुस्सर-अणदंज-धीपागोदाणि देवगदीए विणा तिगइमंहुत्तं वंचन्ति । एवमिं  
पचवीचं वंचत्त तिरिक्खा सामी । वंचइयं वंचविजहुत्ता व सुगमं । धीजगिदितिय  
अणताणुपंचिचउत्तकत्तं मिच्छाइडिम्हि अउच्चिइम्हि जपो । सासणे दुविहो, अपादि-धुपा-

सात्तर निरत्तर बन्ध होता है ।

इस प्रकृतिपौंक प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें पचस्थानिक प्रकृतिपौंक समान है ।  
विशेषता केवल यह है कि तिर्ययायु और मनुष्यायुअ मिच्छाएहि गुणस्थानमें कर्मज प्रत्यय  
महीं होता । पंचेन्द्रिय तिर्यक पर्याप्त और पंचभित्त तिर्यक पालिमतिपौंमें औदारिकमिअ  
व कर्मज प्रत्यय नहीं होते । आर प्रकारके तिर्यकोंमें साक्षात्क गुणस्थानमें औदारिकमिअ  
और कर्मज प्रत्यय महीं होते क्योंकि, अपर्याप्तकर्ममें उसके आयुका बन्ध नहीं होता ।

स्वामपुष्टिबय और अमन्तानुबधिअनुत्तके मिच्छाएहि आरों गतियोंसे संयुक्त  
और साक्षात्कनसम्प्राएहि तीन गतियोंसे संयुक्त बन्धक है । अविद्वको वरकगतिके किता  
तीन गतियोंसे संयुक्त मनुष्यायु एवं मनुष्यगतिप्रत्ययस्यानुपूर्वीको मनुष्यगतिसे संयुक्त;  
तिर्ययायु, तिर्यगतिप्रत्ययस्यानुपूर्वी और उद्यम-अ तिर्यकगतिके संयुक्त; औदारिकशरीर,  
आर संस्थान औदारिकशरीरामोपांग और पांच संवहनको निर्बगति व मनुष्यगतिसे  
संयुक्त; तथा अमन्तानुबधिआयोगति दुर्मेग दुम्बर अमाक्षय और मीचगोत्रको देवगतिके  
किता तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं । इस प्रकृतियांक बन्धक तिर्यक स्वामी हैं ।  
बन्धाज्जाल, और बन्धाविमप्रस्थान सुगम है । स्वामपुष्टिबय और अमन्तानुबधिअनुत्तके  
मिच्छाएहि गुणस्थानमें आरों प्रकारका बन्ध होता है । साक्षात्क गुणस्थानमें दो प्रकारका  
बन्ध होता है क्योंकि वहां जगामि और अय बन्धका अभाव है । दोय प्रकृतियोंका

मावाण्णे । सेम्मयडीण वयो सान्नि-अद्दुवो, अद्दुवर्षधित्थो ।

मिच्छत्त णवुमयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइदिय-चीइदिय-तीई-  
दिय-चउरिंदियजादि-हुइसठाण-असपत्तसेवट्टसघडण-णिरयगइपाओ-  
ग्गाणुपुब्बि आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त साहारणमरीरणामाण को  
वधो को अवधो ? ॥ ६७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइटी वधा । एदे वंधा, अवसेमा अवधा ॥ ६८ ॥

एदस्स अरथो सुप्पदे— मिच्छत्त-एइदिय-चीइदिय-तीईदिय चउरिंदिय आदाव  
थावर-सुहुम अप-ज्जत्त-साहाण्णार्ण वंधादया मम वोच्छिण्णा, मिच्छाइट्ठि मोत्तप्पदामि उवरिमेसु  
उदयामावादा । णवुमयवद-हुइसठाण अर्म्मपत्तसेवट्टसघडणाण वधवोच्छदो चैव वोदयस्स,  
सज्जगुप्पमुदयदमणा । णिरयाउ णिरयगइपाओग्गाणुप्पीण निरिक्कगदीए उदयामावादो पुब्ब  
पच्छ वंधादयवोच्छदविचारो णग्धि ।

वध मादि य अद्दुव होता है क्योंकि य अद्दुववर्षा है ।

मिप्पात्त, नपुंसकवद, नारकायु, नरकगति, एवेन्द्रिय, हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि  
न्द्रिय जाति, हुइसम्भान, अर्म्मप्राप्तमृपात्तिकारिर्महनन, नरकगतिप्रापाम्यानुपूर्वी, आनाप,  
खावर, सुम्म, अपपाप्म और मापाप्मअग्गि नामकमोक्ष करेन पन्थक और करेन अपन्थक  
है ? ॥ ६७ ॥

यह मूल सुगम है ।

मिप्पात्त वधक है । ये वधक है, जेप निर्धन अपपाक है ॥ ६८ ॥

इसका अर्थ कहत हैं— मिप्पात्त एवगिन्द्रिय हीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय  
आनाप क्पाय नृहम अपपाप्म और मापाप्म इनका वध और उदय वामों साथ  
सुखित्त होत हैं क्योंकि मिप्पात्त शुण्णयानका छाइकर उपरिम शुण्णयानोंमें इस  
महनिपोंके उदयका अभाव है । नपुंसकवद हुइसम्भान और अर्म्मप्राप्तमृपात्तिकारिर्महनन  
इसके वधका ही सुखित्त है उदयका नहीं । क्योंकि अब शुण्णयानोंमें इनका उदय इसका  
आता है । नारकायु और नरकगतिप्रापाम्यानुपूर्वीका निवर्गगतिमें उदय न होकर  
इसके पूर्व या पश्चात् वधवदयसुखित्त इनका विधान नहीं है ।

मिच्छतस्स सोदएण्वेव, भिरयाठ-भिरयगइ-भिरयगइपाओम्माणुपुष्पीण परोदएण्व, सेसाम् सोदय-परोदएहि बंधो । पवरि पंधिदियतिरिक्खत्तियम्मि एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-वठ रिदियवादि-आदाव-धावर-सुहुम-साहमणार्णे परोदएण बंधा । पंधिदियतिरिक्ख- [ पञ्च ]-ओमिणीसु अपञ्जसस्स परोदएण बंधो । ओमिणीसु जयुंमयवेदस्स परोदएण बंधो । मिच्छत-भिरयाऊयं भिरतोरे बंधो, एगसमण बंधस्सुवरमायावाओ । मेसपयईत्त बंधा संतरो, एयम्मएव बंधवरमदंसवाओ । मिच्छत-जयुंसयवेद-हुइसत्रण असपत्तेयवइसंभइण-भिरयगइ-भिरयगइ-पाओम्माणुपुष्पी-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-वठरिदिय आदाव-धावर-सुहुम अपञ्जत-साहमणार्णे तेवण्व पच्चया । ओमिणीसु एककवण्व पच्चया । भिरयाठमस्स तिरिक्ख-पंधिदियतिरिक्ख पंधिदियतिरिक्खपग्गत्तरसु एककवण्व पच्चया । पंधिदियतिरिक्खओमिणीसु एगवंधास पच्चया । मिच्छतं वठगइसंतुत्तं, वजुसयवेद-हुइसंत्तमाणि तिगइसंतुत्तं, भिरयाठ-भिरयाठ-भिरयगइपाओम्माणुपुष्पीओ भिरयगइसंतुत्तं, एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-वठरिदिय-आदाव-धावर-सुहुम-साहमणे तिरिक्खगइसंतुत्तं, असपत्तेयवइसंभइणमप-वत्तं च तिरिक्ख-मजुसमइ संतुत्तं मिच्छइइ बंधंति । एदामिं पयईयं बंधस्स तिरिक्खा सामी । पंधइय बंधविपइइत्तं

मिष्यत्स्य स्वोदयस ही, नारकस्य नरकमति और नरकमतिमाओम्माणुपुष्पीको परोदयसे ही, तथा हाव प्रकृतिषीको स्वोदय परोदयसे ही बन्ध होता है । विशेषता यह है कि पंचमित्रवर्षिक तीन प्रकारके मिष्यत्स्य एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आताप स्वावर, सूक्ष्म और साधारण प्रकृतिषीको परोदयसे बन्ध होता है । पंचेन्द्रिय त्रिषंख पर्याप्त और योनिमतिषीमें अपर्याप्तका परोदयस बन्ध होता है । योनिमतिषीमें मनुष्यकक्षको परोदयसे बन्ध होता है । मिष्यत्स्य और नारकस्यके निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विधायन मही होता । हाव प्रकृतिषीको बन्ध सन्तर होता है क्योंकि, एक समयस इनके बन्धका विधायन देखा जाता है ।

मिष्यत्स्य मनुष्यकक्षेव हुइसंत्तस्यान बर्तमावत्तुपादिकासंहमन नरकगति नरक गतिमायोम्माणुपुष्पी एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आताप स्वावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इनके तिरयम प्रत्यय हावे हैं । योनिमतिषीमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं । नारकस्यके त्रिषंख एकेन्द्रिय त्रिषंख और पंचेन्द्रिय त्रिषंख पर्याप्तोंमें इक्यावन प्रत्यय हाते हैं । पंचमित्र त्रिषंख योनिमतिषीमें उर्ध्ववास प्रत्यय हाते हैं ।

मिष्यत्स्य त्रिषंख मिष्यत्स्यको चारों गतिषीसे संयुक्त मनुष्यकक्ष व हुइसंत्तस्यानके तीन गतिषीसे संयुक्त नारकस्य नरकगति और नरकगतिमाओम्माणुपुष्पीको नरकगतिसे संयुक्त, एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आताप स्वावर, सूक्ष्म और साधारण इनका त्रिषंखगतिसे संयुक्त, तथा जलमावत्तुपादिकासंहमन और अपर्याप्तको त्रिषंखगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधने हैं । इन प्रकृतिषीके बन्धके त्रिषंख

ए सुगम । मिच्छत्तस्म सादिजो अणान्णिओ धुवो भट्ठो सि चउत्थिहो वधा । सेसाण सादि-  
अदुवो, भट्ठवसंभित्ताने ।

अपच्चक्खाणकोध माण माया लोमाण को वधो को अवधो ?

॥ ६९ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्णुहि जाव अमजदमम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,  
अवमेमा अवधा ॥ ७० ॥

एदेण मगाहिदत्तयाण पयामो कीरेदे—एदामि वधादया सुम बाष्णिज्जा, दोण्हम  
मज्जमम्मादिट्ठिहि विणामुवत्तमाणा । मोदय-परदण्ण वधो, भट्ठवादयत्ता । निरंतरो, धुव  
संभित्ताने । पच्चया निरिक्खणो पचट्ठाणिपपयन्निपच्चण्हि तुत्तम । मिच्छाद्विष्णु  
मंडुत्त, सामणमम्मादिट्ठी निगडमंडुत्त, मम्मामिच्छान्निट्ठी अस्तवडमम्मादिट्ठी देवगडमंडुत्त

आत्मी हैं । बन्धावस्थान और बन्धविनयस्थान सुगम हैं । मिष्याम्येक आदिक, अनादिक,  
ध्रुव और अध्रुव आगे प्रकृतका बन्ध होता है । अथ प्रकृतिपौत्र आदि व अध्रुव बन्ध होता  
है क्योंकि, व अध्रुवबन्धी हैं ।

अप्रत्याग्यानावरण व्रज, मान, माया और तेमकर कैन वचक और कैन अपचक  
हैं ॥ ६९ ॥

एह मूत्र सुगम ह ।

मिष्याद्विष्णे ठेकर अमयनमम्यद्वि तक वचक हैं । व वचक हैं, अथ अवचक  
हैं ॥ ७० ॥

इम मूत्रक जात मगुदीण अयोजा प्रकृता वरुण हैं— इम आगे प्रकृतिपौत्रा बन्ध  
और उदय आगे साध धुवित्तम हात हैं क्योंकि, अमयनमम्यद्वि गुणव्याप्त्ये आगे  
विना पापा जाता है । इमका व्यावय परावयम बन्ध होता है क्योंकि व अध्रुवावपी  
हैं । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि ध्रुवबन्धी हैं । इमक प्रत्यय निषेधेति ऐकस्यानिक  
प्रकृतिपौत्र समान हैं । मिष्याद्वि नियम इहे आगे गतिपौत्र मंडुत्त सामावकमम्यद्वि  
हीन गतिपौत्र मंडुत्त तथा मम्यद्विद्वि व अमयनमम्यद्वि वयगतिन मंडुत्त



वधति । तिरिक्खा सामी । वधद्यापं वधविषदृष्ट्यापं च सुगमं । मिच्छाद्विद्भि ब्रह्मिणे ।  
सेसगुणेषु तिविद्भो, भुवामावादो ।

देवाउभस्स को वधो को अवधो ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विद्भी सासणसम्माद्विद्भी असजदसम्माद्विद्भी सजदासेजदा  
वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ७२ ॥

ब्रह्मस्वरूपो दुःखदे— वधोदयापयेत्य पुन्यं पञ्चम बोधेद्विषयो जस्मि, तिरिक्ख-  
गर्हए देवाउभस्स उदयामावादो । परोदएण वधो, वधोदयापमककमव उचितिरोहादो ।  
विन्दतो, एगसमएण वधुकरामावादो । तिरिक्ख-वधिदियतिरिक्ख-वधिदियतिरिक्खपञ्चकस्स  
मिच्छाद्विद्भी-सासणसम्माद्विद्भी-असेजदसम्माद्विद्भी-सजदासजदराण बहाक्मेव एककवण-अस-  
वाउठ-सत्तसीसपञ्चया होति । ओषिणीम् एगएववास ब्रह्मेद्विद्भी बालीस पचवीस  
पञ्चया । सेसं सुगमं । सव देवगइसेसुतं वधति । तिरिक्खा सामी । वधद्यापं वधविषदृष्ट्यापं  
च सुगमं । देवाउभस्स वधो सम्भव सदि-अद्वयो, अद्वयवधिविदादो ।

वांचते हैं । तिर्येच जीव इनके स्वामी है । बन्धाव्याप्त और बन्धविनष्टस्थान सुगम  
है । मिथ्यादृष्टि गुणस्वप्नमें बाधों प्रकाशका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानमें तीन  
प्रकारका बन्ध है क्योंकि उसमें भुव बन्धका समाव है ।

देवायुक्क क्वैन बन्धक और क्वैन अवन्धक है ? ॥ ७१ ॥

पइ सूच सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासणसम्मगृष्टि, असमससम्मगृष्टि और संयतासेयव बन्धक हैं । ये  
बन्धक हैं, शेष तिर्येच अवन्धक हैं ॥ ७२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहाँ बन्ध और उदयका पूर्व या पश्चात् स्वरूप होनेका  
विचार नहीं है क्योंकि तिर्येगातिमें देवायुक्क अव्यक्त अभाव है । देवायुक्क परोदपसे  
बन्ध होता है, क्योंकि, उससे बन्ध और उदय दोनोंके एक साथ अस्तित्वका विरोध है ।  
बन्ध विरुद्ध होता है, क्योंकि, एक समवर्ति बन्धविधायक अभाव है । तिर्येच पंचेन्द्रिय  
तिर्येच और पंचेन्द्रिय तिर्येच पर्याप्तिकीं मिथ्यादृष्टि, सामाज्यमम्यगृष्टि, सर्लवत  
सम्मगृष्टि और संयतासंयतोके पञ्चाङ्गमसे इक्यावन व्याप्तीस व्याप्तीस और सैतीस  
प्रत्यय होते हैं । पश्चिमतिथीमें उन्चाल्य बवालीस बालीस और पैंतीस प्रत्यय होते हैं ।  
शेष प्रत्ययप्रकरण सुगम है । सब तिर्येच देवायुको देवगणितसे संयुक्त वांचते हैं । तिर्येच  
स्वामी हैं । बन्धाव्याप्त और बन्धविनष्टस्थान सुगम है । देवायुक्क बन्ध सर्वत्र सदि च  
अयुक्त होता है क्योंकि वह अद्वयवन्धी प्रकृति है ।

पचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता पचणाणावरणीय णवदसणावरणीय  
सादासाद मिच्छत्त-सोलमकमाय-णवणोकसाय तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-  
तिरिक्खगह-मणुस्मगह-एहदिय-चीहदिय-तीहदिय-चउरिदिय-पचि-  
दियजादि ओरालिय-तेजा-कम्महयसरीर-छसउण-ओरालियसरीर-  
अगोवग-छमघडण-चण्ण-गध-रम-फाम-तिरिक्खगह-मणुसगहपाओ-  
ग्गाणुपुब्बी-अगुरुगलहुग उवधाद परधाद उस्सास-आदाउज्जोव-दो-  
विहायगह-त्तस यावर-चादर-सुहुम-पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-यिरा-  
थिर-सुहासुह सुगम [ दुमग ] सुस्सर-दुस्सर आदेज्ज अणादेज्ज-जस  
कित्ति-अजसकित्ति णिमिण-णीचुच्चागोद पचतराहयाण को वधो को  
अन्नधो ? ॥ ७३ ॥

सुगम ।

सत्त्वे एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ ७४ ॥

वीणगिदित्थिय-मणुस्माउ-मणुस्मगह-एहदिय-चीहदिय-तीहदिय-चउरिदियवादि-हुंहु-

पचेन्निय तियच्च अपयाप्तामे पांच ज्ञानावरणीय, नौ इन्द्रणावरणीय, सात्ता व अमान्ता  
वेदनीय, मिष्मान्ता, मोठह कपाय, नौ नोकपाय, तियगामु, मनुप्यायु, तियगगति, मनुप्यमति,  
पचेन्निय, हीन्निय, वीन्निय, चतुरिन्निय, पचेन्निय जाति, औदारिक तेजस व क्रमव शरि,  
छह सम्पत्त, अदित्तिरुग्गिरांगसांग, छह महानन, वज, गन्ध, रस, स्पर्श, निर्यगगति व  
मनुप्यगति प्रयोम्यानुपूर्वी, अगुरुम्बु, उपपाल, परपाल, उम्ह्याम, जानाव, उपोत्त, दा  
विहायागतिपां, व्रम, म्यावर, चादर, सुहुम, पयात्त, प्रत्यक, साधारण्यशर, मियर, वरियर,  
शुभ, अशुभ, सुमग, [ दुमग ] सुस्सर, दुस्सर, आदय, अनदिय, पणकति, अपयकति,  
निमाण, नीचगोत, ऊंचगान और पांच मनगय, इनक कैन वचक और कैन वचन्यक  
है ? ॥ ७३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

य मव पंचेन्निय निर्यय अपयात्त वचक है, अवचक नहीं है ॥ ७४ ॥

स्वातन्त्र्यविय मनुप्यायु मनुप्यगति पचिन्निय हीन्निय वीन्निय चतुरिन्निय



पचणाणावरणीयं षडसणावरणीयं मिच्छत्त सोलमकस्साय मयं दुगुत्ता-तिरिक्ख-मणु-  
स्साठ मोरात्थि-त्तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णं गध-रस फलस अगुरुअलहुअ उयघाद-पिमिण-पचंतरा-  
इयापं पिरतरो यधो, धुवधधिदादो एगसमएणं वधुवरमामावादो प । तिरिक्खगइ तिरिक्ख  
गइपाओमाणुपुब्बि-वीचागोदाणं सांतर-पिरंतरो यधो, तेउक्काइय धाउक्काइयइहिंतो पचिंदिय  
तिरिक्खअपन्जत्तएसुप्पण्णाणमंतोसुहुत्तकाठं गितर वधुवळमादो, अण्णत्थ सांतरत्तदसणादो ।  
अवसेसाय पयडीणं सान्तो यधो, एगसमएणं वधुवरमुवळमादो ।

एत्थं सच्चकम्माणं वादाठ पच्चया, वेउब्बिय-वेउब्बियमित्थ-इत्थि-गुरिसोरात्थि-मण  
वचिओगाणममावादो । अवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणमिगिदाळंम पच्चया, कम्मइयकय  
ओगेण सह चोइसण्णं पच्चयाणममावादा । संस सुगम ।

तिरिक्खाठ-तिरिक्खगइ-एइदिय-वीइदिय-तीईदिय-चउरिंदियआदि-तिरिक्खगइ-  
पाओमाणुपुब्बी मादाठज्जोव-धावर-सुहुम-माहारणाणि तिरिक्खगइसद्धं वळ्ळति । मणुस्साठ  
मणुसगइ-मणुसगइपाओमाणुपुब्बी-उप्पागोदाणि मणुसगइसद्धं वळ्ळति । कुदो ? सामावि  
यानो । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसद्धं वळ्ळति । मव्वायि पयडीणं वधम्म

पांच आनावरणीयं ना वृक्षमावरणीयं मिच्छात्थ माखइ कपाय मयं दुगुत्ता  
थियगापु मनुप्यायु बीइरिक्ख तेउस व कामय दारीर, वण गध रस स्पहा अगुरुअ  
उपपाठ निमाय ओं पांच अन्तराय इनअ मिरम्मर वण्य हाता है क्योंकि ये वृक्षवन्धी  
प्रकृतिपां हैं तथा एक समयमें इनका वण्यधिभ्राम भी नहीं होता । विषगति विषगति  
प्रायेणानुपूर्वी और नीकगोबका साम्तर-निरम्मर वण्य हाता है क्योंकि तेउकयमिक  
और बायुकायिक जीवोंमें वण्यधिय निर्येव अपयात्तयमें उत्पन्न हुए जीवोंक अन्तर्मुह  
करत तक इनका मिरम्मर वण्य पाया जाता है तथा अण्यन साम्तर वण्य वृक्षा  
जाता है । दोष प्रकृतिपोंका साम्तर वण्य हाता है क्योंकि, एक समयमें इनका वण्यध  
धिभ्राम पाया जाता है ।

यहां सब कमीक व्यालीम प्रत्यय हैं, क्योंकि वैद्वियक, वैद्वियकमिध वीषव  
पुरुषवेद औदारिककायसाग आर मम और आर वचन पात प्रत्ययोंका अभाव है । बिहापता  
यह है कि तिर्यगायु और मनुप्यायु इकनासीम प्रत्यय हात हैं क्योंकि, कामय काययागक  
साथ यहां चोइह प्रत्ययोंका अभाव है । शय प्रत्ययप्रकृपा सुगम है ।

तिर्यगायु तिर्यगति एकत्रिय द्वीत्रिय त्रीत्रिय चतुर्त्रिय जाति तिर्यगति  
प्रायाणानुपूर्वी माताय वधान स्वायर सूअ और नापारण ये प्रकृतिपां निर्येवमनिस  
संयुक्त बघती हैं । मनुप्यायु मनुप्यगति मनुप्यगतिप्रायाणानुपूर्वी और उप्पगाय  
प्रकृतिपां मनुप्यगतिसं संयुक्त बघती हैं । इसका कारण स्वभाव ही है । शय प्रकृतिपां  
तिर्यगति व मनुप्यगतिसे संयुक्त बघती हैं । सब प्रकृतिपोंक वण्यक निर्येव व्वामी हैं ।

तिरिक्ता सामी । बंधद्वय बंधविषद्वयार्थं च सुगम । पंचषाणावरणीय-चतुदसपावरणीय-  
मिच्छस-सोऽसकस्याय-मय दुग्ध-तेजा कम्महयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवटहुव ठवध्द-  
पिमिण-बंधतरायाणं चउप्पिहो बंधो, धुवबंधिच्छदो ।

मणुसगदीए मणुम मणुसपज्जत्त मणुसिणीसु ओघ णेयव्व जाव  
तित्थयरेसि । णवरि विसेसो, वेद्वणे अपच्चक्खाणावरणीय जधा  
पर्विदियतिरिक्खमगो ॥ ७५ ॥

एदस्सत्थो बुचरे— बोधमि जासि पयडीणं जे वधया पक्खिदा ते बंध तस्सि  
पयडीणं बंधया एव वि होति चि बोधमिदि उचं । सप्यद्वाणेषु बोधत्ते सपत्ते तस्मिसेहं  
वेद्वानियपयडीणं अपच्चक्खाणावरणीयस्स च पर्विदियतिरिक्खमगो चि पक्खिद । एदेव  
देसमासिएण सुद्धरथपक्खमं कस्सामो । त जहा— पंचषाणावरणीय चतुदसपावरणीय-  
क्कसिद्धि-उच्चतोद-बंधतरायाणं गुणगयबंधसामिसेण, वधदयाण पुण्य पच्छा बाधे  
विचारेण, सोदय-परोदय-सांतर-निंतरवधविचारयाण, बंधद्वय बंधविषद्वयार्थं च सान्नि-धादि

बन्धाब्धान और बन्धविमलस्थान सुगम हैं । पांच ज्ञानावरणीय साक्षात्मावरणीय मिच्छाव  
खेच्छा कयाय मय दुग्धप्ता तेजस व कर्मण शरीर, वर्णाश्रिक कार, अगुरुवटु उपपात  
निर्माण और पांच अन्तराय इनका चारों प्रकारका वण्ण होता है क्योंकि, सुबध्नी हैं ।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त एवं मनुष्यनिर्योमि तीर्त्तकर प्रकृति तक बोधके  
समान ज्ञान्ता चाहिये । विशेषता इतनी है कि हिस्मानिक प्रकृतियों और अमृत्यान्धाना-  
वरणीयकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यणोंके समान है ॥ ७५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— बोधमें जिन प्रकृतियोंके जो वण्णक कह गये हैं वे  
ही उन प्रकृतियोंके बन्धक यहाँ भी है इसीलिये सूत्रमें बोधके समान ऐसा कहा है ।  
साब स्थानोंमें बोधकेके प्राप्त होभएर उसके लियेकार्य हिस्थानिक प्रकृतियों और  
अमृत्यान्धानावरणीयकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यणोंके समान है ऐसा कहा है । इस  
वेद्यान्धर्क सूत्रसं सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञाना-  
वरणीय कार साक्षात्मावरणीय पञ्चकीर्ति जन्मोत्र और पांच अन्तराय इनका गुणस्थानगत  
बन्धस्वाग्रमित्थ बन्ध और उच्चयत्त पूर्व या पश्चात् ध्युच्छेद होनेका विचार, स्वेनप  
परोक्ष बन्धका विचार सात्तर निरन्तर बन्धका विचार, बन्धाब्धान और बन्धविमलस्थान

विचारेषु वि मोचादो णत्थि मेदो । अत्थत्थि त परूवेमो — मिन्माइडिस्स तेवण्ण पच्चया, सासणे अट्टेत्तालीस, सम्मागिन्मादिडिम्हि पाएत्तालीस, असजदसम्मारिडिम्हि षोदालीस, वेठत्थियदुगमावादो । मणुसिणीसु एव चेव । णवरि सव्वगुणद्वारेषु गुरिस-अवुंसयवेदा, असजदसम्माइडिम्हि ओरात्थियमिस्स कम्मइया, अप्पमत्ते आहारदुग णत्थि । मिन्माइद्वी चउ गइसञ्चत्त, सासणो तिगइसञ्चत्त, उवरिमा देवगइसञ्चत्त मणुसगइसञ्चत्त च बंधंति ।

विदाविदा-अयत्तपयत्ता-वीणगिदि-अणत्ताणुपंधिचउत्त-इरियवेद तिरिक्खाउ-मणुसाउ तिरिक्खगइ-मणुसगइ ओरात्थियसरीर-चउसअण-ओरात्थियसरीरबंगोवंग-पचसचइण-तिरिक्खगइ-मणुमगइपाओमाणुपुब्बि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुमग दुस्सर अणादेज्ज पीचागोदापि सि एदाओ एत्थ वेट्ठणपयडीओ । ओपयेट्ठणपयडीइतो जेण मणुस्साउ मणुसदुग-ओरात्थियदुग वज्जरिसइसचइणेहि अविआआ तेण पंधिदियतिरिक्खपेट्ठणमंगो सि जुत्तं ।

एत्थ वीणगिदितिय-इत्थियवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरात्थियसरीर-चउसअण-ओरात्थियसरीरबंगोवंग-पचसचइण-मणुमगइपाओमाणुपुब्बि-अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणा-देज्जाणं पुब्बं वंधो वोन्निण्णो पच्छ उदओ । अणत्ताणुपंधिचउत्तकम्मस वंधोदया समं बोध्ति-

तथा सादि आदि बन्धक विचारोंमें भी ओपसे कोई भेद नहीं है । जहां भेद है उस कहते हैं— मिथ्याइष्टिके तिर्येक प्रत्यय साक्षात्तनमें अकृतालीस सम्यग्मिथ्याइष्टिके ध्यालीस और असंपत्तसम्यग्इष्टि गुणस्थानमें अकृतालीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि यहां वैश्वप्रियक व वैश्वप्रियकमिथ्य प्रत्यय नहीं होते । मनुष्यगतियोंमें इसी प्रकार प्रत्यय होते हैं । विशेष इतना है कि सत्य गुणस्थानोंमें पुरुष व मनुष्यक वेद असंपत्तसम्यग्इष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिथ्य व कामज तथा अममत्त गुणस्थानमें आहारइष्टिक प्रत्यय नहीं होते । मिथ्याइष्टि चारों गतियोंमें संयुक्त साक्षात्तनसम्यग्इष्टि नरकगतिके बिना तीन गतियोंसंयुक्त और उपरिम जीव इवगतिते संयुक्त व मनुष्यगतिसंयुक्त बांधते हैं ।

मित्रानिद्रा प्रथमाप्रकृता स्थापनगृहि अमन्ताणुपंधिचउत्त, त्रीवेद तिर्यगायु, मनुष्यायु तिर्यग्गति मनुष्यगति औदारिकशरीर, चार संस्थान औदारिकशरीरपांगोंपांग पांच संहनन तिर्यग्गतिमायोग्यानुपूर्वी मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी उद्योत अमशस्त पिदायोगति दुर्मग दुस्सर, अमदेय और बीजस्थान के यहां इच्छानिक प्रकृतियों हैं । ओपइस्थान प्रकृतियासं किं यहां मनुष्यायु मनुष्यगति मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी औदारिकइष्टिक और अममत्तसंहनन प्रकृतियोंसं अधिक हैं अत एव वैश्वप्रिय तिर्यकोक्ती इच्छानिक प्रकृतियोंसं समान प्रकृति हैं ऐसा कहा है ।

यहां स्थानगृहित्रय त्रिवेद मनुष्यायु, मनुष्यगति औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरपांगोंपांग पांच संहनन मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी अमशस्तपिदायोगति दुर्मग दुस्सर और अमदेय इनका पूर्वमें बन्ध स्पष्टिष्ठ हाता है, पश्चात् उच्य । अमन्तायु

चंति, सासणे दोषमुच्छदं सपादो । तिरिक्खात् [ तिरिक्खगइ ] तिरिक्खगइपात्राणां पु-  
पुष्पी-उ-त्रोवाणं मनुस्सेसुदयामावादो बंधादयाण पुंस्वं पच्छा वोच्छेदविचारे णप्वि । नीचा-  
गोदस्स पुंस्वं बंधा पच्छ उदओ वोठिण्णो, बंध मासणमि णट्ठे मते पच्छ संजदामजदमि  
उदयवोच्छदं सपादो ।

मनुस्याउ मनुम्मगइओ सोदण्णेव बंधंति । तिरिक्खात्-तिरिक्खगइ-तिरिक्खग-  
पात्राणां पुष्पी-उ-त्रोवाणं परोदण्णेव, मनुस्सु एदामिसुदयामावादो । अबसंभाओ पपडीओ  
सोदय-सोदण्ण बंधंति, बद्धबादयत्ताओ कओ विमाइगइण उदयामावादा क वि  
तरबुदयदो ।

धीपसिद्धितिय अयंताणुबंधिचठन्त्थं निरतरो बंधो, धुबंधविच्छदो । [ मनुस्याउ ]  
तिरिक्खात्कार्यं वि निरतरो, एगयमएण बंधुवरमामावादो । मनुमगइपात्राणां पुष्पी-त्रोवाण-  
सरि-ओण्डिसरिअगोवगाणं मांतर भिंतरो, सप्परव सांतरस्स एदमि बंधम्म भाजदमि

बन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय जाना साथ व्युच्छिद्य होत है क्योंकि, सासणव  
शुल्लभ्यलमे धर्मोका व्युच्छद बेका जाता है । तिर्यगायु [ तिर्यग्गति ] तिर्यग्गतिमायेन्नायु-  
पूर्वी और उद्योत इनका बंधि मनुष्योंम उदय जाता नहीं है यना इनके बन्ध और उदयके  
पूर्व या पश्चात् व्युच्छद् होनेका यहाँ विचार नहीं है । नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध और  
पश्चात् उदय व्युच्छिद्य होता है क्योंकि, नासात्वनम बन्धक मए हो जानेपर पश्चात् संयत-  
संयतमें उदयका व्युच्छद् बेका जाता है ।

मनुष्यायु और मनुष्याणि लाइयस ही बंधनी है । तिर्यगायु तिर्यग्गति तिर्यग्गति  
मायारयायुपूर्वी और उद्योत मनुषियों पराजयसे ही बंधती है क्योंकि मनुष्योंम इनके  
उदयका समाप्त है । हाथ मनुषियों ओदय पराजयसे बंधनी है क्योंकि ये मनुष्योदयी  
हैं तथा किन्हीं विप्रहगमिम उदयका समाप्त है ता किन्हींका यहाँ ही उदय रहता है ।

स्वपानवृद्धिनय और अमम्यायुअन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, ये  
बुधरन्धी मनुषियों हैं । [ मनुष्यायु ] और तिर्यगायुका भी निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,  
एक समयमें इनके बन्धका विग्राम नहीं जाता । मनुष्यगतिमायेन्नायुपूर्वी, भीदारीकशरीर  
और भीदारीकशरीराणां पांशका सान्तर निरन्तर बन्ध जाता है क्योंकि इनके बन्धके  
सर्वत्र सान्तर होनेपर भी आन्तरात्मिक बंधायेम मनुष्योंमें उदय हुए भी बंध अन्तर्मुहूर्त

देवेहिंतो मणुस्सेसुप्पण्णाजमतोसुहुत्तकलं भिरतरतुवलमाथो । अवसेसामो सातर वन्तंति,  
एगसमएण बधुरमदसण्णथो ।

एदासि पच्चया दोसु वि गुणद्वगेसु तिरिक्खधेद्वाभियपयडिपच्चएहि तुत्थ । धीप-  
गिद्धितिय अवेताणुबधिचउकक च मिच्छाईही चउगाइसंहुत्तं, इतियेद दो वि भिरयगईए  
विणा तिगइसंहुत्तं, तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओम्माणुपुप्पी-उन्नेवाणि तिरिक्ख-  
गइसंहुत्तं, मणुस्साउ-मणुस्सगइ-मणुस्सगइपाओम्माणुपुप्पीओ मणुसगइसंहुत्तं, ओरास्मिसरीर-  
चउसउअण-ओरास्मिसरीरअंगोवेग-पंचसचइणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंहुत्तं बधससविहामगइ  
हुमग-दुस्सर मजादेअ-णीपागोदाणि देवगईए विणा मिच्छाईही तिगइसंहुत्तं, सासमो तिरिक्ख-  
मणुसगइसंहुत्तं वंधं चि ।

सम्वासि पयडीण बधसु मणुना ममी । बधद्याण वंधविषहृदमं सादि-आदिविचारो  
वि ओपतुत्थे ।

जिह-पयठाणं पुवंपच्छवधोदयवोन्नेद-सोदयपरोदय-सांतपितरं वंधद्यां वंध-  
विषहृदमं सादि आदिवंधपरिक्खा ओपतुत्थ । पच्चया मणुसगईए परुविहपच्चयतुत्थ ।  
मिच्छाईही चउगाइसंहुत्तं, सामनसम्मादिही तिगइसंहुत्तं, सेया देवगइसंहुत्तं वंधंति ।

काठ लक भिरस्तरता पायी जाती है । हाथ प्रकृतिवां सात्तर वंधती है क्योंकि, एक  
समयमें उनके बन्धका विग्रह देखा जाता है ।

इनके प्रत्यय दोनों ही गुणस्थानोंमें तिर्यगोक्षी मिस्थामिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके  
समान हैं । स्थानगृहित्रय और अनन्तानुबन्धितगुणको मिथ्यादृष्टि चारों गतिधोंसे  
संयुक्त स्वीकृतको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि दोनों ही मरकगतिके बिना तीन  
गतिधोंसे संयुक्त; तिर्यगाणु तिर्यगति तिर्यग्गणिप्राप्तोप्यानुपूर्वी और अघोतको तिर्यगतिसे  
संयुक्त; मनुप्याणु, मनुप्यगति और मनुप्यगतिप्राप्तोप्यानुपूर्वीको मनुप्यगतिसे संयुक्त;  
धीवारिकशरीर, चार संस्थान धीवारिकशरीररंगोपांग और पांच संज्ञन इनको  
तिर्यगति व मनुप्यगतिसे संयुक्त तथा अग्रशस्तविहायागति त्र्यंग बुस्वर, अनन्तेय  
और मीचगोरको मिथ्यादृष्टि वृत्तगतिके बिना तीन गतिधोंसे संयुक्त व सासादन  
सम्यग्दृष्टि तिर्यगति एवं मनुप्यगतिसे संयुक्त बांधत हैं । सब प्रकृतियोंके बन्धके मनुप्य  
स्वामी हैं । बन्धाच्छान बन्धविनष्टस्थान और सादि आदिकच विचार मी ओपके समान है ।

निद्रा और प्रकळाका पूर्व या पश्चात् इमवासा बन्धोदय-मुच्छेद स्वोदय परोदय  
बन्ध सात्तर निरन्तर बन्ध बन्धाच्छान बन्धविनष्टस्थान और सादि-आदि बन्धकी परीक्षा  
ओपक समान है । प्रत्यय मनुप्यगतिये को हूय प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों  
गतिधोंसे संयुक्त सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतिधोंसे संयुक्त और हाथ गुणस्थानवर्ती देव-



मनुस्सा सामी ।

सादावदनीयपरिकृता वि मूलेषतुल्य । जवरि पञ्चयमेश सामिमेवो ष नापम्यो ।  
मिष्मद्दृष्टी सामयसम्मादृष्टी सादावेदनीयं गिरयगणै विना तिगइसजुव, उवरिमा देवगइसंजुव  
बंथंति । एवं सम्मपदेसु पञ्चयमजुसमामिषमदो षेव । सां नि सुगमो । अन्वय मूलेष  
पेच्छिदूष ष केच्छि मेदो अरिष सि ष परुविन्मदे । जवरि पचिदिय-तस-वाटराव पयो  
मिच्छइद्विदि सोदभो सांतर-भिरंतो । मणुमपज्जत्तण्णु अप-जसवपो परोदभो । एवं  
मणुसिणीसु वि वत्तव्य । जवरि उवधाद-परधाद-उस्सपस-पतेयसरीराजमसंजइमम्माणिद्विदि  
सोदभो वंथो । पुरिस णकुमपवेदाव सम्भरव परोदभो । इणियेद्वग्गु सोदभो । सवगसेद्वग्गु  
तिरवपरस्स वत्ति वंथो, इणियेवेद्वग्गु सह सवगसेद्विमारोहणे समवामावादो ।

मणुसअपज्जत्ताण पचिदियतिरिक्खअपज्जत्तमगो ॥ ७६ ॥

एवं बन्धमात्रपरिहंस्यतां समावृत पञ्चिद्वय पचिदियतिरिक्खअपज्जत्तमगो' वि  
सुत । पञ्चवद्विषयण अवलंबयित्तमाने भेदा उवठम्भदे । तं जहा— पञ्चजातान्वरणीय-अवर्तसंग-

गतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्य स्वामी हैं ।

सातावेदनीयकी परीक्षा भी मूलेषक समान है । विशेष यह है कि प्रत्ययभेद व  
व्यामिश्र आकृति आदि । मिष्मादृष्टि और सामाद्वानसम्पगइद्वि सातावेदनीयको प्रत्य  
गतिक विना तीन गतियों संयुक्त तथा उपरिम जीव स्वगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।  
इस प्रकार सन पक्षोंमें प्रत्ययमयुक्त स्वामिगभेद ही है । यह भी सुगम है । अन्वय  
मूलेषकी अपेक्षा और कुछ भव नहीं है इसीछिये उसकी यहाँ प्रकृष्टता  
महीं की जाती । विशेषता यह है कि पंचमित्रिय वस और वाटरका वग्न मिष्मादृष्टि  
गुणस्वात्ममें स्वेत्य और सामान्य गिरण्तर होता है । मनुष्य पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका  
वग्न परोद्वसे होता है । इसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी कहना चाहिये । विशेषता  
केवल यह है कि उपपात परपात वग्नवास और प्रसेकादीर, इनका अक्षयतसम्पगइद्वि  
गुणस्वात्ममें स्वेत्य वग्न होता है । पुरुषवत् और अपुरुषकवेदका सर्वत्र परोद्वय वग्न  
होता है । श्रीवद्वका स्वेत्य वग्न होता है । अपर्याप्तोंमें तीर्थेकरका वग्न नहीं होता,  
क्योंकि तीर्थेके साथ अपर्याप्तकी वग्ननेही सम्भावना नहीं है ।

मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्रकृष्टता पंचेन्द्रिय तीर्थ व पर्याप्तोंके समान है ॥ ७६ ॥

यह वग्नमान प्रकृतियोंकी [१०९] संप्रदाय समानताकी अपेक्षा करके पंचेन्द्रिय  
तीर्थ व अपर्याप्तोंके समान है ऐसा कहा गया है । पर्याप्तार्थिक मयका भवबन्धन करने  
पर भेद पाया जाता है । यह इस प्रकार है— पाँच जामावरणीय नौ दशजावरणीय सत्ता

सेतसकस्याय णवणेकस्याय तिरिक्खाठ मणुम्साउ तिरिक्खगइ-मणुसगइ एइदिय-पईदिय-  
 तीईदिय-चठईदिय-पचिंदियजादि ओत्तालिय-तेजा कम्मइयमरीर छमअण ओत्तालियसरीरअंगो-  
 वंग-छमंयइण वण्ण-गघ-रस फस तिरिक्खगइ मणुसगइपाओमाणुपुष्ठी-मगुरुवटहुव-उवभाइ-  
 परघाइ-उस्सास-आइठउओव दोविहायगइ-तस-भावर-वावर सुहुम पञ्च-अपञ्च-पत्तेय साधारण  
 सरीर [धिरा-]धिर-सुहामुह सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेअ अणदेअ-असक्खिअ-अजसक्खि-  
 पिमिअ-णीपुच्चागोद-पचतरादयाणि सि एदाआ एत्थ पञ्चमाणपयहीओ । एत्थ वीणगिदि  
 तिय-इत्थि-सुरिमवेद-तिरिक्खाठ-तिरिक्खगइ-एईदिय-तीईदिय-सीइदिय-चठईदियबादि हुइ-  
 सअणविरहिदपचसअण अमपत्तसेवइवदिरित्तपचसबइण-तिरिक्खगइपाओमाणुपुष्ठी-परघादु-  
 स्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगदि भावर-सुहुम-पञ्च-साधारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेअ-  
 अजसक्खि-उच्चमोण उदयामावाओ वंधोदयाण मतामनाण सण्णिकसामावाओ पुणं पञ्च  
 वंधोदयवोच्छेदपरिक्खा ण कीरेदे । सेमपयहीण सि वचसेव एत्थ उदयस्स वोच्छेदामावाओ  
 ण कीरेदे ।

पचपाभावरणीय चतुदसपावरणीय-मिच्छस-वधुंमयवेद मणुस्साउ मणुसगइ-पंचिंदिय-  
 जादि-तेजा-कम्मइय-वण्णचठनक मगुरुवटहुव-नस-वावर मपञ्जस-धिराधिर-सुमासुम-दुभग-

य मसत्ता बहनीय मिष्यात्वं सोलह कपाय मी मोरुवाय तिर्यगाय, मनुष्याय,  
 तिर्यगानि मनुष्यगति एकैस्त्रिय द्वीस्त्रिय त्रीस्त्रिय चतुस्त्रिय य पचस्त्रिय  
 जाति बीजदिक तैजस य कर्मण शरीर, छह संस्थान औशारिकशरीरंगो  
 पांग छह संहनन वर्ण गन्ध रस स्पर्श तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मनुष्य  
 गतिप्रायोग्यानुपूर्वी मगुरुवटु, उपपात परपात उच्छ्वास आताप उघात दो  
 विहायोगतिपां अस स्थावर वावर, सुहम पर्याप्त अपर्याप्त प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर,  
 स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुभग दुर्भग सुस्वर, दुस्वर, भाव्य अभाव्य पञ्चकीर्ति अवश  
 कीर्ति निर्माण बीजगोत्र ऊँचगोत्र और पाँच अन्तराय ये यहाँ बण्यमान प्रकृतिपां हैं । इनमें  
 रूपामाशुत्रय कृत्वि पुरुषेव तिर्यगायु, तिर्यगति एकैस्त्रिय द्वीस्त्रिय त्रीस्त्रिय  
 चतुस्त्रियजाति दुष्पसंस्थानसं रहित पाँच संस्थान असमाप्तधुपात्रिकासहननको  
 छोड़कर शेष पाँच संहनन तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी परपात उच्छ्वास आताप उघात  
 दो विहायोगतिपां स्थावर, सुहम पर्याप्त साधारण सुभग सुस्वर दुस्वर, भाव्य  
 अभाव्य पञ्चकीर्ति और उच्छ्वागोत्र इनमें उच्छ्वागोत्र होनेसे विद्यमान बन्ध और अविद्यमान उद्यमे  
 समानता म होनेके कारण पूर्व या पश्चात् होनेवाले बन्धोदयसुच्छेदकी परीक्षा नहीं की  
 जाती है । शेष प्रकृतियोंके भी बन्धक समान यहाँ उद्यमका सुच्छेद न होनेसे उक्त परीक्षा  
 नहीं की जाती ।

पाँच कामावरणीय चार वर्जनावरणीय मिष्यात्वं मनुष्यकवेद मनुष्याय,  
 मनुष्यगति पंचस्त्रियजाति तैजस य कर्मण शरीर, वर्णादिक चार, मगुरुवटु, अस,

अनादय-अजस्ररुचि-विमिष-वीषागात्र-वंचतराद्याणं सप्तधा वंधा । निरा-पयन्म-मदमात्र-  
वीमकसाय-भोरातियमरीर-हुंडसत्रण-भारातियमरीरभंगावग-अमपत्तमकट्टमपडव-मशुमपद-  
पाभोम्याकुपुष्पि-उवपाद पथेयसरीराण सप्तद-परादण्य वंधो, अद्ववादयत्तादा, कसिं च विमद  
यदीय उदयामावादो एनिकत्मे विगगहर्दीग चच उदयत्तादा । अवमेसाभा पण्डण्यव  
वन्धेति ।

पचपापानरणीय-अवर्दमभावरणीय मिच्छत सांत्तमकसाय-अय-दुगुंछ-निरिस्त-मशु-  
स्माठ-भोरातिय-सेजा-कम्मपयमरीर वण्ण-वीष रस-कट्टम-अगुरुमत्तमुज-उवपाद-विमिष-वचन-  
इयाव निरंतरो वंधा, एव वंधेय वडवियादो । अवममाण सांत्तम वंधो, एगममण्य वचस्य  
विमदसणादो । [ नियगद-तियमगदपाभागाणुपुष्पी ] वीषागात्राव वंधस्य सांत्त-निरंतरो  
किंम उच्यते ? न, तेउ-वाठकप्याणं सत्तमपुडवर्णनर्याणं च मशुममुपसीग अमात्रो ।

वाट, अपर्याप्त स्थिर, अमिषा शुभ अशुभ दुर्मग अनादय अवशर्कति निर्माण  
नीचगात्र और पांच अन्तराय इनका स्वरूप बन्ध होता है । मित्रा प्रचक्षा सता व  
असता वेदनीय वीस कराय वीरारिकशरीर, हुण्डसंस्थान वीरारिकशरीरपायां  
असंमात्तसुपादिकासंहार मनुष्यगतिप्राप्तेयानुपुष्पी उपपात और प्रत्येकशरीर, इनका  
स्वरूप पठेयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अशुभालपी प्ररुतिपां हैं । तथा किन्हीं  
विमदपतिमें उद्व नहीं रहता और एकका विमदगतिमें ही उद्व रहता है । शप प्ररुतिपां  
पठेयसे ही बंधती हैं ।

मात्र कामावरणीय भी इहांमावरणीय मिच्छान्त्र सांत्तव कयाव अय दुगुंछा  
तियगापु मनुष्यापु, वीरारिक पैत्रस व कार्मज शरीर, वच वन्ध रस स्था अगुरुमत्त,  
उपपात निर्माण और पांच अन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, बन्धकी  
अपेक्षा ये प्ररुतिपां कुछ हैं । शप प्ररुतिपांका सांत्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयमें  
उनके बन्धका विधाय देखा जाता है ।

शुंछ—[ निर्बगति तियगातिप्राप्तेयानुपुष्पी और ] वीषागात्रके बन्धमें सांत्तर  
निरन्तरता क्यों नहीं कहते ?

समाधान—कहीं कहते क्योंकि तेजकाधिक व पाबुकाधिक जीवोंकी सातवीं  
पुमिषीक-भारकिर्येके सामान मनुष्योंमें उत्पत्तिका अभाव है ।

तिरिक्खमपञ्चत्तणं व पचया परूवेदप्पा । तिरिक्खाठ तिरिक्खगइ-परिंदिय-पीरिंदिय-सीरिंदिय-  
चउरिंदियजादि तिरिक्खगइपाभोग्गाणुपुब्बी-आदावुमेव-मावर-मुहुम-साहारणसरीरणि तिरिक्ख  
गइसंभुत्त वञ्जति । मणुस्साठ-मणुसगइपाभोग्गाणुपुब्बी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंभुत्त वञ्जति ।  
अवसेसामो पयदीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंभुत्तं वञ्जति । मणुस्सा मामी । बंधद्वयं बंध  
विषद्वयाण मादिमादिपरूवणा च परिंदियतिरिक्खअपञ्चत्तपरूवणाए सुत्थ ।

देवगदीए देवेषु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादासाद-  
धारसकसाय-पुरिमवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय-दुगुछा-मणुसगइ-  
परिंदियजादि ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-ओरा-  
लियसरीरअगोवग-चज्जरिमहसघढण-वण्ण-गध-रस-फास-मणुसाणु-  
पुब्बि-अगुरुअलहुव उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-  
वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिराथिर-सुहासुइ-सुमग-सुस्सर-आदेव-जस  
कित्ति अजमकित्ति णिमिण-उच्चागोद पंचतराइयाण को वधो को  
अवधो ? ॥ ७७ ॥

प्रत्ययैर्लो प्रत्ययान्तराणि नियम अपर्याप्तोक्तं समानं करना चाहिये । तिर्यगाणु, तिर्यगति  
परिंदिय, उरिंदिय, अरिंदिय, मणुपिंदिय जाति तिर्यगतिप्राप्याणुपूर्वी आताप  
उपोत्त स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरको तिर्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्याणु  
मनुष्यगतिप्राप्याणुपूर्वी और उच्चागोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतिपैर्लो  
तिर्यगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्य स्वामी है । बन्धाज्जाव बन्धविनष्टस्यान  
और छादि मादिर्षि प्रकृत्या पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तोक्तं प्रत्ययान्तराणि समानं है ।

देवगतिमें देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, कह इशनावरणीय, साता व असाता वेदनीय,  
भरह कयाम, पुरुषवेद, हाम्य, रति, अरति, शोक, भय, अशुप्पा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति,  
औदारिक, तेजस व क्रमण शरीर, समचसुरससंस्थान, औदारिकशरीरागोपांग, वज्रपर्मसंहनन,  
वज, गच, रय, स्पशे, मनुष्यगतिप्राप्याणुपूर्वी, अशुरुत्तु, उपपात, परपात, उच्छवास, प्रशस्त  
विहायोगति, तस, वादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुयय, सुस्वर,  
आदेय, यशकर्मि, अयशकर्मि, निमाण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका क्षेत्र पन्धक  
और क्षेत्र अनन्यक है । ॥ ७७ ॥

सुमममेवं ।

मिच्छाद्विष्टुडि जाव अमजदसम्माद्विष्टी वधा । एदे वधा,  
अवधा णत्ति ॥ ७८ ॥

देसामासियसुत्तमर्थ, तणयण सङ्गद्यपरुषण कस्मासो— मनुसमइ आगल्लि  
सति-भमोवर्ग वज्जिमहसपण-अणुमगाइपाआग्गाणुपुष्पी अजसकिर्णसुत्रयाभावाद्दो वधो-  
दयाण पुण पण्ण वोप्पेदपरिक्खा ण करिदे । न मेमाणे पि, वधस्मर उदयम्प  
वोप्पेदभावाद्दो ।

१) पंचनामावरणीय—चठईसणावरणीय पीरिदियआदि—तेजा-कम्मदयमरि-वज्ज-गीधरम  
पास-अणुसदल्लुअ-तस-पाइर-प-जस-चिरापिर-सुमसुम-सुमग आदेअ जमस्सिदि-मिम्मि  
उज्जमोद-पंचतरइयाण मोदणभव वधो । मिह-मयत्ता सादासाह-वतरमकसाय पुरिसवइ-इस्स  
रदि-अरदि-सेना मय दुग्गुअणं सादय-मोदण वधो, अदुवोदयताद्दो । समचउरससंअण-

यह एक सुगम है ।

मिष्पाद्विष्टि लेकर अमयतसम्पददि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं  
हैं ॥ ७८ ॥

यह एक वेशामर्शक है इसलिये इससे सुचित मयकी प्रकृषा करते हैं— मनुष्य  
गति औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपांग वज्जमसेहनन मनुष्यगतिमायेभवाडु  
पूर्वी और भयशकीर्ति इनके उद्भवका अभाव होनसे बन्ध और उद्भवक पूर या पछाद  
व्युत्पन्न होमकी परीक्षा नहीं की जाती है । शेष प्रकृतियोंकी भी यह परीक्षा नहीं की जाती  
क्योंकि, बन्धक समान उनके उद्भवके व्युत्पन्न अभाव है ।

पाँच वेशामवरणीय बार वेशामवरणीय पंचमित्रिण जाति तज्जस व कम्मम शरीर  
वर्ण गणव रस स्परी अणुरससु जम वाहर पर्याप्त स्थिर, अस्थिर सुम अणुम  
सुमग मत्तप पश्याकीर्ति निमाणा उद्यगाय और पाँच अमतरव इनका स्वात्मपक्ष ही  
बन्ध होता है । मित्रा प्रथमा क्षमा व असाता वज्जीन बारह कपाय पुरुषवद हास्य  
रति जल्लि शारु, मय और सुगुग्गा इनका स्वत्व परात्मपक्ष बन्ध होता है क्योंकि,  
वे अणुबोल्पी प्रकृतियाँ हैं । समचउरससंस्थान प्रत्येकशरीर आर उपवत्तवा स्वाद्व

१ शरीर औदारिकशरीरप्रेमन इति वाक्य ।

२ इति अदुवो अदुवोदयताद्दो इति वाक्य ।

पचेयसरीर उवघाद्याण सोदय-परोदणण षघो, विग्गहगदीए उदयाभावादो । परघादुस्सासं  
पसत्थविहायगदि-सुस्सरणं सोदय परोदणण षघो, अपन्जतकाले उवयामावे वि षघदंसणादो ।  
जवरि सम्मामिच्छाद्विस्म एवामिं सोदण षघो । मणुसुगइ ओरात्थिसरीर ओरात्थिसरीरभंगो-  
वंग-व अरिसइसघडण मणुस्साणुपुञ्जी-अजसकितीण परोदणण षघो, तथेदेसिमुदयविरोहादा ।

पंचपाणावरणीय-छदंसणावरणीय-यारसकसाय मय दुगुछ ओरात्थि तेजा-कम्मइय  
सरीर बण गघ-रस-फस्स-अगुरुमल्लुअ उवघाद उस्सास-वाद्द-पन्जत-पचेयसरीर भिमिण-पचं  
वराइयापं मिरंतरो षघो, देवगदीए षघविरोहामावादो । सात्तासाद-इस्स-दि-अरदि-सोत-  
विराविरि-सुमासुम-असकितीण सांतरो षघो, एगसमएण पंचविरामुवळमादो । पुरिसवेद-सम-  
अउरसमअण-अज्जरिसइसघडण-पसत्थविहायगइ-सुमग-सुस्सर-आदेअुअवागोणं मिच्छाद्वि-  
सासजसम्माइदीसु सांतरो षघो, एगसमएण पंचविरामदंसणादो । सम्मामिच्छाद्वि-असजद-  
सम्माइदीसु भिरतरो, तस्य पडिवक्खपयडीण वचामागादो । पंचिदियजादि-मणुस्साइ  
मणुस्साणुपुञ्जी-ओरात्थिसरीरअगोवंग-त्तसापं मिच्छाद्वि-सांत-भिरतरो । सासजसम्मादिद्वि-  
सम्मामिच्छादिद्वि-असजदसम्मादिदीसु भिरतरो, पडिवक्खपयडीण वचामागादो । जवरि

परोदयसे वण्य होता है क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है । परघात,  
उच्छ्वास, प्रान्स्थविहायोगति और सुम्बर इनका स्वोदय परोदयसे वण्य होता है  
क्योंकि अथवात्त-कालम इनका उदयका अभाव होनेपर भी वण्य देखा जाता है । विहायता  
यह है कि सव्यगमिण्यादिहिक इनका स्वादयस वण्य होता है । मनुष्यगति औदारिकशरीर,  
औदारिकशरीरतांगोपांग अज्जरमसहजन मनुष्यानुपूर्वी और अथवात्तगति इनका परोदयसे  
ही वण्य होता है क्योंकि वेचोम इनके उदयका विरोध है ।

पांच शानावरणीय छह शानावरणीय वाद्द कपाय मय दुगुप्सा औदारिक,  
तेजस्य व कर्मण दारीर वणं गण्य रस, स्पष्ट अगुरुमय उपघात उच्छ्वास वाद्द, पचांत्त  
प्रत्येकशरीर निर्माण और पांच अन्तराय इनका निरन्तर वण्य होता है क्योंकि, वेच  
गतिमें इनका निरन्तर वण्यका विरोध नहीं है । सात्ता व असाता वेदकीय दान्य रति, अरति  
शोक स्थिर कम्पिअ, गुम अनुम और पशनीति इनका साम्तर वण्य होता है क्योंकि,  
एक समयमें इनका वण्यका विधाम पाया जाता है । पुण्यथइ समयतुगन्धमेस्थान यज्जयम  
सहजन प्रज्जस्तविहायगति सुमग सुस्सर, आदय आर उअगाय इनका मिण्यादि व  
सामादममअयगदि गुणस्थानमें साम्तर वण्य होता है क्योंकि, एक समयमें इनका वण्यका  
विधाम देखा जाता है । सव्यगमिण्यादि और अमपतनम्यगदि गुणस्थानमें निरन्तर  
वण्य होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपत्त प्रकृतिपोक वण्यका अभाव है । पंचन्द्रिय ज्ञानि,  
मनुष्यगति मनुष्यानुपूर्वी औदारिकशरीरतांगोपांग और अथ इनका मिण्यादि  
गुणस्थानमें साम्तर निरन्तर वण्य होता है । सामादममअयगदि, सव्यगमिण्यादि और  
असंयतसम्यगदि गुणस्थानमें इनका निरन्तर वण्य होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपत्त  
प्रकृतिपोक वण्यका अभाव है । विहाय इतना है कि मनुष्यगति सात्ताम गुणस्थानमें



गिराणिदा-पयलापयला थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-  
माया-लोम इत्थिवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-घउसठाण चउसघढण-  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्वी-उब्बोव-अप्पसत्यविहायगइ दुभग दुस्सर-  
अणादेज्ज-णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ७९ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेमा  
अवधा ॥ ८० ॥

अन्ताणुवविषडक्कस्स बंधोदया सम बोच्छिन्नज्जि, सासणम्मि उमयामावदसाभादो ।  
इत्थिवेदस्स पुब्बं बंधो पक्ख उदबो बोच्छिन्नज्जि, सासणम्मि बोच्छिज्जपचित्थिवेदस्स  
असंजदसम्मादिह्मि उदयबोप्पेददसपादो । अचधा, देवगदीए बंधो चैव बोच्छिन्नज्जि  
पोदबो, तदुदयविरोहिणुण्हाणामावादो । एवमप्यपदमप्यरथ' वि जोवेयम् । धीणमिद्धितिय

निद्रानिद्रा, प्रचयप्रचय, स्थानगृहि, अनन्तानुपन्धा कोष, मान, माया, ज्ञेय,  
संवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सम्भान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोम्यानुपूर्वी, उद्योत,  
अप्रमत्तविहायोगति, दुर्मग, दुस्सर, अनादेय और नीचगात्र, इनका कौन पन्चक और कौन  
अपन्चक है ? ॥ ७९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिप्पाएटि और सासादनसम्पगटि पन्चक ई । ये पन्चक ई, शेष देव अपन्चक  
है ॥ ८० ॥

अमस्तानुबन्धितानुप्यज्ज बन्ध और उदय दानों एक साथ व्युत्पिठय हात है, क्योंकि  
सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव होता जाता है । अविदक्य पूर्वमें बन्ध और  
पद्मात् उदय व्युत्पिठय होता है क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें अविदके बन्धके व्युत्पिठय  
हा जानेपर असंपतसम्पगटि गुणस्थानमें उदयक्य व्युत्पिठय होता जाता है । यद्यपि,  
देवगतिमें बन्ध ही व्युत्पिठय होता है उदय नहीं । क्योंकि, देवगतिमें उक्त प्रकृतियोंका  
उदयके विरोधी गुणस्थानोंका अभाव है । इस अर्थपरवही मन्थन भी योजना करना चाहिये ।



तिरिक्छाउ-तिरिक्छगइ-चउसंछण-चउमवडण-तिरिक्छगइपाओभापुपुष्पी-उज्जोइ-अपसत्त-  
विहायगइ-हुमम-हुस्सर-अणारेज्ज-वीणमोदणं धेवेसुदयाभावोदो वंघोत्तयानं पुंनं पच्छ  
वोच्छेदपरिक्खा ॥ करिरे ।

अनेतापुनंविचउत्तिकरिबेदेश सोदय-परोइएण, अवसेसामो पयडीओ परोइएण  
वन्ति । धीमिस्सितिय-अनेतापुनंविचउत्तिक निरिक्छाउभाण गिरत्ते वंघो । अक्केस्यं  
सांतो, एमसमएण वंघुवरुणत्तमाओ । कयापि दो तिग्गिममययादिकत्तज्जिद्वयवईममाओ  
सांत-भिरंतरवया किम्भ उच्छेदे ? य, एदासु पयडीसु गिरत्तरवंचवियमाभावो । एदासिं  
पयडीं पच्छया देवगदचउत्तुक्कपयडिपच्छयत्तुम्भ । अरि तिरिक्छाउअस्स पुम्भित्तपचसु  
वेत्तमियमिस्स कम्मइयप चया अवसेदम्भा । तिरिक्छाउ-तिरिक्छगइ-तिरिक्छगइपाओभापु  
पुष्पी-उज्जोवाणि तिरिक्छगइसत्तुत्तं, अयमंसाओ पयडीओ मिग्गइद्वी साममसम्माइद्वी तिरिक्छ  
मनुसगइसत्तुत्त वंघंति, अवरोहोदो । दया सामी । वंघत्तणं वंघविचउत्तुत्तं च सुगम । वीच-

स्वाम्यपुच्छिण्य तियमायु तिर्यगाति याग संस्थान चार संहनन तिर्यगातिमायायापुपुष्पी,  
उद्योत अमशस्तविहायागति पुर्मम पुन्नर अनन्तेय धीर वीचयोम इनका वेवोम  
उदयामाय हामं वन्ध वीर उदयक पूर्व या पञ्चान व्युत्तेज्ज होमेकी परीसा नहीं की  
जाती ।

अनन्तानुवन्धिबन्धुत्त वीर श्रीवेद व्धोवच परोइएणसे तथा हाप प्रकृतिपां परो-  
इएणसे ही वंघनी । स्वाम्यपुच्छिण्य अनन्तानुवन्धिबन्धुत्त वीर तिर्यगायुक्त निरन्तर वन्ध  
होता है । हाप प्रकृतियाका भान्तर वन्ध होता है क्योंकि, एक समयमें उनका वन्धका  
विधाम पाया जाता है ।

श्रुत्य—कराचित हा तीन समयानि कालस संबद्ध वन्धक दृष्ट आनेसे  
समन्तर निरन्तर वन्ध क्यों नहीं कहन ?

समाधान—वहाँ कहन क्योंकि इन प्रकृतियाम निरन्तर वन्धके विषयका  
अभाव है ।

इन प्रकृतियोंक प्रत्यय वेद्यमानिकी अनुस्थानिक प्रकृतियोंक प्रत्ययोंक समान हैं ।  
विचारता केवम यह है कि नियगायुक्त पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैशिष्ट्यमिश्र धीर कर्मय प्रत्ययोंको  
बम करना चाहिये । तिर्यगायु तिर्यगानि तिर्यगतिमायायापुपुष्पी धीर उद्यात इनको तिर्य  
गमनिम संयुक्त तथा एत प्रकृतिय को निष्पादति च सासाइजमभ्यगदति तिर्यगानि धीर  
मनुष्यगतिम संयुक्त बोधने हैं क्योंकि इनमें कोई विरोध नहीं है । दृष्ट राजनी है । वन्धायाम

मिदित्थिय-अणत्ताणुपविषउत्तकणं' मिच्छाद्विद्दि चउत्तविद्दो वंधो । सत्तणे दुविद्दो, अणादि  
धुवत्तामावादो । अवमेमाणं पयईत्तं वंधो सादि-अद्दुवो, अद्दुववधित्तादो ।

मिच्छत्त णवुसयवेद एहदियजादि-हुइसठाण-असपत्तसेवट्टसघ-  
ढण-आदाव-थावरणामाण को वंधो को अवंधो ? ॥ ८१ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विद्दी वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा ॥ ८२ ॥

एहस्स अण्यो वुबेदे — मिच्छत्तम्म पधेत्तया मम वाच्छिजंति, मिच्छाद्विद्दि वध  
तदुमपमुपत्तमिय उवरी तदणुवत्तमादा । णवुसयवेद एहदियजादि-हुइसठाण असपत्तसेवट्टसप  
ढण आदाव थावरणमेत्थुदयामावादो वंधोदयाण पुत्तापुत्तवोच्छदपरिक्खा ण कीरेदे । मिच्छत्तं  
सादएण, अण्णामो पयईवो पोट्टएणव वच्छति, तहोवत्तमादा । मिच्छत्तं गिरत्तं वच्छइ,  
धुववधित्तादो । अवराओ सान्तं वच्छति, एणसुमण्ण वधुवरमुत्तमादो । एणमिं पक्कया

धीर वन्धविनष्टस्थान सुगम है । स्थानसुखिजय धीर मनस्तानुपविषत्तुत्तकण मिच्छाद्वि  
गुणस्थानमें वारो प्रकारका वन्ध होता है । सामान्य गुणस्थानमें वा प्रकारका वन्ध होता  
है क्योंकि, वहाँ अनारि धार धुव वच्छका समाप्त है । धार ग्रहणितोकर वन्ध नादि व  
अग्रुप होता है क्योंकि वे अग्रुपवन्धी प्रवृत्तियाँ हैं ।

मिथ्यात्व, नष्टमरुत, एकत्रिय ज्ञानि, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तमृषात्मिकमंहनन,  
आनाप और त्याग नामकमौका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ ८१ ॥

यह सत्य सुगम है ।

मिथ्याद्वि वन्धक है । य वन्धक है, गुण दव अवधक है ॥ ८२ ॥

इसका अर्थ बहुत है — मिथ्यात्वका वन्ध धार उद्य वानो नागमें व्युत्पन्न  
होता है क्योंकि, मिथ्याद्वि गुणस्थानमें ही मिथ्यात्वका वन्ध धार उद्य वानो पाय जान  
है ऊपर व वहाँ पाय जान । णवुसयवेद वच्छिजय ज्ञानि हुण्डमस्थान असप्राप्तमृषादि  
मंहनन आनाप आर त्याग एव उद्यका वहाँ धमाव होमन वन्ध धीर उद्यका पूर  
या पक्कान व्युत्पन्नकी परीक्षा नहीं की जाती । मिथ्यात्व प्रवृत्ति व्यावहार्य धीर अन्य  
प्रवृत्तियों परादपर ही वधती है क्योंकि, पैसा पाया जाता है । मिथ्यात्व प्रवृत्ति निरस्त  
वधती है क्योंकि, धुववन्धी है । अन्य प्रवृत्तियाँ शास्त्र वधती है क्योंकि, एक समयमें

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ चउमंदाय-चउसपइण-तिरिक्खगइपाभोग्गानुपुष्पी-उ-ओव वप्पसत्त-  
विहायगइ हुमय-दुस्सर ज्जादेज्ज-भीजागोदार्णं देवेसुदयामावाणे वंभोत्तसां पुरुं पप्प  
योप्पेपरिक्खा व वरिदे ।

अर्णत्तापुवंविचउत्तिकस्वियेदा सोत्तय-परोदण, अवसेसाओ पयडीओ परोदणैव  
कम्भति । पीप्पगिदिसिय-अर्णत्तापुवंविचउत्तिक तिरिक्खाउभाण पिरंत्ता वंभो । अवसेसां  
सांत्ते, पयसमएव वंभुवरमुवत्तमाओ । कयावि दो तिग्गिमममादिकत्तपडिक्खवचंसंसाओ  
सांत्त-पिरंत्तवंभो किम्भ ठप्पदे ? न, एदासु पयडीसु पिरंत्तवंभविचमामावाओ । एरासि  
पयडीयं पप्पया देवगइचउत्तुक्कयपडिपप्पयत्तुत्तम् । वरि तिरिक्खाउभस्स पुप्पित्तपप्पयत्तु  
वेत्तविचमिस्स कम्मइयपप्पया अवसेइप्पा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोग्गानु  
पुष्पी-उ-ओवावि तिरिक्खपइसंत्तं, अवसेपाओ पयडीओ मिप्पइइही साम्भसम्माइही तिरिक्ख  
मत्तुसगइसत्तं वंभति, वविरोइओ । देवा समी । वंभदायं वंभविणइत्ताय य सुगमं । पीप्-

स्वानुपुप्पिय तिर्यंगासु, तिर्यग्गति याग संस्थान और संहयन तिर्यग्गतिप्राप्त्यानुपूर्वी,  
उद्योत अग्रहास्तविहायोगति तुर्यग बुद्धर अमात्य और नीचगोन इनका देवोंमें  
उद्गामाया हमसे वन्द्य और उद्गयक पूर्व या पश्चात् प्युक्तेज्ज होलकी परीक्षा नहीं की  
जाती ।

अनन्तानुपुप्पियवत्तुक्क और लीचेइ स्तोत्रय-परोदयसे तथा छाप प्रकृतिवों परे-  
इचसे ही वंभती है । स्वानुपुप्पिय अनन्तानुपुप्पियवत्तुक्क और तिर्यंगासुका निरन्तर वन्द्य  
होता है । छाप प्रकृतिवोंका सामान्य वन्द्य होता है क्योंकि एक समयमें उनके वन्द्यका  
विश्राम पाना जाता है ।

ईश्वर—कदाचित् दो तीन समयोंके कामसे संवत् वन्द्यके देखे जमेसे  
साप्ताह निरन्तर वन्द्य क्यों नहीं कहते ?

समाधान—वहाँ कहने क्योंकि इन प्रकृतियोंमें निरन्तर वन्द्यके विषयका  
अभाव है ।

इस प्रकृतिवाक्य प्रत्यय देवगतिवों वत्तुस्थानिक प्रकृतिवाक्य प्रत्ययोंके समान है ।  
विशेषता केवक यह है कि तिर्यंगासुके पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैकिकिकमिध और काम्य प्रत्ययोंको  
कम करना चाहिये । तिर्यंगासु तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत इनका तिर्य-  
ग्गतिसे संयुक्त तथा छाप प्रकृतिवोंको मिप्पाइइ व सासात्तसम्भगइ तिर्यग्गति और  
मत्तुप्ययतिसे संयुक्त चाहते हैं क्योंकि इसमें कोई बिरोध नहीं है । देव स्थामी है । वन्द्यावतल

गिदितिय-अणत्तापुर्वधिचउक्कर्म' मिच्छाइद्विहि चठम्विहो वधो । सासणे दुविहो, अणादि  
वुवत्तामावाहो । अयमेमाण पयडीणं वधा सादि-अद्दुवा, अद्दुवधधित्थणे ।

मिच्छत्त णवुमयवेद-एइदियजादि-हुहसठाण-अमपत्तसेवट्टसघ-  
ढण-आत्ताव-यावरणामाण को वधो को अवधो ? ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइद्वी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ८२ ॥

एदम्सु अन्धो बुवेद — मिच्छत्तम्सु वधोदया सुम वाच्छिज्जनि, मिच्छाइद्विहि वध  
तदुमयमुवर्त्तमि उन्निर तदपुवत्तमाणा । णवुमयवद गइणियजादि-हुहसठाण अमपत्तसेवट्टमं  
इय भादव यावरणमेत्थुदयामावाणे वधात्थानं पुच्चापुम्बवोच्छट्ठपरिकत्ता व करिदे । मिच्छत्तं  
मादएण, अण्णाआ पयडीओ पगेइएणव पज्जनि, तहोवर्त्तमादा । मिच्छत्त गिंत्तर वज्जइ,  
वुवधधित्थणा । अवराओ मानं पज्जति, एगसुमाण पवुवरसुवर्त्तमादा । एदमि पन्धया

धीर वधधित्तप्रस्थान सुगम है । स्थानगुहियय भार वनस्तानुवधधित्तमुक्कत्ता मिध्यादष्टि  
गुणस्थानमें वार्त्ता प्रचारका वध होता है । सामान्य गुणस्थानमें ही प्रकारका वध होता  
है क्योंकि वही घनादि धीर प्रव वधका अभाव है । शय प्रवृत्तिपौका वध नादि व  
अप्रव होता है क्योंकि व अग्रवधधी प्रवृत्तिपौ है ।

मिध्यात्व, नपुंसकवद, एकत्रिय जानि, हुण्डसुस्थान, अमप्राप्तवृत्तिकामहनन,  
आताप और स्थान नामकमौका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ ८१ ॥

वद सख सुगम है ।

मिध्यादष्टि वधक है । य वधक है, शय वध अवधक है ॥ ८२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— मिध्यात्वका वध और उद्व वधों नाथमें व्युत्पन्न  
होता है क्योंकि, मिध्यादष्टि गुणस्थानमें ही मिध्यात्वका वध और उद्व वधों पाव जान  
है ऊपर व वही पाव जान । नपुंसकवद एकत्रिय जानि हुण्डसुस्थान अमप्राप्तवृत्तिकाम-  
हनन नामक धीर स्थान इतक उद्वका वही अभाव होना वध और उद्वक पूव  
या वधान व्युत्पन्नकी परीक्षा नहीं की जाती । मिध्यात्व प्रवृत्ति स्थानयस धीर वध  
प्रवृत्तिपौ वदवत्त ही वधनी है क्योंकि, वहा पावा जाता है । मिध्यात्व प्रवृत्ति निरन्तर  
वधनी है क्योंकि, पुववधधी है । अग्र प्रवृत्तिपौ वदवत्त वधनी है क्योंकि, एक समयमें

देवचतुष्टायपयद्विपञ्चयतुष्टा । मिच्छत-वडसववेद-हुंडसंठण-असंपत्तेसेवहुंसंपडजापि तिरिक्ख-  
मणुसगाइसंठण, एइंदियमादि आदाय-बावराणि तिरिक्खगाइसंठणं वञ्छति, सामाविमादो ।  
देवा समी । वंनञ्चापं वंनविनहुड्डणं च सुगमं । मिच्छतस्स वधो चउत्तिहो, पुववंनिच्छरो ।  
सेमाय सादि भदुवो, वदुववंपिचावो ।

मणुस्साठवस्स को वधो को अवधो ? ॥ ८३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी अमजदसम्माहट्ठी वधा । एदे  
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ८४ ॥

एदस्स भत्तो दुष्पदे— इवेसु मणुस्साठवस्स उइयायावाइ वधादयाण पुज्जावर  
वोप्पेइपरिक्खा नत्थि । परोदण वंनंति, मणुस्साठवस्स इवेसु उदयमानविरोइण ।  
मिंतरो वंधो, एगसमएण वंधुकरमानावाइ । मिच्छदिहि-सासणसम्मादिहि-असममम्मा  
दिहिं वड्डकमेण पंचास पंचेत्तासि [एहेत्तासि] पण्णया, सम-सयोपपण्णसु बोअत्तिव-

उतक्क वण्णविधाय पाप्पा जाता है । इन मण्डतिर्वेदि मत्स्यक देवोंकी वतुस्थानिक मण्डतिर्वेदि  
मत्स्यकोंके समान हैं । मिष्प्याण्ण मणुसकक वड्डसंठण और अमंमपत्तसुपाडिक्कसंठण  
च तिर्यमाति च मणुप्यगतिच संयुक्त तथा एकेभिद्वयमासि आताप और स्वावर, ये तिर्य  
गतिच संयुक्त बंधती हैं क्योंकि, वना स्वमाव है । देव स्वामी हैं । वण्णप्याण्ण और वण्ण-  
विनहुड्डण सुगम है । मिष्प्याण्ण वण्ण वारा मकार होता है क्योंकि, वह मुचवरणी है ।  
शर मण्डतिर्वेदि वण्ण साति च मणुव होता है क्योंकि, ये मणुवरणी हैं ।

मनुप्यायुक्क कोन वन्धक भौत कोन अवन्धक है ? ॥ ८३ ॥

वह स्व सुगम है ।

मिष्पाएहि, सासाणसम्यग्गहि और असंयतसम्यग्गहि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, सेव  
देव वधवन्धक हैं ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवोंमें मनुप्यायुक्क वध्व व हासं पूर्व या पश्चात्  
कण्ठोदयमुत्प्रेक्ष्य परीक्षा नहीं है । मनुप्यायुक्के परोदयमे बांधते हैं क्योंकि देवोंमें  
मनुप्यायुक्के उदयका विरोध है । वण्ण वसका निरन्तर होता है क्योंकि एक समयमें  
वण्णविधायका समान है । मिष्पाएहि, सासाणसम्यग्गहि और असंयतसम्यग्गहि  
देवोंक पयाक्रममे पंचास पिंतासीस [बीरइकतासीस] मत्स्य इति हैं । क्योंकि, अपने अपने  
शोकमत्स्योंमें वहां भीतिरिक्क, भीतिरिक्कमिक्क धेतिरिक्कमिक्क कासीच और मणुसकमेव

जेतात्थियमित्तयेठभियमित्तस्म-कम्मइय-वउंमयेदपञ्चयाणमभावाओ । मणुसगइमंहुत्तं । देवा  
सम्मि । वंधदाम्म वंधामावड्डाण प सुगमं । सम्मामिच्छत्तगुणेण जीवा किण्ण मरति ? तय्याठमस्म  
पभामावाओ । मा वंधउःआठम, पुण्यमण्णगुणड्डाणहि आउंयं यधिय पञ्छ सम्मामिच्छत्तं  
पडिविक्खिय तेज गुणेज जूण कउं करेदि ? ज, जेण गुणेजाउंयंओ समवत्ति तंजेव गुणेज  
मरदि, ज अण्णगुणेजेति परमगुरुखदेसाओ । ज उवसामगेहि अजेयंतो, सम्मत्तगुणेज आउम  
वधविरेहिणा चित्तरणे विरेहाभावाओ । सादि अद्दुओ यओ, अद्दुवर्पभित्ताओ ।

**तित्ययरणामकम्मस्स को वधो को अवधो ? ॥ ८५ ॥**

सुगम ।

**असजदमम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा ॥ ८६ ॥**

सत्ययोंका अभाव है । मनुष्यापुत्र अमुप्यगतिन संशुक्त बांधत है । वय स्वामी हैं ।  
वध्याचान और वधविनष्टस्यान सुगम है ।

शुक्र—सम्यग्निध्यात्वं गुणस्थानक साथ जीव क्यों नहीं मरत ?

समाधान—यूँकि इस गुणस्थानमें आयुक्त वधका अभाव है अतएव जीव यहाँ  
मरत नहीं करत ।

शुक्र—यहाँ आयुवध भल ही न हा फिर भी पहिल अन्य गुणस्थानमें आयुको  
बांधकर और पश्चात् सम्यग्निध्यात्वं प्राप्तकर उस गुणस्थानक साथ तो निश्चयतः मरण  
कर सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जिस गुणस्थानक साथ आयुवध सम्भव है उसी  
गुणस्थानक साथ जीव मरता है अन्य गुणस्थानक साथ नहीं वरन् परमगुरुत्व उपदेश है ।

इस नियममें उपशामकोंक साथ अमिकाभित्तक रूप भी सम्भव नहीं है क्योंकि,  
आयुवधके अधिकोपी सम्यक्त्वगुणक साथ निकलसमें कोई विरोध नहीं है । ( वक्तो  
जीवस्थान-वृत्तिका ९, सूत्र १३० की टीका ) ।

मनुष्यापुत्र वध सादि न अमुक्त होता है क्योंकि, वह अमुक्तवर्णी है ।

तीर्थकर नामकमका धीन वधक और धीन अवधक है ? ॥ ८६ ॥

यह सुख सुगम है ।

अमंपतसम्पगट्ठि देव वधक है । ये वधक हैं, देव देव अवधक हैं ॥ ८६ ॥

१ अतिउ आउमवधिय इति वाउ ।

२ अन्यत्तां वधेत्तां । ता वधेत्तां तुवन्तीन् इति वाउ ।

देवचतुष्टयमपविष्ययत्नात् । मिच्छत-जडस्यवेद-कुंडसंशय-वसपत्तेवहसंशयव्यापि तिरिक्छ-  
मनुसंगसंशय, परंदिपञ्चदि-आशय-वापराणि तिरिक्छगहसंशय वञ्चति, स्याद्विषयो ।  
देवा स्यामी । वंशद्वयं वंशविनष्टद्वयं च सुगम । मिच्छतस्स वंधो चतुर्विधो, भुवपविच्छो ।  
समापं सारि भद्रो, अद्रुषवंधितादो ।

मनुस्साठमस्स को वंधो को अवधो ? ॥ ८३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी अमज्जदसम्माद्विष्टी वधा । एदं  
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ८४ ॥

एदस्स वत्तां दुग्घदे— इवेषु मनुस्साठमस्स उदयामावरो वधादयान पुम्मार  
वोम्भेरपरिक्खा जत्ति । परादपण वंधेति, मनुस्साठमस्स इवेषु उदयमानविरोहरो ।  
निरंतरा वंधो, एगममयण वंधुवरमावावरो । मिच्छादिष्टि सासणसम्मादिष्टि-असंभरसम्मा-  
दिष्टिं जह्मकेण पंचास पंचितालीस [एकेतालीस] एच्चया, सग-समोक्कएयसु ओएत्ति-

उक्तं वन्यविधायनं दाया जाता है । इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवोंकी वस्तुस्थानिक प्रकृतियोंके  
प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यात्व मनुष्यकेवद् दुग्धसंभयान और असंप्राप्तसुपादिकसंभय  
व नियमति व मनुष्यगतिसे संयुक्त गया एकस्त्रिचक्राणि आताप और स्वावट, ये तिर्य-  
गातिसे संयुक्त वंधती हैं क्योंकि एसा इत्माव है । देव स्वामी है । वन्याज्ज्ञान और वन्य-  
विनष्टम्यान सुगम है । मिथ्यात्वका वन्य कारण प्रकट होता है क्योंकि, वह भुववन्धी है ।  
यह प्रकृतियोंका वन्य सावि व मनुष्य जाता है क्योंकि ये मनुष्यवन्धी हैं ।

मनुष्यायुक्त कौन वन्यक और कौन अवन्यक है ? ॥ ८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादिष्टि, सामाज्यसम्यग्दष्टि और अमंयनसम्यग्दष्टि वन्यक हैं । ये वन्यक हैं, एवं  
देव अवन्यक है ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवोंमें मनुष्यायुक्त उदय व हानसे पूर्व या पश्चात्  
वन्धावस्थानकेवही परोक्ष नहीं है । मनुष्यायुक्त परोक्षसे वंधन है क्योंकि, देवोंमें  
मनुष्यायुक्त उदयका विषय है । वन्य उक्तका निरन्तर होता है क्योंकि एक समयमें  
वन्यविधायनका अभाव है । मिथ्यादिष्टि, सामाज्यसम्यग्दष्टि और अमंयनसम्यग्दष्टि  
देवोंका वधाक्रमण समान दिशाहीन [और इच्छाहीन] प्रत्यय होते हैं । क्योंकि अपने अपने  
ओक्कपत्तयोंमें यहाँ धीरारिक, धीरारिकमिथ्य विधिकमिथ्य वामेक और मनुष्यके

मावादे । पर्विदिय-तसण्णामाओ मिच्छादिट्ठिहि सांतरं बन्धु, एहंदिअ-यावरपडिवक्खपयडीपं संमवादे । मनुसगइ-मणुसगइपाओग्गणुपुब्बीओ मिच्छादिट्ठि-सामणसम्मादिट्ठिओ सांतरं पंथति । आरात्मियसरीरवंगोवंगं मिच्छादिट्ठिओ सातरं पंथति । एतो भेदो सतो वि ण कहिदो । एवविधं भेदं संतयकइतम्म क्व सुसमाओ ण फिट्ठे ? ण एस दोसो, देसामासिमसुत्तेसु एवंविहमावाविरेहदो ।

## सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवाण देवभगो ॥ ८८ ॥

एदस्स ब्रह्मो—जवा देवोवम्मि सव्वपयडीओ पक्खिदामो तहा एत्थ वि पक्खे-इत्थाओ । एदमप्पणसुत्ते देसामासियं, तेण्णेएण सुइदत्थो उच्चदे—पर्विदिय-तसण्णामाओ मिच्छादिट्ठि देवोवम्मि सांतर-पितरं पंथति, सणक्कुमारदिसु एहंदिअ-यावरपयामावेण पितरं तरबवोक्खमादो । एरय पुण सांतरमेव पंथति, पडिवक्खपयडिमाव' पइच्च एगसमएण

और ब्रह्म नामकम मिथ्यादृष्टि गुणस्वात्ममें साम्तर बंधते हैं क्योंकि, उक्त देवोंके इस गुणस्वात्ममें एकेन्द्रिय जाति और स्वाधर रूप प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी सम्भावना है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वीक मिथ्यादृष्टि व सासत्त्वमसम्पददृष्टि साम्तर बांधते हैं । औदारिकशरीरगोपांगको मिथ्यादृष्टि साम्तर बांधते हैं । यद्यपि ब्रह्ममात्र प्रकृतिभेदक साथ यह भेद भी है तथापि इशामर्शक होनेसे यह सूत्रमें नहीं कहा गया ।

शुद्ध—इस प्रकारके भेदक होनेपर भी उक्त न कहनेवाले पाक्षक सूत्रत्व क्यों नहीं नष्ट होता ?

समाधान—यह कहा जाय नहीं क्योंकि, उक्तप्रमाण सूत्रोंमें इस प्रकारके स्वरूपक कर्तृ चित्तोप नहीं है ।

सौधर्म व इज्ञान कल्पवामी देवोंकी प्ररूपणा सानान्य दयोंके समान है ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ—जिन प्रकार नामात्म्य देवोंमें सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की गई है उन्ही प्रकार यहां भी प्ररूपणा करता चाहिये । यह प्ररणामूर्त देशामर्शक है इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थको कहते हैं—एकन्द्रिय जाति और भक्त नामकमका मिथ्यादृष्टि देव देवात्ममें साम्तर निरन्तर बांधते हैं क्योंकि मनश्चुमारदि ब्रह्मोंमें एकेन्द्रिय और स्वाधर प्रकृतियोंके सम्पन्न अभाव होनेसे निरन्तर यद्य पाया जाता है । परन्तु यहां उक्त साम्तर ही बांधते हैं क्योंकि प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके सम्भावकी अपेक्षा करके



एतन् भवेत्तद्वैश्वदेवविचारो जतिः, उदयाभाषादो । तेनैव करमेभ<sup>१</sup> परेदप बन्धर ।  
 भिरंतो तिरभयरभो, एतत्समप्य बभुवरमागतादो । दैसपविमुञ्जदा-स्त्रदिसवेगसम्परा-  
 नरुद्विहसि-बहुसुद-प्रयणमतीजो तिरभयरकम्मस्य विनेसपञ्चया । सेस सुममं । मनुमग  
 संतुतो भो । देवा समी । बंधद्वानं सुगमं । एतय पधविणामो जति । सादि-भन्नुतो भो,  
 कपादि धुवमनेण भवद्विदकरभावादादो ।

भवनवासिय-चाणवेतर जोदिसियदेवाण देवभगो । णवरि  
 विसेसो तित्ययरं जति ॥ ८७ ॥

एतेन सुलेन देसामासिएण 'तित्ययर जति' ति बन्धमाणपयडिमेदो वेव  
 पकविदो पुद्गलपञ्चभाष्य<sup>२</sup> । समवतरमयंज्ज उववात्-परवाद् उम्मात्-पत्तेयसुरि-यमत्त्वविद्या  
 नदि-सुस्तरनामाभो अर्धदसम्मादिहिंदि सोदण्णेव बन्धति । वेतधियमिस्स कम्मइवपञ्चया  
 बंधदसम्मादिहिंदि अवबेदया, भवनवासिय चाणवेतर-जोदिसिएसु सम्मादिद्वीजमुववात्-

यहां तीर्थंकर नामकर्मक बन्धोत्पत्त्यप्युक्तका विचार नहीं है क्योंकि यहाँमें  
 इसके उक्तका अभाव है । इसी कारण यह पठेनपसे बंधती है । तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध  
 निरुत्तर होता है क्योंकि एक समयसे इसके बन्धविधायकता अभाव है । इतिविशुद्धता,  
 मन्त्रिसंवेगसम्पन्नता अरुन्तमति आचार्यमति बहुभुतमति और प्रबन्धनमति व  
 तीर्थंकर कर्मके विनाश प्रत्यय है ( जा सू ४<sup>३</sup> में विस्तारसे कहा जा चुके है ) ।  
 होय प्रत्यय सुमम है । मनुष्यगणिसं संयुक्त बन्ध होता है । इस स्वामी है । बन्धायान  
 सुमम है । यहां बन्धविनाश नहीं है । सावि व अजुब बन्ध होता है क्योंकि अनादि व  
 सुब रूपसे अवस्थित रहनेके कारणोंका अभाव है ।

भवनवासी, वानस्पन्तर और ज्योतिषी देवोंकी प्ररूपका सामान्य देवोंके समान है ।  
 विवेकता केवत् यह है कि इन देवोंके तीर्थंकर प्रकृतिक बन्ध नहीं होता ॥ ८७ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके द्वारा तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध नहीं हाना इस पृष्ठ  
 उच्छ्वासासे केवल अभ्ययाम प्रकृतियोंका मेव ही कहा गया है । समचतुरस्रसंस्था  
 वपवात् परवात् उच्छ्वात् प्रत्येकवादी, प्रशस्तविहायामति और सुन्दर नामक  
 अक्षरवत्सम्पन्नदि गुणस्थानमें ओदयसे ही बंधते हैं । वैश्वदेवमिद्व और कर्मक  
 प्रत्ययोंको अक्षरवत्सम्पन्नदि गुणस्थानमें कम करमा चाहिये क्योंकि, भवनवासी  
 ब्राह्मणस्तार और ज्योतिषी योंमें सम्पन्नद्विषोद्वी उत्पत्तिका अभाव है । पंचमित्रप आदि

१ क-भ-प-वी पठेन जयती वाक्येव इति पाठ ।

२ मरुतिए नदि तिरभर ॥ यो क १११ भिनीनो जेत्तु जयन-जो म कर्मज १ ११

३ इति पञ्चपात्तात् इति पाठ ।

मावादो । पंचिन्द्रिय-तत्संज्ञामात्रो मिच्छादिद्विविधः सांतरं षण्णह, एहिन्द्रिय-भावरपट्टवक्खपयडीमं  
संभवादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुप्पवीओ मिच्छादिद्वि-मासजसम्मादिद्विओ सांतरं  
अंपेति । आरुल्लियसरिरुअंगोवेग मिच्छादिद्विओ सांतरं अंपेति । एसो भेदो सतो वि अ कइदो ।  
एवंविष भेदं संतमकइतस्म कथं सुत्तमाओ न पिद्धे ? न एस दोसो, हेमामासियसुतेमु  
एवंविद्दमावाविरोहादो ।

सोहृम्मीसाणकप्पवासियदेवाण देवभगो ॥ ८८ ॥

एदस्स अत्थो— जथा देवोपम्मि सञ्जययद्दिओ पक्खविदाओ तद्वा एरभ वि पक्खे  
 दग्धाओ । एदमप्पणामुच देमामासियं, तेण्णेदेण सुहृदस्सो उच्चदे— पच्चिदिय-तसणामाओ  
 मिच्छमद्दी देवोपम्मि सांतर गिरंतरे जघति, सुजक्कुमारदिसु एहंदि-यावरणंयामावेण गिरं  
 तरणंघोवळमादो । एत्थ पुण सांतरमेव वणंति, पच्चिक्कुपयद्दिमावं' पक्ख एगसमएण

और इस मामकर्म मिथ्याहृदि शुभस्थानमें स्थापित पद्यते हैं क्योंकि उक्त ह्योक्त इस शुभस्थानमें एकेग्रिय जाति और स्थापन कर प्रतिपक्ष प्रकृतिपौकी सम्पादना है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायागवानुपूर्विका मिथ्याहृदि व सामाद्वलसम्पादति स्थापित बाँधत है। नैदानिकशरीरगंगावागका मिथ्याहृदि स्थापित बाँधत है। यद्यपि बन्धमान प्रकृतिमन्त्र स्थाप यह मन्त्री है तथापि ब्रह्मात्मक हानेस यह सुखमें नहीं कहा गया।

शुक्र—इस प्रकारक भद्रक हानपर भी हम न बदलपास पाकयका मूलत्व क्यों नहीं नष्ट होता ?

समाधान—यह बड़ा बात नहीं क्योंकि दशमाला में गवामें इस प्रकारके मरणाच्छाई कार्य विरल नहीं हैं।

मैथर्म व इज्ञान कम्पगामी देवोऽसि प्ररूपया सानान्य दयाके ममान ई ॥ १८ ॥

इस सूत्रका अर्थ— जिस प्रकार सामान्य द्रव्योंमें सब प्रकृतियोंकी प्रकृष्टता की गई है उसी प्रकार यहाँ भी प्रकृष्टता कहना चाहिये। यह सर्वज्ञात्मा द्रव्यात्मक है इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थको कहन है— वैश्वसिद्ध ज्ञानि और सब सामर्थ्यका मिश्रणरूपि सब द्रव्याणामें स्थान्त निरन्तर बाँधत है क्योंकि मनशुभारादि द्रव्योंमें एवेन्द्रिय और व्यापक प्रकृतियोंका बन्धन भ्रमाय हानन निरन्तर बन्ध पाया जाता है। परन्तु यहाँ उन्हें सामान्य ही बाँधन है क्योंकि, अनियत प्रकृतियोंका सम्बन्धकी भवता करके



वचामावासे ।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेषु पचणाणावरणीय  
छदसणावरणीय-सादासाद-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-  
दुगुळा-मणुसगइ-पचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-सम-  
चउरससंठण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसपडण-वण्ण-गध-रस-  
फास मणुसगइपाओरगाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद उस्साम-  
पसत्यविहायगइ-तस-वादर पच्च-पत्तेयसरीर यिरायिर-सुहासुइ सुमग-  
सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति णिमिण पचतराहयाण को वधो  
को अवधो ? ॥ ९० ॥

सुगममेव ।

मिच्छाइट्ठिण्हुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,  
अयधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एवेष सुइदत्थे अभिस्सामो— मणुसगइ-ओरालियमरीगंगोवंग-वज्जरिसहसपडण

छाहकर निर्बन्गमिष्ठिकके वन्धका अभाव है ।

ज्ञानत कल्पसे लेकर नव प्रवेयक तक विमानवासी देवमें पाँच ज्ञानावरणीय, छह  
दर्शनावरणीय, साता व असाता वदनीय, बारह कथाय, पुरिसवेद, हास्य, रति, मय, जुगुप्सा,  
मनुष्यमति, पंचन्मिय जाति, औदारिक, तैत्रस व कामज शरीर, समचतुरस्रसस्यान, औदारिक  
अरीरानोपगंग, वज्रपममंहमन, वण, गन्ध, रस, स्थल, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुष्ठु,  
उपपात, परपात, ठप्पूवाम, प्रशस्तविहायोगति, वस, वादर, पर्याप्त, प्रत्यकअरीर, स्थिर,  
अम्भिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्सर, आदेय, यज्जकित्ति, अयज्जकित्ति, निमाण और पाँच  
अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९० ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पाट्ठिमे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, अवन्धक नहीं  
हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंको कहते हैं—मनुष्यगति औदारिकअरीरानोपगंग,

मनुष्यानुपूर्वी-अथसकिरीणमुदयामावाधो सेसपयवीण उदययोच्छेदामावाधो च परोदयनं पञ्चमपञ्चेच्छेदपरिक्ता न विरेहे ।

पञ्चपात्रावरणीय चतुर्वसुपात्रावरणीय-पुरिसवेद-पंचिदिव्यादि-तेजा-कम्पयसरीर-यन्त्र-गण-रम-श्रुत-भगुल्लङ्घन-सप्त-बाह्व-यजुष-विश्वि-सुभासुम-सुभग-अदेव-असन्निधि-निमित्त-उवायेद-यचंतयायइयात् सोदयजेव वेषो, ध्रुवोदयच्छेदो । निद्रा-यजुष-साक्षात्-वारसकर्मो हस्त-रि-अदि-सोम-मय-द्रुगुल्लानं सोदय-परोदय वेषो, अद्रुवोदयच्छेदो । समचतरसस्य-उवपत् परपाद-उत्पत्त-यस्यविद्यावग-पथेयसरीर-मुस्सरणामाधो मिच्छादृष्टि-सासवसम्प-दृष्टि-असंबदसम्पादित्तिनां सोदय परोदय वषति । सम्पामिच्छादृष्टि-सोदयजेव वषेति, तेसिमप-अस्यस्यमावाधो । मनुमग-भोरात्त्रियसरीर-भोरात्त्रियसरीर-गोषग-यन्त्र-रिसहस्रपञ्च-मनुष्यानुपूर्वी-अथसकिरीणं परोदयजेव वेषो, इवेसु एदासि वषोदयामकर्मणेन उचि-विरेहो ।

पञ्चपात्रावरणीय-चतुर्वसुपात्रावरणीय-वारसकसाय-मय-द्रुगुल्ल-मनुमग-पंचिदिव्यादि-

अथपंचसंहनन मनुष्यानुपूर्वी और अथशरीरि इत्येव उवाचामाह इत्येते तथा शेष प्रकृतिये के उदयपञ्चेच्छेद अमाय होनेसे यहां पञ्च बीर उदयके पूर्व या पश्चात् पृच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार वसुपात्रावरणीय मुदययजुष पञ्चमित्र आति तेजस व कामय शरीर, अथ गन्ध रस स्पर्श भगुल्लङ्घन, अथ बाह्व, यथात् स्थिर, अस्थिर, शुभ भुम सुमग भाव्य वशादीनि निर्माण उवायेव और पांच अस्तारय इवका स्वादयन ही बन्ध होता है क्योंकि ये प्रवेद्यी प्रकृतियां हैं । निद्रा प्रवक्ता सता व असता वहीनय बारह कथाय हास्य एति मरति शोर मय और मनुष्या इत्येव स्वादय परोदयनं बन्ध होता है क्योंकि, ये अद्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । समचतुरस्रसंस्थान उपपात परपात उच्छ्वास प्रवक्तुविहायोगति प्रत्येकशरीर जीव सुस्वर नामकर्मो मिच्छादृष्टि, सासवसम्पदृष्टि मीन असयतनमगदृष्टि स्वेदय परोदयस बांधते हैं । सम्पामिच्छादृष्टि इय स्वेदयमे ही बांधते हैं क्योंकि, उनके अपर्पात्तच्छाया अमाय है । मनुष्यगति बीद्वारिकशरीर बीद्वारिकशरीरोंपापांग अथपंचसंहनन मनुष्यानुपूर्वी और अथशरीरि परोदयस ही बन्ध होता है क्योंकि, क्योंकि इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके एक साथ अभिरुद्ध विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वसुपात्रावरणीय बारह कथाय मय मनुष्या मनुष्यगति,

ओरातिप-तेजा-कम्मइयसरी ओरात्तिपसरीरअंगोवंग-वण्ण-गध-रम-फ़ास-मणुमगइपाभोगाणु-  
 पुम्भी-अगुरुअल्लुअ उवघा-परघाद् उम्मा-तम-या-प-पत्त-पत्तेयसरी-विमिण-पचमाइयाण  
 गिरतेण वेधो, एरय धुवधधितादा । सात्तामा-इम्म-रदि-अरदि-माग-धिगधिर सुमामुम-अम  
 कित्ति-अजसकिणीय मन्तेग, एगममण्ण पधविरामदमणादा । पुरिसुअ सुमचठममअण-धम्मि  
 सहमधइण-पसत्तविहायगद्-भुमग-मुम्मर ओ-बुच्चागाणाणि मिच्छान्ति-मायणसुग्मादिदिणो  
 संनरं वधन्ति, एगममण्ण वधविगमुवलभादा । सुम्भामिच्छान्ति असज्जदमग्गादिदिणो गिरंतर  
 वधन्ति, पडिवत्तपपदीण पधामायादा ।

एदामि पम्बया देवोपपच्चयतुम्भ । जवरि मच्च-य इत्थिदेदपच्चओ अवमेदच्चो ।  
 मच्च सधामो पयडीभो मणुमगइसज्जते पधन्ति, अण्णगईण वधामावाडो । देवा मामी ।  
 पधदाम वधविमइणाण व सुगम । पचणाप्पायरणीय छदयणावणीय वरसकमाय मय  
 दुगुंअ-तेजा कम्मइयसरी वण्ण-गध-रम फ़ास-अगुरुअल्लुअ-उवघाद-विमिण पचतइयाण  
 मिच्छान्ति-मिह वउध्विहा वधो । अण्णय तिधिहा, धुवामावाडो । अवमेमामं पयडीण वधो  
 मच्चगुणइमेसु सादि अद्धवो, अद्धवधधितादो ।

पेषमिद्वयानि आचारिक नञ्जम व कामण दागीर बीजारिबन्धरीताणाणां वण गच्छ रम  
 कर्षी मनुष्यगतिप्राप्तयानुपूर्वी अगुरुषु उपधान परघाद् उच्छ्रयाम वन वादुर पयाम  
 प्रत्यक्षरीर निमाण मोर पांथ अन्तराय इमका निरन्तर वध्य होता है क्योंकि यहाँ  
 व प्रहल्लादां प्रदग्धी है । माला व ममाला वेदनीय हाम्य रति अरति शाल निघर  
 मरिघर शुभ अशुभ यदादीनि और मयानीनि इनका मालर वध्य होता है क्योंकि  
 एक ममयम इमका वध्यधिमान देका जाता है । पुण्यदेद ममयतुरन्तरेक्याम यज्जयम  
 महान प्रदात्मविहायगानि सुमग सुख्यर मात्रय और उवघाव इनका मिध्याहदि  
 एवं सामावममम्यहदि मात्तर बांधन है क्योंकि एक ममयम इनका वध्यधिमान  
 पाया जाता है । मयमिमिध्याहदि और ममयममम्यहदि इन्हें निरन्तर बांधन है क्योंकि  
 इनका प्रतिपस प्रहल्लोके वध्यका ममाय है ।

इम प्रहल्लोके प्रायय द्याय प्रययोक्त समान हैं । पिण्यता वधम इतनी है कि  
 मच अगद स्त्रीपद् प्रत्ययका वध वग्गा व्याहिय । उक्त मय वय मय प्रहल्लोका  
 मनुष्यगतिम संयुक्त बांधन है क्योंकि उक्त मय गतियोके वध्यका ममाय है । वय  
 क्यामी है । वघाज्जान और वध्यविमइम्मान सुगम है । पांथ मालावरणीय छद वामा  
 वरणीय वारद क्याय मय सुगुंअ नञ्जम व कामण दागीर, वण गच्छ रम कर्षी  
 अगुरुषु उपधान निमाण और पांथ अन्तराय इमका मिध्याहदि गुलक्याममं थारो  
 प्रकारका वध्य होता है । मयय रति प्रवाक्का वध्य होता है क्योंकि यहाँ धुवधधिता  
 वमाय है । मय प्रहल्लोका वध्य मय गुणक्यामोमे मारि व मधुय होता है क्योंकि  
 वे मधुयवग्गी है ।

णिहाणिदा-पयलापयला-धीणगिद्धि अणताणुबधिकोभ-माभ-  
माया-लोम-इत्यिवेद-भउसठाण-भउसघडण अप्ससत्यविहायगइ-दुमग-  
दुस्सर अणादेज्ज-णीचागोदाण को वधो को अन्नधो ? ॥ १२ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा  
॥ १३ ॥

एदस्स अरथो सुवचदे—अणताणुबधिकठक्कस्स वंघोदया समं वोच्छिन्नंनि,  
सम्मज्जमि तदुमयवोच्छेदवमन्नारो । अवससाण वंघोदयवाच्छेदपरिक्कमा मस्सि, तम्मिण्णु-  
दयामावादा । अणताणुबधिकठक्कस्स सन्दय-परोदएण वधो, अदुवोदयत्तरो । अवसेसाण  
पयडीण परोत्तण्णेव, एत्थ तम्मि वंघेणुदयस्स अन्नद्वाम्भिरोहारो । धीणगिद्धितिव-वर्पेत्ताकु-  
वधिवत्तक्कस्स निरंतरा वंघा, पुववंपित्तारो । सेमाव सत्तरो, एमसमएव वधविरामदत्तप्रा ।  
पन्थपाणं सहस्सामंग । सप्पे सम्भाओ पयडीओ मणुसगाइमहत्तं वंघंति । देवा सप्पि ।  
वंघद्वारं वंघविजट्टद्वारं च सुगमं । धीणगिद्धितिव-अणताणुबधिकठक्कस्स मिच्छाद्विष्टिस्स

निठानिठा प्रचलप्रचल, स्थानपुद्धि, अनन्ताणुबन्धी कंध, मान, माया, लोम,  
र्यत्वद, चाग संस्थान, चार मदनन, अश्रुश्रुविहायोपति, दुमग, दुस्सर, अनादय और  
नीचगोत्र, इनका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ १२ ॥

यह सुख सुगम है ।

मिष्पाधे और मासारनममगधि वधक है । ये वधक हैं, जेव दव अवधक  
है ॥ १३ ॥

इसका अर्थ कहत हैं—अणताणुबधिकठक्कस्स वध और उदय दोनों साथ  
पुच्छिन्न होते हैं क्योंकि सासाण गुणस्थानमें उन दोनोंका पुच्छेद देखा जाता है ।  
हाथ प्रकृतिपोंके वधोदयपुच्छेदकी परीक्षा नहीं है क्योंकि, यहाँ उनके उदयका  
अभाव है । अनन्ताणुबधिकठक्कस्स वधोदयपरद्वयसं वध होता है क्योंकि,  
व मणुयोदयी है । हाथ प्रकृतिपोंका वध परोदयसं ही होता है क्योंकि यहाँ उनके  
वधके माय उदयके अवस्थावका विरोध है । स्थानपुद्धिप्रच और अनन्ताणुबधिक  
वधुक्कस्स निरंतर वध होता है क्योंकि वृक्षवन्धी है । हाथ प्रकृतिपोंका सत्तर वध  
होता है क्योंकि, एक समयसे उनका वधविधायक देखा जाता है । प्रत्ययप्रकृपणा सहचार  
देवोंके समान है । वत्त एक देव सब प्रकृतिपोंको मनुष्यगतिसे संयुक्त पांघते हैं । हेत  
स्वामी हैं । वधार्थान और वधविमहस्याव सुगम हैं । स्थानपुद्धिप्रच और अनन्ताणु

पठयिहो बंधो । बभस्य भुविहो, अयादि-भुवामावताहो । सेसायं पयङ्गीमं सदि-अद्भुतो,  
अद्भुतपयिताहो ।

मिच्छत-णवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेवट्टमघडणणामाण को  
वधो को अवधो ? ॥ ९४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ९५ ॥

पदस्स बल्यो भुबोद— मिच्छस्स बवोदया सम बोधिसि, मिच्छाहट्टिहि  
तदुत्तमामावदसपत्तो । अवसेसायं बवोदयबोध्येदपरिक्खा जालि, एत्थेयंतेभेदास्सिमुदयामावादे ।  
मिच्छतं सोदण्ण बब्बह । कुदो ? सामाविवाहो । अवसेसायो पयङ्गीमो परोदण्ण । मिच्छतं  
भित्तरं बब्बह, भुवपयिताहो । अवसेसायो सांतरमद्भुतपयिताहो । पच्चया सहस्सारपचयतुम्ह ।  
मणुमगासदुत्तं बब्बहि । देवा सामी । बंधद्वारं बधविणहट्टाण च सुगम । मिच्छस्स बंधो

बन्धितपुच्छका मिथ्याहट्टिक चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्धकार का प्रकारका बन्ध  
होता है क्योंकि वहाँ अन्धवि और भुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सामि  
च अद्भुत बन्ध होता है क्योंकि, वे अद्भुतबन्धी प्रकृतियाँ हैं ।

मिथ्यात्व, नृपुंसकवेद, हुण्डर्सस्थान और अर्धप्राप्तसुपाटिकसंहनन नामकमौक्त  
कौन बन्धक और कौन बन्धक है ? ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याघट्टे बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष देव बन्धक हैं ॥ ९५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युत्पन्न  
होते हैं क्योंकि, मिथ्याहट्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष  
प्रकृतियोंके बन्धोदयव्युत्पेदकी परीक्षा यहाँ है क्योंकि, यहाँ नियमसं इनके उदयकर  
अभाव है । मिथ्यात्व प्रकृति स्वोदयसे बंधती है । इसका कारण स्वभाव है । शेष  
प्रकृतियाँ परोदयसे बंधती हैं । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर बंधती है क्योंकि भुवबन्धी  
है । शेष प्रकृतियाँ साम्तर बंधती हैं क्योंकि, वे अद्भुतबन्धी हैं । प्रत्ययप्रकृपणा सहकार  
वेबोके प्रसङ्गोंके समान है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाभ्याम  
और बन्धीविणहट्टाण सुगम हैं । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है क्योंकि,



णिदाणिदा-पयलापयला-धीणगिद्धि अणताणुबधिकोप-मान-  
माया-लोभ इत्यिवेद-चउसठाण-चउसघडण अप्पसत्यविहायगइ-दुमग-  
दुस्सर अणादेज्ज-णीचागोदाण को उधो को अबधो ? ॥ ९२ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्टी सामणम्महाहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेमा अवधा  
॥ ९३ ॥

एदस्स वत्थो पुच्छेदे—अणताणुबधिकउत्तकस्स वधोइवा समं कोप्पिज्जेति,  
सम्मममि नहुमयवोप्पेइइमभादो । अबमसाव वधोइयवोप्पेइयकिम्मा वत्ति, तामिमेउ-  
ट्टामावादो । अणताणुबधिकउत्तकस्स सादय-परोदएण वधा, अउवोइवत्तादो । अबसेसाए  
पयइीण परोदएणेव, एएव तामि वधेउउयस्स अवट्टाणविरोहो । धीणगिद्धितिव-अणग-  
वविचउत्तकस्स निरंतर वधो, पुववधिदादो । सेयाव सांतो, एगसमएव वधविउमईसभादो ।  
पप्पयानं सहस्सरमंगा । उणं सप्पाओ पयइीओ मज्जमगइमंहुए वधति । इवा समी ।  
वधट्टाणं वधविउट्टाणं च सुगमं । धीणगिद्धितिव-अणताणुबधिकउत्तकस्स मिज्जमिद्धिस्स

निगानिडा प्रचत्तप्रचत्त, स्थानगुद्धि, अनन्ताणुबन्धी वध, मान, माया, लोभ,  
वीर्य, चार संस्थान, चार मेहनन, अग्रसमविहायोगति, दुर्मग, दुस्सर, अनार्य और  
नीचमोक्ष, इनका कौन कन्वक और कौन अवधक है ? ॥ ९२ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पापि और मासादनमम्वग्धि वन्वक है । ये वन्वक हैं, उन दस अवन्वक  
हैं ॥ ९३ ॥

इसका अर्थ कहत हैं—अनन्ताणुबन्धियवत्तुक्क वन्ध और उद्व होनों साथ  
पुच्छिअ हात हैं क्योंकि, सासात्त गुणस्थानमें एक होनोंका पुच्छेइ इया जाता है ।  
शय प्रकृतिषोंका वन्धोइयपुच्छेइकी परीक्षा नहीं है क्योंकि, यहाँ उनके उद्वका  
अभाव है । अनन्ताणुबन्धियवत्तुक्क वन्धोइयपरोदयस वन्ध हाता है क्योंकि,  
व मधुवोदयी हैं । शय प्रकृतिषोंका वन्ध परोदयस ही होता है क्योंकि, यहाँ उनके  
वन्धके साथ उद्वके अवस्थावका विरोध है । स्थानगुद्धिवय और अनन्ताणुबन्धिय  
वत्तुक्क निरंतर वन्ध होता है क्योंकि वृववन्धी है । शय प्रकृतिषोंका सात्तर वन्ध  
होता है क्योंकि, एक समयसे उनका वन्धविधाय होता-आता है । मत्तपयकपणा सहकार  
वेचि समान है । उल्ल सब देव सब प्रकृतिषोंको मनुष्यपतिसे संयुक्त तांथते हैं । देव  
स्वामी हैं । वधापणा और वन्धविमहत्ताय सुगम हैं । वन्धगुद्धिवय-और अनन्ताणु

पठविहो बंधो । अण्मन्त्र दुविहो, जणादि-भुवामावसादो । सेसाण पयडीण सादि-भद्रवो, भद्रवबधिसादो ।

मिच्छत-गवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेवट्टमघडणणोमाण को वधो को अवधो ? ॥ ९४ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ९५ ॥

एदस्स अरयो दुबेद— मिच्छत्तम् बंधोदया समं बोञ्छिञ्चति, मिच्छाहट्टिहि तदुभयामावईसणादो । अवसेसाणं बंधोदयवोञ्छेदपरिक्खा गतिथि, एरुपयतेभिदासिमुदयामावादो । मिच्छत्तं सोदण्ण वञ्छइ । कुदो ? सामाविधादो । अवसेसाओ पयडीओ परोदएण । मिच्छत्तं भित्तरं वञ्छइ, भुवबधिसादो । अवसेसाओ सात्तरमद्रुवबधिसादो । पञ्चया सहस्सरपचयतुल्ल । मज्जुमगइसहुत्तं वञ्चति । देवा मामी । बंधठायं बधविणट्टहार्यं च सुगम । मिच्छत्तम् बंधो

बधिविणट्टका मिध्याहट्टिक कारणे प्रकाशका बन्ध होता है । मन्त्र का प्रकाशका बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ अमावि और भुव बन्धका समाप है । सोप प्रकृतियोंका सात्तर मद्रुव बन्ध होता है क्योंकि वे भद्रवबन्धी प्रकृतियाँ हैं ।

मिध्यात्व, नपुमकवेद, हुडसठस्थान और असंप्राप्तवृत्तादिकमहान नामकमोंका कैल बन्धक और कैल अवन्धक है ? ॥ ९४ ॥

यह सब सुगम है ।

मिध्याहट्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, सेप देव अवन्धक हैं ॥ ९५ ॥

इस सबका अर्थ कहत हैं— मिध्यात्वका पन्ध और उदय दोनों साथ धुच्छिठ हात हैं क्योंकि, मिध्याहट्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका समाप देखा जाता है । सोप प्रकृतियोंके बंधोदयधुच्छेत्की परीक्षा नहीं है क्योंकि, वहाँ निपमन्त्र इनके उदयका समाप है । मिध्यात्व प्रकृति स्वादयस बधती है । इसका कारण स्वभाव है । सोप प्रकृतियाँ परोदयमे बधनी हैं । मिध्यात्व प्रकृति भित्तर बंधनी है । क्योंकि, भुवबन्धी है । सोप प्रकृतियाँ सात्तर बधती हैं । क्योंकि, वे भद्रवबन्धी हैं । प्रत्ययप्रकाशना सहकार्येण प्रत्ययोंके समान है । मज्जुमगितिले सेयुक्त कारण हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाज्जान और बन्धविमरुत्तान सुगम हैं । मिध्यात्वका बन्ध कारणे प्रकाशका हाता है क्योंकि,

चठविंशो, भुवर्षविंशो । सैसाण सादि-अद्दुवो, अद्दुवर्षविंशो ।

मणुस्साउअस्स को वधो को अर्धवधो ? ॥ ९६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वधा । एदे  
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ९७ ॥

एदस्स बरयो—बोधेदयार्थं बोधेदपरिक्रिया एव अस्ति, सदयामात्रो । कोरएण  
बन्धइ, विपुलदवस्स एव अण्णवनिरोद्धादो । विरततो बंधो, एगसम्पणं बंधुवाम्पमात्रो ।  
मिच्छाइट्ठिस्स एगुजवत्तास, सासणस्स चउएत्तालीस, असंजदसम्माइट्ठिस्स चात्तीस पण्यया ।  
मणुसगइसद्धं । देवा सामी । बंधयानं वचनिनइहाणं च सुगमं । सादि-अद्दुवो बंधो,  
अद्दुवर्षविंशो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वधो को अर्धवधो ? ॥ ९८ ॥

सुगमं ।

ब्रह्मचरणी है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अनुप बन्ध होता है क्योंकि, वे अनुपबन्धी हैं ।

मनुष्यायुक्त कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९९ ॥

यह छत्र सुगम है ।

मिप्पाएट्ठि, सासादनसम्पगट्ठि और असंपतसम्पगट्ठि बन्धक हैं । वे बन्धक हैं,  
शेष देव अवन्धक हैं ॥ ९७ ॥

इसका अर्थ—बन्ध और उद्बन्धके मूलच्छेदकी परीक्षा यहां नहीं है क्योंकि,  
मनुष्यायुक्त उद्बन्धका बंधोमं अभाव है । वह परोधयसे बंधती है क्योंकि, यहां उसके  
बन्धके साथ उद्बन्धके अवस्थानका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक  
समयसे उसके बन्धविग्रामका अभाव है । मिप्पाइट्ठिके उर्मत्तास सासादनसम्पगट्ठिके  
अवासीस और असंपतसम्पगट्ठिके चात्तीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगणसे संयुक्त बन्ध  
होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाण्णान् और बन्धयिनइहाणं सुगमं है । सादि व अनुप  
बन्ध होता है क्योंकि, वह अनुपबन्धी प्रकृति है ।

तीवकर नामकर्मक कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १०० ॥

यह छत्र सुगम है ।

असजदसम्मादिही वधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९९ ॥

एदस्सरा वुन्धदे— बंधोदयाणं बोधेदविचारो णरिषि, सतासंताय सत्पिपास विरोहदो । एदेदएण बंधो, सम्बत्थ तित्थपरकम्मबंधोदयाणमपक्वमेण उच्छिबिरोहदो । पिरंतरो, बंधो, संखेज्जावलिआदिकसेण विषा एगसमएण बंधुवरमाभावादो । एदस्स पन्थया देवोप पन्थयतुह । उत्तरोत्तरपन्थया पुण भरहवाहरिय-बहुसुद-पववणमत्ति-अदिसंबेगसंपत्ति-रसव विमुद्धि-पववणप्पहावणादो । मणुसगसंभुवो बंधो । देवा सामी । बवद्धागं बंधविबहहायं च सुगमं । सादि भद्धो बंधो, भद्धवधित्ता ।

अणुदिस जाव सव्वट्टसिद्धिविमाणवासियदेवसु पचणाणावरणीय छदसणावरणीय-सादासाद-धारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय दुगुछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसह-संघडण-वण्ण-गध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-

असंयतसम्यग्धि बन्धक है । ये बन्धक हैं, छेप देव बन्धक हैं ॥ ९९ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उद्वेगके व्युत्प्रेक्ष्य विचार यहाँ नहीं है क्योंकि सत् और असत् बन्धोदयकी समानताका विशेष है । एदेदएसे बन्ध होता है, क्योंकि, सर्वत्र तीर्थंकर कर्मके बन्ध और उद्वेग एक साथ रहनेका विशेष है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, संप्रदाय आश्रमी आदि काष्ठके बिना एक समयसे उसके बन्धविभाजक अभाव है । इसके प्रत्यय देवोप प्रत्ययोंक समान हैं । परन्तु इसके उत्तरोत्तर प्रत्यय भरहवाहरिय आवापमत्ति बहुसुतमत्ति प्रवचनमत्ति सत्पिसेयसम्पत्ति दशमविमुद्धि और प्रवचनप्रमापमत्ति हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त इसका बन्ध होता है । एव स्वामी हैं । यन्पाखान और बन्धविमरस्यान सुगम हैं । सादि-अणुध बन्ध होता है क्योंकि, यह अणुबन्धही प्रकृति है ।

अणुदियोसे ठेकर सवार्थसिद्धि तकके विमानगामी देवोंमें पाँच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सत्ता व असत्ता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, बलति, शोक, मय, रुगुप्ता, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय आति, ओराकि, तेजस व कर्मज धर्म, समभतुआसंस्थान, औदारिकउरिओपांम, बज्रपेमसहनन, धर्म, मन्ध, रस, स्वर्ग,

वउप्पिहो, सुवर्षपिच्छो । ससारं सारि-अद्दुवो, अद्दुवपिच्छो ।

मणुस्सारअस्स को वधो को अवधो ? ॥ ९६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी वंधा । एदे  
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ९७ ॥

एहस्स अरथो — बंधोदयार्थं बोधोदयपरिच्छा एत्थ पत्ति, सद्धवामावाहो । परोक्ष  
वक्त्रह, विजुवदस्स एत्थ वक्त्रहणविरोहादो । विरतो बंधो, एगसमएय बंधुवदामावाहो ।  
मिच्छाहट्ठिस्स एगवन्धास, सासणस्स वउएत्थमिस्स, असजदसम्मादिहट्ठिस्स चात्थिस्स पप्पवा ।  
मणुसगइसंखत्तं । देवा सामी । बंधवणं बंधविजहट्ठाय व सुगमं । सारि-अद्दुवो वधो,  
अद्दुवपिच्छो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वधो को अवधो ? ॥ ९८ ॥

सुगमं ।

ब्रह्मचर्यी है । होय प्रकृतियोंका साधि व अमुच बन्ध होता है, क्योंकि, वे अमुचबन्धी हैं ।

मनुष्यामुच कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९९ ॥

यह स्रष्टा सुगम है ।

मिप्पादधि, सासादनसम्यग्धि और असंपत्तसम्यग्धि बन्धक हैं । वे बन्धक हैं,  
वेव देव अबन्धक हैं ॥ १०० ॥

इसका अर्थ — बन्ध और उदयक ध्युच्छन्की परीक्षा वहाँ नहीं है क्योंकि,  
मनुष्यामुच बन्धक देवोंमें अभाव है । वह परोक्षमे वधती है क्योंकि, वहाँ उसके  
बन्धके साथ उदयके अवस्थामका विरोध है । मिरण्ठर बन्ध होता है क्योंकि, एक  
समयसे उसके बन्धविधामका अभाव है । मिप्पादधिके वर्णवास सासादनसम्यग्दिके  
अवाञ्छीस और असंपत्तसम्यग्दिके चात्थीस प्रत्यय होत हैं । मनुष्यपत्तिस्स संयुच बन्ध  
होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाम्बाव और वन्धविजहट्ठाय सुगम हैं । सारि व अमुच  
बन्ध होता है क्योंकि, वह अमुचबन्धी प्रकृति है ।

तीवकर नामकर्मक कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०० ॥

यह स्रष्टा सुगम है ।

पान्सकसाय-हस्त-रदि-सोग-मय-दुग्धमण सोदय-परोदयण बंधो, बद्धबोदयतादो । परपादुत्सास  
पसत्त्वविहायगह-सुस्तराणं सोदय-परोदयण बंधो, अपञ्जसकठे उदयामावे वि बंधुपठमादो ।  
समचतरससंयुजपाद-यत्तेयसरीराणं पि सोदय-परोदयण बंधो, विगहगदीए उदयामावे वि  
बंधदसमादो । मणुसाउ-मणुसगह-भोरात्थिसरीर-भोरात्थिसरीरभंगोवंग-वन्जरिसहसंपङ्क-  
मणुस्सगहपाभोमाणुपुष्पी-अजसकिप्ति-तित्थयराण परोदयण बंधो, एत्वेदासिमुदयामावादा ।

पंचपापावरणीय-स्रद्धसावरणीय-वारसकसाय-पुरिसवेद-मय-दुग्धमण-मणुसाउ मणुसगह  
पविंदियआदि-भोरात्थि-नेजा-कम्माइयसरीर-समचतरससंयुज-भोरात्थिसरीरभंगोवंग-वन्जरिसह-  
संपङ्क-वज्ज-गच-रस-फस-मणुसगहपाभोमाणुपुष्पि-अणुसकठ-उवपाद-परपाद-उत्सास-  
पसत्त्वविहायगह-त्स-बादर-पञ्ज-यत्तेयसरीर सुमग-सुस्तर-आदेन्त्र-पिमिण-तित्थयरुत्तामोद-  
पधंतारहायण मिरंतरो बंधो, एवासिमेगसमएण बंधुवरमावादा । सादात्साह-हस्त-रदि-अरदि  
सोग-धिराधिर-सुहासुह-जसकिप्ति-अजसकिप्तिण सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमादो ।

बेदनीय बारह कपाय हास्य एति शोक, मय भीरुदुग्धसाय स्वेदय-परोदयसे बन्ध  
होता है क्योंकि, ये बद्धबोदयी प्रकृतिपां हैं । परमात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति  
भीरु सुस्वरका स्वेदय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, अपर्पायकाक्रमे उदयका अभाव  
होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है । समचतुरक्रसंस्थान उपमात भीरु प्रत्येकशरीरका  
भी स्वेदय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, विग्रहपतिमें उदयके अभावेक हानपर भी  
बन्ध देका जाता है । मनुष्याय मनुष्यगति औदारिकशरीर, औदारिकशरीरतंगोपांग  
बद्धर्ममसहजम मनुष्यगतिमायोम्यानुपूर्वी अयशकीर्ति भीरु तीर्थकरका परोदयसे बन्ध  
होता है क्योंकि यहाँ इनके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वर्धनावरणीय बारह कपाय पुरुषबद्ध मय दुग्धसाय  
मनुष्याय मनुष्यगति ऐकेन्द्रिय आति औदारिक स्रद्धा ब काम्य शरीर, समचतुरक्र  
संस्थान औदारिकशरीरतंगोपांग बद्धर्ममसहजम तर्ष गन्ध रस स्पर्श मनुष्यगति  
मायोम्यानुपूर्वी अणुसकठ, उपमात परमात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति बस बादर,  
पर्पाय प्रत्येकशरीर, सुमग सुस्वर, आदेय निर्माण तीर्थकर, उद्योगा भीरु पांच  
अन्तराय इनका विरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, इनके एक समयसे बन्धविधामका  
अभाव है । साता ब अमता बेदनीय हास्य एति अरति, शोक, स्थिर अस्थिर, शुभ  
अशुभ यशकीर्ति भीरु अयशकीर्ति इनका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे  
इनका बन्धविधाम है ।

उवघाद-परघाद उस्सास-पसत्थविहायगह-तस घादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर  
यिरायिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति  
णिमिण-तित्थयर उच्चागोद पंचतराहयाण को वधो को अबधो ?  
॥ १०० ॥

सुगम ।

असंजदसम्पादित्वी वधा, अयभा णत्थि ॥ १०१ ॥

एदस्स अत्थो पक्खिन्धे— मनुसुत्त-मनुसुत्त भोरात्थियसरीर भोरात्थियसरीरंभोत्तंग-  
बन्धरिसहसंबद्ध-मनुसुत्तपाभोगाणुपुप्पी-अजसकित्ति-तित्थयराध उदयामावाहो अबसेमानं  
च पयसीनमुदयभोत्तेजामावाहो 'वधाहो उदयस्य किं पुष्पं किं वा पञ्च बोधेहो होति' ति  
एत्थ परिक्ख्य पत्थि ।

पंचपाप्मावरणीय-चतुदशपाप्मावरणीय-गुरिसवेद-पंचिन्द्रियत्राति-तेजा-कम्मइयसरीर-बन्ध-  
मंभ-रस-फ़स-अगुरुजलदुग्ध-तस-वाह-र-पञ्च-यिरायिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-  
विमिसुच्चागोद-पंचतराहयाणं सोदभो बंधो, एत्थ पुत्रोदयच्छाहो । निहा-पयत्त सदात्त

मनुष्यगतिप्राप्तोन्मात्रपूर्वी, अगुरुजल, उपपात, परपात, उच्छ्वास, प्रसस्तविहायमेति, जस,  
वाह, पर्याप्त, प्रसेकसरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदेज, जसकित्ति,  
अजसकित्ति, निर्माज, तीर्णक, उच्चयोग और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और  
कौन अबन्धक है ? ॥ १०० ॥

यह सुख सुगम है ।

असंयतसम्पन्नि बन्धक है, अबन्धक नहीं है ॥ १०१ ॥

इसके अर्थकी प्रकृपणा करते हैं— मनुष्यायु, मनुष्यगति नीतिरिक्तादीर,  
नीतिरिक्तादीरानोपांग वज्रपर्मसंहनन मनुष्यगतिप्राप्तोन्मात्रपूर्वी अयथाकित्ति और  
तीर्णक, इनके उदयका समाज होमेसे तथा शेष प्रकृतिपौके उदयपुच्छेकका समाज  
होमेसे बन्धसे उदयका क्या पूर्वेम या क्या पश्चात् पुच्छेक होता है इस प्रकारकी  
यहाँ परीक्षा नहीं है ।

पांच पाप्मावरणीय और चतुदशपाप्मावरणीय पुदपवेद पंचिन्द्रियत्राति तेजस व  
कर्मज शरीर, बर्ष शब्द एत कपरी अगुरुजल, जस वाह, पर्याप्त स्थिर, अस्थिर,  
शुभ अशुभ सुभग, आदेज यथाकित्ति निर्माज कसगोत्र और पांच अन्तराय इनका  
पुत्रोदय इत्य होता है कौनसे से यहाँ पुत्रोदयी है । निहा प्रयत्न सदात्त व जसदात्त

पात्सकसाय-हस्त-रदि-सोग-मय-हुगुंछाणं सोदय-परोदयण बंधो, अयुबोदयसादो । परपादुत्सास  
पसत्यविहायगइ-सुस्तराणं सोदय-परोदयण बंधो, अपन्त्रतन्त्रते उदयामावे वि बंधुवर्तमादो ।  
समचतरससंख्यपुवपाद-पतेयसरीराण पि सोदय-परोदयण बंधो, विग्यहगदीए उदयामावे वि  
बंधसपादो । मणुसाउ-मणुसगइ-ओरात्मियसरीर-ओरात्मियसरीरबंगोवग-वन्नरिसहसंषडण  
मणुस्मगइपाधोग्गाणुपुण्डी-अजसकिचित्ति-तिरवयरण परोदयण बंधो, एत्थेदासिसुदयामावादा ।

पचपाणावरणीय-ऊर्दसपावरणीय-वारसकसाय-पुरिसवेद-मय-हुगुंछा-मणुसाउ मणुसगइ  
पंधिदियजादि-ओरात्मिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचतरससंख्य-ओरात्मियसरीरबंगोवग-वन्नरिसह-  
सषडण-वण्य येव-रस-पन्नस-मणुसगइपाधोग्गाणुपुण्डी मणुस्मगइ-उवपाद-परपाद-उत्सास-  
पसत्यविहायगइ तस-भादर-पन्नत-पतेयसरीर सुमग-सुस्तर-भादेज्ज-पिमिय-तिरवयरणागोद-  
पंधतराहपाणं पिरंतरो बंधो, एदासिमगसमएण वपुकरमामावादो । समदासद-हस्त-रदि-भरदि  
सोग-भिराभिर-सुहासुइ-असकिचित्ति-अजसकिचित्ति सांतरो बंधो, एयसमएण बंधुवरमादो ।

वेदनीय, वाद कयाय हास्य रति शोक मय और हुगुप्ताका स्वादय-परोदयसे बन्ध  
होता है क्योंकि, वे मणुबाह्यी प्रकृतियाँ हैं । परचात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति  
और सुस्तरका स्वादय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, अपर्णांतकाक्रम उदयका अभाव  
होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है । समचतुरासंस्यान उपचात और प्रत्येकशरीरका  
भी स्वादय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयका अभावके होनेपर भी  
बन्ध देखा जाता है । मनुष्याय मनुष्यगति औदारिकाशरीर, औदारिकाशरीरगोपांग  
वज्रपर्मसंहमन मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी अयशकीर्ति और तीर्थंकरका परोदयसे बन्ध  
होता है क्योंकि, यहाँ इनके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह दर्शनावरणीय वाद कयाय पुरुषदे मय हुगुप्ता  
मनुष्याय, मनुष्यगति ऐश्वर्य आति औदारिक, वैजस व कार्मण शरीर, समचतुरा-  
संस्यान औदारिकाशरीरगोपांग वज्रपर्मसंहमन वर्ष गन्ध रस स्पर्श मनुष्यगति  
मायोग्यानुपूर्वी मणुस्मगइ, उपचात परचात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति वस वाद,  
पर्णांत प्रत्येकशरीर, सुमग सुस्तर, भादेय निर्माण तीर्थंकर, उद्योगा और पांच  
अन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, इनका एक समयसे बन्धविधामका  
अभाव है । साता व असाता वेदनीय हास्य रति भरति शोक, स्थिर अस्थिर, शुभ  
अशुभ यशकीर्ति और अयशकीर्ति इनका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे  
इनका बन्धविधाम है ।



उवधाद-परधाद उस्सास-पसत्यविहायगह-सम वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरिर  
यिरायिर-सुहासुह-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति  
णिमिण-तित्थयर उच्चागोद पचतराह्याण को वधो को अवंधो ?  
॥ १०० ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठी वंधा, अवधा णत्थि ॥ १०१ ॥

एदस्स अत्थो परविस्सदे— मज्जुसाठ-मज्जुसगह ओरात्थियसरिर-ओरात्थियसरिरभंगतेव-  
वज्जसिइसंपहम-मज्जुसगहपाओम्मात्तुपुम्भी-अजसकित्ति-तित्थयरान् उवधायावादा अजसकित्ति  
अ पपडीअमुदयओप्पेदाभावाओ 'वधाओ उवयस्स किं पुम्भं किं वा पप्पम वोप्पेदो होदि' ति  
एत्थ परिकट्टा णत्थि ।

पंचपञ्चावरणीय-वत्तदसपावरणीय-पुरिसकेह-पंचिदियज्जालि-तेजा-कम्महवसरिर-वज्ज-  
पंच-रस-पज्ज-अगुसज्ज-तत्त-वावर-पज्जत्त-यिरायिर-सुहासुह-सुमगह-जस-अजसकित्ति-  
णिमिणुच्चागोद-पंचतराह्याण सोदओ वंधो, एत्थ पुत्रोदयचाओ । विहा-पयत्त सादत्तद

मज्जुपगतिप्राप्तोम्मात्तुपूर्णी, अगुसज्ज, उपपात्त, परपात्त, उप्पत्ताम, प्रपत्तविहायोगति, वत्त,  
वावर, पर्वात्त, प्रलेकस्सीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्सर, आदेय, यज्जकित्ति,  
अजसकित्ति, निमान, तीर्यकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्धक और  
कौन अकन्धक है ? ॥ १०० ॥

बह सज सुगम है ।

असंपत्तसम्पगट्ठि कन्धक हैं, अकन्धक नहीं हैं ॥ १०१ ॥

इसके अर्थकी प्रकृषणा करते हैं— मज्जुप्पायु, मज्जुपगति जीवन्मूर्च्छापर,  
जीवन्मूर्च्छापरिणोपाय कज्जपमसंहनन मज्जुपगतिप्रायोग्यानुपूर्णी अयथाधीर्ति और  
तीर्यकर, इनके उवपक्का जमाव हमिसे तथा छाप प्रकृतियोंके उवपक्कुप्पेदका जमाव  
होनेसे कन्धसे उवपक्का क्या पूर्वीय या क्या पक्काप्प मुक्केह होता है इस प्रकृषणी  
यहां परीक्षा नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय प्रकृषकेह पंचिदियज्जालि तेजस व  
कम्मव शरीर, वत्त शब्द एत एतौ अगुसज्ज वत्त वावर, पर्वात्त स्थिर, अस्थिर,  
शुभ अशुभ सुमग, आदेय यज्जकित्ति निर्माण कज्जगोत्र और पांच अन्तराय इनका  
उवोदय इत्य होता है, अर्थोक्ति, ये धर्मा सुबोधनी हैं । निमा प्रकट्टा साता व अत्तत्ता

मनुस्साठ-तिरिक्खगइ-मज्झसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियआदि-ओराटिय  
 तेजा-कम्मइयसरीर-छसअण-ओराटियसरीरअंगोवग-छसअण-वण्ण गव-रस-फ़स-तिरिक्खगइ-  
 मनुस्सगइपाओगालुपुष्पी-अगुरुवठहुव उवपाइ-परपाइ-उस्सास-आदावुओव-दोविहायगइ-तस-  
 चावर-बादर-सुहुम-पउअसापमस वतेयसरीर-साइरण-विरायिर-सुहुसुह-सुमग-डुमग-सुस्सर-  
 हुस्सर-आदेअ-अणदेअ-असकिंति-अससकिंति-गिमिण-भीबुआागेइ-पंचंतराइयमयईओ एत्थ  
 बच्छमापियाओ । एइंदियमस्सिदूअ एइंसि पकूवणं कस्साओ— इत्थि-पुरिसवेद-मनुस्साठ  
 मज्झसगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियआदि-अर्णतिमपचसंअण-ओराटियसरीरअंगोवग-  
 छसअण-मनुस्साइपाओगालुपुष्पी-दोविहायगइ-तस सुमग-सुस्सर-हुस्सर-आदेअ-उअचओदापं  
 उदयामावओ सेसप्पसुइयवोअेदामावओ ' उदयाओ वओ किं पुअं वोअिअजिदि किं पअअ  
 वोअिअजिदि ' ति विचारो वत्थि, संनसताप सण्णियासविरोहाओ ।

पंचपाप्मावरणीय-चउरसुपावरणीय मिअस-जवुसयवेद-तिरिक्खाठे-तिरिक्खपइ-एइ  
 दियजदि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण गव-रस-फ़स अगुरुवठहुव-चावर-विरायिर-सुहुसुह-डुमग

मनुष्यायु, तिर्षमासि मनुष्यगति एकेन्द्रिय त्रीन्द्रिय बीन्द्रिय, चतुन्द्रिय एवेन्द्रिय  
 जाति जीवारिक सैजस व कर्मज शरीर, छह संस्वान जीवारिकशरीरतांगोपांग छह संहनन  
 वर्ण गन्ध रस स्पर्श, तिर्षगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुवठ  
 वपघात पटघात उअ्यास आताप वयोत दोनो विहायोगतिपां अस स्यावट, बादर  
 सूक्ष्म पर्माण्व अपघात, प्रत्येकशरीर, साधारण स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग  
 दुर्मग सुस्वर, दुस्वर, अनेय अमानेय यथाकीर्ति अयथाकीर्ति निर्माण जीव व अअ गोत्र  
 और पांच क्खराय प्रकृतिपां यहाँ वप्यमास प्रकृतिपां हैं । एकेन्द्रिय जीवका आसय  
 करके इनकी प्रकृपया करते हैं— जीवेद पुरुषवेद मनुष्यायु मनुष्यगति त्रीन्द्रिय  
 बीन्द्रिय चतुन्द्रिय एवेन्द्रिय जाति जन्तिम संस्वानको छोड़कर पांच संस्वान  
 जीवारिकशरीरतांगोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी दो विहायोगतिपां अस  
 सुमग दुर्मग, सुस्वर, दुस्वर, अनेय और उअयोगत्र इनके उअपअ अमाव होनेसे तथा दोव  
 प्रकृतिपांके कययभुअेअअ अमाव होनेसे यहाँ उअयस वण्ण क्या पूर्वमें धुअिअ  
 होता है या क्या पअ्यात् धुअिअ होता है यह विचार महीं है क्योंकि सत् और  
 असत्की समानताका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय आठ इडांजावरणीय मिथ्यात्व, मनुंसकवइ तिपमायु  
 तिर्षगति एकेन्द्रिय जाति सैजस व कर्मज शरीर, वर्ण गन्ध रस स्पर्श, अगुरुवठ,

एवमसंभ्रमसम्प्राप्तिरिह वाप्यस्यैव पञ्चया, योपपञ्चयसु योपपञ्चयसुमिति-  
 न्तुसमवेदपञ्चयावममावाते । सेसं सुगमं । एतासि पयडीयं पंचो मनुसमसंज्ञते । देवा  
 सामी । वचनानं सुगमं । वचनविशयो एव वरिषि । पंचपाण्यवरणीय-सदसपावरणीय वचन-  
 कसाय-मय-दुग्ध-तेजा-कम्पदयसरैर वचनं गंध-रस-पत्रस-अगुरुतनुय-ठवधा-मिमिष-पंचं  
 तरुदयानं तिविहो पंचो, धुवाभावाते । सेसान पयडीयं सावि-अनुनो, अनुभवविषयो ।

इदियाणुवादेण एहंदिया वादरा सुहुमा पज्जता अपज्जता  
 बीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पज्जता अपज्जता पंचिंदियअपज्जतानं  
 पचिंदियतिरिक्खअपज्जतभंगो ॥ १०२ ॥

एवमप्यजसुत देसामासिय, वचनमात्रपयडीय संखमवेक्षित्य अवह्विताते ।  
 तत्रेदेव सुहृदयपुरुषं कस्सामो । त जह्नु — एव ताव वचनमात्रपयडिभिरेसं कस्सामो ।  
 पंचपाण्यवरणीय-अवदसपावरणीय-सादस्ताव मिच्छत-सोत्सकसाय-अपनोकसाव-तिरिक्खता-

यहां असंयतसम्प्राप्ति गुणस्वात्मं व्याप्तीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि, ओषप्रत्ययोंमेंसे  
 औदारिकद्विक, स्त्रीवेष्ट और लघुसकवेष्ट प्रत्ययोंका समाच है । होय प्रत्ययप्रकृपच सुगम  
 है । इन प्रकृतियोंका वचन मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । देव स्वामी हैं । वचनप्राप्त सुगम  
 है । वचनविशयो यहां है वही । पांच कामावरणीय छह वर्शनावरणीय वाद्य कपाय  
 मय जगुप्ता है वचन व कामच वादी, वचन वचन रस स्वर्ण अनुदयसु, उपधात निर्माण  
 और पांच वचनराय इनका तीव्र प्रकृतका वचन होता है क्योंकि सुख वचनका समाच  
 है । होय प्रकृतियोंका सावि व अह्वय वचन होता है क्योंकि, वे अह्वयवचनी हैं ।

इन्द्रियमार्गानुसार एकेन्द्रिय, वाक्, सूक्ष्म, इनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय,  
 श्रोत्रिय, चतुर्इन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त तथा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृपया पंचिन्द्रिय  
 तिर्यच अपर्याप्तोंके समान है ॥ १०२ ॥

यह अपर्याप्तदेवामार्गक है क्योंकि, वचनमात्र प्रकृतियोंकी [१०१] संख्याकी अपेक्षा  
 करके अवहित है । इसी कारण इससे युक्ति अपर्याप्त प्रकृपया करते हैं । वह इस प्रकार  
 है— यहां पंडिते वचनमात्र प्रकृतियोंका निर्देश करते हैं । पांच कामावरणीय वी वर्शना-  
 वरणीय साता व वचनमात्र वेदनीय मिच्छात्व सोढह कपाय वी ओषकाव तिर्यमात्र,

१ अर्थात् चतुर्इन्द्रियमात्र अपर्याप्त पचिंदियमात्र अपर्याप्त वाक् । चतुर्इन्द्रियमात्र-  
 अपर्याप्त । चतुर्इन्द्रियमात्र अपर्याप्त इति वाक् ।

२ अर्थात् -इन्द्रियमात्र । वाक् । -इन्द्रियमात्र इति वाक् ।

मनुस्साउ-तिरिक्खगइ-मनुसगइ-एहंदिम-मीहंदिम-तीहंदिम-धउरिंदिम पंविदिमयादि-भोरात्ति  
 तेजा-कम्मइयसरीर-ससंयण-भोरात्तिमसरीरअंगोवग-उसमइण-वण्ण गंध-रस-फस-तिरिक्खगइ  
 मनुस्सगइपाओगाणुपुब्बी-अगुरुवत्तुव-उवपाद-परपाद-उस्सत्त-आदावुमोव-दोविहायगइ-तस-  
 यावर-वावर-सुदुम-पञ्चपापमत्त पत्तेयसरीर-साहारण विराविर-सुहासुइ-सुमग-डुमग-सुस्सर-  
 दुस्सर-आदेव-अपादेव-असकिंति-अवसकिंति-मिप्पि-भीणु-उत्तागोद-पंचतराइयपयईओ एत्थ  
 पच्छंमपियाओ । एहंदिममस्सिदण एवासिं परूवणं कत्तामो— इत्थि-सुरिसवेद-मनुस्साउ  
 मनुसगइ-मीहंदिम-तीहंदिम-धउरिंदिम-पंचविदिमयादि-अष्टतिमपचसंयण-भोरात्तिमसरीरअंगोवग-  
 उस्समइण-मनुस्सगइपाओगाणुपुब्बी-दोविहायगदि-तस सुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेव-उत्तागोदाणं  
 उहयामावाओ सेसाणमुदयवोष्णेशामावाओ ' उदयाओ वओ किं पुब्बं वोष्णिज्जदि किं पच्छं  
 वोष्णिज्जदि ' ति विचारो पत्थि, सतासंतारणं सप्पियासविउहाओ ।

पंचपायावरणीय-धउदसपावरणीय मिच्छत-मनुसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एहं  
 दिमयादि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस-फस अगुरुवत्तुव-यावर-विराविर-सुहासुइ-डुमग

मनुष्यायु, तिर्पंगति मनुष्यगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय  
 जाति औदारिक, तीजस व कर्मण शरीर छह संस्थान औदारिकशरीरंगोपांग छह संहनन,  
 वर्ण गन्ध रस स्पर्श तिर्पंगतिप्रायोगानुपूर्वी मनुष्यगतिप्रायोगानुपूर्वी, अगुरुवत्तु  
 उपपात परपात उच्छ्वास आताप उद्योत दोमो विहायोनियां, अस स्यावर, वावर,  
 सुदुम पर्पात अपर्पात प्रत्येकशरीर, साधारण स्थिर, अस्थिर, शुभ मधुम सुमग  
 दुर्मग सुस्वर, दुस्वर, आदेय अनदेय पञ्चकीर्ति अवशकीर्ति निर्माण नीच व उच्च गोत्र  
 और पांच क्स्तरय प्रकृतियां यहाँ ब्रह्ममान प्रकृतियां हैं । एकेन्द्रिय जीवका आत्मप  
 करके इनकी प्रकृति करते हैं—जीवेष्ट उदयवेष्ट मनुष्यायु मनुष्यगति द्वीन्द्रिय  
 त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय जाति अन्तिम संस्थानको छोड़कर पांच संस्थान  
 औदारिकशरीरंगोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्रायोगानुपूर्वी दो विहायोनियां अस  
 सुमग सुस्वर, दुस्वर आदेय और उच्छ्वास इनके उदयपक्ष समाप्त होनेसे तथा शय  
 प्रकृतियोके उदयपक्षसेइका समाप्त होनेसे यहाँ उदयपक्ष ब्रह्म क्या पूर्वमें व्युच्छिन्न  
 होता है या क्या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है यह विचार नहीं है क्योंकि, सत् और  
 असत्की समानताका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार वर्तमानावरणीय मिच्छात्त नपुंसकवेष्ट तिपगायु,  
 तिर्पंगति एकेन्द्रिय जाति तीजस व कर्मण शरीर वर्ण गन्ध रस स्पर्श, अगुरुवत्तु,

अपदेन्य-मिमिष-मीनगोत्र-यंचतराद्यापं सोद्वो बंधो, एष एषाति पुरोरर्कस्यो ।  
सादासादे-सोत्सकसाय-सम्पाकसाय आदाबुन्वाय बादर-मुहुम-यम्भस-अपम्भस-पतेन-अस-  
रम्भसरीर-असक्तिरि-अवसक्तिपीवं सोदय-परोद्वो बंधो, अद्युषोदयसाहो । भोष्टिमिष-  
हुडसंय-उववादाय पि सोदय-परोद्वो बंधो, निगहगदीए उदयामावे नि बंधुवत्तया ।  
तिरिक्खगद्वाभोगमात्तुपुष्पीए पि सोदय-परोद्वो, गद्दिस्सत्तिसु उदयामावे नि बंधरत्तयो ।  
परबाहुस्सासापं पि सोदय-परोद्वो बंधो, अपम्भसद्वय उदयामावे नि बंधरत्तयो ।  
अवमेसापं परोद्वो बंधो, एष तामि सप्यो उदयामासाहो ।

पंचपापरणीय-अवदंसगावरणीय मिष्यत्त-सोत्सकसाय-अय-हुगुंछ-तिरिक्ख-स-  
स्साउ भोष्टिय-तेवा-कम्मइयमीर-बन्ध-यंच-रस-छास-अगुल्लठुग-उवपाद-मिमिष-यंच-  
इमापं भित्तो बंधो, एगसमएव अगुवरमावाहो । सादासाह-सत्तयेकसाय-अमुत्तम-अति-  
पीद्वि-पीद्वि-अतिद्वि-यंचि-विजजति-असंय-भोष्टियसरीर-अंगोव-असंय-अमुत्त-

स्वावर, स्विट, अस्विट, हुम अमुम पुर्मय अजतेय निर्माण मीनगोत्र और पांच  
अन्तराय इनका स्वेत्य बन्ध होता है क्योंकि इनका भुय वक्ष देखा जाता है ।  
सादा व असादा वेदनीय सोद्व कपाय छह बाकपाय आताय उघात बादर,  
एषम पर्पात्त अपर्पात्त प्रत्येक, सादाएव छाटीर, एषाकीर्ति और अषाकीर्ति इनका  
सायपरोद्व बन्ध होता है क्योंकि ये अमुषोदयी प्रकृतिपा हैं । भौद्वीकछाटीर,  
हुडसंस्वान और उपसातका भी स्वाद्यपरोद्व बन्ध होता है क्योंकि, विमहगतिमें  
इनके वक्षका अभाव होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । तिर्यगतिमापोत्पातुपूर्विका भी  
स्वेत्यपरोद्व बन्ध आता है, क्योंकि, जिन जीर्णोने छाटीर प्रहज करछिपा हैं इनके  
तिर्यगतिमापोत्पातुपूर्विके अवयव अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । परचात और  
उववादाय भी स्वाद्यपरोद्व बन्ध होता है क्योंकि, अपर्पात्तकाअर्थ वक्षामावे  
होनेपर भी वक्ष बन्ध देखा जाता है । शय प्रकृतिवोला पठव्य बन्ध होता है क्योंकि,  
वहाँ इनके वक्षका सर्वथा अभाव है ।

पांच आवापरणीय और अवापरणीय मिष्यात्त सासह कपाय अब सुगुप्ता  
तिर्यगायु अमुप्तायु, मौद्वारिक, तेजस व कार्यय छाटीर बंध बन्ध एष स्वो अमुकस्य  
उपघात निर्माण और पांच अन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समबसे  
इनके वक्षविधामका अभाव है । सादा व असादा वेदनीय सात मोकपाय अमुप्ययति  
वक्षमिष डीमिष भीमिष अतुरिमिष पंचेमिष जाति छह संस्वान मौद्वारिक

पाभागानुपूर्वी आद्यावु जेव-नविहायगइ तम यावर-सुनुम-अप अत्त साहारणमरीर-भिराधिर-  
सुमामुम-सुमग-दुमग-सुस्म-दुस्म-आदे-अ-अपादे-अ-अजसकिरि-अजसकिरि उच्चसोदान  
संतरा कथा, एगममाण पंधुवरमईमणादो । निगिरउगइ-तिरिउगइपाभोगानुपूर्वी  
पीचागादाय सानर-भितरा कथो, मण्हेइदिण्मु सानरकाणमेदामि तउ-आउकाइएमु भिरंत  
पंधुवर्तमादो । परघादुम्माम-याद-प अत्त-पत्तपमरीराण कथो सानर गित्तो । कथं गिरंत ?  
एइदिण्मुपण्णवेवाणमंतामुनुत्तकलं गित्तगपदंमणादो ।

एइदिण्मु मिच्छतत्पंजम-कम्माय जोगभदेण चत्तारि मूत्तपच्चया । पचमिच्छतपच्चया ।  
कुदा ? पचमिच्छत्तहि सह णाणामनुस्मान्मेइदिण्मुपण्णाण पंचमिच्छतुवर्तमानो । एगो  
एइदियासंजमो, छपाणासजमा, कम्माया सोल्लस, इत्थि-पुरिसवदहि विजा ओकसाया सत्त,  
भोरत्थियदुग-कम्मइममिदि तिण्णि जोगा, एदे सच्च वि अट्ठीम उत्तरपच्चया । पवरि  
तिरिउ मनुस्माउमार्ण कम्मइयपण्णविजा मत्तत्तीस पत्तया । एककम्म अट्ठरस

पटीरंगापांग छह महम्म मनुप्पगनिपापाण्पाणुपूर्वी आताप उपाण वा विहायांगतयां  
अत्त व्यावर, सुत्तम अपयीत्त माधारणकारीण स्थिर, अस्थिर शुभ अशुभ सुमग  
दुर्मग सुत्तर, दुस्तर अश्रय अमश्रय, पडाकीरि अया-कीरि और उच्चगात्र नका  
मात्तर बन्ध हाता है क्योंकि एक समयमें इनका बन्धविग्राम होता जाता है ।  
तिर्यगाति निर्यमनिपायोग्यानुपूर्वी मार नीचगोत्र इनका सात्तर-निरत्तर बन्ध हाता  
है क्योंकि मर्य एकत्रियोंमें सामान बन्धबामी इन प्रकृतियोंका तजकायिक य वायु  
कायिक जीवोंमें निरत्तर बन्ध पाया जाता है । परन्तु -उच्चबाम वावर, पर्याप्त और  
प्रत्यक्षकारी प्रकृतियोंका बन्ध सामान निरत्तर हाता है ।

शुद्ध—इमका निरत्तर बन्ध कैस होता है ?

समाधान—क्योंकि एकत्रियोंमें उत्पन्न हुए द्वाक अन्तमुहत्त कास तक इनका  
निरत्तर बन्ध रहता जाता है ।

एकत्रियोंमें मिथ्यात्व अनेयम कयाय और पाणक मन्त्र भाग मूळ प्रत्यय  
हान है । उत्तर प्रत्ययोंमें पांच मिथ्यात्व प्रत्यय क्योंकि पांच मिथ्यात्वोंके साथ  
एकत्रियोंमें उत्पन्न हुए नामा मनुष्योंक पांच मिथ्यात्व प्रत्यय पाये जाते हैं । एक  
एकत्रियासंजम छह प्राणि असंजम सांखर कयाय की और पुरुष केके बिना सात  
नोकयाय तथा वा भीकारिक व कामेज ये तीन योग य सब ही अट्ठीस उत्तर प्रत्यय  
एकत्रियोंमें होते हैं । विशेषता कह्य यह है कि निवगायु य मनुष्यायुके कामेज प्रत्ययके  
बिना बीतीस प्रत्यय होते हैं । ग्यारह य अठारह एक समय सम्बन्धी अयन्य और उत्कृष्ट



पाभामाणुपुष्पी-आपाणु जोत्र-विद्यापगड तस-बावर-सुहम अपज्जत साहारणप्पीर-भिराप्पि-  
सुमासुम-सुभग-सुभग-सुम्म-सुम्म आदेज्ज-अपादेज्ज-असक्ति-असक्ति-उच्चागोदाण  
सातर पंधो, पगमपण पधुवमदम्मादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोगाणुपुष्पी  
पीचागोदाण सांतर-गिरतर पंधो, मध्वेण्णिगसु सांतरपाणमेदामि तेठ-वाउकाइएसु गिरतर  
पधुवठमादो । परपादुम्माम-पावर-प जत्त-पत्तपसरीराण पंधो मांतर-पिंतगे । कध गिरतर ?  
एइदिएसुपण्णदेवाणमतोसुहुत्तकलं गिरतरपधमपादो ।

एइदिएसु मिच्छतामज्जम-कमाय जागभवेण पचारी मूलपण्णया । पंचमिच्छतपण्णया ।  
कुदा ? पंचमिच्छतेहि सह पाणामणुम्याणमेइदिएसुपण्णाय पंचमिच्छतुवठमादो । एगो  
एइदियासज्जो, उपापासज्जमा, कसाया सोत्तम, इत्थि-पुरिसवंदहि विणा भोक्साया सत्त,  
ओरात्थियदुग-कम्मइयमिदि तिणि जागा, एदे सव्वे वि भट्टसीस उत्तरपण्णया । गवरि  
तिरिक्ख मणुत्साठवाण कम्मइयपण्णया विणा मत्तसीस पण्णया । एककारम अट्टारस

शरीरपापों छह सहस्र मनुष्यगणिप्रमाणानुपूर्वी जाताय उपात वा विहायागतयां  
जस स्वावर, सूक्ष्म अपर्याप्त साधारणशरीर स्थिर मस्थिर शुभ भद्रम सुभग  
दुर्मग सुम्भर दुम्भर आदय अनार्येय यदाकीर्ति अथवाकीर्ति और उच्चगोत्र इनका  
साम्प्रत बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविद्याम देखा जाता है ।  
तिर्यग्यति तिर्यग्यनिप्रामोत्यानुपूर्वी और नीचगोत्र इसका साम्प्रत-निरन्तर बन्ध होता  
है क्योंकि सब एकस्त्रियोंमें साम्प्रत बन्धबानी इन प्रकृतिपोंका तजकायिक व वायु  
कायिक जीवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परंपात अणुबान वावर, पर्याप्त और  
प्रत्यक्षशरीर प्रकृतिपोंका बन्ध साम्प्रत निरन्तर होता है ।

शुद्ध—“मम निरन्तर पण्ण केस होता है ?

समाधान—“क्योंकि एकस्त्रियोंमें उत्पन्न हुए द्रव्यों अन्तमुद्धत कास तक इनका  
निरन्तर बन्ध देखा जाता है ।

एकस्त्रियोंमें मिथ्यात्व मत्तयम कपाय और वागक भेदस्य जाग मूळ प्रत्यय  
जात है । उत्तर प्रत्ययोंमें पाँच मिथ्यात्व प्रत्यय क्योंकि पाँच मिथ्यात्वोंके साथ  
एकस्त्रियोंमें उत्पन्न हुए भाजा अनुप्योक्त पाँच मिथ्यात्व प्रत्यय पाये जात है । एक  
एकस्त्रियासंभम छह प्राप्ति मत्तयम सोलह कपाय की और पुरुष वेदके विना सात  
नोकपाय तथा दो नीचारीक व कर्मण ये तीन योग ये सब ही भट्टसीस उत्तर प्रत्यय  
एकस्त्रियोंमें होते हैं । विशेषता कथक यह है कि तिपगायु व मनुष्यायुके कर्मण प्रत्ययके  
विना सीसीस प्रत्यय हात है । प्यारह व अठारह एक समय सम्बन्धी जगन्म और उत्कृष्ट



एगसमहयजह्युनकस्तपन्वया ।

तिरिक्छाट [ तिरिक्छगद् ] तिरिक्छगद्वाजोम्यानुपुष्पी-आवापुष्पीव-वावर-सुहुम-साहसपस्तीराणि तिरिक्छगद्संज्ञं वक्ष्यति । मनुस्साउ-मनुस्सग-मनुस्सानुपुष्पी उवागोदणि मनुयगद्संज्ञं वक्ष्यति । अवसेमानो पयडीवो तिरिक्छगद् मनुसगद्संज्ञं वक्ष्यति, दुगद्दि विरोहामावातो । एहदिया सामी । वषद्यापं सुगमं । वषयोभ्येशो वति । पषप्यावावरीय वषदंस्यावरीय-मिच्छत-सोत्सकसाय-मय दुगुंछा-तेवा-कम्महयसरीर-वन्वचउक्क-अगुस्स छुव-उववाद-विमिष-पेषंतराह्यायं चउम्बिहो वषो । अवसेसायं सादि-अद्दुवो ।

एवं वादरपद्दियाम् । ववरि वादर सोदएण वक्ष्यति । सुहुमस्स परोदवा वषो । वादरएहदियपन्वचाण वादरोदियमंगो । ववरि पन्वचस्स सोदवो, अपन्वचस्स परोदवो वषो । वादरपद्दियवप-वत्तप पि वादरपद्दियमंगो । ववरि वीणमिच्छितिय-परघादुस्सास मादापुष्पीव पन्वच-असक्तितीणं परोदवो वषो । अपन्वच-अवसक्तितीणं सोदवो । परघादुस्सास-वादर

प्रत्यय इति ।

तिर्यंगात् [ तिर्यंगति ] तिर्यंगतिप्रायोग्यानुपुष्पी आताप उघात स्थावर, सूत्रम और साधारणघटीरको तिर्यंगतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्यासु मनुष्यगति मनुष्यासु पूर्वी और उच्छगोदको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । हाथ प्रकृतिपोंको तिर्यंगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधत हैं, क्योंकि दोनों गतिपोंके साथ उनके वन्धका विरोध नहीं है । एकेश्वर जीव स्वामी हैं । वन्धाप्याल सुगम है । वन्धमुच्छेद है नहीं । पाँच ज्ञानावरणीय भी ईशानावरणीय मिथ्यात्व साक्षर कयाव मय पुगुप्ता तैजस व कामज दापीर, वर्णादेक वाट, अगुक्कसु उपघात निर्माण और पाँच भस्तराव इनका साथ प्रकटका पन्ध होता है । हाथ प्रकृतिपोंका सामि व अग्रप वन्ध होता है ।

इसी प्रकार वादर एकेश्वर जीवोंकी भी प्रकृषा है । विशेष इतना है कि इनका वादरनामकर्म स्तोत्रयस वंमता है । सूत्रम प्रकृतिव वन्ध परोदपसे होता है । वादर एकेश्वर पयात्त जीवोंकी प्रकृषा वादर एकेश्वरोंके समान है । विशेषता केवल इतनी है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिव स्तोत्रय और अपर्याप्त प्रकृतिव परोदप वन्ध होता है । वादर एकेश्वर अपर्याप्त जीवोंकी भी प्रकृषा वादर एकेश्वरोंके समान है । विशेष यह है कि स्थानानुविध्य परघात उच्छास आताप उघात पर्याप्त और वशाकीर्तिका उनके परोदप वन्ध होता है । अपर्याप्त और अपवाकीर्तिका स्तोत्रय वन्ध होता है । परघात,

पञ्चसप्त-पत्तयसरीराभेदद्विषसु सांतर-भिरंतरो वषो । एतत् पुन सांतरो वेष, अपञ्चत्तेसु  
देवाणमुपपत्तीष अमावाशे । भौरात्रियकयजोगपञ्चमो णत्थि । सुहुमएइदियानं एइदियमंगो ।  
अवरि परपादुस्सास-बादर पञ्चसप्त-पत्तयसरीराणं सांतरो वषो, सुहुमेइदियसु देवाणमुपवादा-  
मावाशे । बादर आदाउञ्जोम-जसकितीष परोदमो वषो । सुहुमेइदियपञ्चत्ताणं [ सुहुमेइदिय-  
मंगो । अवरि पञ्चसप्तस सोदमो, अपञ्चसप्तस परोदमो वषो । सुहुमेइदियमपञ्चत्ताणं ]  
सुहुमेइदियप-नत्तमंगो । अवरि वीणगिदितिय-परपादुस्सासपञ्चत्ताण परोदमो वषो ।  
अपञ्चसप्तनामसु सोदमो । पञ्चणसु भौरात्रियकायजोगपञ्चमो अवषेद्वो ।

संपधि वीइदियाण मणामो— इति-पुरिसवेद मणुस्साउ-मणुसगइ-एइदिय  
तीइदिय-वठरिदिय-पंदिदियवादि-अर्णतिमपंचसंअण-पंचसवइण-मणुमगइपामोमाणुपुम्बी-  
वादाव-पसत्थविहापगदि-मावर-सुहुम-साइरणसरीर-सुमग-सुस्सर-आदेव्ज उञ्चगोवाणमुदया-  
मावाशे सेसपयइीणं चोइयवोण्णेदामावाशे वेइदियसु पंदिदियतिरिक्कअपञ्चसप्तदि

उच्छ्वास बाहर पर्याप्त भीर प्रत्यकदासीर, इसका एकेन्द्रियोंमें साम्तर मिरस्तर वण्ण होता है । परन्तु यहाँ उनके साम्तर ही वण्ण होता है क्योंकि अपर्याप्तकोंमें देवोंकी उत्पत्तिक्रममात्र है । यहाँ प्रत्यक्षोंमें भौतिक कथयोग प्रत्यक्ष नहीं है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी प्ररूपणा एकेन्द्रियोंके समान है । विदोयता यह है कि परमात्मा उच्छ्वास बाहर पर्याप्त भीर प्रत्यकदासीरकर उनके साम्तर वण्ण होता है क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें देवोंकी उत्पत्तिक्रममात्र है । बाहर आत्मा उद्योत भीर यज्ञकीर्तिकर परोक्ष वण्ण होता है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्ररूपणा [ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके समान है । विदोय इतना है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिकर व्याप्य भीर अपर्याप्त प्रकृतिकर परोक्ष वण्ण होता है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा ] सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है । विदोय इतना है कि कथानुवृत्तिपर परमात्मा उच्छ्वास भीर पर्याप्त प्रकृतिकर परोक्ष वण्ण होता है । अपर्याप्त सामर्थ्यका स्वप्न वण्ण होता है । प्रत्यक्षोंमें भौतिककाधपण प्रत्यक्षके कम करना चाहिये ।

अब द्वीन्द्रिय जीवोंकी प्ररूपणा करते हैं— एकाक्ष मनुष्यदेह मनुष्यायु मनुष्य गति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय अत्रिन्द्रिय पंचन्द्रिय जाति अन्तिम संस्थानको छोड़ दोष पांच संस्थान अन्तिम संहमनको छोड़ दोष पांच संहमन मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी आत्मा प्रशस्तविहायोगति स्थावर, सूक्ष्म साधारणदासीर, शुभम सुख्यर, जात्य जीर उच्छ्वासा इनके उद्गमका ममात्र होमसे तथा दोष प्ररूपियों उद्गम-मुच्छ्वासा ममात्र होमसे पंचन्द्रिय

१ अर्थात् सुदुष्टादिवानि वेदिवर्मनो आर्या सुदुष्टादिवानि वेदिवर्मनो अर्थात् सुदुष्टादिवानि वेदिवर्मनो इति वाङ् ।

२ अत्रिन्द्रिय पारिव वीरिव वीरिव इति वाङ् ।

परासमभ्यजद्विगुणस्तस्यपञ्चया ।

तिरिक्छाठ [ तिरिक्खगह ] तिरिक्खगहपाओमाणुपुष्पी-आदासुग्गाव-वावर-सुहुम  
साहारणसरीराणि तिरिक्खगहसंस्तुर्षं वन्दंति । मणुस्साठ-मणुस्सगह-मणुस्साणुपुष्पी उवाओदाणि  
मणुसगहसंस्तुर्षं वन्दंति । अवसेसाओ पयवीओ तिरिक्खगह मणुसगहसंस्तुर्षं वन्दंति, दुर्गादि  
विगुहमावाओ । एहंदिआ सामी । वण्डाणं सुगमं । वषयोच्छेदो जति । पंणण्णवरणीय  
अवदंसवावरणीय-मिच्छत्त-सोत्तकसाय-मय दुर्गुज्ज-तेआ-कम्मइयसरीर-वण्णवत्तक-अणुस-  
स्सुव-उववाइ-पिमिण-पंचतराव्याणं चठम्बिहो वओ । अवसेसार्यं सादि-अद्दुओ ।

एवं वादरपुद्गलियाच । जवरि वादरं सोदण्ण वज्जदि । सुहुमस्स पण्डओ वओ ।  
वादरपुद्गलियपञ्चत्ताय वादरेहंदिअमंगो । जवरि पञ्चत्तस्स सोदओ, अपञ्चत्तस्स परोदओ वओ ।  
वादरपुद्गलियमपञ्चत्तायं पि वादरपुद्गलियमंगो । जवरि वीणागिद्धितिय-परघाहुस्सास-आत्तलुओव  
पञ्चत्त-असकिणीयं परोदओ वओ । अपञ्चत्त-असकिणीयं सोदओ । परघाहुस्सास वादर

प्रत्यय हाते हैं ।

तिर्यग्गायु [ तिर्यग्गाति ] तिर्यग्गातिप्रायोनवानुपूर्वी आताप उघात स्वावर, सूक्ष्म  
भीर साधारणशरीरके तिर्यग्गातिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्याय मनुष्यगति मनुष्याडु  
पूर्वी भीर वज्जगोत्रके मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतिषोंके तिर्यग्गति  
य मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, वानों गतिषोंके साथ उनके वज्जका विशेष  
मर्त है । एकेन्द्रिय जीव सामी है । वज्जाण्णल सुमम है । वज्जणुच्छेद है नहीं । पांच  
घातावरणीय नी वरानावरणीय मिथ्यात्व सोदह कयाय मय लुगुप्ता तैवत्त व  
कामंय छोट, चर्मादि आट, अगुरकमु उपवत्त मिर्माण और पांच अन्तःपय इनका  
आटे प्रकारका वज्ज हाता है । शेष प्रकृतिषोंके सादि व अजुय वज्ज होता है ।

इसी प्रकार वादर एकन्द्रिय जीवोंकी भी प्रकृपणा है । विशेष इतना है कि इनके  
वादरआमकर्म स्वरूपसं वंयता है । सूक्ष्म प्रकृतिका वज्ज परोदयसे होता है । वादर  
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रकृपणा वादर एकन्द्रियोंके समान है । विशेषता केवल इतनी  
है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिवज्ज स्वरूप भीर अपर्याप्त प्रकृतिवज्ज परोदय वज्ज होता है ।  
वादर एकन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी भी प्रकृपणा वादर एकन्द्रियोंके समान है । विशेष यह  
है कि स्थावरपुद्गल परमात उच्छ्वासा आताप उघात पर्याप्त भीर पराकीर्तिका इनके  
परोदय वज्ज होता है । अपर्याप्त भीर अपराकीर्तिका स्वरूप वज्ज होता है । परघात,



यत्प्रमाणपयदीप्तो वधमाणेषु ' यथाहो उदयो किं पुन्यं किं वा पञ्चम बाष्पिण्यो ' ति विचारो बलि ।

यंचण्णावावर्णीय-यउदसपावर्णीय मिच्छत-यजुंगयवेद-तिरिक्खाड-तिरिक्खाड-  
वीहृदियवादि तेजा-कम्महयसरीर वण-गध-रम-फाम-अगुरुवत्तुभ-सस-बादर भिराविर-सुमा  
सुम-दुमग-वजादेव-विमिष-पीनगोद-यवतरायइयाणं सोमो वधो, एतथ एदामि पुणेदयत्त  
इसबादो । विहाणिहा-ययत्तययत्त-मात्तामाद-सोत्तमकमाय छणोक्कमाय-य-वत्तम-वत्त यम  
वत्तमकिरीष सोदय-सरादो वधो, उमयथा किं वधम्म विरोहामावाणो । आराडियसरीर  
हुंइसत्तु-आराडियमरीरअगोवग असपत्तयेवद्धमवत्तण उववाद्-यत्तयमरीरणं वि सोत्त-य-परोदो,  
विम्यहयरीए उदयामावे वि वंजुवत्तमाद्वा । तिरिक्खाडदिपाधागागुपुव्वीण वि मादय-परोदो  
वंधो, विमहहयरीए अण्णत्त उदयामाव [वि] वंधदयमाद्वा । परावुम्मासुजोय वण्णसत्तविहाय  
गइ-वुत्तराणं वि सोदय-परोदो वधो, अण्णत्तत्तत्त उदयामाव वि वंधदसमादो, उदयत्त  
उ-जोवावयविहिवाविहिदेसु वंजुवत्तमाद्वा । इति-पुरिस-मज्झिमाठ-मज्झमगइ-यहृदिय वीहृदिये

तियेव अण्णत्ताक द्वारा वण्णमान मठुतिपात्रा बांधमघाल ईमिन्द्रिय जीवाम वण्णम उदय  
क्या पूर्वोत्त या क्या पञ्चाङ्ग सुव्युच्छिन्न होता है यह विचार नहीं है ।

पांच क्षामावर्णीय आर द्वामावर्णीय मिच्छाण्ड लपुनकवद् निर्यगायु तिरं  
मानि ईमिन्द्रिय जाति तैजस य वधमय शरीर, वधं गन्ध रस स्पर्श अगुरुत्तु, वध  
वाक्का स्थिर, अस्थिर ध्रुम अनुम दुर्मग अनादय निर्माण नीचगात्र और पांच  
अन्तरात्र इनका स्वादय वण्ण होता है क्योंकि, यहाँ इनका भुज उदय देखा जाता है ।  
मित्रानिद्रा प्रचलाप्रचला साता व समाना वदनीय नोमह कपाय छह मोकपाय  
पर्याप्त अण्णत्त यत्तकीर्ति और अण्णत्तकीर्ति इनका स्वेत्तय पटोत्तय वण्ण होता है  
क्योंकि, इसमें प्रचलन भी इनका वण्णका विरोध नहीं है । अन्तरावर्णीय, दुर्गन्धस्वान  
और्वावर्णीयगीर्णोपांग अन्तर्माण्डपादिकार्णहलन उपपाय और प्रत्यक्षशरीर इनका  
भी स्वादय पटोत्तय वण्ण होता है क्योंकि मित्रहगतिमें उदयका अभाव होनेपर भी इनका  
वण्ण पाया जाता है । तिर्यगगतिप्राधान्यानुपूर्विका भी स्वेत्तय पटोत्तय वण्ण होता है, क्योंकि  
मित्रहगतिका छेदकर अण्णत्त उसका उदयामाव होनेपर भी वण्ण देखा जाता है ।  
पर्याप्त उच्छ्वास उद्योत अग्रशस्त्रविहायोगति और दुस्वरका भी स्वेत्तय-पटोत्तय वण्ण  
होता है । क्योंकि अण्णत्तत्तत्तत्तमें इनका वण्णामाव होनेपर भी वण्ण देखा जाता है तथा  
उद्योतका उद्योतके उदयसे रहित और उससे सहित जीवाम उसका वण्ण पाया जाता है ।  
अग्निहृद दुर्मगवेद मज्झिमाठ, मज्झमगति पञ्चमिन्द्रिय जीवित्य वज्जिन्द्रिय वधमिन्द्रिय जाति

चउरिंदिय पचिंदियवादि-अणतिमर्षबसअण-पचसचहण-मणुसगइयाओम्मापुप्पी-आदाव-  
पमरयविहायगइ-वावर-सुहुम-साहारणसरीर-सुभग-सुम्भर आदेन्नुष्पागोदाण परोदओ पचो ।

पंचमाणावरणीय-पचदसणावरणीय-मिच्छत-सोत्तमुकमाय-भय-दुर्गुह्य-तिरिच्छ-मणु-  
स्साउ ओरात्तिय-तेवा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फस-अगुस्सतनुय-उवषा-मिभि-पंचतरा-  
इयाण पित्तरो बंधो, एगसमएण चधुवरमाभावाओ । दोष्णमाठआर्ष पिरंतरो, एगसमएण  
वोप्पेदामाभावाओ । सात्तासाद-सत्तभोकमाय-मणुमण पइदिय-वीरिंदिय-तीरिंदिय चउरिंदिय  
पचिंदियवादि-असअण-ओरात्तियमरिअगोवंग-अयचहण-मणुसगइयाओम्मापुप्पी परपादु-  
म्मास-आदाठचवेष-ओविहायगइ-तम-धावर-वावर-सुहुम-पञ्चसपञ्चत-पसेप-सहतरणसरीर-  
धिराधि-मुहासुह सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर आदेन्नु अणादन्व-असकिप्पि-उष्पागोदाण सांतो  
पचो, एगसमएणेशसि पंधुवरमअंमणाओ । परपादुस्मास-वावर-पञ्चस-पसेवमरीरणमेइदिप्पसु  
ब सांतर-गिरंतरो बंधो किण्ण पकुविदो ? ण, देवाणमेइदिप्पसु ब विगलिदिप्पसु उवषाणामावाओ ।

अग्निम संस्थानये छद्मरूपा पांच संस्थान पांच संहनन मनुष्यगतिप्राप्तेषानुपूर्वी  
मानाय प्रशस्नविहायोगति स्थावर सूक्ष्म साधारणदारीर, सुभग सुम्भर आदेय और  
उचगोब इनका परोदय बन्ध होता है ।

पांच ब्रह्मावरणीय भी ब्रह्मावरणीय मिष्यान्व सोलह कपाय मय अगुप्ता,  
निर्वगायु मनुष्यायु भौतिक, मैत्रम व कर्मण शरीर बर्ण बन्ध रस सरा मणुकलपु  
उपपात निमाण और पांच अन्तरय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयमे  
इनके बन्धविधायक अभाव है । दो आयुओंका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक  
समयमे उनका बन्धमुच्छेदना अभाव है । साता व अमाता वेदनीय सात भोकपाय  
मनुष्यगति एकत्रिय द्वित्रिय त्रित्रिय चउरित्रिय पंचत्रिय आति छह संस्थान  
भौतिकशरीरांगोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्राप्यानुपूर्वी परपात उच्छ्वास  
मानाय उपोत दो विहायोगतिषा त्रम स्थावर वावर, सूक्ष्म पयाण मपर्याण  
प्रत्येक व साधारण दारीर स्थिर, अस्थिर भूम अमूम सुभग दुभग सुस्सर, दुस्सर  
भादय अमादय पदार्थनि रीग उच्छ्वासाव इनका आन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक  
समयमे इनका बन्धविधायक अभाव जाता है ।

शुक्ल—परपात उच्छ्वास वावर, पयाण और प्रत्येकदारीरका एकत्रिय द्वित्रिय  
समान आन्तर निरन्तर बन्ध क्यों नहीं कहा गया ?

समाधान—एकत्रियोंका समान विषयद्वित्रियोंके दोषोंकी उत्पत्ति न होनेसे यहां  
उक्त प्रकृतियोंका आन्तर निरन्तर बन्ध नहीं कहा गया ।

वञ्जमाणपयदीभो वंषमाणेसु ' वंषाणे उञ्ओ किं पुच्यं किं वा पञ्च योञ्छिञ्चो ' ति विचारो गतिः ।

पंचमात्रावर्णीय-चउदर्ममावर्णीय मिच्छत-जपुमयवद् निरिक्काउ-निरिक्कमाइ-वीइदियवादिचेजा-कम्माइयमगीर वण्ण-गंध रम फम्म अगुग्गल्लुअ-तम-वाइर भिराभिर-सुमा सुम-दुमग-अवादेअ-भिमिण-गीषागोअ परंतगायइयाण मोइओ वंषो, एरथ एदामि पुषो मय-ईसणत्तो । विइणिइ-ययअप्पत्त-यादामा-अन्धमकमाय-छणोक्कमाय-अ-वत्ताप-अत्त अत्त वजसकिरीण सेइय-सोइओ वंषो, उमयया कि वपम्म विराहामावणो । अत्ताडियमगीर हुइमअण्ण मेत्ताडियमगीरअगावग अमंपसमेवइमवइअ उवपाअ-वत्तेयमगीराम्पि पि मोइय-परइओ, विमाइगदीए उदयामाव वि वंषुवत्तामाइ । तिरिक्कउगडिपाओग्गालुपुच्चीए वि सोइय परइओ वपा, विमाइगदीए अण्णअ उदयामाव [वि] वधदयमाव । पग्गादुम्मासुप्पेअ अप्पमरवविहाय गइ-दुस्समाप्प पि मोइय-परइओ वषो, अ-अत्तकअ उदयामाव वि वंषइसणाओ, उत्तेवस्स उन्नावेत्तयविइइइविइइइसु वंषुवत्तमाइ । इण्णि-पुरिस मणुम्माअ-मणुमगइ-एइदिय तीइविवे

नियम अर्पणात्का द्वारा अभ्यमान प्रकृतिषोऽय बांधनधातु ईभिन्त्रय जीर्णम वन्धन उच्य क्वा पूर्वम वा क्वा पश्चात् व्युत्पिउअ होता है यह विचार नहीं है ।

पांच ज्ञानावर्णीय वार वदामावर्णीय मिच्छात्त जपुमयवद् तिरंगाया उत्पं मानि ईभिन्त्रय ज्ञानि तैजस व कर्मण इरीर वर्क गन्ध रस स्वा अगुग्गल्लु अम वाइर स्थिर, मस्तिर, शुभ अशुभ दुर्मग अमाइय निमाज जीवगात्र और पांच अन्तराय इनका स्वीक्य वन्ध होता है क्योंकि यहाँ इनका पुत्र उच्य देखा जाता है । मित्रप्रेमिता प्रबन्धप्रकटा पत्ता व मत्तामा वदतीय मोमह कराय उह माकपाव पचात्त अपर्वाण वहाकीर्णि और अयहाकीर्णि इनका स्वेत्त्व परत्तयत्त वन्ध होता है क्योंकि इत्ता प्रकाटन मी इनक वन्धका विरोध नहीं है । आहारिकराटीर, हुक्कसंस्पाण, भीहारिकछागीरंगोपांग अस्तंपाणम्पाटिकावर्णजन उपपात और मायकशरीर इनका मी म्बल्य परत्तय वन्ध होता है क्योंकि विमहगानिम उच्यका अमाज इमेपर मी इनका वन्ध पाया जाता है । तियगगतिमाथाग्यानुपूर्वीका मी स्वेत्त्व परत्तय वन्ध होता है, क्योंकि विमहगतिअ ओइकर अम्पअ उच्यका उदयामाव इमेपर मी वन्ध देखा जाता है । पग्गाल उच्यकाउ उचात्त जग्गसत्तविहायागति और हुक्करका मी स्वेत्त्व परत्तय वन्ध होता है क्योंकि अर्पणात्काकर्म इनका उच्यामाव इमेपर मी वन्ध देखा जाता है तथा उचात्तअ उचात्तक उच्यसं रहित और उससे सहित जीर्णम उच्यका वन्ध पाया जाता है । अग्रेव पुग्गवेइ मणुप्पायु, मणुवगति पक्कमिन्त्र जीमिन्त्र वउदिमिन्त्र पंचेभिन्त्रय ज्ञानि

पञ्चत्तामस्त सोद्भो, अपञ्चत्तामस्त परोद्भो वंधो । एवमपञ्चत्तापि पतम् ।  
 पञ्चि भीमिदिपि-परचादुस्तास उन्जो-अपस्तस्यविहायग-पञ्चत्त-दुस्तर-जसकिर्त्तिपि परो  
 दभो वंधो । अपञ्चत्त-अजसकिर्त्तीप सोद्भो । अपञ्चत्तापमदुत्तीस पञ्चया, ओरात्तिप  
 क्त्रयासुञ्चमोसवचिजोगापमभावाद्भो ।

तीर्हदियापं तीर्हदियपञ्चत्तापमत्ताप च भीहदिय-भीहदियपञ्चत्त-भीहदियअपञ्चत्त-  
 भगो । पञ्चि घाभिदिपसु सह तेर्हदियपञ्चत्तापमेकमेतात्तीस पञ्चया । अपञ्चत्तापमेगुण  
 चात्तीस, ओरात्तिपक्त्रयासुञ्चमोसवचिजोगापमभावाद्भो । तीर्हदियपमस्त सोद्भो वंधो ।  
 वदसेसिदियपामाप परोद्भो ।

चरुतिदिपामेवं चैव वसम् । पञ्चि चरुतिदिपमादिपंधो सोद्भो । सेसिदियमादि  
 वंधो परोद्भो । वाहत्तिमुत्तरपञ्चया, चर्त्तिदिपपवेसाद्भो । अपञ्चत्तापं चात्तीम पञ्चया,

उनके पर्याप्त नामकर्मका स्त्रोत्र्य और अपर्याप्त नामकर्मका परोद्भ्य वन्ध होता है । इसी  
 प्रकार इन्द्रिय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये । विशेष यह है कि स्त्र्यामपुत्रिद्य  
 परचात् उच्छ्वास उद्योत अग्रशस्तविहायोपेति पर्याप्त दुस्तर और यशकीर्तिका  
 परोद्भ्य वन्ध होता है । अपर्याप्त और अग्रशकीर्तिका स्त्रोत्र्य वन्ध होता है । अपर्याप्तोंके  
 मद्धतीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि औद्धारिक काययोग और असत्य मृदा वचनयोगका  
 उनके अभाव है ।

भीन्द्रिय भीन्द्रिय पर्याप्त और भीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृषया इन्द्रिय  
 इन्द्रिय पर्याप्त और इन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है । विद्यपता इतनी है कि प्राण  
 इन्द्रियके साथ भीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके एकताकीस प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके  
 उन्ताकीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि, उनके औद्धारिक काययोग और असत्य मृदा वचनयोगका  
 अभाव है । भीन्द्रिय नामकर्मका स्त्रोत्र्य वन्ध होता है । शय इन्द्रिय नामकर्मोंका परोद्भ्य  
 वन्ध होता है ।

अतुदिन्द्रिय जीवोंका भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये । विद्यप इतना है  
 कि उनके अतुदिन्द्रिय जातिका स्त्रोत्र्य वन्ध होता है । शय इन्द्रिय जातियोंका वन्ध परोद्भ्य  
 होता है । यहाँ अतु इन्द्रियका प्रवेश होमसे प्याकीम उत्तर प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके

१ मापती ओरात्तिवचनपञ्चयाप इति पाठ ।

२ अतिपु तीर्हदियप तीर्हदियपञ्चत्ताप तीर्हदियअपञ्चत्ताप चर्त्तिदिप-भीहदियपञ्चत्त भग्नी  
 तीर्हदियप तीर्हदियपञ्चत्तापमत्ताप च भीहदियपञ्चत्त इति पाठ ।

३ अतिपु औद्धारिककायवचनयोग इति पाठ ।



तिरिक्खनह-तिरिक्खगइपाओगाणुपुष्पी-णीवागोदाणं सार-भिरंतरो वंघो । कपं भिरंतरो ।  
न, तेउ-वाउकाइएहिंतो बीईरिएसुप्यण्णमंतोमुहुत्तकाल्मेवामि भिरतरंमुवर्त्तमाओ ।

एदसि मूळपण्णया अत्तारि । पंथ मिच्छत्त, दोईरियासंजमा, छप्पापसजमा, सेत्तम  
कसया, सत्त जोकसया, अत्तारि जेया, सव्वेदे बीईरियम्मा' भाटीसुत्तरपण्णया । वरि  
तिरिक्ख-मज्झिमासंजमं कम्मइयण्णपण विजा एगुणधात्तीम पण्णया । एककारम बहिरत्त  
पयसम्पयमंइयुक्कत्तपण्णया ।

तिरिक्खाठ-तिरिक्खगह-एईरिय-बीईरिय-सीईरिय-वठण्णिययादि-तिरिक्खनह-ओ-  
माणुपुष्पी-वाउसुओव-वावर-मुहुत्त-साहारणं तिरिक्खगइसत्तुत्ते वंघो । मज्झिमाठ-मज्झिमा  
मज्झिमागइपाओमाणुपुष्पी-उत्तायोदाणं मज्झिमाइसत्तुत्ते वंघो । सेत्ताप पयसीमं तिरिक्ख-मज्झि  
सगाइसत्तुत्ते वंघो । कुओ ? दोई यरीहि सह विरोहायामाओ । वचदाणं सुगमं । वंघोओओ  
वत्ति । पुवियाण वठमिहो वंघो । अवसेसणं सादि बह्वो । एवं पण्णयाण । वरि

तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोण्यानुपूर्वी और बीचगोबका पालन-निरन्तर बन्ध  
होता है ।

सूत्र — निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

संग्रहान — यह शोक दीक नहीं क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे  
हीन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंक अन्तर्मुहूर्त काम तक इतका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इनके मूल प्रकृत्य बार होते हैं । पांच मिष्यात्त दो हीन्द्रियासंयम छह प्राणि  
अमंयम सांखह कपाय सान भोकपाय और बार पोष ये सब हीन्द्रिय जीवोंक बाकीस  
उत्तर प्रकृत्य होते हैं । विशेषता केबल इतनी है कि तिर्यगाणु व मनुष्याणुके अमंय प्रत्ययके  
बिना वनताहीस प्रत्यय होने हैं । गारह व अहारह अमसे एक समय सम्बन्धी अण्व  
और उरुह प्रत्यय होते हैं ।

तिर्यगाणु तिर्यग्गति एकहिन्द्रिय हीन्द्रिय जीवोंक वतुरिन्द्रिय ज्ञाति तिर्यग्गति  
प्रायोण्यानुपूर्वी जाताय उद्योत व्यावर सुख्य और साधारण इनका तिर्यग्गतिसे  
संबुद्ध बंध होता है । मनुष्याणु मनुष्यगति अनुष्यगतिप्रायोण्यानुपूर्वी और वचगोबका  
मनुष्यगतिसे संबुद्ध बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संबुद्ध  
बन्ध होता है क्योंकि, दोहों गतियोंके साथ उनके बन्धक्य विरोध नहीं है । वन्धाव्याय  
सुगम है । वन्धमुच्छेद नहीं है । ह्य प्रकृतियोंका कारण प्रकृत्यक बन्ध होता है । शेष  
प्रकृतियोंका साथ व संबुद्ध बन्ध होता है ।

इसी प्रकार हीन्द्रिय पर्याय जीवोंकी प्रकृत्या है । विशेषता केबल इतनी है कि

पञ्चत्तयामस्तु सादभो, अपञ्चत्तयामस्तु परादभा यथा । एवमपञ्चत्तयं पि वत्तम् ।  
 पञ्चरि धीजगिद्धिनिय-परपादुस्सास उन्जोष-अण्णसत्थविहायगइ-पञ्चत्त-कुस्सर वसकिर्त्तनं परो  
 दभो वपो । अपञ्चत्त-अण्णसकिर्त्तनं सोदभो । अपञ्चत्तयमद्वसीस पञ्चया, ओराटिय  
 कयामप्पमोसंयविजोगाणमभावादी ।

तीर्हदियाण तीर्हदियपञ्चत्तयपञ्चत्तय च तीर्हदिय-धीर्हदियपञ्चत्त-धीर्हदियभपञ्चत्त  
 मगा । पञ्चरि धार्मिदिष्टुण सह तेर्हदियपञ्चत्तयमेवकेनास्तिस् पक्षया । अपञ्चत्तयमेगूण  
 चास्तिस्, ओराटियकयामप्पमोसंयविजोगाणमभावादी । तीर्हदियणामस्तु सादभो वंधो ।  
 अवसेसिदियणामाणं परोदभो ।

चउत्तिदियाममेव वेव वत्तम् । पञ्चरि चउत्तिदियजहिंपवो सोदभो । मेसिदियजादि  
 वंधो परोदभो । चादास्तिमुत्तपञ्चया, चत्तिस्सदियपवेसाश । अपञ्चत्तय चास्तिस् पक्षया,

उनके पद्यान्त नामकर्मका ल्यादय और अपद्यान्त नामकर्मका पद्यान्त बन्ध होना है । इसी  
 प्रकार इन्द्रिय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये । पिनाय यह है कि स्थानगुञ्जितय,  
 परमाण उच्छवास उद्यत भ्रमदास्त्वविहायोगति पर्यान्त दुस्वर और यशस्वीर्त्तिका  
 परोदय बन्ध होता है । अपद्यान्त और अयशस्वीर्त्तिका स्त्रोदय बन्ध होना है । अपर्याप्तोंके  
 अद्वसीस प्रत्यय होत हैं क्योंकि भौतिक कययोग और भ्रमन्व मृगा यवनयोगका  
 उनका भ्रमाय है ।

ब्रीन्द्रिय ब्रीन्द्रिय पद्यान्त और ब्रीन्द्रिय अपद्यान्त जीर्णोक्षी प्ररुपणा इन्द्रिय  
 इन्द्रिय पर्यान्त और इन्द्रिय अपर्यान्त जीर्णोक्षी समान है । बिशयता इतनी है कि प्राण  
 इन्द्रियके साथ ब्रीन्द्रिय पर्यान्त जीर्णोक्षी इक्ष्णामीम प्रत्यय होत हैं । अपर्याप्तोंका  
 उन्नतस्तीस प्रत्यय होत हैं क्योंकि, उनके भौतिक कययोग और भ्रमन्व मृगा यवनयोगका  
 भ्रमाय है । ब्रीन्द्रिय नामकर्मका ल्यादय बन्ध होना है । दाय इन्द्रिय नामकर्मका पद्यान्त  
 बन्ध होता है ।

चउत्तिन्द्रिय जीर्णोक्षी भी इतनी प्ररुपणा ही कथन करना चाहिये । बिशय इतना है  
 कि उनका चउत्तिन्द्रिय जातिका ल्यादय बन्ध होना है । दाय इन्द्रिय जातियोंका बन्ध पद्यान्त  
 होता है । यही चउत्तिन्द्रियका प्रवेश इक्ष्णामीम उत्तर प्रत्यय होत हैं । अपर्याप्तोंके

१ चान्नी ओगडिबकापञ्चत्तयं इति वाकः ।

२ इन्द्रि हीरिवां हीरिबभम्पण हीरिबभम्पण चउत्तिरि वीरिवाभ्यत चान्नी  
 हीरिवां हीरिवाभ्यतभम्पणं च वीरिवाभ्यत इति वाकः ।

३ इन्द्रि ओगडिबकापञ्चत्तयं इति वाकः ।

भोरत्तियक्रयामप्यमामवधिजागममावाश ।

धर्मिदियभपञ्जसाण मणिम्सामा — एत्थ वञ्जमाणपयईओ पचिदियनिरिन्त्र-  
अपञ्जतहि वञ्जमाण्णओ वण, व अण्णओ । एत्थ एइसि उदयाओ वणा पुण्य पञ्च व  
वोच्छिण्णो ति विचरो वरिण, मंतामत्ताणं धपोदयाणमन्थ वोच्छेइमावाशो ।

पंचभाषावरणीय च उदयजागरणीय-मिच्छत-जुलुमयवद धर्मिदियमादितेना कम्मएव  
सरीर-वण्य-मेष-रम-फाम-अगुरुजठहुम-तम-वाहर अप-वत्त-धिगविर-मुहासुह-हुमग अण्णइअ-  
अजसकिवि मिमिअ-भीचागोइ-पंचतरावण सौंदर्यो धंओ, पुबोदयताओ । मिहा पयल-सारा  
साइ सोत्तसकसाय-अण्णेकमाय-निरिक्काउ-मणुम्माउ-तिरिक्कागइ-मणुमगइआओगापुपुणी  
सौंदर्य-परोदओ धंओ, उदएण विना वि, संत वि उदए वज्जवत्तमाओ । भोरत्तियमरि-हुइ  
मंत्तअ-भोरत्तियसरीरधंओवण-वणपत्तमवहुमयवद उवचाद पत्तमपरिणम मोइय-परोदओ धंओ,  
विनाहगईए उदवामावे वि अण्णवण उदए संते वि पंचइममाइ । धीअगिदितिय-इन्त्रि-  
पुरिसवइ-एइदिय-भीइदिय-तीईदिय-चउतिदिय-पंचमगइअ-पंचमवइअ-परवाडुस्साम-आइअण्णेक-  
देविहायमइ पाअ-मुहुम-पञ्जत-माहारणसरीर सुमग मुम्मर-दुस्सर आदेअ जनकिंति उवचा-

वालीस प्रत्यक्ष होने है क्योंकि उनका भौतिक कायपात्र और अमृत्य मृदा प्रकृतपात्रका  
अभाव है ।

पंचमित्र अर्थात्पञ्च प्रकृति करता है— यहाँ वर्ण्यमान प्रकृतियों पंचमित्र  
तियव अर्थात्पञ्च द्वारा वाणी जानेवाली हो है अम्य नहीं है । यहाँ इनका वदयव वण्य  
पूर्वमे वा पश्चात् स्पृष्टिक्र हाता है वह विचार नहीं है क्योंकि, तत् और अनत  
वण्योदयके स्पृष्टिक्र यहाँ अभाव है ।

पांच भाषावरणीय चार वर्णभाषावरणीय मित्पाम्य जलुलुमयवद पंचमित्रजाति  
कैवल्य व कर्मण शरीर, वणं गण्य रम स्पर्श अगुरुजठपु, वत्त वाहर, अपर्णात् स्थिर  
धरिण, हुम अणुम हुमग अनादेव अजसकीर्ति निर्माय नीचगाव और पांच  
अन्तराव इनका लोइय वण्य हाता है न्याकि, वे सुबोदनी प्रकृतिर्पा है । मिहा प्रकृति  
हाता व अस्तता वेदनीय सोलह कपाय कह लोकपाय तिर्बगामु मणुप्यापु और  
निर्यमाणि व मणुप्यगतिप्रायोण्यापुपुणी इनका लोइय परोदव वण्य होता है क्योंकि,  
उदयके विना भी तथा वदयके होनेपर भी इनका वण्य पाया जाता है । नीवारिकशरीर,  
हुइसंत्पाम भौतिकशरीरगोपांग अमप्राप्तसुपादिकासंहनन अपघात और प्रत्यक्ष  
शरीरका लोइय परोदव वण्य होता है क्योंकि विमहगतिमे उदयामात्रके होनेपर भी  
तथा मण्य उदयके होते हुए भी इनका वण्य देखा जाता है । स्थायपृष्ठिप्रय क्विच  
पुदयवेद पचेमित्र धीमित्र भीमित्र चतुर्मित्र जाति पांच संत्पाम पांच संहनन  
परघात वण्णवास जाताय वघोव हो विहायोपतिर्वा स्थावर, सूत्र परर्णात् साधारण  
शरीर, सुमग, सुस्वर, हुस्वर, आदेव, वराकीर्ति और उच्छवण, इनका परोदयसे वण्य

गोदाण परोदण बघो, पक्षामिमेरय उदयविरोहादा ।

पंचपापावरणीय-जवत्सपावरणीय मिच्छत्त-सोत्तमकसाय मय-दुगुळा-तिरिक्ख-मज्झिमा-आराधिय-नेत्रा-कम्मवियसरीर-वण्ण-गघ-रस-फास अगुरुवत्तहुम-उवधाद-पिमिण-पचंतग-इयान् पिरतरो बघो, एत्थ एत्थमि धुववचित्तादो । सादासाद-सत्तणोकसाय मणुसगइ-एत्थदिय बीइदिय-तीइदिय-अउरिजिय-पचिदियजदि-उत्तथाण-आराधियसरीरअगोवग-उत्तपइण-मणुसगइ पाभोगाणुपुष्पी-परपादुस्मास आदाउत्तम-रोषिहावगइ-तस-यावर-वाटर-सुहुम-पञ्चत्तापञ्चस-पत्तेय-साहारगसरीर पिराविर-मुहसुह-सुमग-हुमग सुस्सर-हुस्सर-आदेवज-अणदेवज-असकिंति-अजसकिंति-उत्तचगोदाण सतरो बघो, एगसमएणदासिं वधुवरमईसणादो । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाभोगाणुपुष्पी-भीचगोदाणं सतंर-पिरतरो बघो । कथं पिरतरो ? अ, तेठ-वाठ कइएहिंतो पंचिदियअपञ्चसत्तसुपण्णायमतोमुहुत्तकत्तमेदासिं पिरतरं वधुवत्तमादो ।

पंचिदियअपञ्चत्तापेदाभो पयईभो बचमाणाण पंच मिच्छत्तापि, चारम असजम,

हाता ई कयोंकि, यहाँ इनक उदयका विरोध है ।

पांच आनावरणीय जी वज्रनावरणीय मिच्छान्त, सोलह कयाय मय जुगुप्सा तिर्यगायु, मनुष्यायु श्रीशारिक ईज्जस व कामय शरीर, बर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुलुब्ध उपघात निमाय और पांच अन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ ये छहबन्धी हैं । सत्ता व असत्ता वेदनीय सत्ता भोक्तृयाय मनुष्यगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय पंचेन्द्रिय जाति छह संस्थान श्रीशारिकशरीरांगोपांग छह संहसन मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी परघात उच्छवास आताप वद्योत दो विहायांगतियां अस म्यावर वाटर, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त प्रत्येक, साधारण शरीर स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग दुर्मग सुम्बर, दुस्वर आक्षेप अनाक्षेप पचाकीर्ति अवशकीर्ति और उच्छवगोत्र इनका नास्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे इनका बन्धविग्राम होता जाता है । तिर्यगगति स्थिगगतिप्रापयानुपूर्वी और जीवजात्रका नास्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शुक्रा—निरन्तर बन्ध कैस होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, तज्जकायिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उन्मथ हुए जीवोंक अन्तर्मुहृत काल तक इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इन प्रवृत्तियोंका धांधनयाम पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंक पांच मिच्छान्त बारह

१ अतिशु बचवाच इति पाठः ।

सातम कस्याय, सत जेकमाय दोष्णि जांग ति बाताईस पञ्चया होंनि । निरिक्ख-मज्झमाउ  
आण एक्केनात्थिय पञ्चया, कम्मइयपञ्चयाभावादा । तमे सुगम ।

निरिक्खताउ-निरिक्खगइ-णईदिय-पीईदिय-तीईदिय-चउण्णिदियआदि-निरिक्खगइ-  
पाआगाणुपुप्पी आताउ-बोव-यावर-सुहूम-माहुरणमगीणं निरिक्खगइमंजुत्त बधो । मज्झमाउ  
मज्झमइ-मज्झमाइपाआगाणुपुप्पी-उप्पागोदाण मज्झमगइमंजुत्त । सेमाणं पयईय बंधो  
निरिक्ख-मज्झमगइमंजुत्ते । पंचिंदियअप-अस मापी । पंचद्वय सुगमं । पंचबोच्छरो परिब ।  
पंचात्मावरणीय-अवर्धमावरणीय-मिच्छत्त-मोत्तमरूपाय मय-दुगुल्ल-सजा-कम्मइयमरि वज्ज-  
गध-रम-अम अगुल्लतठुव उवपाइ-विमिज-पंचतराइयार्ण चउण्णिइ बंधा, पुवर्चनित्ता ।  
सेसाम सादि बद्धो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपञ्जत्तएसु पचणाणावरणीय-चउदसणावर  
णीय-जसक्खित्ति-उच्चागोद पचतराइयाण को वधो को अवंधो ?  
॥ १०३ ॥

एवं पुष्पमुत्त देसामासिरं, तणेरेण सुहुरत्ताण पक्खणा कीरेदे । तं बद्धा — किं

मत्संयम साकद कपाय सात जोकपाय और दो पाय इस प्रकार व्याख्यास प्रत्यय इल  
हैं । तिर्यगायु और मज्झमायुक्त इकतासीस प्रत्यय इल हैं क्योंकि, उनके कर्मण प्रत्ययका  
अभाव है । दोय प्रत्ययप्रत्ययणा सुगम है ।

तिर्यगायु तिर्यगति एकत्रिय द्वीत्रिय त्रीत्रिय चतुर्त्रिय आदि तिर्यगति  
प्रायाणानुपूर्वी आताप उचोत्त स्वावर, सूक्ष्म और साधारण शरीर, इनका तिर्यगतिसे  
संयुक्त बन्ध होता है । मज्झमायु, मज्झगति मज्झगतिप्रायाणानुपूर्वी और उच्चगोत्रका  
मज्झपतिसे संयुक्त तथा दाप प्रकृतिपौत्र बन्ध तिर्यगति व मज्झगतिसे संयुक्त  
होता है । पंचेन्द्रिय अपर्णात्त जीव स्वामी है । बन्धावान सुगम है । बन्धनुच्छेद यहाँ  
है यहाँ । पांच ज्ञानावरणीय ती दर्शनावरणीय मिच्छात्य लोसह कराय मय सुगुप्ता  
तिअस व कामज शरीर, वर्ण गन्ध रस स्पृश अगुल्लभु उपपात निमाण और पांच  
अन्तराय इनका चार प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि य भुवचन्दी है । दाप प्रकृतिपौत्र  
मादि व अग्रुच बन्ध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय,  
यसस्त्रीति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अच-बक है ?  
॥ १०३ ॥

यह पृच्छाचूच देसामाशंक है इसलिये इसके ज्ञाप्य स्थिति कथीकरी प्रकृपणा

मिष्मइष्टी बंधओ किं सासणो बंधओ किं सम्मामिष्मइष्टी बंधओ किमसज्जदसम्माइष्टी बंधओ किं संजदासंजदो किं पमचो किमपमतो किमपुब्बो किमणियष्टी किं सुहुमसांपराइयमो किमुप-  
संतकसाओ किं स्त्रीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमइारओ बंधओ सि एवमेसो  
एगसजोगो । संपधि एत्थ दुस्संभोगादीहि भवससंधार करिय सोलहसइस्स-तिण्णिसय-तेमा  
सीदि-पण्णमगा उप्पाएयम्मा । किं पुब्बमेदासि बंधो वोच्छिन्नइदि किमुदमो किं दो वि सम  
वोच्छिज्जमति एवमेत्थ तिण्णि मगा । किं सोदएण बंधो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण  
एत्थ वि तिण्णि मगा । किं सांतरो बंधो किं भिरंतरो [ किं ] सांतर-गिरंतरो ति एत्थ वि  
तिण्णेव मगा । एदासि किं मिच्छत्तप-बंधो बंधो किमसंजमपण्णमो किं कसापपण्णमो किं  
जोगपण्णमो बंधो ति पण्णारस मूलपण्णयपण्हमंगा हवति । एयंत-विवटिय-मूढ-संदेह  
अप्पानमिच्छत्त-चक्खु-सोद भाण-जिप्पा-पास-मज-पुक्कीकइय आठकइय-तेठकइय-भाठ-  
कइय-वणप्पदिकाइय-तसकइयासजम-सोत्तकसाय-भवणोक्काय-पण्णारसजोगपण्णय इविय

करत हैं । यह इस प्रकार है— क्या मिष्साददि बन्धक है क्या सासाज्जदसम्माददि  
बन्धक है क्या सम्मामिष्साददि बन्धक है क्या समसज्जदसम्माददि बन्धक है, क्या  
संपतामपत क्या प्रमत्त क्या अप्रमत्त क्या अपूर्वकरण क्या भविष्यत्करण क्या  
सुखसाम्यरायिक क्या उपशान्तकराय क्या स्त्रीणकराय क्या सयोगी जिन या क्या  
भयांगी महारक बन्धक हैं इन प्रकार ये एकसंयोगी मंग हैं । अब यहां द्विसंयोगादिकोंके  
जाय अससंधार करके सोमइ हजार तीन सी तेरासी प्रश्नमंग उत्तर करना चाहिये ।  
क्या पूर्वमे इनका बन्ध व्युत्पिच्छ होता है क्या उदय या क्या दोनों एक साथ व्युत्पिच्छ  
हाते हैं इस प्रकार यहां तीन मंग हाते हैं । क्या स्योदयसे बन्ध होता है क्या परोदयसे  
या क्या स्योदय-परोदयमे इस प्रकार यहां भी तीन मंग हाते हैं । क्या साम्तर बन्ध  
होता है क्या भिरम्तर बन्ध होता है या क्या साम्तर भिरम्तर, इन प्रकार यहां भी तीन  
ही मंग हाते हैं ।

इनका बन्ध क्या मिष्सात्थप्रत्यय है क्या असयमप्रत्यय है क्या कपायप्रत्यय है  
या क्या योगप्रत्यय बन्ध है इन प्रकार एगइ मूल प्रत्यय निमित्तक प्रश्नमंग होते हैं ।  
एकान्त विपरीत मूढ [ विमय ] सम्मइ और मज्झान रूप पांच मिष्सात्थ, बभु, भोव  
प्राण जिह्वा स्पर्श मन पृथिवीकायिक, अण्कायिक, तेजकायिक, पायुकायिक, वनस्पति  
कायिक और जसकायिक, इनक निमित्तमे हानेपाठ बारह अर्थयम, सोमइ कपाय मौ

सोऽस कस्या, सप्त जोकस्या दोष्णि जोग ति पादास्तीस पञ्चया ह्येति । तिरिक्ख-मणुस्माउ  
आयं एककेनास्तीस पञ्चया, कम्मइयपञ्चयायावो । सप्त सुगम ।

तिरिक्खठाउ-तिरिक्खगइ-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियवादि-तिरिक्खम-  
पाभागाणुपुष्पी-मादाउ जेव-वावर-सुहुम-साहारणसगीरणं तिरिक्खगइसंहुत्ते बधो । मणुस्माउ  
मणुसगइ-मणुसाइपाबोम्माणुपुष्पी-उच्चागोलाव मणुसगइसंहुत्तो । सेसाव पयसीमं बंधो  
तिरिक्ख-मणुसगइसंहुत्ते । पंचिंदियमपञ्चय सामी । बंधयाणं सुगमं । बंधोप्पेदो पत्ति ।  
पंचनाम्मावरणीय-अवदंमणावरणीय-मिच्छत-सोत्तसकसाय-मय-दुगुण-तेजा-कम्मइयसति वण-  
गय-रस-अस अगुस्वत्तुव उववाइ-विमिक्क-पंचतराहयाणं चउत्तिहो बंधो, पुवचंविअदा ।  
सेसाव सादि अदुवो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपञ्जत्तएसु पंचणाणावरणीय-चउदसणावर  
णीय-जसकित्ति-उच्चागोद पंचतराहयाण को बधो को अयंधो !  
॥ १०३ ॥

एवं पुष्पसुत ईशमासिय, तेष्वेव सुखत्वाय परवृत्ता क्रियते । तं महा — किं

असंयम संसृष्ट कथाय मात जोकयाय और दो पाय इस प्रकार व्यतीति प्रत्यय होते  
हैं । तिर्यंगासु और मनुष्यासु इकतास्तीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि, उनके कर्मय प्रत्ययका  
अभाव है । शेष प्रत्ययमकपणा सुगम है ।

तिर्यंगासु तिर्यग्गति पंचेन्द्रिय इन्द्रिय धीन्द्रिय अनुतिन्द्रिय आदि तिर्यग्गति  
प्राप्तपाणुपूर्वी भाताय उद्योत स्वावर, सूक्ष्म और साधारण शरीर, इनका तिर्यग्गतिसे  
संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यासु, मनुष्यगति मनुष्यगतिप्राप्तपाणुपूर्वी और उच्चपात्रक  
मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा शेष प्रकृतिषोक्त बन्ध तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त  
होता है । पंचेन्द्रिय संपर्पात जीव स्वामी हैं । बन्धारण्य सुगम है । बन्धानुच्छेद नहीं  
है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय बी वर्धनावरणीय मिथ्यात्व सोऽह कथाय मय दुगुणा  
तैजस व कर्मय शरीर, धर्म गन्ध रस स्पर्श अगुरुसु उचपात निर्माण और पांच  
अन्तराय इनका चार प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, व प्रवर्धनी हैं । शेष प्रकृतिषोक्त  
सादि व अत्रुव बन्ध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोर्गे पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय,  
यशस्विनि, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बंधक और कौन अबंधक है ?  
॥ १ ३ ॥

एवं पूष्पासु ईशामर्थक इत्यस्य इसक द्वारा सूचित अर्थोकी प्रकपणा

पञ्चा उद्बो वोच्छिन्नदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमिह षड्वर्षाणमेदासि सीनकसायचरिम समयमि उद्बोवोच्छेदुबर्तमादो । असकितीए उवागोदस्स य पुण्ण षपो पञ्चा उद्बो वोच्छिन्नदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमि षड्वर्षाण अजोगिचरिमसमयमि उद्बो वोच्छेदुबर्तमादो ।

पंचपात्रावरणीय-चउईसपात्रावरणीय-पंचंतराहयार्थ सोदबो बंधो । असकितीए मिप्पाइदिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइडि सि सोदय-परोदएण बंधो, एदेसु अजसकितीए वि उदयवर्दसमादो । उवरि सोदयएव, पडिबकसुदयाभावादो । मिप्पाइदिप्पहुडि जाव संजदा सजबो [ सि ] उवागोदस्स सोदय परोदएण बंधो, एदेसु बीपागोदस्स वि उदयवर्दसमादो । उवरि सोदबा, पडिबकसुदयाभावादो ।

पंचपात्रावरणीय चउईसपात्रावरणीय-पंचंतराहयार्थ भित्तरो बंधो, सच्चगुणहुजेसु वि एगसमएण बंधवोच्छेदमावादो । असकितीए सांतर भित्तरो बंधो, मिप्पाइदिप्पहुडि जाव पमसर्मजबो सि सांतरो बंधो, एदेसु पविक्खपयडिबचईसमादो उवरि भित्तरो, पडिबकसु

अन्तराधिक पूर्णमे बन्ध और पश्चात् उद्यम व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, सूक्ष्मसाम्प्रदायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धक मरु हो जानेपर सीनकसाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें उनका उद्यमव्युत्पेक्ष पाया जाता है । पञ्चाक्षीति और उच्छगोत्रका पूर्णमे बन्ध और पश्चात् उद्यम व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, सूक्ष्मसाम्प्रदायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धक मरु हो जानेपर अथोगिकेबलीके अन्तिम समयमें इनका उद्यमव्युत्पेक्ष पाया जाता है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार ब्रह्मावरणीय और पांच अन्तराधिक स्वेदय बन्ध होता है । पञ्चाक्षीति मिप्पाइदिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वेदय परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि इन गुणस्थानोंमें अथवाक्षीति भी उद्यम देखा जाता है । ऊपर इसका स्वेदयबन्ध ही बन्ध होगा है क्योंकि, वहाँ अथवाक्षीति उद्यमका अभाव है । मिप्पाइदिसे लेकर संयतासंयत तक उच्छगोत्रका स्वेदय परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि इन गुणस्थानोंमें भीषणाकका भी उद्यम देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उच्छका स्वेदयसे बन्ध होता है क्योंकि वहाँ भीषणाक उद्यमका अभाव है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार ब्रह्मावरणीय और पांच अन्तराधिक भित्तरो बन्ध होता है क्योंकि सब गुणस्थानोंमें ही एक समयसे इनके बन्धव्युत्पेक्षका अभाव है । पञ्चाक्षीति सात्तर-भित्तरो बन्ध होता है क्योंकि, मिप्पाइदिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक इनमें प्रमिपस मङ्गलिका बन्ध देवे जानमे सात्तर बन्ध होगा है और इससे ऊपर



चोदससदएकेतात्वीसकोडाकोडी-पण्णारसउत्तम-अङ्गाससहस्र अङ्गसय-सत्तमेडी-अङ्गवत्त-  
 उत्तम-वर्षवत्तससहस्र अङ्गसय एकहत्तिरित्तगपन्धपण्णमगा उप्पाएदम्मा १४४११५  
 १८८ ७५८५५८७१ । किं पिरयगाइसंहुत्त वन्धति किं तिगिस्सगाइसंहुत्त किं मणुस्सगाइसंहुत्त  
 [ किं देवगाइसंहुत्त ] इदि एत्थ पण्णारस पण्हमंगा उप्पाएदम्मा । अङ्गासमपमाणं सुममं ।  
 किमपिदगुणैद्वाक्कम्मादि ए मग्गे वेति वंघो वोण्डिअदि ति एकेत्तमग्गिह मुज्झाणे तिप्पि  
 तिप्पि मंगा उप्पाएदम्मा । सम्बन्धयोण्णैदपण्हसमासो वापत्तात्थम । किं सारिओ वंघो  
 किमसारिओ किं धुरो किमधुरो ति एत्थ पण्णारस पण्हमगा उप्पाएदम्मा ।

मिच्छाद्विष्टिण्डुडि जाव सुहुमसापराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा  
 त्वा वधा । सुहुमसापराइयसुद्धिसजददाए चरिमममय गतूण वंघो  
 वोण्डिअज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अवधा ॥ १०४ ॥

पदस्य अर्थो उच्यते— पञ्चपात्रावरणीय-चतुर्दशपात्रणीय-वंधतत्त्वार्थं पुन्य वंघो

भाकराय भीर पन्त्रह पात्र इम प्रत्ययोंक्य स्थापित कर बीइह ली इकतासीस कोडकाडी  
 पन्त्रह साल अङ्गाह इजाट भाठ ली साल करण्ड अङ्गासम मात्त पञ्चमम हजाट, मात्त ली  
 इकत्तर उत्तर प्रत्यय मिमित्तक प्रश्नमंग उत्पन्न करत्ता चाहिये । १४४११५/८७५८५५८७१ ।

य क्या मरकगतिम संयुक्त वंधन है क्या निर्पगगतिम संयुक्त वंधन है क्या  
 अनुप्यगतिम संयुक्त वंधन है, [ या क्या देवगतिम संयुक्त वंधन है ] इम प्रकार यहाँ  
 पन्त्रह प्रश्नमंग उत्पन्न करत्ता चाहिये । वन्धाम्बालक्य मंगप्रसात मूलम है । क्या विवसित  
 शुक्कम्बालक्य वारिम मण्णम वा मण्णम पण्ण वुण्डिअस हाता है, इस प्रकार एक एक  
 शुक्कम्बालक्य तीन तीन मंग उत्पन्न करत्ता चाहिये । वन्धवुण्डिअक प्रश्नविषयक सर्व  
 मंगोंक्य पात्र प्यासीस हाता है । क्या वारि क्या अवादि क्या मुच भीर क्या अनुच वन्ध  
 हाता है इम प्रकार यहाँ पन्त्रह प्रश्नमंग उत्पन्न करत्ता चाहिये ।

मिथ्याचष्टिमे लेख सुखमाप्तायिकशुद्धिसंयतकले अन्तिम समयको जाकर वन्ध वुण्डिअ होत है । ये  
 वन्धक है, येव अचन्धक है ॥ १०४ ॥

इस सूत्रक्य अर्थ कहन है— पाँच ज्ञानावरणीय चार वर्तनावरणीय भीर पाँच

१ इति ८७ उच्यते इति वाट ।

इति वन्धवा वन्धमगा इति वाट ।

१ न भावनी । विधिपुस्तक चार्त्त विधिपुस्तक इति वाट ।

पञ्चम उदयो वोष्मिन्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमिदं षड्वर्षाणमेदासिं स्त्रीयकस्याचरिम समयमि उदयवोष्मेदुवर्त्तमादो । असकितीए उवागोदस्स य पुष्पं षषो पञ्चम उदयो वोष्मिन्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमि षड्वर्षाणं अनोगिचरिमसमयमि उदयवोष्मेदुवर्त्तमादो ।

पञ्चपाणावरणीय-चउदसपावरणीय-पचंतराइयाण सोदयो बंधो । असकितीए मिष्मइद्विप्पहुडि जाव असजदसम्माइद्वि ति सोदय-परोदण षषो, एदेसु मजसकितीए वि उदयवसमादो । उवरि सोदयणैव, पडिवक्खुदयामावादो । मिष्मइद्विप्पहुडि जाव संजदा संजदो [ ति ] उवागोदस्स सोदय परोदण षषो, एदेसु वीवागोदस्स वि उदयवसमादो । उवरि सोदयो, पडिवक्खुदयामावादो ।

पञ्चपाणावरणीय चउदसपावरणीय-पचंतराइयाण भिरंतरा बंधो, सव्वगुणहामेसु वि एगसमएण बंधवोष्मेदामावादो । असकितीए सांतर भिरंतरो बंधो, मिष्मइद्विप्पहुडि जाव पमत्तमंजदो ति सांतरो बंधो, एदेसु पविक्खपयडिबंजदसमादो; उवरि भिरंतरो, पडिवक्ख

अन्तरायक्य पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है क्योंकि, सुहुमसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धक नष्ट हो जानेपर स्त्रीयकपाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें उसका उदयव्युत्पन्न पाया जाता है । यथास्तीति और उवागोदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है क्योंकि, मज्जमसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धक नष्ट हो जानेपर अनोगिकेबलीके अन्तिम समयमें इसका उदयव्युत्पन्न पाया जाता है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार दर्शमावरणीय और पांच अन्तरायक्य स्वेदय बन्ध होता है । यथास्तीतिक मिथ्यादृष्टिसे छेकर असंयतसम्पत्ति तक स्वेदय परोक्षसे बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें अवयवास्तीतिक भी उदय देखा जाता है । ऊपर इसका स्वेदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ अवयवास्तीतिक उदयका अभाव है । मिथ्यादृष्टिसे छेकर संयतासंयत तक उवागोदका स्वेदय परोक्षसे बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें मीचगोत्रका भी उदय देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वेदयसे बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ मीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार दर्शमावरणीय और पांच अन्तरायक्य भिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि सब गुणस्थानोंमें ही एक समयसे इसके बन्धव्युत्पन्नका अभाव है । यथास्तीतिक साम्तर भिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे छेकर प्रमत्तसंयत तक इनमें मनिपक्ष प्रकृतिक बन्ध दूखे जानने साम्तर बन्ध होता है और इससे ऊपर

पयदीप वपामावाहो । उष्णामोदस्म मिच्छाद्वि-सामभेसु सान्तर-गिरंतये । बसंसेन्नेषासाठम-  
तिरिक्ख-ममुस्सेसु, मंसेन्नेषासाठममुदित्तेस्मिणसु गिरंतरंभईसमाहो । उपरिमगुणसु  
गिरंतये, पडिक्खउपयदीप वपामावाहो । पण्यपार्णं मूत्रेयमंगो । गइमंमुच्छदि उवति  
जामिय वत्तम् ।

णिहाणिहा-पयलापयल-थीणगिदि-अणताणुवधिकोध-माण-  
माया-ओम-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण-अउसघण-  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बी उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-  
अणादेज्ज-णीचागोदाण को वंधो को अबधो ? ॥ १०५ ॥

सुपमं ।

मिच्छाद्वि सासणसुम्माद्वि वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा  
॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव इत्येवम् उक्तं निरन्तर बन्ध होता है । उष्णयोजक  
मिच्छाद्वि और सासादनसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें सन्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,  
यहां अस्वभाववर्णायुक्त निर्बंध व मनुष्योंमें तथा स्वभाववर्णायुक्त नील शुभ सेखा  
बाळोंमें बसकर निरन्तर बन्ध देका जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध  
होता है क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । अत्ययोंकी प्रकृष्टता मूत्रेयके  
समल है । पतिसमुत्थादि उपरिम वृद्धजनोंके विषयमें जानकर कहना चाहिये ।

निग्राणिग्रा, प्रवत्तप्रवत्त, स्थानशुद्धि अनन्तानुबन्धी श्रेष्ठ, मान, माया, स्नेह,  
कीर्ति, तिर्यगासु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोभ्यानुपूर्वी, उद्योत,  
अप्रसत्तविहायोभति, दुर्मग, दुस्सर, वनादेय और नीचगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन  
बन्धक है ? ॥ १ ५ ॥

वद खल्ल सुगम है ।

मिच्छाद्वि और सासादनसम्यग्द्वि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, छेप बन्धक हैं  
॥ १ ६ ॥

एतस्स अत्थो सुचन्दे—धीनगिदितियस्स पुम्भ वधो पञ्च उदयो वोष्मिज्जदि,  
 सासणसम्माद्वि पमत्तसंजयेसु जहासखाए वधोदयवोष्मेद्वसपादो । अण्ठाणुधिवउवकस्स  
 दो वि समं वोष्मिज्जन्ति, सासणे तदुययामवदंसपादो । इत्थिवेदस्स पुम्भं वधो पञ्च  
 उदयो वोष्मिज्जदि, सासणाणियहीसु जहासखाए वधोदयवोष्मेद्वसपादो । तिरिक्खाउ  
 तिरिक्खगइ-उज्जेव-णीचायोदाण पुम्भ वधो पञ्च उदयो वोष्मिज्जदि, सासणसम्माद्वि-  
 सज्जदसंजयेसु तेसिं दोण्ण वोष्मेद्वसपादो । अउसठाणपं पुम्भं वधो पञ्च उदयो वोष्मि-  
 ज्जदि, सासण-सजोगीसु तेसिं दोण्ण वोष्मेद्वसपादो । एव चउत्तपडणपं वि वत्तम्भं,  
 सासण पिट्ठववाचमप्पमत्तुवसंतकसाएसु पडम-विदियसंपडणदुगोदयवोष्मेद्वसपादो । एवं  
 तिरिक्खगइपाजोमाणुप्वी दुमग-अणोदेज्जापं वत्तम्भं सासण-असंजदसम्माद्विहीसु वधोदय  
 वोष्मेद्वसपादो । एवमप्यसत्यविहायमइ-दुस्सरणं वत्तम्भं, सासण-सजोगीसु वधोदयवोष्मेद्व  
 वसपादो ।

इस सूत्रका अर्थ कहत है—स्वामिपुद्गलपक्ष पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय  
 व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सासाधनसम्यग्दृष्टि और प्रसन्नचित्त गुणस्थानमें वयाक्रमसे इसके  
 वन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अनन्तानुबन्धितपक्षका वन्ध और उदय दोनों  
 एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि, सासाधन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता  
 है । श्रीवेदका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सासाधन और  
 समिधुत्तिकरण गुणस्थानोंमें वयाक्रमसे उसके वन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।  
 तिर्यगायु, तिर्यगति उद्योत और नीचगोच इनका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय  
 व्युच्छिन्न होता है क्योंकि सासाधनसम्यग्दृष्टि और संवत्सरासंघत गुणस्थानोंमें क्रमशः उदय  
 दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । चार संस्थानोंका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय  
 व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासाधन और सयोगकेबली गुणस्थानोंमें उन दोनोंका  
 व्युच्छेद पाया जाता है । इसी प्रकार चार संस्थानोंका भी पूर्व पश्चात् वन्धोदयव्युच्छेदको  
 कहना चाहिये क्योंकि सासाधन गुणस्थानमें वन्धके मध्य हो जानेपर अग्रमत्त व  
 उपशान्तकपाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उक्त चार संस्थानोंके प्रथम व द्वितीय युगलके  
 उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार तिर्यग्गतिसंयोगानुपूर्वी दुर्गम और  
 अनन्तयेके भी कहना चाहिये क्योंकि, सासाधन व अर्धपतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 क्रमशः इनके वन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार अग्रशस्त्रविहायोगति  
 और तुस्वरके भी कहना चाहिये क्योंकि, सासाधन और सयोगकेबली गुणस्थानोंमें  
 इनके वन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

वयदीय वधामावाधो । उष्मागोदस्स मिच्छाद्वि-सासणेसु सांतर-जिरत्तो । वससेन्ववासाउक्-  
तिरिक्ख-अणुस्सेसु, संखेय्यवासाउक्कसु इति त्वेस्मिपसु जिरत्तरवधदंसणदो । उपरिमणुकेसु  
जिरत्तो, पडिक्कत्तपयदीय वधामावाधो । पञ्चपाण मूत्रेपमंगो । गइसइत्थदि उपरि  
आणिय वधधं ।

णिदाणिदा-पयलापयला-धीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-  
माया-लोम इत्येवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउमठण-चउसंघडण-  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बी-उब्बोव अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-  
अणादेज्ज-णीवागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १०५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्वि सासणसम्माद्वि वधा । एदे वंधा, अवमेसा अवधा  
॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके वधको अभाव होनेसे उक्तच निरन्तर वध होता है । उक्तचोवधा  
मिच्छाद्वि और सासणसम्माद्वि शुक्लस्थानोंमें सन्तर निरन्तर वध होता है क्योंकि,  
यहां अर्जन्वातवधायुक्त निर्वध व अनुप्योमें तथा संप्यातवधायुक्त तीन शुभ सेवका-  
बाकोंमें उमक्क निरन्तर वध होता जाता है । उपरिम शुक्लस्थानोंमें निरन्तर वध  
होता है क्योंकि वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिक वधका अभाव है । प्रत्येकी प्रकृष्टता मूलायक  
समाप्त है । पतिसंपुच्छादि उपरिम वृद्धावको विषयमें जानकर कहना चाहिये ।

निदानिदा, प्रचलप्रचल, स्थानगुद्धि, अनन्तानुवधी श्लेष, मान, माया, स्नेह,  
भक्ति, विषगावु, विर्यगति, चार संस्मान, चार संहनन, नियगतिप्रायोम्यालुपूर्वी, उद्योत,  
अप्रशस्तविद्ययोगति, दुमग दुम्बर, अनदेस और नीचगोत्र, इनका कौन कन्धक और कौन  
अवन्धक है ? ॥ १०५ ॥

यह सब सुगम है ।

मिच्छाद्वि और सासणसम्माद्वि वधक हैं । ये वधक हैं, येव अवन्धक हैं  
॥ १०६ ॥

णिदा-ययलाण को वधो को अवधो ? ॥ १०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपट्टि जाव अपुञ्जकरणविट्टसुदिसजदेसु उव  
समा खवा वधा । अपुञ्जकरणसजदद्वाए सखेज्जदिम भाग गतूण  
वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १०८ ॥

एदम्स अत्थो उच्चदे—यथो एदासि पुण्ण वोच्छिज्जदि पच्चा उदभो, अपुण्ण  
खीपकसाएसु कमेण वधोदयवोच्छेदसपादो । सोदय-परोदण सम्बगुणहावेसु वधो,  
अदुवोदयत्तादो । पितरो, धुवपंचितादो । पच्चया सम्बगुणहावेसु ओपपच्चयतुत्त ।  
मिच्छाद्विष्टी चठगइसत्त, सासणो तिगइसत्त, सम्मामिच्छाद्विष्टी असजदसम्माद्विष्टी दुगइसत्त,  
सेसा देवगइसत्त । गइसमित्ताप-वधवाच्छेदकपाणि सुगमाणि । मिच्छाद्विष्टि चठ  
प्विहो वधो । सेसेसु तिपिह, धुवतामावाधो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रसन्नता कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १०७ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर अपूर्णकर्मप्रविष्टशुद्धिसंयतोर्मि उपशमक व क्षपक तक वन्धक  
है । अपूर्णकर्मसंपत्कालके संत्यातर्षे माग जाकर वन्धव्युच्छेद होता है । ये वन्धक हैं,  
शेष अवन्धक हैं ॥ १०८ ॥

इस स्वल्प अर्थ कहत हैं—इसका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है और उदय  
पश्चात् क्योंकि अपूर्णकर्म व क्षीयकपाय गुणस्थानोंमें कमसे कमके बन्ध और उदयका  
व्युच्छेद देखा जाता है । सब गुणस्थानोंमें इसका बन्ध जोरकर परादयसे होना है क्योंकि  
वे समुबोध्यो हैं । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, अवबन्धी हैं । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें  
ओष्ठप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों गतिपोंसे संयुक्त सासाहमसम्यग्दृष्टि तीन  
गतिपोंसे संयुक्त सम्मग्मिथ्यादृष्टि और असंपत्सम्यग्दृष्टि दो गतिपोंसे संयुक्त तथा शेष  
गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । गतिस्वामित्व अध्याम और बन्धव्युच्छेदस्थान  
सुगम हैं । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होना है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका  
बन्ध होता है क्योंकि, चारों मुख बन्धका समाप है ।

सादावेदनीयस्स कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १०९ ॥

वीजमिदितियादीर्णं सञ्जासि पयद्वीजं वंषो सन्ध्य-परोद्भो, उभयमा वि विरोध-  
मात्रा । धीमगिदितिय-मपतापुर्वविचठक-तिरिक्खाठभाष विरंतरो वंषो, एगसमएन  
वंषुकरमावरो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोग्गानुपुम्भी-वीजागात्तए सन्तर-विरंतरो वंष ।  
कथं विरंतरो ? अ, सेउ-वाउककइयवरपविदियमिच्छाइइसु सत्तमपुइवीमिच्छाइइ-अमव-  
सम्माइइवेरइएसु विरंतरवंषुवत्तमावरो । सेसाण सन्तरो वंषो, एगसमएन वंषुकरमदंमवारो ।  
पण्णया बोधपण्णयत्तुत्त । तिरिक्खाठ तिरिक्खगइपाभोग्गानुपुम्भी-उ-ओवाणि हा वि  
तिरिक्खगइसंठुत्तं, इत्थिरेइ गिरयगइए विना तिगइसंठुत्तं, अउसंअन अउसंअइवावि हो वि  
तिरिक्ख-मधुसगइसंठुत्तं, जणसरवविहायगइ-जुमग-जुस्सर अणवेज्ज-वीजागोइवि मिच्छाइइ  
तिगइसंठुत्त वंवर देवगइए विना, सासणो तिरिक्ख-मधुसगइसंठुत्त । मसाओ पयद्वीजा  
मिच्छाइइ अउगइसंठुत्तं सामणा तिमइसंठुत्तं । सेस विनिष वत्तम् ।

स्थानपुत्रिषय आदि सव प्रकृतिर्षोका वन्ध स्वादय परदय हाता है, क्योंकि  
होती प्रचारसे भी उनका वन्धक विरोध नहीं है । स्थानपुत्रिषय धनन्तानुबन्धितगुण  
और तिर्यगायुका निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इसके वन्धविधामक  
ममत्त है । तिर्यगति तिर्यगातिमायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रक सन्तर निरन्तर वन्ध  
होता है ।

संक्ष— निरन्तर वन्ध कैसे जाना है ?

समाधान—यह शोक ही नहीं क्योंकि तत्कालिक व वायुकायिक जीवोंमें  
माकर पंचन्द्र मिथ्यादधियोंमें वत्तक हुए जीवों तथा सज्जन पूषिर्षकि मिथ्यादधि व  
सासादनसम्पदादि नादिक्योंमें उक्त प्रकृतिर्षोका निरन्तर वन्ध पाया जाता है ।

शेष प्रकृतिर्षोका सन्तर वन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे उनका वन्धक  
विधाम हुआ जाता है । मत्तबोली प्रकृषा जोषप्रत्ययोंके समान है । तिर्यगायु, तिर्यगति  
मायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको होमों ही गुणस्थानकी जीव तिर्यगायुसे संयुक्त  
बांधते हैं । लीबकके नरकगतिक विना तीन गतिर्षोके संयुक्त बांधते हैं । जार  
संस्थान और जार संज्ञनको होमों ही तिर्यगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।  
ममदास्तविहायोगति जुर्मग जुस्सर, मनावेज और नीचगोत्रको मिथ्यादधि देवगतिक  
विना तीन गतिर्षोके संयुक्त बांधते हैं तथा सासादनसम्पदादि तिर्यगति व  
मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतिर्षोके मिथ्यादधि जाते गतिर्षोके संयुक्त  
और सासादनसम्पदादि तीन गतिर्षोके संयुक्त बांधते हैं । शेष विचार कर करना चाहिये ।

णिष्ठा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ १०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपट्टि जाव अपुव्वकरणपविट्टसुद्धिसजदेसु उव समा खवा वधा । अपुव्वकरणसजदद्वाए सखेज्जदिम भाग गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १०८ ॥

एदस्स अरथो उप्पदे—वंधो एदासि पुत्र वोच्छिज्जदि पच्छा उदभो, अपुव्व खीणकत्ताएसु क्केण वंधोदयवोप्पेददसपादो । सोदय-परोदयण सव्वगुणकामेसु वंधो, अद्भवोदयत्तादो । मित्तरो, धुव्वविच्छादो । पप्पया सव्वगुणकामेसु ओपपप्पयतुत्थ । मिच्छाद्विष्टी चठगाइसंद्धत्त, सासणो तिगाइसंद्धत्त, सम्मामिच्छाद्विष्टी असव्वदसम्माद्विष्टी दुगाइसंद्धत्त, सेसा देवगाइसंद्धत्त । गइसामित्तद्वाण-वधवोप्पेदद्वाणाणि सुगमाणि । मिच्छाद्विष्टिस्स चठ-म्विष्टो वंधो । सेसेसु तिविहा, धुव्वत्तामावादो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रषयक कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ १०७ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे केवल अपूर्वकरणप्रविष्टिदुस्संयतोमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरणसंयतकलके संख्यातवें माग आकर बन्धघुच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवधक हैं ॥ १०८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं—इसका बन्ध पूर्वमें ध्युच्छिद्य होता है और उदय पश्चात् क्योंकि, अपूर्वकरण व खीणकत्ताय गुणस्थानोंमें कमसे इसके बन्ध और उदयका धुप्पेद देखा जाता है । सब गुणस्थानोंमें इसका बन्ध ओदय परोदयसे होता है, क्योंकि ये मनुष्योदयी हैं । मित्ततर बन्ध होता है क्योंकि, धुव्वबन्धी है । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें ओपप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों गतिपोंसे संयुक्त सासावन्नसम्पगद्वि तीम गतिपोंसे संयुक्त सम्पगमिथ्यादृष्टि और असंयतसगगद्वि दो गतिपोंसे संयुक्त तथा शेष गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । गतिरुगमित्थ अरवान और बन्धघुप्पेदस्थान सुगम है । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वहाँ सब बन्धका अभाव है ।

सादावेदनीयक कौन बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ १०९ ॥



सुगम ।

मिच्छादृष्टिपुष्टि जाव सजोगिकेवली वधा<sup>१</sup> । सजोगिकेवलि  
अद्वाए चरिमसमयं गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा  
अवधा ॥ ११० ॥

एदस्म असो उच्छेदे— वधा पुण्य पच्छा उद्वो वाप्पिज्जा, सजोगिकेवलि  
अजोगिकेवलीसु अहन्तेण वधोदयवोच्छेदसपादो । सोदय-परोदयस वधो, सम्बन्धवधो  
अद्वाएदयपादो । मिच्छादृष्टिपुष्टि जाव पमत्तसवरो ति सारो वधो, एगसमयस वधुवत्-  
दसपादो । उपरि विरितो, परिबन्धपमदीए वधामावाधो । पन्चया सम्बन्धवधसु बोधवत्-  
तुत्सु । मिच्छादृष्टि-सासवत्पमादिद्विषो तिगइसंभुत्तं, विरयगइए सह सादवधामावाधो । सं-  
सम्बन्धवधुत्तं ।

असादवेदणीय-अरदि-सोग अयिर-असुह-अजसकित्तिणामाण  
को वधो को अवधो ? ॥ १११ ॥

यह सुख सुगम है ।

मिथ्यापक्षि लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलीतक के अन्तिम  
समयके जाकर बन्धमुच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ ११ ॥

इस सुखका अर्थ कहते हैं— सातावेदनीयका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात्  
व्युत्पन्न होता है क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली शुद्धस्थानोंमें क्रमसे उच्छेद  
बन्ध और उदयस्य व्युत्पन्न देखा जाता है । सादय परावयसे बन्ध होता है क्योंकि,  
यह सब शुद्धस्थानोंमें अनुबोधी है । मिथ्यादृष्टिसे छुटकर प्रमत्तसंयत तक सात्तर  
बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ एक समयसे उत्तमा बन्धविग्राम देखा जाता है ।  
प्रमत्तसंयतसे ऊपर निरुत्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपन्न प्रकृतिके बन्धका  
अभाव है । प्रत्यय सब शुद्धस्थानोंमें बोधप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि और सासादन  
सम्बन्धदृष्टि तीन गतिर्योंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, नरकगतिसे साय सातावेदनीयका  
बन्ध नहीं होता । शेष सब प्रकारका बोधक समान है ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्ति, जसुम और अयशकीर्ति नामकर्मका कौन  
बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १११ ॥

१. यद्विदु वधा इति पाठ ।

२. अ-वन्धवो वधा इति पाठ ।

[ सुगमे । ]

मिच्छाहृष्टिप्यहुडि जाव पमत्तसजदो ति वधा । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ ११२ ॥

असादवेदणीयस्स पुब्ब षधो पच्छा उदमो बोधिमणो, पमत्त-अजोगिकेवलीसु जहा-  
कमेव षधोदयवोच्छेदुवत्तमादो । एवमरदि-सोगाण वत्तव्य, पमत्तपुब्बकरमेसु षधोदयवोच्छेद-  
दसगादो । एवं षेव अविर् असुहायं वत्तव्य, पमत्त-अजोगिकेवलीसु षधोदयवोच्छेदुवत्तमादो ।  
अजसकिटीए पुब्बमुदमो पच्छा बंधो बोधिमणो, पमत्तसजद-असजदसम्मादिहीसु षधोदय  
वोच्छेदुवत्तमादो ।

असादवेदणीय-अरदि-सोगाण सोदय-परोदएण सव्वगुणहाणेसु षधो, परावत्तजोदय  
चादो । अविर् असुहायं सव्वत्थ' सोदएण षधो, पुवोदयचादो । अजसकिटीए मिच्छाहृष्टिप्यहुडि  
जाव असजदसम्मादिहि ति सोदय परोदएण बंधो, एदेसु पडिवक्खोदएण वि बंधुवत्तमादो ।

[ यह सब सुगम है । ]

मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, जेव जीव अवबद्ध  
हैं ॥ ११२ ॥

असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पिच्छ होता है क्योंकि  
प्रमत्तसयत और अपोराकबली गुणस्थानोंमें सयाक्रममे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद  
पाया जाता है । इसी प्रकार अरणि और शोकक कहना चाहिये क्योंकि, प्रमत्त और  
अपर्यवर्तन गुणस्थानोंमें क्रमदा । इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी  
प्रकार ही अस्सियर और मशुमक भी कहना चाहिये क्योंकि प्रमत्त और सयागकबली  
गुणस्थानोंमें उनका बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । अयत्ताकीर्तिका पूर्वमें  
उदय और पश्चात् बन्ध व्युत्पिच्छ होता है क्योंकि, प्रमत्तसयत और असंयतसम्पत्ति  
गुणस्थानोंमें क्रममे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

असातावेदनीय अरणि और शाकका सब गुणस्थानोंमें स्वादय-परोदयस  
बन्ध होता है क्योंकि इनका उदय परिपत्तनशील है । अस्सियर और मशुमका सर्वत्र  
स्वोदयस बन्ध होता है क्योंकि, ये सुबोदयी हैं । अयत्ताकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे छकर  
असंयतसम्पत्ति तक स्वादय-परोदयस बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें अनिपक्ष  
प्रवृत्तिके उदयका साथ भी उसका बन्ध पाया जाता है । इसके ऊपर पदपदसे

उपरि परोक्ष, असकिक्षिप चैव तत्परोक्षैर्दसणादौ । एवासि छन्द पयसीन सांतरो नवो,  
दो-तिग्गिसमसादिक्कल्लिपिचत्तर्धनियमागावादौ । पञ्चमा सुगमा । एदाओ छप्पवदीओ  
मिप्पमइही चउमइसद्धत्तं, सासणो तिगइसद्धत्तं, सम्मागिप्पमइही अमवदसम्माइही दुगइसद्धत्तं,  
उपरिमा देवगइसद्धत्तं वंषंति । उपरि चोपमगो ।

मिच्छत्त-णसुसयवेद-णिरयाउ णिरयगइ एइदिय-वीइदिय-तीइ-  
दिय-चउरिंदियजादि-हुइसठाण-असपत्तसेवट्टसघट्टण-णिरयाणुपुब्बी-  
आदाव यावर-सुद्धम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाण को वधो को  
अवधो ? ॥ ११३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइही वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ११४ ॥

‘ एदे वधा ’ ति णिरेसो अणन्धओ, भवगदहपरूवणादौ । प एस दोसो,

बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ यथाकौतिल्य ही उद्भव वधा जाता है । इन छह प्रकृतियोंका  
सामान्य बन्ध होता है क्योंकि, वा-लीम समयादि रूप काकसं सम्बन्ध इनके बन्धके  
मिषमक्य अभाव है । अत्यय सुगम है । इन छह प्रकृतियोंका मिष्यादि चार गतियोंमें  
संयुक्त सासादनसम्बन्धित तीस गतियोंमें संयुक्त सम्मगिमिष्यादि व असंयतसम्बन्धित  
दो गतियोंमें संयुक्त तथा उपरिम जीव देवगनिम संयुक्त बांधने है । उपरिम प्रकृति  
जीवके समान है ।

मिष्यास्व, नपुंसकवेद, नारक्यु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,  
चतुर्न्द्रिय जाति दुग्धमस्थान, असंप्राप्तसुपाटिकसहनन, नरकानुपूर्वी, अताप, स्वानर,  
सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणकृतीर नामकर्मक्य कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ?  
॥ ११३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिष्यादि बन्धक है । ये बन्धक हैं, अथ अवन्धक हैं ॥ ११४ ॥

सूत्र— ये बन्धक हैं यह निर्देश अत्यर्थक है, क्योंकि, यह ज्ञात अर्थका  
प्रकृति करता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, मेधावर्जित अर्थात् मूर्ख जनोंके

मेहावन्जियवणापुरगहृं तण्णिसादो । मिच्छत्त-अपन्नत्ताण षंघोदया समं वोच्छिन्नजति,  
मिच्छाद्विद्धि चेष तदुमयवोच्छेददसणादो । पईदिय-वीईदिय-सीईदिय-चठरिदियजादि  
आदाव-यावर-सुहुम-साहारणाणमेस विचारो जत्थि, पंचिदिएसु तेसिमुदयामात्रादो । जवरि  
पंचिदियपञ्चत्तण्डुल अपन्नत्तस्स वि एसो निचारो जत्थि चि वत्तव्व । जवुसयवेदस्स पुण्वं षंघो  
पञ्चा उदयो वोच्छिन्नजदि, मिच्छाद्विद्धि-अणिपट्टिगुणेसु पवोदयवोच्छेददसणादो । एव  
जिरयाठ-जिरयगह-जिरयाणुपुण्यीण वत्तव्वं, मिच्छाद्विद्धि असंजदसमारिद्धीसु षंघोदयवोच्छेददस  
णादो । एवं हुदसंठजन्म वत्तव्वं, मिच्छाद्विद्धि-सज्जोमिकेवलीसु षंघोदयवोच्छेददसणादो ।  
एवमसपत्तसेवहसंयज्जस्स वि वत्तव्वं, मिच्छाद्विद्धि-अप्पमत्तेसु षंघोदयवोच्छेदुवत्तमादो ।

मिच्छत्तस्स मोदण्य षंघो, पुवोदयत्तादो । जवुमयवेद अपन्नत्ताण सोदय-परोदयो,  
अदुवोदयत्तादो । जवरि पंचिदियपञ्चतण्डुल अपन्नत्तस्स परोदयो षंघो, तत्स तदुदयामात्रादो ।

अनुग्रहके सिधे यह निवेदा किया गया है ।

मिथ्यात्व और अपवाप्तक्य बन्ध व उदय दोनों एक साथ व्युत्पन्न होते हैं क्योंकि मिथ्याद्विष्ट गुणस्थानों में ही उन दोनोंका व्युत्पन्न देखा जाता है । एकैन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अनुचिन्द्रिय जात अनाप स्वावर, सूक्ष्म और साधारण इन प्रकृतिपोंके यह विचार नहीं है क्योंकि, पंचेन्द्रिय जीवोंमें उनके उदयका समाव है । विशेष इतना है कि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपवाप्त प्रकृतिके भी यह विचार नहीं है यत्ता कहना चाहिये । नपुंसकवेदका पूर्वमें बन्ध और पर्याप्त उदय व्युत्पन्न होता है क्योंकि, मिथ्याद्विष्ट और अनिष्टितकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युत्पन्न देखा जाता है । इसी प्रकार नारकजयु, नारकजलि और नारकानुपूर्वोंके कहना चाहिये क्योंकि, मिथ्याद्विष्ट और असंयतसाम्यद्विष्ट गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका व्युत्पन्न देखा जाता है । इसी प्रकार बुद्धसंस्थानके भी कहना चाहिये क्योंकि, मिथ्याद्विष्ट और सयागकवली गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युत्पन्न देखा जाता है । इसी प्रकार असंयतसुखादिक संहरणके भी कहना चाहिये क्योंकि, मिथ्याद्विष्ट और अग्रमत्त गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युत्पन्न पाया जाता है ।

मिथ्यात्वका स्वेदपदसे बन्ध होता है क्योंकि यह अचानदी है । नपुंसकवेद और अपवाप्तक्य स्वेदप-परोदय बन्ध जाता है क्योंकि ये अनुपूर्वोत्पी है । विशेष इतना है कि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपवाप्तक्य परोदय बन्ध होता है क्योंकि, उनमें अपवाप्तके

हुहसंज्ञा-भसंपसेवहसंधज्ञाण सोदय-परोदयो धंधा, विमहागदीण उदयामने वि  
 वंधइसंज्ञाहो सध्वेति तदुदयधियमामावादा वा । गिरयाउ-भिरयगइ-परिदिय-धीइदिय-सीइदिय-  
 चउरिदियआदि भिरयाणुपुष्पी-आदाव यावर-सुहुम-साह्वरणार्ण परोदयो धंधो, धंधिदिएसु  
 एवासिमुदयविरोदाहो उदयण सह धंधस उतिविरोदाहो ।

मिच्छत-भिरयाउभावे विरंतो धंधो, एगममएव धंधुवरमाभावाहो । सेसाण पवधीनं  
 सांतरो, भिरंतरधधे धियमामावाहो । पण्णया सुगमा । मिच्छत चउगइसंज्ञुत्तं, नउसपेध  
 हुहसंज्ञाणि तिगइसंज्ञुत्तं, अप-जत्तासपसमेवहसंधज्ञाणि तिरिक्ख-मणुमगइसंज्ञुत्तं बन्हेति ।  
 भिरयाउ भिरयगइ-भिरयाणुपुष्पीहो भिरयगइसंज्ञुत्तं, सेमाओ सम्मपयडीहो तिरिक्खगइसंज्ञुत्तं ।  
 ससमोर्ध ।

अपञ्चन्स्त्रणावरणीयकोध-माण-माया-लोम मणुसगइ-ओरा  
 लियसरीर ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसह्वहरणारायणसरीरसध  
 ढण मणुसगइपाओगगाणुपुष्पीणामाण को धधो को अयधो ? ॥ ११५ ॥  
 सुगमं ।

उदयका अभाव है । हुहसंस्थान और असेवाप्तसुपादिहसंधनका स्वरूप परोदय वण्य  
 होता है क्योंकि विमहागतिमें उनका उदयामाव होनेपर भी वण्य देखा जाता है, जबका  
 सब पंचेन्द्रियोंके उदय उदयका नियम भी नहीं है । नारकायु मरकगति पंचेन्द्रिय  
 हीन्द्रिय बहिन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आदि मरकयुपूर्वी आचार स्वावर, सुहम और साधारण  
 इकाय परोदय वण्य होता है क्योंकि पंचेन्द्रियोंमें इनके उदयका विरोध होनेसे  
 उदयके साथ उनका वण्यक कथनका विरोध है ।

मिष्यत्त्व और नारकायुका निरन्तर वण्य होता है क्योंकि एक समयसे इन्के  
 वण्यविधामका अभाव है । होय प्रकृतिवैक्य सात्तर वण्य होता है क्योंकि निरन्तर  
 वण्यमें विषमका अभाव है । मत्त्व सुगम है । मिष्यत्त्वको चारों गतियोंसे संयुक्त वसुसक-  
 वेत् और हुहसंस्थानको देवगति बिना तीन गतियोंमें संयुक्त तथा अपयोज्य और  
 असेवाप्तसुपादिहसंधनको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बाँधते हैं । नारकायु,  
 मरकगति और मरकयुपूर्वीको मरकगतिसे संयुक्त तथा होय सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसे  
 संयुक्त बाँधते हैं । होय प्रकृति जोयक समान है ।

अत्रस्यास्थानावरणीय श्रेय मान, माया श्रेय मनुष्यगति, बौद्धिकशरीर,  
 बौद्धिकशरीरसोपान, अर्धयवज्जनराजशरीरसंज्ञन और मनुष्यगतिप्राप्त्योभ्यानुपूर्वी नामकर्म,  
 इनका कौन वण्य और कौन अपवण्य है ? ॥ ११५ ॥

यह सब सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव असजदसम्मादिद्वी वधा । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ ११६ ॥

मणुस्मानुपूर्वी-अपञ्चकत्ताणचउत्तकाण पधोदया सम वोच्छि-वति, असजदसम्मा  
दिद्विष्टि तदुभयाभावइसणादो । मणुमगइए पुर्वं पधो पञ्च तदमो वोच्छिज्जो, असजद  
सम्मादिद्वि अजोगिकेयलीसु पधोदयवोच्छेदइसणादो । ओराटियसरीर ओराटियसरीरभगोत्रंग  
वञ्चरिसहवइरपाणपणसरीरसंपडणापमव येव वत्तं, असजदसम्मादिद्वि-सजोगीसु पधोदय  
वोच्छेदुवत्तमादो । अपञ्चकत्ताणचउत्तकादीण सोदय-परोदण पधो, अदुवोदयत्तादो । अपञ्च  
कत्ताणचउत्तस्म पधो भिरंतरा, धुवपवित्तादो । मणुमगइ-मणुमगइपाभोमाणुपूर्वी-ओराटिय  
सरीर ओराटियसरीरभगोवगणं मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्वीसु पधो सत्तर-भिरंतरो, तिरिक्ख-  
मणुस्मेसु सांतरस्स आणवाविदेवेषु भिरंतरसुवत्तमादो । सम्मामिच्छादिद्वि असजदसम्मादिद्वीसु  
भिरंतरो, एगसमएण तस्य पधुवरमाभावादो । वञ्चरिसहवइरपाणपणसरीरसुधइणस्स मिच्छाद्वि

मिप्पाद्विमे लेक असंयतसम्यग्द्वि तक् कञ्चक ई । ये कञ्चक ई, अप अञ्चक  
ई ॥ ११६ ॥

मनुष्यामुपूर्वी और अग्रत्याक्यानावरणचतुष्पका बन्ध और उदय दोनों साधने  
धुच्छिन्न होते हैं क्योंकि असंयतसम्यग्द्वि गुणस्थानमें उन दोनोंका समाप द्वारा जाता  
है । मनुष्यगति का पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय धुच्छिन्न होता है क्योंकि असंयत  
सम्यग्द्वि और अयोगकबली गुणस्थानोंमें क्रमशः उनका बन्ध और उदयका धुच्छिन्न होता  
जाता है । औदारिकारीर, औदारिकशरीरगोलांग और पञ्चपमबज्जनापचारीरमंहननका  
भी इसी प्रकार हा कहना चाहिये क्योंकि, असंयतसम्यग्द्वि और अयोगकयली गुण  
स्थानोंमें क्रमशः उनका बन्ध और उदयका धुच्छिन्न पाया जाता है ।

अग्रत्यारपाचरणचतुष्पादिकोंका स्वादय परादयसे बन्ध होता है क्योंकि व  
अमुपपूर्वी प्रवृत्तियाँ हैं । अग्रत्यारपाचरणचतुष्पका बन्ध भिरंतर होता है क्योंकि,  
प्रपञ्ची है । मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायोगानुपूर्वी औदारिकारीर और औदारिक  
शरीरगोलांगका बन्ध मिप्पाद्वि व आमाद्वमसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें आन्तर-भिरंतर  
होता है क्योंकि यह निर्वच व मनुष्यामें आन्तर हाकर भी आननादि दोनों निरन्तर  
पाया जाता है । सम्यग्मिप्पाद्वि और असंयतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें उनका भिरन्तर  
बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एक समयमें इनका बन्धविग्रामका समाप है ।  
पञ्चपमबज्जनापचारीरमहननका मिप्पाद्वि और आमाद्वम गुणस्थानोंमें आन्तर बन्ध

हुं हंसं त्वम-भसंपत्सेवद्वसंपद्वर्णं सोदय-परोक्षो धंधा, विग्राहगदीए उदयामो वि  
 नयदसंवाहो सन्धेसि तदुदयणियमामावाहो वा । पिरयाउ-पिरयगह-एरदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-  
 चउरिंदियजादि पिरयाउपुष्पी-आदाय भावर-सुहृम-साहायणं परोक्षो धंधो, पंधिदिपु  
 प्दामिमुदयविरोहाहो उदयण सह नयस्य उतिविरोहाह ।

मिच्छत-पिरयाउआणं विरंतो धंधो, एगममण्य धंधुवरमामत्वाहो । सेसाज पयडीं  
 सान्तो, विरंतरनय नियमामावाहो । पण्चया सुगमा । मिच्छतं चउगइसंहुतं, मठंसमेर  
 हुं हंसं त्वमपि तिगइसंहुत, नय नयसंपत्सेवद्वसंपद्वर्णानि निरिक्ख मणुमगइसंहुतं बन्धति ।  
 पिरयाउ-पिरयगह-पिरयाउपुष्पीओ पिरयगइसंहुत, सेसाओ सन्धपयडीओ निरिक्खमइसंहुतं ।  
 सेसामां ।

अपञ्चस्त्राणावरणीयकोध-माण-माया-लोभ मणुसगह-ओरा  
 लियसरीर ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहवहरणारायणसरीरसध  
 ढण मणुसगइपाओग्गाणुपुष्पीणामाण को वधो को अवधो ? ॥ ११५ ॥  
 सुगमं ।

उदयक्य भमाह है । हुं हंसस्थान और असंमात्तवृषाटिकासहननक्य स्त्रोदय परोक्ष वण्य  
 हाता है क्योकि, विग्रहगतिमें उमक्य उदयामाव हलेपर भी वण्य देला जाता है, अथवा  
 सब पंचमिद्वयोंके उमक्य उदयक्य नियम भी महीं है । नारकायु मरकगति एकेन्द्रिय  
 द्वीन्द्रिय त्रिन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय जाति मरकानुपूर्वी अलाय स्वावर, सुहृम और साधारण  
 इनका परोक्ष वण्य हाता है क्योकि, पंचमिद्वयोंमें इनके उदयक्य विरोध हामेस  
 उदयके साथ उमक्य वण्यक कथनक्य विरोध है ।

मिष्यान्व और नारकायुका निरन्तर वण्य होता है क्योकि एक समयसे इनके  
 वण्यविधामक्य भमाह है । शय प्रकृतिषोंका माल्तर वण्य होता है क्योकि निरन्तर  
 वण्यमें नियमका भमाह है । प्रथम सुगम है । मिष्यान्वको चारों गतिषोंसे संयुक्त मणुमक  
 क्षेत्र और हुं हंसस्थानको वैद्यगति बिना तीन गतिषोंसे संयुक्त तथा अपर्याप्त और  
 असंमात्तवृषाटिकसहननक्य त्रिगतिगति व मनुष्यगतिस संयुक्त बांधते हैं । नारकायु  
 मरकगति और मरकानुपूर्वीक्य मरकगतिम संयुक्त तथा शय सब प्रकृतिषोंका त्रिगतिगतिसे  
 संयुक्त बांधत है । शय प्रकृणा भाषक समाज है ।

अप्रत्यात्मनानारणीय नय मान, माया, त्वम मनुष्यगति औरशरीरकसरीर,  
 औरशरीरकसरीरगोपांग, वज्रपमज्जनाराचसरीरमहनन और मनुष्यगतिप्रायोम्यानुपूर्वी नामकर्म,  
 इनका कैन वण्यक और कैन अवण्यक है ? ॥ ११५ ॥

बह मय सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,  
अवमेसा अरंधा ॥ ११६ ॥

मनुष्साणुपुष्पी-अपञ्चकत्ताणपउक्कण पघोदया समं योष्मिज्जति, असंजदसम्मा-  
दिट्ठिहि तदुभयामावदंसादो । मणुमगइण पुट्ट पघो पच्छा उदजो योष्मिण्णो, असंजद  
सम्मादिट्ठि अजोगिकेयत्तिसु पंधोदयवोच्छेदंसादो । भोरात्थियसरीर भोरात्थियसरीरभगोवंग  
वज्जग्गिमहवहरणारायणसरीरसंघट्ठाणमव वेत्र वचन, असंजदसम्मादिट्ठि-संजोगीसु पंधोदय  
योष्मेट्ठुवर्त्तमादो । अपञ्चकत्ताणपउक्कणदीण सोदय परादण्ण पंधो, अदुवोदयत्तादो । अपञ्च  
कत्ताणचठस्स पघो भिरतरो, धुववधित्तादो । मणुमगइ-मणुमगइपाओगाणुपुष्पी-भोरात्थिय  
सरीर भोरात्थियसरीरभगोवंगण मिच्छादिट्ठि सामणसम्मादिट्ठीसु पघो सांतर-भिरतरो, तिरिक्ख-  
मणुत्तेसु सांतरस्स आपाददिदेवेसु भिरतत्तुवर्त्तमादो । सम्मानिष्मदिट्ठि अमंजदसम्मादिट्ठीसु  
भिरतरो, एगसमएव तत्थ पंधुवरमासादो । वज्जग्गिमहवहरणारायणसरीरसंघट्ठाणसु मिच्छादिट्ठि

मिष्पाद्यसि लेक असपतसम्पगदि तक वन्धक है । ये वन्धक है, श्रुप अमन्धक  
है ॥ ११६ ॥

मनुष्यानुपूर्वी और अमरपालयानावरणचतुष्कका वन्ध और उदय दोनों साथमें  
स्पृष्टिउप हाते हैं क्योंकि, असंयतसम्पगदि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव दगा जाता  
है । मनुष्यगतिका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय स्पृष्टिउप हाता है क्योंकि असंयत  
सम्पगदि और अयागकवली गुणस्थानोंमें क्रमशः उमक वन्ध और उदयका स्पृष्टिउप दगा  
जाता है । भौतिकशरीर, भौतिकशरीरोंगापांग और पञ्चमयजनारायणशरीरमहानक  
और इसी प्रकार ही कहना चाहिये क्योंकि, असंयतसम्पगदि और अयागकवली गुण  
स्थानोंमें क्रमशः उमक वन्ध और उदयका स्पृष्टिउप पाया जाता है ।

अमरपालयारणचतुष्पादिकोंका उदाय परादयस वन्ध हाता है क्योंकि, व  
अभुपादपी मरुतियां हैं । अमरपालयारणचतुष्कका वन्ध निरन्तर हाता है क्योंकि,  
धुववन्धी हैं । मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी भौतिकशरीर और भौतिक  
शरीरोंगापांगका वन्ध मिष्पाद्यसि व सामान्यसम्पगदि गुणस्थानोंमें सामान्य निरन्तर  
हाता है क्योंकि, यह निर्यय व मनुष्योंमें सामान्य हाकर भी आमतया ब्रह्मोंमें निरन्तर  
पाया जाता है । सम्पगिमिष्पाद्यसि और अमंजदसम्पगदि गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर  
वन्ध हाता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एक समयसम एक वन्धविधामध्य अभाव है ।  
पञ्चमयजनारायणशरीरमहानका मिष्पाद्यसि और सामान्य गुणस्थानोंमें सामान्य वन्ध



साम्पयेसु सान्निधे यथो । उपरि जिरंतरा, पडिवत्तपयईय बंधामावादे । पश्यमा सुगमा ।  
उपरि मूलेषमगो ।

पञ्चसन्धानावरणकोध-माण-माया-लोभाण को बंधो का  
अवधो ? ॥ ११७ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यहुहि जाव सजदासजदा बधा । एदे बधा,  
अवसेसा अवधा ॥ ११८ ॥

एदं पि सुगम ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाण को बंधो को अवधो ? ॥ ११९ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यहुहि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठवसमा  
स्ववा बधा । अणियट्ठिवादरद्वाए सेसे सस्सेज्जाभागे' गतूण बंधो  
वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अवधा ॥ १२० ॥

बोला है । ऊपर उसकर निरन्तर बन्ध होना है क्योंकि, वहाँ प्रतिपन्न प्रकृतियोंके बन्धका  
समाय है । प्रत्यक्ष सुगम है । उपरिसे प्रत्यक्ष मूलोपक समाय है ।

प्रत्याक्षानावरण काय, मान, माया और लोभकर कौन बन्धक व कौन अवन्धक  
है ? ॥ ११७ ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्पाद्यहिमे लेकर संयत्तार्थयत्त तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक  
हैं ॥ ११८ ॥

यह सब भी सुगम है ।

पुरिसवेद और मंग्गलनयनकर कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ११९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्पाद्यहिमे लेकर अनिष्टिकरणपादरसाम्परायिकप्रतिष्ठ उपशमक व क्षयक तक  
बन्धक है । अनिष्टिकरणपादरसलके शेषमें मंग्यात बहुमागोंके भीत जानेपर बन्ध  
प्राप्ति होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १२० ॥

( वरिष्ठ सखेयव भाये वणि वाद ।

एव सि सुगम ।

माण माया-सजलणण को बधो को अवधो ? ॥ १२१ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्णुडि जाव अणियट्टी उवसमा सत्ता बधा ।  
अणियट्टिवादरद्दाण सेमे सेमे सस्वेज्जे भागे गतूण बधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे बधा, अवसेमा अवधा ॥ १२२ ॥

सुगम ।

लोभसजलणस्म को बधो को अवधो ? ॥ १२३ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्णुडि जाव अणियट्टी उवसमा सत्ता बधा ।  
अणियट्टिवादरद्दाण चरिमममय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा,  
अवसेमा अवधा ॥ १२४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

मन्वन्त मान और मायाकर कर्म बन्धक और कर्म बन्धक है ? ॥ १२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादर्शमे लेकर अनिशृतिरूप उपशमक व क्षयक तक बन्धक है । अनिशृति-  
वादरक्तक रूप शपथ रक्षणपान बहुमात्रा वाक्य पाप पुण्यिष्ठ होता है । ये बन्धक हैं,  
शेष बन्धक हैं ॥ १२० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मन्वन्त स्वभक्त कर्म बन्धक और कर्म बन्धक है ? ॥ १२३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादर्शमे लेकर अनिशृतिरूप उपशमक व क्षयक तक बन्धक है । अनिशृति-  
करणपादरक्तक मन्त्रिम ममपमे वाक्य पाप पुण्यिष्ठ होता है । ये बन्धक हैं, शेष  
बन्धक हैं ॥ १२४ ॥

सासभेसु संतरेषु बंधो । उवरि धिरेतरो, पडिवक्खपयडीण बंधामावादा । पञ्चया सुम्मा ।  
उवरि मूलेषमंगो ।

पञ्चनखाणावरणकोध-माण-माया-लोभाण को बंधो को  
अबंधो ? ॥ ११७ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यद्बुद्धि जाव संजदासजदा बंधा । एदे बंधा,  
अवसेसा अबंधा ॥ ११८ ॥

एदं पि सुगम ।

पुरिसवेद-कोधसजलणाण को बंधो को अबंधो ? ॥ ११९ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यद्बुद्धि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्ठवसमा  
ख्वा बंधा । अणियद्विवादरद्वाए सेसे सखेज्जाभागे गतूण बंधो  
वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२० ॥

होता है । ऊपर उक्तका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धका  
अभाव है । प्रत्यक्ष सुगम है । उपरिष्ठ प्रकृत्या मूळोपके समान है ।

प्रत्याम्भानावरण कोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक व कौन अबन्धक  
है ? ॥ ११७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादर्शिन लेकर संयतासेपत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक  
है ॥ ११८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

पुरुषवेद और संवत्सनकोपक कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादर्शिन लेकर अनिशुचितकणबाहरसाम्प्रदायिकप्रविष्ट उपशमक व क्षयक तक  
बन्धक हैं । अनिशुचितकणबाहरकस्तके शेषमें संख्यात बह्मभागोंके भीत जानेपर बन्ध  
प्राप्ति होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १२० ॥

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ १२९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी असजदसम्माद्विष्टी सजदासजदा  
पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तद्वाए सखेज्जदिम भाग  
गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १३० ॥

सुगमं ।

देवगइ-पंचिन्द्रियजादि-चेउब्बियत्तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-  
मठण-चेउब्बियसरीर-अगोवग-वण्ण गध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणु-  
पुब्बी अगुरुत्तल्लहुव उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्यविहायगइ-तस-  
वादर-पब्जस-पत्तेयसरीर थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-  
णामाण को वधो को अवधो ? ॥ १३१ ॥

सुगमं ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ १२९ ॥

यह सख सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टि, सासादनसम्पद्विष्टि, असंयतसम्पद्विष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और  
अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तकलके संस्मालवें माय जाकर बन्ध व्युत्पिन्न होता है ।  
ये बन्धक हैं, क्षेप अबन्धक हैं ॥ १३० ॥

यह सख सुगम है ।

देवमति, पंचेन्द्रियमति, वैमिश्रिक, तैयस व कामण क्षरीर, समचतुरससंस्वान,  
वैमिश्रिकक्षरीरगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुत्तल्ल, उपघात,  
परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहारीगति, अस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येक्षक्षरीर, स्थिर, शुभ,  
सुभग, सुस्सर, आदेय और निर्माण नामक, इनका कोन बन्धक और कोन अबन्धक है ?  
॥ १३१ ॥

यह सख सुगम है ।

सुगमं ।

इत्स्-रदि मय दुगछाण को वधो को अवधो ? ॥ १२५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइटिप्पट्टि जाव अपुव्वकरणपविट्ठवसमा स्त्वा वधा ।  
अपुव्वकरणद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,  
अवसेसा अवधा ॥ १२६ ॥

एदे पि सुगमं ।

मणुस्साउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ १२७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असजदसम्माइट्टी वधा । एदे  
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

इत्स्, रदि, मय और दुगुप्साक कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १२५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिम्माट्टिस्सि लेकर अपूर्वकरणपविट्ठ उपसमक व क्षयक तक वन्धक हैं । अपूर्वकरण-  
कालक अन्तिम समयमें जाकर वन्ध व्युत्पन्न होता है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं  
॥ १२६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

मणुप्साउअस्स कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिम्माट्टि, सासादनसम्यग्घट्टि और असंयतसम्यग्घट्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं,  
शेष अवन्धक हैं ॥ १२८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ १२९ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी संजदासंजदा  
पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तद्वाए सखेज्जदिम भागं  
गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १३० ॥

सुगम ।

देवगइ-पंचिदियजादि-वेउव्वियत्तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-  
संठण-वेउव्वियसरीरअंगोवग-वण्ण गध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणु-  
पुव्वी अगुरुवल्लहुव उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-  
वादर-पज्जस-पत्तेयसरीर थिर-सुम-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-  
णामाण को वधो को अवधो ? ॥ १३१ ॥

सुगम ।

देवायुक्क क्खेन बन्धक और क्खेन अबन्धक है ? ॥ १२९ ॥

यह खूब सुगम है ।

मिप्पाट्ठि, सासाइनसम्पट्ठि, असंपतसम्पट्ठि, संयतासंपत, प्रमत्तसंपत और  
अप्रमत्तसंपत बन्धक हैं । अप्रमत्तकालके संस्थानके भाग जाकर वच धुच्छिन्न होता है ।  
ये बन्धक हैं, द्वेष अबन्धक हैं ॥ १३० ॥

यह खूब सुगम है ।

इवगति, पंचेन्द्रियगति, वैश्वियिक, तेजस व कामण शरीर, समपतुरससंस्थान,  
वैश्वियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुन्धु, उपपात,  
परघाद, उन्धवास, प्रसुतविहायोगति, त्रस, वादर, पयात्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ,  
सुमम, सुस्सर, मादेय और निर्माण नामकम, इनका क्खेन बन्धक और क्खेन अबन्धक है ?  
॥ १३१ ॥

यह खूब सुगम है ।

मिच्छाद्विष्यद्बुद्धिं जान अपुव्वकरणपह्दुवसमा स्ववा वधा ।  
अपुव्वकरणदाए संसेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ १३२ ॥

एदस्मत्थो बुद्धे— देवगह्-वेउम्बियसरीर अंगोवंग देवगह्पाभोग्गानुपुब्बीण पुम्ब  
सुदधा पप्पम वधा वोच्छिज्जा, अपुव्वकरणसंसेज्जमम्मादिहीसु वधादयथोच्छेदुवत्तमादो ।  
पंचिदियजाति-तस-भादर-पम्पत्त-सुमग-भादे-वाय पुव्व वधा पप्पम उद्वो वाच्छिज्जदि,  
अपुव्वकरणजेगीसु वधोदयथाच्छेदुवत्तमादो । तेजा-कम्मदय-समचउरसमंउज-वज्ज-नीच-रस-  
फस-अगुस्सत्तुव-उद्वधाद-परधाद-उत्तास-पमत्तविहायगह्-पत्तेयसरीर-विर-सुम-सुस्स-  
विमियवामाप्पेव वध वत्तव, अपुव्वकरण-सजेगीसु वधादयथाच्छेदुवत्तमादो ।

देवगह्-वेउम्बियसरीर-वेउम्बियसरीरअंगोवंग-देवगह्पाभोग्गानुपुब्बीण प्पोद्वो वधा,  
उदए सते एदासि वधविरोधदो । पंचिदिय-तजा कम्मदयसरीर-वज्ज-नीच-रस-फस-अगुस्स  
त्तुव तस भादर-पम्पत्त-विर-सुह-विमियान सोदएवेव वधो, वधोदयच्छदो । परधादुत्तास

मिथ्यापक्षे लेकन अपुव्वकरणप्रविष्ट तपश्चमक व अथक तक पन्वक है ।  
अपूर्व्वकरणकालके सत्त्वात बहुभाग जाकर वन्ध व्युत्पन्न होता है । ये वन्धक हैं, वेव  
अवन्धक हैं ॥ १३२ ॥

इस सूत्रका अर्थ यह है—व्यगति वैदिकिकशरीर, वैदिकिकशरीरोंवापांग  
और वृक्षगतिमापांगानुपूर्व्विक पूर्व्वमें उदय और पश्चात् वन्ध व्युत्पन्न होता है क्योंकि,  
अपूर्व्वकरण और अनेकतमव्यगति गुणस्थानोंमें क्रमशः उदय वन्ध व वृक्षक व्युत्पन्न  
पाया जाता है । पंचेन्द्रियजाति अथ भादर, पर्याप्त सुमग और भादेय इनका पूर्व्वमें  
वन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है क्योंकि, अपूर्व्वकरण और अनागतकेवही  
गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके वन्ध और उदयक व्युत्पन्न पाया जाता है । तेजस व कार्यम  
शरीर, समचतुरकसंस्थान अर्थ वन्ध रस स्पर्श अगुस्सत्तु वपधात परधात  
उच्छेदात् प्रशस्तविहायोगति मत्वेकशरीर, स्थिर, शुभ सुस्वर और निर्माण नामक  
इनके भी वन्ध व उदयक व्युत्पन्न इसी प्रकार बहवा आदि वन्धोंकि अपूर्व्वकरण  
और संयोगकवही गुणस्थानोंमें इनके वन्ध व उदयक व्युत्पन्न पाया जाता है ।

व्यगति वैदिकिकशरीर, वैदिकिकशरीरोंवापांग और वृक्षगतिमापांगानुपूर्व्विक  
परादय वन्ध होता है क्योंकि, उदयक होअपर इनके वन्धक विरोध है । पंचेन्द्रियजाति  
तेजस व कार्यम शरीर, अर्थ वन्ध रस स्पर्श अगुस्सत्तु वध भादर, पर्याप्त स्थिर,  
शुभ और निर्माण नामकवही वधोदयने ही वन्ध होता है क्योंकि, वे व्युत्पन्नी हैं । परधात

पसत्पविहायगद् सुस्तर आदेन्जाण सोदय परोद्भो वषो, अपन्वत्तच्छे उदयामावे पि वषुवर्तमादो, पसत्पविहायगद्-सुस्तराणमद्भुवोदयत्तसणादो, आदेन्जम्स मिष्माद्विष्पद्वि जाव असुवदसम्मादिदि ति उदयस्म मयणिन्जत्तुवर्तमादो, उव्वरि सन्वत्थ वुवांदयत्त रंसणादो च । समवत्तरसंयत्तणुवषाद-यत्तयसुत्तराणमेव च वत्तत्थ, विग्गहगर्दप्प उदया मावे वि वषुवर्तमादो, समवत्तरसंयत्तणोदयस्म मयणिन्जत्तुवर्तमादो च । एवं सुभग पन्वत्तस पि वत्तत्थ, पश्चिदियसु पडिवक्खत्तपयडीण उदयदमणादो । पव्वरि पश्चिदियपञ्चत्पसु पन्वत्तस्स मोदण्णेष वषो, तन्थ पडिवक्खत्तपयडीण उदयामावादो । एवमेदं मिष्माद्विष्पद्वि पव्वरि । सत्तपसम्मादिदि भमंजवसम्मादिडीणमेव च वत्तत्थेदं । पव्वरि पञ्चत्तस्म मोदण्ण वष वषा । एवं मम्मामिष्माद्विष्पद्विमाणि उव्वरिगुणवृत्ताण पि वत्तत्थ । पव्वरि उव्वपाद-वृत्ताद उत्तसाम पञ्चत्त-पत्तयसुत्तराण पि मोदण्णेष वषो, तत्थ अपन्वत्तत्तसम्मावादो ।

तेजा-कम्मइय-वप्प-गव-रम-पत्तम-अगुरुअत्तुव उव्वपाद-विमिषाण सव्वगुणवृत्तसु

उच्छब्दान् प्रशस्तविहायगानि सुस्तर मीर भाव्य इनञ्च स्वाद्य परोदय वन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्ततामें उदयके न हालपर भी इनका वन्ध पाया जाता है प्रशस्त विहायगानि मीर सुस्तर प्रह्नितयाका अशुभाद्य दत्ता जाता है तथा मिष्पाद्विष्पद्वि संकर भर्मयत्तमस्यगद्विष्पद्वि तत्त भाव्यका उदय भजनीय भयान् विकल्पम पाया जाता है मीर इनसे ऊपर सर्वत्र शुभाद्य दत्ता जाता है । समवत्तरसंयत्तसंस्थान उपघात मीर प्रत्यक्षशरीरके भी इसी प्रकार कहना चाहिय क्योंकि विमहगनिमें उदयके न हालपर भी वन्ध पाया जाता है तथा समवत्तरसंयत्तसंस्थानका उदय भजनीय दत्ता जाता है । इसी प्रकार सुभग मीर उपघातके भी कहना चाहिय क्योंकि पंचगित्रयोम प्रतिपन्न प्रह्नितया उदय दत्ता जाता है । विशेष इतना है कि पंचाश्रय पर्याप्ततामें उपघात प्रह्नितया स्वाद्यम ही वन्ध होता है क्योंकि, उभय प्रतिपन्न प्रह्नितया उदयका समाप्त है । इस प्रकार यह मिष्पाद्विष्पद्विष्पद्वि प्रकल्पना हुई । सामाज्यमस्यगद्वि मीर भर्मयत्तमस्यगद्विष्पद्वि भी प्रकल्पना इसी प्रकार करना चाहिय । विशेषता यह है कि पर्याप्तका स्वाद्यम ही वन्ध होता है । इसी प्रकार सम्पत्तिमिष्पाद्वि मावि उपरिम गुणस्थानाक भी कहना चाहिय । विशेष इतना है कि उपघात परघात उच्छब्दान् उपघात मीर प्रत्यक्षशरीरका भी स्वाद्यम ही वन्ध होता है क्योंकि, उभय गुणस्थानोंमें उपघातकालका समाप्त है ।

तेजस व क्षमण शरीर वर्ण वन्ध रम स्पर्श अगुरुसु उपघात, मीर



भिरंतरं वषो, पुनर्वषिषादो । पंचिदियजादीण मिष्याइष्टसु सांतर-भिरंतरा । कर्षं भिरंतो ।  
 न, सजकुमादिदिवेषु नारणसु वसंतिज्जवासाठम-सुहन्तिस्मियतिरिक्त्वा मनुस्सेसु न  
 भिरंतरं पुनर्वषमादो । सामप्यादीसु भिरंतो वषो, तत्त्व ण्दियजादिजादीषं वषामावादा ।  
 एवं परपाहुम्यास-सस-बादर-पञ्चसरीरणं ति वसन्, मेवाभावादो । समपउरसंठम  
 पसरविविहायगइ-सुभग-सुस्मर-मादेज्जाषं मि-साइष्टि-सासपेसु सांतर-भिरंतो वषो । कर्षं  
 भिरंतो । न, भसंस्ववासाउपसु ण्दामि भिरंतरं पुनर्वषमादो । उवरि भिरंतो  
 पडिवकपपयईषं वषामावादो । धिर-सुमाषं मिष्यइष्टिप्यदुष्टि जाव वमत्तसंजरो ति सांवे,  
 पडिवकपपयईषं वषसंमगादो । उवरि भिरंतो । देवगइ-वेउन्वियसरी-वेउन्वियसरीरंगोत्तं-  
 देवगइषाधोम्यापुपुर्वीषं मिष्यइष्टि-सामपेसु सांतर-भिरंतरा सुहन्तिस्मियतिरिक्त्वा मनुस्सेसु  
 भिरंतरं पुनर्वषमादो । उवरि भिरंतो । पञ्चया सुगमा । मेस मोपमगो ।

निर्माण इत्यत्र सप्त शुक्लस्याग्नौ निरन्तरं बन्धं दाता है क्योंकि ध्रुववर्षा है । पंचेन्द्रिय  
 जातिषा मिष्यादृष्टिषो मास्तर निरन्तरं बन्धं होता है ।

शंका—निरन्तरं बन्धं कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, मानतकुमादि एवं नारकी भसंस्ववासावर्षा  
 पुष्कं और शुभ तीन केदवावाके नियम व मनुष्योंमें निरन्तरं बन्ध पाया जाता है ।

सासत्त्वमम्यादृष्टि मादि उपरिम शुक्लस्याग्नौ निरन्तरं बन्धं दाता है क्योंकि  
 इन शुक्लस्याग्नौ पंचेन्द्रियजाति भाषिकोंका बन्ध नहीं होता । इसी प्रकार परमात्मा  
 वषावापन वस बादर पर्याप्त और प्रत्यक्षगतीरके भी कइना बाहिष्य क्योंकि, इनके  
 कोई विशेषता नहीं है । समपतुरकमन्वापन प्रशास्त्रविहायोगति सुभग सुस्मर और  
 मादेयका मिष्यादृष्टि व सामावममम्यादृष्टि शुक्लस्याग्नौ सास्तर निरन्तरं बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तरं बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि भसंस्ववासावर्षापुष्कंमें इनका निरन्तर  
 बन्ध पाया जाता है ।

उपरिम शुक्लस्याग्नौ इत्यत्र निरन्तरं बन्ध होता है क्योंकि प्रतिपक्ष प्रकृतिर्वाकि  
 बन्धका वहां अभाव है । स्थिर और शुभका मिष्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक मान्तर  
 बन्ध होता है क्योंकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध सम्भव है । इससे ऊपर निरन्तर  
 बन्ध होता है । देवगति वैश्विकिहाटीर, वैश्विकिहाटीरगोपांग और देवगतिप्रापमेवाहु  
 पूर्वाका मिष्यादृष्टि और सासत्त्वममम्यादृष्टि शुक्लस्याग्नौ सास्तर निरन्तरं बन्ध होता  
 है क्योंकि शुभ तीन केदवावाके तिर्यक् व मनुष्योंमें निरन्तरं बन्ध पाया जाता है ।  
 इससे ऊपर निरन्तरं बन्ध होता है । प्रत्यक्ष सुगम है । शेष प्रकृति मोक्षके समान है ।

आहारमरीर आहारअगोवगणामाण को वधो को अवधो ?  
॥ १३३ ॥

सुगम ।

अप्यमत्तसज्जा अपुञ्चकरणपट्टवसमा खवा वधा । अपुञ्च  
करणद्वाए मत्तेज्जे भागे गत्तण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ १३४ ॥

सुगम ।

तित्थयरणामाण को वधो को अवधो ? ॥ १३५ ॥

सुगम ।

असजत्सम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुञ्चकरणपट्टवसमा खवा  
वधा । अपुञ्चकरणद्वाए मत्तेज्जे भागे गत्तण वधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १३६ ॥

आहारकशीर और आहारकजिगंगापाणि नामकमोक्ष कर्तन वन्धक और कर्तन  
अवधक है ? ॥ १३३ ॥

यह मूल सुगम है ।

अप्रमत्तमयत और अप्रवृत्तप्रविष्ट उपशमक और धरक वधक है । अप्रवृत्त  
प्रवृत्तके संन्यास बहुमात्र आकर वध प्युच्छिज्ज हला है । ये वन्धक है, अथ अवधक है  
॥ १३४ ॥

यह मूल सुगम है ।

तीर्थंकर नामकमोक्ष कर्तन वधक और कर्तन अवधक है ? ॥ १३५ ॥

यह मूल सुगम है ।

अप्रमत्तमयतमयत उत्तर अप्रवृत्तप्रविष्ट उपशमक और धरक तक वधक है ।  
अप्रवृत्तप्रवृत्तके संन्यास बहुमात्र आकर वध प्युच्छिज्ज हला है । ये वधक है, अथ  
अवधक है ॥ १३६ ॥

निरंतरो वषो, ध्रुववर्षितादौ । पश्चिमिदियजादीष मिच्छाद्दृष्टीसु सांतर-निरंतरो । कर्षं निरंतरो ! य, सप्तकुमारारिदेनेसु भेरुपसु असंदिग्धवाग्मातन-सुहृतिवैस्त्रियतिरिक्त्वा-मनुस्सेसु व निरंतरवषुवर्त्तमादौ । सासपादीसु निरंतरो वषो, तत्र पश्चिमिजादिआदीषं वषामात्रादौ । एवं परपादुस्सास-तस-बादर-पञ्चस-पञ्चमरीशं पि वत्तर्षं, मेढामात्रादौ । समप्रतरसंयज-पसरपविह्वय-सुभय-सुस्सर-आवेज्यार्ण मिच्छाद्दृष्टि-मासपेसु सांतर-निरंतरो वषो । कर्षं निरंतरो ? य, असंख्येयवासातपसु एदासि निरंतरवषुवर्त्तमादौ । उवरि निरंतरो, पविक्कसपयदीषं वषामात्रादौ । विर-सुमार्ण मिच्छाद्दृष्टिपुष्टि जात वमत्समदो ति संतरो, पविक्कसपयदीष वषसंयजदौ । उवरि निरंतरो । देवगद-वउत्थियसरी-वेडवियसरीर्ययोर्ष-देवमद्याजीमाजुपुष्पीर्ष मिच्छाद्दृष्टि-सासपेसु सांतर निरंतरो सुहृतिवैस्त्रियतिरिक्त्वा-मनुस्सेसु निरंतरवषुवर्त्तमादौ । उवरि निरंतरो । पञ्चया सुगमा । मेसं जोषमगो ।

मिर्मात्र इतच्छ सब शुक्लस्थानोंमें निरन्तर वण्य होता है क्योंकि ध्रुववर्षा है । पञ्चमिदिय जातिव मिच्छादृष्टियोंमें सांतर निरन्तर वण्य होता है ।

अथ—निरन्तर वण्य कैसे होता है ?

समाधान—बह डीक नहीं क्योंकि मानकुमारारि देव पारकी असंख्यातवर्षा शुक्ल और शुभ तीन कष्टवाक्ये विर्षेय व मनुष्योंमें निरन्तर वण्य पाया जाता है ।

सासपानसम्पन्नदृष्टि जाति उपरिम शुक्लस्थानोंमें निरन्तर वण्य होता है क्योंकि इन शुक्लस्थानोंमें एकमिदियजाति जातिवर्षेय वण्य नहीं होता । इसी प्रकार परसत वषट्कार वस वन्दर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरके मी कर्त्तना चाहिये क्योंकि, इनके कोई विशेषता नहीं है । समप्रतरकर्मस्वात प्रडास्तविह्वयोगति सुभय सुस्सर और आवेकक मिच्छादृष्टि व सासपानसम्पन्नदृष्टि शुक्लस्थानोंमें सांतर निरन्तर वण्य होता है ।

अथ—निरन्तर वण्य कैसे होता है ?

समाधान—बह डीक नहीं क्योंकि, असंख्यातवर्षापुष्पीमें इनका निरन्तर वण्य पाया जाता है ।

उपरिम शुक्लस्थानोंमें इनका निरन्तर वण्य होता है क्योंकि, प्रत्येक प्रकृतिवर्षेय वण्यका वहाँ जमाव है । निर और शुभका मिच्छादृष्टिसे लेकर प्रमत्तवत् तब सांतर वण्य होता है क्योंकि यहाँ प्रत्येक प्रकृतिवर्षेय वण्य सम्मिल है । इससे ऊपर निरन्तर वण्य होता है । देवगति वैश्वियिकादीर, वैश्वियिकाशरीरयोगोर्षां और देवपतिप्राधान्याजु-द्वीर्ष मिच्छादृष्टि और सासपानसम्पन्नदृष्टि शुक्लस्थानोंमें सांतर निरन्तर वण्य होता है क्योंकि, शुभ तीन कष्टवाक्ये विर्षेय व मनुष्योंमें निरन्तर वण्य पाया जाता है । इससे ऊपर निरन्तर वण्य होता है । प्रत्येक सुभय है । दोष प्रकृतिवर्षा जोषके सम्मिल है ।

पञ्चणाणावरणीय च उद्मणावरणीय मिच्छत-शतसयवेद-तिरिक्त्वाठ-तिरिक्त्वाठ-  
 पशुदियजादि-मजा-कम्मइयसरि-अण्ण-गंध रम-पन्नम अगुरुअल्लुम-भावर-यिराधिर-सुहसुह-  
 दुमग भणदिअज निमिण णीचागो-पचनराइयाण सोदओ षो, एस्य एसमि भुवेदयसाओ ।  
 इत्थि-पुरिमवेद मणुस्साउ-मणुम्मगद-भीइदिय-तीइदिय-पठंरिदिय-पंथिदियजादि-पंचसंअण-  
 ओराठियसरिअंगेअण-असपइण-मणुमगइआओग्गाणुपुत्थी-साहारण-दोविहापगद-तस-मुभग-  
 मुम्मर-दुम्मर-आदग्गुप्पागोदण परोदओ षो, एदमिमन्ध उदयविराहाओ । पंचदंसभा  
 बरणीय-मादामाद-सेल्लमरुमाय छणोक्कमाय-पादर मुहुम पञ्चत्तपञ्चत्त-अमकिसि-अजस-  
 किट्ठीण मोदय परोदओ षो, अदुवोदयत्ताओ । ओराठियसरि-हुंइसअण-उअपाद-पत्तेय  
 सरि आदवुअओवाणं पि मादय-परोदओ, विग्गइगदीण उदयाभावाअ अदुवादयत्ताओ  
 य । परपादुस्मासाणं पि सोदय-परोदओ पथा, एदमिमुदयाणुदयमहिदपञ्चत्तप जत्तासु  
 पंचदंसभाओ । तिरिक्त्वाठपाओग्गाणुपुत्थीए मोदय-परोदओ षो, मादयासुदयविग्गइविग्गइ  
 गदीसु पधुवत्तमाओ ।

पञ्चणाणावरणीय-अउद्मणावरणीय-मिच्छत-सेल्लमरुमाय-अय-दुग्गुअ तिरिक्त्वा-मणु-

पांच ज्ञानावरण आर दृशमायण्य मिष्याय्य अनुमकयद् त्रिपगासु त्रिपगति,  
 एकस्मिन्त्र ज्ञानि त्रैजय य कर्मण शरीर एण गण्य स्व व्या अगुरुत्तसु म्यावर  
 म्यिर, अम्यिर, शुभ अशुभ शुभेग अमाय्य निर्भाण बीषणाण भीर पांच अल्लग्य  
 इनका म्याय्य वण्य हाता ह कयोकि यही य प्रट्ठितयो भुवात्थी है । म्याय्य पुरुषयद्,  
 मनुष्यासु मनुष्यगाम ईग्गिअय बीग्गिअय अगुतिअय पंचाग्गिअय ज्ञानि पांच संख्याण  
 भीरतिरिक्त्वाठपाओग्गाणु उद संहमम मनुष्यगतिमायाग्यानुत्थी माघाग्याशरीर ॥  
 विहायागतियो अम सुमग मुम्मर दुम्मर आदय भीर उच्छगाअ इनका परादयम  
 वण्य हाता है कयोकि यही इनक उदयका पिराथ है । पांच दृशमावरणीय ज्ञाना  
 य अमाता यदमीय नामह कयाय उद मावगाय वाद्व म्मम पयाण अययाण,  
 यगर्गामि भीर अयगर्गामिका म्याय्य परादय वण्य हाता ह कयोकि य मधुयात्थी  
 है । भीरतिरिक्त्वाठपाओग्गाणु उदपाण प्रत्यशरीर आलाय भीर उदालय मी  
 म्याय्य परादय वण्य हाता है कयोकि विमदगतिमि इनक उदयका अमाय है तथा य  
 मधुयात्थी मी है । पण्याण भीर उदालयमका मी म्याय्य परादय वण्य हाता है कयोकि  
 जमनाः इनक उदय भीर अनुदय म्मम पयाण य अययाण जालोमि उमका वण्य दृशा ज्ञाना  
 है । त्रिपगतिमायाग्यानुत्थीका म्याय्य परादय वण्य हाता है कयोकि, जमनाः अयम उदय  
 य अनुदय म्मम विमद य अविमद गतियोम उमका वण्य पाया ज्ञाना है ।

पांच अमावरणीय भी दृशमावरणीय मिष्याय्य नामह कयाय मय, दुग्गुअ

एवं पि सुमम ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-वणप्फदिकाइय णिगोद जीव-वादर-सुहुम पज्जत्तापज्जत्ताण वादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर पज्जत्तापज्जत्ताणं च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तमगो ॥ १३७ ॥

एवमप्यनुसृतं देसायासिय, तन्मतेण सुहृदत्तार्थं पञ्चव्या ऋग्दे— तत्र तत्र पुढविकाइयाणं मन्त्रमात्रे पञ्चभाषावरणीय न्यवर्त्तसणावरणीय-साक्षात्सद-मिच्छत्-सोत्तमन्त्रमात्र-भाषाक्रमस्य तिरिक्खाव मनुस्साठ-तिरिक्खाव-मनुस्सगइ-एवदिय-बीईदिय तीईदिय-वउरि दिय-पंचिंदियवादि भोरास्त्रिय-तेजा कम्मइयसरीर-कम्मत्तण भोरास्त्रियसरीरवर्णावर्ग कम्मवडव वण-वाध-रस-कस-तिरिक्खाव मनुस्सावभाषाभाषाणुपुत्ती-मनुस्सउत्तुव उववात्-परवात् उम्माव भाषाणुलोप-रोविहापगइ-सम-वावर-वादर-सुहुम-य उच्च-अपज्जत्त-पत्तेय-साहस्रजसरीर-विउरि सुहस्रइ-सुमग [ हुमेय ] सुस्म-हुस्म-वाइक्क-अवाइक्क उमक्खि-अमसक्खि-भिन्निव मीत्तुप्पागोद-पंचत्तराइयपयडीवा पुढविकाइएहि वज्जमाणाओ उक्कप्पा । एम्ह वंवाइयवोप्पेद विवातो जारि, तदुमयवोप्पेदामावाओ ।

यह सूत्र भी सुमम है ।

अथमर्माणुसार पृथिवीक्रयिक, अक्रयिक, वनस्पतिक्रयिक और निगोद जीव वादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा वादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकवृत्ति पर्याप्त अपर्याप्त जीवोक्ति परंपरा पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तोक्ति मगम है ॥ १३७ ॥

यह अर्थजाम्बु इक्षामर्शक है अत एव इत्यने नृचित अर्थोक्तो प्रकल्पना करत है—उक्तमें पहल पृथिवीक्रयिक जीवोक्ति प्रकल्पना करत सुमम पांच भाषावरणीय मी वरणावरणीय वसता व अभागा वृत्तीय मिच्छात्व सोत्तह कपाय मी मोकपाव तिर्यंगाणु मनुप्पाणु निर्वग्यणि मनुप्पगति एकस्त्रिच त्रीस्त्रिच बीस्त्रिच चतुरिस्त्रिच पंचास्त्रिच आनि मीनारिक, मीज्ज व कामिज शरीर छह संस्थान मीनारिकशरीरोगाणां छह मंडलम बर्त्त गच्छ रत्न स्पर्श निर्वग्यणि व मनुप्पगतिपायाणानुपुत्ती मनुस्समु, उपपत्त परपत्त उच्चुत्ताम भाषाप उच्चाण वा विहावागनिपा वम स्वावर, वावर, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर अस्थिर, हुम महुम सुमग [ हुर्मग ] गुल्गर दुल्गर आदेय जनाइय पराकीर्ति भयवाकीर्ति निर्माण मीपगाव ऊचगाव और पांच मन्त्राव प्रवृत्तिवा पृथिवीक्रयिक जीवा वारा वज्जमात्र स्थापित करना चाहिये । वहां वज्ज और उक्कप म्मुच्छेदक विचार नहीं है क्योंकि, शर्मोके म्मुच्छेदका यहां अभाव है ।

पंचपात्रावरणीय षडर्षसपात्रणीय मिच्छन्त-पठसयवद्-तिरिक्खाठ-तिरिक्खगइ  
 एइदियजादि-तंजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-नीध रस-फास अगुरुअल्लुम-भावर-विराविर-सुहामुह-  
 दुमग अणदेवज-भिमिण जीवागोद-पचतराइयाण सोदओ बंधो, एस्स एदासि धुवोदयत्ताओ ।  
 इत्थि-पुरिमयेद्-मणुप्साउ-मणुम्मगइ-बीईदिय-तीईदिय-षठ्ठिदिय-पंचिदियजादि-पंचसंअण-  
 ओरात्थिसरीरअंगोवग छसघहण-मणुसगाइपाओगाणुप्पी-साहारण-दोविहायगइ-तस-सुमग-  
 मुम्पर-दुस्सर-आदन्नुच्चायोदाण परोदओ बंधो, एदासिमैत्थ उदयविरोहओ । पंचसपा  
 वरणीय-सादासाद-सोत्तमकम्माय-अणोक्तसाय-आवर मुहुम पञ्चत्तापञ्चत्त-अप्रकित्ति-अदस-  
 किस्सीण सोदय-परोदओ बंधो, अदुवोदयत्ताओ । ओरात्थिसरीर-दुहसंअण-उववाद्-पत्तेय  
 सरीर आदावुज्जोवाणं पि सोदय-परोदओ, विग्गाहगदीए उदयाभावओ अदुवोदयत्ताओ  
 च । परवाहुस्सासारं पि सोदय-परोदओ बंधो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपञ्चत्तापञ्चत्तासु  
 पंचदसगाओ । तिरिक्खगइपाओगाणुप्पीए सोदय-परोदओ बंधो, संदयाणुदयविग्गाहाविग्गाह  
 गदीसु धुवुत्तमाओ ।

पंचपात्रावरणीय-षडर्षसपात्रणीय-मिच्छन्त-सोत्तमकम्माय-अय-अगुरु-तिरिक्ख-मणु-

पांच ज्ञानावरण खाट ज्ञानावरण मिष्याम्य तपुसकचेद् निर्पंगासु, निर्वंगति  
 एकस्मिन्त्रय जाति विजस व क्षमण शरीर, बर्ण गन्ध रस स्वाद अगुम्भसु, स्थावर,  
 स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ दुर्मग अनोदय निर्माण बीजगात्र और पांच अन्तराय  
 इनका स्थाव्य बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ व प्रकृतियां ध्रुवोदयी हैं । बीजद्, पुरुषद्  
 अनुप्यासु अनुप्यगति ईष्टिन्त्रय शीष्टिन्त्रय अशुचिन्त्रिय पचष्टिन्त्रिय जाति पांच स्मृत्यान्  
 भीतिरिक्खशरीरापांग छह मेहमन अनुप्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी साधारणशरीर दो  
 विहापागतियां बन्ध सुमग मुम्पर दुम्पर आदय और उच्चगोत्र इनका पराक्षयस  
 बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनका उदयका विरोध है । पांच ज्ञानावरणीय ज्ञाना  
 व अज्ञाना धर्मीय सासह कयाय छह भाक्याय वाह्वं भूधम पर्याप्त अयपात्त  
 यदाक्षीर्णि और अयदार्कनिका स्थाव्य पराक्षय बन्ध होता है, क्योंकि य अमुसाक्षी  
 है । भीतिरिक्खशरीर दुहसंअण उपपात प्रत्यक्षशरीर, आनाय और उपातका भी  
 स्थाव्य पराक्षय बन्ध होता है क्योंकि विग्रहगतिमें इनका उदयका अभाव है तथा य  
 अमुसाक्षी भी है । पर्याप्त और उच्चसासका भी स्थाव्य-पराक्षय बन्ध होता है क्योंकि,  
 क्रमशः इनका उदय और अमुक्षय सहित पयात्त य अयपात्त काश्मोमें उदका बन्ध इत्या जाता  
 है । निर्पंगतिप्रायाग्यानुपूर्वीका स्थाव्य पराक्षय बन्ध होता है क्योंकि, क्रमशः अयम उदय  
 व अमुक्षय सहित विग्रह य अविग्रह गनियोंमें उदका बन्ध पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय भी ज्ञानावरणीय, मिष्याम्य ज्ञानह कयाय, अय, अगुम्भा,

स्नात ओराठिय तेवा-कम्माइयसरिर-वण्ण-गीव-रस-फ़लम अगुरुनठुअ ठवपाइ-विमिप-वंचंता  
इयाणं भिरंतरो वंचो, एगसमएण वंधुवरमाभावाओ धुववंधिताओ च । साशसद-सत्तवोक्कमा-  
मज्झमाइ-एइदिय-वीइदिय-वीइदिय-चउरिदिय-यंनिदिय-आदि छसंअण ओराठियसरिरवंचो-  
छसंअण-मज्झमाइपाओगापुपुष्पी-आदाठ ओण-देविहायमइ-तस वायर सुत्तम-अप-अत्त-सरा-  
रवसरिर-पिरपिर-सुमासुम-सुमग दुमग सुस्सर-दुस्सर-आदेअ अमकिंति अममकिंति-उत्ता-  
गोदाणं सतिरो वंचो, एगसमएण वंधुवरमइमणाओ । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगापुपुष्पी-  
वीचामोअणं सतिर-भिरंतरो । कवं भिरंतरो ? न, तेठ-वाठकइएहिओ पुअविकइएसुअण्णव  
भितरवंधुवलेमओ । परायादुस्मास-आदर-अ-अत्त-अत्तवसरीतण पि सतिर-भिरंतरो वंचो । कवं  
भिरंतरो ? न, देवाव पुअविकइएसुअण्णव मुहुत्तस्सति भितरवंधुवलेमओ ।

एहेसिं पण्डया पइदियपण्डयहि समा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ एइदिय-वीइदिय-

—

तिर्यंगासु मनुष्यासु औदारिक, तैजस च कर्मज इतिर, वर्ज गन्ध रस स्पर्श अगुरुक्षु,  
उपशान निर्माज और पांच अन्तराध बन्धन निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक  
समयसे इनके बन्धविधामका अभाव है तथा ये भुवबन्धी भी हैं । सत्ता व असत्ता  
केन्द्रीय सत्ता लोकपाय मनुष्यगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्न्द्रिय  
पंचेन्द्रिय आदि छह संख्याम औदारिकशरीरपोषांग छह संहनन मनुष्यगति-  
प्राप्त्याप्त्युत्पत्ति आताप उपात जो विहायोगतिपां वस स्वाधर, सूक्ष्म अपर्याप्त  
साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग दुर्मग सुखर, दुःखर आदि  
बन्धकीर्ति अवशकीर्ति और उद्योगोद्यम सन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे  
इनका बन्धविधाम इला जाता है । तिर्यगति तिर्यगतिप्रायोग्यासुपूर्वी और नीचयोग्य  
सन्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

सूक्त—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि तब व वायु अविच्छेदसे पृथिवीअविच्छेद  
उत्पद्य हुए जीवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

परमात उच्छ्वास बादर, पर्याप्त बीर प्रत्येकशरीरध्व भी सन्तर निरन्तर  
बन्ध होता है ।

सूक्त—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, पृथिवीअविच्छेद उत्पद्य हुए जीवोंके  
अन्तमुद्धत तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इम प्रकृतिपौक प्रत्येक एकेन्द्रियप्रत्येकी समाज हैं । तिर्यंगासु, तिर्यगति

तीर्णदिय-चठरिंदियबादि-तिरिक्खगइपाभोग्गाणुपुब्बी-आत्ताबुजोव-थावर-सुहुम-साहारमसरीराणि  
तिरिक्खगइसंजुत्तं वन्धंति । मणुसाठ-मणुसगइ-मणुसगइपाभोग्गाणुपुब्बी उच्चगोशपि मणुस  
गइसंजुत्तं वन्धंति । सेसाभो पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं । तिरिक्खा सामी । बधद्वार्ण  
सुगम । एत्थ बधवोप्पेदो वरिथ । धुवबंधीण चठविहो बंधो । सेसार्ण सादि भद्दुवो ।

बादरपुडविकइयपणमेव चेव वत्तप्प । जवरि बादरस्स सोइएण बंधो, सुहुमस्स  
परोइएण । बादरपुडविकइयपणज्जाणं पि एवं चेव वत्तप्प । जवरि पण्णत्तस्स सोइओ,  
अपण्णत्तस्स परोइओ बंधो । बादरपुडविकइयअपण्णत्तार्ण पि बादरपुडविकइयमंगो । जवरि  
पण्णत्त-धीणगिद्धितिय परपादुस्सास-आत्ताबुजोव-अमकित्तीणं परोइओ, अपण्णत्त-अजसकित्तीणं  
सोइओ बंधो । परपादुस्सास-तस-बादर-पण्णत्त-पत्तेयसरीराणं संतरो बंधो, अपण्णत्तपसु  
देवप्पमुववत्तामावादो । पण्णया सत्तत्तीस, ओराठियकमयजोगपण्णयस्सामावादो ।

सुहुमपुडविकइयाण पुडविकइयमंगो । जवरि बादर-आत्ताठ-जोव अमकित्तीणं  
परोइओ, सुहुम-अजसकित्तीणं सोइओ बंधो । परपादुस्सास बादर-पण्णत्त-पत्तेयसरीराणं संतरो

एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी आताप उद्योत,  
स्वावर, सूक्ष्म और अघराक्षरीर, इनको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्यायु,  
मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोशको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।  
द्वीप प्रकृतियोंको मनुष्य व तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं । तिर्यक् सामी हैं । बन्धाव्दान  
सुगम है । यहां बन्धप्पुप्पेद है नहीं । सुबन्धणी प्रकृतियोंका आरो मकररत्न बन्ध  
होता है । द्वीप प्रकृतियोंका सादि व अष्टुय बन्ध होता है ।

बादर पृथिवीकायिकोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । बिशेष  
इतना है कि बादरका स्वरूप और सूक्ष्मका परोक्षसे बन्ध होता है । बादर पृथिवीकायिक  
पर्याप्तोक्ती भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । बिशेषता इतनी है कि पर्याप्तका  
स्वरूप और अपर्याप्तका परोक्ष बन्ध होता है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोक्ती  
भी प्ररूपणा बादर पृथिवीकायिकोंके समान है । बिशेषता यह है कि पर्याप्त स्थान  
पृथिव्य परघात उच्छ्वास आताप उद्योत और यशस्वीर्तिका परोक्ष, तथा अपर्याप्त  
और अघराक्षरीर्तिका स्वरूप बन्ध होता है । परघात उच्छ्वास जल बादर, पपात  
और मत्पकाक्षरीरका सांतर बन्ध होता है क्योंकि अपर्याप्तोंमें देवोंकी उत्पत्ति नहीं  
होती । मत्पय सीटीस होते हैं क्योंकि उनके जीवाधिकारयोग मत्पयका समान है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंकी प्ररूपणा पृथिवीकायिकोंके समान है । बिशेष यह  
है कि बादर, आताप, उद्योत और यशस्वीर्तिका परोक्ष, तथा सूक्ष्म और अघराक्षरीर्तिका  
स्वरूप बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, बादर, पपात और मत्पकाक्षरीरका सांतर





पञ्चाणावरणीय चतुदशणावरणीय-मिच्छत-अनुसमवेद-तिरिक्ता-तिरिक्ता-  
 एन्द्रियजादि-तेजा-कम्मइयसरी-वण्णचतक-अगुरुवल्गु-यावर विराधिर-सुहासुह-दुमग-  
 अजादेज्ज-भिमिण् श्रीजागोद-पचतराइयाणं सोदओ बघो, अत्यगईय धुओदयताओ । इति  
 पुरिसवेद-मणुसाठ मणुसगइ-बीइदिय-तीइदिय-चठरिंदिय-पचिंदियजादि पचसअण-भोराठिय  
 सरीरभगोवग-असुचइण मणुसगइपाओगाणुपुब्बी आदाव-दोविहमगइ-तस सुमग-सुस्सर दुस्सर  
 अदेज्ज जागोदाणं परोदओ बघो । पचदसनावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अण्णोक्कमाय  
 हुंइसअण-भोराठियसरी-तिरिक्ताणुपुब्बी-उवधाद-सघादुस्सासुज्जोव-बादर-सुहुम-प अता-  
 पउज्जत-पतेय-साहारणसरी-असकिंति-अजसकिंतीणं सोदय-परोदओ बघो ।

पञ्चाणावरणीय मिच्छत-सोलसकसाय-मय-दुगुंछ-तिरिक्ता मणुसाठ भोराठिय-तेजा  
 कम्मइयसरी-वण्णचतक-अगुरुवल्गु-उवधाद-भिमिण-पचतराइयाणं भिरंतरो बघो । सादासाद  
 सअणोक्कमाय-मणुसगइ-एन्द्रिय-बीइदिय-तीइदिय-चठरिंदिय-पचिंदियजादि-असअण भोरा-  
 ठियसरीभगोवग-असुचइण-मणुसगइपाओगाणुपुब्बी-आदाणुज्जोव-दोविहमगइ-तस यावर-  
 सुहुम-अपण्णच-साहारणसरी-विराधिर-सुहासुह-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर-अदेज्ज अजादेज्ज-

पांच ज्ञानावरणीय चार वर्तमानावरणीय मिच्छात्वं अनुसमवेद विर्यगायु, तिय  
 गति एकमिदं जाति मैत्रस व कामंय शरीर वर्णाधिक चार अगुरुवल्गु, स्यावर, स्थिर,  
 अस्थिर, शुभ अशुभ पुनर्ग अनायेय निर्माण नीचगोत्र और पांच अन्तरायका स्वोदय  
 बन्ध होता है क्योंकि अर्थापत्तिसे ये प्रकृतियां प्रोक्तव्यी हैं । स्त्रीवेद पुनर्वेद मनुष्यायु,  
 मनुष्यगति इमिदंय बीमिदंय अतुपिमिदंय एकमिदंय जाति पांच संस्थान भौतिक  
 शरीरान्गोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्रमाणानुपूर्वी आताप दो विद्यायोगतियां अस्स  
 सुमग सुस्सर दुस्सर, मात्थेय और उच्छगोत्र इनका परोदय बन्ध होता है । पांच  
 वर्तमानावरणीय साता व असाता वेदनीय सोलह कपाय छह लोकपाय हुंइसंस्थान  
 भौतिकशरीर, विर्यगानुपूर्वी उपपात परपात उच्छवास उद्योत बादर, सुहुम  
 पयात्त अपयात्त मत्थेकशरीर, साधारणशरीर, यशस्वीर्ति और अयशस्वीर्तिका स्वोदय  
 परोदय बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय मिच्छात्वं सोलह कपाय मय सुगुप्ता विर्यगायु, मनुष्यायु  
 भौतिक, मैत्रस व कामंय शरीर, वर्णाधिक चार, अगुरुवल्गु, उपपात निर्माण और  
 पांच अन्तरायका विर्यतर बन्ध होता है । साता व असाता वेदनीय सात लोकपाय,  
 मनुष्यगति एकमिदंय इमिदंय बीमिदंय अतुपिमिदंय एकमिदंय जाति छह संस्थान  
 भौतिकशरीरान्गोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्रमाणानुपूर्वी आताप उद्योत दो  
 विद्यायोगतियां अस्स अस्थिर, सुहुम अपयात्त साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ  
 सुमग, पुनर्ग, सुस्सर, दुस्सर, मात्थेय अनायेय, यशस्वीर्ति, अयशस्वीर्ति और उच्छगोत्रका

बधो, सुहुमेइदिपसु देवाणमुबसादामानादो पिरतरवषामाया । सुहुमपुविकइयपन्वत्तपनं  
 भेव वत्तय्यं । बवरी पञ्चत्तस सोदभो, अपञ्चत्तम् परत्तभो वंघो । सुहुमपुविकइयप-  
 न्जत्तपमेवं चेव वत्तय्यं । बवरी अपञ्चत्तम् सोदभो, पञ्चत्तभीणगिइत्तिप-परमादुस्साणं  
 परोइभो वंघो । मय्भमात्तइय्याणं जहापन्नासण्णपुविकइय्यमंगो । बवरी मादात्तम्  
 परत्तभो वंघो, पुविकइय मोत्तम् अण्णत्तम् मादात्तसुदयामानादो ।

पंचणात्तरणीय-षवदसणात्तरणीय-साध्यासाध-मिच्छत-सोत्तमुकमय बन्धोक्तमाप-  
 तिरिक्काठ-मज्झिमाठ-तिरिक्कागह-मशुमगह-पचजादि-भाणत्तिप-तेजा-कम्मइयसरी-असत्त-  
 ओरात्तिपसरीजंगत्तंग-अयंपाण-वण्णवत्तम्-तिरिक्कागह-मशुमगहपाओगापुपुम्भी-मगुह  
 ठवुवत्तम्-अत्तम्-जोव-देविहायपह-तत्त-बावर-बादर-सुहुम पन्वत्तप-जत्त-पत्त-साहज-  
 सरी-विगविर-सुहुम-सुम-दुम-सुत्तर-दुत्तर-आदे-न-अपादे-असत्ति-असत्ति-  
 मिमि-वी-पुप्फामोद-पचत्तइयपयईयो ठविय वण्णपुविकइय्याणं पक्कवत्तम् कीरे-  
 वपोदयामं पुप्फापुविकइय्याणं-अत्तम्-पारिक्का यत्ति, वपोदयाममेत्त वण्णोदामादो ।

बन्ध होता है क्योंकि, सूक्ष्म पृथिवीकायिकों में देवीकी उत्पत्ति न होना तब ही निरन्तर बन्धका  
 समाप्त है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तों की इसी प्रकार ही प्रकृष्टता करना चाहिये ।  
 विशयता इतनी है कि पर्याप्तका स्वाद और अपर्याप्तका परोक्ष बन्ध होता है । सूक्ष्म  
 पृथिवीकायिक अपर्याप्तों की भी इसी प्रकार ही प्रकृष्टता करना चाहिये । विशेष इतना  
 है कि अपर्याप्तका स्वाद और पर्याप्त स्वादपुष्टिपर पर्याप्त व उच्छ्वासका परोक्ष  
 बन्ध होता है । सब भक्ष्यिकों की भी प्रकृष्टता अपनी अपनी प्रत्यासक्ति के अनुसार  
 पृथिवीकायिकों के समान है । विशयता यह है कि आनापका परोक्ष बन्ध होता है,  
 क्योंकि, पृथिवीकायिकों का छोड़कर अन्यत्र आनाप कर्मका उदय नहीं होता ।

पांच ब्रह्मावरणीय भी वर्णनावरणीय सत्ता व असत्ता वैश्वीय मिश्रण  
 सोझ कराने की शक्तियाँ निर्गन्ध, मनुष्या, तिर्बगलि मनुष्यगति पांच आतिषां  
 औदारिक, ठिक्क व चर्मण शरीर, छह संस्थाव औदारिकशरीरगोपांग छह संज्ञन  
 वर्णादिक बार, तिर्बगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मनुष्यकाय  
 बार आताप उद्योत दो विद्यायोगिषां वस स्वावर, वादर, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त  
 प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ शुभग शुभग सुखर, दुःखर  
 आदेव जनादेव पश्यादि अपराधीति निर्माण बीजगोत्र, उच्छन्नगोत्र और पांच अतपव  
 प्रवृत्तियों के स्थापित कर ब्रह्मसत्तिप्रतिष्ठा की प्रकृष्टता करते हैं—बन्ध और उदयके पूर्व  
 व अपूर्व कालगत मनुष्यकी परीक्षा नहीं है क्योंकि यहाँ बन्ध और उदयक मनुष्य  
 समाप्त है ।

पञ्चत्तापञ्चत्ताणं वषप्पदिक्कइयमगो । जवरि पत्तेयमरीरस्स परोदओ सांतरो वषो । तस्स पादर पञ्चत्त-परपादुस्सासाण वंषो सांतरो । साहारणमरीरस्स सोदय-परोदओ । वादरवषप्पदिक्कइयपत्तेयसरीरपञ्चत्तापञ्चत्ताणं पि एव चेय वत्तथ । जवरि साहारणमरीरस्स परोदओ वषो, पत्तेयसरीरस्स सोदय-परोदओ वंषा ।

तेजकाइय-चाउकाइय-चादर सुहुम पञ्चत्तापज्जाण सो चेव भगो । जवरि विसेसो मणुस्सात्त मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-उच्चाओद पत्ति ॥ १३८ ॥

एहमप्यजामुत्तं देसामामियं, तेणइण सुद्धरवपरूवणा कीरदे— परपादुस्सास-चादर पञ्चत्त-पत्तेयसरीरणं सांतरो वषो, देवाण तेज-वाउकाइयसु उववादाभावादो । तिरक्खगइ तिरिक्खाणुपुब्बी बीचाओदणं विरंतरो वषो सोदओ चेव । जवरि तिरिक्खाणुपुब्बीए वषो सोदय-परउओ । भादाउञ्जोवाण परोदओ वषो । होदु जाय वाउकाइयसु धादावु बोवाय

उत्तरके बादर सूक्ष्म पर्याप्त य अपवाप्तोक्ती प्रकृषणा धनस्यतिकापिष्टोक समान है । विशेष यह है कि प्रत्यक्काशीरका परादय य साम्बर वण्य होता है । वस बादर, पर्याप्त पर्याप्त और उच्छ्वासका साम्बर वण्य होता है । भाधारणशरीरस्स ह्योक्त्य परादय वण्य होता है । बादर धनस्यतिकापिष्ट प्रत्यक्काशीर पर्याप्त य अपवाप्तोक्ती भी इसी प्रकार ही बहना चाहिये । विशेषता यह है कि स्वाधारणशरीरका परादय वण्य होता है । प्रत्यक्काशीरका ह्योक्त्य-परादय वण्य होता है ।

तेजकापिक्क और वाउकापिक्क बादर सूक्ष्म पर्याप्त य अपवाप्तोक्ती प्रकृषणा भी वंषाद्विष निवच अपवाप्तोक्ती समान है । विशेषता केवल यह है कि मनुष्यासु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्राप्त्यानुपूर्वी और उच्छ्वास प्रकृतिषां इनके नहीं हैं ॥ १३८ ॥

यह अर्थजाम्बु देवाप्रर्शक है इमीमिय इयस सुचित्त अप्योक्ती प्रकृषणा करत है— पर्याप्त उच्छ्वास बादर, पर्याप्त और प्रत्यक्काशीरका साम्बर वण्य होता है क्योंकि, देवाक्ती तज्जकापिक्क और वायुकापिक्क जीवोंमें उत्पत्ति नहीं होती । निधग्गानि निर्बग्गानु पूर्वी और नीम्भगावका वण्य निरन्तर य कादय ही जाता है । विदायणा यह है कि निर्बग्गानुपूर्वीका वण्य कादय परादय होता है । भागाय और उच्छ्वास परादय वण्य होता है ।

शेष— वायुकापिक्क जीवोंमें भागाय और उच्छ्वास अमान अंश ही है, क्योंकि,

असकृदि अत्रमकृति-उष्णामोक्षणं सांतरो बभौ, एगसमएष वंपुवरमुवर्तमादौ । तिरिक्त्वाप  
तिरिक्त्वाग्राजोगाजुपुष्पी-भीबागोदाप सांतर-भिरंतरो । कुदो ? तेठ-वाउकइण्हितो वनप्परि  
कइएमुपपुष्पाप मुहुत्तस्तो' भिरंतरवंपुवर्तमादौ । परपादुस्सास-बादर-पन्जत्त-पेसपसिप  
सांतर-भिरंतरो बभौ । कभे भिरंतरो ? ज, दबहिंतो वनप्परिकइएमुपपुष्पाप मुहुत्तस्तो  
भिरंतर वंपुवर्तमादौ । पन्जया मुगमा । गइसंजुपादिउवरिमेइंदियपरुवजातुत्त ।

एष पादरवणप्परिकइयाप च वत्तव । पवरि बादरम्म सोदभो बभौ, मुहुत्तस परो-  
दभो । बादर-[वनप्परि] पन्जत्तप बादरवणप्परिभमो । पवरि पन्जत्तस सोदभो, वनप्परि  
परोदभो बभौ । पादरवणप्परिकइपपत्तप बादरोइंदियवपत्तमगो । मुहुत्तवणप्परिकइपपत्तप  
मुहुत्तेइंदियप वत्तपवत्तमगो' । तसजपन्जत्तप पंधिदियवपन्जत्तमगो । पवरि पीइंदिय-  
तीइंदिय-वठरिंदिय-पंधिदियाप सप्य-परोदभो बभौ । बिगोइजीपाप तेसि बादर-मुहुत्त-

सत्तमर वण्य होता है क्योंकि इनका एक समयसं वन्यविश्राम पाया जाता है । निर्यंगाली  
निर्यंगालिमायापुष्पी और भीबागोदाप सत्तमर मिरल्लर वण्य होता है क्योंकि तब  
व बायु कायिकोमन वनस्पतिकायिकोम उत्पन्न हुए जीवाके धन्तमुहुत्त तक मिरल्लर वण्य  
पाया जाता है । परधान उच्छ्वास बादर, पर्याप्त और प्रत्येकछटीरका सत्तमर मिरल्लर  
वण्य होता है ।

शुंक्र—मिरल्लर वण्य कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, देयामेसे वनस्पतिकायिकोम उत्पन्न हुए  
जीवोंके धन्तमुहुत्त तक मिरल्लर वण्य पाया जाता है ।

प्रत्यय मुगम है । गानसेजुक्ता आदि उपरिम प्रकृष्टता एकत्रिय प्रकृष्टताके  
समान है ।

इसी प्रकार बादर वनस्पतिकायिकोंके भी कहना चाहिये । विशेषता केवल  
इतनी है कि बादरका उत्पन्न वण्य होता है और सूक्ष्मका परोक्ष । बादर वनस्पति  
कायिक पचानोंकी प्रकृष्टता बादर वनस्पतिकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि  
पचानका स्वाद और अपचानका पराद वण्य होता है । बादर वनस्पतिकायिक  
अपचानोंकी प्रकृष्टता बादर एकत्रिय अपचानोंके समान है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक  
पचान व अपचानोंकी प्रकृष्टता सूक्ष्म एकत्रिय पचान व अपचानोंके समान है । वन  
अपचानोंकी प्रकृष्टता एकत्रिय अपचानोंके समान है । विशेषता यह है कि एकत्रिय  
कात्रिय वगुनिक्रिय और एकत्रियका स्वाद परोक्ष वण्य होता है । निगाव जीव व





चतुर्दिश-पंचिन्द्रियाण सोदय-परोदयो बंधो । तस-बादराण सोदयो चेष । पंचदिश-पात्र-  
सुहुम-साहारणादावाण परोदयो चेष बंधो । अवसेसार्थं पंचिन्द्रिय-पंचिन्द्रियपञ्चत्वाण उत्ति-  
विहायेण वृत्तय्य ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगि-पचवचिजोगि-कायजोगीसु ओष  
णैयन्वं जाव तित्तयरेत्ति ॥ १४० ॥

ओषमि उत्तसुत्तारसण्हं सुत्तापमत्तो ससुत्तो एत्थ पिरवयथा वत्तम्बो, मेदामात्रादो ।  
अत्रि पचयगदो मेवो अरिषं तं परूवेमो— मणजोगे पिरुद्धे छापत्तालीस एकेत्तालीस सत्ततीस  
[ सत्ततीस ] वत्तीस उणवीस सत्तारस सत्तारस एकत्तारस दस वव अट्ठ सत्त छ पंच  
[ पंच वत्तारि वत्तारि ] दोणिण मिन्नाइइप्पनुडिसव्वगुणहाणाण जहाकमेण एवे पचयथा  
होति । अण्णो वि विसेसो मणजोगे पिरुद्धे सति अरिषि— चडुवादि वत्तारिमाणुपुम्बी-  
आदाव-आवर-सुहुम-अपञ्चस-साहारणाण परोदपण, उवपाद-परपादुत्साम-तस-बादर-पञ्चत्त-  
पत्तयसरीर-पंचिन्द्रियजारीणं सोदपण बंधो ति वत्तय्य । एवं चैव चडुण्हं मणजोगार्थं परूवणा

है— इन्द्रिय त्रिन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय और पंचेन्द्रियका लोह्य परोह्य बन्ध होता है । इस  
और बादरका स्पर्शय ही बन्ध होता है । एकेन्द्रिय स्वावर, सुहम साधारण और  
आवापका परोह्य ही बन्ध होता है । शय प्रकृतियोंके पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंकी  
प्रकृपणाके अनुसार कहना चाहिये ।

योगमार्गानुसार पांच मनोयोगी, पांच नचनयोगी और कल्पयोगियोंमें तीर्थकर  
प्रकृति तक ओषके समान जानना चाहिये ॥ १४० ॥

ओषमें कष्ट रूप सत्तर ( ५ में सत्तर ३८ में सत्तर तक १७+१७=३४ ) सुखोंका  
अर्थ सत्तर वहाँ सपूर्ण कहना चाहिये क्योंकि ओषसे वहाँ विशेषताका अभाव है ।  
विशेष यह है कि प्रत्येकगत जो कुछ अर्थ है उसे वहाँ कहते हैं— मनोयोगके निरुद्ध  
होने अर्थात् उसका अभिहित व्यापारण करनेपर व्यापारीस इच्छाकारीस सत्तीस [ सत्तीस ]  
वत्तीस उभीस सत्तर सत्तर व्यापार दस मी बाठ सात छह पांच [ पांच बार,  
बार ] और दो दस प्रकार ये प्रत्येक मिथ्याएणि आदि सब गुणस्थानोंके प्रत्यय होत हैं ।  
मनोयोगके निरुद्ध होनेपर और मी विशेषता है— बार आतिषा बार आनुपूर्वी आताप  
स्वावर, सुहम अवपात और साधारण इच्छा परावयस तथा वपपात परपात  
उच्छ्वास वस बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर और पंचेन्द्रिय आतिष्य लोह्यसे बन्ध  
होता है ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार ही आप मनोयोगोंकी प्रकृपना करना चाहिये ।

१ मत्ति सत्तर इति पाठः ।

२ वच-वचनयोगे व हि तापिनिषिद्ध व वाच्यवचनो ॥ यो क. ३१



कथयन् । अथि एतन्मिह मणजोगे निरुद्धे अवसेससम्पन्नजोगा मूलेषुत्तरपञ्चपसु अवसेदन्मा । अवसेसा निरुद्धमणजोगीण पञ्चया ह्येति । अथि अन्त्यस्य कञ्च वि विसेसो ।

वधिजोगीणमर्धं चेव वत्तन्वं, सांतर-जिरंतर-सोदय-परोदय-सामिताञ्चपारिरी मणजोगीर्हिता वधिजोगीणं मेरुमात्रादो । अथि बीहृदिय-तीर्हृदिय-अउर्तिहृदिय-बीर्हृदिय-सोदय-परोदयो वधो वि वत्तन् । अस-च-मोसवधिजोगीणं वधिजोगिमगो । अथि सन्तमुपानं उत्तरपञ्चपसु अमञ्च-मोसवधिजोगं मोरूप ससमञ्जजोगा अवसेदन्मा । सञ्च-मोस-सम्पन्न-वधिजोगीण सञ्च-मोम-सञ्चमोसमणजोगिमगो, विसिसामात्रादो ।

कथयन्मगो वि आचममो चेव । अथि सञ्चगुणह्यापाममोपपञ्चपसु मण-वधिजोगा पञ्चया अवसेदन्मा । सजोगिपञ्चपसु दादोमण-वधिजोगपञ्चया अवसेदन्मा । अथि अन्त्य विसेसो । ओषमि धुनुत्तंसत्तरसमुत्सेमु चठरवमुत्तमि मेरुपुण्यापञ्चसुत्तरसुत्त मभदि—

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? मिच्छाहृदिषण्डुडि जाव सजोगिकेवली वंधा । एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ १४१ ॥

विशयता यह है कि एक मनोयोगक निरुद्ध होनेपर हाथ सब पागोंका मूलाप उत्तर प्रत्ययोंमें कम करना चाहिये । इस प्रकार हाथ यह निरुद्धमनायोगियोंक प्रत्यय होते हैं । अन्त्य और बहुत विशयता नहीं है ।

वचनयोगियाक भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये क्योंकि सामान्य निरुद्ध स्वादय परादय, आत्मिन्य और प्रत्ययान्तिर्धो अपक्षा मनोयोगियों वचनयोगियोंक कार्य वेद नहीं है । विशय इतना है कि हीमिद्रय अतिद्रव अतिमिद्रय और वेचमिद्रय आतिरु सरोदय-परोदय कथ्य होना है ऐसा कहना चाहिये । असत्यसुपरावचनयोगियों प्रकृषता वचनयोगियाक समान है । विशयता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर प्रत्ययोंमें असत्यसुपरावचनयोगका छाड़कर हाथ सब पागोंको कम करना चाहिये । अन्य वृथा और असत्यसुपरा वचनयोगियोंकी प्रकृषता अन्य सुप्रा और अन्यसुप्रा वचन योगियोंक समान है क्योंकि, कार्य विशयता नहीं है ।

आवययोगियों भी प्रकृषता आवश्यक समान ही है । विशय इतना है कि सब गुणस्थानोंके आप प्रत्ययोंमें वार मनापाग और वार वचनपाग इस प्रकार आठ प्रत्ययोंका कम करना चाहिये । अन्त्य विशयता नहीं है । आपमें पूर्वोंक मन्तर वृथोमें बहुत गूढने भर प्रकृषताके उत्तर गूढ करने हैं—

मात्रा वन्नीयस कान वपठ और वैन वधपठ है ? मिथ्यापठिठ ठेनर स्यापठरती तर वधक है । य वपठ है, वधपठ नहीं है ॥ १४१ ॥

भोषमि 'अवसेसा अणवा' ति उर्त । एत्य पुण 'अयंथा णत्थि' ति वत्तव्वं,  
 भोगण्णसो । ण च सवेगेसु अनोगा होति, विण्णित्तेहायो । जदि एत्थिमेत्थे चेष भेदो  
 तो एत्थिस्सेव विदेसो किम्प कदो ? ण एस दोसो, धूळपुडीणं' पि सुहग्गइण्डं  
 तपोवेदसदो ।

## ओरालियकायजोगीण मणुसगइमगो ॥ १४२ ॥

पंचपाणावरणीय-चतुर्दसपावरणीय-परंतपरायण बचोदयबोच्छेदो मणुसगदीदो भत्थि  
 विसेसो, विसेसकमपामावादो । जसक्किंति-उम्मागोवेसु विसेसो भत्थि, तेस्मिंस्सुदयबोच्छेदा-  
 मावादो । मणुसगदीए पुण उदयबोच्छेदो भत्थि, अनोगिचमिसमए मणुसगदीए सह  
 एहास्सिमुदयबोच्छेदसणादो । सोदय-परोदय-सांतर भिरंतरपरिक्खासु भत्थि भेदो, भेदकार  
 वाजुक्कमादो । पच्चएसु भत्थि भेदो, ओरात्थिमिस्स-कमाइय-वेठभियदुग-चट्टमण  
 बधिपच्चएहि विजा मिच्छाइहिंदि सासणे च इहकणेण तेरात्थि-अट्ठत्थि-सप-चमदसणादो,

भोषमें अवशेष अवशेषक है ऐसा कहा गया है । परन्तु यहाँ अवशेषक कोई  
 नहीं है ऐसा कहना चाहिये क्योंकि, यहाँ योगकी प्रधानता है । और सवेगियोंमें  
 अवोली होते नहीं हैं क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध है ।

शुद्ध—यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों  
 नहीं किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि स्पृक्षवृद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक  
 ग्रहण हो मनदर्श उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

## औदारिकप्रययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पांच ज्ञामावरणीय चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय इन प्रकृतिषोंके  
 बन्धोदयभ्युच्छेदमें मनुष्यगतिके कोई विशेषता नहीं है क्योंकि, विशेष कारणोंका  
 यहाँ अभाव है । यथाकीर्ति और उच्छगोत्रमें विशेषता है क्योंकि यहाँ उनका उदय  
 भ्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिके इनका उदयभ्युच्छेद है क्योंकि, अयोगकेवसी  
 गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उदयभ्युच्छेद देखा जाता है ।  
 स्वादय परोदय और अन्तर भिरन्तर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है क्योंकि  
 यहाँ विशेषताके उन्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है क्योंकि औदारिक-  
 मित्र क्षमण वैदिकिचक्रिक, चार मनोयोग भ र चार पञ्चमयाग प्रत्ययोंका विना मिच्छा  
 इति और सासाधन गुणस्थानमें यथाकप्रस ततानीय और अवतीम प्रत्यय दये जात है

अवस्था । पत्रि एकस्मिन् मन्त्रयोगे विरुद्धे अवसेससम्प्रयोगा मूत्रोपुत्तरपन्थयम् अवस्था ।  
अवसेसा विरुद्धमन्त्रयोगीण पन्थया ह्येति । अस्मिन् अवस्थान्तरं कस्य वि विसेसो ।

वचनयोगीणमेवं चेत् वत्स्यं, सांतर-विर्तर-सोदय-परोदय-सामितपन्थयार्थि  
वचनयोगीहिंते वचनयोगीणं मेदामावाधो । पत्रि भीर्दिम-सीर्दिम-वर्तर्दिम-वर्तिरिवा  
सोदय-परोदयो वयो ति वत्स्यं । अस-मोसवचनयोगीणं वचनयोगिमगो । पत्रि सम्प्रगुणं  
उत्तरपन्थयम् अमन्त्र-मोसवचनयोग मोतुं सेससम्प्रयोगा अवसेदया । सम्प्र-मोस-सम्प्रमोस-  
वचनयोगीणं सम्प्र-मोस-सम्प्रमोसमन्त्रयोगिमगो, विसेसामावाधो ।

कम्पयोगीणं वि ओषधंगो चेत् । पत्रि सम्प्रगुणद्विषाणमोषपन्थयम् मन्त्र-वचनयोगी  
पन्थया अवसेदया । सजोगिपन्थयम् होहोमन्त्र-वचनयोगपन्थया अवसेदया । पत्रि कम्प  
विसेस । ओषधिमि पुत्तुत्तसम्प्रसमुत्तुत्तु पत्तुत्तुसुत्तुमि मेदपदुप्यायवदुत्तुत्तुत्तु मन्त्रि—

सादवेदणीयस्स को वधो को अवधो ? मिच्छाहृष्टिपहुडि जाव  
सजोगिकेवली वंधा । एदे वंधा, अवंधा गत्यि ॥ १४१ ॥

विशेषता यह है कि एक मन्त्रयोगके विरुद्ध होनेपर दोष सब योगोंको मूत्रोप उत्तर  
प्रत्ययोंमेंसे कम करना चाहिये । इस प्रकार दोष यह विरुद्धमन्त्रयोगियोंके प्रत्यय होते हैं ।  
अन्त्य और कहीं विशेषता नहीं है ।

वचनयोगियोंके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये क्योंकि साम्प्रतिरित्तद  
स्वोदय-परोदय, स्वामित्त और प्रत्ययान्तिर्दिम अपेक्षित मन्त्रयोगियोंसे वचनयोगियोंके  
कार्य मेद नहीं है । विशेष इतना है कि भीर्दिम सीर्दिम वर्तर्दिम और वर्तिरिवा  
जातिका स्वोदय-परोदय कस्य होता है ऐसा कहना चाहिये । असत्यमूत्रावचनयोगियोंकी  
प्रकृषा वचनयोगियोंके समान है । विशेषता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर  
प्रत्ययोंमेंसे असत्यमूत्रावचनयोगको छोड़कर दोष सब योगोंको कम करना चाहिये ।  
सत्य मूत्रा और सत्यमूत्रा वचनयोगियोंकी प्रकृषा सत्य मूत्रा और सत्यमूत्रा वचन-  
योगियोंके समान है क्योंकि, कार्य विशेषता नहीं है ।

कम्पयोगियोंकी भी प्रकृषा ओषधे समान ही है । विशेष इतना है कि सब  
गुणस्थानोंके ओषध प्रत्ययोंमेंसे आर मन्त्रयोग और आर वचनयोग इस प्रकार ओषध  
प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । अन्त्य विशेषता नहीं है । ओषधमें पूर्वोक्त सत्तय  
स्वर्गोंमेंसे अतुर्ग नृषमें मेद प्रकृषावार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

साता वदनीयस्य कौन पन्थु और कौन अवन्थक है ? मिष्याद्ये ठेकर  
सोमकेवली तक कन्धक है । ये पन्थु हैं, अवन्थक नहीं है ॥ १४१ ॥

बोषमि 'अवसेसा अर्बपा' ति उच । एत्य पुण 'अर्बपा अलि' ति वत्थं,  
जोगणपादो । ण च सनेमोसु अजोगा होति, विण्णहिसेद्दो । जदि एतियमेत्थे चैव भेदो  
तो एतियस्सेव विदेत्थे किम्प करो ? ण एस दोसो, 'वृत्तुदीर्ण' पि सुहमइण्ड  
तपोवदेत्थो ।

## ओरालियकायजोगीण मणुसगइमगो ॥ १४२ ॥

पचपापाकरणीय-चउदंसणावरणीय-पचंतउइयाण बबोदयवोच्छेदो मणुसगदीदो अलि  
विसेत्थो, विसेसकरुणामावादो । असकिंति-उच्चगोदेसु विसेसो अलि, तेस्मिंस्सुदयवोच्छेदा-  
मावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अलि, अजोगिचरिसमए मणुसगदीए सह  
एदास्सिउदयवोच्छेदंसपादो । सोदय-परुदय-सातर भिरंतरपरिक्खासु अलि भेदो, भेदकर  
आकुवत्तमादो । पच्चएसु अलि भेदो, ओरालियमिस्स-कम्माइय-वेठवियदुग-चतुमण  
वधिपच्चएदि विजा मिच्छाइडिडि सासणे च बहाकमेण तेदादीस-अडुत्तीसपच्चयदसपादो,

भोषमें अवशेष अवशेषक हैं ऐसा कहा गया है । परन्तु यहाँ अवशेषक कोई  
नहीं है ऐसा कहना चाहिये क्योंकि, यहाँ योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें  
अयोगी होते नहीं हैं क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध है ।

शुक्ल—यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों  
नहीं किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, स्पृष्टबुद्धि सिध्योंके भी सुखपूर्वक  
ग्रहण हो एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

## औदारिकप्रययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पांच ब्रह्मावरणीय चार वर्शनापरणीय और पांच अन्तराय इन प्रकृतियोंके  
बन्धनप्युच्छेदमें मनुष्यगतिके कोई विशेषता नहीं है क्योंकि, विशय कारणोंका  
यहाँ समाप है । यदाकीर्ति और उच्चगोत्रमें विशेषता है क्योंकि, यहाँ उनके उच्च  
प्युच्छेदका समाप है । परन्तु मनुष्यगतिके इनका उच्चप्युच्छेद है क्योंकि, भयागकेयवी  
गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उच्चप्युच्छेद देखा जाता है ।  
स्वोदय परोदय और सात्तर निरंतर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है क्योंकि,  
यहाँ विशेषताके उत्पादक कारणोंका समाप है । प्रत्ययोंमें विशेषता है क्योंकि औदारिक  
मित्र कर्मण पैरिपिकसिक्क, चार मनायोग अ र चार बचनपाण प्रत्ययोंके बिना मिच्छा  
इदि और सासात्तन गुणस्थानमें यथाक्रममे ततालीस और अडुत्तीस प्रत्यय देखे जाते हैं



वेव । एसा वेद्याजिसुतद्वियभेदो ।

एन्द्रिय-र्षाद्वि-तीर्द्वि-चतुर्द्वि-पंचिद्वि-आदि आदाव-मावर-सुहुम-साहारमाण मनुमगाइए परोदओ बभो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । अपन्वत्तस्स मनुमगाइए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण परोदओ । एसो एगद्वाणियसुतद्वियभेदो ।

सपचिय अण्णमुत्तसु भेदाभावादो तणि मोत्तण अट्टद्वाणियमुत्तद्वियभेदो उप्पदे—  
मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-असज्जसम्मादिद्वि-उत्तपाद-परपाद-उत्सास-अप-वत्ताप-  
मनुमगाइए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण सोदओ वेव । पंचिद्वि-आदि-तस चादरणं मनुमगाइए  
सोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । वेवेद देसामासियमपणामुत्त तेवेदे मप्पविसेसा  
एत्थुवत्तन्ति । अण्ण पि भेददमण्हमुवरिममुत्तं भणदि—

णवरि विसेमो सादावेदणीयस्स मणजोगिभगो ॥ १४३ ॥

ओरास्सियकपमोगीसु अर्धपगामावादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु पवणाणावरणीय-छदसणावरणीय  
असादावेदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय

ही हाता है । यह द्विस्थानिक मूलस्थित भेद है ।

एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय पञ्चाग्नय ज्ञानि आताप स्थावर, सूक्ष्म धीर स्वाधारणक मनुष्यगतिमें पराद्वय बन्ध होता है परन्तु यहाँ स्वाद्वय-पराद्वय बन्ध होता है । अपवाजक मनुष्यगतिमें स्वाद्वय पराद्वय बन्ध होता है परन्तु यहाँ पराद्वय बन्ध होता है । यह एकस्थानिक मूलस्थित भेद है ।

इस समय अग्न्य मूर्धामें भेद न जानने उन्हें छाड़कर अष्टस्थानिक मूलस्थित भेदका कहत हैं— मिच्छादिद्वि सामाज्यमग्गहादि आर अमवत्तसम्पहादि गुणस्थानोंमें उपघात परघात उच्छेदास धीर अपवाजक मनुष्यगतिमें स्वाद्वय पराद्वय बन्ध होता है परन्तु यहाँ स्वेद्वय ही हाता है । पञ्चाग्नय ज्ञानि जन्म धीर बादरका मनुष्यगतिमें स्वाद्वय बन्ध होता है परन्तु यहाँ स्वाद्वय पराद्वय बन्ध होता है । अर्थात् यह अपवाजक इत्थमग्गहादि भव एव य सब विनियोगार्थ यहाँ पायी जाती हैं । अग्न्य भी भेद दिग्गच्छानक मिय उपरिम मूल कहत हैं—

विशेषता यह है कि साना वेदनीयसि प्ररूपया मनापागिपोंके समान है ॥ १४३ ॥

क्योंकि, धीराग्निकपयगतिगियोंमें माना वेदनीयके अर्धबन्धकोका अयाप है ।

धीराग्निकमिभ्रकपयगतिगियोंमें पाँच भ्रान्तरणीय, छह दृशनाग्नणीय, ममाना वेदनीय, बारह कयाय, पुरपवेद, हास्य, रति, भरति, ओरु, मय, जुगुप्पा, पंचन्द्रिय ज्ञानि, तेजस

दुर्गन्धा-परिचिदियजादि-तेजा-कम्महयसरीर-समचउरससठण-वण्ण-गघ-  
रस-फास अगुरुअल्लहुअ उवघाद परघाद-उस्मास-पसत्थविहायगइ-तस-  
वादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-धिराधिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-  
जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पचतराइयाण को बंधो को अवंधो ?  
॥ १४४ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी वधा । एदे बंधा,  
अवसेसा अवघा ॥ १४५ ॥

परपादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सरत्थमेत्थुदयामावासा बंधोइमाण पुष्पावरकाठ-  
संधंभिवोम्भेदविचारो जतिव । अवसेसाण पयसीयं वपोदया समं बोद्धिज्जंति, असजदसम्मा-  
विट्ठिन्दि तद्धुमपामावदसमादो ।

पंचपात्रावरणीय-पठइसंवावरणीय-तेजा-कम्महयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फास-अगुरु-  
अल्लुअ-उवघाद-परिधिर-सुहासुह विमिण-पंचतराइयाण सोइको बंधो, एत्थ सुवोदवचाशे ।

५ कर्मण क्षीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्वं, उपपात, परपात,  
उष्णत्वं, प्रशस्तविद्ययोगनि, श्रम, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकक्षीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
सुभग, सुम्बर, आदेय, यज्ञकृति निमाष, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक  
और कौन अवन्धक है ? ॥ १४४ ॥

यह सुख सुगम है ।

मिथ्यादधि, सासाधनसम्यग्दधि और असंयतसम्यग्दधि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,  
शेष अवन्धक हैं ॥ १४५ ॥

परपात उपद्रवाम प्रशस्तविद्ययोगनि और सुधरका यहाँ उपपाताव होनेसे  
बन्ध य वचनके पूर्व और अपर कास सम्बन्धी व्युत्प्रेषका विचार नहीं है । दोष  
प्रकृतिपौत्रा बन्ध और वचन दोनों साथ व्युत्प्रेषण होते हैं क्योंकि, असंयतसम्यग्दधि  
गुणव्यापनमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है ।

पांच आवावरणीय चार दशावावरणीय तेजस व कर्मव्यवहार, वर्ण गन्ध  
रस स्पर्श, अगुरुत्व उपपात स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ निमाष और पांच अन्तराय  
इत्यादि साधक बन्ध होता है क्योंकि यहाँ ये प्रकाशनी हैं । मित्रा प्रकृष्टा साधक बन्धक,

मिह-पयत्न-वारसकसाय-हस्त-रदि-भरदि-सोग मय दुर्गन्ध-असादावेदनीय उष्णगोत्राणं  
 सोदय परोक्षो बंधो । कषमुष्णगोदधयो सम्मादिद्वीसु परोक्षो ? न, तिरिक्तेषु  
 पुष्पाउवधधवेषुप्यण्णसह्यसम्मादिद्वीसु परोक्षेषु बागोदस्त बंधुबलभादो । पुरिसवेद-समचठ  
 रससंछण-सुमगादेज्ज-जसकितीण मिष्मदिद्वि-सासणेसु सोदय-परोक्षो । असंबदसम्मादिद्विहि  
 सोदयो । पंधिरियजदि-तस-वादर पञ्चत-पत्तेयसरीणं मिष्मदिद्विहि सोदय-परोक्षेण बंधो ।  
 सासणसम्मादिद्वि-असंबदसम्मादिद्वीसु सोदय । परपादुस्सास-पसत्पविहायगइ-अपसत्प-  
 विहायगइ-सुस्सरणं तिसु वि गुणद्वयेसु परोक्षेण बंधो । अजसकितीण मिष्मदिद्वि-  
 सासणसम्मादिद्वीसु सोदय-परोक्षेण बंधो, असंबदसम्मादिद्वीसु परोक्षेण ।

पञ्चपात्तावरणीय-छह वरणीय-वारसकसाय-मय-दुर्गन्ध-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण  
 गंध-रस-फास-अगुस्वल्लुव-उवपाद-पिमिण-यंथतरायाण भिरंतो बंधो । असाद-हस्त-रदि  
 भरदि-सोग-जसकिती-अजसकिती-पिराधिर-मुमासुमाण सांतो बंधो, तिसु वि गुणद्वयेसु  
 पगसमएण पञ्चवरमंडसपादो । पुरिसवेद-समचठरससंछण-सुमगादेज्ज-उष्णगोद-पसत्पविहाय

हास्य एति भरति शोक मय भुगुप्ता असादा वेदनीय और उष्णगोत्रका स्वोदय  
 परोक्ष बन्ध होता है ।

संक्षेप—सम्यग्दृष्टिओंमें उष्णगोत्रका परोक्ष बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शक्य ठीक नहीं क्योंकि, पूर्व आयुष्यधके बराबरे तिर्यकोंमें  
 उत्पन्न हुए साधकसम्यग्दृष्टिओंमें परोक्षसे उष्णगोत्रका बन्ध पाया जाता है ।

पुरुषवेद समचतुरस्रसंस्थान सुमग जायेय और यथाधीर्तिका मिष्पाददि  
 व सासादमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोक्ष बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टि  
 गुणस्थानमें इनका स्वाक्ष्य बन्ध होता है । पञ्चेन्द्रिय आदि जस बादर, पर्याप्त  
 और प्रत्येकशरीरका मिष्पाददि गुणस्थानमें स्वोदय-परोक्षसे बन्ध होता है ।  
 सासादमसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे बन्ध होता है । पर्याप्त  
 उष्णवास प्रशस्तविहायोगति अपशस्तविहायोगति और सुस्वरका तीनों ही गुणस्थानोंमें  
 परोक्षसे बन्ध होता है । अपशस्तीर्तिका मिष्पाददि व सासादमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 स्वोदय परोक्षसे और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें परोक्षसे बन्ध होता है ।

पाँच ज्ञानावरणीय छह वरणीय-वारस कयाय मय भुगुप्ता ऐजस  
 व कामज शरीर, बर्ष गन्ध रस स्पर्श अगुस्वल्लु, उपपात निर्माण और पाँच अन्तराय,  
 इनका मिश्रित बन्ध होता है । असादा वेदनीय हास्य एति भरति शोक, यथाधीर्ति  
 अपशस्तीर्ति स्थिर, अस्थिर, सुम और अशुमका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि तीनों  
 ही गुणस्थानोंमें इनका एक समयसे बन्धविधायक देका जाता है । पुरुषवेद समचतुरस्र  
 संस्थान सुमग जायेय, उष्णगोत्र, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका मिष्पाददि व



दुग्धा-पर्चिदियजादि-तेजा-कम्महयसरीर-समचतुरससठाण-वण्ण-गध-  
रस-फास अगुरुअलहुअ उवघाद परघाद-उत्सास-पसत्यविहायगह-तस-  
वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-पिरायिर-सुहासुह-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-  
जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पचतराहयार्ण को वधो को अवधो ?  
॥ १४४ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी वधा । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ १४५ ॥

परपाठुत्सास पसत्यविहायगह-सुस्सराम्भेतुदयामावाधो वधोदयार्ण पुम्भारकठ  
संपंविवाधेद्विषाणो पत्थि । अवसेसार्ण पयणीणं वधोदया सुगं बोद्धिज्जंति, असंयतसम्यग्गहि  
विद्धिंदि तदुमयामावदंसणाधो ।

पंचमाचारणीय-चतुर्विंशवाचणीय-तेजा-कम्महयसरीर-वण्ण-गध-रस-फास-अगुरु-  
अलहु-उवघाद-पिरायिर-सुहासुह-णिमिण-पंचतराहयार्ण सोदधो वंधा, एत्थं धुवोदयसरो ।

व कर्मण शरीर, समचतुरससंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्वं, उपपात, परपात,  
उष्णत्वं, प्रशस्तविहायोगति, व्रस, वादर, पयाप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
सुमग, सुस्सर आदय, यशस्वीर्ति निर्माय, उच्चागोत्र और पांच अन्तराय, इनका कैन बन्धक  
और कैन अवन्धक है ? ॥ १४४ ॥

बह सच सुगम है ।

मिप्पाघट्टि, सासणनसम्यग्गहि और असंयतसम्यग्गहि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,  
धेप अवन्धक हैं ॥ १४५ ॥

परपाठ उच्छ्रवान् प्रशस्तविहायोगति और सुस्सरक्य यहाँ उदयामाव होमेये  
वधय व उदयक पूर्ण और अघट काय सम्यग्गहि व्युत्पद्येक्य पिचार नहीं है । शेष  
मठुतिर्पोषा वण्ण और उदय दोनों नाय व्युत्पिउध होले हैं क्योंकि, असंयतसम्यग्गहि  
शुचत्त्वान्तरे उन दोनोंका जमाव क्या जाता है ।

पांच माताचारणीय चार दशाचारणीय तेजस व कर्मण शरीर, वर्ण गन्ध  
रस स्पर्श अगुरुत्वं, उपपात स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निमात्र और पांच अन्तराय  
इनका लोदय वधय होता है क्योंकि, यहाँ व सुयोदयी हैं । निद्रा प्रवसा बाध कषाव,

तिरिक्ख-मणुस्सा सामी । वधदाण वधविण्हट्ठाणं च सुगमं । पंचणाषावरणीय  
छर्दसणावरणीय-पारसकसाय-मय-दुगुल्ल-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुल्लठ्ठुव-उवषाद  
णिमिष-पंचतराइयाणं मिच्छाइट्ठि' चउत्थिहो वधो । ममेसु निविहो, धुवपषामावादो ।  
वधसंसाणं सव्वपयडीण तिसु नि गुणहाणसु वधा मात्ति अद्दुवो ।

णिदाणिहा-पयलापयला-थीणगिदि-अणताणुवधिकोध-भाण  
माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगड मणुसगइ-ओरालियमरीर चउसठाण-  
ओरालियसरीरअगोवग-पचसघडण तिरिक्खगड मणुसगइपाओग्गाणु  
पुव्वी-उच्चोव अप्पसत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेव जीचागोदाण  
को वधो को अवधो ? ॥ १४६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा

॥ १४७ ॥

निर्वेच व मनुष्य ज्ञामी है । वज्रव्याध्यान और वज्रध्वनिप्रस्थान सुगम हैं । पांच  
क्रान्तावरणीय छह दर्शनावरणीय बाह्य कपाय मय गुगुल्ल तज्जम व कर्मण शरीर  
पञ्चांगिक बाह्य, अगुल्लसु उपधान निमाण और पांच भस्मराय इनका मिथ्यादर्श  
गुणस्थानमें बाह्य प्रकाशका वज्र होता है । शय वा गुणस्थानमें भीम प्रकाशका वज्र  
होता है क्योंकि वहाँ मय वज्रका समावेश है । तब जब प्रदक्षिणीय वज्र तीनों ही  
गुणस्थानोंमें सादि व अग्रव होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचक्षप्रचक्ष स्थानशुद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रय, मान, माया, लभ,  
श्रीवेद, तियगति, मनुष्यगति, आदारीकउरीर, चार सस्थान, आदारीकउरीरंगोपांग, पाच  
संइनन, तियगति, मनुष्यगतिप्रायोम्यानुपूर्वी, उषोत, अप्रअस्तविहायगति, दुमग, दुस्सर,  
अनादेय और नीचगोत्रका केन वचक और केन अवचक है ? ॥ १४६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याइष्टि और मासाइनसम्पगष्टि वचक है । य वचक है, शेष अवचक  
है ॥ १४७ ॥

गह-सुसराणं मिष्मदिष्टि-सासणसम्मादिष्टीमु सान्तरो वधो, असज्जसम्मादिष्टिम्हिरित्तो ।  
 पंचिदिय-तस वादर-पञ्चध-पतेपसरीर-परपादुस्सासार्धं मिष्मदिष्टीमु सान्त-पिरित्तो वधा ।  
 क्व पिरित्तो ? तिरिक्ख-मजुसुप्पणसण-कुमारदिदेवाणं भेरव्याणं च पिरित्तवैपुनत्तारा ।  
 सासणसम्मादिष्टि-असज्जसम्मादिष्टीमु पिरित्तो ।

मिष्मदिष्टिस्म तेदस्मिं पञ्चया, बोधपञ्चपम् ओराठिपमिस्सकयबोगवदिरिच-  
 वारसज्जोगाममादो । सामणस्स भट्ठीस, असज्जसम्मादिष्टिस्म वसिं पञ्चया; तेसि  
 च व जोगामममादो असज्जसम्मादिष्टीमु त्पी णजुंसमपेदेहि सह वारसज्जोगाममादो ।  
 एतामो सम्बपयडीमो असज्जसम्मादिष्टिणो ववगहंसंजुचं वंथंति । मिष्मदिष्टि-सासणसम्मा-  
 दिष्टिणा उप्पणादं मजुसगहंसंजुच, सेसामो सम्बपयडीमो तिरिक्ख-मजुसगहंसंजुच वंथंति ।  
 इव-विरपगईमो मिष्मदिष्टि-सासणसम्मादिष्टिणो किण्ण वंथंति ? ज, अपन्नप्रवडाए तस्मिं  
 वंथामानादो ।

सासादनसम्पदादि शुक्लस्थानोंमें सात्तर बन्ध होता है असंयतसम्पदादि शुक्लस्थानोंमें  
 निरन्तर बन्ध होता है । वेवेत्तिच वस वादर, पर्याप्त प्रत्येकसरीर परपाद और  
 उप्पवासका मिष्मदिष्टिओंमें सात्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शुद्ध—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि नियम व मनुष्योंमें प्रत्यक्ष रूप सात्तकुमारदि देवों और  
 नाटीक्यों निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्पदादि वार असंयतसम्पदादि शुक्लस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है ।

मिष्मदिष्टि के सत्तासीस प्रत्यक्ष होते हैं क्योंकि बोध प्रत्ययोंमें उसका और  
 रिक्तामिध वययोगका छाकुर बन्ध वारह योगोंका समारह है । सामानसम्पदादि  
 अर्कनीस और असंयतसम्पदादि के बर्तास प्रत्यक्ष होते हैं क्योंकि, उन्हीं पायोंका यहाँ भी  
 समारह है वृत्ति असंयतसम्पदादिओंमें ली और मजुसक वेथोंक साथ वारह योगोंका समारह  
 ह । इन सब प्रवृत्तिवैत्त असंयतसम्पदादि ववगमित संयुक्त बांधन हैं । मिष्मदिष्टि व  
 सामानसम्पदादि उक्कगावका मनुष्यगमित संयुक्त तथा होय सत्र प्रवृत्तिवैत्तों  
 नियमित और मनुष्यगमित संयुक्त बांधन हैं ।

शुद्ध—ववगति व मरकगमित मिष्मदिष्टि वार सामानसम्पदादि कबो नहीं  
 बांधन ?

समाधान—नहीं बांधन क्योंकि, अपर्याप्त बालमें उमका बन्ध नहीं होता ।

तिरिक्ख-मणुस्सा सामी । बंधदाण वधविणद्धुत्तणं च सुगम । पंचणापावरणीय  
छत्रं सपावरणीय-चारसकसाय-भय दुगुल्ल-तेजा-कम्मइय-वण्णचउत्तक-अगुल्लुव-उबधाद  
णिमिष-यचतराइयाण मिच्छाअनिद्धिं चउत्थिहो बधो । मसं सु तिथिहो, धुववधाभावादे ।  
अवसेसात्थ सम्भपयडीण तिसु वि गुणद्वारेणु बधो सादि अदुवो ।

णिद्वाणिद्वा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण  
माया-लोम-इत्थिवेद तिरिक्खगइ मणुसगइ-ओरालियसरीर चउसठाण-  
ओरालियसरीरअगोवग-यचसघहण तिरिक्खगइ मणुसगइपाओग्गाणु  
पुव्वी-उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ दुभग-दुस्सर-अणादेज-णीचागोदाण  
को बंधो को अवधो ? ॥ १४६ ॥

सुगम ।

मिच्छाइटी सासणसम्माइटी उधा । एदे वधा, अवमेसा अबधा

॥ १४७ ॥

तिर्येक व मनुष्य सामी है । बन्धाभ्याम और बन्धविमलस्थान सुगम है । पांच  
शानावरणीय छत्र इष्टमावरणीय चारु कथाय भय दुगुल्ल तेषां च कर्मण गरीर  
धर्मादिक चार, मगुल्लसु, उपपात मिमाण और पांच भस्तराय इनका मिष्पाइए  
शुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शय वा शुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध  
होता है क्योंकि वहाँ प्रत्येक बन्धका अभाव है । शय सब प्रकृतिपौंस बन्ध तीनों ही  
शुणस्थानमें छादि व मनुष्य होता है ।

निग्राणिग, प्रचत्तप्रचत्त स्थानगुद्धि, बनन्तालुबन्धी कथ, मान, माया, अम,  
बीवेद, तिर्यगगति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिकशरीरगापांग पांच  
संइनन, तिर्यमगति, मनुष्यगतिप्रामोण्यानुपूर्वी, उषोत, अग्रशस्तविहायगति, दुभग, दुस्सर,  
मनादेय और नीचगोत्रक केन बधक और केन अवन्धक ? ॥ १४६ ॥

यह सुख सुगम है ।

मिष्पाइए और सामाइनसम्यगुद्धि बन्धक है । व बन्धक है, उप अवन्धक  
है ॥ १४७ ॥

एदस्स जसो तच्छेदे— अर्पताणुवेषिचउत्तक-स्विवेद-चउत्तस्य-पंचसप्तदश-दुमप-  
अपदेन्ज-वीचागेदार्णे अपोदया सासणसम्माद्विदि सम वोच्छिज्जंति, न मिच्छाद्विदि  
अगुवत्तमादो । अजमेमाणं पयसीणमेत्थुदयवोच्छेदो जग्घि, उवरी तदुवत्तमादो । केवत्थे एत्थ  
अपवोच्छेदो चेव, तस्म दंसणादो ।

धीजगिद्वितिय-तिरिक्खगइ मणुमगइपाओगाणुपुष्पी उमोव-अप्पसरत्थविहायगइ-दुस्स-  
राय परोदवो वंचो, अपज्जत्थसु एदासिमुदयामात्रादो । ओरत्थिमसरीस्स सोदवो वंचो,  
एत्थ पुवोदयत्तादो । ओरत्थिमसरीअंतागत्तम मिच्छाद्विदि सोदय-परोदवो वंचो, सासणे  
सोदवो । अर्पताणुवेषिचउत्तक-स्विवेद-तिरिक्खगइ-मणुमगइ चउत्तस्य-पंचसप्तदश-दुमप-  
अपदेन्ज-वीचागेदार्णे दोसु वि गुणइधेसु सोदय-परोदवो वंचो, अदुवोदयत्तादो ।  
धीजगिद्वितिय-अर्पताणुवेषिचउत्तक-ओरत्थिमसरीराय किरतो वंचो, एत्थ पुववचित्तादो ।  
इस्विवेद-चउत्तस्य-पंचसप्तदश उ-मोव अप्पसरत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अपदेन्ज-संतरो  
वंचो, एत्थसमएण वंचुवरमंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगाणुपुष्पी-वीचागेदार्णे

इत्त सूचका अय कहते हैं— अमन्तानुवन्धिचतुष्क स्विवेद चार संस्थान पांच  
संहमन दुर्मग अमत्थेय और नीचगोबधका वन्ध व उदय वानों सासणसम्माद्विदि  
गुणस्यानम एक साथ वसुच्छिज्ज इत्त है मिच्छाद्विदि गुणस्यानमें नहीं क्योंकि वहाँ इनका  
व्युच्छेद पाया नहीं जाता । शेष प्रवृत्तियोंका वहाँ उदय-व्युच्छेद नहीं है क्योंकि, ऊपर  
उनका उदय पाया जाता है । उनका वहाँ कबल वन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, वह वहाँ  
देखनेमें जाता है ।

स्यानपुद्दिचय तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत अमहास्त  
विहायोगति और दुस्वरका परोदय वन्ध जाता है क्योंकि, अपपांत्तामें इनके उदयका  
अभाव है । औदारिकशरीरका स्वेदय वन्ध होता है क्योंकि, वहाँ वह बुबोत्तपी है ।  
औदारिकशरीरार्गापांगका मिच्छाद्विदि गुणस्यानमें स्वेदय परोदय वन्ध होता है  
सासादममें स्वेदय वन्ध होता है । अमन्तानुवन्धिचतुष्क, स्विवेद तिर्यग्गति मनुष्यगति  
चार संस्थान पांच संहमन दुर्मग अमत्थेय और नीचगोबध वानों ही गुणस्यानमें  
स्वेदय-परोदय वन्ध होता है क्योंकि ये मनुबोत्तपी हैं । स्यानपुद्दिचय अमन्तानुवन्धि  
चतुष्क और औदारिकशरीरका निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, वहाँ ये जूबवन्धी हैं ।  
स्विवेद चार संस्थान पांच संहमन उद्योत अमहास्तविहायोगति दुर्मग दुस्वर  
और अमत्थेयका सन्तर वन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका वन्धविभ्राम देखा  
जाता है । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोबध वन्ध मिच्छाद्विदि

मिच्छाद्विद्भिः' बंधो सांतर-भिरंतरो । कर्षं भिरंतरो ? अ, तैठ-बोठबोइएसु सत्तमपुढवीए' तिरिक्खेसुप्पण्णेषेइएसु अ गिरतरबंभुवत्तमादो । सासणसम्मादिद्विद्भिः सांतरो, तए तेसिमुववात्तामादो । [ मणुसगाइ ] मणुसगत्ताभोग्गाणुप्पुब्बीणं सांतर-भिरंतरो । कर्षं भिरंतरो ? आणदादिदेवेसु मणुसेसुप्पण्णेषु दुमिहगुणेषु मुहुत्तस्सतो गिरतरबंभुवत्तमादो । बेसात्थिसरीरबंगोवंगस्स मिच्छाद्विद्भिः बंधो सांतर-भिरंतरो । कर्षं भिरंतरो ? अ, सणक्कुमात्तादिदेव-भेएएसु तिरिक्ख-मणुस्सुप्पण्णेषु बंतोमुहुत्तं भिरंतरबंभुवत्तमादो । सासणसम्मादिद्विद्भिः भिरंतरो ।

मिच्छाद्विद्भिः सेदात्थीस, सासणे अइसीमुत्तरपञ्चया । सेसं सुमम । तिरिक्खगइ [तिरिक्खमइ] एवोत्ताणुप्पुब्बी-उवोवाण तिरिक्खगइसहुत्तं । [मणुसगाइ] मणुसगाइपाभोम्माण-

गुणस्थानमें सात्तर-भिरंतर होता है ।

शुद्ध—भिरंतर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं है क्योंकि, तेज अ वायुकापिकोंमें तथा तिर्यगोंमें उत्पन्न हुए सप्तम पृथिवीके मादिकियोंमें उनका भिरंतर बन्ध पाया जाता है ।

सासाधनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहां उनके उत्पत्त्यका समाव है । [मनुष्यगति और ] मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सात्तर भिरंतर बन्ध होता है ।

शुद्ध—भिरंतर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आत्मतारिक बंधोंमें दोनों गुणस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त तक भिरंतर बन्ध पाया जाता है । भौतिकशरीरगोपांगका बन्ध मिच्छाद्विद्भिः गुणस्थानमें सात्तर भिरंतर होता है ।

शुद्ध—भिरंतर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, तिर्यक अ मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आत्मतुमापदि बंध और मादिकियोंमें अन्तर्मुहूर्त तक उसका भिरंतर बन्ध पाया जाता है ।

सासाधनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उसका भिरंतर बन्ध होता है ।

मिच्छाद्विद्भिः गुणस्थानमें सेदात्थीस और सासाधन गुणस्थानमें अइसीम उत्तर प्रत्यय होते हैं । दोष प्रत्ययप्रकृषा सुगम है । [मिष्यगति] मिष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उपातक तिर्यगतिसे संयुक्त [मनुष्यगति] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त,

एतस्स वत्सो उच्यते— अनेताशुभविषयक-स्थिवेद-चतस्रस्य-पंचसंघटन-दुष्म-  
अपदेव-भीषागोदानं वेदोदया सासजसम्माद्विदिमि समं वोपिच्छन्ति, य मिच्छाद्विदिमि  
अनुवर्तमादो । नवसेषाण पयडीयमेत्युदयवोच्छेदो पत्वि, उवरि तदुवर्तमादो । केनये एव  
पंचवोच्छेदो वेद, तस्स ईसणादो ।

बीषगिदितिय तिरिक्खगाइ मनुसगाइपाजोग्गाजुपुम्बी उम्मेव-अप्पसत्तविहामगाइ-दुस्स-  
एवं परोदमो वेवो, अप-अत्तएमु एदासिमुदयाभावादो । ओरात्थिसरीरस्स सोदमो वेवो,  
एत्थ पुबोदयच्छरो । ओरात्थिसरीरवेगोवंगस्स मिच्छाद्विदिमि सोदय-परोदमो वेवो, सस्से  
सोदमो । अनेताशुभविषयक-इत्थिवेद-तिरिक्खगाइ-मनुसगाइ-चतस्रस्य-पंचसंघटन-दुष्म-  
अपदेव-भीषागोदानं दोमु वि गुणहाणेषु सोदय-परोदमो वेवो, अदुबोदयच्छरो ।  
बीषगिदितिय-अनेताशुभविषयक-ओरात्थिसरीरं निरतरो वेवो, एत्थ पुवविच्छरो ।  
इत्थिवेद-चतस्रस्य-पंचसंघटन-उम्मेव-अप्पसत्तविहामगाइ-दुमग-दुस्स-अपदेव्वावं संतरो  
वेवो, एगसमएव अनुकरमईसणादो । तिरिक्खगाइ-तिरिक्खगाइपाजोग्गाजुपुम्बी-भीषागोदानं

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— अनन्तानुबन्धितपुष्क, अनेद्व चार संस्थान पांच  
संघटन दुर्मग अनालेय और नीचगोचका वन्ध व उदय दोनों सासजनसम्मादि  
गुणस्थानमें एक साथ उपविष्ट होतें हैं मिच्छादि गुणस्थानमें नहीं क्योंकि, वहां इनका  
मुच्छेद पाया नहीं जाता । ओर प्रकृतिपाँका वहां उदयमुच्छेद नहीं है क्योंकि, ऊपर  
उनका उदय पाया जाता है । उनका वहां केवल वन्धमुच्छेद ही है क्योंकि वह वहां  
देकनेमें आता है ।

स्थानपुद्गिचय तिर्यग्गति च मनुष्यगति प्रापोग्यानुपूर्वी वद्योत अग्रस्त  
विहायगति और दुस्वरक्य परोदय वन्ध होता है क्योंकि अर्थात्तमें इनके उदयका  
अभाव है । औदारिकशरीरका स्वेदय वन्ध होता है क्योंकि वहां वह भुबोदयी है ।  
औदारिकशरीरसंगोपांगका मिच्छादि गुणस्थानमें स्वेदय परोदय वन्ध होता है  
सासादनमें स्वेदय वन्ध होता है । अनन्तानुबन्धितपुष्क अनेद्व तिर्यग्गति मनुष्यगति  
चार संस्थान पांच संघटन दुर्मग अनालेय और नीचगोचका दोनों ही गुणस्थानोंमें  
स्वेदय-परोदय वन्ध होता है क्योंकि ये मनुष्यावपी हैं । स्थानपुद्गिचय अनन्तानुबन्ध  
पुष्क और औदारिकशरीरका निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, वहां वे उदयवन्धी हैं ।  
अनेद्व चार संस्थान पांच संघटन वद्योत अग्रस्तविहायगति दुर्मग दुस्वर  
और अनालेयका सासज वन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका वन्धविग्राम देखा  
जाता है । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रापोग्यानुपूर्वी और नीचगोचका वन्ध मिच्छादि

बंधामात्रादौ । मिच्छादृष्टि-सासनसम्प्रादृष्टि-असंजदसम्प्रादिष्टीसु अहाकमेण तेराटीस-बहुवीस-  
बर्त्तिसपन्धया । सजोगिम्हि एक्को चेष बोराठियमिस्सकययोगपञ्चओ । सेसं सुगमं ।  
मिच्छादृष्टि-सासनसम्प्रादिष्टीपो दुगइसजुत्तं, असंजदसम्प्रादिष्टीपो देवगइसजुत्तं, सजोगिम्हिणा  
अगइसजुत्तं वर्धति । तिरिक्ख-मणुसणमिच्छादृष्टि-सासनसम्प्रादृष्टि-असंजदसम्प्रादिष्टीपो  
मणुसणइसजोगिम्हिणा सार्या । वधद्वान् बंधविषट्ठहानं च सुगमं । सादवेदपीयस्स बंधो  
सुप्पत्थ सारि अद्दुवो, अद्दुबधविधादो ।

मिच्छत-गुडसयवेद तिरिक्खात्त मणुसात्त-चटुजादि-हुडसठाण-  
असपत्तसेवट्टमधदण आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-  
णामाण को बंधो को अवधो ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

मिच्छादृष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १५१ ॥

एदस्स असो वुष्धे— बधेदयाणमेत्थ बोब्बेदो पत्थि, उवठंमादो । अजवा,

बन्ध हाता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धक अभाव है । मिष्पादृष्टि आसादन  
सम्प्रादृष्टि और असंयतसम्प्रादृष्टि गुणस्थानोंमें अथाकमसे तेरावीस अठ्ठीस और बत्तीस  
प्रत्यय होते हैं । सयोगकेबत्ती गुणस्थानमें एक ही गौहारिकमिश्ररूपयोग प्रत्यय होता है ।  
शेष प्रत्ययमकरणा सुगम है । मिष्पादृष्टि और आसादनसम्प्रादृष्टि को पतिर्पोत्ति संयुक्त  
असंयतसम्प्रादृष्टि देयगतिसे संयुक्त और सयोगी जिन अगतिर्संयुक्त बांधते हैं ।  
विषगति च मनुष्यगतिके मिष्पादृष्टि, आसादनसम्प्रादृष्टि और असंयतसम्प्रादृष्टि, तथा  
मनुष्यगतिक सयोगी जिन स्वामी हैं । बन्धाध्याम और बन्धभिनयस्याम सुगम हैं ।  
साता वेदमीयका पन्ध सर्यथ साधि च मणुय होता है क्योंकि, वह अमुबधन्धी है ।

मिष्पात्त्व, नपुंसकवेद, तिर्यगासु, मनुष्यासु, पार जातिर्वा, ईडसस्थान, बसंप्राप्त  
सुपाटिकासंहनन, आताप, स्वात्तर, सुस्म, अपयान्त और साधारणशरीर नायकमका कौन  
बन्धक और कौन अजपक है ? ॥ १५० ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्पादृष्टि बन्धक है । ये बन्धक है, शेष अजन्धक है ॥ १५१ ॥

इस सबका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उधका यहाँ व्युत्पन्न नहीं हैं क्योंकि,



पुष्पीर्ष मनुसगइसद्धतो, संसारं तिरिक्ख-मनुसगइसद्धतो वधा । तिरिक्ख-मनुसमिच्छइ-  
सासणसम्मादिट्ठिओ सत्ती । वंषट्ठार्ण वंषविषहट्ठार्ण व सुगमं । भीणगिदितिय-अवतामुप्पि-  
वठक्कणं मिच्छइट्ठिम्हि वंषो चउप्पिहो । सासणे दुविहो, जणादि-भुवत्तामात्ता । सेत्थं  
पयडीणं सम्बरत्थं सादि जयुवो ।

सादावेदणीयस्स को बधो को अबधो ? ॥ १४८ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी मासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली  
वधा । एदे वधा, अबधा णत्थि ॥ १४९ ॥

सादावेदणीयस्स वधाया उदको पुष्प पम्भ [वा] थोच्छिण्णो ति विचारो वत्थि, वडु  
गुणहाभेसु तदुभयवैक्येडासुलभमादो । मिच्छइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असजदसम्माइट्ठि-सजोगीसु  
वंषो सेत्थ-परोक्कओ, परावत्ताणुत्तयादा । मिच्छइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असजदसम्माइट्ठि  
वंषो सत्तेरो, एत्थमण्य वंषुवगमदंसनादो । सजोगीसु विरतरो, पाडिक्कसपयडीए

नया शेष प्रकृतियोंका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसं संयुक्त बन्ध होता है । तिर्यक् और  
मनुष्य मिथ्याएदि एवं सासावनसम्यग्गति ज्ञानी है । बन्धाज्ज्ञान और बन्धविनाशस्थान  
सुगम है । ज्ञानावस्थान और ज्ञानावस्थानस्थानका बन्ध मिथ्याएदि गुणस्थानमें  
जाते प्रत्यक्ष होता है । ज्ञानावन गुणस्थानमें वा प्रत्यक्ष होता है क्योंकि वहाँ  
जन्ममरण और पुनर्जन्मका भ्रम है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सादि और अनुप  
हता है ।

माता वेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १४८ ॥

यह वृत्त सुगम है ।

मिथ्याएदि, सासावनसम्यग्गति, असंयतसम्यग्गति और सयोगिकेवली बन्धक है । ये  
बन्धक हैं, अबन्धक नहीं है ॥ १४९ ॥

साता वेदनीयका उदय बन्धसं पूज्य वा परमात् व्युत्थित होता है यह विचार  
मही है क्योंकि, जाते गुणस्थानोंमें एक दोनोका व्युत्थित पावा यही जाता । मिथ्याएदि,  
सासावनसम्यग्गति असंयतसम्यग्गति और सयोगिकेवली गुणस्थानोंमें व्योम्य परवत्  
बन्ध होता है क्योंकि वहाँ परिचरित होकर बन्धका भी उदय होता है । मिथ्याएदि सासा  
वनसम्यग्गति और असंयतसम्यग्गति गुणस्थानोंमें साता वेदनीयका सम्यक् बन्ध होता है  
क्योंकि, यह समयसे वहाँ उदय बन्धविधाम देकर जाता है । सयोगिकेवलीमें विरतार

बधामावादो । मिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टि-असज्जदसम्मादिद्विषु अहाकमेण तेरात्तीस-बहत्तीस  
 बत्तीमपञ्चया । सज्जोगिणि एक्के चेन ओरात्तियमित्तकमजोगपञ्चओ । सेत्तं सुगमं ।  
 मिच्छादृष्टि-सासणसम्मादिद्विषो दुगइसत्तुत्तं, असज्जदसम्मादिद्विषो देवगइसत्तुत्तं, सज्जोगिणि  
 भगइसत्तुत्तं बंधति । तिरिक्खा-मणुसगइमिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टि-असज्जदसम्मादिद्विषो  
 मणुसगइसज्जोगिणि सामी । बधदाण बधविणट्टहार्यं च सुगमं । सात्त्वेदणीयस्स बंधो  
 सम्बरप सदि-अदुबो, अदुवबंधितालो ।

मिच्छत्त-णउसयवेद तिरिक्खाउ मणुसाउ-चदुजादि हुइसठाण-  
 असयत्तसेवट्टसघडण-आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-  
 गामाण को बंधो को अवंधो ? ॥ १५० ॥

सुगम ।

मिच्छादृष्टी बधा । एदे बधा, अवसेसा अवधा ॥ १५१ ॥

एदस्स बन्धो बुच्चदे— बबोदयाणमेत्थ बोच्छेदो णत्थि, उवठंमादा । अथवा,

— —

बन्ध हाता है क्योंकि यहाँ प्रणिपत्त मरुतिके बन्धक अभाव है । मिथ्यादृष्टि सासादन  
 सम्मगदृष्टि और असयत्तसम्मगदृष्टि गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे तत्तालीस अङ्गीस और बत्तीस  
 प्रत्यय होते हैं । सयोगकेबत्ती गुणस्थानमें एक ही भौतिकमिथ्याज्ञापयाग प्रत्यय होता है ।  
 दोष प्रत्ययप्ररूपजा सुगम है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्मगदृष्टि दो पतिषोमे सयुक्त  
 अर्जयत्तसम्मगदृष्टि देवगतिसे संयुक्त और सयागी जिन भगवत्संयुक्त बांधत हैं ।  
 तियगति ब मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि, आमादनसम्मगदृष्टि और असयत्तसम्मगदृष्टि तथा  
 मनुष्यगतिक सयागी जिन स्वामी हैं । बन्धाध्यान और बन्धविनष्टस्थान सुगम है ।  
 सात्ता देवनीयक बन्ध सर्वत्र नास्ति च अभुज होता है क्योंकि, यह अभुजबन्धी है ।

मिथ्यात्व, नर्पुमकवेद, निर्धगायु, मनुष्यायु, चार जातियां, दुइमंस्थान, बर्धप्राप्त-  
 मृणाटिकर्मइदनन, आताप, स्वावर, सुम्म, अपयाप्त और आहारणसरीर नामकमक केन  
 बन्धक और केन अवंधक है ? ॥ १५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक है । ये बन्धक है, संप बबन्धक है ॥ १५१ ॥

इस सूत्रक मथ कहत है— बन्ध और उवठक यहाँ मनुष्यक नहीं है, क्योंकि,

मिच्छन्त-बहुभादि-बाह-सुहुम-अपञ्च-साधारणसरीराणमेव ऋषोदया समं बोधिष्मन्ना, न  
संसाधनं पयडीर्षं पुण्यं ऋषो पञ्च उदयो बोधिष्मन्ना । आदावस्त एव उदयो नृपि च ।  
मिच्छन्तस्स सोदयो ऋषो । आदावस्त एव उदयो, अपञ्चतन्त्रे आदावस्तुदयामावाधो । न  
सपदेद-तिरिक्त-मनुष्यात्-बहुभादि-हुंइसंस्थान-असंपत्तसेवद्वसपञ्च-बाह-सुहुम-अपञ्च-साध-  
रण्यं सोदय-उदयो ऋषो । मिच्छन्त-तिरिक्त-मनुष्यात्मानं ऋषो विरंतो । नृपसेषां  
संतो, एवमपणं नृपसुवर्तमाधो । पञ्चया सुगम । तिरिक्तात्-बहुभादि-आदाव-बाह-  
सुहुम-साधारण्यं तिरिक्तगदसंस्थो, मनुष्यात्मानं मनुष्यादसंस्थो, संसाधनं तिरिक्त-मनुष-  
यदसंस्थो ऋषो । हुंइमिच्छन्त-समी । ऋष्यां ऋषिपुत्रहृत्तं च सुगम । मिच्छन्त  
बहुविधो ऋषो, धुवचिच्छादा । सेमानं सादि-अदुवो ।

देवग-वेत्तव्यसरीर-वेत्तव्यसरीर-अगोवग-देवग-पाओ-गाण  
पुष्पी तित्थयरणामाण को ऋषो को अवधो ? १५२ ॥

सुगम ।

वे वेत्तों पाये जाते हैं । अथवा मिच्छन्त बाह आदिषां स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और  
साधारणघटीर, इनका बन्ध और उदय दोनों वहाँ साधनें व्युत्पिन्न होते हैं । शेष  
प्रकृतिपौंछ पूर्वमं बन्ध और पञ्चात् उदय व्युत्पिन्न होता है । आताप प्रकृति उदय वहाँ  
है ही नहीं । मिच्छन्त प्रकृति स्तोत्र बन्ध होता है । आतापका बन्ध परोक्ष होता है  
क्योंकि, अपर्याप्त काष्ठम आतापके उदयका अभाव है । नृपसकचेत् तिर्यगायु मनुष्यायु,  
आह आदिषां हुंइसंस्थान असंपत्तसुपादिकसंज्ञन स्थावर सूक्ष्म अपर्याप्त  
और साधारण इनका स्तोत्र परोक्ष बन्ध होता है । मिच्छन्त तिर्यगायु और मनुष्यायुका  
बन्ध निरन्तर होता है । शेष प्रकृतिपौंछ सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे  
इसका बन्धविग्रह पाया जाता है । अत्यथ सुगम है । तिर्यगायु आह आदिषां आताप  
स्थावर, सूक्ष्म और साधारण इनका तिर्यगायुसे संयुक्त मनुष्यायुका मनुष्यायुसे  
संयुक्त तथा शेष प्रकृतिपौंछ तिर्यगायु मनुष्यायुसे संयुक्त बन्ध होता है । तिर्य-  
क मनुष्य दो गतिपौंके मिच्छन्तहि न्यामी हैं । बन्धविग्रह और बन्धविग्रहस्थान सुगम  
है । मिच्छन्तका बन्ध आह प्रकृति होता है क्योंकि वह अचरणीय है । शेष प्रकृतिपौंछ  
बन्ध सादि च मनुष्य होता है ।

इवमिति, वैद्विकसरीर, वैद्विकसरीरागाणां, देवगतिप्रायोप्यस्तुपूर्वी और तिर्यक  
मामर्कका केन बन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ १५२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असजदसम्मादिद्वी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥१५३॥

एदस्सवो मुच्चदे — एत्थ वधो उदमो वा पुत्थं पन्था वा वोप्पिञ्जदि ति  
परिक्षा पत्ति, उदयामावाधो । णवरि तित्थपरस्स पुत्थ वधो पन्था उदमो वोप्पिञ्जदि ।  
एदमो पंध वि पयडीओ परोदण वत्थुत्ति, भोरात्तिपमित्थकययोगम्मि एदमिमुदमविरोहादो ।  
विर्तरो वधो, पडिवत्थपयडीण वधामावाधो । असजदसम्मादिद्विदि एदसि वधस्स  
वतीमुत्तरप चया, ओषपन्वएसु वारसजोगित्ति वत्तुसमवेदाणममावाधो । सेस सुगमं । चउण्हं  
पयडीमं तिरिक्ख-मणुमगह-असजदसम्मादिद्वी सामी । तित्थपरस्स मज्झसा वेव, तिरिक्खेसु  
उप्पज्जागं तत्पुप्पपिपायोगसम्मादिद्वीण तित्थपरस्स वधामावाधो । मइसज्जुत्तममणिय  
त्तिमिदि सामिधं परविरं ? ण, देवगहसज्जुत्त वत्थुत्ति ति अनुत्तसिद्धिदो । वधद्वानं  
वधविणद्विद्वानं च सुगमं । सादि-अदुवो वधो, अदुववविचादो ।

वेज्जियकायजोगीण देवगईए' भगो ॥ १५४ ॥

असंयतसम्पगद्वि वन्धक है । ये वन्धक हैं, रोप अकन्धक हैं ॥ १५३ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहाँ वन्ध व उदय पूर्वमे अथवा पश्चात् व्युत्पिञ्ज होता  
है यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहाँ उन प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । विशेष इतना  
है कि तीर्थंकर प्रकृतिका पूर्वमे वन्ध आर पश्चात् उदय व्युत्पिञ्ज होता है । ये पाँचों ही  
प्रकृतिपां पदव्यपसे वधनी है क्योंकि औदारिकमिधकाययोगमे इनके उदयका विरोध  
है । निरन्तर वन्ध इतना है क्योंकि इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका यहाँ अभाव  
है । असंयतसम्पगद्वि शुचस्थानमे इनके वन्धक नहींस उत्तर प्रत्यय है क्योंकि,  
ओषप्रत्ययमेसे बाह्य योग अस्ति और अपुंसकवेदका अभाव है । रोप प्रत्ययप्ररूपमा  
सुगम है । आर प्रकृतियोंके तीर्थंकर व अनुप्यगतिके असंयतसम्पगद्वि आर्मी है । तीर्थंकर  
प्रकृतिके अनुप्य ही सामी है क्योंकि, तीर्थंकरमे उत्पन्न हुए वहाँ उत्पत्तिके पोष्य  
सम्पगद्वियोंके तीर्थंकर प्रकृतिका वन्ध नहीं होता ।

शुद्ध—गतिसंयुक्तताको न कहकर स्वामित्यकी प्ररूपणा क्यों की गयी है ?

समाधान—कूटि अत्र प्रकृतियां देवगतिसे संयुक्त वधती है यह बिना कह  
ही सिद्ध है अतः गतिसंयोगकी प्ररूपणा नहीं की ।

वन्धाध्यान और वन्धविमलस्थान सुगम है । सादि व अमुच वन्ध होता है  
क्योंकि, वे अमुचवन्धी प्रकृतियां हैं ।

वैत्रियिकत्रययोगियोंकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५४ ॥

एदमप्यणामुच्यते देसामासिय, तणदण सुहृदयपरुवणा कीरे— पचपात्रवरीय-  
 चरंदसपात्रवीय माद्रमाद-चारमकमाय पुरिमवेद हस्म-रदि-जरीदि-सोग मय-दुगुष्ठा-मनुमग-  
 पचिदियजादि त्रैमलिय तेजा-कम्मइयमरीर-समचउरममंठण-ओराठियसरीरवगोवग वज्जिमह  
 मयइय-वज्जमचठक-मणुसाणुपुष्पी-अगुरुमलदुमचठक-यस्यविहयमाह-तसचउक-भिरपि  
 मुहामुह-सुमग-सुस्वर-आदेज्ज अयकिरि-अज्जमकिरि निमिणुष्वागोद-पचतराहयपयीओ एव  
 चउमु गुणदामेमु पंचपात्रोय्याजा । एव पुव्व वंओ उदयो वा वाच्छिमो ति विचरा वत्ति,  
 मनुमग-आराप्पियसरीर आराप्पियमरीरवगोवग-वज्जिमहयपइय मणुमग-मणुमगइयामाणु-  
 पुष्पी अज्जमगिणीयमुदयाभावादा मेसाणं पयणीमसुदयवोअेयमावो व ।

पंचपात्राकर्णीय चउदंसपात्रवीय-पचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वज्ज-गंच-र-  
 प-म-अगुरुमलदुम-उवपाद-परपादुस्मात्तय बादर-पञ्चय पतेयसरीर गिराकिर-मुहामुह-  
 विमिष-पंचतराहयणं साहयो वंओ, वेठमियकमयजोगमिह एवमि धुवेदयपइसपादो । अरि  
 सम्पामिच्छमिहं मोक्षं अण्णव उम्मायस्म सोदय-परोदयो वंओ, सरीरपञ्चवीय

यह अर्पणामुच्यते इत्यामर्शकं हि इत्यन्वित इत्यस्य सूचित अथर्षे प्रत्ययः कर्त  
 हि— पांच क्षान्तापरणीय एव क्षान्तापरणीय क्षान्ता च असन्ता चरणीय बाह्य क्वाप  
 पुदयवद हास्य रनि वरति हाक मय जुगुप्सा, मनुप्यगति पंचत्रिय जाति  
 बीहारिक, तैजस च च्छत्रव शरीर, समचतुस्त्रमम्याम बीहारिकशरीरांयायां वज्जम  
 मंहनन वपादिक चार, मनुप्यानुपुष्पी अगुरुमि धारिक चार, मद्रास्तिनिहापागति  
 वम आदिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्वर, आदेच यहावीर्णि  
 वपराक्षिर्णि निर्माण उक्चयाव चार पांच अमराय मरुतिचो यहा चार गुणस्थानामे  
 वज्जव चाम्य हि । यहा पूर्वमे वज्ज वा उच्य शुष्मिष्ठ हाता है यह विचार मही ह  
 कर्वाकि, मनुप्यगति बीहारिकशरीर बीहारिकशरीरांयायां वज्जममंहनन मनुप्यगति  
 मनुप्यगतिप्रापाणानुपुष्पी और अयराक्षिर्णि इनका उच्यामात्र तथा शाय मरुतिचोह  
 उच्यप्पुच्छइवा अमाय है ।

पांच क्षान्तापरणीय चार क्षान्तापरणीय पंचत्रिय जानि तैजस च वामय शरीर  
 वजं पाप रम कर्मा अगुदमय उपायान परपाण उच्यवाम वस बादर पचाज  
 प्रत्यक्षशरीर स्थिर अस्थिर शाय अशुभ निमाय और पांच अमराय इनका उपादय  
 वज्य हाता है कर्वाकि, वैमिषिकचायपागमं इनका अुपादय इत्या जाता है । निराय  
 इनका है कि सम्पामिच्छादीहका शावर मयव उच्यवामका उपादय पादय वज्य

पञ्चसप्तस्य भंतोमुद्गुत्तं गंतुष्य आयापापपठञ्जीए पञ्चसप्तस्यस्य तस्मात्सप्तोदयदसपादो ।  
 पितृ-पयत्न-सादासाद बारसकसाय-सप्तयोक्तसाय-समचतुरससंस्थान-पसत्पविहायगइ-सुभग-  
 सुस्तर मदेन्ज-जसक्तिवि भजसक्तिवि-उष्पागोद्वारं सोदय-परोद्वो पंथो, अमुद्गुत्तं पेरुएसु  
 उदयदसपादो । मनुसगइ ओगलियसरीरवगोवग-वज्जरिसहसपडण-मणुसगइपाभोग्गापुप्पीय  
 परोद्वो पंथो, वेठम्बियकयजोगम्मि एदासिमुदयविरोहादो ।

पंचपापारणीय-सहसपावरणीय-बारसकसाय-मय-दुगुत्त-ओगलिय-तेजा-कम्मइय  
 सरीर-वण-गंव-रस-कास-अगुरुवल्लुह-उवपाइ परपावुस्सास-बाइर-पञ्चस-पत्तेयसरीर-  
 विमिष-पंचतरइयापं भित्तरो वधो, एत्थ वृषपंचिछादो । सादासाइ-इस्स-उदि-अदि-सोग-  
 विराविरे-सुद्धसुद्ध-जसक्तिवि-जजसक्तिवीयं सतरो वधो, एगसमएण वल्लवरमदसपादो ।  
 पुरिसवेद-समचतुरससंस्थान-वज्जरिसहसपडण-पसत्पविहायगइ सुभग-सुस्तर-मदेन्ज-उष्पागोद्वारं  
 मिन्हाइडि-सासयसम्मादिहीसु सतरो वधो, पडिवक्खपयडिववसमवादो । सम्मामिन्हादिडि-  
 वसंभइसम्मादिहीसु भित्तरो, पडिवक्खपयडिववामावादो । पंचिदियआदि-ओगलियसरीर

होता है क्योंकि, शरीरपर्याप्तिते पर्याप्त हुए जीवके अन्तर्मुद्गुत्त जाकर आगमपापपर्याप्तिते  
 पर्याप्त होनेपर उष्पासका बन्ध देखा जाता है । सिद्धा प्रकटा जाता व असाता  
 वेदनीय बारह कपाय सात नोकपाय समचतुरससंस्थान प्रद्यस्तविहायोमति; सुभग,  
 सुस्तर, जादेय यशकीर्ति अयशकीर्ति और उष्पागोत्र इनका स्वोदय परोदय बन्ध  
 होता है क्योंकि, नाटिक्योर्मै अगुम प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । मनुष्यगति  
 औदारिकशरीरपंगोपांग-वज्जर्यमसंहमन और मनुष्यगतिप्रायेतपापुपूर्वीका परोदय बन्ध  
 होता है क्योंकि, वैदितिकहाययोममै इनके उदयका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह दर्शनावरणीय बारह कपाय भय पुगुत्ता औदारिक,  
 ऐकस व कर्मव शरीर, बर्ष गन्ध रस स्पर्श अगुरुत्तु उपपन्न परपात  
 उष्पास बारह, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध  
 होता है क्योंकि, यहाँ ये शुभबन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय हास्य, रति, भट्टि  
 शोक, स्थिर, अस्थिर शुभ अशुभ यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सन्तर बन्ध होता है,  
 क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधाय देखा जाता है । पुरुषवेद समचतुरससंस्थान  
 वज्जर्यमसंहमन प्रद्यस्तविहायोमति सुभग सुस्तर, जादेय और उष्पागोत्रका मिष्यादि  
 व सासत्तनसम्पगदि शुणस्यालोर्मै सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनकी प्रतिपक्ष  
 प्रकृतियोंका बन्ध सम्मव है । सम्पगिष्यादि और असयतसम्पगदि शुणस्यालोर्मै  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका समाप है । पंचेन्द्रिय  
 क. द. २८

एदमप्यथासुखं देसामासिष्य, तजदेज सुहृदमपस्वना करिदे— पंचमाचारणीय-  
 छंदसचारणीय सादास्माद-चारसकृत्साय पुरिमवेद इस्म-रदि-अरदि-सोग मय-दुग्धं मनुमग-  
 पंचिदियजादि जेतास्मि तेजा-कम्मइयसरीर-मम उतरममग्रज-ओसास्मिपरिअगोवंग बमरिसद  
 संपहण-अण्यथठक्क-मनुसाणुपुष्पी-अगुरुअनहुअचउक्क-अमस्यविहायगह-तमचठक्क-भिरिषि  
 सुहामुह-सुमग-सुस्सर-अप्पेअ-अमकिति अजसकिति भिमिपुष्वागोह-पंचतराज्यपयडीमो प्स्य  
 चहुमु गुणहाणेषु पंचपाजोगाओ । एस्य पुण्य पंचो उदओ वा वाप्पिअओ चि विचारं पत्ति,  
 मनुमगह-ओसास्मिसरीर आसास्मिसरीरभोगोवंग-अजसिमहर्षचहण मनुमगह-अनुमगइपाओम्मासु  
 पुष्पी अजसमिच्छीयमुदयामावाहो मेसाव पयडीपमुदयवाप्पेदामावाहो च ।

पंचमाचारणीय चउदसचारणीय-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मअमपरि-अण्य-गह-रम-  
 फस-अगुरुअनहुअ-उवपाह परादुस्सास-तस बादर-प-अत्त-पत्तेयसरीर विराधिर-सुहामुह-  
 विमिष-पंचतराज्यपय सोदओ पंचो, वेठभियकम्मजोगमिह प्स्यसि ध्रुवेइयतदसजाओ । जरी  
 सम्मामिच्छाहं मोक्ष अण्यत्त उस्सासस्य सोदय-परोदओ पंचो, सरीर-अरीय

यह भर्तृजासुख देशामर्शक है इसछंदिये इससे सुचित अधकी प्रकृति का कर्त  
 है— पांच ज्ञानावरणीय छह दर्शनावरणीय साता च असाता देवनीय बाह्य कर्माय  
 पुत्रपद इत्ये एति अरति शोक मय जुगुप्सा मनुष्यगति पंचन्द्रिय जाति  
 औदारिक, तेजस च कार्यय शरीर, समस्ततुल्यसंस्थान औदारिकशरीरयोगोपांग अजसम  
 संहनन वर्जितिक बार, मनुष्यानुपूर्वी अगुरुअनु आविक बार, प्रशस्तविहास्योपति  
 अस भाविक बार, स्विट, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमय सुस्वर, अत्येय पशुकीर्ति  
 अवशकीर्ति निर्माण कच्छगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतिपां यही बार शुभस्थानोर्मे  
 बन्धके पत्तय है । यही पूर्वमे बन्ध वा उन्ध खुपिच्छ होता है यह विचार नहीं है  
 क्योंकि, मनुष्यगति औदारिकशरीर, औदारिकशरीरयोगोपांग अजसमसंहनन मनुष्यगति  
 मनुष्यगतिप्रायोगानुपूर्वी और अवशकीर्ति इत्ये उदयामाव तथा शय प्रकृतिपंचे  
 उदयपुच्छेका समाप्त है ।

पांच ज्ञानावरणीय बार दर्शनावरणीय पंचन्द्रिय जाति तेजस च कार्यय शरीर,  
 बन्धे पाण्ड, रस स्थो अगुरुअनु कपमात परमात कच्छवास अस बन्ध, पर्वत  
 अत्यकशरीर, स्विट, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय इत्ये स्वोत्प  
 बन्ध होता है क्योंकि, औदारिकशरीरयोगोर्मे इत्ये जुबोदय वेला जाता है । विराय  
 इतमा है कि सम्मामिच्छाहंको छोड़कर अन्धक उच्छवासका स्वीदय परोदय बन्ध

सासपसम्मादिद्विष्टो तिरिक्ख मनुसगाइसंहुत्तं, सम्मामिच्छादिद्वि-असज्जसम्मादिद्विष्टो मनुसगाइसंहुत्तं वंषति ।

देव-प्रेरया सामी । वंषदाणं सुगम । वंषविणासो जल्लि । पंचजाजावरणीय छंदसजावरणीय-पारसकलाय मय-दुगुछ-तेजा-कम्मइय-वण्णचठकक-अगुरुअठहुअ-उवपाद-विमिअ-वंषतरायाणं मिच्छइद्विष्टि चठव्विहो वंषो । अण्णत्थ तिविहो, धुवपधित्तमावाहो । ऐससव्वपयणीओ सव्वत्थ सादि-अदुवाओ ।

बीजसिद्धितिय-अर्णताशुंषिचठकक-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगाइ-चठसज्ज-अठसज्ज-तिरिक्खगाइपाओगाशुपुत्थी-उज्जोअ अणसत्थविहामगाइ-दुमग-दुस्सर-अणदेज्ज-गीचागोदाणि वेहाजियपयणीओ । एदासु अर्णताशुवपिचठककस्स वंषोदया समं वोच्छिप्प्या, सासणम्मि तदुमयामावदसणादो । इत्थिवेद अणसरपविहामगाइ-दुमग-दुस्सर-अणदेज्ज-गीचागोदाणं पुत्थं वंषो पण्ण उदवो वोच्छिज्जदि, सासपसम्मादिद्वि-असज्जसम्मादिद्विष्टो वंषोदमवोच्छेददसणादो । अवसेसायं ऐसा परिक्खा जल्लि, उदयामावाहो ।

सब प्रकृतियोंको मिथ्याइदि य सासात्वनसम्पगइदि तिर्यगगति एयं मनुप्यगतिसे संयुक्त, एया सम्पगिमथ्याइदि भीर अमयतसम्पगइदि मनुप्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

ऐस बीर नारकी स्वामी हैं । पञ्चाध्याय सुगम है । बन्धविनाश है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय यह दर्शनावरणीय पारस कलाय मय दुगुछा तैलस व कर्मय छरीट, वर्णादिक बाद, अगुरुछु उपधान निर्माण भीर पांच अन्तरायका मिथ्याइदि गुणस्यात्ममें वारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्ध गुणस्यात्ममें उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, यहां इनक मुख बन्धका अभाव है । दोष सब प्रकृतियों सर्वत्र सादि य अन्धुव बन्धवाली हैं ।

स्थानपुच्छिअय अनस्तानुबन्धित्तुण्ण कीबेद तिपगायु तिर्यगगति पार संस्थान, पार संहनन तिर्यगगतिमायोग्यानुपूर्वी उद्योत अग्रशस्तविहायोगति बुमंग, दुस्सर, अनदेय भीर नीचगोत्र य द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं । इनमें अनस्तानुबन्धित्तुण्णका बन्ध भीर उदय होमो सायमें व्युत्तिष्ठ होने हैं क्योंकि सासात्वन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । कीबेद अग्रशस्तविहायोगति बुमंग दुस्सर अभावय भीर नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध भीर पञ्चाह उदय व्युत्तिष्ठ होता है क्योंकि, सासात्वनसम्पगइदि भीर असंयतसम्पगइदि गुणस्थानमें प्रमथा इनक बन्ध भीर उदयका व्युत्थेइ देखा जाता है । दोष प्रकृतियोंक यह परीक्षा नहीं है क्योंकि, उनका उदयभाव है ।



भंगोवंग-तसवामाणं मिच्छाद्विद्धि सांतर-विरतरो । कथं विरतरो ? न, भेरइएसु सपन्हु-  
मारादिदेवेसु च विरतरंभुवत्तमादो । सामभसम्मादिद्धि-सम्माभिच्छाद्विद्धि असंभदसम्मादिद्धि  
विरतरो, पडिवक्कपयडिबभामावादो । मणुसयइ मणुयगइपाभोगाणुपुष्पीय मिच्छाद्वि  
सासवसम्मादिद्धि सांतर विरतरो । कथं विरतरो ? न, आपदादिदेवेसु विरतरंभुवत्तमादो ।  
सम्माभिच्छाद्वि-असंभदसम्मादिद्धि विरतरो, पडिवक्कपयडिबभामावादो ।

मिच्छाद्वि एवमो पयडीभो तेदात्तीसपञ्चएदि, सासवो वड्ढीसपञ्चएदि,  
सम्माभिच्छाद्वि-असंभदसम्मादिद्धि चो चात्तीसपञ्चएदि वंधति, मूटोपपञ्चएसु वारसभोप  
पञ्चवामावादो । सेसं सुगमं ।

मणुसगइ-मणुसगइपाभोगाणुपुष्पी-उच्छागोडावि । मिच्छाद्वि-सासवसम्माद्वि-  
सम्माभिच्छाद्वि-असंभदसम्मादिद्धि मणुसगइसुसं । वरसेससम्भपयडीभो मिच्छाद्वि

जाति औदारिकपरीतोपोपांग और अस मानकमेक मिध्याद्वि गुणस्थानमें सत्तर  
निरन्तर बन्ध होता है ।

संक्ष-निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान-वहाँ क्योंकि नारकियों और सत्तरमादावि देवोंमें इनका निरन्तर  
बन्ध पाया जाता है ।

सासात्मसम्भगद्वि, सम्भमिध्याद्वि और असंयतसम्भगद्वि गुणस्थानोंमें  
निरन्तर बन्ध पाया जाता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिषोंके बन्धक्य अभाव है ।  
मनुष्यगति और मनुष्यगतिमायोगानुपूर्वीय मिध्याद्वि व सासात्मनसम्भगद्वि  
गुणस्थानोंमें सत्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

संक्ष-निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान-वहाँ क्योंकि मानतावि देवोंमें इनका निरन्तर बन्ध देखा  
जाता है ।

सम्भमिध्याद्वि और असंयतसम्भगद्वि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है  
क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिषोंके बन्धक्य अभाव है ।

मिध्याद्वि इन प्रकृतिषोंको तेदात्तीस प्रत्ययोंसे सासात्मसम्भगद्वि वड्ढीस  
प्रत्ययोंसे तथा सम्भमिध्याद्वि और असंयतसम्भगद्वि बीत्तीस प्रत्ययोंसे बांधते हैं।  
क्योंकि, मूटोप प्रत्ययोंमें बाण्ड सोम प्रत्ययोंका वहाँ अभाव है । शेष प्रत्ययरूपका  
सुगम है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिमायोगानुपूर्वी और वरुणगोत्रके मिध्याद्वि, सासात्म  
सम्भगद्वि, सम्भमिध्याद्वि और असंयतसम्भगद्वि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष

सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख मणुसगइसंहुत्त, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंहुत्तं पंचति ।

देव-पेरया सामी । पंचद्वारा सुगमं । पंचविणसो पारिषि । पंचपाणावरणीय छंदसपावरणीय-बारसकसाय मय-हुगुम्भ-तेजा-कम्मइय-वण्णचठक्क-अगुरुमत्तहुम-उवषाद-पिमिण-पंचतण्डयाणं मिच्छादिट्ठि चठप्पिहो षो । अण्णत्थ तिपिहो, धुवंपिच्छामावाहो । सेससप्पपयहीओ सण्णत्थ सादि अद्दुवाओ ।

धीमगिद्विप्पि-अणंताणुषविचठक्क-इत्थिपेद-तिरिक्खाठ-तिरिक्खगइ-चठसंजण-चठसचडण-तिरिक्खगइपाओग्गालुप्पुत्थी-उन्धोव अण्णसत्थविहायगइ-हुमग-दुस्सर-अपादेज्ज-णीचागोदापि वेट्ठापिपयहीओ । एदासु अणंताणुषविचठक्कस्स पंचोदया समं वोच्छिज्जा, सासणम्मि तद्दुमयामावेदसपाओ । इत्थिपेद अण्णसत्थविहायगइ-हुमग-दुस्सर-अपादेज्ज-णीचागोदापं पुवं पंचो पच्छ उदयो वोच्छिज्जवि, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिमु पंचोदयवोच्छदसपाओ । अवसेमाण पेसा परिक्खा पारिषि, उदयामावाहो ।

सब प्रकृतियोंके मिथ्याहृदि व साक्षात्तसम्बन्धहि तिथगति एवं मनुष्यगतसे संयुक्त, तथा सम्पत्तिसम्बन्धहि भीर असंयतसम्बन्धहि मनुष्यगतसे संयुक्त बांधते हैं ।

इस भीर मारकी स्वामी है । बन्धधाम्मा सुगम है । बन्धधाम्मा है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय छह वर्तमानावरणीय बारह कणाय मय हुगुम्भा तैजस व कम्मम शरीर, वर्णान्त्रिक बार, अगुरुम्भ उपपात निर्माण भीर पांच अन्तरापका मिथ्याहृदि गुणस्थानमें बारों प्रकटका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें उनका तीन प्रकटका बन्ध होता है क्योंकि, यहां इनका भुव बन्धका अभाव है । शेष सब प्रकृतियों सबका सादि व अणुय बन्धवासी है ।

स्थानगुहिरय अनन्तानुषण्णिकगुण्ण क्रीवेद तिर्यगायु, तिर्यगाति बार संस्थान बार संहनन तिर्यगतिमापाग्यानुपूर्णा उद्योत अमरास्त्वविहायोगति भुमंग पुस्वर, अनादय भीर नीचगोत्र ये द्विर्यामिक प्रकृतियां हैं । हममें अनन्तानुषण्णिकगुण्णका बन्ध भीर उदय दोनों मायमें व्युत्पिउत्त हाते हैं क्योंकि, साक्षात्त गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्वीय अमरास्त्वविहायोगति भुमंग पुस्वर अनादय भीर नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध भीर पद्मात् उदय व्युत्पिउत्त हाता है क्योंकि, साक्षात्तसम्बन्धहि भीर असंयतसम्बन्धहि गुणस्थानमें अमरा इसका बन्ध भीर उदयका व्युत्पिउत्त दया जाता है । शेष प्रकृतियोंक यह एतीक्षा नहीं है क्योंकि, उनका उदयामाव है ।

अर्धतानुर्ध्वपिषठकक इतिविवेद-अणसत्त्वविहायगद्-दुर्मग दुस्तर-अपानेन्द्र श्रीवा-  
गोदायं सेदय-परोक्षो बंधो, वेउज्विषकाययोगमि पडिवक्तुदयसपादो॥ अवसेसार्ध  
पयडीयं परोक्षो बंधो, तासिमेल्युदयविरोहादो । भीषगिदितिय-अर्धतानुर्ध्वपिषठक-  
तिरिक्छाठभार्ध भिर्तरो बंधो, एगसमएण यपुवरमावाको' । तिरिक्छगद्-तिरिक्छगद्  
शान्नेम्यानुपुष्पी-भीषागोशान् सतिर-भिर्तरो बंधो । कथं भिर्तरो ? न, सत्तमपुष्विनेरएसु  
भिर्तर्बपुबलेमादो । अवसेसार्ध पयडीयं बंधो सांतरो, एगसमएण यपुवरमससको ।  
पयवा सुगम । तिरिक्छाठ-तिरिक्छगद्-तिरिक्छगद्पाशोम्यानुपुष्पी-उज्जोवाभि तिरिक्छगद्  
संवृत्तं, सेससम्पयडीयो तिरिक्छ-मनुसगससंवृत्तं यंति । देव-भेरया समी । बंधयं  
बंधविषदृष्टयं च सुगम । सचण्डं पुनपयडीयं मिच्छादृष्टिहि चतन्विहो बंधो । सप्तमे  
दुविहो बंधो ।

मिच्छस-क्षुमयवद्-एदियवादि-कुंडमटण-असंपसेवेनदसंयव-मादाव-वाक्-  
वयडीयो मिच्छादृष्टिपा बन्धमाधियाधो । एतन् मिच्छसस बंधोदवा सत्तं बोधियति,

अमन्तानुबन्धितुष्क उर्विहो अमन्तानुबन्धितुष्कायोगाति दुर्मग दुस्तर, अमन्तानु बौर  
नीलगोवका स्वेदय परोक्ष बन्ध होता है, क्योंकि, वैकल्पिककाययोगमें इनकी प्रतिपत्त  
प्रकृतिपौंछ उदय देखा जाता है । सेव प्रकृतिपौंछ परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि वहां  
उनका उदयका विचार है । एवावपुष्टिय अमन्तानुबन्धितुष्क और तिर्यगानुष्क  
निरन्तरबन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधायक अभाव है । तिर्यगति  
तिर्यगतिमायापानुपूर्वी और नीलगात्रका सात्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

संक्षेप—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान —यह शंका हीन नहीं क्योंकि, सत्तम पूर्विकि मारकियेमें उनका निरन्तर  
बन्ध पाया जाता है ।

सेव प्रकृतिपौंछ बन्ध सात्तर होता है क्योंकि, एक समयसे उनका बन्ध  
विधाय देखा जाता है । मत्तय सुगम है । तियगायु तिर्यगति तिर्यगतिमायापानुपूर्वी  
और उचोत्तका तिर्यगतिसे संयुक्त तथा दाप सब प्रकृतिपौंछो तियगति च मनुष्यमतिसे  
संयुक्त बांधते हैं । दय न मारकी स्थामी हैं । बन्धाध्याय आर बन्धविषदृष्टया सुगम हैं ।  
शान् एवप्रकृतिपौंछ मिच्छादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सात्तावनमें  
दो प्रकारका बन्ध होता है ।

मिच्छाव नुसंयवद् एवमिच्छावति दुष्टसंस्थान असेमात्तद्व्यादृष्ट्यासंस्थान  
आताव और स्थावर च मिच्छादृष्टक द्वारा बन्धमान प्रकृतिपौं हैं । वहां मिच्छावका  
बन्ध और दय दानो मिच्छादृष्टि गुणस्थानमें साथ ही व्युत्पिष्ठ होते हैं क्योंकि, उपरिम

उपरिमणुषेसु तदुभयापुवत्तयादौ । जनुंसमवेद-हुंडसंज्ञाणां पुर्वं बंधो-पञ्च उदभो  
 वोच्छिन्नदि, मिच्छादृष्टि-असंजदसम्मादिद्वीसु तदुभयामावदसणादौ । सेसासु एवो विचारो  
 प्रत्यय, उदयामावादौ । मिच्छत्तस्स सोदपण, जनुंसयवेद-हुंडसंज्ञाणां सोदय-परोदभो,  
 अवसेसाण परोदभो बंधो । मिच्छत्तस्स बंधो निगतो, अवसेसाण सतिरो । पञ्चमा सुगमा ।  
 प्रवरि पुरदियवादि-आदाव-वावराण जनुंसयवेदपञ्चमो अवसेदभ्यो, येरूपसु पदासि  
 बंधामावादौ । मिच्छत्त-जनुंसयवेद-हुंडसंज्ञा-असंपत्तसेवदसचडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंज्ञत्तं,  
 अवसेसामो पयडीमो तिरिक्खगइसंज्ञत्तं बन्धति । पुरदियवादि-आदाव-वावराण बंधत्त  
 देवा सामी, अवसेसाण बंधत्त देव-येरुया सामी । बंधत्तार्थं जपविजइहत्तं न सुगमं ।  
 मिच्छत्तस्स चउप्पिहो-बंधो, अवसेसाणं सादि-अदुवो ।

मणुसाउभस्स बंधो उदयादौ पुर्वं पञ्च वा वोच्छिन्नदि विषयि [विचारो], संता-  
 संताणं सज्जियासविरोहादौ । परोदभा बंधो, वेउप्पियकयजोगमि मणुसाउभस्स उदयविरोहादौ ।  
 निगतो बंधो, जगसमपणं जनुंवरमामावादौ । मिच्छादृष्टि-सामुजसम्मादृष्टि-असंजदसम्मादिद्वीपं

गुणस्वाम्योर्मे व बन्धो पावे नहीं जाते । जनुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका पूर्वमें बन्ध और  
 पञ्चात् उदय व्युत्पिष्ठ होता है क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असंपत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्वाम्योर्मे  
 कमसे उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । दोष प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है क्योंकि,  
 उनका उदयामाव है । मिथ्यात्वका स्वीकृतसे जनुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका स्वीकृत  
 परोदयसे तथा दोष प्रकृतियोंका परजयसे बन्ध होता है । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर  
 और दोष प्रकृतियोंका सान्तर होता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि एकमित्र  
 जाति आताप और स्वावरक प्रत्ययोंमें जनुंसकवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये क्योंकि,  
 नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है । मिथ्यात्व जनुंसकवेद हुण्डसंस्थान और  
 असंपत्तसुपातिजसहनन विषयगति व मनुष्यगतिस जनुष्ठ; तथा 'दोष प्रकृतियों  
 तिर्यगगतिस जनुष्ठ' ज्येष्ठा है । एकमित्रजाति आताप और स्वावरक बन्धकभेद स्वामी  
 है । दोष प्रकृतियोंके बन्धके दोष व नारकी स्वामी है । बन्धाप्यान और बन्धयिनप्रस्थान  
 सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध आद्यं प्रकटरका तथा 'दोष प्रकृतियोंका सादि व मणुस  
 हस्ता' है ।

मनुष्यापुका बन्ध उदयसे पूर्व या पञ्चात् व्युत्पिष्ठ होता है यह विचार यहां नहीं  
 है क्योंकि सत् (बन्ध) और असत् (उदय) की मुद्राका विरोध है । यादव्य बन्ध होता है  
 क्योंकि वैकल्पिकवापयोगमें मनुष्यापुके उदयका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
 एक समयसे इसका बन्धविभाजका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, सात्त्विकसम्यग्दृष्टि और असंपत्त

तेदानीं—अहोस—चोटीसपञ्चया । मनुसगइसंस्तुतं । देव—भेरया सामी । अद्यां  
मिष्यदिदि—सासजसम्मादिदि—असजदसम्मादिदि ति । अविनासो णत्थि । सादि अद्यो णो ।

तिरपपरस्स णोइयवोप्पेइसण्णियासो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोइओ ।  
परोइओ णो, मनुसगइ मोतूषण्णयुवयाभावादो । विरंतरो णो, एगसमएअ वपुअरमाभावादो ।  
पण्णया सुगमा । मनुसगइसंस्तुतं । देव—भेरया सामी । असजदसम्मादिदि अद्यां । अविनासो  
णत्थि । सादि अद्यो णो ।

वेत्थ्वियमिस्सकायजोगीणं देवगहमगो' ॥ १५५ ॥

एदस्स देसम्मासियवण्णयासुत्तस्स अरवो तुप्पदे । तं जहा—पञ्चानावरणीय-  
असंज्ञावरणीय—सादसाद—असकसाय—पुरिसवेद—इस्स—रदि—अरदि—सोग—मय—दुग्गं—मनुसगइ—  
पंचिदियजादि—भोरुडिय—तेजा—कम्मइयसरि—समभतरससंस्तुतं—भोरुडियसरिअगोणी—व—  
रिसइसंभट्ठण—वण्णपठक—मनुसगइपुप्पि—अगुरुकळुअ—उपपाद—अपादुस्सास—अस्सविहमगइ

सम्प्राप्तिके क्रमसे तेदानीं अहोस व चोटीस पञ्चप हाते हैं । मनुष्यगतिसे संतुष्ट  
बन्ध होता है । देव व मारकी स्वामी है । वण्णाप्पान मिष्यादिदि, सासाजसम्प्राप्तिके व  
असंज्ञावरणीय व है । वण्णविनास है नहीं । सादि व अद्युव बन्ध होता है ।

तीर्थंकरप्रकृतिके बन्ध व उदयके मनुकेवकी सदृशाता नहीं है क्योंकि, सत् और  
असत्की तुलनाका विरोध है । परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि मनुष्यगतिको छोड़कर  
दूसरी अपह तीर्थंकरप्रकृतिके उदयका अभाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक  
समयसे उसके बन्धविग्रामका अभाव है । पञ्चप सुगम है । मनुष्यगतिसे संतुष्ट बन्ध  
होता है । देव व मारकी स्वामी है । वण्णाप्पान असंज्ञावरणीय व है । वण्ण  
विनास है नहीं । सादि व अद्युव बन्ध होता है ।

वैकिप्पिमिअकययोगिणीं प्रकृपणा देवगतिके समान है ॥ १५५ ॥

इस देशमशक सर्वजासुखका अर्थ करता है । यह इस प्रकार है— पाँच  
जातिवरणीय छह दशातिवरणीय भाता व असाता वैश्वीय बाह्य कयत्त पुरपवेव  
हास्य एति मण्ठि शोक, मय जुगुप्सा मनुष्यगति पंचमिष्यजाति बीभारिक, तेजस व  
कर्माव शरीर, समभतरससंस्तुतं बीभारिकशरीरतापांश वअरमसंस्तुतं अर्थात्  
आर, मनुष्यानुपूर्वी, अगुरुकळु, उपपात परपात अण्णवास अनास्तविहायोगति अ

१ अ-अहोसो देवत्व गोत्रे इति वाङ् ।

२ अहोस इति वाङ् ।

३ अहोस भोरुडियसरि भोरुडियसरिगोत्रे इति वाङ् ।

तस बादर-पञ्चत्-पतेयसरीर-भिराभिर-मुगासुम-सुमग सुस्तर-आवेञ्ज-असक्ति-असक्ति-  
मिमिण उच्चागोद पंचतराङ्गपयहीभो तीहि गुणहोपेहि वन्ममाभियाओ हविष परुवण  
कीरदे— बंधोदय-योन्मेभुमिचारो पत्थि, बंधेणुदपणुमणहि वा विरहिदगुणहोपयमुवरि  
अनुवलेभादो ।

पंचपापारणीय चतुर्दशपापारणीय-पंचिदियजादि-तेजा-कम्महयसरीर-वण्ण-यंघ-रस-  
फस अगुस्वत्तुव उक्कपाव-तस बादर-पञ्चत् पतेयसरीर भिराभिर मुगासुह निमिज-पंचतराङ्गयान्  
सोदभो ववो, एत्थ पुवोदयत्तादो । मिहा-पयत्त-सादासाद-बारसकसाय-अणोफसाय-पुरिसवेदाय  
बंधो सोदय-परोदभो, उभयया वि नचविरोहामावादो । समचतरासंछाप-सुमगादेञ्ज  
असक्ति-उच्चागोदाय बंधो मिच्छाद्वि असजदसम्मादिहीसु सोदय-परोदभो । सासमे  
सोदभो, अपञ्चत्ताद पेरएसु सासपापममावादो । मनुसगइ बोरात्थिसरीर-ओरात्थिसरीर-  
अंगोवग-वञ्जरिसइसंघण-मनुसापुण्ण-परपाडुत्तास-पसत्थविहायगइ-सुस्तरां परोदभो  
बंधो, एत्थ एदास्सिदयविरोहादो । अजसकिपीए मिच्छाद्वि-असजदसम्मादिहीसु सोदय

बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्वर, आवेय  
पशकीर्ति अयशकीर्ति निर्माण उच्छ्वगोच और पांच अन्तराय इन तीन गुणस्थानकर्त्ता  
वैदित्तिकव्यवधानियोंके द्वारा वध्यमान प्रकृतियोंको स्थापित कर प्रकृषया करते हैं— इनके  
वध्य व उद्भवके प्युच्छेदका पिच्छाट यहां नहीं है क्योंकि वध्य उद्भव या दोनोंसे पहिल  
गुणस्थान ऊपर पाये नहीं जाते ।

पांच ज्ञानावरणीय चार वर्णनावरणीय पंचन्दिजजाति वैजस व कर्मज शरीर,  
वर्ष गन्ध रस स्पर्श अगुस्वत्तु उपघात नख बादर पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर,  
अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय इनका स्वरूप वध्य होता है क्योंकि,  
यहां ये भुवोद्भूति हैं । निद्रा प्रवृत्ता साता व असाना वेदनीय बारह कयाय छह  
लोकायाय और पुरुषवेदका वध्य स्वरूप परोदय होता है क्योंकि, दोनों प्रकृतेय मी  
इमके वध्यविरोधका अभाव है । समचतरासंछस्याग सुमग आवेय पशकीर्ति और  
उच्छ्वगोचका वध्य मिच्छाद्वि और असंघतसम्पगद्वि गुणस्थानोंमें स्वरूप परोदय  
होता है । सासाद्वगुणस्थानमें स्वादय वध्य होता है क्योंकि, अपर्याप्तकासमें  
भारकियोंमें सासाद्वगुणस्थानका अभाव है । मनुष्यगति औदारिकशरीर, औदारिक  
शरीरगोपोग अजर्यममहनन मनुष्यानुपूर्वी परघात उच्छ्वास मशस्तविहायोगति  
और सुस्वरका परोदय वध्य होता है क्योंकि, यहां इमके उद्भवका विरोध है । अयश  
कीर्तिक मिच्छाद्वि और असंघतसम्पगद्वि गुणस्थानोंमें स्वरूप परोदय वध्य होता

तेरावीस-बड़सीस-चौतीसपञ्चया । मनुसगइसुवर्त । देव-भेरइया सामी । बड़ाव  
मिप्पदिहि-सासवसम्मादिहि-असंजइसम्मादिहि चि । नृपविणासो जत्थि । सादि मद्दुवो नृपो ।

वित्थयरत्त नृपोइयबोप्पेइसणियासो जत्थि, सुतासंताणं सण्णियासविरोहाओ ।  
परोदओ नृपो, मनुसगइ मोत्तुपण्णत्तुइयाभावाओ । पिरंतरो नृपो, पयसमयण वधुवरमामावाओ ।  
पञ्चया सुयमा । मनुसगइसुवर्त । देव-भेरइया सामी । असंजइसम्मादिही बड़ाव । नृपविप्पे  
जत्थि । सादि मद्दुवो नृपो ।

वेत्थवियमिस्सकायजोगीण देवगइभगो' ॥ १५५ ॥

एदत्त देसत्थवियनृपकायुत्तत्त अरपो पुप्पदे । तं जहा-पंचनाबारणीय  
असंजपवरणीय-सात्तासा-बारसकवाय-पुरिसवेद-इत्त-उदि-अरदि-सोग-मय-दुग्ग-मनुसगइ-  
पंचिदियवादि-भोरत्थिय-तेजा-कम्मइयसरी-समचउरत्तअअ-भोरत्थियसरीअंगोवर्ग-वन्न-  
रिसइसंजइ-अण्णवठक-मनुसगइपुप्पि-अगुत्तत्तुव-उवपाव परपाहुत्तास-पत्तविहायगइ

सम्मादिहि के कमसे तेरावीस बड़सीस व चौतीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त  
बन्ध होता है । देव व नारकी स्वामी है । बन्धाप्यान मिप्पादिहि, सासवससम्मादि व  
असंजतसम्मादि ठक है । बन्धविनाश है नहीं । साधि व अणुव बन्ध होता है ।

तीर्थंकरप्रकृतिके बन्ध व उदधक पुक्कडेवकी सहजाता नहीं है क्योंकि, सत् और  
असत्की तुकनाका विरोध है । परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि मनुष्यगतिको छड़कर  
इसरी जगह तीर्थंकरप्रकृतिके उदधक समाज है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक  
समयसे इसके बन्धविधामक समाज है । प्रत्यय सुगम हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध  
होता है । देव व नारकी स्वामी हैं । बन्धाप्यान असंजतसम्मादि गुणस्थान है । बन्ध  
विनाश है नहीं । साधि व अणुव बन्ध होता है ।

वैम्वियकमिमकययोमिपोंकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५५ ॥

इस देशामर्शक अर्पणास्तुतक अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— पांच  
हत्तावरणीय छह इर्धनावरणीय आता व असाता वैवर्णीय बारह कपाय पुरुषवेद  
हास्य एहि अरुति शोक, मय सुगुप्ता मनुष्यगति पंचेन्द्रियजाति बीबारिक, तीव्र व  
कर्मय छाटीर, समचतुरत्तसंस्थान बीबारिकछाटीरोंपांग वरुपमसंहमन बर्णविक  
बार, मनुष्यानुपूर्वी अगुत्तत्तु, उवपाव परमात उक्कवास महास्त्वविहायगति अस

१ अ अरुति देवर्णय मेरो इति वाक्य ।

२ अरुति इत्युक्त इति वाक्य ।

३ इति भोरत्थियसरी भोरत्थियसरीयोर्व इति वाक्य ।

तस बादर-पञ्चत-पत्तयसरीर-विश्वविर-सुमासुम-सुमग सुस्सर-आदेन्म-जसकिरि-असकिरि-  
जिमिष-ठन्वागोद-पंचतराइयपयदीभो तीहि गुणद्वणेहि बन्धमागियाओ दृविष परबण  
कीरदे— बघोदय-बोन्धेइविचारो पावि, बघेणुदणुमपहि वा विरहिइगुणद्वानाणमुविरि  
अणुवठमादो ।

पंचपाणवर्णीय-बठमसुणावर्णीय-पचिदियवादि-तेवा-कम्मइयसरीर-वण-गंध-रस-  
फाम बगुनलहुव उवपाइ-तस बादर-पञ्चत-पत्तयसरीर-विश्वविर-सुमासुम-जिमिष-पंचतराइपाण  
सोदभो बघो, एत्थ पुवोदयत्तादो । विश-पयत्त-सादासाद-वारसकसाय-अभोक्साय-पुरिमवदार्ण  
बघो सोदय-परोदभो, उमयया वि बचविरिहामावादो । समबउरससंयण-सुमगादेन्म  
जसकिरि-उन्वागोदार्ण बघो मिच्छाइहि असंजदसम्मादिद्रीसु सोदय-परोदभो । सासपे  
सोदभो, अपञ्चतद्वाप गेरइएमु सासणाणममावादो । मणुमगाइ बोसालियसरीर-बोसालियसरीर-  
अगोबग-वन्धरिसइसंघइण-मणुमगाणुपुवि-परपादुस्साय-पसपविहायगइ-सुस्सरण परोदभो  
बघो, एत्थ पदासिमुदयविराहादो । अबसकिरिप मिच्छाइहि-असंजदसम्मादिद्रीसु सोदय

बादर, पपाव प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर शुभ अशुभ सुमग सुस्सर, आदेय  
पराकीर्ति अयशकीर्ति निमाण उच्छवाज कीर पांच अन्तराय इन छान गुणस्थानबर्ती  
वैदिकिकक्रमपात्रियोंके छान वच्यमान प्रकृतियोंके स्थापित कर प्रकल्पना करते हैं— इनके  
बन्ध व उदयके म्युच्छेदका विचार यहाँ नहीं है क्योंकि बन्ध उदय वा क्षान्ति रहित  
गुणस्थान ऊपर पाये नहीं जात ।

पांच ज्ञानापरजीय बार ब्रह्मानाकर्णीय पंचमिषजाति कैलम व कामय शरीर,  
बघ मग्य रस स्वभा अगुनलहु, उपपाण बस बादर, पपाव प्रत्येकशरीर, स्थिर,  
अस्थिर, शुभ अशुभ निमाण बार पांच अन्तराय इनका स्वाक्ष्य बन्ध होता है क्योंकि,  
यहाँ वे प्रकाशी हैं । मित्रा प्रकला, खला व अमला येवनीय बारह कयाय छह  
भाक्याय बीन पुरुषवेदका बन्ध स्वीक्ष्य परोक्ष्य होता है क्योंकि, क्षान्ति प्रकाशे भी  
इनक बन्धविरोधका अभाव है । समबउरससंयण सुमग आदेय पराकीर्ति बीन  
उच्छवोबन्ध बन्ध मिच्छाइहि बीन अमंयतसम्पगहि गुणस्थानमें स्वीक्ष्य परोक्ष्य  
होता है । सामाव्म गुणस्थानमें स्वीक्ष्य बन्ध होता है क्योंकि, अपपावकाममें  
भाकियोंमें सामाव्म गुणस्थानका अभाव है । मनुष्यमणि बीदतिकशरीर, बीदतिक  
शरीरसंगार्पाण कर्करमसहनन मनुष्याजुर्ही परपाण उच्छवाज प्रशमविहायोगति  
बीन सुस्सरका पराक्ष्य बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनक उदयका विचार है । अपदा  
कीर्तिका मिच्छाइहि बीन असंयतसम्पगहि गुणस्थानमें स्वीक्ष्य पराक्ष्य बन्ध होता



परोक्षो। सप्तमे परोक्षो, देवगदीए तिस्रे उदयायावादे।

पंचपात्रावरणीय छंदसंपात्रावरणीय बारसकसाय मय दुर्गुळा जोरातिथि तेजा कम्माइवसति  
बन्ध-गंध-रस-फास-अगुरुमल्लुख-उषपाद-परपावुस्सास-वाहर-पञ्चस-पत्तेयसरीर-मिन्न-  
पंचतण्ड्याय विरतो बंधो, एतय धुवधविद्यादे। सादासाय-हस्स-रदि-[जरदि] सोग-मिन्न-  
सुदासुह-वसक्ति-वसक्ति-संतो बंधो, एगसमण बंधुवरमदसनादे। पुरिसवेद-समवत  
रससंयम वञ्जरिसहसंपदन-पसत्पविहायगह-सुमग-सुस्वर जादेज्जुष्णासोदाय मिष्कइहि  
सासवसम्मादिहीसु बंधो सांतो। अंसवसम्मादिहीसु विरतो, पडिवकसपयहीय बंधा-  
वादादे। पंचिदियवादि जोरातिथिसरीर-मंगोबंम-ससपायाय मिष्कइहि-सांत-विरतो।  
कंधे विरतो? न, सनककुमारदिदेवेसु नेरएसु न विरतारबंधुवतंभादे। सासवसम्मादिही-  
अंसवसम्मादिहीसु विरतो, पडिवकसपयहीय बंधामवादे। मनुसमइ-मनुसपुष्पी

हैं। सासवस गुणस्थानमें परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि देवगतिमें उक्त बंधका  
अभाव है।

पांच-हामावरणीय छंद-वशावरणीय बारह कथाय मय दुर्गुष्ठा जोरातिथि,  
सैवस बन्धमय शरीर, बंधे गन्ध रस, स्पर्श अगुरुमल्लु, उषपात पदपात उच्छ्वस-  
वाहर पर्वोष्ठ मलेकशरीर, मिर्मान और पांच अन्तःपात इनका विरलत बन्ध होता है,  
क्योंकि, यहाँ ये प्रत्यक्ष हैं। साता व असाता देवजीय हास्य एति; [जरति] योक्-स्विन्द-  
मस्थिर, शुभ मशुम वशाकीर्ति और अयशाकीर्तिक्र सावत बन्ध होता है क्योंकि, एक  
समयसे इनका बन्धविग्राम हुआ जाता है। पुढरवेद समवतुरसंसंस्याय पञ्चम-  
संहवन प्रयासविहायोगति शुभग सुस्वर, आरेम और उच्छ्वस इनका मिष्कइहि  
और सासवसम्मादिही गुणस्थानोंमें सावत बन्ध होता है। अंसवतसम्मादिहीमें  
विरलत बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिपौके बन्धका अभाव है। पंचेन्द्र  
जाति बीजरीकशरीर-गोपांग और बंध नामकर्मका मिष्कइहि गुणस्थानमें सावत  
विरलत बन्ध होता है।

शुद्ध—विरलत बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यहाँ क्योंकि सनककुमारदि देवी और नारदियोंमें उनका विरलत  
बन्ध पाया जाता है।

सासवसम्मादिही और अंसवतसम्मादिही गुणस्थानोंमें विरलत बन्ध होता है  
क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिपौके बन्धका अभाव है। मनुष्यगति और मनुष्यगति



वंपद्याय सुगमं । वंपयोच्छेदो जसि । वंपेण पुवपयडीण' मिच्छाद्विदिहि चउत्तिदा वंप ।  
अण्णस्य तिविदो, धुवायायात्त । मेमाण पयडीणं वंपा मादि अदुवो, भदुपवंपिदा ।

वीणागित्तिय-अण्णतानुवंपिचउत्तिद्विद-निग्गिगुग-चउत्तयण चउत्तयण-  
तिरिक्खगइयाभोम्यापुपुप्पि-उत्तयण-अण्णमग्गविहायागइ-दुमग-दुम्मर-अण्णग्ग वीणाग्गस्य  
परुवया करिदे—अण्णतानुवंपिचउत्तिद्विदयाण वंपादया मम वाच्छिअनि सामणग्गुपइत्त, व  
अण्णस्य; मिच्छाद्विदिहि तद्विपुत्तमादो । दुमग-अण्णदे-व-वीणागादाय पुप्पं वपो पग्ग  
उद्वो वोच्छिअदि, उव्वरिमज्जसंजदमम्यादिद्विगुणम्मि वंपेण यिणा उत्तयम्मव इमजादा ।  
अवसेसण्णमेमो विचारो जसि, वंपस्मेरुम्मवुवत्तमात्त ।

अण्णतानुवंपिचउत्तिद्विदयाण वंपा माग्ग-परोद्वो, उमययारि अविउद्वदा ।  
दुमग-अण्णदे-व-वीणागेदाणे मिच्छाद्विदिहि मोद्व-परोद्वदा । मामण पराद्वो, जग्गसु  
अण्णवत्तदाय तद्वमावादा । सेमसात्तययडीओ पराद्वणव वच्चनि, तामिमेत्तुद्वविउद्वदा ।

प्याय सुगमं है । अण्णनुच्छेद नहीं है । अण्णस्य पुवपयडीयाका मिच्छाद्विदि गुणस्थानमें  
चारों प्रकारका वण्य होता है । अण्णस्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वण्य होता है क्योंकि  
वहाँ पुव वण्यका समाप है । दाव प्रकृतियोंका वण्य खादि व अण्ण होता है क्योंकि वे  
अण्णवन्ती हैं ।

स्वप्नपुच्छिअय अण्णतानुवंपिचउत्त, वंपिद्वि तियग्गति चार संस्थाव चार  
संहमर तियग्गतिमायाप्यानुत्तरी उद्याल अण्णस्यविहायागति दुमग दुप्पद, अणादय  
और नीचपोवकी प्रकृपा करने हैं—अण्णतानुवंपिचउत्त और तद्विदका वण्य व उद्व  
होनों सासत्त गुणस्थानमें माय धुप्पिउत्त हात है अण्ण वहाँ क्योंकि मिच्छाद्विदि  
गुणस्थानमें उनसे विच्छेदका समाप है । दुमग अणादय और नीचगावका पूर्वमें वण्य और  
प्याय उद्व धुप्पिउत्त होता है क्योंकि उपरिम अण्णवत्तययद्विदि गुणस्थानमें वण्यका बिना  
केवल उद्व ही होता जाता है । दाव प्रकृतियोंका यह विचार नहीं है क्योंकि उनका  
केवल एक वण्य ही वहाँ पाया जाता है ।

अण्णतानुवंपिचउत्त और तद्विदका वण्य स्वादय परादय होता है क्योंकि  
होनों ही प्रकारसे कोई विरोध नहीं है । उमय अणादय और नीचगोवना मिच्छाद्विदि  
गुणस्थानमें स्पेक्ष परादय वण्य होता है । सासत्त गुणस्थानमें परादय वण्य होता है  
क्योंकि नाद्विधोंमें अण्णवत्तकावमें सासत्त गुणस्थानका समाप है । दोय सेत्तव  
प्रकृतियों पराद्वच ही वंपती है क्योंकि, वहाँ उमय उद्वका विरोध है ।

भीष्मगिदितिय-अणताणुवधिचउक्कण पिंरंतरो वधो, धुवबंधितादो । इत्थिवेद  
चउसअण-चउसअण उज्जेव अपसरसविहमगइ-दुमग-दुस्सर अणदेच्चाणं सांतरो वधो,  
पडिवक्खपयडिबंधदसगादो । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाभोगाणुपुम्भि-भीषागोइअ मिच्छा-  
इद्विहि सांतर-पिरंतरो । कंध पिंरंतरो ? सत्तमपुडविणेरएसु पिंरंतरवधुवठमादो । सासणे  
सांतरो, अपअउद्धाए सत्तमपुडविद्विषसासणाणुवठमादो ।

पवया सुगमा । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोगाणुपुम्भी-उज्जेव्याणि तिरिक्खगइसंद्धं,  
अवसेसाभो तिरिक्ख-मणुस्सगइसंद्धं वंधति । मिच्छाद्विदेव-भेरइया, सासमा देवा सामी ।  
वधद्धाण वधवियद्वद्धाण च सुगम । सत्तह धुववधपयडिअ मिच्छाद्विहि वधो चउविहो ।  
सामणे दुविहो, मणादि-धुगामावादो । सेसाण सम्परस सादि अदुवो ।

मिच्छ-गउसपवेद-एइदियआदि-हुंइसअण-असंपत्तसेवइसंधण-आदाव-वावरणं  
परुवणं कत्तसमो— मिच्छतरसु वंधेदया समं वोष्ठिण्णा, उवरि तदुमयाणुवठमादो । मधुंसप-

स्थानएद्विअय भीर अणत्ताणुवधिचउक्कण निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वे  
धुववन्धी हैं । त्विदेव आर संस्थान आर संहनन उघात अग्रस्तविहायोगति दुर्जग  
कुस्वर भीर अणत्तयका अन्तर बन्ध होता है क्योंकि इनकी प्रतिपत्त प्रकृतिपौका बन्ध  
देखा जाता है । निर्यगति तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी भीर नीचगोचका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें  
साम्प्र निरन्तर बन्ध होता है ।

क्षेत्र—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सत्तम पृथिवीके मारुकिपौके निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासाधन गुणस्थानमें साम्प्र बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकालमें सत्तम  
पृथिवीस्य सासाधनसम्पदद्वि मारुकिपौका अमाय है ।

प्रत्यय सुगम हैं । निर्यगति तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी भीर उघोतके तिर्यगतिसे  
संपुच्छ तथा दोष प्रकृतिपौके निर्यगति व अनुपपत्तिसे संपुच्छ पायते हैं । मिथ्यादृष्टि  
देव व मारुकी तथा सासाधनसम्पदद्वि व वन्धी हैं । बन्धास्थान भीर बन्धविमलस्थान  
सुगम है । सात धुववन्धी मरानपौका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें आर प्रच्छरका बन्ध होता  
है । सासाधन गुणस्थानमें वो प्रच्छरका बन्ध होता है क्योंकि वहाँ अमादि व धुव  
बन्धका अमाय है । दोष प्रकृतिपौका सत्य सादि व मल्ल बन्ध होता है ।

मिथ्यास्य मधुंसकबन्ध एकेन्द्रियमाति इण्डसंस्थान अर्धमासधुपादिकसंहनन  
माताप भीर व्यावर प्रकृतिपौकी प्ररूपणा करत हैं— मिथ्यास्यका बन्ध भीर वधु वन्धी  
[मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें] साय ही स्पुष्टिअ हात हैं, क्योंकि, मिथ्यास्य गुणस्थानसे ऊपर



वेद-हुंहरसंज्ञानां पुण्यं बंधो पञ्चम उद्वजो बोधिसिद्धिदि, मिथ्याहृदि-असंशयसम्मादिहीनु कमेज  
बंधोदयवोच्छेदसमाप्ते । अवसेसासु एते विचारो पत्ति, बंधसेकस्यैव वंशमादौ ।

मिथ्यतस्तु सोदयज, पञ्चमयवेद हुंहरसंज्ञानां सोदय-परोदयज, अवसेसां परोदयज  
बंधो । मिथ्यतस्तु गित्तो । अवसेसां पयधीनं सतिरो, बंधगद्यायसंज्ञायिमापुवर्तमादौ ।  
पञ्चया सुगमा । पत्ति एदंरिय-आदाव-आवरणं नृसुसयवेदपञ्चमो नत्ति ति हुगममेव  
समेदय्यं । एदंरियनादि-आदाव-आवरणं तिरिक्खगइसद्धं, सेसांमो तिरिक्ख मनुसगइसद्धं  
धत्तंति । एदंरिय-आदाव-आवरणं देवा समी । सेसां देव-अरइया । बंधद्वयं बंधविपद्द्वयं  
यं सुगमं । मिथ्यतस्तु बंधो चट्ठिरो । सेसां सादि नद्वो ।

तित्थयस्तु बंधोदयवोच्छेदविचारो पत्ति, बंधव्यवहारादौ । परोद्वजो बंधो,  
सुबोनीमहारयं मोक्षं तित्थयस्तुसुखदयामावाधो । गित्तो बंधो, एगसम्यं नपुवरमा-

ने बंधो पाये नहीं होते । नृसुसयवेद और हुंहरसंज्ञानका पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उद्व  
व्युत्पिद्य होता है क्योंकि मिथ्याहृदि और असंशयसम्मादिहीनु कमेसे उनके  
बन्ध और उद्वव्य व्युत्पेद देखा जाता है । शेष प्रकृतिषोमे यह विचार नहीं है क्योंकि,  
उनका केवल एक बन्ध ही देखा जाता है ।

मिथ्यात्वका स्वीकृतसे नृसुसयवेद व हुंहरसंज्ञानका स्वीकृत-परोदयसं तथा  
शेष प्रकृतिषोका परोदयसे बन्ध होता है । मिथ्यात्वका निरन्तर बन्ध होता है । शेष  
प्रकृतिषोका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि बन्धककालमे उनकी सत्ताका नियम पाया नहीं  
जाता । प्रत्यय सुगम है । विद्येय इत्यादि कि एकस्मिन्प्रजाति आताय और स्वावरका  
नृसुसयवेद प्रत्यय नहीं है इस दुर्गम बातका स्मरण रक्कना चाहिये । एकस्मिन्प्रजाति  
आताय और स्वावर प्रकृतियों विर्यगगतिस्त संयुक्त और शेष प्रकृतियों विर्यगगतिस्त व  
मनुष्यगतिस्त संयुक्त बंधती है । एकस्मिन्प्रजाति आताय और स्वावर प्रकृतिषोके वेद  
स्वामी है । शेष प्रकृतिषोके वेद व नारकी स्वामी है । बन्धावस्थाम और बन्धविनष्टस्थान  
सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध आर्य प्रकारका होता है । शेष प्रकृतिषोका सावि व धातुव  
बन्ध होता है ।

तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध व उद्वके व्युत्पेदका विचार नहीं है क्योंकि, उनका  
एक बन्ध ही होता है । परोद्व बन्ध होता है क्योंकि, सयोगी महात्माके छात्रकर सम्यं  
तीर्थंकर प्रकृतिके उद्वका अग्रान है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयमे

मावादे । पञ्चया सुगमा । मनुसगर्भमहतो बधो । देव-भेरयमसदसम्मादिही सामी ।  
 बंधदापं वधविण्डदाण च सुगमं । सदि-अद्भुतो बधो । पयडिबधगयमिसेमपरुवमहमुत्तर  
 मुत्त मपदि—

णवरि विसेसो वेट्टाणियासु तिरिक्खाउअ णरिय मणुस्साउअ  
 णरिय ॥ १५६ ॥

हुदो ? देव-भेरयणमपन्वत्तदाए आउवधविरोहादो ।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पचणाणावरणीय  
 छदसणावरणीय-सादासाद-चदुसजलण-पुरिसवेद-इस्स-रदि-अरदि  
 सोग भय-दुगछा-देवाउ-देवगइ-पधिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइय-  
 सरीर-समचउरससठाण-वेउव्वियसरीर-अगोवग-वण्ण गध-रस-फास देव-  
 गइपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुवलहुव उवघाद-परघादुस्मास-पसत्यविहाय-  
 गइ-त्तस-चादर-पन्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-  
 आदेस-जसकित्ति-अजसकित्ति णिमिण-तिथयर-उच्चागोद-पचत्त-  
 राइयाण को वधो को अवधो ? ॥ १५७ ॥

बन्धविधामका अभाव है । अत्यय सुगम है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देव व  
 मानकी अर्धपतसम्पन्नहि सामी है । बन्धायान और बन्धयितव्यस्थान सुगम है । सादि व  
 अमृच बन्ध होता है । प्रवृत्तिबन्धगत विनायके प्रकृपणार्थ उत्तर सूत्र करते हैं—

विशेषता केवल इतनी है कि द्विस्त्वानिक प्रकृतियोंमें तियगायु नहीं है और मनुष्यायु  
 नहीं है ॥ १५६ ॥

इसका कारण यह है कि वध व मारकियोंके अपयामकालमें आपुबन्धका वितोष है ।

आहारकययोगी और आहारमिस्सकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दशनावरणीय,  
 सात व असाता वेदनीय, चार संन्यतन, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, हनुप्पा,  
 देवासु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकिमिक, तेजस व क्रमण शरीर, समचतुरससस्थान,  
 वैकिमिकशरीरांगोपांग, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यात्रुपणी, अगुरुत्तपु, उपघात,  
 परघात, उन्मूलस, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, चादर, पवाप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,  
 शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्वर, आदेय, यशकित्ति, अयशकित्ति, निर्माण, तीर्षक, उच्छगोत्र  
 और पांच अन्तराय, इनका कौन पन्चक और कौन अवन्चक है ? ॥ १५७ ॥

मुग्धम् ।

पमत्तसजदा वधा । एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ १५८ ॥

एदस्सस्यो उप्पदे — एत्थ वधो उदभो वा पुण्यं वोधिच्छब्दो ति विचारो यत्थि,  
पक्कगुणहान्तामि पुप्फावरयावामावाहो । पंचपाणावरणीय-चतुस्रसमावरणीय-गुरिसवेद-  
पदिदियवादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचतरमसंयत्त-वज्जचटक्क-अगुरुवट्ठुवचटक्क-पसत्त-  
विहायगइ-तमचटक्क-विहायि-मुहामुह-मुमग-मुस्सर-अदे ज जसकिंति विमिज-उच्चागेद-  
पंचत्तरायां सोदभो वंधा । विहा-ययत्त-सादासाद-चटुस्रजल-छज्जोक्कमायां सोदय-फोदभा  
बंधो, उभयवधि वंधविरोहमावाहो । देवाठ-देवगइ-वेठभियसरीर-वेठभियसरीरंगेतंग  
देवगइवाजोगाणुपुम्भी-अजसकिंति निम्बयराण फोदभो वधो, आहारकस्यजोगीसु एवामिमुदय  
विरोहो ।

पंचपाणावरणीय-चतुस्रसमावरणीय-चटुस्रजल-गुरिसवद् भय दुगुष्ठा-देवाठ-देवगइ-  
पदिदियवादि वेठभिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचतरमसंयत्त-वेठभियसरीरंगेतंग-वज्जचटक्क-  
देवगइवाजोगाणुपुम्भी-अगुरुवट्ठुवचटक्क-पसत्त-विहायगइ-तमचटक्क-मुमग-मुस्सर अदेज

यद् एव सुगमं है ।

प्रमत्तमयत वन्धक ई । ये वन्धक है अवन्धक नहीं ई ॥ १५८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— यहाँ वन्ध पूर्वमें ध्युच्छिद्य होता है या उद्भव वह  
विचार नहीं है। क्योंकि एक शुभस्यात्मन पूर्वापरमात्रका समाप होता है। पांच  
आत्मपरणीय आर इन्द्रावरणीय पुरुषवद् पंचभियज्जति तैजस व कामंज शरीर,  
समचतुरकर्मस्यान वर्णादिक आर, अगुरुवट्ठु आदिक आर, प्रदास्ताविहायोगति असादिक  
आर, सिधर, अरिधर, शुभ अशुभ सुमग सुम्बर, आद्य यशस्वीर्ति निर्माण उच्छवमो  
और पांच अस्तारय इनका स्थापन वन्ध होता है। विहा प्रथमा माता व अमाता वरुणीय  
आर सज्जमन और उह भी कर्माणांका इन्द्राय परावृत्त वन्ध होता है क्योंकि, बान्नी ही  
प्रकारक वन्ध हतेम अइ विरोध नहीं है। ब्यापु देवगति वैदिकिकशरीर, वैदिकिक  
शरीरंगाणांका इन्द्रगतिमायोग्यानुपूर्वी अवशस्वीर्ति और तीर्थकरका परावृत्त वन्ध होता  
है क्योंकि, आहारकायपाणिर्धामे इनक उद्भवका विरोध है ।

पांच आत्मपरणीय उह इन्द्रावरणीय आर संज्जमन पुरुषवद् भय दुगुप्ता  
देवापु इयगति पंचभियज्जति वैदिकिक तैजस व कामंज शरीर, समचतुरकर्मस्यान  
वैदिकिकशरीरंगाणांका वर्णादिक आर, इन्द्रगतिमायोग्यानुपूर्वी अगुरुवट्ठु आदिक आर,  
प्रदास्ताविहायोगति असादिक आर, सुमग सुम्बर, आद्य निर्माण तीर्थकर, उच्छवम

णिमिष तित्पयर उच्चागोद-पर्वतराह्याण-भिरितरो पधो, एगसमएण षंघुवरमाभावादो ।  
सादासाद-हस्स-रदि भरदि-सोग-थिराथिर सुहासुह-असकिचि भभसकिणीण सातरो पधो,  
एगसमएण षंघुवरमदमणादो ।

षदमजलण-पुरिसुवेव-हस्स-रदि भरदि-मोग मय-दुगुळा आहारकयजागेदि बारस-  
पच्चएदि एदाभा पयडीओ पच्छति । सेस सुगमं । एदासि पधो देवगदिसंढुत्तो । मज्झिमा  
सामी । वषट्ठार्ण सुगम । यंघवोच्छेदो गरिण । धुवपपयडीण तिविहो षंघो, पुवाभावादो ।  
भवसेसत्तम सादि अदुवो ।

एवमाहारमिस्सकयजोगाणि पि वत्तव्य । णवरि परषादुस्सास-पसस्यविहायगइ  
दुस्सराणं परोदभो पधो । पुष्पमेभाडिपसरीरस्स उदए सत्ते एदासि संतोदयाण कभमेरव  
अकारमेण उदयवोच्छेदो होज्ज ? अ, मोरास्सियमरिणोदएणोदइत्त्यणं तदुदयामवेगेदासिमुदया  
मावस्स पाह्यत्तादो । पच्चणु आहारकयजोगमवगेदूण आहारमिस्सकयजोगो पक्खिदिदम्भो ।  
एविओ चैव मेदो, णरिव अण्णत्त कय्य वि ।

भार पांच अन्तराज इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका बन्ध  
विभ्रामक्य बभाष है । छाता य भसाता वधमीय हास्य रति भरति शोक स्थिर  
अस्थिर, शुभ अशुभ वशकीर्ति और भयशर्कतिरिक्क सात्तर बन्ध होता है, क्योंकि  
एक समयसे इनका बन्धविभ्राम देना जाता है ।

ये प्रवृत्तियाँ बार सम्बन्धन पुण्यवत् हान्य रति भरति शोक, मय सुगुप्ता और  
आहारकययाग इन बारह प्रत्ययोंसे बंधनी हैं । शय प्रत्ययप्रकरण सुगम है । इनका बन्ध  
वचनमि संयुक्त होता है । अनुप्य म्यामी है । बन्धात्ताम सुगम है । बन्धान्नुदव महीं  
है । अयमरुतिरिक्क तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, भुवबन्धक्य बभाष ॥  
येय प्रवृत्तियोंका छादि य अन्ध बन्ध होता है ।

इसी प्रकार आहारमिभ्रकाययोगियोंका भी कहना चाहिये । विरायता कय्य इनकी  
है कि इनके परधात उच्चागाम प्रान्णविहायगति और नुस्परक्य परोदय बन्ध होता है ।

संज्ञा—संज्ञि पृथगे औदारिकगरीरक उदयक इमापर इनका उदय या अतएव  
भव यहाँ उनका निष्कारण उदयानुच्छेद क्यों हो जाता है ?

ममाधान—एसा नहीं है क्योंकि, औदारिकगरीरक उदयक साथ उदयक्य प्राण  
दानधामी इन प्रवृत्तियोंका उमक उदयका बभाष होनेसे उदयामाय व्यापयुक्त है ।

प्रत्ययोंमें आहारकययागका कम करक आहारमिभ्रकाययोगका आहना चाहिये ।  
कय्य इनका ही भव है और वहीं कुछ भव महीं है ।



कम्महयकायजोगीसु पचणाणावरणीय-छदमणावरणीय-असादा  
वेदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि मोग भय-दुगुळा  
मणुसगह-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्महयसरीर-समघउरस  
संठण ओरालियसरीरअंगोवग-चज्जरिसहसघटण-वण्ण गध-रस-फास  
मणुमगहपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास पसत्त-  
विहायगह-तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-यिरायिर-सुहासुह-सुभग-  
सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पवंतराहयाण  
को वंधो को अवंधो ? ॥ १५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी वंधा । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ १६० ॥

पदस्तरयो शुष्पदं— एतत्तु वयो उदयो वा युष्मं बोधिसत्त्वो वि मत्ति विचारं,  
एतत्तु ओरालियदुग-समघउरससंठण-चज्जरिसहसघटण-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्तविहायगह

कम्मकम्मवयोमिषोमे पांच ज्ञानावरणीय, छद दर्शनावरणीय, असादावेदनीय,  
पारह कयाय, पुस्सवेद हस्स, रति, अग्नि, शोक, भय, दुगुष्ठा, मनुष्यगति पंचेन्द्रियवति,  
औदारिक, तैजस व कम्मज शरीर समचतुरस्रमंस्त्रान, औदारिकशरीरगोपांग, वज्रपमसइनन,  
वज्र, गध रस स्वन मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुत्तु, उपपात, सपान, उप्पसास,  
प्रशम्भविहायोगति वस, चादर, पयात्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,  
सुस्सर, मात्तम यत्तसिद्धि, अयत्तसिद्धि, निमाण, छत्तचगोत्र और पांच अन्तराय, इनस्य केन  
वन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ १५९ ॥

पद एव सुगम है ।

मिथ्यादष्टि सामादनमम्यगष्टि भार अर्गयनमम्यगष्टि वन्धक है । ये वन्धक हैं,  
शेष अवन्धक हैं ॥ १६० ॥

हस्त्यङ्ग अर्थ कहते हैं— यहाँ वन्ध वा उदय पूर्वमे व्युत्पिष्ट दाता है यह विचार  
यही है क्योंकि यहाँ औदारिकछिन्न समचतुरस्रोरयाण वज्रपमसैहमन उपपात

पतपसरीर-सुस्तराण्येयतेण उदयामावाधो, सेसाणमुदयसमवाधो च । पचमाणावरणीय  
 चउदसणावरणीय-तेवा-कम्मइयसरीर-वण्णचउकक-अगुस्सलहुव-पिराधिर-सुहासुह-मिमिज-  
 पचतराइयाण सोदयो वधो, एत्थतणसम्भगुणहाणेसु पियमेणुदयदसणाधो । मिहा-पयत्त-  
 असात्थवेदणीय-वारसकसाय-इत्थ-रदि-अरदि-सोग-मय-दुगुल्ल-पुरिसवेद-सुमगादेन्न-असत्ति-  
 उच्चानोदाण सोदय-परोदयो वधो । मणुसगाइ-मणुसगाइपाओगाणुपुष्ठीमि मिन्मइहि-  
 सासणसम्मादिहीसु सोदय-परोदयो वधो, उभयया वि वधविरोहामावाधो । असंनइसम्मादिहीसु  
 परोदयो, मणुस्सअसज्जसम्मादिहीमि मणुवदुगस्स वधविरोहाधो । पविदिय-तप्त-वाटर-पन्नत्तमि  
 मिन्मइहिहि सोदय-परोदयो वधो, पठिअसुदयसंमवाधो । सासणसम्मादिहि-असज्ज-  
 सम्मादिहीसु सोदयो, विगत्तिदिपसु एदेसिं दोण्णं गुणहाणाणं अमावाधो । ओरात्थिमसरीर  
 समचउरससंअण-ओरात्थिमसरीरअंगोवण-अज्जरिसइसअज्ज-उवपाद-परपाद-उत्तास-पसस्य-  
 विहायगइ-पथेयसरीर-सुस्तराण्ये परोदयो वधो, विगाहगदीए पदासिमुदयामावाधो ।

पंचमाणावरणीय-सदसणावरणीय-वारसकसाय मय-दुगुल्ल-ओरात्थिम-तेवा-कम्मइय-  
 सरीर-वण्ण-गंध-रस-स्पर्श अगुस्सलहुव उवपाद-मिमिज-पचतराइयाण निरंतरो वधो, एत्थ

—

परचात उच्छ्वास प्रत्येकशरीर भीर सुस्वरका निममसे उदयामाय  
 है तथा दोष प्रकृतिपौक उदयका सम्भावना है । पांच कामावरणीय चार दर्शनावरणीय  
 ठेजस व कर्मण शरीर, वर्णाधिक चार, अगुस्सलहुव स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण  
 और पांच अन्तरावका स्वादय वण्ण होता है क्योंकि, यहाँ सब गुणस्थानोंमें इनका  
 नियमल उदय देखा जाता है । मिहा प्रकृति असात्थवेदनीय बाह्य कपाय हास्य रति  
 अरति शोक, मय सुगुप्ता पुण्यवेद सुमग भाव्य वशकीर्ति और उच्चगोत्रका  
 स्वोदय परोदय वण्ण होता है । मणुप्पगति व अनुप्पगतिप्रापाग्यानुपूर्वीका मिच्छाददि  
 और सासात्तसम्पगदि गुणस्थानोंमें स्वादय परोदय वण्ण होता है क्योंकि, वानों प्रकारसे  
 ही वण्ण हमेंमें कोइ विरोध नहीं है । असपतसम्पगदिपोंमें पण्य वण्ण होता है क्योंकि,  
 मनुप्प असपतसम्पगदिपोंक मनुप्पगदिके वण्णका विरोध है । पचत्थियमाति अज  
 वाटर और पयात्तका मिच्छाददि गुणस्थानमें स्वादय परोदय वण्ण होता है, क्योंकि,  
 यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिपौक उदय सम्भव है । सासात्तसम्पगदि और असपतसम्पगदिपोंमें  
 स्वादय वण्ण होता है क्योंकि, भिन्नैर्द्रियोंमें इन दोनों गुणस्थानोंका अभाव है ।  
 औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान औदारिकशरीरसंघापांन अजर्पमसंहमन उपचात  
 परचात उच्छ्वास प्रत्येकशरीर भीर सुस्वरका पण्य वण्ण होता है, क्योंकि, विप्रहगतिमें इनका उदयका अभाव है ।

पांच कामावरणीय छह कामावरणीय बाह्य कपाय मय सुगुप्ता औदारिक  
 ठेजस व कर्मण शरीर, वण्ण वण्ण रस स्पर्श अगुस्सलहुव उपचात निर्माण और पांच

कम्मइयकायजोगीसु पचणाणावरणीय-छद्दसणावरणीय-असादा  
वेदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय-दुगुछा  
मणुसगइ-प्रविंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस  
सठण ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसंधडण-वण्ण गध-रस-फास  
मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास पसत्य-  
विहायगइ-तस-चादर-पज्जस-पत्तेयसरीर-यिरायिर-सुहासुह-सुभग-  
सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पर्वतराइयाण  
को बंधो को अवधो ? ॥ १५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वधा । एदे वधा,  
अवसेसा अबंधा ॥ १६० ॥

एदस्सत्तो पुण्णदे— एरव वधो उदओ वा पुण्ण वोच्छिण्णो ति पत्ति विचार,  
एतव बोरात्तिमदुग-समचउरससंस्थान-वज्जरिसहसंधडण-उवघाद-परघादुस्सास-पसरविहायगइ

कर्मकर्मयपेत्तिपेत्ति पांच ज्ञानावरणीय, छद्द दर्शनावरणीय, असादावेदनीय,  
चारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, दुगुप्सा, मनुष्यगति पंचेन्द्रियगति,  
बौद्धरिक, वैजस व कर्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, बौद्धरिकशरीरसंस्थान, वज्रपर्मसंहनन,  
वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श मनुष्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वी, अमुकल्लु, उपपात, परपात, उच्छ्वास  
प्रशस्तविहयोमति, जस, चादर, पर्वाप्त, प्रवेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमम,  
सुस्सर, अत्तेव यशकित्ति, अयशकित्ति, निर्माण, जण्णगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन  
बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ १५९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पादष्टि सामादनसम्यग्दष्टि और असंयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,  
श्रेय बन्धक हैं ॥ १६० ॥

एतसा अर्थ कहते हैं— वहाँ बन्ध वा उदय पूर्वमे व्युत्पिच्छ होता है यह विचार  
मही है क्योंकि यहाँ बौद्धरिकद्विक, समचतुरस्रसंस्थान वज्रपर्मसंहनन उपपात

भिरंतरावपुर्णमादो । सासणसम्मादिद्धि-असज्जदसम्मादिद्धीसु भिरतो, तस्य पट्टिवत्तपयणीयं पंचामावादो ।

मिच्छाद्विद्धीसु तेदाळीसुत्तरपच्चया, ओषपच्चएसु कम्मइयकयजोग मोत्तुण सेस बारसजोगपच्चयाणममावादो । तस्य पचमिच्छतेसु अवधिदेसु अट्टपीस सासणसम्मादिद्धि पच्चया । तस्य अणताणुषविचउत्तिकम्पिदेसु अवधिदेसु तेसीस असज्जदसम्मादिद्धिपच्चया होति । सेस सुगम ।

पचण्णावारणीय-सज्जदसज्जदणीय-असाद्वेषदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-इत्थ-रदि-बरदि-सोग-मय दुगुल्ल-परिदियजादि तेजा-कम्मइयसरी-समचउरससज्जण-वण-मंध-रस-सस-अगुल्ललुल्ल उवचाद-परचाद-उत्सास-पत्तयविहायगइ-तय-चाद-पच्च-पत्तेमसीर विराप्ति-सुहासुह-सुमय-सुत्तर-आदेज-जसकिति-अजसकिति-गिमिण-पंचतरायाण मिच्छाद्विद्धी सासणो' च तिरिक्ख-अणुसगइसज्ज, एदसिमपच्चसकाले विरय-देवगईण पंचामावादो । असज्जद सम्मादिद्धिपो देव अणुसगइसज्जते पंचति, तेसि गिरय-तिरिक्खगईण पंचामावादो । अणुसगइ

अनुपप्योमं उत्पद्य द्रुय जीर्णोके मिरत्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासाद्वनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मिरत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टियोंमें तेजावीस उत्तर प्रत्यय होने हैं क्योंकि, ओषप्रत्ययोंमें कर्मण कययोगका छाड़कर दोष बारह पागप्रत्ययोंका अभाव है । उनमेंसे पांच मिथ्यात्वोंका कम करनेपर अकृतीस सामाद्वनसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं । उनमेंसे अनन्तानुपपि अणुपक और स्वयिद्वयो कम करनेपर तेवीस असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं । दोष प्रकरण सुगम है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह ज्ञानावरणीय असातावर्णीय बारह कयाप, पुरपवेद हास्य रति भरति, शोक, मय जुगुप्सा पंचेगिप्रपजाति तेजस्य प कर्मण शरीर, समचउरससंस्थान वर्ण गंध रस कश अगुल्लसु उपघात परघात उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगनि ब्रम पाकर, पर्याण प्रत्येकजारीर, स्थिर, धर्षित्तर, शुभ, अशुभ, सुमग सुत्तर आदय यणाधीति अयणाधीति निमाण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि प सासाद्वनसम्यग्दृष्टि नियमति एवं अनुपपगतिसे संयुक्त बांधन हैं क्योंकि, इनके अपर्याणकालमें मरक य देव कतिथोंके बन्धका अभाव है । असंयतसम्यग्दृष्टि दयगति य अनुपपगतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि उनके मरकगति और तिर्यगगतिके बन्धका अभाव

दुर्बलविद्यारो । असादयेदणीय-इत्य-उदि-अउदि-सोग-मिगबिर-मुहासुह-असकिपि अजसकिर्त्तनं  
 सांतरो बधो, एगसमएण चतुवरमदसणादा । पुरिसयेद-समभतरससंअण-वज्जरिसदसंअण-  
 पसस्यविद्ययग-सुस्सर-सुमपादेअउ उअणोत्राण मिअइदि-सासणेसु सांतरो बधो । असंअद  
 सम्मादिद्वीसु भिरंतरो, पडिबकउपयडीण पंचामावायो । [ मनुसगइ ] मनुसगइपाओम्मासु  
 पुअणी मिअइदि-सासणेसु बधो सांतर-भिरंतरो । कथं भिरंतरो ? अ, आगदादिदेवेहिरो  
 विमहागदीए मनुमेसुअण मनुसगइदुगस्स भिरंतरंभुवलमादो । असअदसम्मादिद्वीसु  
 भिरंतरो बधो, विमहागदीए मनुवदुगंअणोमसम्मादिद्वीणअणगइदुयस्स पंचामावायो ।  
 पंचिदिय-ओसस्मिअरिअणोअगत्तस-माअर प-अस-अरपाहुस्सास-पसेअसतिअण बधो मिअइदि  
 सांतर-भिरंतरो । कथं भिरंतरो ? अ, सगअकुमारदिदेव-अइएहिरो तिरिअ-अनुस्सेसुअण

अन्तरात् इतन्ना निरन्तरं बन्धं होता है क्योंकि, यहाँ य अक्षरार्थी प्रकृतिपा है । असाता-  
 वेदनीय इत्येव उच्यते अरति होक, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ यक्षकीर्ति और अयशाकीर्तिक  
 सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इतन्ना बन्धविधायक बन्धा जाता है । पुनपुन  
 समचतुराक्षरस्यान वज्जरमसहस्रम प्रदास्तविद्यायोगति सुम्बर, सुमग आदय और  
 उअणोत्राण मिअइदि य सासात्तममम्यगदियोंमें सात्तर बन्ध होता है । असंपतसम्यगदि  
 योंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ उअण प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।  
 [ मनुष्यगति ] और मनुष्यगतिप्रायोम्मानुपुर्णीक मिअइदि य सासात्तसम्यगदि  
 शुभस्यानोंमें सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शुंअ—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि आन्तात्मिक इक्ष्मसे मनुष्योंमें इत्यत्र दुर  
 जीवोंके विमहागतिमें मनुष्यगतिहिकका निरन्तर-बन्ध पाया जाता है ।

असंबतसम्यगदियोंमें निरन्तर बन्ध होता है 'क्योंकि विमहागतिमें मनुष्यगतिके  
 बन्धके योग्य सम्यगदियोंके अन्ध या गतियोंके बन्धका अभाव है । पंचमिप्रपत्रप्रति  
 भीकारिकदाटीपंगोपांग अस माअर, पर्याप्त परपात उअणबास और प्रत्येकदाटीका  
 बन्ध मिअइदियोंमें सात्तर निरन्तर होता है ।

शुंअ—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सगअकुमारदि देव य नादिकयोंमें तिरिअों य

णिदाणिहा-पयलापयला थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-  
माया-लोभ-इत्यिवेद तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसघट्टण' तिरिक्खगइ-  
पाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पमत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज  
णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १६१ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्वित्री सासणसम्माद्वित्री वधा । एदे वधा, अवमेसा  
अवधा ॥ १६२ ॥

एदस्मरवो बु-चदे—अणताणुवधिवठन्किरियिवेदाण षंघोदया सम वोम्भिग्गा,  
सामपसम्मादिद्विद्धि तदुभयामावदमणादो । एवमणपयईण अणिय वत्तन्व ।

थीचगिद्धितिय-चउसठाण-चउसघट्टण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सरण परोदओ  
वधो, विगगइदीप एदामिसुदयामावादो । अणताणुवधिवठन्किरियिवेद-तिरिक्खगइ  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-दुभग-अणादेज्ज-थीचागोदाण सोदय-परोदओ वधो, एदसिमिन्ध

निगान्निद्रा, प्रचत्तप्रचत्त, स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्षेत्र, मान, माया, लोभ,  
क्रीदेद, नियगति, चार सम्मान, चार संहनन, त्रियगतिप्राप्ताग्यानुपूर्वी, उद्योत,  
अप्रसन्नविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचयोगका कौन बन्धक और कौन  
अवधक है ? ॥ १६१ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पाघटि और मासादनमम्यगटि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अवधक  
है ॥ १६२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं—अनन्तानुबन्धिवत्तुक् और त्रीपिदका बन्ध य उद्य  
शनों साथमें धुप्पिउध हात हैं क्योंकि, सामादमम्यगटि धुप्पस्थानमें उन शनोंका  
अभाव होता जाता है । इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंका पूष या पश्यान् दमिपामा बन्ध य  
उद्यका धुप्पउध जानकर कहना चाहिये ।

स्थानगृद्धिप्रय चार संस्थान चार संहनन उद्यान अप्रसन्नविहायोगति और  
दुस्सरका परोदय बन्ध होता है क्योंकि त्रिप्रहगतिमें इनका उद्यका अभाव है ।  
अनन्तानुबन्धिवत्तुक्, त्रीपिद नियगति नियगतिप्राप्ताग्यानुपूर्वी दुभग अनादय  
और नीचगाव इनका स्थादय-परादय बन्ध होता है क्योंकि यहाँ इनका उद्यका

मनुसंग्रहपात्रोन्मात्रपुष्पीभो सधे मनुसंग्रहसंज्ञतं वपति, सामाविमादो । नोरात्रियसरीर-  
नोरात्रियसरीरवंगोवंग-वन्मरिसहसंपदनाभि मिच्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टिभो तिरिक्ख-मनुस-  
गहसंज्ञतं, असंजदसम्मादिष्टिभो मनुसंग्रहसंज्ञतं वपति, एदासिमण्णमईहि सह निरोद्धारो ।  
उष्वागोद मिच्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टिभो मनुसंग्रहसंज्ञतमदेसिमण्ण-वत्तकत्त उष्वागोदा-  
विषामाविदेवगई वषामावादो । असंजदसम्मादिष्टिभो देव-मनुसंग्रहसंज्ञतं वपति, तस्स  
मयत्त वषसंमवदसपादो ।

मनुसंग्रह-मनुसंग्रहपात्रोन्मात्रपुष्पी-नोरात्रियसरीर-नोरात्रियसरीरवंगोवंग-वन्मरिसह-  
संपदनाभि वत्तगहमिच्छादिष्टि-तिगहसासणसम्मादिष्टि-देवेषेरूपमसंजदसम्मादिष्टिभो सामी ।  
वषसेसाधं पयदीनं वत्तगहमिच्छादिष्टि असंजदसम्मादिष्टिभो तिगहसासणसम्मादिष्टिभो व सामी ।  
वषदायं सुमम । एदेसिमय वषविषासो पति । पंचाणावरणीय-सुदसणावरणीय-वत्त-  
कसत्त-पय-वुगुं-तेजा-कम्माइयसरीर-वण्णवत्तक-मगुरुवत्तदुव-उवपाद-निमिष-पंचाणा-  
पालं मिच्छादिष्टिहि वत्तविहो वषो । वण्णत्त विविहो, वुववषाभावादो । वषसेसाध  
पयदीनं वषो सधत्त सादि-मदुभो, वदुववपित्तदो ।

हे । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके सब मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि,  
देखा स्वामाधिक है । औदारिकशरीर औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रवर्मसंहननके  
मिथ्यादृष्टि और सासाधनसम्बन्धदृष्टि विषयमात्र व मनुष्यगतिसं संयुक्त तथा असंपत्त  
सम्बन्धदृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि इनका वण्य गतियोंके साथ विरोध है ।  
वज्रवर्मोत्रके मिथ्यादृष्टि और सासाधनसम्बन्धदृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि,  
इसके अपर्याप्तकाष्ठमें वज्रवर्मोत्रके अधिमामाधिसी देवगतिसे वण्यका समाप है ।  
असंपत्तसम्बन्धदृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, वज्रवर्मोत्रके वण्यकी  
सम्माधना एक दोनों गतियोंके साथ देखी जाती है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग  
और वज्रवर्मसंहननके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, तीन गतियोंके सामाधनसम्बन्धदृष्टि,  
तथा देव व मारकी असंपत्तसम्बन्धदृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके  
मिथ्यादृष्टि व असंपत्तसम्बन्धदृष्टि, तथा तीन गतियोंके सासाधनसम्बन्धदृष्टि स्वामी हैं ।  
वण्यप्राप्त सुगम है । इसका यहाँ वण्यविवादा नहीं है ।

पांच वामावरणीय छह वर्त्तमावरणीय बारह कपाय भय वृगुप्ता तैजस व  
कार्मज शरीर, वर्त्तदिक बार, मगुरुवत्त, वषधात निर्माज और पांच अमृततपका  
मिथ्यादृष्टि शुचस्थानमें चारों प्रकारका वण्य होता है । वण्यका तीन प्रकारका वण्य होता  
है क्योंकि, वहाँ वृववण्यका समाप है । शेष प्रकृतियोंका वण्य सर्वत्र माद्रि व मगुरु  
होता है, क्योंकि, वे मगुरुवण्यी हैं ।

णिदाणिद्वा पयलापयला-थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-  
माया लोभ-इत्थिवेद तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउमघडण' तिरिक्खगइ-  
पाओग्गाणुपुत्वि-उज्जोव-अणसत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज  
णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १६१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा  
अवधा ॥ १६२ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—अणताणुवधिचठन्किरिपेदाण पधोइया समं वोच्छिग्गा,  
सासणसम्मादिट्ठिं तदुमयामावर्दसणाओ । एवमण्यपयईणं जाणिय वत्थम् ।

वीणगिद्धिनिय-चउसठाण-चउमघडण-उज्जोव-अणसरथविहायगइ-दुस्सरणं परोदओ  
पधो, विमाइगदीए एदासिमुइयामावर्दो । अणताणुवधिचठन्किरिपेद-तिरिक्खगइ  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्वि-दुमग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदय-परोदओ पधो, एदासिमग्घ

निद्रानिद्रा, प्रचल्यप्रचल्य, स्नानशुद्धि, अनन्तातुबन्धी श्रेय, मान, माया, लोभ,  
अभिद, निर्दग्गति, चार सत्थान, चार संहनन, त्रिपग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उघोत,  
अणसत्यविहायोगनि, दुमग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रक कैन वन्नक और कैन  
अवन्नक है ? ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिप्पाएट्ठि और सासाइनमग्गएट्ठि पचक है । ये पचक है, सेप अपचक  
है ॥ १६२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत है—अनन्तातुबन्धितुष्क और स्त्रीपेदका वग्घ प उदय  
दानों मायमें स्फुटिउछ दाने हैं क्योंकि, नामान्तरमग्गएट्ठि गुणव्याप्तमें उन दानोंका  
अमाय दाना जाता है । इसी प्रकार अण्य ग्रहणियोंक पूव या पश्चात् दानेनामा वग्घ प  
उदयका स्फुटिउछ जानकर कहना चाहिये ।

अनन्तातुबन्धितुष्क चार संस्थान चार संदमन उद्यान अणसत्ताविहायगानि और  
दुस्सरका परोदय वग्घ होता है क्योंकि त्रिपग्गनिमें इनक उदयका अमाय है ।  
अनन्तातुबन्धितुष्क, स्त्रीपेद नियगनि नियगनिप्रायोग्यानुपूर्वी दुमग अनादेय  
आर नीचगोत्र इनका स्वादय-परादय वग्घ दाना है क्योंकि यही इनक उदयक



उदयस्मियमावातरो । भीमगिदितिय-अर्णताशुर्धविषउक्कण भिरतरो बंधो, पुक्कणपित्तरो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोमाणुपुब्बी-भीजागोदाण मिच्छइहिंदि सत्तर-भिरतरो बंधो । कपं भिरतरो ? सत्तमपुद्विपेरइइहिंतो तेउ-पाठक्कइइहिंतो च कयविग्गहाण भिरतरबंधदसणारो । सासणसम्माइहिंदि सत्तरो, तपो विधिगयसासणसम्माइहिंदि सप्तवामावातो । बबसेसाण पयडीयं सप्पत्त सत्तरो बंधो, अणियमेण पंपुक्कमदसणारो । पप्पया सुग्गमा । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोमाणुपुब्बी-उक्कोवाणि तिरिक्खगइसत्तुसमयसेसाणो पयडीयो तिरिक्ख मनुसमइसत्तुयं बंधति । चउगइमिच्छइहिंदि तिग्गसासणसम्माइहिंदि च सामी । बंधइण बबविणइहाण च सुग्गमं । भीमगिदितिय अर्णताशुर्धविषउक्कण मिच्छइहिंदि चउमिहो बंधो । सासणे इविहो, जवाइ-धुवामावातो । बबसेसाण पयडीयं सप्पत्त बंधो सप्पि बद्धो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अयंधो ? ॥ १६३ ॥

सुग्गमं ।

नियमक्य जनाय है । स्थानपुत्रिण्य और अनन्तानुबन्धितुष्कक्य निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वे सुक्कण्यो हैं । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिमात्रोप्यानुपूर्वी और भीमगोत्रक्य मिच्छादधि गुणस्थानमें सत्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

ईहा—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि सत्तम पुत्रिणिके मारकियो और तेज्जकायिक व वापुकायिकों मेंसे तिरिक्कण करमेबाळ जीवोंके निरन्तर बन्ध देखा जाता है

सासत्तमसम्पगइहिं गुणस्थानमें इनका सत्तर बन्ध होता है क्योंकि वहांसे निकले हुए सासत्तमसम्पगइहिंकी सम्मावना यहीं है । होय प्रकृतिपौत्र सर्वत्र सत्तर बन्ध होता है क्योंकि अनियमसे उनका बन्धविधाय देखा जाता है । मत्पय सुग्गमं है ।

तिर्यग्गति तिर्यग्गतिमात्रोप्यानुपूर्वी और बघोतको तिर्यग्गतिसे संयुक्त तथा होय प्रकृतिपौत्र तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । चारों गतिपौत्रोंके मिच्छादधि और तीन गतिपौत्रोंके सासत्तमसम्पगइहिं स्थामी हैं । बन्धाभ्यास और बन्धविनष्टस्यास सुग्गमं है । स्थानपुत्रिण्य और अनन्तानुबन्धितुष्कक्य मिच्छादधि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासत्तम गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां मयानि व हुण बन्धका जनाय है । होय प्रकृतिपौत्र सर्वत्र सादि व मनुष्य बन्ध होता है ।

सादावेदनीयक्य कोन बन्धक और कोन अबन्धक है ? ॥ १६३ ॥

वह सब सुग्गमं है ।

मिच्छादृष्टी मामणसम्मादृष्टी असजदमम्मादृष्टी सजोगिकेवली  
वधा । एदे वधा, अवधा नत्थि ॥ १६४ ॥

साद्वेदपीयम्प वधो उदयो वा पुण्य बोच्छिण्णो किं पञ्चम बोच्छिण्णो ति एत्थ  
परिक्खता नत्थि, तदुमयबोच्छेत्तामात्रादो । सोदय-परोदयो वधो, अदुवोदयसादो । सजोगि  
केवलिन्दि विवत्ता वधो, पडिवस्सुपयहीम् वधामात्रादो । अण्णम्प सान्ते । पण्णया सुगमा ।  
एवमि सजोगिकेवलिन्दि कम्मइयकायबोगपण्णयो एक्को चेव । मिच्छादृष्टि-सासनसम्मा  
दृष्टियो तिरिक्ख-मनुमगइमनुत्त असजदसम्मादिद्विणा देव-मनुमगइसंनुत्त वधनि । सजोगि  
केवली भगइमंनुत्त । चउगमिमिच्छादृष्टि-अमंजदसम्मादिद्विणा तिगइसासनसम्मादिद्विणो  
मनुमगइमजागिकेवलिण्णो च सामी । वधद्वान सुगम । एत्थ वधबोच्छेदो नत्थि । सादि  
अदुवा वधो, परियत्तमाववधाणे ।

मिच्छत्त णवुसयवेद-चउजात्ति हुडमठाण असपत्तमेवद्वमवधण-  
आदाव-यावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाण को वधो को  
अवधो ? ॥ १६५ ॥

मिप्पादृष्टि, मामादनसम्पदृष्टि, अमंयत्तमसम्पदृष्टि और-सयोगकेवली-वन्धक ई । व  
पन्धक ई, अवधक नहीं ई ॥ १६४ ॥

सातापदनीयका वन्ध अवधया उदय पूर्वमे स्पुच्छित्त हाता ह या क्या पञ्चान्  
स्पुच्छित्त होता है इसकी वधा पनीया नहीं है क्योंकि उस वार्तिक स्पुच्छेत्तक वहां  
अभाव है । स्वादय वरादय वन्ध हाता है क्योंकि यह अनुवादी प्रवृत्ति है । तपाग  
क्यानी शुभस्थानमें निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, वहां प्रतिपत्त प्रवृत्ति वन्धक अभाव  
है । अन्यत्र वान्तर वन्ध हाता है । प्रत्यय सुगम है । विचार इसका है कि तपोगकेवली  
शुभस्थानमें एक ही कर्मण्यवधायक प्रत्यय है । मिप्पादृष्टि-य व्यापकसम्पदृष्टि  
तियगति व मनुष्यगतिम संयुक्त तथा अर्त्तयत्तमसम्पदृष्टि वध व मनुष्य गतिने संयुक्त  
वाधन है । सपागक्यानी गतिमंयत्तम रहित वाधन है । वारो गतिबोध मिप्पादृष्टि-य  
अर्त्तयत्तमसम्पदृष्टि, तीम गतियोक व्यापकसम्पदृष्टि तथा मनुष्यगतिम तपागक्यानी  
स्वामी है । वधापवाग सुगम है । वहां वधस्पुच्छत्त नहीं है । आदि व अवध वन्ध-हाता  
है क्योंकि उसका वन्ध परिचर्मेनर्त्तम है ।

मिप्पात्त, मनुष्यवेद, चार जानियां, हुण्डसंस्थान, अर्त्तयत्तमपात्रिसंस्तन,  
भानाव, स्थावर, सूक्ष्म, अपवाण और मापागपत्रगीर नामकमस्य कर्त्तन वधक व कर्त्तन  
अवधक है ? ॥ १६५ ॥

उदयस्त्रियमाभावाद्दे । भीमिदित्येव अन्तानुपविचठक्कार्णं चिरंतरो बंधो, ध्रुवचंपितादौ । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओम्याणुपुब्बी-पीचागोदानं मिच्छइद्विदि सत्तर-चिरंतरो बंधो । कथं चिरंतरो ? सत्तमपुद्विणेरइएदितो तेउ-वाठन्कइएदितो च कथमिमाहाण चिरतरबंधदंसणदो । सत्तपसम्माइद्विदि सत्तरे, तत्ते विणिग्गयसासणसम्माइद्विज संमवाभावाद्दे । अवसेसारं पयडीयं सम्बरं सत्तरे बंधो, अभियमेण बंधुवरमदंसणदो । पण्णया सुग्गमा । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओम्याणुपुब्बी-उन्नेवाणि तिरिक्खगइसत्तसमपसेसामो पयडीयो तिरिक्ख म्मुत्ताएदंसत्तं बंधति । चठगइमिच्छइद्वि तिगइसासणसम्माइद्विनो च सामी । बंधणं कथमिदं दृष्टं च सुग्गं । भीमिदित्येव अन्तानुपविचठक्कार्णं मिच्छइद्वि चठमिदो बंधो । सत्तये द्रुविदो, अभाइ-सुवाभावाद्दे । अवसेसारं पयडीयं सम्बरं बंधो सत्ति बन्धु ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १६३ ॥

सुग्गं ।

विषयस्य अभावः है । सत्तमपुद्विजं च भीमस्तानुपविचठक्कार्णं निरन्तरं बन्ध होता है क्योंकि, ये ध्रुवचम्पी है । तिर्यगति तिर्यग्गतिप्रायोण्यानुपूर्वी और नीचयोग्यता मिच्छाद्वि शुलस्याममें सत्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

संज्ञा—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सत्तम पृथिवीके गतिकों और तेजकायिक व वायुकायिकों मेंसे विमर्शको करनेवाले जीवोंके निरन्तर बन्ध होता जाता है ।

सासत्त्वसम्पगइ शुलस्याममें इसका सत्तर बन्ध होता है क्योंकि वहांसे बिकले हुए सासत्त्वसम्पगइद्वितीयकी सम्भावना नहीं है । दोष प्रकृतियोंका सर्वत्र साम्प्रत बन्ध होता है । क्योंकि अभियमसे उक्त बन्धविधायक होता जाता है । प्रत्यय सुग्गं है ।

तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोण्यानुपूर्वी और अधोतको तिर्यग्गतिसे संपुक्त तथा दोष प्रकृतियोंको तिर्यग्गति व अनुपपत्तिसे संपुक्त बांधते हैं । चारों गतियोंके मिच्छाद्वि और तीन गतियोंके सासत्त्वसम्पगइ स्वामी है । बन्धाव्याज और बन्धविमर्शस्वाय सुग्गं है । सत्तमपुद्विजं और अन्तानुपविचठक्कार्णं मिच्छाद्वि शुलस्याममें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासत्त्व शुलस्याममें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्तरी व ध्रुव बन्धका अभाव है । दोष प्रकृतियोंका सर्वत्र आवि व प्रभु बन्ध होता है ।

सादावेदनीयस्य को वधो को अवधो है ? ॥ १६३ ॥

यह सूत्र सुग्गं है ।

आदाव-यावराणं निगइमिच्छाहट्ठीं सामी, निरयगइमिच्छाहट्ठिमिह तापिं वंधामाशरो । धीइंदिय तीइंदिय चउरिंदिय-मुग्गं अपग्गत्त-माहारणाणं निक्खिअ मज्जुमग्गइमिच्छाहट्ठीं सामी, देवगेरइ एमु एदासिं वंधामावादा । वषट्ठाण पवधियइट्ठाणं न सुगमं । मिच्छत्तस्स वंधो चउम्विहो । ममाणं सादि अट्ठवा ।

देवगइ-वेउत्रियमरीर-वेउत्रियसरीरगोवग देवगइपाओग्गाणु-  
पुव्वि-तित्ययरणामाण को वधो को अवधो ? ॥ १६७ ॥

सुगमं ।

असजदमम्मादिह्ठीं वधा । एदे वधा, अवेससा अत्रधा ॥ १६८ ॥

किं वधो पुण्यं पच्छा वा बोधिअग्गो वि एग्गं विचारो जत्थि, एक्कमिह तदत्तंमवादी । एदासिं पचण्हं पि परोअ वधो, मोदएण मह मगरंछम्म विरोहादी । भित्तरो वधो, जियमेजाणममयपंधदंमणा । विग्गइगदीणं दोण्हं ममयाण कधमभेगववणो ? न, एग मोत्तुववरिमयवमंराणं भवेगमइपउत्तीदी । पचया सुगमा । जवरि मज्जुमयवेदपक्वओ

विगय मही ह । एक्कमिद्वय मज्जाय भीर वधावर प्रहणियोकं नैन वणियोकं मिच्छाहट्ठि म्यामी ह । कयोकिं मज्जकगणिमं मिच्छाहट्ठि गुणव्याप्तम उन्नक पग्गच्छ ममाय ह । द्वीमिद्वय वीमिद्वय वधुतिट्ठिय मूदम अउवात्त भार साधारण प्रहणियोकं निर्गंगति य मज्जुमय गणिक मिच्छाहट्ठि म्यामी ह । कयोकिं इव य नापकियोमं इनक पग्गच्छ ममाय ह । वग्गच्छान भीर वग्गच्छिनपुग्ग्यानं मुमम ह । मिच्छाग्गच्छा वग्गच्छ चारो मकारका हाना ह । एत प्रहणियोकं सादि य वधुत्त वग्गच्छ हाना ह ।

देवगणि, वैक्रियिकअगी, वैक्रियिकगगीतंगोपांग इवगणिप्रापाग्गानुपूर्वीं भीर तीर्धिकर नामकमस क्खेन वन्धक और वन्न अपन्धक ह ? ॥ १६७ ॥

यह नृय सुगम ह ।

अमयनमम्यगट्ठि वन्धक ह । य वन्धक ह, नेय अपन्धक ह ॥ १६८ ॥

यवा वग्गच्छ इद्वयस गृधम वा पथान् धुप्पिच्छम हाना ह । यद विचार यदी मही हे कयोकिं एक्क गुणव्याप्तम उन्नक विचार मम्मय मही ह । इन वधो प्रहणियोकं परादय वग्गच्छ होता ह । कयोकिं इनक मज्जम इद्वयक म्याय वग्गच्छ हानक विचार ह । निग्गत्त पग्गच्छ हाना ह । कयोकिं, निवमम इनक मज्जक ममय लक वग्गच्छ वग्गच्छ जाना ह ।

गुग्ग—विग्रहगणिमं ह । ममयावध नाम मज्जक ममय केम ह । मकना ह ?

ममापान—मही कयोकिं एक्कवा छाट्ठक ऊवरट्ठीं मव मंगयामं मज्जक ' राप्प' मयूति ह ।

ममय सुगम ह । विचार इनमा ह वि यदी मज्जुमयवद प्रत्यय मही ह । कयोकिं

सुगम ।

मिच्छाद्विती वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १६६ ॥

एस्य पुत्र्यं पृच्छ वा ऋषो वोष्णिष्णो<sup>१</sup> सि विचारो जस्यि, एत्कगुपह्नामि तद संमवाधो । मिच्छत्तस्य सोदयो ऋषो, यज्यद्वा वधाशुवर्तमाधो । ऋषुसमवेद-चठगादि-बावर सुहुम-अपन्वतजामाण ऋषो सोदय-परोदयो, विम्वदगदीए उदयनियमामावाधो । हुण्डस्यत्र नसंपत्सेवद्वस्यपद्व-आदाव-साहस्रनसरीरजामाण परोदयो ऋषो, विग्गहगदीए नियमेभेदमि उदयामावाधो । मिच्छत्तस्य ऋषो निरतो । नवसेसाण पयईय सतिरो, जयिययेव एगसमव वेधदंसजाधो । एवया सुगमा । मिच्छत्त-ऋषुसमवेद-हुण्डस्यत्र नसंपत्सेवद्वस्यपद्व-अपन्वतज तिरिक्ख मनुसगइसंभुतो, चडुजदि-आदाव-बावर-सुहुम-साहारणार्थं तिरिक्खगइसंभुतो वधा, नवगइहि सह एरासि वेधविरोहाधो । मिच्छत्त-ऋषुसमवेद-हुण्डस्यत्र-नसंपत्सेवद्वस्यपद्व-अपन्वतज गठगइमिच्छाद्विती सामी, चठगइतदपण सह एरासि वधस्स विरोहामावाधो । एइदिय-

यइ सुव सुगम इ ।

मिध्यादृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, श्रेय बन्धक हैं ॥ १६६ ॥

यहाँ उदयसे पूर्वमें अवधा पीछे बन्ध स्पृष्टिछ होला है यह विचार नहीं है क्योंकि एक गुणस्थानमें यह सम्मल ही यहाँ है । मिध्यात्वका स्वेत्य बन्ध होता है । क्योंकि, अपन उदयके बिना इसका बन्ध पापा नहीं जाता । ऋषुसकवेद चार जातियाँ स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मका बन्ध स्वेत्य परेत्य होता है क्योंकि विम्वदगतिमें इनके उदयका नियम नहीं है । हुण्डस्यस्थान असंप्राप्तसुपादिकासंभवन आताप और साधारणघटीर नामकर्मका परेत्य बन्ध होता है क्योंकि, विम्वदगतिमें नियमसे इनके उदयका अभाव है ।

मिध्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है । श्रेय प्रकृतिपौका सान्तर बन्ध होता है । क्योंकि, उनका अनियमसे एक समय बन्ध देखा जाता है । अतएव सुगम है । मिध्यात्व ऋषुसकवेद हुण्डसंस्थान असंप्राप्तसुपादिकासंभवन और अपर्याप्तका तिर्यगगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा चार जातियाँ आताप स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्यगगतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि बन्ध गतिपौके साथ इनके बन्धका विरोध है । मिध्यात्व ऋषुसकवेद हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसुपादिकासंभवनके चारों गतिपौके मिध्यादृष्टि स्वामी हैं । क्योंकि चारों गतिपौके उदयके साथ इनके बन्धका

इत्थिवेदस्म ताव सुष्पदे— एष उदयाश षोऽथ पुन्यं पञ्च वा योऽच्छिण्यो ति विचारो ऽपि, पुरिसवेदस्म एषतेणुदयामावाधो सेशाणं च पयडीणं षोऽदयवोऽच्छेदामावाधो ।

पंचपात्रावरणीय-चउदयसणावरणीय-पंचतराव्याणं च सोदयो षोऽथ, धुवोदयतादो । पुरिसवेदस्म परोदयो षोऽथ, इत्थिवेदे उदिस्य पुरिसवेदस्सुदयामावाधो । सादावेदपीय चदुसंजठपायं सोदय-परोदयो षोऽथ, उदयण परावचणपयडितादो । बसकिपीय मिष्मइडि प्यहुडि जाव अमज्जसम्पाडिडि ति सोदय-परोदयो, एदेषु पडिषस्सुदयसंमवाधो । उवरि सोदयो षेव, पडिबस्सपयडीण उदयामावाधो । उच्चागोदस्म मिष्मइडिप्यहुडि जाव संजठामवदा ति षोऽथ सोदय-परोदयो, एतेसु लीचागोदुदयसंमवाधो । उवरि सोदयो षेव, लीचागोदस्सुदयामावाधो ।

पंचपात्रावरणीय चउदयसणावरणीय-चउदयसंजठ-पंचतराव्याणं चित्तो षोऽथ, धुवचंदि तादो । सादावेदपीय बसकिपीय मिष्मइडिप्यहुडि जाव पमसपयडि ति सांतो षोऽथ, पडिबस्सपयडीण संजठमाधो । उवरि चित्तो, चिपडिबस्सतादो । पुरिसवेदुच्चागोदयं

पहम स्तवेदीये विषयं कहने हैं— यहाँ उदयसे बन्ध पूर्वमें वा पश्चात् स्थितिमें होता है यह विचार नहीं है क्योंकि नियमन यहाँ पुरुषवत् उदयका अभाव है तथा नय प्रकृतियोंके बन्ध और उदयक सुस्पष्टका अभाव है ।

पांच आनावरणीय और आनावरणीय और पांच अमरावका स्वादय बन्ध होता है क्योंकि ये प्रुषवर्त्त हैं । पुरुषवत्ता परादय बन्ध होता है क्योंकि, स्त्रीवत्ता उदय होनेपर पुरुषवत्ता उदयका अभाव है । सातावरणीय और और अंजलनका स्वादय परादय बन्ध होता है क्योंकि उदयका अभाव ये प्रकृतियों परिपक्वतामें हैं । यशस्वीतिथि मिष्यादिसिद्ध अकर समपत्तमयगदितक स्वादय परोदय बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणग्यामीमें उमकी प्रतिपत्त प्रकृतिक उदय सम्मय है । उपरिप गुणग्यामीमें उमका स्वादय ही बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपत्त प्रकृतिक उदयका अभाव है । उच्चगात्रका मिष्यादिसिद्ध अकर मेषतासंपत्त गुणग्याम तक स्वादय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणग्यामीमें लीचगात्रका उदय सम्मय है । मेषतासंपत्त ऊपर स्वादय ही बन्ध होता है क्योंकि यहाँ लीचगात्रक उदयका अभाव है ।

पांच आनावरणीय और आनावरणीय और अमराव और पांच अमरावका निरुत्तर बन्ध होता है क्योंकि ये प्रुषवर्त्त हैं । आनावरणीय और यशस्वीतिथि मिष्यादिसिद्ध समपत्तमय तक आनावरणीय बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ उमकी प्रतिपत्त प्रकृतिक बन्ध पाया जाता है । ऊपर उमका निरुत्तर बन्ध होता है क्योंकि यहाँ इनका बन्ध प्रतिपत्त प्रकृतिकोंके बन्धन रहित है । पुरुषवत् और उच्चगात्रका मिष्यादिसिद्ध एवं

वात्सि, विगाहगदीए बह्मणपेरइयमसंभरसम्मादिहीसु वेउभियचउक्कस्स बंधामावाओ । तित्थपरस्स पुण त चेव तेत्तीस पचया, तस्य णवुंसपवेदपचयदमआओ । वेउभियचउक्कस्स देवगाइसंहुओ, तित्थपरस्स देव-मज्जुमगइसहुओ बंधो । वेउभियचउक्कस्स तिरिक्ख मज्जुममजदसम्मादिही सामी । तित्थपरस्स तिगाइसंभरसम्मादिही सामी, तिरिक्खगाइमं जदसम्मादिहीसु तित्थपरबंधामावाओ । बंधद्वान पचवाक्कइहुअं च सुगमं । । पदासिं पधा सादि भद्दुओ, पुवबंधिवाभावाओ ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद पुरिसवेद णवुसयवेदएसु पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-सादावेदणीय-चउसजलण पुरिसवेद जमकित्ति उच्चा-गोद-पंचंतराहयाण को वधो को अवंधो ? ॥ १६९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुट्ठि जाव अणियट्ठिउवसमा खवा वधा । एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ १७० ॥

विमहागतिम असमान मारजी असयतसम्यग्दृष्टियोमं वैद्विधिकचतुष्कक बन्धक्य अमाय ह । डिप्पु तीर्यकर ग्रहणिके व ही तेत्तीस प्रपथ ह् कयोकि, इममे नहुंसकबद् ग्रथय दत्ता ज्ञता है । वैद्विधिकचतुष्कक्य देवगतिम संपुक्त और तीर्यकर प्ररुतिवा देव एवं मनुष्य गतिसे संपुक्त बन्ध होता है । वैद्विधिकचतुष्कक्य बन्धक्य नियेक व मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी है । तीर्यकर ग्रहणिक तीन गतियेक असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी है कयोकि तिर्यगगतिक असंयतसम्यग्दृष्टियोमं तीर्यकरक बन्धका अमाय है । बन्धारग्राल और बन्ध पुच्छित्तिस्वान सुगम है । इनका बन्ध सादि और असय होता ह् कयोकि व प्रवचणी नहीं है ।

वेदमार्गजानुमार आगेही, पुरुषरी और नहुंसकइरियेमे पांच ज्ञानावरणीय, चार दृष्टानावरणीय मानावर्नीय चार संग्रजन, पुरुषवेद, यशस्विनि, उच्छगोत्र और पांच अन्तरप, इनका तीन बंधक और चउदस अचपक है ? ॥ १६९ ॥

यद म्थ सुगमं है ।

मिप्पाधट्ठि तेअर अनिहुत्तिअण उपजमरु भार धावक तक बंधक है । वे बन्धक है, बंधक नहीं है ॥ १७० ॥





मिच्छन्निष्ठि-सासणसम्मानिष्टीसु सांतर-भिरतरो षणो । कर्म भिरतरो ? न, पम्प-सुष्कन्त्रेस्तिपसु  
तिरिक्त्वा-मनुस्सेसु पुरिसवेदुच्चागोक्षणं भिरतरैषुपठमादो । उवरि भिरतरो, पडिबन्ध  
पमडीमं पचाममादो ।

सम्पगुणज्ञानमोषपञ्चपसु पुरिस-जुसयवेदसु नवनिष्ठिसु अवसंसा एव परासि  
पञ्चया ह्येति । नवनिष्ठि पमत्तसत्रेसु आहार-आहारमिस्सकयजोगपञ्चया अवमेदुच्चा,  
इत्तिवेदेदुच्चात्तत्र तदसंभवादो । असंभदसम्मानिष्टीसु ओरात्ति-वेठविपमिस्स-कम्मइयकय-  
जोगपञ्चया अवमेदुच्चा, तत्र असंभदसम्मानिष्टीपमप-जत्तकत्तमावादो । संस सुगमं ।

पंचपाप्मावरणीय-चठदमआवरणीय-चहुसंजठप-पंचतण्डयार्थं मिच्छन्निष्ठि चउगइ  
सहुत्त । सासणसम्मानिष्टी तिगइसहुत्त, भिरयगइए अभावादो । सम्मानि-अतिष्ठि-असंभदसम्मा  
निष्ठिणो देव-मनुसगइसहुत्त । उवरिमा देवगइसंहुत्त अगइसंहुत्त च ववत्ति । सादावदनीय  
पुरिसवेद जसकिस्सीमो मिच्छन्निष्ठि-सासणसम्मानिष्ठिणो तिगइसहुत्त, सम्मानिच्छन्निष्ठि-असंभद

सासादनसम्पगइति गुणस्यामौमै सास्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शुद्ध — निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यहाँ क्योंकि पद्म और शुद्ध जेदपावके तियच व मनुष्योंमें पुरुषवेद  
और उच्छगोचका निरन्तर बंध पाया जाता है ।

ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होना है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धन  
अभाव है ।

संयुक्त गुणस्यामौमै औद्यम्ययामे पुरुषवेद भार मनुष्यबन्धको कम करनेपर होय  
यहाँ इन प्रकृतियोंके प्रत्यय होते हैं । विशेषता इतनी है कि प्रमत्तसंपत्तोंमें आहारक  
और आहारकमिथ आपयोगप्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि, जहाँवेदके बन्ध युक्त  
जीवोंके वे दामों प्रत्यय सम्भव नहीं हैं । अर्जुनसम्पगइतिमें जीवभारिकमिथ वैधियिकमिथ  
और अर्जुन काययोग प्रत्ययको कम करना चाहिये क्योंकि, अविधिमें अर्जुन  
सम्पगइतिमें अपवाप्तकाहका अभाव है । होय प्रकृति सुगम है ।

पांच आमावरणीय चार अर्जुनवरणीय चार स्वेयस्स और पांच अन्तर्यामि  
मिच्छादि चार गतिधर्म संयुक्त तथा सासादनसम्पगइति तीन गतिधर्मोंसे संयुक्त  
बांधते हैं क्योंकि सासादनसम्पगइतिमें नरकगतिके बन्धनका अभाव है । सम्पमिच्छादि  
और अर्जुनसम्पगइति बन्धन य मनुष्यमत्तिस संयुक्त बांधते हैं । उपरि स्त्रीवेदी और  
ब्रह्मनिष्ठ संयुक्त और गतिधर्मयोग रहित बांधते हैं । आमावरणीय पुरुषवेद और  
पराधीनिक मिच्छादि य सासादनसम्पगइति तीन गतिधर्मोंसे संयुक्त, सम्पमिच्छादि



मिच्छादिष्टि-सासपसम्मादिष्टिषु सातर-भिरतरो यथो। कथं विरंतरो ? न, एवम्-सुखकलेस्विएषु तिरिक्च-मनुस्सेषु पुरिसवेदु-आगोराण्ण विरंतरं धुवत्तमाप्नो। उवरि विरंतरो, पडिबस्स पयडीपे वेणामात्रो।

सम्पुण्णसुखभाषणोपपन्नपसु पुरिस-मनुसयवेदेसु अवधिदेसु अवसेमा एव एदसि पच्चया होति। अवरि पमत्तसंयवेसु आहार आहारमिस्स-अयजोगपच्चया अवसेदध्या, इरियेवोदइस्सअं तइसंमवाप्नो। असंजदसम्मादिष्टिषु ओराठिय-वउत्थिममिस्स-अमइयअय जोगपच्चया अजपेदध्या, एरथ असंजदसम्मादिष्टिपमत्तसंयजोगपच्चया। ससं सुगमं।

पंचपाप्मावरणीय-चतुर्दशपाप्मावरणीय-चतुर्दशपाप्मा-पंचतरायां मिच्छादिष्टि चतुर्दश सुसुत्त। सासपसम्मादिष्टि तिगइससुत्तं, मियगईए अमावदो। सम्मामिच्छादिष्टि-असंजदसम्मा-दिष्टिषो देव-मनुसगइससुत्तं। उवरिमा देवगइससुत्तं अगइससुत्तं च वंचति। सादवेदनीय पुरिसवेद-असकित्तीभा मिच्छादिष्टि-सासपसम्मादिष्टिषो तिगइससुत्तं, सम्मामिच्छादिष्टि अमंजद

सासात्तनसम्पददि गुणस्फालोंमें सातर-भिरन्तर वन्ध होता है।

उक्त—भिरन्तर वन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि पद्म और सुख अथवा पापों के स्थान व मनुष्यों में पुण्यवेद और उच्छ्वगोत्रका भिरन्तर व ध पाया जाता है।

ऊपर उक्त भिरन्तर वन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिबोध वन्धका अभाव है।

म. गुणस्फालोंके बोधप्रत्ययों में पुण्यवद और लपुंसकवेदको कम करनेपर दोष वहाँ इन प्रकृतिबोध प्रत्यय होते हैं। विशेषता इतनी है कि प्रमत्तसंयतोंमें आहारक और आहारकमिष अययोगप्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि अतीवृत्त उदय गुण जीवोंके वे दोनों प्रत्यय सम्मय नहीं हैं। अक्षयतसम्पददियोंमें भीषारकमिष वैधियिकमिष और कर्मकापपाण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि, अतीवृत्तियोंमें अक्षयत सम्पददियोंके अपर्जातकमका अभाव है। दोष प्रकृति सुगम है।

पांच आनावरणीय चार वर्णावरणीय चार वस्त्रकम और पांच अन्तरायको मिच्छादिष्टि चारों गतिपोंसे संयुक्त तथा सासात्तनसम्पददि तीन गतिपोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि सासात्तनसम्पददियोंमें नरकगतिके वन्धका अभाव है। सम्पत्तिमिच्छादि और अक्षयतसम्पददि देवगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। उपनिम अतीवृत्त जीव देवगतिसे संयुक्त और गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं। मानावेदनीय पुण्यवेद और पदार्थोंको मिच्छादिष्टि व सासात्तनसम्पददि तीन गतिपोंसे संयुक्त सम्पत्तिमिच्छादि

सासणमि सांतरो, तसो तेमिमुक्कवादाभावादो । अवमेसाणं पयडीणं थपो सांतरो, अनियमपेग-  
समययधुवलभादो । एमा परुषणा ओपादो थावेण वि ण विरुन्हादि, समाजलुवलभादो ।

पच्छया ओपपच्चयतुत्थ । णवरि मिच्छादिदि-सासणसम्मादिद्वीण जहाकमेण  
तेवण्णट्टेत्तात्थीमुत्तरपच्छया, पुरिस-णर्धुमयवेदपच्छयाणमभावादो । तिरिक्खाउभस्स मिन्धमिदिदि  
सासणसम्मादिद्वीसु कमेण पंचास पंचेत्तात्थीस पच्छया, मोराटिय-वेउन्वियमिस्स-कम्मइयकय  
ओग-पुरिस-णभुसयवेदपच्छयाणमभावादो । तदभावो वि इत्थिवेदोदइत्थणमपज्जत्तफले  
धाउभकम्मस्स वचामावादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाभोगाणुपुन्नि-उन्नेवाणि मिच्छादिदि-सासण  
सम्मादिद्वीपो तिरिक्खगइमत्तुत्त वंचति । अप्पसत्तविहायगदि-हुमग-हुस्सर-मणदेज्ज-पीचा-  
गोदाणि मिच्छादिदिपो तिगइसत्तुत्त वंचति, देवगइण वचामावादो । सासणसम्मादिद्वीणे तिरिक्ख  
मणुसगइसत्तुत्त वंचति, देव गिरयगईए सह वचामावादो । वउसत्तण-वउसंपइयाणि तिरिक्ख  
मणुसगइसत्तुत्त वंचति, एदासिं नित्य-देवगईहि सह वचामावादो । पीणगिदिदिय मज्जानु-

पाया जाता है । सासाधनसम्यग्दृष्टि गुणम्यात्ममें सास्तर ग्रन्थ हाता हैं क्योंकि, उक्त  
गुणस्यात्मसं उक्त जीवोंके उत्पत्तिका अभाव है । शेष प्रवृत्तियोंका बन्ध सास्तर होता है  
क्योंकि, बिना नियमके उनका एक समय बन्ध पाया जाता है । यह प्ररूपणा ओषसे योड़ी  
भी बिन्द नहीं है क्योंकि, समाजता पायी जाती है ।

प्रत्यय ओषप्रत्ययोंके समान हैं । विरोधता इतनी है कि मिथ्यादृष्टि आर  
सासाधनसम्यग्दृष्टियोंके पयाक्रमम तिरपन और अकृतासीम उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि  
उनके पुण्यक्त् और मणुसकमेव प्रत्ययोंका अभाव है । तिर्यगायुके मिथ्यादृष्टि और  
सासाधनसम्यग्दृष्टि गुणस्यात्ममें कामस पचास और पतामीस प्रत्यय हैं क्योंकि उनके  
भीतरिक्कमिध बेन्धियिकमिध कामनकाययोग पुरुषक्त् और मणुसकमेव प्रत्ययोंका अभाव  
है । उनका अभाव भी अविरोधय युक्त जीवोंके अवसातकालमें आयु कर्मके बन्धका  
अभाव हानेस है ।

तिर्यगायु तिर्यगाति नियमगतिप्रयायानुपूर्वी आर उचातक्य मिथ्यादृष्टि व  
सासाधनसम्यग्दृष्टि जीव नियमगतिस् सयुक्त बांधन है । अप्पसत्तविहायगति हुमग  
हुस्सर, मणारेप और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टि जीव तीन गतिपोंस सयुक्त बांधत है  
क्योंकि उनक देवगतिके व धका अभाव है । सासाधनसम्यग्दृष्टि तिर्यगाति व मनुष्य  
गातस संयुक्त बांधत है क्योंकि, उनक देव व मरक गतिक साथ उमका बन्ध नहीं होता ।  
आर संस्थान और आर संहननका नियमान व मनुष्यगतिस् संयुक्त बांधन है क्योंकि,  
इसका मरकगति व देवगतिक साथ बन्ध नहीं हाता । म्यानगुत्तिवय और मज्जानु-



एतिसो येव विमयो, ण्णिय अण्णय कन्ध वि । तेण दम्पट्टियणय पङ्कच ओधमिदि वुत्तं ।

असादावेदणीयमोघ ॥ १७३ ॥

असादवेदणीयमिच्छेदण पयडिणिदेसो ण कदो, किन्तु असादवेदणीय-अरुदि-सोग  
अधिर-अगुह-अजमकिदि ति छप्पयडिपडियो असाददडो असादवेदणीयमिदि णिदिहो । जहा  
सुच्चदामा मामा, भीमसेणो सेणो, बल्लेवो देवो ति । एवासि छण्ण परूवणा ओध-  
तुत्तम् । पवरी एरुय वि पच्चयविमेमो सामितविमेमो च पायप्पो ।

एककट्टाणी ओघ ॥ १७४ ॥

एकस्मि मिच्छाद्विगुणद्वान् जाआ पयडीओ पंधपावाग्गा हादण चित्रंति तासिमेगद्वानि  
ति सण्णा । तिस्रे एककट्टाणीय परूवणा ओपतुन्त्य । तं जहा — मिच्छत्तस्म पधोदया सम  
वोच्छिण्णा । णुययवेद-भिरयाठ-भिरयगह-भिरयगहाभोगाणुपुन्नी एरुदिय पीरुदिय-तीरुदिय  
चउरुदियआदि-आदाव-वावर-सुहुम अपग्गच-साहारणाण पधोदयवोच्छदविचारो णरिय,

विशयता है अन्यम भीर कहीं भी थिगयता नहीं है । इसीप्रिय द्रव्याधिक मयकी अपेक्षा  
कर ओघक समान है यन्मा कहा गया है ।

अमानावेदनीयकी प्ररूपणा ओपन ममान है ॥ १७३ ॥

अमानावेदनीय इस पदम प्ररुतिका निर्दिष्ट नहीं किया है किन्तु अमानावेदनीय  
अरुति शाक अस्थिर अगुम और अयणावृत्ति इन छह प्ररुतियोंम सम्बन्ध अमानावेदक  
अमानावेदनीय पदम निर्दिष्ट किया गया है । अस्म सत्त्वमात्राका 'मामा सीममनको  
सम' और पदवचका 'वय पदम निर्दिष्ट किया जाता है । इन छह प्ररुतियोंकी प्ररूपणा  
आघक समान है । शिग्यरुतता है कि यहाँ भी प्रत्ययमद् और व्याप्तियमद् जानना चाहिये ।

एकस्थानि प्ररुतियोंकी प्ररूपणा आपके समान है ॥ १७४ ॥

एक मिथ्यारादि शुभस्थानमें जा प्ररुतियों सम्बन्धयत्त दाकर स्थित है उसकी  
एकस्थानिक समान है । उन एकस्थानिकाकी प्ररूपणा आघक समान है । यह इस प्रकार  
है — मिथ्यापदका पदम और उदय दाना माय प्युच्छिष्ठ दान है । मयुगपद नारकायु,  
मरुगमनि मरुगमनिमायायानुपूर्वी एरुमिथ्य हीमिथ्य अमिथ्य अतुमिथ्य जानि  
आतार स्थानर हृदम अययान् जायमायाण एकवच्य और उदयव प्युच्छदक पिपात

वैपिषउक्त्वापि मिष्मिहृदिणो चउगइसंजुत, सामयसम्मादिदिणो तिगइसंजुत वैपति,  
गिरयगईए जमावाधो ।

सम्मासि पयडीण तिगइमिष्मादिदि-सामयसम्मादिदिणो सामी, गिरयगईए इतिववेदु  
दयामावाधो । वैपद्याज वपविषदृष्ट्यां च सुगम, सुगुविदृष्ट्याधो । ससण्हं धुवपयडीणं मिष्म  
इदिमिह चउविहो वैपो । सामय दुविहो वैपो, अणा-धुयामावाधो । अवसेसामं सम्मर  
सादि भदुवो, भदुववपिष्माधो ।

गिहा पयला य ओघ ॥ १७२ ॥

परासि दोन्ह पयडीण जहा ओपमि परूवणा कदा तहा कायग्या । जवरि परूवणसु  
पुरिस जवुमपवेदपण्णया अवणग्या । जवरि असइसम्मादिदिमिह ओताठिय-वेठमियमिस्स  
कम्मइयअयजेता च, इतिववेदादियसुदो । पमत्तसजदमिह पुरिस जवुमपवेदेहि सह बाहुरदुम  
च अववेदम्भ, अणसरयवेदोदइस्सअणमाहारसरिस्सुदयामावाधो । तियइमिष्मदिदि-सामयसम्मा-  
दिदि-सम्मादिदि-अयजइसम्मादिदिणो सामी, गिरयगईए इतिववेदोदइस्सअणममावाधो ।

वन्धियचतुष्को मिष्माददि चार गतिवासे संयुक्त बांधते हैं । सासात्वनसम्पगदपि तीव  
गतिथोस संयुक्त बांधते हैं क्योंकि उनके नरकगतिका बन्ध नहीं होता ।

मय प्रकृतियोंके तीन गतिथोके मिष्माददि और सासात्वनसम्पगदपि स्वामी हैं  
क्योंकि नरकपतिमें त्रींशके उदयका अभाव है । वन्धियचतुष्को और वन्धियचतुष्को  
सुगम हैं क्योंकि वे मूलम ही निर्मित हैं । सात ध्रुवप्रकृतियोंके मिष्माददि गुणस्थानमें चारों  
प्रकारका बन्ध होता है । सासात्वन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता क्योंकि, यहाँ  
अनादि य जव बन्धका अभाव है । सात प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि च अनुप बन्ध होता है  
क्योंकि, वे अग्रजबन्धी हैं ।

निडा और प्रचत्त प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओपके सयान हैं ॥ १७२ ॥

इस दो प्रकृतियोंकी श्रम ओपमें प्ररूपणा की गई है जैसे करना चाहिये । बिनाय  
यह है कि प्रत्ययमें पुण्यवेध और अनुपकवेध प्रत्ययोंका कम करना चाहिये । इतनी और  
भी बिनायता है कि अमयतमसम्पगदपि गुणस्थानमें औदारिकमिध वैकिमिधमिध और अमयज  
कायबाग प्रत्ययका भी कम करना चाहिये क्योंकि त्रींशके अधिकार है । प्रमत्तमयत  
गुणस्थानमें पुण्य और अनुपक वेधका साथ आहारकनारीरक भी कम करना चाहिये  
क्योंकि, अमहास वेदादय पुण्य जीओंके आहारकनारीरक उदयका अभाव है । तीन  
गतिथोके मिष्माददि सासात्वनसम्पगदपि अमयमिष्मादपि और अमयतमसम्पगदपि स्वामी  
हैं क्योंकि नरकगतिम त्रींशउदय पुण्य जीथोका अभाव है । कारण इतनी ही भाषण

एचिओ चव विसमो, ण्थि अण्णय कत्थ वि । तेण दव्यद्वियणयं पडुव्व ओपमिदि सुत्तं ।

**असादावेदणीयमोघ ॥ १७३ ॥**

असादावेदणीयमि चेदण पयडिणिदेसो ना कटो, किन्तु असादावेदणीय-अरदि-सोग  
अविर-असुह-अजसकिंति' ति छप्पयडिपडिओ असाद्वदओ असादावेदणीयमिदि भिदिहो । जहा  
सन्चहामा मामा, मीमसेणो सेणो, वत्तेवो देवो ति । एदासिं छण्ण पडुव्वणा ओप  
तुत्त । पवरि एत्थ वि पन्चयविसमो सामिचविससो च णायओ ।

**एककट्टाणी ओघ ॥ १७४ ॥**

एकमि मिच्छादिगुणद्वारे जाओ पयडीओ वपपाओग्गा हादण चिडंति तासिमेगहाणि  
ति सप्पा । निम्मे एककट्टाणीण पडुव्वणा ओपतुत्त । त जहा — मिच्छत्तस्स वपेदपा सम  
वोच्छिण्णा । गवुमयवेद-भिरयाउ गिरयगइ-भिरयगइपाओग्गाणुपुवी एइदिय बीइदिय-तीइदिय  
चठरिदियजादि-आदाव-आवर-सुहुम अपन्नअत्त-साहाएणाण वपेदयवोच्छदविचारो णरिभ,

विगतता है अन्वय भार कहा मी विगेयता नहीं है । इसीछिय द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा  
कर ओघक समान है ऐसा कहा गया है ।

**असातावेदनीयकी प्ररूपणा ओपके समान है ॥ १७३ ॥**

असातावेदनीय इस पद्वन् प्ररुनिका निर्दिष्ट नहीं किया है किन्तु असातावेदनीय  
अरति शोक अरिपर अशुभ भार अवज्ञाकीति इन छद प्ररुनियोंस समस्त असातावेदक  
असातावेदनीय पद्वन् निर्दिष्ट किया गया है । जिस मत्पयामाकन्न 'मामा' मीमसन्नको  
सम मीम पन्नपयका 'वय पद्वन् निर्दिष्ट किया जाता है । इन छद प्ररुनियोंकी प्ररूपणा  
आपक समान है । उपाय इतना है कि यहाँ मीमस्यवमन्न भार वषामिरयमन्न आभना चाहिये ।

**एकम्यानिक प्ररुनियोंकी प्ररूपणा आपके समान है ॥ १७४ ॥**

एक मिच्छादि छुणहयाममं जा प्ररुनियों वग्घयाग्य हाकर स्थित हैं उनकी  
एकम्यानिक सहा है । उन एकम्यानिकोंकी प्ररूपणा ओपक समान है । यह इस प्रकार  
है— मिच्छाग्यका वग्घ भार उइय वाना माय पुप्पिउय हात है । गवुमयवद भारकायु  
मरुगति नरुगतिमायाग्यानुपुवी एवगिउय तीगिउय चतुगिउय आनि  
माताद ग्यावर गृहम अयथाण आगमायाग्य इन वग्घ भार उइय पुप्पिउका विचार





मिच्छत चउगइससुतं वंधइ । जउसयवेद-हुंहुसउणाणि तिगइससुत, देवगईए सह  
 वधामावादो । फिरयाउ [फिरयगइ] फिरयगइपाभोगाणुपुष्पीओ फिरयगइसंसुतं वंधइ । कुरो ?  
 सामावियादो । अपञ्चसप्तसप्तसेवद्वसपडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइससुतं, फिरय-देवगईहि सह  
 वधामावादो । अवससाओ पयडीओ तिरिक्खगइससुतं, तस्य ताण नियमइसपादो । मिच्छत-  
 जउसयवेद-एइदियादाव-भावर-हुंहुसउण-असंपत्तसेवद्वसपडणाण तिगइमिच्छाइही सामी,  
 फिरयगईए इरियेवेहुदयामावादो । फिरयाउ-फिरयगइ-पीइदिय-तीइरिय चउरिंदियमासि  
 फिरयाणुपुष्पि-सुहुम-अपञ्च-साहाएणाण तिरिक्ख-मणुसा सामी । वधद्वयं वंधविण्णद्वयं  
 च सुगमं । मिच्छतस्स चउप्पिहो वंधो । सेसाण साहि-अदुओ ।

### अपञ्चकस्त्राणावरणीयमोघ ॥ १७५ ॥

एतथ वि पुण्य व परुवेदप्वं । अहवा अपञ्चकस्त्राणावरणीयपहाणो दहओ अपञ्चकस्त्राणा-  
 वरणीयमिदि मण्णइ । अहा गिंवेण-कयम-जु-जंवीरवणमिदि । अपञ्चकस्त्राणचउक्क-मणुसगइ  
 ओरात्थिसरीर ओरात्थिसरीरभंगोवण-वज्जरिसहवहरत्तासत्यजसरीरसपडण-मणुसगइपाभोगाणु-

मिथ्यात्वका चारों गतियोंसे संयुक्त बांधता है । मनुसकवइ और हुण्डसंस्थानको  
 तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है क्योंकि वचगतिके साथ उनके बन्धक्य अभाव है । नारकायु,  
 [नरकगति] और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वको नरकगतिसे संयुक्त बांधता है क्योंकि देसा  
 स्वभाव है । अपर्याप्त और असंप्राप्तसुपाटिकासहननको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे  
 संयुक्त बांधता है क्योंकि नरकगति और देवगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है । शेष  
 प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसंयुक्त बांधता है, क्योंकि, तिर्यग्गतिके साथ उनके बन्धक्य  
 नियम देखा जाता है । मिथ्यात्व मनुसकवइ एकेन्द्रिय आत्माप न्यावर, हुण्डसंस्थान  
 और असंप्राप्तसुपाटिकासहननके तीन गतियोंके मिथ्याद्वारे स्वामी हैं क्योंकि नरकगतिम  
 स्वीकृतके बन्धक्य अभाव है । नारकायु नरकगति त्रीन्द्रिय त्रीन्द्रिय जनुरिन्द्रिय आति  
 नारकायुपूर्वी सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इन प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यक् व मनुष्य  
 स्वामी हैं । गन्धाप्मान और बन्धविमलस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका चारों प्रकारका बन्ध  
 होता है । शेष प्रकृतियोंका आदि व अन्त बन्ध होता है ।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओपके समान है ॥ १७५ ॥

यहां भी पूर्वके समान प्ररूपणा करना चाहिये । यथावा अप्रत्याख्यानावरणीय  
 प्रधान वज्जरको अप्रत्याख्यानावरणीय शब्दसे कहा जाता है । जैसे कि नीम आम कच्चा  
 आम और अमर, इन वृक्षोंकी प्रधानतासे इतर वृक्षोंसे भी युक्त वर्गोंको नीमवन  
 आमवन कच्चावन आमवन और अमरवन शब्दोंसे कहा जाता है । अप्रत्याख्याना  
 जनुष्क, मनुष्यगति औत्तारिकशरीर, औत्तारिकशरीरांगोपांग वसर्पमवज्जनाराचशरीर  
 सहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी इन अप्रत्याख्यानावरणीयसहित प्रकृतियोंकी

पुष्पीणमप-चक्राणावरणीयसंनिधानं परूतणा ओषतुस्त्य । तं अह— अपचक्राणावरणवत्तत्स  
 संशोदया समं वोष्मिष्णा, असंजदसम्मादिष्टिहि चेष तनुमयदसणादो । मनुसगदपात्रोमात्र-  
 पुष्पीय पुष्प ठहयो पच्छ वषो, सामन्यसम्मादिष्टि-असंजदसम्मादिष्टीसु तन्वोष्मेददसणादो ।  
 अवसेसाय पयडीण पुष्प वषो पच्छ ठहयो वोष्मिष्णो तहोवत्तमादो ।

सम्पत्तिं पयडीणं वषो सप्तरय सोदय-परोदयो । जवरि सम्पत्तिमिच्छादिष्टि-  
 असंजदसम्मादिष्टीसु मनुमगदगुण-ओराटियदुग-व-वरिसहमयदपाण परोदयो वषो, देवेसुदपा-  
 नावादो । अपचक्राणावरणवत्तत्स वषो पिरतरो, सुववधिषादो । मनुमगद-मनुमयद-  
 पात्रोमात्रपुष्पीण मिच्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टीसु सानर-पिरतरो । कुदो पिरतरो ? आगदादि  
 देवेहिंतो इतिवेदमनुस्सेसुप्यणाव भतेसुनुत्तकाल पिरतरत्तेण तनुमयदवधदसणादो ।  
 उवरि निरतरो, देवसम्पत्तिमिच्छादिष्टि असंजदसम्मादिष्टीसु पिरतरवधुवत्तमादो । एवमेर-  
 टियसरि-ओराटियसरिगोवंगणे पि वत्तव, सणत्कुमादिदेवेहिंतो इतिवेदसुप्यणाव  
 पिरतरवधुवत्तमादो । वरिसहसंजदसम मिच्छादिष्टि-सामन्यसम्मादिष्टीसु वषो सतिरो ।

प्रकृषा जोषक समान है । यह इन प्रकारसे है— अमन्वात्पत्यवतुष्कः वन्ध और  
 उक्थ इत्यादि साधनें व्युत्थित होते हैं क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें ही उन दोनोंका  
 व्युत्थित होना जाता है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें उक्थ और पश्चात् वन्ध  
 व्युत्थित होता है क्योंकि साक्षात्तसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 क्रमशः उनका व्युत्थित होना जाता है । ऐसे प्रकृतियोंका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उक्थ  
 व्युत्थित होता है क्योंकि जैसा पाया जाता है ।

सब प्रकृतियोंका वन्ध सबत्र स्वावय परावय होता है । विशेष इतना है कि  
 साम्यमिच्छादि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिविक्रम औदारिकविक्रम  
 और वज्रपद्मसंहननका परेवय वन्ध होता है क्योंकि वहाँमें इतना उक्थामात्र है ।  
 अमन्वात्पत्यावरणवत्तुष्कः वन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वह शुक्लवन्धी है । मनुष्यगति  
 और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिच्छादि और साक्षात्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 साम्तर निरन्तर वन्ध होता है ।

शुक्ल—निरन्तर वन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि ध्यानसाधक देवोंमेंसे लीकेही मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके  
 अमर्तुहर्त काय तक निरन्तर रूपसे उन दोनों प्रकृतियाँका वन्ध देखा जाता है ।

साक्षात्तसम्यग्दृष्टि के ऊपर उभर निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, साम्यमिच्छादि और  
 असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंमें निरन्तर वन्ध पाया जाता है । इसी प्रकार औदारिकविक्रम और  
 औदारिकविक्रमोपागोपागके भी कहना चाहिये क्योंकि, समस्तुमाविक देवोंमेंसे  
 लीकेही उत्पन्न हुए जीवोंके उनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है । पद्मसंहननका  
 मिच्छादि और साक्षात्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानाम साम्तर वन्ध होता है । उपरिम

उत्तरि पिरंतरो, पडिवक्खपयइणिं यषामावादो ।

अपञ्चस्त्राणचठक्कस्स मन्वगुणत्रणेसु ओषपञ्चया वेव । जवरि पुरिस  
जुसुयपञ्चया सञ्चय अवणदव्वा । असंजदसम्मादिट्ठिं भोरालिय-वेठम्बियमिस्स  
कम्मइयपञ्चया च अण्णेदव्वा । एव व-अरिसहवइरणारायणसरिंसंघडणस्स वि वत्तञ्च ।  
जवरि सम्मामिच्छइट्ठि असंजदसम्माइट्ठिं भोरालियकायजोगपञ्चमो अवणेदव्वो । मणुसगइ  
मणुसगइपाभोगाणुपुप्पी-भोरालियसरिं भोरालियसरिंभोगाणं मिच्छइट्ठि-सासणमम्मादिट्ठिं  
दुरुवूणावपञ्चया चव होंति, पुरिस-जुसुयपवेदपञ्चयाणममावादो । सम्मामिच्छइट्ठिं  
असंजदसम्मादिट्ठिं चाल्लिम पञ्चया, पुरिम-जुसुयपवेदेहि सह भोरालियदुगामावादो,  
असंजदसम्मानिट्ठिं वेठम्बियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमावादो च । सेम सुगम ।

अपञ्चस्त्राणचठक्कं मिच्छइट्ठिं चठगइसंठुच, सासणो तिगइसंठुचं, उत्तरिमा  
दुगइसंठुचं वंधंति । मणुसगइ-मणुसगइपाभोगाणुपुप्पीभो मणुसगइसंठुचं सञ्चे वंधंति ।

गुणस्थानोंमें निरन्तर प्रत्यक्ष होता है क्योंकि वहाँ इतनी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके सम्पर्क  
अभाव है ।

अप्रत्याप्तानावरणवस्तुत्पन्नके सब गुणस्थानोंमें आप्रप्रत्यक्ष ही हैं । विरोधता  
केबल इतनी है कि पुण्यवद् और मनुष्यक वस्तुत्पत्तियोंके मर्त्यक कम करना चाहिये ।  
असंयतसम्पत्तिदि गुणस्थानमें औदारिकमिथ्य और क्रियिकमिथ्य और काम्य प्रत्ययोंका  
भी कम करना चाहिये । इन्हीं प्रकार अज्ञानमयज्ञानावच्छादीरसंहननक भी कहना  
चाहिये । बिना इतना है कि सम्मामिच्छादि और असंयतसम्पत्तिदि गुणस्थानोंमें  
आवारिक कर्मयोग प्रत्यक्ष कम करना चाहिये । मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रमाणानुपूर्वी  
औदारिककारीर और आवारिककारीरोंगावांगक मिथ्यादि च साक्षात्तसम्पत्तिदि  
गुणस्थानोंमें दो कम आप्रप्रत्यक्ष ही हैं क्योंकि, पुण्य और मनुष्यक वेदप्रत्ययोंका अभाव  
है । सम्मामिच्छादि और असंयतसम्पत्तिदि गुणस्थानोंमें आलोच प्रत्यक्ष है क्योंकि,  
वहाँ पुण्य और मनुष्यक वस्तुत्पत्तियोंके साथ औदारिकमिथ्यका अभाव है तथा असंयतसम्पत्तिदि  
गुणस्थानमें धर्मिकमिथ्य और काम्य प्रत्ययोंका अभाव भी है । दोय प्रत्ययप्रमाण  
सुगम है ।

अप्रत्याप्तानावरणवस्तुत्पन्नके मिथ्यादि चार गतियोंसे संयुक्त साक्षात्त  
सम्पत्तिदि तीन गतियोंसे संयुक्त और उत्तरिम तीन वा गतियोंसे संयुक्त बांधत है ।  
मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रमाणानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त सभी स्थिति की

अवममनिग्नियपयईजो मिच्छादिदि-सामणसम्मादिदिद्विषो तिरिस्त मणुमगइममुत्तं, मम्मामिच्छा  
दिदि-अमज्जदसम्मादिदिद्विषो मणुमगइममुत्तं वंभनि ।

अपच्यस्त्राणावरणवउत्तम्म निगइचदुगुणद्वाणिषो सामी । अवसेमाणं पयईजे  
निगइमिच्छादिदि सामणसम्मादिदिद्विषा देवगइसम्मामिच्छादिदि असंजदसम्मादिदिद्विषो व सामी ।  
वंचद्वानं वंचविषद्वद्वानं व सुगम । अपच्यस्त्राणावउत्तम्म मिच्छादिदिदि पउत्तम्मिहो पपो ।  
अपच्य निविहो । अवसेमाणं पयईजे सादि म्दुयो ।

पच्चक्खाणावरणीयमोघ ॥ १७६ ॥

एव भावरुवणं चिचिविभयाणुविद समरिय वत्तप्व ।

हस्त-रदि जाव तित्थयरेत्ति ओघ ॥ १७७ ॥

आपादो म्दसु सुत्तेसु अवदिहचोवमयमंहरिसणं मंदबुद्धिमिस्साणुमाइह व  
पुत्तरवि पन्नेमा — हम्म रइ मय दुगुणण वंभोदया सम वाच्छि-वंनि, अपुत्तरणपरिममण

वांचन है । इतर नीज म्दनिषोका मिच्छादिदि व सासादमसम्पादिदि निवगानि एयं  
मनुष्यवनिम संयुक्त तथा मम्मामिच्छादिदि व असंयतमसम्पादिदि मनुष्यवनिम  
संयुक्त वांचन है ।

अत्रयानवाभावरणवउत्तम्म नीज वनिषोका वत्त गुणवत्तवनी त्वापदी जीय  
व्यामी है । इतर म्दनिषोका नीज गमयाक मिच्छादिदि व सासादमसम्पादिदि तथा इय  
वनिम मम्मामिच्छादिदि व असंयतमसम्पादिदि व्यामी है । वत्तवत्तव नीज वत्तवत्तव  
व्याम गुणम है । अत्रयानवाभावरणवउत्तम्म मिच्छादिदि गुणवत्तव नीज वत्तवत्तव नीज  
वत्त गुणवत्तव नीज नीज वत्तवत्तव वत्तव हमा है । इतर म्दनिषोका वादि व अत्रय वत्त  
हमा है ।

प्रयानवाभावरणीयवत्त प्रयाना भावरु ममान ह ॥ १७६ ॥

वही वृत्त विद्यावताग वत्तव भावरुवत्तवत्त वत्तवत्तव वत्तव वत्तव ।

हम्म व रनिम एव नीज वत्तव प्रयान तत्त भावरु ममान प्रयाना ह ॥ १७७ ॥

वापरी अत्रा इम वत्तव अवांचन वृत्त वत्तवत्तव विद्यावताग विद्यावता तथा  
मन्त्रवृत्ति विद्यावत्तव मनुष्यवत्तव विद्यावत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव  
वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव वत्तव

दोषह' बोद्धव्यमात्रो । सम्प्रगुणगणेषु बभो संख्य-परोक्षो, परोक्ष वि संते बभविरोहा  
मात्रात् । मय-दुर्गुणं स्रष्टुगुणानामु पितरः बभो, भुवःविधातो । इत्स्म-रदीप मिच्छाद्वि-  
प्लव्दि जात पमत्तमप्रदा वि बभो मानीतो, तस्य पडिबन्धनमडिबन्धवत्तमादो । उवरी गिरतो,  
पडिवन्धनपडिबन्धमात्रादो । पञ्चया सुगमा, बहुभ्यो परुविदत्तादो । मिच्छाद्वि चउगदसत्तु  
वर्धति । पवरी इत्स्म-रदीपो तिगदसत्तु, गिरत्यगद सह बभविरोहादो । सम्प्रपयदीपो  
सायगा निगदसत्तु बभू, तस्य गिरत्यगद पचामात्रादो । सम्प्रामि गद्विद्वि असदसम्प्र-  
दिद्विपो दुगदसत्तु, तस्य गिरत्य-तिरिक्त्वगद बचामात्रादो । उवरीमा देवगदसत्तु, तस्य  
मेमगदस्य पचामात्रादो । पवरी अपुष्यकरणे चरिमत्तमभागे अगदसत्तु वर्धति । निगद  
मिच्छाद्वि-सायत्रमम्माद्वि सम्प्रामिच्छाद्वि अर्षवदमम्मादिग्णिषो सामी, मिस्त्वगद  
मिच्छाद्विवेदात्रादो । दुगदमज्जसंज्ञा सामी, देवगदस्य देवगदस्यममात्रादो । उवरीमा  
मनुस्सा चद, अणत्तय महत्त्वज्ञममात्रादो । वचद्वानं वचविपद्वानं च सुगम । मय-दुर्गुण

ममयमे उक्त बन्ध च उक्त्य द्वालोका बहुउक्त पाया जाता है । सब गुणस्थानोंमें उक्त  
बन्ध स्थाव्य परोक्ष होता है क्योंकि बन्ध प्रकृतियोंके उक्त्य मी होनेपर इनके बन्धका  
कार्य विराम नहीं है । मय माय दुर्गुणमात्र सब गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है  
क्योंकि व भुवःवर्धनी है । इत्स्म आर रतिका मिच्छाद्विमे केकर प्रमत्तसंयत तक  
मात्तर बन्ध होता है क्योंकि, यही इनको प्रनिपक्ष प्रकृतियोंके बन्ध पाया जाता  
ह । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यही प्रनिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव  
है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, उनका बहुत आर प्ररूपण किया जा चुका ह ।  
मिच्छाद्वि जीव उन्हें आर गतिधर्म संयुक्त बांधत है । विशेष इतना है कि  
इत्स्म आर रतिका तीन गतिधर्म संयुक्त बांधत है क्योंकि, नरकगतिके साथ  
उनके बन्धका विराम है । सब प्रकृतियोंको सामाजिकसम्प्रदाय तीन गतिधर्मोंसे संयुक्त  
बांधता है क्योंकि इस गुणस्थानमें नरकगतिके बन्ध नहीं होता । सम्प्रामिच्छाद्वि  
आर अमयतसम्प्रदायि दो गतिधर्म संयुक्त बांधत है क्योंकि उन गुणस्थानोंमें नरकगति  
आर जलगतिके बन्धका अभाव ह । उपरिम जीव वचगति संयुक्त बांधत है क्योंकि,  
उपरिम गुणस्थानोंमें शेष गतिधर्मोंके बन्धका अभाव है । विशापता यह है कि अपूर्वकरजक  
अन्तिम सत्तम भागमें गतिधर्मोंके संयुक्त बांधत है । तीन गतिधर्म मिच्छाद्वि, सायत्रम  
सम्प्रदायि, सम्प्रामिच्छाद्वि आर अमयतसम्प्रदायि स्वामी है क्योंकि नरकगतिमें  
संयुक्त उक्त्य सहित जीवाका अभाव है । दो गतिधर्मोंके संयुक्तसंयत स्वामी है क्योंकि,  
वचगतिमें वचगतिधर्मोंका अभाव ह । उपरिम गुणस्थानधर्मी मनुष्य ही स्वामी है क्योंकि  
सम्प्र गतिधर्मोंमें महाप्रतिधर्मोंका अभाव है । बन्धस्थान और बन्धविनष्टस्थान सुगम है ।

मिच्छादिद्विष्टिद्विष्टं चोच्यते । उच्यते त्रिविधो, पुनश्चात्रात्रादा । हम्म-रदीर्घं सञ्चरय सदि  
भदुवा, अदुवर्षविज्ञादो ।

मनुस्साउवस्त पुम्ब चो पच्छा उदयो चोमिच्छणो, असंभ्रदसम्मादिद्विष्टि अभियद्विष्टु  
जहाक्मेव चोच्यतेचोच्येदसणादो । मिच्छादिद्विष्टि-सासणसम्मादिद्विष्टि सु सोदय-परोक्ष्य चो ।  
असंभ्रदसम्मादिद्विष्टि परोक्ष्येव । कुदो ? सामावियादो । सञ्चरय चो पिरतरो, जहाक्मेव  
अत्तस्स वि अवेसुहुचपमापुनर्त्तमादो । मिच्छादिद्विष्टि पंचास, मामणस्स पचेत्तात्थीस पचवा ।  
ओरुत्तिप-वेत्तियमिस्स-कम्मस्यस्यओम-पुरिस पत्तुमयपचवाणग्मावादा । असंभ्रदसम्मा-  
दिद्विष्टि चालीस पचवा चोप-चपमु ओरुत्तिप-ओरुत्तिपमिस्स-वेत्तियमिस्स-कम्मस्य  
अयओम-पुरिस-पत्तुमयवेत्ताममावादा । सेसं सुगमं । सञ्चरे वि मनुसगाइसदुवर्ष च वचति,  
अप्पगहि सह विरोहदो । तिगमिच्छादिद्विष्टि-सासणसम्मादिद्विष्टि चो सामी । असंभ्रदसम्मा  
दिद्विष्टि चो देवा चो सामी अप्पन्तिरिचवेदो-इत्तण सम्मादिद्विष्टि मनुस्साउवस्त चामात्ताणे ।  
पंचाङ्गं चोच्यतेचोच्यते च सुगमे । सञ्चरय सदि-अदुवो चो ।

मय और अनुष्ठातृ मिच्छादि गुणस्थानमें आरा प्रकारका वन्ध होता है । उपरि  
गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वन्ध होता है क्योंकि वहाँ भुव वन्धका समाप है । हास्य  
और एतिका सर्वत्र सादि व अनुव वन्ध होता है क्योंकि वे अनुव वन्ध हैं ।

मनुष्ठातृ पूर्वमें वन्ध और पश्चात् अनुव स्पृष्टिगत होता है क्योंकि असंयत  
सम्पत्ति और अनियमितकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उत्पन्न व अनुवका स्पृष्टिगत देखा  
जाता है । मिच्छादि और आमात्रनसम्पत्ति गुणस्थानोंमें स्वेच्छ परोक्ष्य वन्ध होता है ।  
असंयतसम्पत्तिपूर्वमें परोक्ष्यसे ही वन्ध होता है क्योंकि देखा स्वभाव ही है । सर्वत्र  
निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि उत्पन्नका अवश्य वन्धकाल ही अन्तर्मुक्त प्रमाण पाया  
जाता है । मिच्छादिपूर्वमें पचस और सासणनसम्पत्तिपूर्वमें पचस प्रत्यय है क्योंकि,  
वहाँ औदारिकमित्र वैकिकमित्र कार्यकालयोग पुरुषवर्ष और सर्वसकल प्रत्ययोंका  
समाप है । असंयतसम्पत्तिपूर्वमें आलीस प्रत्यय है क्योंकि ओषप्रत्ययोंमेंसे औदारिक,  
औदारिकमित्र वैकिकमित्र कार्यकालयोग पुरुषवर्ष और सर्वसकल प्रत्ययोंका  
समाप है । ओष प्रत्ययप्रकरण सुयम है । मय ही मनुष्यगतिसे संयुक्त ही वांछत है  
क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ वचने वन्धका विरोध है । तीन गतियोंके मिच्छादि और  
सासणनसम्पत्ति चो सामी हैं । असंयतसम्पत्ति देव ही चो सामी हैं क्योंकि अन्य  
गतिनामे कीवदेव वृत्त सम्पत्तिपूर्वमें मनुष्ठातृ वन्धका समाप है । वन्धाव्यव  
और वन्धितप्रस्थान सुयम हैं । सर्वत्र सादि व अनुव वन्ध होता है ।

देवातवस्स पुण्वमुदयो पच्छा षधो वोच्छिन्नजि, अप्पमत्तासंजवसम्मादिहीसु फमेज  
 षधोत्तयवोच्छेदसपादो । सम्मगुणद्वापेसु परोदएणेव षधो, सोत्तयग्निह षधस्स अचंतामावस्स  
 अवद्वापयो । विरंतो षधो, भंतोमुदुसेण विणा षधुवरमामावाणे । मिच्छाहट्टिस्स एगूणवंचास,  
 सासपस्स चउवेतालीस, असंजवसम्मादिहिट्ठिस्स जात्तीसुत्तरपवया, वेउभिय-वेउभियमिस्स-भोरा  
 त्थिमिस्स-कम्मइयकयजोग-पुरिस-जुसुसयवेदानाममावाशे । उवरि पुरिस-असुसयवेदानहारदुपेहि  
 विजा ओषपवया षेव वत्तव्वा । सेसं सुगमं । सम्मत्थ देवगइसंजुसो षधो, अप्पगइहि सह षध-  
 विरहादो । तिरिक्ख-मनुस-मिच्छाहट्टि-सासपसम्माहट्टि-असंजवसम्माहट्टि-संजवसंजवदा सामी,  
 अप्पत्थ हिवाण तत्तवचविरोहादो । उवरिमा मणुसा षेव, अप्पत्थ महम्मइप्पममावादो ।  
 षधद्याणं सुगमं । अप्पमत्तद्याए सखेज्जदिभागं गंतूण षधो वोच्छिन्नजि । कुदो ? सुत्तानुसारि  
 गुरुवेसादो । साप्पि अद्भवो षधो ।

देवगइ-पंचिदियवादि-वेउभिय-सेजा-कम्मइयसरी-समचतुरससंस्थान-वेउभियसरी-  
 जयोदय-वण-गध-रस-फास-देवगइपाजोन्माणुपुत्थि-अगुस्वउदुव उवपाद-परपाहुत्तास-पसर-  
 विहायगइ-त्तस-वाटर-पन्नच-पत्तेयसरी विर-सुइ-सुमग-सुस्सर-आदेज विमिप्पसु देवगइ-देव

देवापुका पूर्वमे उदय और पश्चात् वन्य व्यष्टि होता है क्योंकि, अग्रमत्त और  
 असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे वन्य व उदयका व्युत्पत्त्य देखा जाता है । सब  
 गुणस्थानोंमें परोक्षसे ही वन्य होता है क्योंकि, अपने उदयके होनेपर उसके वन्यका  
 अत्यन्ताभाव है । उसका निरन्तर वन्य होता है क्योंकि अन्तर्मुहूर्तके बिना उसके  
 वन्यविधामका अभाव है । मिष्पावृष्टिके उर्वचास सासपससम्यग्वृष्टिके जावालीस और  
 असंयतसम्यग्दष्टिके जावालीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि यहाँ वैद्विधिक, वैद्वियिकमिध और  
 रिक्खमिध कार्यज कार्ययोग पुरुषके और मनुसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । असंयतसम्य  
 ग्दष्टि गुणस्थानके ऊपर पुरुषके मनुसकवेद और आहारकद्विके बिना ओषप्रत्यय ही  
 कहा जाहिये । ओष प्रत्ययमरूपज सुगम है । सर्वत्र देवगतिसे समुक्त वन्य होता है  
 क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके वन्यका विरोध है । तिरिक्ख और मनुष्य मिष्पावृष्टि,  
 सासपससम्यग्दष्टि, असंयतसम्यग्दष्टि एवं संयतासंयत स्वामी हैं क्योंकि, अन्यत्र  
 स्थित जीवोंके उसके वन्यका विरोध है । उपरिम गुणस्थानपक्षी मनुष्य ही स्वामी हैं  
 क्योंकि, अन्य गतियोंमें महागतियोंका अभाव है । वन्याभान सुगम है । अग्रमत्तकासके  
 संकपातके भाग आकर वन्य व्युत्पत्ति होता है क्योंकि, ऐसा सूत्रानुभाषी शुद्ध उदय  
 है । सादि व अद्भव वन्य होता है ।

देवगति पंचेन्द्रियजाति वैद्विधिक, तैजस व कार्यज शरीर, समचतुरससंस्थान  
 वैद्विधिकशरीरानुपांग एवं वन्य रस स्वर्ग देवगतिप्राप्त्यानुपूर्वी अगुस्वउदुव वपमात  
 परमात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति अस वाटर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ  
 सुमग सुस्सर, आदेय व निर्माण इनमेंसे देवगति देवगतिप्राप्त्यानुपूर्वी, वैद्विधिकशरीर



मिच्छादिद्विष्टि वेषा चतुर्विधो । उग्रि विविधो, ध्रुवधामावाधो । हस्म-रदीमं सत्वरं सारि  
बद्धा, बद्धवर्षेतिवाधो ।

मनुस्सावजस्म पुर्व्यं वेषो पञ्चम उग्रो वोऽच्छिन्नो, असद्वदसम्मादिद्वि-बभ्रुपङ्क्ति  
जहाकम्य वेषेदयवोप्येवसवाधो । मिच्छादिद्वि-सासणमम्मादिद्वीसु सेदय-परोदण वेषो ।  
असद्वदसम्मादिद्वीसु परोदणैव । कुदो ? सामाधियाधो । सत्वरं वेषो विरतरो, जहाकम्य  
काळस्म वि अतोमुदुत्तपमाणुबळेमाधो । मिच्छादिद्विष्टि पंचास, माम्मणस्म पचेतात्मीम पचवा  
ओराठिय-वेठन्धियमित्स-कम्म-एयकयजोग-गुरिम अर्हुस्यपञ्चयाणग्मावाधो । असद्वदसम्मा-  
दिद्वीसु चात्तीस पञ्चमा ओषाण्णपम् ओराठिय-ओराठियमित्स-वेठन्धियमित्स-कम्म-एय  
कयजोग-गुरिम पञ्चमपचेदाणममावाधो । सेस सुगम । मण्ये वि मणुमगाइसंद्धं पच वचति,  
अण्णगहि मह विरोहाधो । तिगा-मिच्छादिद्वि-मासणमम्मादिद्विषो सामी । असद्वदसम्मा  
मिद्विषो देवा चेव सामी अण्णमिधित्थिवेदोदइस्सअ सम्मादिद्वीण मणुम्साउवस्म वचामावाधो ।  
वचदावं वचविमद्विष्टाण च सुगम । सत्वरं सारि-अद्वयो वेषो ।

मय और सुगुप्ताका मिच्छादिद्वि गुणस्थानमें आग प्रकाशका बन्ध होता है । अपरिम  
गुणस्थानोंमें तीन प्रकाशका बन्ध होना है क्योंकि वहाँ मृग बन्धका अभाव है । हाथ  
और एतिका सर्वत्र सावि व अमुक बन्ध होता है क्योंकि वे अमुक रङ्गी हैं ।

मनुष्यापुत्रा पूर्वमें बन्ध और पश्चात् पश्य व्युच्छिन्न होता है क्योंकि असत्त  
सम्पत्ति और अनिष्टवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें कमसे कम एक बन्ध व उदयका व्युच्छिन्न देखा  
जाता है । मिच्छादिद्वि और सासणमसम्पत्ति गुणस्थानोंमें स्वोत्पन्न परोक्षसे बन्ध होता है ।  
असत्तसम्पत्तिपूर्वमें परोक्षसे ही बन्ध होता है क्योंकि, देसा इवमात्र ही है । सर्वत्र  
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि उसका अभाव बन्धकाष्ठ भी अस्तित्वपूर्व प्रमाण पाया  
जाता है । मिच्छादिद्वि के पञ्चास और सासणमसम्पत्ति के पंचासोंस प्रत्यक्ष है क्योंकि,  
वहाँ भौतिकमिष्ट वैकिकिमिष्ट कार्मण काययोग पुरुषवेष और लपंसकदेव प्रत्ययोंका  
अभाव है । असत्तसम्पत्तिपूर्वमें बाष्पीय प्रत्यक्ष है क्योंकि ओषमत्पयोंमेंसे भौतिक  
भौतिकमिष्ट वैकिकिमिष्ट कार्मण काययोग पुरुषवेष और लपंसकदेव प्रत्ययोंका  
अभाव है । शेष प्रत्यक्षप्रकरण सुगम है । सब ही मनुष्यगणिते संयुक्त ही बाष्म हैं  
क्योंकि, अम्य गतिपोंके साथ उसका बन्धका विरोध है । तीन गतिपोंके मिच्छादिद्वि और  
सासणमसम्पत्ति स्वामी है । असत्तसम्पत्ति वेष ही स्वामी है क्योंकि मम्य  
गतिवोंमें अविरोधय बुद्ध सम्पत्तिपोंके मनुष्यापुत्रके बन्धका अभाव है । बन्धापान  
और बन्धविमद्विष्टाण सुगम हैं । सर्वत्र सावि व अम्य बन्ध होता है ।

विषा बंधुवर्तमादो । उवरिमेसु गुणद्वेषेसु सोदएणव, अपन्जसद्याए तेसिं गुणाजममावादो । मिच्छादिद्वि-सासजसम्मादिद्वि-सम्माभिच्छाद्वि-असजवसम्मादिद्वीसु सुमगादेज्जापं सोदय-परोदजो वधो । उवरि सोदजो चव, सामावियादो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फ़स-अगुदखलुज-उवपाद-विमिषाणं बंधो भिरं तरी, धुववविवादो । पर्विदियजादि-परपादुस्सास-पसस्यविहायगइ-तस-बादर पन्जत्त-पत्तेयसरीर-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-देवगइ-देवगइपाबोमागुपुष्वी-वेठवियसरीर-अंगोवंगाण मिच्छाद्विद्वि-सांतर-भिरंतरो बंधो । कथं भिरंतरो ? य, असंखेज्जपाठवतिरिक्ख-अणुस्सेसु भिरंतरबंधु वर्तमादो । एवं सासजस्स वि वसथ । जवरि पर्विदियजादि-परपादुस्सास-तस-बादर-पन्जत्त-पत्तेयसरीराण बंधो भिरंतरो चव । सम्माभिच्छाद्विप्यदुडि उवरिमाणं सासजमंगो । जवरि देवमइ-वेठवियसरीर-समचटरससंठाण-वेठवियसरीर-अंगोवंग-देवगइपाबोमागुपुष्वी-सुमग-सुस्सर-आदेज्जापं भिरंतरो बंधो, पडिवक्खप्पयडिबवाभावादो । थिर-सुमाणं मिच्छाद्विप्यदुडि भाव पमत्तसंजवो सि सांतरो वधो, पडिवक्खप्पयडिबधुवर्तमादो । उवरि भिरंतरो, पडिवक्ख-

भी इनका उदयके बिना बन्ध पाया जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें ओदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि अपर्याप्तकासमें उन गुणस्थानोंका अभाव है । मिध्याद्वि, सासादनसम्पद्वि, सम्पग्मिध्याद्वि और असंयतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें सुमग व आदेयका स्वादप परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें ओत्प ही बन्ध होता है क्योंकि येसा लभाव है ।

तेजस व कर्मण शरीर बंधे गन्ध रस स्पर्श अगुदखलु, उवपात और निर्माणका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वे धुवबन्धी हैं । पंचेन्द्रियजाति परमात उच्छ्वास प्रशस्तबिहायोगति अस बाह्य, पर्याप्त प्रत्येकशरीर धुमग सुस्वर, आदेय, देवगति देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी वैद्वियिकशरीर और वैद्वियिकशरीर-गोपांगका मिध्याद्वि गुणस्थानमें सांतर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शुंक्क—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि, असंख्यातवर्णानुष्क तिर्यक और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इसी प्रकार सासादन गुणस्थानक भी कहना चाहिये । विशेषता केबल यह है कि पंचेन्द्रियजाति परमात उच्छ्वास अस बाह्य, पर्याप्त और प्रत्येक-शरीरका बन्ध निरन्तर ही होता है । सम्पग्मिध्याद्विसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंकी मरूपजा सासादनसम्पद्विके समान है । विशेष यह है कि देवगति वैद्वियिकशरीर, समचतुरअसंस्थान वैद्वियिकशरीर-गोपांग देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी सुमग सुस्वर और आदेयका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि इसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । स्थिर और धुमका मिध्याद्विसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सांतर बन्ध होता है क्योंकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

महाभोगाणुपुष्पी-वेठवियसरीर-वेठवियसरीरभोगांशगाणं पुण्यमुदभो पञ्च भंभो बोधि-  
 च्छदि, अपुष्पांसदसम्माद्वीसु दणवगहाभोगाणुपुष्पीए अपुष्प-सासमेसु क्रमेण भंभो-  
 दयवोन्नेवुवठंमादो । तेजा-कम्मदयसरीर-समभतरससंठण वण्व-गंभ रस फस-अगुस्वच्छुव  
 उवपाद-परपाद ठसस-पसत्त्वविहायगह-पसेयसरीर-भिर-सुह-सुस्मर-मिमिणामं पुण्यं भंभो पञ्च  
 उदभो बोधिच्छदि, अपुष्प-अभियस्त्रीसु क्रमेण भंभोदयवोन्नेवुवठंमादो । पंथिरियजदि-तस  
 कदर-पन्ध-सुमभारेन्नाणं पि एवं नैव वसत्थं ।

देवगह-देवगहाभोगाणुपुष्पी-वेठवियसरीर-वेठवियसरीरभोगांशगाणं पोटएनेव  
 सम्भत्थ भंभो, सोदएवेदसिं भंभविरोहादो । पंथिरियजदि-तेजा-कम्मदयसरीर-वण्व-गंभ-रस-फस  
 अगुस्वच्छुव-तस-बादर-पञ्च-भिर-सुम-मिमिणामं सोदभो सम्भगुण्डामेसु भंभो, एत्थेदसिं  
 सुवेदयत्थंसमादो । समभतरससंठण-पसत्त्वविहायगह-सुस्मरणं सम्भत्थ सेदय-पोटभो  
 भंभो, उमयस मि वधविरोहादो । उवपाद-परपाद-ठसस-पसेयसरीर-मिच्छविदि-  
 ससपसम्माद्वीसु भंभो सोदव-पोटभो, विम्माहमदीए केसिंथि अपन्धउकसठे च उदएव

और वैदिकिकशरीरगोपांगका पूर्वमें उक्त और पञ्चात् वण्य व्युच्छिन्न होता है क्योंकि,  
 अपूर्वकरन और अस्तपतसम्यग्दधि गुणस्वातोंमें तथा देवगतिप्रयोग्यानुपूर्वीके अपूर्वकरन  
 और सासत्तमसम्यग्दधि गुणस्वातोंमें क्रमसे वण्य व उक्तका व्युच्छेत्त पाया जाता है । तत्र  
 व कामंज शरीर, समभतुरकसंस्याव वर्ण गण्य रस स्पर्श अगुरकसु, उपमात परमात  
 उच्छ्वास प्रकृतिविहायोगति प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ सुस्वर और निर्माज इनका  
 पूर्वमें वण्य और पञ्चात् उक्त व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, अपूर्वकरन और अस्तपतसम्यग्दधि  
 गुणस्वातोंमें क्रमसे इनके वण्य व उक्तका व्युच्छेत्त पाया जाता है । पंचेन्द्रियगति  
 वस बादर, पर्याप्त सुमग और आवृत्ते भी इसी प्रकार कहा चाहिये ।

देवगति देवगतिप्रयोग्यानुपूर्वी वैदिकिकशरीर और वैदिकिकशरीरगोपांगका  
 पोटपसे ही सर्वत्र वण्य होता है क्योंकि स्वेत्यथसे इनके वण्यका विरोध है । पंचेन्द्रियगति  
 तत्र व कामंज शरीर वर्ण गण्य रस स्पर्श अगुरकसु वस बादर, पर्याप्त स्थिर, शुभ  
 और निर्माज का सब गुणस्वातोंमें स्वेत्यथ वण्य होता है क्योंकि वहां ये प्रकृतिवां कुवेत्तपी  
 देवी जाती हैं । समभतुरकसंस्याव प्रकृतिविहायोगति और सुकरका सर्वत्र स्वेत्यथ  
 परंपर्य वण्य होता है क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनका वण्यका विरोध यही है । उपमात  
 परमात उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका वण्य मिथ्यादधि और सासत्तमसम्यग्दधि  
 गुणस्वातोंमें स्वेत्यथ परोक्ष होता है, क्योंकि विमहगातीमें और किन्हीं अपर्याप्तकामों

विष्णु वधुवर्लमादो । उवरिमेसु गुणहृषिषु सोदयणेव, अपन्जसद्व्याप तेसि गुणाभममावादो । मिच्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टि-सम्माभिच्छाद्वि-असमदसम्मादिष्टीसु सुभगादेन्वार्ण सोदय परोदयो वंचो । उवरि सोदयो येव, सामानियादो ।

तेजा-कम्मव्यसरीर-वण्ण-गघ-रस-फलस-अगुरुमत्तुअ-उवपाद-विमिणार्ण वंचो गिरं सरो, धुववचित्तादो । पंचिदियजादि-परषादुस्सास-पसस्यविहायगइ-तस-आदर-पन्जस-पत्तेयसरीर-सुमग-सुस्वर-आदेन्ज-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुष्पी-वेठवियसरीर-अंगोवगार्ण मिच्छाद्विष्टि सांतर-भित्तरो वंचो । कंच भित्तरो ? अ, असंखेन्जवाठवतिरिक्ख-अणुत्सेसु भित्तरोवधु वर्लमादो । एव सासणस्स वि वत्तव्वं । जवरि पंचिदियजादि-परषादुस्सास-तस-आदर-पन्जस-पत्तेयसरीराण वंचो भित्तरो चेव । सम्माभिच्छाद्विष्टिपहुडि उवरिभार्ण सासणमंगो । जवरि देवगइ-वेठवियसरीर-समचउरससंयण-वेठवियसरीरअंगोवग-देवगइपाओग्गाणुपुष्पी-सुमग-सुस्वरदेन्वाण भित्तरो वंचो, पडिवक्खपयडिबवाभावादो । विर-सुमार्ण मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव पमससुबदो सि सांतरो वंचो, पडिवक्खपयडिबधुवर्लमादो । उवरि भित्तरो, पडिवक्ख

मी इनका उवपके बिना बन्ध पाया जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें सोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, अपर्णात्तकस्समे उम गुणस्थानोंका समाव है । मिच्छाद्विष्टि सासादनसम्यग्द्विष्टि, सम्यग्निष्पत्त्याद्विष्टि और असयत्तसम्यग्द्विष्टि गुणस्थानोंमें सुमग व आदेयका स्वादय परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें स्नेहय ही बन्ध होता है क्योंकि ऐसा समाव है ।

तैजस व कामज शरीर, वर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुक्षु अपघात और विनाशका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वे धुववन्धी हैं । पंचेन्द्रियजाति परघात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति अस वादर, पर्णात्त प्रत्येकशरीर, सुमग सुस्वर, आदेय, देवगति देवमतिप्रायोग्यानुपूर्वी कैत्रियिकशरीर और कैत्रियिकशरीरगोपांगका मिच्छाद्विष्टि गुणस्थानमें सांतर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शुक्र— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि, असंख्यातवर्णाणुष्क तिर्यंच और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इसी प्रकार सासादन गुणस्थानक भी कहमा चाहिये । विशेषता केवल यह है कि पंचेन्द्रियजाति परघात उच्छ्वास अस वादर, पर्णात्त और प्रत्येक-शरीरका बन्ध निरन्तर ही होता है । सम्यग्निष्पत्त्याद्विष्टि केकर उपरिम गुणस्थानोंकी प्ररूपणा सासादनसम्यग्द्विष्टिके समान है । विशेष यह है कि देवगति कैत्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान कैत्रियिकशरीरगोपांग देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी सुमग सुस्वर और आदेयका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, हमकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका समाव है । स्थिर और शुभक मिच्छाद्विष्टि केकर प्रमत्तसंयत तक सांतर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

पयस्विबंधाभावाद्दे । पप्पया सुमगा, बहुसो परुविदध्यो । जवरि देवमह-नेठवियदुगणं  
नेठविय-नेठवियमिस्स-ओरत्थिमिस्स-कम्मइयपप्पया पुरिस जमुसयवेदेहि सह जववेदया ।  
सेसं सुगमं ।

देवगह-नेठवियदुगणमि सम्पत्त्य देवगहसमुत्तं वज्झति । जवरि नेठवियदुगं मिप्प-  
इही' देव-मिस्सगहसंजुत्तं वंधंति । समभतरसंसंज्ञान-पसरथविहाययवह-भिर-सुम-सुमग-सुस्स-  
जादेवज्जपयाओ मिप्पमिद्विहि सासणसम्मादिहिणो तिगहसंजुत्तं, निरयमईए सह बंधाभावाद्दे ।  
सम्ममिप्पमिद्विहि-जसजइसम्मादिहिणो देव-मनुसगहसंजुत्तं । सेसा देवगहसंजुत्तं वंधंति ।  
जवसेसज्जो पयसीओ मिप्पमइही चउगहसंजुत्तं, सासणो तिगहसंजुत्तं, सम्ममिप्पमिद्विहि-  
जसजइसम्मादिहिणो देवगह-मनुसगहसंजुत्तमुवरिमा देवगहसंजुत्तं वंधंति ।

देवमह-नेठवियदुगणं तिरिक्ख-मणुसमिप्पमइहि-सासणसम्माइहि सम्ममिप्पमइहि-  
जसंजइसम्माइहि-संजइसंजइ साणी । उवरिममणुसा येव, जप्पयत्थ तेसिमवावाओ । जवसेसज्जो  
पयसीए तियइमिप्पमिद्विहि-सासणसम्मादिहि-सम्ममिप्पमिद्विहि-जसंजइसम्मादिही हुगहसंजइ

वही प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है क्योंकि उक्तके प्रकृतया बहुत बार की जा चुकी है । विशेषता यह है कि देवयति और वैद्विषिकद्विकके वैद्विषिक, वैद्विषिकमिद्वि और वैद्विषिकमिद्वि और कम्मज प्रत्ययोंको पुनः और नपुंसक केरोंके साथ कम करना चाहिये । शेष प्रत्ययप्रकृतया सुगम है ।

देवयतिद्विक और वैद्विषिकद्विक संबंध देवयतिते संयुक्त वंधत है । विशेषता इतनी है कि वैद्विषिकद्विकके मिप्पयाइहि कीवही बीच देव व सरक यतिस संयुक्त बांधते हैं । सम-  
भतरसंज्ञान प्रशास्त्रविहायोगति स्थिर, सुम सुमग सुस्वर और जादेव नामकर्मोंको मिप्पयाइहि व सासात्तनसम्माइहि तीन यतियोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, सरकगातिके साथ इनके बन्धका अभाव है । सम्ममिप्पयाइहि और जसंजइसम्माइहि देव व मनुष्य यतिते संयुक्त बांधत हैं । शेष गुणस्थानवर्ती देवयतिन संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतियोंको मिप्पयाइहि चारों यतियोंसे संयुक्त सासात्तनसम्माइहि तीन यतियोंसे संयुक्त सम्ममिप्पयाइहि और जसंजइसम्माइहि देवयति एवं मनुष्ययतिते संयुक्त तथा उपरिम गुणस्थानवर्ती देवयतिते संयुक्त बांधते हैं ।

देवयतिद्विक और वैद्विषिकद्विकके तियव व मनुष्य मिप्पयाइहि सासात्तनसम्माइहि, सम्ममिप्पयाइहि, जसंजइसम्माइहि और जंयतासंज्ञत स्वामी हैं । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि, अन्य यतियोंमें उक्त गुणस्थानोंका अभाव है । शेष प्रकृतियोंके तीन यतियोंके मिप्पयाइहि सासात्तनसम्माइहि और जसंजइसम्माइहि, दो यतियोंके

संबन्ध मनुस्यसंज्ञदा च सामी । बंधद्वारं बंधविणष्टद्वारं च सुगमं । ध्रुवबंधीमि मिच्छादिद्विभि  
 र्बंधो चतुर्भिहो । अण्यस्य तिविहो, ध्रुवबंधामात्रो । अवसेषाणं पयस्वीं बंधो सादि-अद्भुतो,  
 अद्भुतबंधितादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरगोवर्णं ओषधरूपमवहारिय धत्तव्यं । तिरस्करस्त वि  
 ओषधरूपं चैव पादय ब्रह्मं । गवरी वेतभिय-वेतभियमिस्त-ओषधिमिस्त-कर्म-  
 इत्ययम-गुरि-अवस्यवेदो असंबद्धसम्मादिद्विपञ्चपसु अवसेदम्मा । अण्यस्य गुरि-अवस्य  
 पञ्चया चैव अवसेदम्मा । तिरस्करस्त मनुसा चैव सामी, अण्यतिवियेदोदस्मर्त  
 तिरस्करस्त बंधामात्रो । अपुष्पकरणउवसामपसु तिरस्करस्त बंधो, च कस्तवपसु । इति-  
 वेदोदपसु तिरस्करकर्म बंधमात्राणं स्वगसेदिसमरोहणामात्रो ।

बद्ध इतिवेदोदस्मर्तं सज्जमुत्तापि परुषिशानि तस्य अवस्यवेदोदस्मर्तं वि  
 ब्रह्मं । गवरी सज्जत्वं इतिवेदमि मधिरपञ्चपसु इतिवेदमधिरपि अवस्यवेदो पक्विवि  
 हन्वो । असंबद्धसम्मादिद्विपञ्चपसु वेतभियमिस्त-कर्म-इत्ययम-गुरि-अवस्यवेदो पक्विविदम्मा,

संपत्तासपत्ता, तथा मनुष्यगतिके संपत्ता स्वामी है । बंधापान्न और बंधविनष्टस्यान  
 सुगम है । ध्रुवबंधी प्रकृतियोंका मिच्छादिद्वि गुरुस्थानमें आरों प्रकारका बंध होता है ।  
 अण्य गुरुस्थानोंमें तीन प्रकारका बंध होता है क्योंकि, वहाँ द्वि बंधका अभाव है ।  
 ओषध प्रकृतियोंका सावि च अण्य बंध होता है क्योंकि, वे अण्यबंधी हैं ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरगोवर्णकी प्रकृति ओषधप्रकृतिका निश्चय कर  
 कहना चाहिये । तीर्थकर प्रकृति की भी ओषधप्रकृतिको ही जानकर कहना चाहिये ।  
 विशेषता केवल यह है कि वैदिक, वैदिकमिश्र और वैदिकमिश्र काम्य काम्ययोग  
 प्रकृति और नपुंसकप्रकृति प्रत्ययोंका असंबद्धसम्पत्तिके प्रत्ययोंमेंसे कम करना चाहिये ।  
 तीर्थकर प्रकृतिके बंधके मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि अण्य गतियोंमें अविदोष्य युक्त  
 ओषधके तीर्थकर प्रकृतिके बंधका अभाव है । अपूर्वकरण उपधामात्रोंमें तीर्थकर प्रकृतिका  
 बंध होता है उपधामोंमें नहीं, क्योंकि, अविदोषके उदयके साथ तीर्थकरकर्मको बांधनेवाले  
 ओषधके उपधामोंकी आरोहणका अभाव है ।

त्रिस प्रकार अविदोष्य युक्त ओषधोंकी अपेक्षा सब धर्मोंकी प्रकृति की गई है  
 इसी प्रकार नपुंसकप्रकृति युक्त ओषधोंकी भी कहना चाहिये । विशेषता केवल इतनी है  
 कि सर्वत्र अविदोषमें कोई द्वि प्रत्ययोंमेंसे अविदोषको कम कर नपुंसकप्रकृति ओषधका चाहिये ।  
 असंबद्धसम्पत्तिके प्रत्ययोंमें वैदिकमिश्र और काम्य काम्ययोग प्रत्ययोंको ओषध

वेदेषु बाठवचनवसेष सम्मादिष्टीषुप्यदिदसनादो । विरयाठ-विरयदुग-इतिवेदानं सम्मत्त्वं  
पुरिसवेदस्तेष परोक्षेण वचो । ननुसयवेदस्त सोक्षेण । एहिदिय-भीहिदिय-तीहिदिय-वठरिदिय-  
वादि-मादाय-वावर-सुहुम-वपम्बस-साहारवाणं सोक्ष-परोक्षो वचो, एतेषु वृत्तान्तेषु एतेषि  
वचिबन्धनान्तेषु च ननुसयवेदुदयदसनादो ।

तिरिक्त्वाह तिरिक्त्वाहपाथोम्यानुपूर्वी-भीनागोदानं सांतर भिंतरो वचो । कुरो ?  
तेठ-वाठकहपसु सप्तमपुटविभेदपसु च दोसु वि गुणवृत्तेषु भिंतरवचुवत्तमादो । मनुसमह  
मनुसयवपाथोम्यानुपूर्वी च सांतर-भिंतरो मिच्छादिष्टि-सासवसम्मादिष्टीषु वचो । कुरो ?  
वाचदमिरेदेवेहिदो ननुसयवेदोदहस्तमशुस्तेषुप्यणां तित्थयरस्तकम्मेण वेदेषुप्यण्यमिच्छ-  
इष्टीं च भिंतरवचुवत्तमादो । वेठाठिवसरी-वेठाठिवसरीगोव्याणं मिच्छादिष्टि-सासव-  
सम्मादिष्टीषु सक्ककुमारविदेव-वेरहप अस्सिदूण भिंतरो वचो । वज्जस्य सांतो वत्थो,  
वसंसेन्ववासाउपसु ननुसयवेदुदयामावादो । तेठ-पम्म-सुक्कत्तेस्सियननुसयवेदोदहस्ततिरिक्त्वा-  
मनुसमिच्छादिष्टि-उससे अस्सिदूण वेवगह-वेठवियसरीदुमाणं भिंतरो वचो वत्थो ।

वाहिपे कर्णोकि, मायुवज्जके वहासे सम्मन्वयिषोक्ती मारुक्किषोमें उत्पत्ति देवी जाती है ।  
मारुकायु, मारुकातिष्ठिक और लीलेइका सर्वत्र पुत्रवक्त्रके समान परोक्षवसे वज्ज होता  
है । ननुसकम्बेइका स्वोक्षवसे वज्ज होता है । एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय  
अस्ति आताप स्वावर, सूक्ष्म, जपवर्त और साधारणका कोक्ष-परोक्ष वज्ज होता है  
कर्णोकि, इव वज्ज स्वानोमें तथा इवके प्रतिपक्ष स्वानोमें ननुसकम्बेइका उक्ष देखा जाता है ।

तिर्यग्गति तिर्यग्गतिमाथोम्यानुपूर्वी और नीचमात्रका सान्तर-विरन्तर वज्ज होता  
है कर्णोकि, तेज व वायु कम्बिक तथा सप्तम पुत्रिणीके मारुक्किषोमें मिच्छादिष्टि व सासादन  
सम्प्रादयि इन दोनों ही गुणस्वानोमें विरन्तर वज्ज पाया जाता है । मनुष्यगति और  
मनुष्यमतिमाथोम्यानुपूर्वीका मिच्छादिष्टि और सासादनसम्प्रादयि गुणस्वानोमें सान्तर  
विरन्तर वज्ज होता है कर्णोकि, वाचतादिष्टि देवीमेंसे ननुसकवेदेवप युक्त मनुष्योंमें उत्पन्न  
हूप तथा तीर्थकर मङ्गलिच्छी सत्ताके साथ मारुक्किषोमें उत्पन्न हूप मिच्छादिष्टिोंके विरन्तर  
वज्ज पाया जाता है । औदारिकशरीर और औदारिकशरीरगोदागका मिच्छादिष्टि और  
सासादनसम्प्रादयि गुणस्वानोमें समस्तुमारवि देव व मारुक्किषोका आश्रयकर विरन्तर  
वज्ज होता है । वज्ज सान्तर वज्ज कहला जाहिपे कर्णोकि वसंसेनासवपापुण्योमें  
ननुसकवेदेके उक्षका समाप है । तेज पद्म और शुक्ल केहपावासे ननुसकम्बेवप युक्त  
तिर्थ व मनुष्य मिच्छादिष्टि एव सासादनसम्प्रादयि औषोका आश्रयकर देवमतिष्ठिक और  
वैधिमिकशरीरिका विरन्तर वज्ज कहला जाहिपे ।

उपपाद-परमादुस्सास-पत्तेयसरीरं असजदसम्मादिद्वीसु सोदय परोदभो पंचो, पिरयार्गए अपन्जत्तासंजदसम्मादिद्वीसु नि पदासिं वभुवत्तमादो । तस चादर-पन्वत्त-पत्तेयसरीर पंचिदियचादीण मिच्छइद्विम्हि वचो सोदय-परोदभो, यावर मुहुमापन्वत्त-साहाय-विगर्त्तिदियसु पदासिं वभुवत्तमादो । सच्चपयदीणं वचस्स जत्थि देवाण सामिच्च तत्थ जलुसयवेदुदयामाभादो । पंचिदिय-आदाव-वावरत्थ तिरिक्खगाइ-मणुसगाइ-मिच्छइद्वी चेव सामी, देवा न होंति; तेसु जलुसयवेदुदयामाभादो । अण्णो वि जदि भेदो जत्थि सो समालिय वचम्भो ।

अथा इतिवेदस्म परूवणा कदा तथा पुरिसवेदस्स वि कायणा । अवरी ओपपन्नपसु इत्थि-अवुसयवेदप चया चेव सच्चगुणद्वारेषु वचपेदणा, सेसासेसपच्चयार्णं तत्थ संभवादो । इत्थि-अवुसयवेदानं पंचो परोदभो, पुरिसवेदस्स सोदभो । उपपाद-परमादुस्सास-पत्तेय-सरीरमसंजदसम्मादिद्विम्हि सोदय-परोदभो वचो । तित्थपरस्स परूवणा ओपतुस्स । एव मण्णो वि जदि भेदो जत्थि सो समालिय वचम्भो ।

उपपात परपात उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्रोत्र परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, मरकटादिमें अपर्णात असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें भी इनका बन्ध पाया जाता है । अस चादर, पर्णात प्रत्येकशरीर और पंचेन्द्रियजातिका मिष्पादृष्टि शुणस्याममें स्त्रोत्र-परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, स्वावर, सूक्ष्म अपर्णात साधारण और विकलंन्द्रियोंमें इनका बन्ध पाया जाता है । सब प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी देव नहीं हैं क्योंकि उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है । एकेन्द्रिय आत्माप और स्वावरके तिर्यगति व मनुष्यगतिक मिष्पादृष्टि ही स्वामी हैं देव नहीं हैं । क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है । अन्ध मी यत्ति मेव है तो उसको धारणकर कहना चाहिये ।

जिस प्रकार कृषिकी प्रकृषा की गई है उसी प्रकार पुरुषवेदकी भी करना चाहिये । विशेष इतना है कि ओपपत्तयोंमस कृषिक और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको ही सब शुणस्यामोंमें कम करना चाहिये क्योंकि, दोष सब प्रत्ययोंकी वहाँ सम्भावना है । कृषिक और नपुंसकवेदका बन्ध परोक्ष होता है । पुरुषवेदका स्त्रोत्र बन्ध होता है । उपपात परपात उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टि शुणस्याममें स्त्रोत्र परोक्ष बन्ध होता है । तीर्थकर मरुतिकी प्रकृषा ओषके समान है । इसी प्रकार अन्ध मी यत्ति मेव है तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये ।

१ जमदी इतिव वचो इति पाठः ।

२ यत्ति आसमरिच यत्ती वा समालिय इति पाठः ।



अवगदवेदएसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-जसकिति  
उच्चागोद पंचतराह्याण को वंधो को अवधो ? ॥ १७८ ॥

सुमम ।

अणियट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराह्यउवसमा स्ववा वंधा ।  
सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदद्धाए चरिमसमयं गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवेससा अवधा ॥ १७९ ॥

देसामासियसुत्तवेदे वचद्वार्यं वचविणहृत्तव्यं होम्यं वच परुक्कपादो । तेवेरेव  
सुद्धस्वपरुक्कपादं कीरेदे । तं वधा— एदमिं सोत्तसुद्धं परुक्कपादं पुण्यं वंधो पच्छ उद्वो  
वोच्छिज्जदि, तदोवत्तमाव । एत्थुवत्तं वती याह—

आगमवचसु साह इदियवचसु अउससीरा जे ।

देवा व ओदिवचसु कककवचसु निवा सुवे ॥ २४ ॥

पंचपाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पंचतराह्य-जसकिति-उच्चागोदराजं सोमसो वेव

अरगनेविरोमि पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, वसुधैवि, उज्ज्वगोत्र और  
पांच मन्त्ररायस कैन वन्धक और कैन अवन्धक है ? ॥ १७८ ॥

यह सच सुगम है ।

अनिवृत्तिक्रममे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रदायिक उपसमक व रूपक तक वन्धक है । सूक्ष्म-  
साम्प्रदायिकसुद्धिर्दस्यतककक अन्तिम समयको जाकर वन्ध व्युत्थिज्ज होता है । ये वन्धक हैं,  
श्रेय अवन्धक हैं ॥ १७९ ॥

यह सच देशात्मर्शक है क्योंकि, वह वन्धावधान और वन्धविनाशस्थान इन दोनोंका  
ही प्रकल्प करता है । इसीप्रकार इससे सुचित अर्थकी प्रकल्पना करते हैं । वह इस प्रकार  
है— हम स्वामी प्रकल्पितोंका पूर्वमे वन्ध और पश्चात् उद्व व्युत्थिज्ज होता है क्योंकि,  
विसा पापा जाता है । यहाँ उपयुक्त गाथा—

साधु आगम रूप बभ्रुसे संयुक्त तथा त्रितये सच जीव है ये इन्द्रिय-बभ्रुके  
चारक ज्ञान है । अवधिज्ञान रूप बभ्रुसे सहित वेव, तथा केवधज्ञानरूप बभ्रुसे युक्त सच  
जिन होत है ॥ २४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय पांच अवन्धक अवधैवि और उज्ज

बंधो, एत्थ एवासिं धुबेदयत्तदसणादो । भिरतरो बंधो, एत्थ बधुवरमाभावादो । पञ्चया सुगमा, ओधम्मि परुविदत्तादो । अगहसंस्तुधो बंधो, अवगदवेदेसु चदुब्ध्यं गहं बंधामावादो । मज्झसा भेव सामी, अण्णत्थ खवगुवसामगाणममावादो । बधद्वार्ण बधविणद्वहाय च सुगमं । पचणाणावरणीय चठदसणावरणीय-पचतराह्याय तिविहो बंधो, धुवत्तामावादो । अवकिप्पि-उच्चगोत्राण सादि बद्धो, बद्धवपित्तादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अवंधो ? ॥ १८० ॥

सुगम ।

अणियट्ठिप्पहुहि जाव सजोगिकेवली बधा । सजोगिकेवल्लि-अद्दाए चरिमसमय गत्तूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चवे । तं जहा— पुण बंधो पञ्च सदंधो वोच्छिज्जदि, सजोगि

मोत्रका लोदय ही बन्ध हाता है क्योंकि यहाँ हम प्रकृतिबोध सुबोधवित्त्व देखा जाता है । बन्ध इसका निरुत्तर हाता है क्योंकि, यहाँ बन्धविधायक अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, ओधमें उनकी प्रकृपणा की आ लुकी है । अगहसंस्तुध बन्ध होता है, क्योंकि, अवगदवद्विधोंमें चारों गतिबोधोंके बन्धका अभाव है । मज्झसा ही स्वामी है क्योंकि, अण्ण गतिबोधोंमें अण्ण और उपसामर्थ्यका अभाव है । बन्धाण्वान और बन्धविनष्टस्यान सुगम हैं । पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तर्पणका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि भूच बन्धका अभाव है । चराकीर्ति और उच्चगोत्रका सादि च मज्झ बन्ध होता है क्योंकि ये अष्टबन्धी हैं ।

सादावेदनीयक कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिष्टुत्तरपसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवल्लिपत्रके अन्तिम समयको आकर बन्ध मुच्छिज्ज होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उद्घ मुच्छिज्ज होता है, क्योंकि सयोगकेवली और अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें क्रमसे

अत्रोमिचरिमसमयमि वधोदयवोच्छेदमणादो । सोदय-परोदयो वधो, परावच्छेदयत्तयो ।  
 विरतये वधो, परिचक्षणयद्दीर्घ वधामावाहो । पञ्चया सुगम, बोधमि परुविदत्तयो ।  
 वगइसंस्तुयो वधो, अवयववेदेसु गइचठनकम्प वधामावाहो । मनुमा सामी, अन्वय  
 अवगयवेदानममावाहो । वधद्वार्थं वधविषयज्ञानं च सुगम । सादि मद्रवो वधो, अद्रव-  
 पन्तिताहो ।

कोधसजलणस्म को वधो को अवधो ? ॥ १८२ ॥

सुगमं ।

अणियट्टी उवसमा स्वधा वधा । अणियट्टिनादरद्दाए सखेज्जे  
 भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ १८३ ॥

एदस्मत्तो वुच्छद— वधोदया समे वोच्छिज्जन्ति, वधे वोच्छिज्जन् संते उदया-  
 गुरुतमाहो । सोदय-परोदयो वधो, उमयह्य नि वधविरोहामावाहो । विरतये, पुनर्वधिताहो ।

उसके वन्ध और उदयका व्युच्छिन्न होता जाता है । सोदय-परोदय वन्ध होता है क्योंकि,  
 परिपलित होकर उसका मलिनपक्षमूल असाता वधनीयता उदय पाया जाता है ।  
 निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, मलिनपक्ष प्रकृतिके वन्धका अभाव है । मत्पय  
 सुगम है क्योंकि भागमें उलझी प्रकृष्टता नहीं आसुकी है । अगतिसंयुक्त वन्ध  
 होता है, क्योंकि, अपगतवेदियोंमें आये गतियोंके वन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी है  
 क्योंकि, वन्ध गतियोंमें अगतवधियोंका अभाव है । वन्धावसान और वधविनष्टस्यान  
 सुगम है । सादि व अद्रव वन्ध होता है क्योंकि यह अद्रवनी प्रकृति है ।

स उलननेवकस केन वन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ १८२ ॥

यह स्वयं सुगम है ।

अनिवृत्तिरूपगुणम्भानवर्ती उपशमन व क्षयक वन्धक है । बादर अनिवृत्तिरूप  
 कउके संरूपान बहु भाग जाकर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हैं, क्षेप वधवन्धक  
 है ॥ १८३ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— संशयजनकोषका वन्ध और उदय दोनों एक साथ  
 व्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि वन्धक व्युत्तिउभ हासपर फिर उदय पाया नहीं जाता ।  
 व्योदय परोदय वन्ध होता है क्योंकि, दोनों प्रकृष्टतम जी वन्ध हासका विराय नहीं है ।  
 निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, यह प्रकृष्टतमी है । अगतिसंयुक्त वन्ध होता है क्योंकि,

अगदसंस्तुतो, एतत् घटगद्वधामावाधो । पञ्चया सुगमा, ओषपञ्चर्हितो विसेसामावाधो ।  
मनुसा चैव सामी, अण्णत्वेदेसिमामावाधो । वधद्व्याण गस्थि, एककम्मि अद्व्याणविरोहाधो ।  
अधया अत्थि, पञ्चवट्टियणए अवलविन्त्रमाणे अवगदवेदाणमपियट्ठीण -सस्सेजाणमुबलमाधो  
अणियट्ठिक्कलं संसेज्जाणि सुट्ठाणि' करिय तस्य पट्ठुत्तिसु अरक्कतिसु एगसुट्ठावसेसे केध  
संजलणस्स वंधो वोच्छिज्जो । तिविहो वधो, धुवर्धचिदाधो ।

माण मायासजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ १८४ ॥

सुगमं ।

अणियट्ठी उवसमा स्वा वधा । अणियट्ठिवादरद्वाए सेसे सेसे  
सस्सेज्जे भागे गतूण उधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा  
अवधा ॥ १८५ ॥

एदासि वधोदया समं वोच्छिज्जति, यिण्हवंधाणमुदयाणुबलमाधो । सोदय-परोदयो,  
उभयहा वि वडुवल्माधो । विरंतरो, धुवर्धचिदाधो । अवगयपञ्चयो, ओषपञ्चर्हितो अवसिद्ध-

यहाँ चारों गतिपोंके बन्धका समावेश है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि ओषप्रत्ययोंसे यहाँ  
कोई भेद नहीं है । मनुष्य ही स्वामी है क्योंकि अन्य गतिपोंमें अपगतवेदियोंका समावेश  
है । बन्धाध्यायन नहीं है क्योंकि एक गुणस्थानमें अन्धकार विरोध है । अधया बन्धाध्यायन  
है क्योंकि पर्यायार्थिक बन्धका अवलम्बन करनेपर अपगतवेदी अनिवृत्तिकरणोंके सत्प्राप्त  
पाये जानेसे अनिवृत्तिकरणकाळके संप्राप्त पक्ष करके हममें बहुत कष्टोंके भीत जाने  
और एक कष्टके श्रेय रखनेपर संभवजन्यश्रेयका बन्ध व्युत्पिन्न होता है । तीन प्रकारका  
बन्ध होता है क्योंकि यह भ्रमबन्धी है ।

सन्वत्तनमान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक है । अनिवृत्तिकरणवादरक्कठके श्रेय श्रेय  
कालमें सत्प्राप्त बहुभाग आकर बन्ध व्युत्पिन्न होता है । ये बन्धक है, श्रेय अवन्धक है  
॥ १८५ ॥

इस दोनो प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युत्पिन्न होते हैं क्योंकि  
बन्धके मध्य ही जानेपर इसका उदय नहीं पाया जाता । ओषप्र परोदय बन्ध होता है  
क्योंकि दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, ये

पञ्चसादो । अग्निसत्त्वो, एतत्तु पञ्चसादो । मनुससामिओ<sup>१</sup>, अण्णत्सवगद्वेदामावाओ ।  
 पञ्चसादो, दम्भित्तियपयविसयम्मि सण्णसंगदे अट्ठाण्णानुववसीओ । अथवा अट्ठाण्णसम-  
 ग्गिओ, अवत्तन्नियपयविसयजसाओ । कोपपववोच्छिञ्जत्ताओ उवत्तिम्मट्ठाणं सत्तेज्जहाणि  
 फल्लन पणुसंहेसु अइक्कत्तेसु एयत्तंहावत्तेसे मायवओ वोच्छिञ्जदि । पुणो सेसमेयं संहं  
 सत्तेज्जहाणि संहणि करिय तत्थ पणुसंहेसु अइक्कत्तेसु एयत्तंहावत्तेसे मायवओ वोच्छिञ्जदि ।  
 एव इओ वयम्मे ? सेसे सेसे सत्तेज्जहाम मनुपे सि जियक्कवाओ वयम्मे । तिविओ,  
 पुत्तामावाओ ।

लोमसंजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ १८६ ॥

सुगमं ।

पुत्रवन्धो प्रकृतिपा हैं । प्रत्यय अवगत हैं क्योंकि ओषधप्रत्ययोंसे यहाँ कार्य विशेषता नहीं  
 है । अयत्तिसंयुक्त बन्ध होता है क्योंकि यहाँ चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य  
 स्वामी है क्योंकि, अय्य गतियोंमें अवगतवेदियोंका अभाव है । बन्धाव्वात्त नहीं है  
 क्योंकि प्रत्यापिक लयके विषयमूल सर्व सम्प्रहारे होनेपर अवधान बनता नहीं है । अथवा  
 पर्यापारिक लयका अकच्छन्नन करनेमें अवधानसे सहित बन्ध होता है । कायक  
 बन्धस्युच्छिष्टिस्थानसे ऊपरके कायके संख्यात पण्ड करक बहुत पण्डोंको बिनाकर एक  
 पण्डके शेष रहनेपर मायका बन्ध स्युच्छिष्ट होता है । तत्पश्चात् शेष एक पण्डक  
 संख्यात पण्ड करकउन्में बहुत पण्डोंको बिनाकर एक पण्डके शेष रहनेपर मायाका  
 बन्ध स्युच्छिष्ट होता है ।

संक्ष—यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— शेष शेषमें संख्यात बहुमात्र आकर इस द्विवचनसे उक्त  
 बन्धस्युच्छिष्टिस्थान जाना जाता है ।

तीस प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि पुत्र वधवा अभाव है ।

मन्वत्तन्त्रेयमग्नौ वधो वधो वधो अग्न्यक है ? ॥ १८६ ॥

यह एक सुगम है ।

अणियट्टी उवममा खवा वधा । अणियट्टिनादरद्धाए चरिमसमय  
गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अनधा ॥ १८७ ॥

पन्थसु अण्यो वृक्षदे— वंधा पुष्पमुदभो पन्था वोच्छिज्जदि, अणियट्टि-सुत्रम  
सांपराद्वयपरिममयमि वधोदयवोच्छेदुयलभाश । मात्त-परोदभा, उमयहा वि पधुवठेमादो ।  
गिरंता वधो, धुवबंधिता । अथगयपन्थभो, आर्षपन्थहिता अविशिष्टपन्थयता । अगह  
सन्तुष्टो, चउगडववामासादो । मनुमयामिभो, अणय गुरुगुवसामगाणममात्रादो । वंधादण  
गधि, मुत्ते अणुवदिद्विष्टादो । किमहमणुवदिद्वे ? दण्डिपारलवणादो । निविहो वधो, धुव  
पधितादो ।

कमायाणुवादेण कोधकमाईसु पचणाणावरणीय [ चउदसणा  
वरणीय-सादावेदणीय ] चटुमजलण-जसुक्किंति उवागोद-पचतराडयाण  
को वधो को अनधो ? ॥ १८८ ॥

अनिष्टविरुद्ध उपक्रमक व धुपक वपक है । अनिष्टविरुद्धरादरकाठक अन्तिम  
समयमे जातर पन्थ सुच्छिद्य होता है । ये वपक है, अथ अवपक है ॥ १८७ ॥

हम मूलका मय कहते हैं— वण्य वृक्षमें वृक्षच्छिद्य होता है वधान् उद्वय  
वृक्षच्छिद्य होता है वधाकि, अनिष्टविरुद्ध भाग मूलममाग्रापिक गुणग्यामक अन्तिम  
समयमें वण्य भाग उद्वयका वृक्षच्छिद्य पाया जाता है । म्याद्वयपराद्वय वण्य  
होता है वधाकि दाना ही प्रकरम वण्य पाया जाता है । निम्नतर वण्य होता है वधाकि,  
उक्त प्रवृत्ति अथवण्य है । मापत्रमययाम वहां काट बिनायता न दानम उक्त प्रवृत्ति वण्यक  
प्रमय अथगत है । अगतिमैपुक्त वण्य होता है वधाकि वहां गली गतिवैक वण्यका समाप्त  
है । मनुष्य शास्त्र है वधाकि अण्य अनिष्टमें सपर व उपायमकोच समाप्त है । दण्डापान  
है नहीं वधाकि मूलमें उमका उपदना नहीं है ।

मूल— मूलमें वधापानका उपदना क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान— दण्डार्थिकमयका अथमउक्त वरमण मूलमें उमका उपदना नहीं  
किया गया है ।

तान प्रकारका वण्य होता है वधाकि, यह धुववण्य प्रवृत्ति है ।

कृष्णपद्मगणानुसार मयपक्षारी जीवोंमें पाय जानावर्णीय, [ पार दण्डावरणीय,  
मातावरणीय ], पाय संमन्त्र, पन्थरिनि, उरपगाश भाग पाय अन्तगय, इनका वैन  
वपक भाग वैन अवपक है ? ॥ १८८ ॥



सासप्तसम्मादिष्टीसु सांतर भिरंतरो । कथं भिरंतरो ? असखेज्जपासाठभतिरिक्ख-मणुस्सेसु सुदुल्लेप्पियसंखेज्जपामाउणसु च भिरतरण्णुवत्तमादो । उवरि भिरंतरो, पडिक्कसपपडीण वचामावादो ।

मिच्छादिष्टिं तेरातीसुत्तरपञ्चया, सामणे अट्ठीतीस, थारसकसायाणममावादो । सम्मादिष्टि-असज्जदसम्मादिष्टीसु अहाक्केण चोतीस-सत्तसीसपञ्चया, गवकसायपञ्चया-मावादो । सज्जसज्जदेसु एककीसपञ्चया, छक्कमायामावादो । पमत्तसज्जदेसु एककीस पञ्चया, कसापतियामावादो । अपमत्त मपुप्पकरणेसु एककूणवीसपञ्चया, कसापतिया-मावादो । उवरि तेरसमादि क्कदूण एगूणादिकमण पञ्चया जाणिय वत्तच्चा । सेस सुगमं ।

पञ्चपाणावरणीय-चउदसपावरणीय-वउसज्जल्ल-पचतराइयाणि मिच्छादिष्टी चउगइ संबुत्तं सम्मपममाइष्टी तिगइसंहुत्त, मम्मामिच्छादिष्टिं असज्जदसम्मादिष्टिणो देव-मणुसगइ संहुत्त, उवरिमा देवगइसंहुत्तमगइसंहुत्त च वंथति । सादावेदपाय-वसकित्तीसो मिच्छादिष्टि सासप्तसम्मादिष्टिणो तिगइसंहुत्त, भिगगण्ण सह वंथामावादो । उवरि पाणावरणमंगो । उच्चा

उच्चगात्रका मिथ्यादष्टि और सामादनसम्पदष्टि गुणस्थानोंमें साम्तर निरन्तर बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? क्योंकि, असत्पानपयायुक्त तिर्यक और मनुष्योंमें तथा शुभ अदयापाम संन्यातरणायुक्तोंमें भी उन्का निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर पन्ध होता है, क्योंकि, वहां उन्की प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यादष्टि गुणस्थानमें तेजासीस और वासादन गुणस्थानमें अट्ठीतीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि, यहां बारह कयायोंका अभाव है । न्यग्रिमिथ्यादष्टि और असंपन्नसम्पदष्टि गुणस्थानोंमें अष्टादश र्थात्मा और सत्तीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि यहां नौ कयाय प्रत्ययोंका अभाव है । संपत्तासंपत्तोंमें इकतीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि, उनमें छह कयायोंका अभाव है । प्रमत्तसंपत्तोंमें इकतीस प्रत्यय हैं क्योंकि, उनमें तीन कयायोंका अभाव है । अयमत्त और अपुत्तरण संपत्तोंमें उर्ध्वत प्रत्यय हैं क्योंकि यहां भी तीन कयायोंका अभाव है । ऊपर तेजस्क और मकर एक कम वा कम इत्यादि कमस प्रत्ययोंको जानकर कहना चाहिये । शाय प्रत्ययप्ररूपजा सुगम है ।

पांच ज्ञानावरणीय और द्वादशावरणीय और संन्यस्त और पांच अन्तरापका मिथ्यादष्टि और गनियोंसे संयुक्त सामादनसम्पदष्टि तीन गनियों संयुक्त सम्प गिमिथ्यादष्टि और असंपन्नसम्पदष्टि ब्रह्म व मनुष्य गतिसंयुक्त तथा उपरिम जीव ब्रह्मगति संयुक्त और गनिसंयोगसंयुक्त बांधन हैं । सामाधर्मीय और वादाधीनको मिथ्यादष्टि व सामादनसम्पदष्टि तीन गनियों संयुक्त बांधन हैं क्योंकि, नरकगतिक साथ इनके पन्धका अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें ज्ञानावरणके सामान प्ररूपजा है ।



सुगमं ।

मिच्छादृष्टिपुद्गुडि जाव अणियद्वि चि उवसमा खवा वधा ।  
एदे वधा, अनधा णत्थि ॥ १८९ ॥

एदमि पयडीये वधा उदयादा पुम्ब पन्म वा वोष्ठिणा चि परिम्मा मत्ति,  
उदयवो उदयामादाओ निण्ण कम्माणा णियमेण उदयामादाओ च । पंचपाभावरणीय-चउ  
इसमावरणीय-कइइयंउत्थ-पंचनराइयाण सोदवो वधा, उवोदयत्तयो । सादवेइभीयस्म  
मप्यय सोदय-पराइवो अदुवादयत्तयो । असकितीए मिच्छादृष्टिपुद्गुडि जाव असजद  
सम्माद्वि चि उच्छागोइस्म मिच्छादृष्टिपुद्गुडि जाव मंजदामज्जो चि सोदय-सोदवो वधा ।  
उवरि सादवो वेव, पडिबन्तउदयामादाओ । निण्ण सजलयाण फोदण्ण वधा, कइइय  
पचाओ ।

पंचपाभावरणीय-चउत्थमप्यवरणीय-चउत्संजल-पंचनराइयाण विरंतो वधा, उर  
वचिच्छाओ । सादवेइभीयस्म मिच्छादृष्टिपुद्गुडि जाव पमत्तमज्जो चि सांगो वधो । उवरि  
गिरंतो, पडिबन्तउपडीए वचामादाओ । एवं अमकितीए वत्थं । उच्छागोइस्म मिच्छाद्वि

यह मूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे ठकर अनित्यसिद्धिमे गुणम्यानक उपग्रमक और धारक तरु पन्मक है ।  
ये पन्मक है, अपन्मक कोई नहीं है ॥ १८९ ॥

इम मरुत्तियाका वग्ग उदयम पूष वा पम्मात् सुप्पिउत्थ हत्ता इ इम मरुत्तिया परीसा  
यहाँ नहीं है कथोंकि, इनक उदय-पुच्छउत्थ अभाव है तथा मत्तायिक तीन कथाओंका  
मिथमम यहाँ उदय भी नहीं है । पांच मत्तायिकणीय चार दृष्टानावरणीय मंजदमन काय  
धीन पांच अमराय इमका उदयवग्ग हत्ता है कथोंकि ये भ्रुपाइयी हैं । माताउदनीयका  
अर्धक उदय परादय वग्ग हत्ता है कथोंकि यह अनुभाइयी है । यशस्वीनिका मिथ्यादृष्टिमे  
ठकर असंपत्तममप्यद्वि मक, तथा उच्छागावक्का मिथ्यादृष्टिमे मकर संपत्तासंपत्त तक  
स्वादय-परादय वग्ग हत्ता है । उपरिम गुणम्यामम इमका उदय ही वग्ग हत्ता है  
कथोंकि, यहाँ इनकी प्रतिपत्त महात्तरीक उच्छका अभाव है । तीन मंजदमन कथाओंका  
परादयम वग्ग हत्ता है कथोंकि यहाँ जायकी प्रयोजना है ।

पांच मत्तायिकणीय चार दृष्टानावरणीय चार मंजदमन और पांच अमरायका  
निरागतर वग्ग हत्ता है कथोंकि ये भ्रुपवग्गी हैं । मत्तावरणीयका मिथ्यादृष्टिमे मकर  
अमभारपत्त गुणम्यान तक मागतर वग्ग हत्ता है । ऊपर मिथमन वग्ग हत्ता है कथोंकि  
यहाँ उगकी प्रतिपत्त महात्तरीक वग्गका अभाव है । इरीअवार वग्गकीनिक मी कहना चाहिये ।

सासणसम्मादिद्रीसु सांतरिणित्तो । कष पिरततो ? असखंजवासाउभतिरिक्ख-मनुस्सेसु सुहुत्तेसियसखेज्जवामाउणमु य पिरतरसंयुत्तमादो । उवरि पिरततो, पठिवक्खपयडीए ववामावादो ।

मिच्छाद्विद्दि तेनातीमुत्तरपच्चया, सासणे अट्ठीस, पारसकसायाणमभावादो । सम्मामिच्छाद्वि-असज्जदसम्मादिद्रीसु जहाकमेण चोवीस-सत्तवीसपच्चया, शवकसायपच्चया-भावादो । सज्जदसज्जदेषु एकवीसपच्चया, छक्कसायामावादो । पमत्तसज्जदेषु एकवीस पच्चया, कसायतियामावादो । अपमत्त-अपुत्तकणेषु एककृणवीसपच्चया, कसायतिया-भावादो । उवरि तेरसमादि कादूण एगूणादिकमेण पच्चया आभिय वत्तवा । सेस सुगमं ।

पंचणाभावरणीय-चउदमणावरणीय-चउसज्जलण-पचनगइयाणि मिच्छाद्वि चउगइ संबुत्त, सम्मपमम्माद्वि निगइसंबुत्त, सम्मामिच्छाद्वि असज्जदसम्माद्विद्विदो देव मनुसगइ संबुत्त, उवरिमा देवगइसंबुत्तमगइसंबुत्त य वंपत्ति । सादावेदणो वसकिदीओ मिच्छाद्वि सासणसम्माद्विद्विदो निगइसंबुत्त, पिरयगइ सह ववामावादो । उवरि शाणावरणमंगो । उच्चा-

उच्चागच्छा मिप्पाद्वि और सामाजिकसम्पदादि गुणस्थानमें सास्तर-निरस्तर बन्ध होता है । निरस्तर बन्ध कैम होता है ? क्योंकि असत्प्राप्यप्राप्त्युक्त तिर्यक और मनुष्योंमें तथा शुभ केदावन्त संस्थापनायुक्तोंमें भी उन्मत्त निरस्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि वहाँ उन्मत्त प्रतिपक्ष प्रवृत्तिसे बन्धका अभाव है ।

मिप्पाद्वि गुणस्थानमें तेनामीन और जासाज्ज गुणस्थानमें अट्ठीस उत्तर प्रत्यय है क्योंकि, यहाँ बारह करायोंका अभाव है । सम्मपिमिप्पाद्वि और अमयनसम्पदादि गुणस्थानमें वयाज्जमन वीतीन और खमीस उत्तर प्रत्यय है क्योंकि, यहाँ भी कराय प्रत्ययोंका अभाव है । अयनामयतोंमें एकवीस उत्तर प्रत्यय है क्योंकि, उनमें छह करायोंका अभाव है । प्रमत्तमयतोंमें एकवीस प्रत्यय है क्योंकि, उनमें तीन करायोंका अभाव है । अपमत्त और अपुत्तकण मयतोंमें उट्ठीस प्रत्यय है क्योंकि, यहाँ भी तीन करायोंका अभाव है । ऊपर तेरहका आदि मकर एक कम हो कम इत्यादि क्रमस प्रत्ययोंको जानकर कहना चाहिये । शेष प्रत्ययप्रकरण सुगम है ।

पांच ज्ञानावरणीय और द्वाजावरणीय और मज्झम और पांच अन्तरायका मिप्पाद्वि और गणिपीस संयुक्त सामाजिकसम्पदादि तीन गणियोंमें संयुक्त सम्म मिप्पाद्वि और अमयनसम्पदादि वृष य मनुष्य गणिसंयुक्त तथा उपरिम जीव वृषगणिसंयुक्त और गणिसंयोगम रहित बांधन है । सातोपेदनीय और पदाक्षीर्णिका मिप्पाद्वि य सामाजिकसम्पदादि तीन गणियोंमें संयुक्त बांधन है क्योंकि, नरकगतिक साप एक प्रत्यय अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें ज्ञानावरणका समान प्रकरण है ।

गोदं मिच्छन्ति-सासणसम्माद्वि-सम्मामिच्छन्ति-असंजइसम्मादिट्ठिणा देव-मनुसगणमंडुसं  
 वंषंति, अण्णगईदि वंषविरोहोदो । उवरिमा देवगइसंजुतमणियद्विणो जगइमंडुसं वंषंति ।

चउगइमिच्छन्ति-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छन्ति-अमंयइसम्मादिट्ठिणो सामी ।  
 दुगइसजइसजदा । अवसेमा मणुसा, अण्णयतेसिमणुवत्तमादो । वषट्ठाणं सुगम । वंषविषामा  
 पस्वि, वंषुवत्तमादो । पुववंषीण मिच्छाद्विद्वि चउव्विहो वंषो । उवरिमणुषेसु तिप्पिइ,  
 पुवव्वमादो । अवसेसाण पयडीण सादि-जइवो, जइवव्वविसादो ।

## वेद्वणी ओघ ॥ १९० ॥

धीणमिद्वितिय-अणताणुवविचउव्वक-इतिवद-तिरिक्खउठ-तिरिक्खगइ चउसंजव-  
 चउसंजव-तिरिक्खगइपाओगाणुपुव्वि-उव्वोव्व अणसत्त्वविहायगइ-दुमग-हुम्मर अणदेव्व-  
 बीषामोद्याणं वेद्वामियसण्णा, दोसु गुणद्वारेसु चिद्वंति पि उण्णदीदो । एदसिं पव्वव्व

उव्वगोव्वको मिच्छाद्वि सासाव्वसम्माद्वि, सम्मामिच्छाद्वि और असंयतसम्माद्वि  
 देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि अन्य गतियोंके साथ उसके वन्धक  
 बिरोध है । उपरिम जीव वंषगतिसे संयुक्त तथा मणिद्वारपरणुव्वस्यमानवर्ती मगति  
 संयुक्त बांधते हैं ।

चारों गतियोंके मिच्छाद्वि, सासाव्वसम्माद्वि, सम्मामिच्छाद्वि और असंयत  
 सम्माद्वि स्वामी हैं । दो गतियोंके संयतानयत स्वामी हैं । दोष गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही  
 स्वामी हैं क्योंकि, अन्य गतियोंमें वे गुणस्थान पावे नहीं जाते । वन्धाध्यान सुमम है ।  
 वन्धविनाश है नहीं क्योंकि उनका वन्ध पाया जाता है । मुक्तवन्धी प्रवृत्तियोंका मिच्छाद्वि  
 गुणस्थानमें चारों प्रकारका वन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानमें तीन प्रकारका वन्ध होता  
 है क्योंकि, वहां मुक्त वन्धका अभाव है । दोष प्रकृतियोंका सावि व जडव वन्ध होता है  
 क्योंकि वे जडववन्धी हैं ।

त्रिस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपण ओषके समान है ॥ १९ ॥

स्वावपुद्विजय जमग्गानुवविचउव्वक, लीव्वि तिर्यपायु, तिर्यमाति चार सस्थान  
 चार संव्वन तिर्यगातिमाओमगानुपुव्वी वघोत जमहास्तविहायगति दुमंग पुस्वर  
 अमाव्य और बीषगोउ इव प्रकृतियोंकी त्रिस्थानिक सेवा है क्योंकि, जो दो गुणस्थानोंमें  
 रहें वे त्रिस्थानिक हैं ऐसी व्युत्पत्ति है । इनकी प्ररूपणा ओषके समान है क्योंकि

ओपतुल्य विसेसामावादो । तं महा— अर्गताणुपविचठकस्स षंघोदया सम वोच्छिम्मा,  
 सामणम्मि तदुमयामावदंसणादो । धीणगिद्धितियस्स पुण्य षघो पच्छ उदओ वोच्छिञ्जदि,  
 सासणसम्मादिट्ठि-पमतमज्जदसु कमेण षघोदयवाञ्छेदुवर्लभादो । तिरिक्खाउ तिरिक्खगाइ  
 उञ्जेव-णीचागोदाणमेव चेव । जवरि संज्झासंज्झम्मि उदयवोच्छेदो । एवमिस्सिवेदस्स वि ।  
 जवरि अपियट्ठिदि तदुच्छेदो । चउसउण-अणसरवविहायगाइ-हुस्सराणमेव चेव । जवरि एत्थ  
 उदयवोच्छेदो पत्थि । चउसंघउणाणमेव चेव । जवरि अप्पमत्तसुनदेसु विदिय-तदिय  
 संघइमाणमुदयवोच्छेदो । चउत्थ-पंचमाणं पत्थि उदयवोच्छेदो, उवसतकम्माएसु तदुच्छेद  
 दसणादो । तिरिक्खगाइपाओगाणुपुण्णी दुमग-अणादेअणं पुण्य षंघो पच्छ उदओ वोच्छिम्मा,  
 सासणसम्मादिट्ठि-अमंजदसम्मादिहीसु कमेण षघोदयवोच्छेददसणादो ।

अर्गताणुपविकोपस्स सोदओ षघो । तिण्हं कसामाणं परादओ, तेसिमेत्सुदयामावादो ।  
 अवसेसपयडीणं सोदय-परादओ, उमयहा वि षषविरोहामावादो । इत्थिवेद-चउसंखण-चउ

ओपसे इनमें कोई मेव नहीं है । वह इन प्रकार है— अमस्ताणुपविचठकका बन्ध और  
 उदय दोनों मायमें व्युत्पिष्ठ होना है क्योंकि, नामादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव  
 दया जाता है । स्थानपुत्रियका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पिष्ठ होता है  
 क्योंकि नामादनमम्यगद्वि और अमलमंघत गुणस्थानोंमें कमसे बन्ध व उदयका  
 व्युच्छेद पाया जाता है । त्रियंगासु त्रियंगति उपात और नीचगात्रकी भी प्रकृषया इसी  
 प्रकार ही है । विद्यायता केयम इनमें है कि संयतासंयत गुणस्थानमें उनका उदयव्युच्छेद  
 होता है । इसी प्रकार अविद्यकी भी प्रकृषया है । विशेष इनमें है कि अनिवृत्तिकरण गुण  
 स्थानमें उनका उदयका व्युच्छेद होता है । चार मन्थान अमलमम्यविहायोगति और बुलरकी  
 प्रकृषया भी इसी प्रकार ही है । विद्या इतना है कि यहां उनका उदयव्युच्छेद नहीं है ।  
 चार मन्थानोंकी प्रकृषया भी इसी प्रकार ही है । विद्या इतना है कि अमलमम्ययतोंमें द्वितीय  
 और तृतीय मन्थानका उदयव्युच्छेद होता है । अतुथ और पंचम मन्थानका उदयव्युच्छेद  
 नहीं है क्योंकि उपशान्तकयायामें उनके उदयका व्युच्छेद दया जाता है । त्रियंगति  
 मायोग्यानुपूर्वी दुमग और अमलम्यका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पिष्ठ होता है  
 क्योंकि, नामादनसम्यगद्वि और अमलमम्यगद्वि गुणस्थानोंमें कमसे उनका बन्ध व  
 उदयका व्युच्छेद दया जाता है ।

अमस्ताणुपविचठकका लोदय बन्ध होता है । तीन कयायोंका परादय बन्ध होता  
 है क्योंकि यहां उनका उदयका अभाव है । राय प्रकृषियोंका लोदय परोदय बन्ध होता  
 है क्योंकि, दोनों प्रकारमें भी उनका बन्धका कोई विरोध नहीं है ।

हीचइ चार मन्थान चार मन्थान उद्योत अमलमम्यविहायोगति दुमग, बुलर,

संघट्टण-उ-बोव अणमरवविहायगइ-दुमग दुस्सर अणमर माण बघो सांतरो, एगसमएण वि  
 बंधुवरमदसमादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गालुपुण्डि-आपाओग्गालु रासु वि गुणहत्तेसु  
 सांतर मिरित्तण बघा, तेठ-वाउक्काइएसु सत्तमपुइविचरइएसु च पिरित्तण पुवठमादो । अबमेमाण  
 पयडीण बघो मिरित्तरो, एगसमएण बंधुरमाभावादो । पच्चया सुगमा ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गालुपुण्डि-उ-बोवाणि तिरिक्खगइसंभुत्त बधेति । इरिक्-  
 बेद तिगइसंभुत्त, पिरियगइए वंभामावादो । अउमंअण-अउमपइयाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंभुत्त  
 बधेति, अणमरगइहि वंभामावादो । अणमरवविहायगइ-दुमग-दुस्सर बधदेउअ-वीचमोअवि  
 तियइसंभुत्त बधेति, देवगइए वंभामावादो । सामणो तिरिक्ख-मणुसगइसंभुत्त बध, तस्सण-  
 गइहि विरोहादो । अउगइमिच्छादिउ-सामवपम्मादिउणो सार्थी । उवरि सुममं, बहुमो  
 परुविदच्छो ।

**जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघ ॥ १९१ ॥**

बेहाअइय परुविय पच्छ अवेद सुत्त परुविद तेण विहाअइयमाहिं काइये वि  
 बरवावपीदो अवमम्मे । विहा-असादेगइण मपचक्खाण-पचक्खाणइइयाणं परुवनाए

और अवात्तयका बन्ध सात्तर होता है क्योंकि एक समयमें भी उनका बन्धविग्रह होता  
 जाता है । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिपायोग्यानुपूर्वी और नीचगोनका होता है । गुणस्थानीमें सात्तर  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि तेजकविज्ञ ब वायुकायिक तथा सप्तम पृथिवीक मातृकीयोंमें  
 निरन्तर बन्ध पाया जाता है । दान प्रकृतिवैक बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, एक  
 समयसे उनके बन्धविग्रहका अभाव है । प्रत्यय सुगम है ।

तिर्यगायु तिर्यग्गतिपायोग्यानुपूर्वी और अजातक तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं ।  
 अविज्ञके तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, मरुतगतिसे साथ उसके बन्धका  
 अभाव है । बार संस्थान और बार संज्ञानका तिर्यग्गति और अनुप्यगतिसे संयुक्त बांधते  
 हैं क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका अभाव है । अथवास्तविहायगति दुर्मेय  
 दुल्ल, अवात्तय और नीचगोनके तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि देवगतिसे साथ  
 उनके बन्धका अभाव है । सासात्तसम्पगति हर्ष तिर्यग्गति ब अनुप्यगतिसे संयुक्त बांधता  
 है क्योंकि, उसके अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध है । बारों गतियोंके मिथ्यापति  
 और सासात्तसम्पगति स्वामी है । उपरिम प्रकृपणा सुगम है क्योंकि वह बहुत बार  
 की जा चुकी है ।

प्रत्यास्मानवरणीय तक सप्त प्रकृतियोंकी प्रकृपणा बोधके समान है ॥ १९१ ॥

विस्वाप्तवृद्धकी प्रकृपणा करते पीछे भूति इस सूत्रकी प्रकृपणा की गई है अत  
 एव 'मिद्राप्तवृद्धको भाति करक' यह अर्थापत्तिसे जाना जाता है । मित्रा अस्तत्तावेदनीय  
 एकस्थानीय, अस्तत्तावेदनीय और प्रत्याप्याप्त वृद्धकी प्रकृपणा बोधके समान है । उसकी

ओषमंगो । सो वि चित्ति एत्थ यत्तब्बो ।

पुरिसवेदे ओष ॥ १९२ ॥

एसो पुरिसवेदोप्पेदेसो ओष बेसामासियो तेण पुरिसवेददडय-माणदडय-ओहदडयाण गहम । जहा एदेसिं दडयाणमोषमि परूयणा कदा तहा एत्थ वि कयन्वा । यत्ति पच्चयविसेसो जणिप वसब्बो ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे ति ओष ॥ १९३ ॥

हस्स-रिसुत्तमादि क्खद्वय जाव तित्थयस्सुत्तं ति तत्थ एदेसिं सुत्ताणमोषपरूयण मवहारिप परूवेदय्य ।

माणकसाईसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-सादावेदणीय तिग्गिसजलण जसकित्ति उच्चागोद-पचतराहयाण को वधो को अवधो ? ॥ १९४ ॥

सुगम ।

मी विचार कर यहाँ कहा चाहिये ।

पुरुषवर्गकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ १९२ ॥

यह पुरुषवर्ग एक ही निर्वेदा की वेदाग्रसारक है यथा इसमें पुरुषवर्गवृक्षक, मानववृक्षक और ओमवृक्षकका ग्रहण करना चाहिये । जिस प्रकार इन वृक्षवर्गकी ओषमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहाँ भी करना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रत्यक्षमेव जानकर कहना चाहिये ।

हृत्स व रतिसे ठेकर तीर्थकर प्रकृति तक ओषके समान प्ररूपणा है ॥ १९३ ॥

हारप-रति सूत्रको भाषि करके तीर्थकर सूत्र तक इन सूत्रोंकी ओषप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

मानकसायी जीवोंमें पाँच ज्ञानावरणीय, चार वर्णनावरणीय, सादावेदनीय, तीन संख्यलन, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र और पाँच अन्तरायक कौन कौन कौन कौन कौन कौन है ? ॥ १९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संघट्टण उ ज्ञेय अप्ससत्यविद्यायगद-दुमग-दुस्सर-अणभ-माण बघो सांतरो, एगसमएण वि  
 बंधुवरमदसवादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्माणुपुग्धि गीचागोराण दोसु वि गुणहाअसु  
 सांतर भिरंतरा बघा, तेउ-वाउक्कअएसु सत्तमपुइविणेरइएसु च गिरतरपुवत्तमादो । अवसेम्मं  
 पयडीमं बघो भिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमामावादो । पच्चया सुगमा ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्माणुपुग्धि-उज्जोयाणि तिरिक्खगइसंभुत्तं बंधंति । इति  
 वेद तिगइसंभुत्तं, बिरयगइए बंधामावादो । चउसंअण चउसंअणणि तिरिक्ख-मजुसमइसंभुत्तं  
 बंधंति, जण्णगइहि बंधामावादो । अप्ससत्यविद्यायगद-दुमग-दुस्सर-अणदेज्ज-गीचागोराणि  
 तिगइसंभुत्तं बंधंति, देवगइए बंधामावादो । सासभो तिरिक्ख-मजुसमइसंभुत्तं बंधइ, वत्सल्ल-  
 गइहि विरोहादो । चउगइमिच्छादिहि-सासजसम्मादिहिओ साधी । उवरि सुगमं, बहुसो  
 परुविइत्तादो ।

**जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघ ॥ १९१ ॥**

बेहाणइइमं परुविय पच्चम अनेद सुत्तं परुविदं तेण गिरात्तंइयमारिं करूणे ति  
 अत्थावत्तीदो जणम्मोदे । निहा असादेगहाण अपचत्ताण-पच्चक्खाणइइयानं परुपपए

और अनादेयका बन्ध सन्तर होता है क्योंकि एक समयसे ही उनका बन्धविग्राम देखा  
 जाता है। तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और बीच-गोनका दोनों ही गुणत्वत्तोंमें छात्तर  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि तेजकाधिक व वायुकाधिक तथा सतत पृथिवीके सारकियोंमें  
 निरन्तर बन्ध पाया जाता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, एक  
 समयसे उनके बन्धविग्रामका अभाव है। अत्यय सुगम है।

तिर्येमायु तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी आर उज्जालको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं।  
 कविद्वका तीन गतियोंमें संयुक्त बांधते हैं क्योंकि अरुण, लोक साथ इसके बन्धका  
 अभाव है। आर संस्थाप और आर संहननाका तिर्यग्गति आर अनुप्यगतिसे संयुक्त बांधते  
 हैं क्योंकि, अन्य गतिवाले साथ इसके बन्धका अभाव है। अग्रशस्तविहायोगति दुर्मम  
 दुस्त, अनादेय और बीचगोनको तीन गतियोंमें संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, इहगतिक साथ  
 इनके बन्धका अभाव है। सागाइनसम्पगदि इह तिर्यग्गति व अनुप्यगतिसे संयुक्त बांधता  
 है क्योंकि उसका अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है। चारों गतियोंके मिथ्यादि  
 और सागाइनसम्पगदि राजामी है। उपरि प्रकल्पना सुगम है क्योंकि, यह बहुत आर  
 को आ सुखी है।

अन्यास्यानावरणीय तक सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जोधके समान है ॥ १९१ ॥

विस्थानइइहककी प्ररूपणा करके पीछे चूकि हम स्वकी प्ररूपणा की गर् है अत  
 एव 'मिहाइइहकका भादि करके' यह अद्यापत्तिने जाना जाता है। निहा अनातावेदनीय  
 एकरूपानिक, अनात्याक्याव और अत्याक्याव इहककोकी प्ररूपणा आयर समान है। उसका

ओषमंगो । सो वि जितिय एत्थ वत्तप्पो ।

**पुरिसवेदे ओष ॥ १९२ ॥**

एसो पुरिसवेदपिरेमो जेण देसामामियो तेण पुरिसवेददइय-माणदइय-त्तेहदइयार्थ गइण । जहा पदसि दइयाणमाधमि पकूयणा कइ तहा एत्थ वि कयम्भा । पवरी पकूयविमेषा जाणिय वत्तप्पो ।

**हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओष ॥ १९३ ॥**

हस्स-रदिमुत्तमादि कइण जाव तित्थयसुत्त नि ताव पदसि सुत्ताणमोपपक्कवण मवहारिय पकूयेदम्प ।

माणकसाईसु पच्चगागावरणीय-चउदमणावरणीय-मादावेदणीय तिणिसजलण जमकित्ति उच्चागोद-पचतराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ १९४ ॥

सुगम ।

भी विचार कर यहाँ कहना चाहिये ।

**पुकरवद्धी प्ररूपणा ओषके समान हे ॥ १९२ ॥**

यह पुकरवद्ध पक्का निर्देष्टा है कि क्यामगक है अतः इसमें पुकरवद्धवद्धक मानवद्ध और मामवद्धकका ग्रहण करना चाहिये । जिस प्रकार इन वद्धवद्धों को ओषमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहाँ भी करना चाहिये । बिनाय इनका है कि प्रत्ययमेव कामकर कहना चाहिये ।

**हास्य य रतिमे ठेकर तीर्नकर प्रकृति तर ओषके समान प्ररूपणा हे ॥ १९३ ॥**

हास्य-रति सूत्रका भावि करक तीर्थकर सूत्र तर इन सूत्रों की ओषप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

मानरूपायी जीर्णोर्मि पाँच प्रानावरणीय, चार दशनावरणीय, सातवेदनीय, तीन सम्बलन, पञ्चकृति, उरूपगोत्र और पाँच अन्तरायका कौन वन्धक और कौन अपन्धक है ? ॥ १९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।



मिच्छादृष्टिपटुहि जाव अणियट्टि उवसमा खवा वधा । एदे  
वधा, अवधा णत्थि ॥ १९५ ॥

कोपसंबलभेत्थ एवादि सह किण्ण पक्खिर् १ न, तस्स मायसजलमरणाशे  
पुण्यमेव वेपिच्छण्णवत्तम माणादीहि बंधद्वारं पडि पच्चास-वीत्थ अमावासे । एदस्स सुत्तम  
पक्खण्णए कोपयणो । अवति मायस्स सोदयो, अण्णेसि कसामाण पठेदयो बंधो । पच्चापसु  
मायकमाय मोक्ष सेसकमाया अबधेदवा । सेसं अणिय वत्तं ॥

वेद्वणि जाव पुरिसवेद-कोधसजलगाणमोघ ॥ १९६ ॥

वेद्वणि ति हुते वेद्वणिय-विदा असार्द मिच्छव अरब्धस्साय-पक्खस्सायईद्वया  
पेत्थवा, देसमासियत्तरो । पुरिसवेद-कोपसंबलभे ति हुते तस्स एक्कस्सेव सुत्तस्स गहं  
अपयं । एदेसि सुत्तमोपपक्खणमवहरिय वत्तं ॥

मिष्वापडिते ठेकर अनिवृत्तिप्रणुणस्वानवर्ती उपसमक व क्षारु तक बन्धक है ।  
ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं है ॥ १९५ ॥

सूक्त—यहाँ इस प्रकृतियोंके साथ संश्लेषन कायकी प्रकपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं क्योंकि संश्लेषनमात्रक बन्धसं उत्पन्न बन्ध पूर्वमें ही व्युत्पिन्न  
हो जाता है अत एव मात्रादिकोंके साथ बन्धमात्रानके प्रति उत्पन्न प्रत्यासत्तिना अभाव  
है । इसी कारण उत्पन्न प्रकपणा यहाँ नहीं की गई है ।

इस सूक्तकी प्रकपणा कायक समान है । विचार इतना है कि मात्रा स्वस्व और  
अन्य कर्मात्मा परस्पर बन्ध होता है । प्रत्यर्थीस मात्राकायको छोड़कर दोष कर्मात्माको  
कम करना चाहिये । शय प्रकपणा उत्पन्न कहना चाहिये ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंके ठेकर पुरुषार्थ और संश्लेषनकोष तक बोधके समान प्रकपणा  
है ॥ १९६ ॥

द्विस्थानिक ऐसा कहनपर द्विस्थानिक, जिहा अमानावेदनीय मिष्वात्थ  
अपत्यावधानावरण भार प्रत्याप्यमावरण बन्धकीका प्रहय करना चाहिये क्योंकि, यह  
वशामशक पद है । पुरुषार्थ व संश्लेषनकाय ऐसा कहनपर उस एक ही सूक्तका प्रहय  
करना चाहिये । इस सूक्तकी बोधप्रकपणाका निषय कर व्याख्याय करना चाहिये ।

हस्सरदि जाव तित्थयरे त्ति ओघ ॥ १९७ ॥

सुगममेदं, बहुसो परुविदत्तत्थो ।

मायकसार्हसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीम-सादावेदणीय  
दोणिणसजलग-जसकित्ति उच्चागोद-पचतराइयाण को वधो को  
अवधो ? ॥ १९८ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा खवा वधा । एदे  
वधा, अवधा णत्थि ॥ १९९ ॥

एद पि सुचं सुगमं ।

वेट्ठाणि जाव माणसजलणे त्ति ओघ ॥ २०० ॥

वेट्ठाणि-मिहसदेगेट्ठाण-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-पुरिस-क्खेध-माणसुत्ताणमोघपरु-  
वधमवहारिय परुवेदम्भ ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९७ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि, हमके अर्थकी बहुत बार प्ररूपणा की जा चुकी है ।

मायाकस्यापी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सादावेदनीय, दो  
संज्ञलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक  
है ? ॥ १९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिप्प्यादष्टिसे लेकर अनिष्टसिक्करण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक  
हैं, अवन्धक कोई नहीं हैं ॥ १९९ ॥

यह भी सूत्र सुगम है ।

द्विस्वानिक प्रकृतियोंको लेकर संज्ञलनमान तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २०० ॥

द्विस्वात्मिक मित्रा असतावेदनीय एकस्थानिक अग्रत्यात्पात प्रत्याक्यात  
पुरुषवेद कांथ और मात सुखोंकी ओघप्ररूपणाकर निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

इत्तरदि जाव तित्ययेरे त्ति ओघ ॥ २०१ ॥

सुगममेद ।

लोभकसाईसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-सादावेदणीय  
जसकित्ति-उच्चागोद-पचतराहयाण को बंधो को अवधो ? ॥२०२॥

सुगम ।

मिच्छाहट्टिप्पट्टुडि जाव सुहुमसांपराहयउवसमा स्ववा बधा ।  
एदे बंधा, अवधा णत्थि ॥ २०३ ॥

एरे सुगम ।

सेसं जाव तित्ययेरे त्ति ओघ ॥ २०४ ॥

सुगम ।

अकसाईसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अवधो ? ॥२०५॥

सुगम ।

हास्य व रत्तिसे छेकर तीर्षकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २ १ ॥

यह स्रज सुगम है ।

लोभकसायी बीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सादावेदनीय, यष्टकिर्ति,  
उच्चगोद और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २०२ ॥

यह स्रज सुगम है ।

मिच्छाहट्टिसे छेकर सुहुमसांपराहयउवसमा व अपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक  
हैं, अबन्धक कोई नहीं हैं ॥ २०३ ॥

यह स्रज सुगम है ।

तीर्षकर प्रकृति तक छेप प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २ ४ ॥

यह स्रज सुगम है ।

अकसायी बीवोंमें सादावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥२०५॥

यह स्रज सुगम है ।

उवसतकसायवीदरागछदुमत्या स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्या  
सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवलिअद्वाए चरिमसमय गतूण वधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अवधा ॥ २०६ ॥

एदस्स अरयो । त जहा — सादावेदनीयस्स पुण्य वधो पच्छा उदभो वोच्छिज्जो,  
सजोगि-अजोगिकेवलीसु कमेण वधोदयवोच्छेददसणादो । सोदय-परोदयो, उमयस वि वधा  
विरोदादो । विरंतो, पडिक्खपयडीए वधाभावो । उवसंत-स्त्रीणकसायसु भव जोगपवया ।  
सजोगीसु सत्त । अगइसंडुत्तो वधो । मणुसा सामी । सादि-अदुवो वधो, अदुववंचित्तो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि विभगणाणीसु पच  
णाणावरणीय णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्टणोकसाय  
तिरिक्खाउ मणुसाउ-देवाउ तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिदिय-  
जादि ओरालिय-वेउविय-तेजा-कम्मइयसरीर-पचसअण-ओरालिय-

उपशान्तकपाय वीतरागछदुमस्य, स्त्रीणकपाय वीतरागछदुमस्य और सयोगिकेवली  
बन्धक है । सयोगिकेवलिकलके अन्तिम समयके जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये  
बन्धक हैं, जेप बन्धक हैं ॥ २०६ ॥

इस सूत्रका अर्थ करते हैं । वह इस प्रकार है — सादावेदनीयका पूर्वमें बन्ध  
और पश्चात् उक्त व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली गुणस्यात्मोंमें  
क्रमस उसके बन्ध और उक्त व्युच्छेद देखा जाता है । उसका लोच्य परोच्य बन्ध होता  
है क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उसका बन्धका विरोध नहीं है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,  
उसकी प्रतिपक्ष प्रवृत्ति का नहीं अभाव है । उपशान्तकपाय और स्त्रीणकपाय आश्रितोंमें भी  
योग प्रत्यय तथा सयोगी किन्तोंमें सात हैं । अगतिचतुष्क बन्ध होता है । अनुप्य स्वामी है ।  
सादि व अणुव बन्ध होता है क्योंकि, वह अणुवबन्धी है ।

ज्ञानमागण्यके अनुसार मत्सजानी, भुताज्ञानी और विमग्नज्ञानी जीवोंमें पाच  
ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असता वेदनीय, सोलह क्रमाय, आठ नोकपाय,  
तिरियाय, मनुष्याय, देवाय, तिर्यगगति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, भौतिक,  
वैश्विक, तैजस व कामण शरीर, पांच संस्थान, भौतिक व वैश्विक शरीरोंपांच, पांच

वेउच्चियमरीरअगोवग-पचमघट्टण-वण्ण गध रस-फाम-तिरिक्खगइ-  
मणुमगइ-देवगइपाओग्गाणुपुची-अगुरुअल्हुअ-उवघाद-परघाद-  
उस्मास उज्जोव दोविहायगइ तस आदर-पज्जत्त पत्तेयसरीर थिराधिर-  
सुहासुह-सुभग दुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकिवि-  
अजसकिसि णिमिण-णीनुआगोद-पचतराडयाण को वधो को अवधो ?  
॥ २०७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विटी सामणसम्माद्विटी वधा । एदे वधा, अवधा गति  
॥ २०८ ॥

एव उदयाश वधा पुण्यं पच्छा वा बोधित्तिदि ति विचारा भवति, एदमिं पपप्येव  
वधाप्यराप्पमासाश । पचपाणावरणीय चउदमवावरणीय-तेजा-कम्मस्यमरि-वण्ण-गोध-रम  
फम अगुरुमत्तुअ-विहा-सुहासुह-विमिण-यंचनत्तमायं सोदभा वधो, धुवाइयघादो ।  
देवाउ-वेवगइ चउच्चियमरीर-चउच्चियमरीर-अगोवम देवगइपाओग्गाणुपुच्चीं परदमो वधो,

मंहनन, वध गच्छ, रम मय्य, नियगति, मनुष्यगति च दवगतिप्राप्ताप्यानुपूर्वी, अगुरुमत्तु,  
उपघात, परघात उच्छ्राय, उघात दो विहायोगनिषां, वध, वादर, परात्त, प्रत्यकष्टरि,  
रिवा, अस्ति, शुभ अशुभ सुभग दुभग सुस्सर, दुस्सर, आइय, अनाइय, यत्तकिं  
अयत्तकिं, निमाय नीच च ऊच गात्र और पांच अन्तगय, इनस कोन पन्चक और कने  
अपन्चक है ? ॥ २०७ ॥

यद मूत्र सुगमं है ।

मिथ्याद्विष्टि आर माताजनमम्यद्विष्टि पचक है । य पन्चर है, अवपक चत्त मही  
है ॥ २०८ ॥

यदा उदयम वध्य पूयम वा पचमानं प्युच्छिउय दाना ह यद विचार मही है  
कथाकि ह मरिचिक वध्य य उदयक प्युच्छिउया यदा अमाय है ।

पांच मातापत्नीय आर दानावरणीय तैजस य कामण शरीर यम मय्य  
रम कर्ण अगुरुमत्तु स्थिर अस्थिर शुभ अशुभ निमाय आर पांच अन्तरायका  
वधाइय वध्य दाना है कथाकि ये अमाइय मरिचिक है । दयापु दयगति वैश्विचारा  
वैश्विचाराशरीरगतोय आर दवगतिप्राप्ताप्यानुपूर्वीया परादय वध्य दाना है कथाकि, ह म

एदासिं पंधेदयापमकमेण मुतिविरोहादो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोत्सकसाय  
 अष्टपोकसाय-तिरिक्ख-मणुसाठ-तिरिक्ख-मणुसगइ-भोरठियसरीर-पंचसंअण-भोरठियसरीर-  
 धंगोवंग-पंचसंअण-तिरिक्ख-मणुसगइपामोणाणुपुवी-उवपाद-परपाद-उत्सास-उत्तोज-  
 दोविहायगइ-पसेयसरीर-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर आदेअ-अणादेअ असाकिं-अजसाकिं-  
 पीषागोदानं सोदय-परोदओ पंचो, दोहि' मि पयोहि पंचविरोहाभावादो । पंचिदिय-सस  
 वादर-पमत्ताण मदि-सुदमअणिमिअइहीसु सोदय-परोदओ पंचो । सासणसम्माइहीसु सोदओ  
 जेव, एदासिं पडिक्खपयहीणं तत्पुदयामावादो ।

पंचपाजावरणीय-अचदसणावरणीय-सोत्सकसाय-अय-दुगुळा-तिरिक्ख-मणुस-देवाठ-  
 तेजा-कम्मइयसरीर-अण्य-गव-रस-फास अगुस्वत्तुम-उवपाद-पिमिण-पंचतरायाय गिरंतरो  
 पंचो, एगसमइयपचणुवठमादो । सादासाद-पंचपोकसाय-पंचसंअण-पंचसंअण-उत्तोज  
 अणसरविहायगइ-पिराविर-सुमासुम-दुमग-दुस्सर अणादेअ अजसाकिं सांतरो पंचो, एग

प्रकृतियोंके बन्ध व उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पांच दर्शनावरणीय, सादा व  
 असादा वैदनीय सोलह कपाय आठ माकपाय तिर्यंगाणु मनुष्याणु, तिर्यग्माति मनुष्यगति  
 भौहारिकशरीर, पांच संस्थान भौहारिकशरीरांगोपांग पांच संहमन तिर्यग्माति व  
 मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी उपघात परघात उच्छ्वास उद्योत दो विहायोगतियां  
 प्रत्येकशरीर, सुमग दुर्मग सुस्वर, दुस्वर, अनादेय अनादेय पदाक्षीर्ति, अयशकीर्ति और  
 नीचगोत्रका स्वेदय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि, दोनों ही प्रकाशसे उनके बन्ध होनेमें  
 कोई विरोध नहीं है । पंचेन्द्रियकृति अल वादर और पर्याप्तता मति व अत अज्ञानी  
 मिथ्यादृष्टियोंमें स्वेदय-परोदय बन्ध होता है । सासादनसम्माइहियोंमें स्वेदय ही बन्ध  
 होता है क्योंकि इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वहाँ उदयमात्र है ।

पांच ज्ञानावरणीय भी दर्शनावरणीय सोलह कपाय अय सुगुप्ता तिर्यंगाणु,  
 मनुष्याणु देवाणु, तैजस व कार्मण शरीर, अण गन्ध रस स्पर्श अगुस्वत्तु उपघात  
 निमाण और पांच अणरायका निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि इनका एक समधिक बन्ध  
 नहीं पाया जाता । सादा व असादा वैदनीय पांच माकपाय पांच संस्थान पांच संहमन,  
 उद्योत अयशस्तविहापागति स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ दुर्मग दुस्वर, अनादेय और  
 पदाक्षीर्ति का साम्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयस मी इनका बन्धविभ्राम देखा

समपण वि पशमि वपुत्रमर्दमणावो । पुग्मिदेदस्म सांन-जित्तो । कुरो जित्तो ? वम्म-सुद्ध-  
 लेस्मिपतिरिक्ख मणुममिच्छादि-मायजमग्मादिहोमु पुग्मिदस्म जित्तोपेनुवत्तमादो । मणुम-  
 गइ-मणुमगइपाभोग्माणुग्मोण सांन जित्तो ववो । होइ मांनो, कुदा जित्तो ? व,  
 सुक्कनेस्मिपमिच्छादि-मायजमग्मादिहोवाण जित्तोपेनुवत्तमादो । आगप्पिपमिपम-  
 वगाव सांन-जित्तो । कथं जित्तो ? व, जइदस्म मज्झकुमत्तादिद्वेषे व जित्तो  
 पेनुवत्तमादो । देवमइ पेचिदियज्जि-वउत्तिपमति पेउत्तिपमरीरमगावण दवगावपाभाणसु  
 पुत्ति-पमरवविद्वपगइ-सुपम-सुम्भर अदे उवापादण सांन-जित्तो ववो । कथं जित्तो ?  
 व, जमज्झरापाउत्तिगिक्के मणुममिच्छादि-मायजमग्मादिहोमु तेउ-यम्म-सुक्कनेस्मिप  
 सेवेज्झरापाउत्तिरिक्ख-मणुममिच्छादि-मायजमग्मादिहोमु व जित्तोपेनुवत्तमादो । पप-

जाला हे । पुग्मिदस्म सांन-जित्तो ववो हाता हे ।

शुद्ध — निरन्तर वण्य कैस सम्मव हे ?

समाधान — क्योंकि, पण्य भाग शुद्ध अद्वयात्मक तिर्यक व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं  
 साक्षात्तसम्पदद्विषयोम पुग्मिदस्म निरन्तर वण्य पाया जाता है ।

अनुपपत्ति भीत मनुष्यगतप्रापोरवानुपूर्वीय सांन-जित्तो ववो हाता हे ।

शुद्ध — इनका सांन-जित्तो ववो भवे ही हा पर निरन्तर वण्य कैस सम्मव हे ?

समाधान — नहीं क्योंकि शुद्धअद्वयात्मक मिथ्यादृष्टि भीत साक्षात्तसम्पद  
 द्विषोम निरन्तर वण्य पाया जाता है ।

औदात्तिकादीर भार औदात्तिकादीरगापांगका सांन-जित्तो ववो हाता हे ।

शुद्ध — निरन्तर वण्य कैस हाता हे ?

समाधान — नहीं क्योंकि नाद्विषयो तथा समाकुमारादि वचसो निरन्तर वण्य  
 पाया जाता है ।

वचसि पेचिदियज्जि-वउत्तिपमति पेउत्तिपमरीरगापांग वचसिगापा-  
 णानुपूर्वी मशान्विद्वपगमि सुमग सुम्भर, आदय भीत उच्छवोवण्य सांन-जित्तो  
 ववो हाता है । निरन्तर वण्य कैस हाता है ? नहीं क्योंकि असंप्रपत्त वरीपुच्छ तिर्यक  
 व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं साक्षात्तसम्पदद्विषयो तथा तेउ पण्य व शुद्ध अद्वयात्मके  
 संप्रपत्तवरीपुच्छ तिर्यक व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं साक्षात्तसम्पदद्विषयोम निरन्तर वण्य

दुस्सास-तम पादर-य-वत-पत्तयसरीराण मिच्छाद्विष्टिं धवो सानर-पिरंतरो । कथं पिरंतरो ? देव-गेरइएमु असुखेऽववायाउअतिरिक्ख मणुम्मसु च पिरंतरववुत्तमादो । सामणम्ममादिद्वीसु पिरंतरो, तस्य पडिक्खस्यपडिक्खामावादो परपादुस्सामक्खविरोहिअण्वत्तम्सु वधाभावादो च । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाआग्गाणुपुब्बि-णीचागाश्राण पि यंधा सानर-पिरंतरो । कथं पिरंतरो ? ज, तेउ-याउक्कदयामिच्छाद्वीसु सत्तमपुदनिमिच्छइहि सामणम्ममादिद्वीसु च पिरंतर ववुत्तमादो ।

पञ्चपा सुगमा ओषपञ्चण्हितो भेदाभावादो । तिरिक्ख्वाउ तिरिक्खगइ-तिरिक्ख गइपाओग्गाणुपुब्बि ठक्खोत्ताण तिरिक्खगइसत्ततो वधो । मणुमा मणुसगइ मणुसगइ पाओग्गाणुपुब्बिण मणुगइसत्ततो वधो । देवाउ [ देवगइ ] देवगइपाओग्गाणु पुब्बिण देवगइमत्ततो । ओगलियसरीर भेतालियमरीरअगोवग-यचमत्तण-यचसचइपाणं तिरिक्ख-मणुसगइसत्ततो, अण्णगइहि यंधविरोहदो । पवरि समचउरममत्तणस्स तिगइ सत्ततो, गिरयगइ अभावादो । वठथियसरीर-वेउत्थियमरीरअगोवगाण मिच्छाद्विष्टिं देव गइ पिरयगइसत्ततो । मासने देवमइमत्ततो । सादुवेदणीय इति-पुरिम-इस्स-दि ससत्थिहाय

पाया जाता है । परधान उच्छ्वास अस दाह्य पयान्त और प्रत्येकगरीरका मिथ्यादृष्टि शुल्कधाममें साम्तर निरन्तर बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? क्योंकि द्यु मायिकियों और अस्वभावप्रमाणक नियंत्रण य मनुष्योंमें उनका निरन्तर पञ्च पाया जाता है । सामाजिकनियमदृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है तथा परधान और उच्छ्वासक बन्धक विरोधी अस्वभावक भी बन्धना अभाव है । निषगति निषगतिप्राप्यग्यानुपूर्वी और नीचगात्रका भी बन्ध साम्तर निरन्तर होता है । निरन्तर बन्ध कब होता है ? यहाँ क्योंकि तब य पापु कात्रक मिथ्यादृष्टियों तथा स्वयं वृत्तिर्थाक मिथ्यादृष्टि और सामाजिकनियमदृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

प्रत्यय सुगम है क्योंकि आध्यात्मिकता यहाँ का भेद नहीं है । निषगायु निषगानि निषगतिप्राप्यग्यानुपूर्वी और उच्छ्वासक निषगानिस्व संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्राप्यग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिस्व संयुक्त बन्ध होता है । इषायु [ इषगति ] और इषगतिप्राप्यग्यानुपूर्वीका इषगतिस्व संयुक्त बन्ध होता है । भौतिकगरीर, आहारिकगरीरोंगापीय पांच संस्थान और पांच संज्ञनका नियंत्रण य मनुष्यगतिस्व संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, अणु गतिपाक साथ उनका बन्धका विषय है । बिना इतना है कि समग्रमनुष्यसंस्थानका नीच गतिर्थास्व संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, मरकगतिस्व साथ उसका बन्धका अभाव है । पञ्चिकगरीर और पञ्चिक गरीरोंगापीयका मिथ्यादृष्टि शुल्कधाममें इषगति य मरकगतिस्व संयुक्त तथा सामाजिक शुल्कधाममें इषगतिस्व संयुक्त बन्ध होता है । सामाजिक नीच पुण्यद हास्य,



गह-विर-सुह-सुमग-सुस्तर-अश्वेय-असकिशीय तिगहसंस्तो बपो, विरमगईए बमानारो ।  
 वप्पसत्तविहाययइ हुमग-सुस्तर-अणादेय-भीचागोराणं तिमहसंस्तो बपो, देवमईए बमानारो ।  
 नवरि सत्तये तिरिक्क-मणुसगहसंस्तो । उप्पामोदस्स देव-मणुसगहसंस्तो, बप्पगईहि  
 विरोइारो । पेषणावरणीय-ववईसणावरणीय-असादावेइभीय-सोत्तसकसाय-अरि-सोग-मव  
 हुमुंअ-पंधिदिबवादि-तेआ-कम्मइयसरीर-बप्प-गव-रस-फास-अगुस्सत्तुअ-उवप्प-परप्प-  
 उस्सास-तत्त-वात्त-पव्वत्त-पव्वेयसरीर-अविर असुह बमसकिस्ति-विमिण पंचंतणइयाणं मिप्प-  
 इड्ढिहि चउगहसंस्तो बपो । सत्तये तिगहसंस्तो, विरमगईए बमानारो ।

देवाउ-देवमई-वेठप्पियसरीर-वेठप्पियसरीरंगोबंय-देवगइपाओमाअुप्पुप्पीयं बप्पस  
 तिरिक्क-मणुसमिप्पइडि-सत्तयसम्माविडिओ सामी । अवसेसाण चउमइया । बंधाणं सुप्पं ।  
 बंधोओओ पत्ति, ' अवेषा वरिष ' ति सुगुहिकुत्ताओ । धुवबंधीयं मिप्पइडिहि बंधो  
 चउमिओ । सत्तये तिविओ, धुववामानारो । अवसेसाणं पयडीयं बपो स्यादि-अदुओ,  
 अदुवबंधिओ । एवमेसा मदि-सुहबप्पाणीयं एववेषा कदा ।

एति प्रशस्तविहायोपति स्थिर, शुभ सुमम सुस्वर, अश्वेय और वराक्षीर्तिका तीन  
 गतिबौंछे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वरकगतिके साथ इसके बन्धका अभाव है ।  
 अश्वस्तविहायोपति शुभंग सुस्वर, अश्वेय और नीचगोबधका तीन गतिबौंछे संयुक्त  
 बन्ध होता है क्योंकि, देवगतिके साथ उसके बन्धका अभाव है । विशेषता इसकी है कि  
 साक्षात्त गुणस्थानमें तिर्बगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । वरकगति  
 देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि बन्ध गतिबौंछे साथ उसके  
 बन्धका विरोध है । पांच ज्ञानावरणीय और वरनावरणीय असादावेइभीय सोलह कपाय  
 अरुति होक, मव सुगुप्पा पंचेन्द्रिय जाति तैजस व क्षमंज शरीर, बंधं गन्ध रस  
 स्पर्श अगुल्लघु कपाय परधात बप्पवास वस वात्त, पर्याप्त प्रत्येकशरीर,  
 अस्थिर, अशुभ अपराक्षीर्ति मिमोज और पांच अन्तरायका मिप्पाइडि गुणस्थानमें  
 चारों गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । साक्षात्त गुणस्थानमें तीन गतिबौंछे संयुक्त बन्ध  
 होता है क्योंकि, वरकगतिके साथ इस गुणस्थानमें उनके बन्धका अभाव है ।

देवायु, देवगति वैद्विषिकशरीर, वैद्विषिकशरीरगोपांग और देवगतिप्रयोत्पात  
 पूर्वीके बन्धके तिर्बक व मनुष्य मिप्पाइडि एवं साक्षात्तअसम्भन्धति स्वामी हैं । दोष  
 प्रकृतिबौंछे बन्धके चारों गतिबौंछे जीव स्वामी हैं । बन्धाव्याप्त सुगम है ।  
 बन्धपुष्पेय है वहाँ क्योंकि, यह अवस्थाक वहाँ है इस प्रकार सूत्रक ही  
 है । वृक्षवन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिप्पाइडि गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है ।  
 साक्षात्त गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ वृक्ष बन्धका अभाव है ।  
 दोष प्रकृतियोंका बन्ध साक्षि व अशुभ होता है क्योंकि वे अशुभवन्धी हैं । इस प्रकार  
 वह मति भुत अज्ञानियोंकी प्रकृता की गई है ।

विमंगणाणीष पि एवं भेष वतर्ध्व, विसैसायावादो । जवरि उवचान्-परघाद-उरसास-  
पतेयसरीराण सोदभो वधो, अत्र प्रसक्तले विमंगणाणामावादो । तस-बादर-पञ्चचारं मिच्छा  
इहिमि सोदभो वधो, बावर-सुहुम-अपन्नससु विमंगणाणामावादो । तिष्णमनुपुष्पीणं  
वधो परोदभो, अपन्नसक्तले विमंगणाणामावादो । पचएसु ओराठिय-वेठभियमिस्स-कम्म  
इयपप्पया अवप्पेदप्पा, विमंगणाणस्स अपन्नसक्तलेण सह विरोहाम्भो । जण्णो वि जइ अरिपि  
मेवो सो संमाल्लिम वत्तम्भो ।

## एककट्टाणी ओघ ॥ २०९ ॥

मिच्छत-जतुंसयवेद-गिरयाउ पिरयगइ-एइरिय-बीइरिय तीइरिय-चठरिरियबादि-  
हुइसठण असंपत्तसेवइसंचइण-भित्ताणुपुवी-भादाव-भावर-सुहुम अप-वत्त-साहारपाणमेक्क-  
ट्टाणिसुत्ता, एककमिद्दि भेष मिच्छाइहिगुणट्टाणे' वंचसक्तलेण अवट्टाणादो । एवासिं पक्खया  
ओक्तुत्स्य । अवरि विमंगणाणीसु एइरिय-वेइरिय-तीइरिय चठरिरियबादि-भादाव-भावर

विमंगणामियोंके भी इसी प्रकार कहना चाहिये क्योंकि, यदि कुछ मन्त्राभियोंसे इनके  
कोई विशेषता नहीं है । मेरे केवल इतना है कि उपपात परपात उच्छ्वास और प्रत्येक-  
धारी, इनका स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकाळमें विमंगणानका अभाव है ।  
अस पादर और पर्याप्तका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि स्थापर,  
सूक्ष्म और अपर्याप्त की ओरोंमें विमंगणानका अभाव है । तीन भानुपूर्वी मानकमोंका बन्ध  
परोक्ष होता है क्योंकि, अपर्याप्तकाळमें विमंगणानका अभाव है । प्रत्ययोंमें औदारिकमिध  
धैर्यिकमिध और क्रमण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि विमंगणानका  
अपर्याप्तकाळके साथ विरोध है । और भी यदि कोई मेरे है तो उसका स्मरणकर कहना  
चाहिये ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २०९॥

मिथ्यात्व मनुसक्तवेद नारकायु नरकगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय  
चतुरिन्द्रिय जाति हुइसंस्थान असंपातसुपादिकसंहनन नारकानुपूर्वी माताय  
स्थापर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इनकी एकस्थानिक संघा है क्योंकि, एक  
ही मिथ्यादृष्टि गुणस्थानम इनका बन्ध स्वरूपसे अवस्थान है । इनकी प्ररूपणा ओषके  
समान है । विशेषता यह है कि विमंगणामियोंमें एकन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय

१ अ अमलीः पचत एत अमली एत पचत इति पाठः ।

२ अमली इति मेरी आचमनो इति मेरी इति पाठः ।

३ अति मिच्छादृष्टि इच्छा इति पाठः ।

मह-विर-सुह-सुमग-सुस्वर-आदेज्ज-असकिप्पीन तिगइसंहुतो वंशो, विरमयईए वमावाहो ।  
 वप्पसत्थविहायमइ दुमन-दुस्सर अण्णदेज्ज-मीणागोदणं तिगइसंहुतो वंशो, देवगईए वमावाहो ।  
 पवरी सासणे तिरिक्ख-मणुसमइसंहुतो । उप्पागोदस्स देव-मणुमगइसंहुतो, वप्पगईए  
 विरोहो । पंथप्पावरणीय-अवदेसणावरणीय-असाहवेदणीय-सोत्तसकसाय-अरि-सोम-अ-  
 हुण्ण-अधिदियवादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वप्प-गंज-रस-फस अगुरुवतुअ-उवपाए-परपाए-  
 उत्सास-उत्त-वाह-प-अ-पत्तेयसरीर-अभिर वसुह मज्जसकिप्पि-विमिअ पंचंतणइमाअ मिप्प-  
 इड्ढिइ चउपइसंहुतो वंशो । सासणे तिगइसंहुतो, विरमयईए वमावाहो ।

देवाउ-देवगइ-वेउअियसरीर-वेउअियसरीरंगोत्तग-देवगइपाओनगणुपुप्पीअ वंशस  
 तिरिक्ख-मणुसमिप्पइ-सासणसम्पादिड्ढियो सामी । अवसेसणं चउगइया । वचअणं सुयमं ।  
 वंशओप्पेहो अत्ति, 'अवंधा अत्ति' ति सुपुरिइहो । पुववंधीअ मिप्पइड्ढिइ वंशो  
 चउअिहो । सासणे तिहिहो, पुवअमावाहो । अवसेसणं पयडीअ वंशो सवि-अहुओ,  
 अहुवंधिअहो । एवमेसा मदि-सुदअणाणीअ पकवथा कइ ।

एति प्रशस्तविहायोपति स्थिर, शुभ सुमग सुस्वर, अदेय और पञ्चकीर्तिक तीन  
 गतियोंसे संयुक्त वन्ध होता है क्योंकि, नरकपातिके साथ इसके वन्धका समाप है ।  
 अमहास्तविहायोपति दुर्मग दुस्वर, अवदेय और नीचगोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त  
 वन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिके साथ इसके वन्धका समाप है । विरोधता इतनी है कि  
 सासत्त्व शुचस्यात्ममें तिर्यक्ता और मनुष्यगतिके संयुक्त वन्ध होता है । उप्पगोत्र  
 देवमति और मनुष्यगतिके संयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इसके  
 वन्धका विरोध है । पांच कामावरणीय नी इंद्रीमावरणीय असातावेदनीय सोलह कवाव  
 अरति शोक मय अगुप्पा पंचेन्द्रिय आति वैजस व कर्मज शरीर, वर्म गज रस  
 स्पर्श अगुरुकण्डु वपगात परधात उप्पधात अण्णधात अण्ण वाह, पर्याप्त प्रत्येकशरीर,  
 अस्थिर, अशुभ अवशकीर्ति निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि शुचस्यात्ममें  
 चारों गतियोंसे संयुक्त वन्ध होता है । सासत्त्व शुचस्यात्ममें तीन गतियोंसे संयुक्त वन्ध  
 होता है क्योंकि, नरकपातिके साथ इस शुचस्यात्ममें उनके वन्धका समाप है ।

देवासु, देवगति वैकिप्पिकशरीर, वैकिप्पिकशरीरंगोत्तग और देवगतिप्रायोगात्  
 पूर्वीके वन्धके तिर्यक् व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासत्त्वजसम्पादति स्वामी हैं । शेष  
 प्रकृतियोंके वन्धके चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं । वन्धाध्यात सुयम है ।  
 वन्धाधुप्पेह है नहीं, क्योंकि, यह अवन्धक नहीं है इस प्रकार सूचक ही  
 है । अक्षयणी प्रकृतियोंका वन्ध मिथ्यादृष्टि शुचस्यात्ममें चारों प्रकारका होता है ।  
 सासत्त्व शुचस्यात्ममें तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि वहां अक्ष वन्धका समाप है ।  
 शेष प्रकृतियोंका वन्ध सामि व अशुभ होता है क्योंकि, वे अशुभवन्धी हैं । इस प्रकार  
 यह मति भुव अशानिचोकी प्रकृपणा की गई है ।

विमगणाणीं पि एव चैव वक्तव्यं, विसंज्ञामात्रादौ । पञ्चरि उक्त्वाद्-परपाद-उत्सास  
पतेयसरीराण सोदयो बंधो, अन्वज्जत्कले विमगणाणामात्रादौ । तस-बाह्वर-पञ्चत्ताप मिच्छा  
इष्टिम्हि सोदयो बंधो, बाह्वर-सुदुम अपवज्जत्तएसु विमगणाणामात्रादौ । तिष्णमाणुपुष्पीं  
बंधो परोदयो, अपवज्जत्कले विमगणाणामात्रादौ । पञ्चएसु जोराटिय-वेतन्वियमिस्स-कम्म  
इयपच्चया अवपेदम्मा, विमगणाणस्स अपवज्जत्कलेण सह विरोहादौ । अण्णो वि बह्व अत्थि  
मेवो सो संमात्थिय वत्तणो ।

## एकद्व्याणी ओघ ॥ २०९ ॥

मिच्छत-गुलंस्यवेद-भिरयाठ भिरयगह-एहदिय-बीहदिय तीहदिय-चठरिंदियबादि-  
हुइसठण असपत्तसेवद्वंसचइज-गिरयाणुपुवी-आदाव-बावर-सुदुम अपवज्जत्-साह्वरपापमेक्क-  
ह्वापिसम्मा, एकद्वि चैव मिच्छाइष्टिगुणह्वापे' यवसरूपेण अवह्वाणादौ । एदासिं परूवणा  
ओपत्तुस्स । पवति विमगणाणीसु एहदिय-बेहदिय-तीहदिय चठरिंदियबादि-आदाव-बावर

विमगज्ज्ञानियोंके ही इसी प्रकार कहना चाहिये क्योंकि, मति झुत भ्रान्तियोंसे इनके  
कोई विशेषता नहीं है । मेव केबल इतना है कि उपपात परपात उच्छ्वास और प्रत्येक-  
शरीर, इनका स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकायमें विमगज्ज्ञानका अभाव है ।  
जस बाह्वर और पर्याप्तका मिथ्याइष्टि गुणस्यात्ममें स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि, स्थावर,  
सूक्ष्म और अपर्याप्तक जीवोंमें विमगज्ज्ञानका अभाव है । तीन मानुषी नामकर्मोंका बन्ध  
परोदय होता है क्योंकि, अपर्याप्तकायमें विमगज्ज्ञानका अभाव है । प्रत्ययोंमें औत्वारिकमिथ  
वैदिकमिथ और काम्य प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि, विमगज्ज्ञानका  
अपर्याप्तकायके साथ विरोध है । और भी यदि कोई मेव है तो उसको स्मरणकर कहना  
चाहिये ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २ ९॥

मिथ्यात्व मनुसकवेद नारकायु नरकगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय  
चतुन्द्रिय जाति हुइसठस्याम असपासत्तपादिकसंहनम नारकानुपुवी आताप  
स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इनकी एकस्थानिक संज्ञा है क्योंकि, एक  
ही मिथ्याइष्टि गुणस्यात्ममें इनका बन्ध स्वरूपसे अवस्थान है । इनकी प्ररूपणा ओघके  
समान है । विशेषता यह है कि विमगज्ज्ञानियोंमें एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुन्द्रिय

१ अ आपसी- पञ्च एह पावती एह पञ्च इति पाठ ।

२ अथा इति वेदो वा पत्ततो- इति वेदो इति पाठ ।

३ अथ मिच्छाद्विह इहद्विह इति पाठ ।

सुहुम-अपम्वत्-साहारनै-विरयाणुपुष्पीं पराभो वधो, एतेषु विभगवार्णवमभावात् ।  
संस सुगमै ।

आमिणित्रोदिय-सुद ओहिणाणीसु पचणाणावरणीय-चउदसणा  
वरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पचतराइयाण को वधो को अवंधो ?  
॥ २१० ॥

एवं सुगमै ।

असजदसम्माइट्टिणहुडि जाव सुहुमसापराइयउवसमा स्ववा  
बंधा । सुहुमसापराइयअद्धाण' चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २११ ॥

एशसिसुदयादो वधो पुर्व्वं वोच्छिज्जो, वंधे वोच्छिज्ज सति वि पम्भ उइयदसणाइ ।  
पंचनावावरणीय-चउदसनावरणीय-पचतराइयाण सोदयो वधो । असकित्तिण असजदसम्मा-  
तिट्ठिहि सोदय-परेदयो, पडिबन्नुदयदसणादो । उवरि सोदयो येव, पडिबन्नुदयामावादो ।

आति आताप स्वावर सूहम अपघात भाचारण और नारकाजुपुष्पीय परेदय व व  
होता है क्योंकि, हममें विभगवानी जीर्णका अभाव है । दोष प्रकरण सुगम है ।

आमिनिवाधिक, अत और वचनि ज्ञानी जीर्णमें पांच शाखावरणीय, चार इर्ष्या-  
वरणीय, यक्षकीर्ति, उच्छगान और पांच अन्तरायका केन वन्धक और केन अन्धक  
है ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्पगट्टिसे ठेकर सूहमसाम्प्रायिक उपपन्नक व क्षपक एक वन्धक है ।  
सूहमसाम्प्रायिककठके अन्तिम समयमें आकर वन्ध व्युच्छिज्ज होता है । ये पन्धक हैं, क्षेप  
अवन्धक हैं ॥ २११ ॥

हम प्रकृतिवाक्य वन्ध उद्भवसे पूर्व्वमें व्युच्छिज्ज होता है क्योंकि, वन्धक व्युच्छिज्ज  
ही जानेपर ही पीछे हमका उद्भव देखा जाता है । पांच ज्ञानावरणीय चार इर्ष्यावरणीय  
और पांच अन्तरायका स्वाइय वन्ध होता है । यक्षकीर्तिक अर्थात्तत्सम्पगट्टि शुभस्थानमें  
स्वेदय परेदय वन्ध होता है क्योंकि यहाँ उच्छयी प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्भव देखा जाता  
है । ऊपर स्वेदय ही वन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्भवका अभाव है ।

संभसामोदस्य असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु सोदय-परोदयो, पडिक्कसुदयदंसणादो ।  
उपरि सोदयो चेव ।

पंचपाणावरणीय-चउदमणावरणीय-उच्छागोद-संयंतराहयार्थं निर्तरे पंचो, एत्य  
अधुवरमामात्रादो । असंजदसम्मादिट्ठिपुहुडि जाव पमत्तसजरो ताव असकिणीए पंचो  
सांतो । उवरि पित्तो, पडिक्कसु म्पडिक्कामात्रादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मा  
दिट्ठिणं देव-मणुमगइसुत्तो । उवरिमेसु देवगइसुत्तो । अदुमइसजदसम्मादिट्ठि, दुगइ  
संजदसजदा मामी । उवरिमा मणुसा चेव । अचट्ठाय पंचवाट्ठिण्णट्ठायं च सुगम । सुव  
नंधीण निविहो पंचो, धुवत्तामात्रादो । अवसेयार्थं सादि-अदुवो, अदुवपविच्छादो ।

णिहा पयला य ओघ ॥ २१२ ॥

जवरि 'असंजदसम्मादिट्ठिपुहुडि' जाव मविद्व्य । आपमि 'मिच्छाहट्ठिपुहुडि' सि  
वुत्त ; परय पुत्त असंजदसम्मादिट्ठिपुहुडि सि वत्तस्य, सण्णाएस्स हेट्ठिमणुपट्ठामेसु अमात्रादो ।

उच्छपोरका असंयतसम्पगइहि और सयतासंयत गुणस्यालोमं स्वोदय-परोदय बन्ध होता  
है क्योंकि यहां उसकी प्रतिपन्न प्रकृतिका उदय देखा जाता है । ऊपर उसका स्वोदय ही  
बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार ज्ञानावरणीय उच्छवाज और पांच अन्तरायका  
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहां इनके बन्धविधामका अभाव है । असंयतसम्पगइहिसे  
छकर प्रमत्तसंयत तक यन्त्रात्मिका बन्ध उत्पन्न होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है  
क्योंकि, यहां उसकी प्रतिपन्न प्रकृतिक बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । असंयतसम्प  
गइहियोंके दय च अनुप्य गमिने संयुक्त बन्ध होता है । उपरिम जीयेंकि देवगतिसे  
संयुक्त बन्ध होता है । चारों गतिपत्ति असंयतसम्पगइहि और हा गमियोंके  
संयतासंयत स्वामी है । उपरिम गुणस्याजर्ती अनुप्य ही स्वामी है । बन्धात्मान  
आर बन्ध-वृत्तिउत्पत्ति सुगम है । अधुवर्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है  
क्योंकि उभय भूष बन्धका अभाव है । शय प्रकृतियोंका सादि च अधुव बन्ध होता है,  
क्योंकि, ये अधुवर्धी हैं ।

निद्रा और प्रपञ्चकी प्ररूपणा ओपक समान है ॥ २१० ॥

विश्रयता कबन यह है कि असंयतसम्पगइहिमं मेकर चट्ठा जाहिय । आपमें  
मिच्छाहट्ठिमं मेकर एमा कडा गया है परंतु यहां असंयतसम्पगइहिमं मेकर  
चट्ठा जाहिय क्योंकि, अधस्सम गुणस्यालोमं सम्पगमाका अभाव है । इतना ही यहां

एविधो येन विसेसो, गतिं अण्परत्वं करत्य णि ।

सादावेदणीयस्त को वंधो को अवधो ? ॥ २१३ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव स्तीणकसायवीदरागच्छदुमत्था  
वधा । एदे वधा, अवधा गति ॥ २१४ ॥

सादावेदणीयस्त वधो उदयारो पुनं पण्डा वा वोच्छिन्नो सि विषारो नत्ति, एत्थ  
बंधोत्थानं वोच्छेदमावाधो । सोइय-परोइयो बंधो, अद्भुतोदयारो, असंजदसम्मादिट्ठि  
प्पहुडि जत्थ पमत्तसंजरो सि बंधो सांतरो । उवरि मितरो, पडिबन्धपयडीए वधामावाधो ।  
पण्यया सुयमा । असंजदसम्मादिट्ठि देव-मनुसगाइसंजुत्तं; उवरिया देवगाइसंजुत्तमाइसंजुत्तं  
व वधति, सादावियाधो । पठगाइअसंजदसम्मादिट्ठियो, दुयइसवरासंजदा सामी । उवरि मनुष्य  
वेद । बंधोत्थानं सुगमं । बंधवोच्छेदो नत्ति, 'अवधा पत्ति' सि सुत्तुदिहचारो । सादि  
अद्भुतो बंधो, अद्भुतबंधिचारो ।

विशेष है अन्वय कहीं भी और कुछ विशेषता नहीं है ।

सादावेदनीयक केन बन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ २१३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजतसम्बन्धित्थे केकर क्षीणकसायवीतरागच्छदुमत्थ तक बन्धक है । ये बन्धक  
हैं, अवन्धक नहीं हैं ॥ २१४ ॥

सादावेदनीयक बन्ध उदयसे पूर्वमे वा पश्चात् व्युच्छिन्न होता है यह विचार  
नहीं है क्योंकि यहाँ उसके बन्ध आर उदयके व्युच्छेदका अभाव है । सोइय-परोइय बन्ध  
होता है क्योंकि यह अद्भुतोदयी है । असंजतसम्बन्धित्थिसे केकर प्रमत्तसंजत तक उच्छन्न  
बन्ध साम्प्रत होता है । ऊपर मिततर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ उसकी प्रतिपत्त  
प्रकृतिक बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । असंजतसम्बन्धित्थि जीव देव व मनुष्य  
गतिस्त संजुक्त बांधते हैं, उपरिम जीव देवगतिसे संजुक्त और अपत्तिस्तंजुक्त  
बांधते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । वारों गतिमेंके असंजतसम्बन्धित्थि और वो  
पत्तिमेंके संजतासंजत स्वामी हैं । उपरिम शुभस्वभाववर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं ।  
बन्धाम्भाव सुगम है । बन्धव्युच्छेद नहीं है क्योंकि, यह अवबन्धक नहीं है इस प्रकार  
सूत्रमें ही विर्यिष्ट है । सादि व अद्भुत बन्ध होता है, क्योंकि, यह अद्भुतबन्धी है ।

सेसमोघ जाव तित्थयेरि त्ति । णवरि असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि  
त्ति भाणिदब्ब ॥ २१५ ॥

एदस्स अत्थो जदि वि सुगमो तो वि सण्णापपक्खवाएणाक्खित्तचित्तो दुम्मेहजपाणु-  
ग्गाहद्धं च पुणत्थि परूवेमि — असात्तावेदणीयस्स पुब्ब वधो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो पत्थि,  
केवलज्जाणीसु वि तदुदयदंसणादो । एवमभिरामुद्दार्णं पि वत्तर्थ । अरदि-सोगार्णं पुब्ब वधो  
पक्का उदभो वोच्छिण्णा, पमत्तापुच्चेसु बंधोदयवोच्छेदुवर्त्तमादो । अजसकिटीए पुम्बमुदभो  
पक्का बंधो वोच्छिण्णो, पमत्तासजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवर्त्तमादो । असात्तावेदणीय  
अरदि-सोगार्णं वधो सोदय-परोदभा, अदुवोदयत्तादो । अभिरामुद्दार्णं सोदभो, धुवोदयत्तादो ।  
अजसकिटीए असजदसम्मादिट्ठिहि बंधो सोदय-परोदभो । उवरि परोदभो वेव । एदसिं  
पयडीणं सम्भासिं पि वधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । पक्खया सुगमा ।  
असजदसम्मादिट्ठिहि सम्बपयडीण दुगाइसंजुतो, उपरिमाणं देवगइसंजुतो वधो । चटगइ  
असजदसम्मादिट्ठी दुगाइसंजदासंजदा ममुसगइसजदा च सामी । असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि

येप प्ररूपणा तीर्भकर प्रकृति तक बोधके समान है । विशेषता केवल इतनी है कि  
' असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर ' ऐसा कहना चाहिये ॥ २१५ ॥

इस सूत्रका अर्थ यद्यपि सुगम है तो भी सम्यग्ज्ञानके प्रसप्ततस अस्तिवचित्त  
अर्थात् आकाश होकर और बुद्धि जनोके अनुमहार्थ फिरसे भी प्ररूपणा करते हैं—  
असात्तावेदणीयका पूर्वमे वन्ध व्युत्पिन्न होता है । उदयव्युच्छेद उसका नहीं है क्योंकि,  
केवलज्जाणीयोमें भी उसका उदय देखा जाता है । इसी प्रकार अस्थिर और अशुभके भी  
कहना चाहिये । अरदि व शोकका पूर्वमे वन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पिन्न होता है,  
क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके वन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया  
जाता है । अथशाकीर्तिका पूर्वमे उदय और पश्चात् वन्ध व्युत्पिन्न होता है क्योंकि प्रमत्त  
और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके वन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता  
है । असात्तावेदनीय अरति और शोकका वन्ध लोभय परोदय होता है, क्योंकि, वे  
अशुभोदयी हैं । अस्थिर और अशुभका लोभय वन्ध होता है क्योंकि वे अशुभोदयी हैं ।  
अथशाकीर्तिका वन्ध असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें लोदय-परोदय होता है । ऊपर उसका  
परोदय ही वन्ध होता है । इन सब ही प्रकृतियोंका वन्ध सात्तर होता है क्योंकि, एक  
समयसे भी उनका वन्धविधायक देखा जाता है । मात्थय सुगम है । असंयतसम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानमें सब प्रकृतियोंका वा गतियोंसे समुक्त तथा उपरिम जीवोंके वेवगतिसे संयुक्त  
वन्ध होता है । आते गतिर्बोके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतिर्बोके संयतासंयत और  
ममुप्पगतिर्बोके संयत स्वामी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक वन्धाग्नान





गइससुत्तो, अण्णगइदि सइ विरोहादो । अपण्णक्खणपठक्कस्स चउगइअसंजदसम्माइद्दी  
सामी । अण्णसेसाणं पयइदीयं देव-पेरइया सामी । वंषट्ठाणं वरिये, एक्कमिह गुणट्ठाणे भूभोगुण  
ट्ठाणअण्णियट्ठाणविरोहादो । असंजदसम्मादिदिमिह वंषो वोच्छिन्नइदि । अपण्णक्खणपठक्कस्स  
तिविहो वषो, धुवामावाहो । अण्णसेसाणं सारि भट्ठवो ।

पण्णक्खणपठक्कमेव येद्वामियमसंजदसम्मादिदि-संजदसंजददो गुणट्ठाणेषु  
समं वेव वंषुवत्तादो । वंषोदया सम वोच्छिण्णा, संजदसंजदमि तदुभयाभावदंसणादो ।  
सोदय-परोदयो वंषो, धुवादयत्तादो । विरतरो वंषो, धुववंषितादो । पण्णया सुगमा ।  
असंजदसम्मादिद्दीसु देव-मणुमगइससुत्ता । संजदामंजदसु देवगइसंजुत्तो । चउगइअसंजद  
सम्मादिद्दी दुगइसंजदामंजदा सामी । असंजदसम्मादिदिण्हइ जाव संजदसंजदो वि  
वंषट्ठाणं । संजदामंजदमि वंषो वोच्छिन्नइदि । दोसु वि गुणट्ठाणेषु तिविहो वषो,  
धुवामावाहो ।

पुरिसनेद चउवंजलण-इस्म-रदि-अय-दुगुणं सोदय-परोदयो वंषो । सांवर-विरतार

हाना हे कथोकि, अण्ण गनियोक्क नाय इमक्क वण्णक्क विराय हे । अण्णस्याण्णानपनुक्क  
थारो गनियोक्क अण्णयतमण्णगइदि ग्यामी हे । शय प्रहणियोक्क इय य मारकी स्वामी हे ।  
अण्णस्याण्णान मदी हे कथोकि एक्क गुणस्याण्णमे वहुम गुणस्याण्ण जनिम अण्णान्ण विराय  
हे । अण्णयतमण्णगइदि गुणस्याण्णमे वण्ण व्युत्तिउअ हाना हे । अण्णस्याण्णानपनुक्क तीन  
प्रकारका वण्ण हाना हे कथोकि, उमक्क अण्ण वण्णक्क अमाय हे । शय प्रहणियोक्का नादि य  
अण्ण वण्ण हाना हे ।

अण्णस्याण्णानपण्णयतुक्क वदी विरथानिक्क हे कथोकि, अण्णयतमण्णगइदि और  
नंयनानंयन इम वा गुणस्याण्णमे नमाम ही वण्ण पाया जाना हे । वण्ण और उदय वानो  
नायमे व्युत्तिउअ हाना हे कथोकि, नंयनानंयन गुणस्याण्णमे उम वानोका अमाय इया  
जाना हे । आदय वगइय वण्ण हाना हे कथोकि यह अण्णायवी हे । निरप्पर वण्ण हाना  
हे कथोकि, यह धुववण्ण है । अण्णय सुगम है । अण्णयतमण्णगइदिथोमे इय य अनुप्य गनिये  
नंयुक्क तथा नंयनानंयनोमे इयगनिय गयुक्क वण्ण हाना हे । थारो गनियोक्क अण्णयत  
मण्णगइदि और वा गनियोक्क नंयनानंयन स्वामी हे । अण्णयतमण्णगइदिमे मरर नंयनानं  
यन तक अण्णस्याण्ण है । नंयनानंयन गुणस्याण्णमे वण्ण व्युत्तिउअ हाना हे । वानो ही  
गुणस्याण्णोमे तीन प्रकारका वण्ण हाना हे कथोकि, धुव वण्णका अमाय हे ।

पुण्णवद् थार नंयनम हारण गति अय और सुगुणवा आदय यउदय वण्ण



बोधिञ्जदि । सादि-अदुषो, अदुषवधिसादो ।

देवगइ-पंचिदियजाति-वेठविय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंअण-वेठवियसरीर-अगोवंग वण्ण-गध-रस फ़ास-देवगइपाओग्गाणुपुष्पी-अगुरुअलहुअ-उवपाद-परपाद-उत्सास-पसरवविहायगइ-तस-आदर-पञ्जत्त-पसेयसरीर-धिर-सुम-सुमग-सुस्सर-आदेव-जिमिपणामाण उरुवेदे— देवगइपाओग्गाणुपुष्पी-वेठवियसरीर-वेठवियसरीरंगोवगाण पुम्बमुदओ पण्ण बधो बोधिञ्जदि, अणुत्तामज्जदसम्मादिष्टीमु बधोदयवोअेदुवत्तादो । अवसेसतेवीसपयडीम एत्थु दयवोअेदो पत्ति, बंधवोअेदो चव, केवलपार्थसु उदयवोअेदुवत्तादो ।

देवगइ-वेठवियदुगाण सध्वगुणहाणेसु परोदओ बंधो, एदासिमुदयवधापमन्कमेण उचिविरोहादो । पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गध-रस-फ़ास-अगुरुअलहुअ-तम-आदर पञ्जत्त-धिर-सुम-जिमिपण सोदओ बधो । समचउरससंअण उवपाद-परपाद उत्सास-वत्तय सरीरवमसंजदसम्मादिष्टिदि सोदय-परोदओ बधो । उर्वरिमेसु गुणहाणेसु सोदओ चव, तेसिमवग्गत्ताए अमावादो । जवरि समचउरससंअणस्य सध्वगुणहाणेसु सोदय-परोदओ बंधो । पसरवविहायगइ-सुस्सरण सध्वगुणहाणेसु सोदय-परोदओ बधो । सुमग भादेवजाप

धुच्छिअ हाता है । सादि य अदुष बन्ध हाता है क्योंकि, वह अदुषवर्णी है ।

देवगानि पंचमिदियजाति पैत्रियिक तैजस य कामेण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान पैत्रियिकशरीरगोपांग बन्ध गन्ध रस स्पर्श देवगानिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुत्वसु उपधान परधान उच्छ्रवास प्रशस्नविहायगानि जस आदर, पयान प्रत्यक्षशरीर, स्थिर, सुम सुमग सुस्सर, आदय आर निमाण कामकर्म, य प्रवृत्ता करते हैं— देवगानिप्रायोग्यानुपूर्वी पैत्रियिकशरीर और पैत्रियिकशरीरगोपांगका पूर्वमें उद्यम और पश्चात् बन्ध धुच्छिअ हाता है क्योंकि अपूर्वकरम और असयतमम्यगदधि गुणस्थानोंमें कामरा उनका बन्ध य उद्यमका धुच्छेत् पाया जाता है । दोन तैर्हम प्रवृत्तियोंका यही उद्यम-धुच्छेत् महीं है केवल बन्ध धुच्छेत् ही है क्योंकि केवलशानिर्णामें उनका उद्यम-धुच्छेत् पाया जाता है ।

देवगानिष्ठिक और पैत्रियिकष्ठिकका सब गुणस्थानोंमें परादय बन्ध हाता है क्योंकि, इनके उद्यम और बन्धका एक साथ रहनका विराध है । पंचमिदियजाति तैजस य कामेण शरीर, बन्ध गन्ध रस स्पर्श अगुरुत्वसु जस आदर, पयान स्थिर, सुम और निमाणका स्वादय बन्ध हाता है । समचतुरस्रसंस्थान उपधान परधान उच्छ्रवास और प्रत्यक्षशरीरका असयतमम्यगदधि गुणस्थानोंमें स्वेदय परादय बन्ध हाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उनका स्वेदय ही बन्ध हाता है क्योंकि, उनका अपयान्तकामका अभाव है । विरोध रहता है कि समचतुरस्रसंस्थानका सब गुणस्थानोंमें स्वेदय परादय बन्ध हाता है । प्रशस्नविहायगानि और सुस्सरका सब गुणस्थानोंमें स्वादय-परादय बन्ध हाता है । सुमग और आदयका

पञ्चप-भोर्हसिमेग-सामित्तद्वाज-बंधनियप्ता जायिष वसन्ता ।

मनुसाठमस्य पुण्यावरकत्तसंधिधर्मादयपरिक्ता सुगमा । परोदमो बंधो, मनुस्मात्  
बंधोदयावमसंभद्रसम्मादिदिग्दि अक्षमेण मुसिधिराहादौ । पिरंतरो, एगसमएण वधुवरमामावाहौ ।  
वायसाष्टीस पञ्चया, भोसाठिय भोसाठियमिस्स-येठमियमिस्स-कम्मइमपञ्चयावममावाहौ ।  
मनुस्मात्संभुत्ते बंधो । देव-भेत्तया सामी । बंधद्वान् पत्ति एन्कम्मिह गुणद्वये वद्वान्पिरोहादौ ।  
वसंभद्रसम्मादिदिग्दि बंधो बोधिउग्गदि । सादि-अदुवो, अदुवबंधिवाहौ ।

देवाठमस्य पुण्यमुदमो पञ्चा बंधो बोधिउग्गदि, अप्पमत्तासंभद्रसम्मादिदिग्दि  
बन्धोदयवोच्छेदुवसमाहौ । परोदमो, सेवएण बंधविरोहादौ । पिरंतरो, भंतोमुहुत्तेण विष्ण  
वधुवरमामावाहौ । पञ्चया ओपतुत्स । देवगइसंभुत्ते बंधो । निरिक्क-मनुमभसंभद्रसम्मा-  
दिदि-संभद्रासंभद्रा मनुसंभद्रा व सामी, अप्पत्तव बंधापुवसमाहौ । वसंभद्रसम्मादिदिग्दिपुहि  
वाव अप्पमत्तसंभद्रा सि बंधद्वान् । अप्पमत्तसंभद्रद्वए संखेक्कणिमं मामं गंतुं बंधो

होता है । साम्तर विपत्तरता प्रत्यय गतिमयाग, स्वामित्व अन्वान और बन्धविषय  
इसके जानकर कहना चाहिये ।

मनुष्यायुके पूर्वापर काय सम्माननी बन्ध और उदयके मनुष्येवकी पतीता सुगम  
है । परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, मनुष्यायुके बन्ध और उदयके वसंतसम्मानादि  
गुणस्थानमें एक साथ अस्तित्वका विरोध है । विपत्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे  
उसके बन्धविग्रामका समाप्त है । प्यासीस प्रत्यय है क्योंकि और औरिक औदारिकमिन्न  
वैदिकिकमिन्न और कामेज प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।  
देव व मारकी स्वामी है । बन्धाप्याज नहीं है क्योंकि, एक गुणस्थानमें यज्जानका विरोध  
है । वसंतसम्मानादि गुणस्थानमें बन्ध व्यवस्थित होता है । सादि व अदुव बन्ध होता है  
क्योंकि, वह मनुष्यबन्धी है ।

देवायुका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्यवस्थित होता है क्योंकि अग्रमत्त और  
वसंतसम्मानादि गुणस्थानोंमें कमसे उसके बन्ध और उदयका मनुष्येव पाया जाता है ।  
परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, सेवएण उसके बन्धका विरोध है । विपत्तर बन्ध होता है,  
क्योंकि, वन्तमुहुत्तेके बिना उसके बन्धविग्रामका समाप्त है । प्रत्यय बोधके समाप्त हैं । देव  
पतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तिरिक्क व मनुष्य वसंतसम्मानादि और संभद्रासंभद्र, तथा मनुष्य  
संभद्र स्वामी हैं क्योंकि बन्ध पतिधर्मोंमें उदयका बन्ध पाया नहीं जाता । वसंतसम्मानादि  
केकर अग्रमत्तसंभद्र तक बन्धाप्याज है । अग्रमत्तसंभद्रकायके संक्षयत्वमें भाग आकर बन्ध

मणपञ्चवणाणीसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय जसकित्ति  
उच्चागोद पचतराहयाण को वधो को अवधो ? ॥ २१६ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव सुहुमसांपराहयउवसमा स्त्वा वधा ।  
सुहुमसांपराहयसजदद्दाए चरिमसमम गतूण वधो वोञ्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २१७ ॥

एत्थ एदासि पयसीण मदिणाअमग्गणाए पमत्तसजदप्पहुडिगुणहासेसु जथा परूवणा  
कदा तथा परूवेदप्पा । जवरि एत्थ सप्पस्थितिवि-गठंसयवेदपच्चया अवप्पेदप्पा, अप्पसत्थ  
वेदोदइत्थण मणपञ्चवणाणाणुप्पसीदो । पमत्तपच्चएसु आहारदुग्गमवप्पेदप्प, मणपञ्चवणाणस्स  
आहारसत्तिरदुग्गएण सह विरोहादो । पुरिसवेदस्स सोदधो वधो । एवमणो वि विसेसो  
जदि अरिष सो संमरिय वत्तम्भो ।

णिहा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ २१८ ॥

मन-पर्ययज्झानी जीवोमि पाच ज्ञानावरणीय, चार दशनावरणीय, यशस्विर्ति, उच्चगोत्र  
और पांच अन्तरायक कैन पन्चक और कैन अपन्चक हे ? ॥ २१६ ॥

यह सब सुगम है ।

प्रमत्तमयतमे टेकर सुखसाप्परायिक उपपन्नक व क्षपक तक पन्चक हैं । सुख  
साप्परायिकसुद्धिसयत्तकलके अन्तिम समयक आकर पन्च व्युत्थिन्न होना है । ये पन्चक हैं,  
शेष अपन्चक हैं ॥ २१७ ॥

यहां हम प्रवृत्तियोंकी मतिज्ञानमागणामें प्रमत्तमयतादिक गुणस्थानोंमें जिन  
प्रकृपणा की गई है वीम प्रकृपणा करना चाहिये । यिहाय हमना है कि यहाँ मयत्र तर्पयद्  
और तर्पुमकचद् प्रत्ययोक्ते कम करना चाहिये क्योंकि अमदात्म यदादय युक्त जीर्णक  
मम पर्येषज्झामकी उत्पत्ति नहीं होती । प्रमत्तमयत गुणस्थान मयधम्मी प्रत्ययोंमें आहारक  
विकल्प कम करना चाहिये क्योंकि, मन पर्येषज्झामका आहार-तीरविकक उत्पन्न नाय  
बिनाय है । पुनरपचकका व्याख्य बन्ध होता है । इसी प्रकार अन्य भी यदि भद है ता उत्पन्न  
स्मरण कर करना चाहिये ।

निज और प्रपठाक कैन पचक और कैन अपचक हे ? ॥ २१८ ॥

असंभ्रतसम्प्रादिहिं हि सौख्य-परोदयो । उपरि सोदयो चेव, पडिवक्त्तुदयामावाधो ।

पिर-सुमाजमसंभ्रसम्प्रादिहिं हि आव पमसंभ्रदा ति सतिरो बधो । उपरि भिरतिरो ।  
अवसेसाय पयडीणं सुव्यगुणहृत्तेसु बंधो भिरतिरो, पडिवक्त्तुपयडीर्णं बंधामावाधो ।

देवगर्-वेठम्वियदुगाणं वेठम्विय-वेठम्वियमिस्सपञ्चया असंभ्रसम्प्रादिहिं हि अपने-  
द्वया । सेसपयडीर्णं पयया भोक्तुम् । देवगर्-वेठम्वियदुगाणं बंधो सन्वगुणहृत्तेसु देवगर्-  
संभ्रते । अवसेसाय पयडीणं बंधो असंभ्रसम्प्रादिहिं हि देव-मनुस्यसंभ्रत्तं । उपरिमि सुव-  
हृत्तेसु देवयसंभ्रत्तं । देवगर्-वेठम्वियदुगाणं दुगाणसंभ्रसम्प्रादिहिं-संभ्रदासंभ्रदा मनुस्य-  
संभ्रदा समी । सेसाय पयडीणं अउयसंभ्रसम्प्रादिहिं हि दुगाणसंभ्रदासंभ्रदा मनुस्यसंभ्र-  
संभ्रदा समी । असंभ्रसम्प्रादिहिं हि आव मनुष्यकृतं ति संभ्रदाय । अपुञ्चकृतं अपि सेस्ये  
भागे गतं बंधो बोधिन्यदि । मिमिक्त्तु ति विदो बंधो, धुवामावाधो । अवसेसाय बंधो  
सादि-अद्वयो ।

आहारदुग तिरवयगमोवपफुल्लमवहारिय मापिरव्य ।

असंभ्रतसम्प्रादि हि गुणस्यात्मने स्वेत्यय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वेत्यय ही बन्ध  
होता है क्योंकि वहाँ उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

हिर और द्युमका असंभ्रतसम्प्रादिसे छेकर असंभ्रतसंभ्रत तक मन्तर बन्ध  
होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । दोष प्रकृतियोंका सब गुणस्यात्मने निरन्तर बन्ध  
होता है क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

देवगति और वैदिकप्रकृतिकके वैदिक और वैदिकप्रकृतिकके अपयोताप्रत्ययोंके  
असंभ्रतसम्प्रादि गुणस्यात्मने कम करना चाहिये । दोष प्रकृतियोंके प्रत्यय बोधके समान हैं ।  
देवगति और वैदिकप्रकृतिकके बन्ध सब गुणस्यात्मने देवगतिसे संयुक्त होता है । दोष  
प्रकृतियोंका बन्ध असंभ्रतसम्प्रादि गुणस्यात्मने देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता  
है । उपरिम गुणस्यात्मने देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देवगति और वैदिकप्रकृतिकके  
दो गतियोंके असंभ्रतसम्प्रादि व संयतासंभ्रत तथा मनुष्यगतिके संभ्रत स्वामी हैं ।  
दोष प्रकृतियोंके आरो गतियोंके असंभ्रतसम्प्रादि, दो गतियोंके संभ्रतासंभ्रत तथा  
मनुष्यगतिके संभ्रत स्वामी हैं । असंभ्रतसम्प्रादिसे छेकर अपूर्वकृत तक बन्धाभाव है ।  
अपूर्वकृतका छेक संभ्रता वहुभाग जाकर बन्ध वहुचित्त होता है । निर्माज नामकर्मका  
तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि उसका हृष बन्ध नहीं होता । दोष प्रकृतियोंका बन्ध  
सादि व मनुष्य होता है ।

आहारकदिक और तीर्थकर प्रकृतिकी प्रकृतिका ओष्यकृतका निर्जय करके  
करना चाहिये ।

मणपञ्चवणाणीसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय जसकिंति  
उच्चागोद पचतराड्याण को वधो को अवधो ? ॥ २१६ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव सुहुमसापराड्यउवसमा स्ववा वधा ।  
सुहुमसापराड्यसजदद्दाए चरिमममम गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २१७ ॥

एत्थ एदासि पयसीव मत्तिपात्रमगणाए पमत्तसजदप्पहुडिगुणद्वयेसु वधा परूवणा  
कत्ता तत्ता परूवेद्व्या । पवति एत्थ सन्धिरिपि-अउमपवेदपञ्चया अववेद्व्या, अप्पसत्थ  
वेदेद्विस्सण मणपञ्चवणाणानुपत्तीदे । पमत्तपञ्चपसु माहारदुगमवभेद्व्यं, मणपञ्चवणापसु  
माहारत्तिरदुगोदपण सह विरोहत्तो । पुरिमवेदसु सोदवो वधो । पञ्चमणो वि विसेसो  
जदि अत्ति सो समरिय वत्तम्मा ।

गिहा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ २१८ ॥

मनपययज्जानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दमनावरणीय, पञ्चकीर्ति, उच्चगोत्र  
और पांच अन्तरायका कौन पचक और कौन अवचक है ? ॥ २१६ ॥

यह खूब सुगम है ।

प्रमत्तसजने लेकर सूक्ष्मसाम्पयिक उपशमक व क्षपक तक चन्चक है । सूक्ष्म-  
साम्पयिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम समयके जाकर चन्च श्रुच्छिन्न होता है । ये चन्चक है,  
क्षेप क्षपक है ॥ २१७ ॥

यहां इन मन्त्रियोंकी मन्त्रिणागणानामें प्रमत्तसजनादिक गुणस्थानोंमें जिन  
प्रकृषणा की गयी है वेमें प्रकृषणा करना चाहिये । विनाश इनका है कि यहां सर्वत्र स्थावत्  
और मनुष्यवत् प्रायणोंका कम करना चाहिये क्योंकि, अग्रजान्त्र वदाद्वय युक्त जीवोंक  
मन पययज्जानी उत्पत्ति नहीं होगी । प्रमत्तसजना गुणस्थान सम्यग्धी प्रायणोंमें आहारक  
शिक्षा कम करना चाहिये क्योंकि, मन पययज्जानी आहारराशिद्विकके उदयक माध  
विनाश है । पुरुषवत्त्व स्वाध्य कथ्य होगा है । इसी प्रकार अन्य की यदि भद है तो उमच  
स्मरण कर रहना चाहिये ।

निद्रा और प्रवृत्तका कौन पचक और कौन अवचक है ? ॥ २१८ ॥



सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपहट्टवसमा खवा वधा ।  
अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जदिमं भाग गतूण वधो वोच्छिञ्चदि । एदे  
वधा, अवसेसा अवधा ॥ २१९ ॥

एदं पि सुगम, बोधमि वुत्तवत्तादो ।

सादावेदणीयस्म को वधो को अवधो ? ॥ २२० ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायच्छुमत्था वधा ।  
एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ २२१ ॥

सुगममदं ।

सेसमोघ जाव तित्थयरे त्ति । णवरि पमत्तसजदप्पहुडि त्ति  
भाणिदव्व ॥ २२२ ॥

एदं पि सुगम ।

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतमे ठेकर अपूर्व्वकरणपविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्व्वकरण  
कठके संस्कारतर्के माग जाकर बन्ध व्युत्पिष्ट होता है । ये बन्धक हैं शेष बन्धक हैं ॥ २१९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है क्योंकि, बोधमें इच्छका वध कदा का बुद्धा है ।

सत्तावेदनीयक कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २२० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतमे ठेकर खीणरुपायवीतशग छद्मस्थ तक बन्धक हैं । । य बन्धक हैं,  
अवन्धक नहीं हैं ॥ २२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शेष प्रत्ययणा तीर्थेकर प्रकृति तरु बोधके समान है । विशेष इतना है कि ' प्रमत्त-  
सयतमे ठेकर ' ऐसा कहना चाहिये ॥ २२२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

केवलणाणीसु सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ २२३ ॥

सुगम ।

सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवल्लिअद्धाए' चरिमसमय गतूण  
वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २२४ ॥

एदस्स वधो पुब्ब वोच्छिज्जदि, उदयो पच्छ वोच्छिज्जदि, सजोगि-अजोगिधरिम-  
समणसु वधोदयवोच्छेदुवल्हमाहो । वधो सोदय-परोदयो, अदुयोदयत्ताहो । विरतरो, पढि  
वक्खपयडीए वधामावाहो । सञ्चमणजोगो असञ्चमोसमणजोगो सन्ववविजोगो असञ्च  
मोसवविजोगो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो ति सच्च एदस्स  
वधपच्चया । वधो अगइससुत्थे, एत्थ गइवेषेय विरुद्धवधाहो । मज्झिमा सामी, जणपत्थ  
केवलीपममावाहो । वधहाण गत्थि, एक्कमिह गुणहाणे अद्धापेविरोहाहो । अजोगिधरिमसमण  
वधो वोच्छिज्जदि । सादि अदुयो वधो, अदुवधविताहो ।

केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २२३ ॥

यह सख सुगम है ।

सयोगकेवली वन्धक है । सयोगकेवलिहाठके अन्तिम समयके जाकर वन्ध व्युच्छिन्न  
होता है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २२४ ॥

इसका वन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है उद्य पच्चात् व्युच्छिन्न होता है । क्योंकि  
सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंके अन्तिम समयमें क्रमसे उसका वन्ध और  
उद्यपय व्युच्छिन्न पाया जाता है । वन्ध उसका स्वोद्य-परोद्य होता है क्योंकि यह वस्तु जो  
वही प्रकृति है । निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक वन्धका अभाव है ।  
सत्यमनोयोग असत्य मृगामनोयोग सत्यवचनयोग असत्य धृतावचनयोग औदारिक  
काययोग औदारिकमिच्छकाययोग और कार्मण्यकाययोग ये सात इसके वन्धप्रत्यय हैं ।  
वन्ध गतिवन्ध रहित होता है क्योंकि यहाँ गतिवन्धने निरन्तर वन्ध है । मनुष्य स्वामी  
है क्योंकि, अन्य गतियोंमें केवलश्रियोका अभाव है । वन्धाप्याय नहीं है क्योंकि, एक  
गुणस्थानमें अन्धकारका विरोध है । अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें वन्ध व्युच्छिन्न होता  
है । सादि व अमुक्क वन्ध होता है क्योंकि यह अमुक्कवन्धी है ।

संजमाणुवादेण सजदेसु मणपज्जवणाणिभगो ॥ २२५ ॥

वधा मणपज्जवणाणमग्गणाए पकूवणा कइता तथा एएव कइवन्ना । पवरि पच्चयारि  
विसेसो आधिय वत्तथो । एएव विसेसपहुप्पायमइमुत्तरसुत्तं यणहि—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ?  
॥ २२६ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवलि  
अद्वाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा  
अवंधा ॥ २२७ ॥

सुगममेव ।

सामाहय-छेदोवट्ठवणसुद्धिसजदेसु पंचणाणावरणीय-सादावेद  
णीय-लोमसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराहयाण को वंधो को  
अवंधो ? ॥ २२८ ॥

संयममार्गजालुसार संयत जीर्णोर्मे मन-पर्यवश्रान्तियोंके समान प्रकृपणा है ॥ २२५॥

विश्व प्रकृपण मन्त्रपर्यवश्रान्तमार्गजालुसार प्रकृपणा की गई है वही प्रकृपण यहाँ करना  
आदिहै । विशेष इतना है कि प्रत्येकान्तिके अर्थको जल्दकर कहना आदिहै । यहाँ विशेषता  
वतकालके लिये उत्तर सूत्र करते हैं—

विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयका कौन कन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २२६॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयतसे लेकर संयोगकेवली तक वन्धक है । संयोगकेवलिकालके अन्तिम  
समयको जाकर वन्धक वृत्तिविद्य होता है । ये वन्धक हैं, सेव अवन्धक है ॥ २२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सामाधिक-छेदोपस्थापनशुद्धिमपत्तोर्मे पाँच ज्ञानावरणीय, सातावेदनीय, संयत्तल्लोम  
पञ्चकीर्ति, उच्छयोत्र और पाँच अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ?  
॥ २२८ ॥

सुगम ।

पमतसजदप्पट्टि जाव अणियट्ठिउवसमा खवा वधा । एदे  
वधा, अनधा णत्थि ॥ २२९ ॥

एदासि पयडीणमेत्थ षंघोदयवोच्चेदामावादो ' उदयादो किं पुम्मे पन्थ वा षंघो  
वोच्चेत्थो ' ति विचारो भवति । षंघणाणावरणीय चउदंसणावरणीय जसस्सिदि उन्धामोद्  
पंचतरइयाणं सोदवो वधो, एत्थ धुवोदयसादो । सादवेदणीय-ओमसंजलणायं सोदय परोदवो,  
अद्वोदयसादो । सादवेदणीय जसकिटीण पमतसजदम्मि सर्तणे वधो, पडिवक्खपयडि  
वंधुवलमादो । उव्वरि पिरंतणे, तदमावादो । सेसायं पयडीण वधो सग्गस्य गिरंतणे, अप्पिद्  
संजवेसु वंधुवरमाभावादो । पन्चदा सुगमा, ओषपग्गण्हितो विसेसामावादो । एदासि सम्भ  
पयडीण पमतसंजदप्पट्टि जाव अपुग्गकरवट्ठाए छसत्तभाणे ति षंघो देवगइसदुत्थो । उव्वरि  
अगइसदुत्थो, तत्थ गर्णं वधामावादो । मणुयां सामी, अग्गस्य संजदमावादो । वंधट्ठाणं

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तमनसे लेकर भविष्यतिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,  
अबन्धक नहीं हैं ॥ २२९ ॥

यहां हम प्रकृतियोंके बन्ध भाग उदयका व्युत्पत्ति न होतेसे ' उदयसे क्या पूर्वमे  
या पश्चात् बन्ध व्युत्पत्ति होना है ' यह विचार नहीं है । पांच अन्नावरणीय, चार  
वशावावरणीय धर्मास्ति उच्छगात्र और पांच अन्तरायका स्यादय बन्ध होता है  
क्योंकि, यहां इनका भुव उदय है । आनावरणीय और संजमनमोमका स्यादय परोदय  
बन्ध होता है क्योंकि, ये अनुवादयी प्रकृतियां हैं । आनावरणीय और वशावर्तिष्य  
प्रमत्तसंपत गुणरूपानामे सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका  
बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध है क्योंकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका  
अभाव है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध अवबन्ध निरन्तर है क्योंकि, विपक्षित संपत्तोंमे इनके  
बन्धविग्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, ओषपग्गण्होमे यहां कोर भेद नहीं  
है । हम सब प्रकृतियोंका बन्ध प्रमत्तमनसतम लेकर अपुवकरवट्ठाके छह सत्ताम भाग  
तक वयगतिमंसेयुक्त होता है । ऊपर अगतिमंसेयुक्त बन्ध होता है क्योंकि यहां  
गतिवर्तक बन्धका अभाव है । मनुष्य इत्यादि हैं क्योंकि, अन्य वस्तुओंमे संपत्तोंका अभाव है ।



ण । अपुम्वक्तरणद्याए सत्तममागचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि । कपमेद पव्वदे ।  
उहरियवयणादो । तिविहो' बंधो, पुवामावादो ।

एवं देव पुरिसवेदस्स वत्तम् । जवरि अट्ठाणमणियहिअट्ठाए संखेज्जा मागा ति  
शेवगाइ-अगाइसत्तुत्ते । दुमिहो बंधो, अट्ठवबंधितादो ।

पचसंजळणस्स छेमसंजळणमंगो । जवरि अट्ठाणमणियहिअट्ठाए संखेज्जा मागा ति ।  
यासंजळणार्णं पि वत्तम् । जवरि कोषबंधवोच्छिज्जणुवरिमद्याए संखेज्जाभागे गतूष  
समप्पदि । सेसट्ठाए संखेज्जे भागे गतूष मायबंधट्ठाणं समप्पदि' ति वत्तम् ।

अदि मय दुगुट्ठाण बंधोदया सम वोच्छिज्जा, अपुम्वक्तरणद्याए चरिमसमए  
दो । बंधो सोदय-परोदथो, अट्ठवोदयत्तादो । इस्स रदीण बंधो पमत्तमि संत्तरो ।

१/ तम मागक अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

२/ यह कैसे जाना जाता है ?

१—सबसे अधिकृत भाषायोंके ग्रन्थमें यह जाना जाता है ।

२—तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि भुव बन्धका समाप्त है ।

३—जट ही पुरुषबन्ध की कहना चाहिये । विशेषतः यह है कि बन्धाध्यान  
का संख्यात बहुभाग है ऐसा कहना चाहिये । देशगतिसमुक्त और  
होता है । दो प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वह अमृबन्धी है ।

४—दोषकी प्रकृष्टा संस्वसन्नकोषके समान है । विशेष इतना है कि बन्धा-  
मकालका संख्यात बहुभाग है । इसी प्रकार संस्वसन्न भाव और मायाके  
विशेषता यह है कि संस्वसन्नकोषके बन्धके व्युच्छिन्न होनेके उपरिम  
भाग बिलकर मानवबन्धाध्यान समाप्त होता है । दोष काव्यके संख्यात  
बन्धाध्यान समाप्त होता है ऐसा कहना चाहिये ।

५—मय और दुगुट्ठाका बन्ध व उदय दोषों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं  
इके अन्तिम समयमें उनका समाप्त देखा जाता है । बन्ध ठनका  
क्योंकि वे अमृबन्धी प्रकृतियाँ हैं । हास्य और रतिका बन्ध प्रमत्त

इति पाठः ।

२ अतिष्ठ सम्यक् इति पाठः ।

कपपि इति पाठः ।

सुपमं, सुपुटिदृष्टादो । ऋषयोष्णेदो ऋषि, उवरि नि ऋषुवर्तमादो ' ऋषभा ऋषि ' वि सुत्तादो वा । ऋषस्यं पुत्रंभीषं ऋषो त्रिविदो, पुत्रामावाद्वा । ऋषेसायं सादि मद्रुवो, मद्रुवपिचदो ।

## सेस मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २३० ॥

अहा मणपज्जवणाणीसु सेसपयदीय परुवमा कदा तदा एत्थ वि ऋषय्या । से वि विसेदो ऋषि', ऋषयवेदाहमपुगपन्वयायं तत्तासंतापेमेत्तविचदसमादो' ।

विद्य-यस्य पुत्रं ऋषो बोधिष्यो । उदयबोष्णेदो ऋषि, सुहमसायदय-अहा ऋषसंवेदो वि तदुदयदसमादो । ऋषो सोदय-पदेदो, मद्रुवोदयदो । विरतये, पुत्र ऋषिचदो । पन्वया सुगमा, बोधपन्वयदितो विसेसामावाद्वा । देवगदसंभुवो, गतंरत्स' ऋषामावाद्वा । मकुसा सामी, मण ४ सुमयामावाद्वा । एमससंभदपुहृदि जाय अपुम्पकरो

बन्धाध्याम सुगम है क्योंकि वह सूत्रमें निर्दिष्ट है । बन्धन्मुच्छेद नहीं है क्योंकि, ऊपर भी बन्ध पाया जाता है, अथवा अबन्धन नहीं है । इस सूत्रसे भी बन्धन्मुच्छेदका अभाव सिद्ध है । अतएव सुबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध हीन प्रकार होता है, क्योंकि, सुब बन्धका अभाव है । होय प्रकृतियोंका साक्षि व मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि वे अग्रबन्धी हैं ।

त्रेय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मनःपर्यमशानियोंके समान है ॥ २३ ॥

त्रिस प्रकर मनःपर्यमशानियोंमें होय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार यहां भी कहा जाहिष । यहां कुछ विरोधता भी है क्योंकि, मनुष्यकेन्द्री और बाह्यादिकके प्रत्यक्ष जो मनःपर्यमशानियोंमें नहीं ये यहां वसे जात है ।

विद्या और प्रकृतिका पूर्वमें बन्ध स्मुच्छिन्न होता है । अथवा उदयन्मुच्छेद नहीं है, क्योंकि, सुहमसाम्यपिषि और पधायतसंभतोंमें भी उसका उदय देखा जाता है । बन्ध स्वेत्तय-पदेदय होता है क्योंकि, व मद्रुवोदयी है । विरत्तर बन्ध होता है क्योंकि, सुब-बन्धी है । प्रत्यक्ष सुगम है क्योंकि, माध्याम्योसे कोई मोक्ष नहीं है । वेपयतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, सपत्तोंमें बन्ध यतिषोके बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी है । क्योंकि, बन्ध यतियोंमें संबन्ध अभाव है । प्रमत्तसंयतने केकर अपूर्वकरत तक बन्धाध्याम है । अपूर्व

१ व अग्रजो वो विरोधी ऋषि ऋषि अग्रही वो नि विरोधी ऋषि ऋषि इति वाच ।

२ मद्रुव उवाचवाच इति वाच । ३ मद्रुववाच वयो उदय-पदेदो इति वाच ।

४ मद्रुव अग्रजवाच इति वाच ।

सि वचद्वानं । अपुष्पकरपद्याए सतमभागचरिमसमए बघो बोन्धिज्जदि । कधमेदं पव्वदे ? सुत्थविस्सदाहरिववपपादो । तिविहो' वंधो, पुवामावत्तो ।

एवं चेव पुरिसवेदस्स वत्तव्वं । पवरी अद्यापमणियद्धिअद्याए संखेज्जा भागा ति वत्तव्वं । देवगाइ-मगाइसंजुत्तो । दुविहो वंधो, अद्दुवबंधिप्पादो ।

कोषसज्जणस्स त्तेमसंजत्तमंगो । पवरी अद्यापमणियद्धिअद्याए संखेज्जा भागा ति । एवं माय-मायासंजत्तमाय पि वत्तव्वं । पवरी कोषबंधबोधिअपुवरीमद्याए संखेज्जामो गत्तूय मायबंधद्वानं समप्पदि । सेसद्याए संखेज्जे भागे गत्तूय मायबंधद्वानं समप्पदि' सि वत्तव्वं ।

इत्थं रवि-मय-दुग्गुल्लण बंधोदया सम बोन्धिज्जा, अपुष्पकरपद्याए चरिमसमए तदभावदंसपादो । बघो सोदय-रोदयो, अद्दुवोदयप्पादो । इत्थं रवीण बंधो पमत्तामि सांतरो ।

करककलके सतम भागक अन्तिम समपमें बन्ध व्युत्पिष्ठ होता है ।

सुक्र— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— सुक्रसे व्यभिक्क आचायीके पचमसे यह जाना जाता है ।

उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, सुक्र बन्धका समाप्त है ।

इसी प्रकार ही पुरुषवेदके भी कहना चाहिये । विशेषता यह है कि बन्धाध्वान व्यभिक्कसिक्करपकासका संख्यात बहुभाग है ऐसा कहना चाहिये । देवगतिसंयुक्त और भगतिसंयुक्त बन्ध होता है । दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि यह बहुवचनही है ।

संख्यसन्नकोषकी प्रकृष्टा संख्यसन्नसामके समाप्त है । विशेष इतना है कि बन्धाध्वान व्यभिक्कसिक्करपकासका संख्यात बहुभाग है । इसी प्रकार संख्यसन्न माल और मायाक भी कहना चाहिये । विशेषता यह है कि संख्यसन्नकोषके बन्धक व्युत्पिष्ठ हमेंके उपरिम कासका संख्यात बहुभाग मिलाकर मायबन्धाध्वान समाप्त होता है । दोष कासके संख्यात बहुभाग आकर मायाबन्धाध्वान समाप्त होता है ऐसा कहना चाहिये ।

हास्य रति मय और दुग्गुल्लका बन्ध व उत्पन्न दोनों सापेक्ष व्युत्पिष्ठ होते हैं क्योंकि अपूर्णकरणकलक अन्तिम समपमें उनका समाप्त देखा जाता है । बन्ध उनका स्वीकृत परादय होता है क्योंकि, वे अमुकोदयी प्रकृष्टियां हैं । हास्य और रतिका बन्ध प्रमत्त



उपरि चिरंतरो, पडिवक्खसपयडिबंयामावादो । मय-हुगुंछायं सव्वत्थ चिरंतरो, पुववंचिदादो । पण्णया सुग्गमा, बोक्कपण्णएईतो विसैसामावादो । देवगइसद्धतो अमइसद्धतो चि, अपुण्ण करणद्वए चरिमसत्तममाणे गरूए बंयामावादो । मणुसा सामी । पमत्तसंजदप्पहुडि ज्ञाव अपुण्ण करणो चि बंयद्वार्थ । अपुण्णकरणचरिमसमए बंधो वाच्छिन्नजदि । मय-हुगुंछायं तिविहो बंधो, पुववंचिदादो । सैसाज सादि-अद्दुवो, तथिवरियणपादो ।

देवात्तअस्स पुण्णत्वरकत्तेसु बंधोदयवोच्चेदपरिक्खा भत्तिव, उदयामावादो । परोदयो बंधो, सामावियादो । चिरंतरो, अंतोसुहुत्तेव विणा वंनुवरमावावादो । पण्णया सुग्गमा । देवगइसद्धतो । मणुसा चैव सामी । पमत्त अणमत्तसंजदा बंयद्वार्थ । अप्पमत्तद्वए संखेम्भविमं मायं गंतुं बंधो वोच्छिन्नजदि । सादि अद्दुवो बंधो, अद्दुववंचिदादो ।

संपदि देवगइसद्धगयाणं सत्तावीसपयडीणं मण्णमाणे पुण्णत्वरकत्तेसु बंधोदयवोच्चेद परिक्खा जाणिय कप्पय्वा । देवगइ वेठवियदुगायं बंधो परोदएव, सामावियादो । समचठ रससंजय-पसत्तविहायगइ-सुस्मरण सोदय-परोदयो, सबदेसु पडिवक्खसपयडीणं चि उदय-

संपत्त शुचस्वप्नमे सत्तर होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपत्त प्रकृतिबोधे बन्धका अभाव है । मय और हुगुप्ताका सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वे सुखबन्धी हैं । प्रत्यय सुग्गम हैं क्योंकि, आयमत्त्वधोसे कोई विरोधता नहीं है । देवगतिसंपुक्त और मगतिसंपुक्त भी बन्ध होता है क्योंकि, अपूर्वकरणकाके अन्तिम उत्तम मागमे पक्षिके बन्धका अभाव हो जाता है । मनुष्य स्वामी हैं । प्रमत्तसंपत्तसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धावस्थान है । अपूर्वकरणके अन्तिम समग्रमें बन्ध व्युत्पिच्छ होता है । मय और हुगुप्ताका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वे सुखबन्धी हैं । होप प्रकृतिबोधे सादि व अद्दुव बन्ध होता है क्योंकि, वे उमरसे विपरित ( अद्दुव ) बन्धवासी हैं ।

देवायुक्त पूर्वापर कर्मकाभी बन्ध व उष्यके व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है क्योंकि, यहाँ उल्लास उदयामाव है । पराव्यय बन्ध होता है क्योंकि, येसा स्वमाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना वसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुग्गम हैं । देवपतिसंपुक्त बन्ध होता है । मनुष्य ही स्वामी हैं । प्रमत्त और अप्रमत्त संपत्त बन्धावस्थान हैं । अप्रमत्तकाके संख्यातमें माग आकर बन्ध व्युत्पिच्छ होता है । सादि व अद्दुव बन्ध होता है क्योंकि, वह अद्दुवबन्धी है ।

मय देवगतिके साथ रहनेवासी [ परमविक्रमामकर्मधी ] सत्ताईस प्रकृतिबोधे प्रकण्णवा करते समय पूर्वापर कार्त्तिके बन्ध व उष्यके व्युच्छेदकी परीक्षा जानकर करमा चाहिये । देवगतिद्विक और त्रिक्रियद्विकका बन्ध परोदवस होता है क्योंकि येसा स्वमाव है । समचठरससंख्यात प्रशस्तविहायी-पति और सुत्तरका व्याव्यपरोव्य बन्ध होता है क्योंकि, संवर्तमें इनकी

रसपादो । अवसेसार्ण पयडीण वंचो सोदयो, ध्रुवोदयत्तादो । थिर-सुमाण पमत्तसज्जदमि  
वंचो सोनरो, पञ्चिक्खपयडिक्खुवलंमादो । उवरी णिरनर, तदमावादो । अवसेसाण पयडीण  
वंचो थिरत्तो, एत्थ ध्रुववंचित्तादो । पण्णया सुगमा । सम्भासि पयडीण वंचो देवगइसदुत्तो ।  
मणुसा सामीजो । वंचद्वारं वंचविणट्टणाण च सुगम । ध्रुववंचीण वंचो तिथिहो । अवसेसार्ण  
सादि-चदुवो ।

असाश्वेदणीय-अरि-सोग-अथिर-असुह अमसकिच्छीणमेगहाणिमार्ण सांतरवंचीणमोच  
पण्णयाण देवगइसज्जदमि मणुससामियार्ण वंचद्वारणिरिहियाण पमत्तसज्जदमि वोच्छिक्खवचारं  
वंचेण सादि-चदुवार्ण वंचो सोदयो । परोदयो सोदय-परोदयो वे ति आणिय परुदेदयो ।  
आहारदुग तित्थयराण पि आणिय वत्तर्ण ।

परिहारसुदिसज्जदेसु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादा  
वेदणीय-चदुसज्जलण-पुरिसवेद-हस्त-रदि भय-दुगुछा-देवगइ-पचिंदिय-

प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी उद्भव होता है । शेष प्रकृतियोंका वन्ध स्त्रोत्र्य होता है  
क्योंकि, वे सुवेत्तरी हैं । स्थिर और गुप्तका वन्ध प्रमत्तसज्जद गुणस्थानमें साम्तर होता है  
क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर वन्ध होता है  
क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका वन्ध निरन्तर  
होना है क्योंकि यहाँ वे सुवचन्मी हैं । प्रत्यय सुगम हैं । सब प्रकृतियोंका वन्ध देवगति  
संयुक्त होता है । इनके वन्धके स्वामी मनुष्य हैं । वन्धभावान और वन्धविनष्टस्याम सुगम  
हैं । सुवचन्मी प्रकृतियोंका वन्ध तीन प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियोंका वन्ध सादि च  
असुच होता है ।

असातावेदनीय अरति शोक, अस्थिर अनुम और अयसक्रेति इन एकस्यासिक,  
साम्तर वन्धवासी आश्रय प्रत्ययोंस युक्त वचनगतिसेयुक्त मनुष्यस्थानिक, वन्धभावानसे  
रहित प्रमत्तसज्जद गुणस्थानभाषी वन्धधुच्छेदने सहित तथा वन्धधर अपेक्षा सादि  
च अनुच प्रकृतियोंका वन्ध स्त्रोत्र्य परोत्र्य अथवा स्त्रोत्र्य परोत्र्य है । इसकी जानकारी  
प्रकरण करना चाहिये । आहारिक और तीर्थंकर प्रकृतिकी भी प्रकरण करना  
चाहिये ।

परिहारसुदिसज्जदेसु पांच ज्ञानावरणीय, छद दशनावरणीय, सातावेदनीय, चार  
सज्जलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, मय, जगुप्ता, देवगति, पंचन्द्रियजाति, वैश्विक, तैजस

जादि-चेउन्विय-तेजा कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउन्वियसरीर-  
अगोवग-वण्ण गध-रस-फास-देवाणुपुन्वि अगुरुल्लहुअ उवघाद-परघादु  
स्सास-पमत्थविहायगढ-तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर थिर-सुह-सुमग-  
सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुद्धागोद-पचंतराइयाण को  
बधो को अवधो ? ॥ २३१ ॥

सुगम ।

पमत्त-अप्पमत्तसज्जा वधा । एदे वधा, अवंधा णत्थि ॥ २३२ ॥

उदपादो बंधो पुन्य पञ्चा वा बोद्धिञ्जदि ति एव निचये नत्थि, एदासि  
बंधोप्पेदामावादे उदहस्सणमुदयवोप्पेदामावादे च । देवगइ-देवगइपाओन्माणुपुन्वि  
वेउन्वियगुग-त्तिन्वयराण परोदो बंधो, एदासि बंधोइयाणमनक्कमवुत्तिविरोहो । पित्ता  
पयल्ल-सात्तावेदपीय चदुर्लभल्ल-इत्थ-रदि-मय-दुगुल्ल-समचउरससंठाण-पसरत्तविहायग-  
सुस्सरणं सोदय-परोदो बंधो, एदासि पडिक्कपयपीयं पि उदयदंसवादे । अवसेसणं  
पयपीयं सोदया बंधो, एव एदासि पयपीयं पुवादयपुवउमादे ।

य कर्मण धृति, समचतुरससंस्थान, वैद्वियिकरिगोपांग, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवाउ  
पूर्वी अगुरुल्लहु, उपचात, परचात, उच्छ्वास, प्रभस्तविहायोगति, वस, वादर, पर्याप्त,  
प्रवेकधृति, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्सर, वादेय, पञ्चकित्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चमोत्र  
और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २३१ ॥

यह छन्द सुगम है ।

प्रमत्त और अप्रमत्त संयत कन्धक है । ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं ॥ २३२ ॥

उद्भवम बन्ध पूर्वमे वा पश्चात् एवमुच्यते होता है यह विचार यहाँ नहीं है  
क्योंकि, इनका बन्धपुच्छेइया अभाव है तथा उद्भव पुच्छ मरुतिवोके उद्भवपुच्छेइया  
भी अभाव है । देवगणि देवगणिप्रायेणपानुपूर्वी वैद्वियिकरि और तीर्थकर, हमको  
पराध्य बन्ध होता है क्योंकि, इन मरुतिवोके बन्ध और उद्भवे एक साथ अस्तित्वका  
विषय है । निद्रा प्रवृत्ता गामायेवनीय चार संवत्सर इत्थं एति मय सुगुप्ता  
समचतुरससंस्थान प्रशान्तविहायोगति और सुस्सरका स्वात्थ्य परोदय बन्ध होता है  
क्योंकि, हमको प्रतिपक्ष मरुतिपात्र भी उद्भव देखा जाता है । सोय मरुतिवोका स्वोदय  
बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ इन मरुतिवोका शुभ उद्भव पाया जाता है ।

सातावेदनीय-हस्त-रति-भिर-सुम-जसकितीण पमत्तसंप्रदामि बधो सांतरीं । उवरि भिरतेरो, पठिधकसपदीण बधामावादे । अवमेसाण पयदीण बधो भिरतेरो, अंतोसुहुसेम विण्ण बंधुवरमामावादे । पण्णया सुगमा, ओषण-पयहिंतो विसेसामावादे । अवरि इत्थि पवुसपवेदप चया पत्थि, अण्णसत्थवेदोदइत्थण परिहारसुद्धिसंयमामावादे । आहारदुगपचया वि पत्थि, पमिहारसुद्धिसंयमेण आहारदुगोदयविरोहादे तित्थयरपावमूले द्वियार्ण गयसेवेहोर्ण आपत्तिणिदुदासजमबहुत्तादिआहारउत्थणकरणविरहिदणमाहारसंयिवादाणासमवादे वा ।

देवगइसदुत्तो बंधो, एत्थण्णगइसंयमामावादे । मणुसा सामी, अण्णत्थ संजमामावादे । बधज्जानं सुगमं । बंधोच्छेदो पत्थि, 'अवधा यन्धि' ति सुत्तिपिरेसादे । धुवबंधीण बंधो तिविहो, धुवामावादे । अवसेसाणं सादि-अदुवो, अदुवबंधिवादे ।

असादावेदनीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाण को वधो को अवधो ? ॥ २३३ ॥

सातावेदनीय हास्य रति स्थिर, सुम और पयदीति का प्रमत्तसंप्रदयत शुभस्वात्मने सन्तर बन्ध होता है । ऊपर वनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपन्न प्रकृतिपौके बन्धका समाव है । शेष प्रकृतिपौका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, अन्तमुद्धर्के बिना उनका वन्धविधामका समाव है । प्रकय सुगम है क्योंकि, ओषणत्थपौस कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि स्त्रीवेद और मनुसकबध प्रत्यय नहीं है क्योंकि, अमशास्त्रबोधय पुक्त औपौके परिहारसुद्धिसंयमका समाव है । आहारकट्टिक प्रत्यय भी नहीं है क्योंकि परिहारसुद्धिसंयमक माय आहारकट्टिकरी उत्पत्तिका विपय है; अथवा तीपेकरके पादमूत्रमे स्थित मन्देह रहित तथा आवाकमिदुता अथात् मायबचनमे सम्बद्धजनित शियिकता और असंयमवहुमतादि वय आहारपाटीरकी उत्पत्तिक करणपौस रहित परिहार सुद्धिसंयमपौके आहारकट्टिकरी उत्पत्ति असंभव है ।

वेवगतिसंपुक्त बन्ध जाना है क्योंकि, यहाँ प्रम्य गतिपौके बन्धका समाव है । मनुष्य स्वामी है क्योंकि अम्य गतिपौके संयमका समाव है । बन्धारवान सुगम है । बन्ध पुच्छत नहीं है क्योंकि 'अवन्धक नहीं है' एता सूत्रमे कहा गया है । इनमें सुवबन्धी प्रकृतिपौका बन्ध तीन प्रकारका होता है क्योंकि उनके शुभ बन्धका समाव है । शय प्रकृतिपौका सादि य अष्टव बन्ध होता है, क्योंकि वे अमसुवबन्धी हैं ।

वसातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अमृम और अयदादीति तामकर्मका केव बन्धक और केव अकन्धक है ? ॥ २३३ ॥

आ वदता सुकविचन इति पाठः ।

२ अ-आमयो मनुकावादे आ वदतो मनुकावादि इति पाठः ।

जादि-चेठविय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचतरससठाण-वेठवियसरीर-  
अगोवग-चण्ण गध-रस-फास-देवाणुपुब्बि अगुरुवल्लहुअ उवघाद-परघादु  
स्सास-पमत्त्यविहायगह-त्तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर थिर सुह-सुमग-  
सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण तित्तयरुक्कागोद-पचतराइयाण को  
बंधो को अबधो ? ॥ २३१ ॥

सुगम ।

पमत्त-अप्पमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अर्बधा णत्थि ॥ २३२ ॥

उदयतो बंधो पुन्यं पञ्च वा वोच्छिन्नजिदि ति एत्थ विचरो मत्थि, एदासिं  
बंधोच्छेदामावाधो उदयत्तसुदयवोच्छेदामावाधो च । देवगह-देवगहपाभोग्मापुप्पि  
वेठवियदुग-तित्तयरणं परोदधो बंधो, एदासिं बंधोदयापमत्तकमपुत्तिविरोद्धादो । निरा-  
पमत्त-सादावेदमीय-वधुसंजत्त-हस्स-रि-यय-हुगुंका-समचतरससठाण-पसत्त्यविहायगह-  
सुस्सरणं सोदय-परोदधो बंधो, एदासिं पडिक्कन्नपयडीणं पि उदयदंसपादो । अबसेसणं  
पयडीणं सोदधा बंधो, एत्थ एदासिं पयडीणं पुवोदयपुवठमादो ।

व कर्मव शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरगोपाय, वर्ष, गन्ध, रस, स्पर्श, देवत  
पूर्वी, जगुस्तु, उपधत्त, परधत्त, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, वस, वात्सर, पर्याप्त,  
प्रलेकशरीर, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्सर, आदय, यशस्विति, निर्माण, तीर्षकर, उच्छगोत्र  
और पांच बन्तारय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३१ ॥

यह सब सुगम है ।

प्रमत्त और अप्रमत्त संयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २३२ ॥

उदयस बन्ध पूर्वमे वा पश्चात् स्फुटित्त होना है यह विचार यहाँ नहीं है  
क्योंकि इनके बन्धपुच्छेत्तका अभाव है तथा उदय पुच्छ प्रकृतिपाके उदयपुच्छेत्तका  
भी अभाव है । देवमत्ति देवगतिप्रयोगानुपूर्वी वैक्रियिकशरीर और तीर्थकर, इनका  
परधत्त बन्ध होता है क्योंकि, इन प्रकृतियोंके बन्ध और उच्छेदके एक साथ अस्तित्वका  
विरोध है । निद्रा प्रचसा सालायेदमीय चार संज्ञकत हारण एति मय सुगुप्ता  
समचतुरस्रसंस्थान प्रशस्तविहायोगति और सुस्सरका क्लेशय परोदध बन्ध होता है  
क्योंकि, इसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी उदय देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंका स्वीयय  
बन्ध होता है क्योंकि यहाँ इन प्रकृतियोंका पुन उदय पाया जाता है ।

सुगमं ।

अप्यमत्तसजदा अप्यमत्तसजदा वधा । अप्यमत्तसजदद्वाए संसेज्जे  
भागे गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३६॥

उदयादौ बंधो पुण्य पण्य वा वोच्छिण्णो ति विचारो जायि, संसेरेसु देवाठमस्स  
उदयामावादे । एतेदथो बंधो, बंधोदयाणमन्कमवुत्तिविरोहादो । भिरंतरे, भंतोमुदुत्तेण विधा  
बंधुवरामावादे । पण्यया सुगमा, ओषपण्यपरितो विससामावादे । गबरी माहारदुगित्ति  
पवुसपवेदप चया जसि । देवगइसद्वतो, मनुसा सार्थीओ, बबगयबंधद्वानो, अप्यमत्तद्वाए  
संसेज्जे भागे गतूण वोच्छिण्यबंधो । सादि-अदुबो ।

आहारसरीर आहारसरीरगोवगणामाण को बंधो को अवधो ?

॥ २३७ ॥

सुगम ।

अप्यमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंपत और अप्रमत्तसंपत बन्धक हैं । अप्रमत्तसंपतका ठक संख्यात बहुमाग  
जाकर बन्ध स्पुच्छिज्ज होता है । ये बन्धक हैं, शेष अपबन्धक हैं ॥ २३६ ॥

उदयम बन्ध पूर्वमे वा पण्यान् स्पुच्छिज्ज हाता है यह विचार यहाँ नहीं है  
क्योंकि संपत जीवोंमें वधापुके उदयका अभाव है । एतेदथ बन्ध हाता है क्योंकि,  
उसका बन्ध मार उदयक एक साथ रहनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध हाता है क्योंकि,  
धन्तमुदनेके बिना उसके बन्धविधामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि आद्यप्रत्ययोंसे  
कोर चिन्नेयता नहीं है । विन्नेय हाता है कि आहारकक्षिक र्थिबद् और मनुमकयेव प्रत्यय  
नहीं हैं । वधगति समुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी हैं । वध्याख्यात सूत्रसे जाना जाता  
है । अप्रमत्तसंपतके संख्यात बहुमाग जाकर बन्ध स्पुच्छिज्ज होता है । सादि व अप्रमत्त  
बन्ध हाता है ।

आहारकक्षरि और आहारकक्षरिगापांग नामकमका कीन बन्धक और कीन अपबन्धक  
हैं ? ॥ २३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंपत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अपबन्धक हैं ॥ २३८ ॥

सुमर्ष ।

पमत्तसंजदा घधा । एदे वधा, अवसेसा अघधा ॥ २३४ ॥

असादोऽदधीय अरदि-सोमागमेत्य ऋषयोऽप्येदो येव, उदययोऽप्येदो अरि; उरि तदुदययोऽप्येदुवत्मात्रो । अरि अमुमानं वि एवं येव वत्तन्, पमत्तसंजोगीसु ऋषोदय योऽप्येदसंजदादो । अजसकिरीए पुष्पमुदयो पञ्चा ऋषो योऽप्यिन्द्रादि, पमत्तसंजदसम्मादिहीसु ऋषोदययोऽप्येदसंजदादो । अरि-अमुमानं सादयो, अजसकिरीए परोदयो, सेसानं ऋषो सोदय-परोदयो । संतरो ऋषो, एदासिमगसमएण वि ऋषुवरमदसमादो । इरि-अमुसयवेदाहार इपमिदिदोवपञ्चया एव वत्तन्वा । देवगह [-संज्ञता] ऋषो । मनुष्या सामी । ऋष्याणं अरि, एगुजह्मन्दि तदसमवादो । पमत्तसंजदचरिमसमए ऋषो योऽप्यिन्द्रादि । सादि-अदुवो ऋषो, अदुवचरिमादो ।

देवाउमस्स को वंधो को अमंधो ? ॥ २३५ ॥

मंद स्रज सुगम है ।

प्रमत्तसंजत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, होय अबन्धक हैं ॥ २३४ ॥

असादावेदधीय अरति और सोमका यहाँ बन्ध-मुच्छेद ही है उदयमुच्छेद नहीं है । क्योंकि ऊपर इनका उदयमुच्छेद पाया जाता है । अरि और अमुमान भी इसी प्रकार कहना चाहिये क्योंकि, प्रमत्त और संजोगकेवली गुणस्थानोंमें कमसे इनके बन्ध और उदयका मुच्छेद देखा जाता है । अरि-अमुमान पूर्वमें उदय और पञ्चाद बन्ध मुच्छिन्न होता है क्योंकि प्रमत्त और संजोगतसम्मादि गुणस्थानोंमें कमसे इनके बन्ध और उदयका मुच्छेद देखा जाता है । अरि और अमुमानकोदय अरि-अमुमान परोदय तथा होय प्रकृतिबोधका बन्ध स्वरूप परोदय होता है । सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, इन प्रकृतिबोधका एक समजसे भी बन्धविधायक देखा जाता है । लीयेद, अमुसकवेद और आहारकहिकसे एरित यहाँ ओकमतका कहना चाहिये । देवगहिसंज्ञक बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है । बन्धात्मान नहीं है क्योंकि, एक गुणस्थानमें उसकी सम्मावना नहीं है । प्रमत्तसंजत गुणस्थानके अन्तिम सममर्मे बन्ध मुच्छिन्न होता है । सादि अ अदुव बन्ध होता है क्योंकि, ये अदुवबन्धी प्रकृतिवा हैं ।

देवामुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३५ ॥

सुगमं ।

पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तसजदद्दाए संखेज्जे  
भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३६॥

उदयादो बंधो पुण्य पञ्च वा बोधिज्जो सि विचरो जसि, संजयेसु देवाउमस्स  
उदयामावादो । फेदोओ बंधो, बंधोदयाणमक्कममुपिविरोहोदो । पिरतरो, जतोमुहुचेण विपा  
बंधुवरामावादो । पञ्चया सुगमा, ओषपञ्चएहिंतो विसेसामावादो । जवरि आहारपुगित्ति-  
पहुसस्वेदपञ्चया जसि । देवगस्सहो, मनुसा सार्मीओ, अवगयबंधाओ, अप्पमत्तद्दाए  
संखेज्जे भागे गतूण वोच्छिज्जबंधो । सादि-अदुओ ।

आहारसरीर आहारसरीरगोवगणामाण को वधो को अवधो ?

॥ २३७ ॥

सुगमं ।

अप्पमत्तसजदा वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तसंयतकालक सस्यात पदुमाग  
जाकर बन्ध म्मुच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २३६ ॥

उदयस बन्ध पूर्वमे वा पश्चाद् म्मुच्छिन्न होता है यह विचार यहाँ नहीं है  
क्योंकि संयत जीयोमें द्वायुके उदयका अभाव है । परोदय बन्ध होता है क्योंकि,  
उसके बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पिरतर बन्ध होता है क्योंकि,  
अन्तर्मुहूर्तके बिना उसके बन्धविधायक अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, ओषप्रत्ययोसे  
कार्य विरोधता नहीं है । विज्ञाप इतना है कि आहारकालिक कृत्रिब और मनुसकषेद प्रत्यय  
नहीं है । देवगति संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है । बन्धाएवान सूत्रसे ज्ञाता जाता  
है । अप्रमत्तसंयतके मन्वात बहुभाग जाकर बन्ध म्मुच्छिन्न होता है । सादि व अग्रव  
बन्ध होता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरगोपांग नामकर्मक कौन बन्धक और कौन अवन्धक  
है ? ॥ २३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २३८ ॥



एवासि देवाउद्यमंगो । जवरि नपद्याज नति, एकमहि गुणद्वयं अद्यानासंयवरो ।  
नपरोप्येवो नति, उर्वरि पि नपुवठ्यावो ।

सुहुमसापराइयसुदिसजदेसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय  
सादावेदणीय-जसकिति उद्यागोद-पचतराइयाण को यधो को अमधो ?  
॥ २३९ ॥

सुगम ।

सुहुमसापराइयउवसमा खवा धंधा । एदे धंधा, अमधो  
णति ॥ २४० ॥

एवासि नपरोदयवोप्येवमावावो उदयावो नपो पुष्पं पञ्च वा वेत्तिष्ठन्ना  
ति न परित्था कीरेदे । सादावेदणीयस नपो सोदय-मरोदयो, अणुदय वि नपविरोह-  
मावावो । भिरत्ता सन्वपयवीण नपो, एव गुणद्वयेसु नपुवरमावावो । न एयसमयमभिम्य  
सुदसुहुमसापराइयि वियहिवावो, सुहुमसापराइयगुणद्वयमि ति विससपावो । ओराति

इम दोनो प्रकृतिपौको प्रकृपणा देवायुके समान है । विशेष इतना है कि वन्याज्जाल  
नहीं है क्योंकि, एक गुणस्वात्ममें आधानकी सम्भावना नहीं है । वन्यमुच्छेद नहीं है  
क्योंकि, ऊपर भी वन्य पाया जाता है ।

सूक्ष्मसाम्प्रतिकश्रुतिसर्वोर्मे पांच ज्ञानावरणीय, चार इक्ष्णावरणीय, सादावेदनीय,  
पञ्चमूर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन वन्यक और कौन अवन्यक है ?  
॥ २३९ ॥

यह सब सुधम है ।

सूक्ष्मसाम्प्रतिक उपसमक और क्षपक वन्यक है । ये वन्यक हैं, अवन्यक नहीं हैं  
॥ २४० ॥

इम प्रकृतिपौके वन्य व अवन्यके व्युत्पत्त्यका अभाव होनेसे उच्यसे वन्य पूर्वमें  
व्युत्पिष्ठ होता है या पश्चात् यह परीक्षा यहाँ नहीं की जाती है । सादावर्णीयका वन्य  
स्वोदय-परोदय होता है क्योंकि, उच्यके व होनेपर भी उसके वन्यमें कोई विशेष नहीं  
है । इम सब प्रकृतिपौका निरन्तर वन्य होता है क्योंकि, इम गुणस्वात्ममें वन्यविभ्रामका  
अभाव है । ऐसा माननेपर एक समय रहकर श्रुत्युक्तो प्राप्त हुए सूक्ष्मसाम्प्रतिक सबतोंसे  
व्यभिचार होगा यह भी नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि, 'सूक्ष्मसाम्प्रतिक गुणस्वात्ममें  
ऐसा विशेषण दिया गया है । औद्योगिक व्यवयोग काम कणाय चार मनोयोग और चार

कथजोग-त्येकसाय चहुमण-वधिजोगा सि दस पन्चया । अगइसठतो बंधो, एरम चउगइ  
बंधामावादो । मनुमा सामो, अण्णरथ सुहुमसांपराइयाणममावादो । बंधदाण जरिथ, सुहुम  
सांपरायण्णदुद्धि ति सुसे अणुवदिहत्तादो । बंधवोन्हेरो जरिथ, 'अर्बचा जरिथ' ति धमपादो ।  
पचणाणावरणीय चठदसणावरणीय-पंचतरायाण तिबिहो बंधो, पुवामावादो । सेसाप  
सादि-अदुधो ।

जहाकखादविहारसुद्धिसजदेसु सादावेदणीयस्स को बंधो को  
अबधो ? ॥ २४१ ॥

सुगम ।

उवसतकसायवीदरागछदुमत्या खीणकसायवीयरायछदुमत्या  
सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमम गतूण  
[ बंधो ] वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २४२ ॥

सुगममेइ, केवलमाणमगणापकूवणाए समाजसादो ।

बन्धनपाग ये बंधा प्रत्यय हैं । यत्तिबंधयोगसे रहित बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ चारों गतिचौके  
बन्धका समावेश है । मनुष्य स्वामी है क्योंकि, अन्य गतिचौके सूक्ष्मसाम्यवायिक संघर्षोंका  
समावेश है । बन्धावस्थान नहीं है क्योंकि सूक्ष्मसाम्यवायिक भारि ऐसा सूक्ष्म निर्बंध  
नहीं किया गया है । बन्धनमुच्छ्रय नहीं है क्योंकि, अयधक नहीं है ऐसा सूक्ष्मका  
बन्धन है । पांच ज्ञानावरणीय चार बंधनावरणीय और पांच व्यक्तराय हमका  
तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि उनके प्रत्यय बन्धका समावेश है । दोष प्रकृतिचौका सादि  
ब अमुय बन्ध होता है ।

यथास्मात्तविहारसुद्धिसवर्तमि सादावेदनीयका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ?  
॥ २४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशान्तरुचय वीतराग छद्मस्य, खीणकपाय वीतराग छद्मस्य और सयोगकेवली  
बन्धक है । सयोगकेवलिकलके अन्तिम समयको आकर [ बन्ध ] प्युच्छिज्ज होता है । ये  
पन्चक हैं, दोष अबन्धक हैं ॥ २४२ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि, केवलमाणमार्गणाकी प्रकृतिवासे हमकी समामता है ।

सजदासजदेसु पचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-  
अट्टकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-सोग भय-दुगुल्ल-देवाठ-देवगह-पचिंदिय  
जादि-चेठव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वेठव्वियसरीर-  
अगोवग-चण्ण-गंध रस-फास देवगहपाओग्गाणुपुब्बी अगुरुवलहुव-उव  
घाद-परघाद उस्सास-यसत्यविद्यायगह-त्तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-  
यिरायिर-सुहासुह-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-  
णिमिण-तित्ययरुच्चागोद-पचतराइयाण को बधो को अबधो ?  
॥ २४३ ॥

सुगमं ।

सजदासजदा षधा । एदे षधा, अषधा णत्थि ॥ २४४ ॥

उदयादो पुण्यं पञ्चा वा षधो वेष्टिच्छब्दो ति एत्थ विषये परिच, षधवेष्टिच्छा-  
मावादे । पंचप्राणावरणीय षठसंस्कारावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वज्जचठक  
अगुरुमल्लुअचठक-भिराभिर-सुहासुह सुमगातेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचतराइयाण सोदधो

संयत्तासंयतेषां पांच ज्ञानावरणीय, छद इन्द्रणावरणीय, सादा व असदा वेदनीय, अट्ट  
कसाय, पुरिसवेद, हास्य, रति, शोक, भय, दुगुप्सा, देवावु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति,  
वैक्रियिक, वैजस व कर्मण क्षरीर, समचतुरससंस्वान, वैक्रियिकक्षरीरंगोपांग, बर्ष, गन्ध,  
रस, स्पर्श देवमतिप्रायोम्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु, उपपात, परपात, उप्पवास, प्रसस्तविद्यायोगति,  
जस, चादर, पचांत प्रत्येकक्षरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्वर, आदेय,  
जसकित्ति, अजसकित्ति, निर्माण, तीर्णकर, उप्पयोव जोर पांच अन्तराय, इनका कोन वन्धक  
जोत कोन अचन्धक है ? ॥ २४३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयत्तासंयत वन्धक है । ये वन्धक हैं, अचन्धक नहीं हैं ॥ २४४ ॥

इन प्रकृतिपौंछ वन्ध उदयमे पूर्वमे वा पश्चात् व्युत्थिच्छ होना है यह विचार पदा  
बर्ती है षधोकि, उनके वन्ध-व्युत्थेच्छ अभाव है । पांच ज्ञानावरण चार इन्द्रणावरण  
पंचेन्द्रिय जाति विजस व कर्मण क्षरीर, बर्षादिक चार, अगुरुल्लु यादिक चार, स्थिर,  
अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग आदेय पचाईति निर्माण जोर पांच अन्तरायका स्वरूप

बंधो, एरम धुबोदयसुवर्तमादो । देवाठ देवगइ-वेठम्बियसरीर-भंगोवग-देवगइपामोगागुपुष्पी-  
अजसकिचि-तित्पयराय परोदओ बंधो, बबोदयाणमण्णोणविरोहइओ । मिहा-पयत्त-साइसाइ  
अइकस्याय-पुरिसवेइ-इम्म-रदि-अरणि-सोग-मय-दुगुछा-समचउरससंअण-पसत्पविहायगइ-  
सुस्सरुक्कागोदणं ववा सोदय-परोदओ, उइयहा वि बंधविरोहामावाओ ।

पंचपाप्मावरणीय-छद्मसपावरणीय अइकस्याय पुरिसवेइ मय दुगुछा-देवाठ-देवगइ-बधि  
दियबदि-वेठम्बिय-तेजा-कम्मइमसरीर-समचउरससंअण-वेठम्बियसरीरमगोवग-अणचठक-  
देवगइपामोगागुपुष्पी-अगुरुवत्तुवचठक-पसत्पविहायगइ-तसचठक-सुमग-सुस्सरदेव-  
मिमिज-तित्पयरुक्कागोद-वैचतरइयाणं ववो गिरतरो, एगसमएण वंधुवरामावाओ । साइसाइ  
हस्स-रदि-अरदि-सोग-विराधिर-सुहासुइ अजसकिचि-अजसकिचीणं ववो सांतरो, एगसमएण वंधु  
वरमइसपाओ । पक्कया सुग्गमा, बोत्थाणुअइपक्कणीहो मेइमामावओ । सप्पासि पयडीय देवगइ  
संतुपो बंधो, अण्णगइणं ववामावाओ । दुयइदेसम्भइणो सामी, अम्भरम तेसिमामावओ ।  
वंधदामं पत्थि, एक्कगुणहाणे तदसंमवाओ । अववा अग्नि, प-अवडियणयावत्तंपवाओ ।

बन्ध होता है क्योंकि यहाँ इनका मूल उद्भव पाया जाता है । देवापु देवगति वैश्वियिक  
शरीर व वैश्वियिकशरीरगोपांग देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अपराकीर्ति और तीर्थकरका  
परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि इनके बन्ध और उद्भवका वृत्त्यर्थमें विरोध है । निद्रा प्रकटा  
साता व असाता वैदनीय जाड कपाय पुरुषवेइ हास्य रति भरति शोक मय सुगुप्ता  
समचतुरक्षसस्याम प्रशस्तविहायोगति सुस्वर और उच्चगोबद्ध बन्ध स्वोदय-परोक्ष  
होता है क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है ।

पाँच ज्ञानावरणीय छद्म दर्शनावरणीय जाड कपाय पुरुषवेइ मय सुगुप्ता  
देवापु देवगति वैश्वियिक जाति वैश्वियिक, तैजस व क्षाम्य शरीर समचतुरक्षसस्याम  
वैश्वियिकशरीरगोपांग वर्णाश्रिक चार, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मगुरुसु जातिव चार,  
प्रशस्तविहायोगति ज्ञानाश्रिक चार, सुमग सुस्वर आवेय निर्मास तीर्थकर, उच्चगोब  
और पाँच अन्तराय इनका बन्ध गिरन्तर होता है क्योंकि एक समयसे इनके  
बन्धविधायक अभाव है । साता व असाता वैदनीय हास्य रति भरति शोक, स्थिर,  
अस्थिर, सुम अशुम पराकीर्ति और अपराकीर्तिका बन्ध सान्तर होता है क्योंकि, एक  
समयसे इनका बन्धविधायक देखा जाता है । प्रत्यय सुग्गम है क्योंकि, सामान्य अनुमतीके  
प्रत्ययोंसे कोई मेह नहीं है । सब प्रकृतियोंका देवगतिसमुक्त बन्ध होता है क्योंकि, अन्य  
गतिपोंके बन्धका वहाँ अभाव है । वे गतिपोंके देवावती स्वामी हैं, क्योंकि अन्य  
गतिपोंमें उनका अभाव है । बन्धाध्याय नहीं है क्योंकि, एक गुणस्यात्ममें उसकी  
कम्मावना नहीं है । अथवा पर्यायार्थिक जयका अवलम्बन करके बन्धाध्याय है ।

वधोच्छेदो णत्वि, 'अर्धधा णत्वि' ति वयणाशे । पुवर्धधीर्णं तिनिहो वधो, पुवापावाशे ।  
सेसार्धं सदि-अद्भुवो, अद्भुवधधित्थो ।

असजदेसु पघणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादासाद-धारस  
कसाय पुरिसवेद-हस्त-रदि-अरदि-सोग भय दुगुला मणुसगह-देवगह-  
पर्चिदियजादि-ओरालिय-वेउविय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-  
सट्ठण ओरालिय-चउवियअगोवग-वज्जरिसहसघट्ठण-वण्ण गध रस-  
फास मणुसगह-देवगहपाओरगाणुपुब्बी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद  
उस्सास-पसत्थविहायगह-त्तस-चादर-यज्जत्त-पत्तेयसरीर-धिराधिर-सुहा  
सुह-सुभग-सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-  
पंचंतराइयाण को वधो को अवंधो ? ॥ २४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाव असजदमम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,  
अवधा णत्वि ॥ २४६ ॥

बन्धन्युच्छेद नहीं है क्योंकि अवन्धक नहीं है देना स्वर्ण कहा गया है । पुवधन्वो  
मठित्थिपोअ त्थि मन्धरका बन्ध होता है क्योंकि उसके पुव बन्धका समाव है । दोष  
मरुतिबोका समीप मन्धक बन्ध होता है क्योंकि, वे मन्धकबन्ध हैं ।

असंयतोंमें पांच प्राणावरणीय छद्म ईशनावरणीय, साता व असाता वेदनीय चरि  
कसाय, पुरुसवेद, हास्य, रति, अरति, सोक भय दुगुला, मनुष्यगति देवगति, पंचेन्द्रिय  
आर्ति औदारिक, वैकिथिक, तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरससंस्थान औदारिक व  
वैकिथिक अंगोपांग, वज्रर्मसंहनन वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी  
अमुल्लसु, उपपत्त, परपत्त उप्पत्तास प्रशस्तविहायोगति, व्रस, चादर, पर्याप्त, पत्तकअरि,  
खिर, अखिर, सुम, अमुम, सुमग, सुस्सर आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उचमोत्र  
और पांच पन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २४५ ॥

बह स्व सुगम है ।

मिथ्याचक्षे सेकर असंयतसम्पगति तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं  
हैं ॥ २४६ ॥

एत्थोदइत्थणं बंधोदयबोन्धेशमावाधो उदयादो बधो किं पुण्यं पञ्च वा बोधिष्णो  
 ति विचारो भवति । पंचपाणावरणीय चतुर्दसपावरणीय-तेजा-कम्माद्यसरीर-वन्धघटनक  
 अगुरुभक्तुज-भिराविर-सुहृत्सुह-मिमिष-पर्वतराह्यार्ण सोदयो बंधो, पुत्रोदयसाधो । देवग  
 वेदध्वियसरीर-वेदध्वियसरीर-अगोवंग-देवगहपाभोगाणुपुष्पीणं परोदयो बधो, बंधोदयार्णं परो  
 प्यविरोहादो । विहा-स्यत्त-सादासाद-चारसकसाय-पुरिसवेद-इत्थ-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-  
 समचतरससंअण-पसत्तविहायगह-सुमग-सुत्तर-आदेन्न-असकिरि-अजसकिरि-उप्पागोदार्ण  
 बंधो सोदय-परोदयो उहपहा वि बंधुवल्मादो । मज्जुसंगह-मज्जुसंगहपाभोगाणुपुष्पी-ओराठिय  
 सरीर-ओराठियसरीर-बंगोवंग-अन्नरिसहसपइपाण मिष्सादिहि-सासणसम्मदिहीसु सोदय-परो-  
 दयो, उहपहा वि बंधुवल्मादो । सम्मामिष्सादिहि-असज्जदसम्मादिहीसु परोदयो, सोदयण सग  
 बंधत्त तत्त्व विरोहदसपादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पञ्चत्ताण मिष्सादिहीसु सोदय-परोदयो ।  
 उधरि सोदयो चैव, विगच्छिंदिय-बादर-सुहृत्ताणन्वत्तपसु सासणादीणममावाधो । उववात्त-  
 परवात्त उत्सुस-पत्तेयसरीराणं मिष्सादिहि-सासणसम्मदिहि-असज्जदसम्मादिहीसु सोदय

यहाँ उदय पुरुष प्रकृतिपौके बन्ध और उदयके व्युत्पत्त्यका अभाव होनेसे उदयकी  
 अपेक्षा बन्ध क्या पूर्वमें और या पश्चात् व्युत्पिन्न होता है यह विचार नहीं है । पांच  
 ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय तैजस व कार्मण शरीर, पञ्चाधिक चार, अगुरुभक्तु,  
 स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय इनका स्वेच्छ बन्ध होता है  
 क्योंकि ये भुवोदयी प्रकृतिपां हैं । देवगति वैकिकिकशरीर, वैकिकिकशरीर-गोपांग और  
 देवगतिप्राप्तोपानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है क्योंकि, इनके बन्ध और उदयके परस्पर  
 विरोध है । मित्रा प्रच्छा साता व असाता बंधनीय बाह्य कर्माय पुरुषवेद हास्य एति  
 अरति शोक, मय कुगुप्सा समचतुरक्षसंस्थान प्रद्यस्तविहायमेताति सुमग सुत्तर,  
 आदेय पद्याकीर्ति अथशकीर्ति और अज्जगोवंगका बन्ध स्वेच्छ-परोदय होता है क्योंकि,  
 दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मज्जुसंगति मज्जुसंगतिप्राप्तोपानुपूर्वी  
 औदारिकशरीर, औदारिकशरीर-गोपांग और अज्जमसंहममका मिष्सादिहि और  
 सासणसम्मदिहि गुणस्थानोंमें स्वेच्छ परोदय बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ दोनों प्रकारसे  
 भी इनका बन्ध पाया जाता है । सम्मामिष्सादिहि और असज्जदसम्मदिहि गुणस्थानोंमें  
 परोदय बन्ध होता है क्योंकि, अपेक्षे उदयक साथ अपने बन्धका वहाँ विरोध देखा जाता है ।  
 पंचेन्द्रिय आदि अज बाह्य और पर्याप्तका बन्ध मिष्सादिहिमें स्वेच्छ परोदय होता है ।  
 ऊपर इनका स्वेच्छ ही बन्ध होता है क्योंकि विकल्पोन्द्रिय स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तकोंमें  
 सासाधनविक गुणस्थानोंका अभाव है । उपचात परचात उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका  
 मिष्सादिहि, सासाधनसम्मदिहि और असज्जदसम्मदिहि गुणस्थानोंमें स्वेच्छ परोदय



गङ्गापौष्पाण्युत्थीर्णं मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु बंधो सांतर-भिरंतरो । कथं भिरंतरो ?  
 ण, आपदादिदेवेसु' भिरंतरबधुवत्तादो । उवरि भिरंतरो, भिप्पडिवक्खबंधादो । भोराठिय  
 सरीर-भोराठियसरीर-बंधोवंगण मिच्छाद्वीसु सासणसम्मादिद्वीसु च सांतर-भिरंतरो बंधो ।  
 कथं भिरंतरो ? ण, देव-भोराठियसु भिरंतरबधुवत्तादो । उवरि भिरंतरो, भिप्पडिवक्खबंधादो ।  
 वज्जरिसहस्रपङ्कसस मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतरो । उवरि भिरंतरो, भिप्पडिवक्ख  
 बंधादो । पसन्धिविहायगाइ-सुमग-सुस्सपेदेन्नुवागोवाण मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतर  
 भिरंतरो, भसंखेन्नुवासाउपसु भिरंतरबधुवत्तादो । उवरि भिरंतरो, भिप्पडिवक्खबंधादो ।  
 पंचिदियवादि परचादुस्सास-तस-वाइर-पग्गवत्त-पत्तेयसरीरणं बंधो मिच्छाद्विद्वि सांतर-भिरंतरो,

अन्तर है । मनुष्यमति और मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्विका मिच्छाद्वि और सासाधन  
 सम्मगद्विषयोंमें सांतर-निरन्तर बन्ध होता है ।

प्रश्न—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महीं क्योंकि आमतदादि बंधोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहां यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे  
 रहित है ।

औदारिकशरीर और औदारिकशरीर-गोपांगका मिच्छाद्विषय और सासाधन  
 सम्मगद्विषयोंमें सांतर-निरन्तर बन्ध होता है ।

प्रश्न—इनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महीं क्योंकि देव और नाटकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया  
 जाता है ।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित  
 है । बर्जमसहजमका मिच्छाद्वि और सासाधनसम्मगद्विषयोंमें सांतर बन्ध होता है । ऊपर  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । प्रदास्त  
 विहायोगति सुमग सुस्वर, आवेष और उच्छगोवका मिच्छाद्वि और सासाधनसम्म  
 गद्विषयोंमें सांतर-निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि भसंख्यातवयापुर्णमें उनका निरन्तर बन्ध  
 पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे  
 रहित है । संवेन्द्रिय आति पट्यात्त उच्छवास तस वाइर, पपांठ और प्रत्येकशरीरका  
 बन्ध मिच्छाद्वि शुणस्याममें सांतर-निरन्तर होता है क्योंकि, देव व नाटकियोंमें इनका



देव-भरद्वाजसु विरंतरंभुवतंमादो । उवरि विरंतो, विप्लविवस्वर्षादो ।

एषया सुगमा, ओषध-न्यर्हितो विसेस्यमावाहो । पञ्चापावरणीय-असृजनावरणीय-  
असादेवदीप्य-अरसकसाय-अदि-सोम-मय-हुगुण-यैर्विदिय-अदि-तेजा-कम्पायसरी-वन्ध-  
गप-रस-कास-अगुरुवत्तुभ्य उवपाद-परपाद-उत्सास-तस-वावर-पञ्च-पसेयसरी-अभिर-असृ-  
ज-असृजि-विमिष-यत्त-आयाप मिष्मदिदि-अठगसंभुतो । सासपे पिरयगईप विप  
सिगईसंभुतो । सम्मामिष्मदिदि-असंजदसम्मादिद्रीसु देव-मनुसगईसंभुतो । सादेवदीप्य  
पुरिसोदे-इस्स-दि-समचठरसंज-पसरमिहसगई पिर-सुप-सुभग-सुस्सर बदेज्ज-अस-  
किटीप मिष्मदिदि-सासपसम्मादिद्रीसु बंधो तिगईसंभुतो, पिरयगईप अमावाहो । सम्म  
मिष्मदिदि-असंजदसम्मादिद्रीसु दुगईसंभुतो, पिरय-तिरिक्कागईपमावाहो । ओराटियसरी  
ओराटियसरीरंग-व-अरिसइसंपइपाभ मिष्मदिदि-सासपसम्मादिद्रीसु बंधो तिरिक्का  
धुमगईसंभुतो । सम्मामिष्मदिदि-असंजदसम्मादिद्रीसु मनुसगईसंभुतो । मनुसगई-मनुस-  
मर्यामोगाणुपुम्मीय मनुसगईसंभुतो । देवगई-देवगईपाओम्माणुपुम्मीय देवमईसंभुतो ।

निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ वह  
प्रतिपक्ष प्रतियोग बन्धसे रहित है ।

प्रत्यय सुगम है क्योंकि, ओषधप्रत्ययोंसे वहाँ कोई विशेषता नहीं है । पांच आवाहर  
नीय छह दधीनावरणीय असादा वहनीय आरह कयाय अरति शोक, धन सुगुप्ता, रंके-  
न्ध्रिय भुति ईजस व कामज शरीर, वज गन्ध रस रूपा अगुरुवत्तु, उपमात परपाद,  
उष्णवास अस वावर, पर्याप्त प्रायश्चित्त, अस्विर, अनुम अयशस्वीति विमाज और  
पांच अस्तप्यमय बन्ध मिथ्याहति गुणस्यात्मने जाये गतिर्गोच संयुक्त सासात्त  
गुणस्यात्मने अरकमतिके किमा र्हा गतिर्गोच संयुक्त तथा सम्पत्तिमत्त्वादि और असंयत  
सम्पत्ति गुणस्यात्मने देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है । साहायेदीप्य पुत्रवद,  
इत्य रति समचठरसंस्थान प्रसास्तविहापायति स्थिर, धुमि धुमय सुस्वर, आर्य  
और पशार्तिरिक्का बन्ध मिथ्याहति और सासात्तसम्पत्ति गुणस्यात्मने तीव्र गतिर्गोच  
संयुक्त होता है क्योंकि, इतक साथ अरकमतिके बन्धका अभाव है । सम्पत्तिमत्त्वादि  
और असंयतसम्पत्ति गुणस्यात्मने वा गतिर्गोच संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि वहाँ  
अरकमति और विषममति का अभाव है । औररिक्काशरीर, औररिक्काशरीरपायां और  
अमरमसंहमनय बन्ध मिथ्याहति और सासात्तसम्पत्ति गुणस्यात्मने निर्द्वन्द्वति और  
मनुष्यगति संयुक्त होता है । सम्पत्तिमत्त्वादि और असंयतसम्पत्ति गुणस्यात्मने  
उक्त बन्ध मनुष्यगति संयुक्त होता है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिमायाणानुपूर्वीका  
मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देवगति और देवगतिमायाणानुपूर्वीका बन्ध

वेतम्वियसरीर-वेतम्वियसरीरवंगोवगाण मिन्मइहीमु इगइसंहुतो, तिरिक्ख-मणुसगईम-  
ममावादो । सासणसम्मादिहि-सम्मामिच्छादिहि-असंजवसम्मादिहीमु देवगइसंहुतो । उप्पा-  
गोदस्स देव-मणुसगइसंहुतो, अण्णत्थ तस्सुदयामावादो ।

चटगइमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्मामिच्छादिहि-असंजवसम्मादिही सामी ।  
वंधव्वाण सुगमं । वषसोप्पेदो पत्थि, 'अवंधा पत्थि' सि वयणादो । धुवर्षवीण मिच्छा-  
इहीमु चटविहो वंधो । सासणाहीमु तिविहो, धुवर्षवामावादो । अवससाणं छादि मद्दुवो,  
वद्धवर्षविहो ।

वेट्ठाणी ओघ ॥ २४७ ॥

वेट्ठाणपपडीवं जवा मूलेधम्मि परुवण्ण कदा तथा कम्पवा, विसिसामावादो ।

एक्कट्ठाणी ओघ ॥ २४८ ॥

सुगमेव ।

मणुस्साव-देवावआण को वधो को अस्वधो ? ॥ २४९ ॥

देवगतिसे संयुक्त होता है । वैदिकिक्यापीर और वैदिकिक्यापीरवंगोपांगका वण्ड मिच्छा-  
इहिमीमें हो गतिपोंसे संयुक्त होता है क्योंकि, उनका साथ त्रियम्माति और मनुष्यगतिके  
वण्डका अभाव है । सासादनसम्मादिहि, सम्मामिच्छादिहि और असंजवसम्मादिहि गुण  
स्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त उनका वण्ड होता है । उक्कगोत्रका वण्ड देवगति और मनुष्य  
गतिके संयुक्त होता है क्योंकि अन्य गतिपोंमें उसके उक्कका अभाव है ।

आपें गतिपोंके मिच्छादिहि, सासादनसम्मादिहि, सम्मामिच्छादिहि और असंजव  
सम्मादिहि सामी हैं । वण्डावधान सुगम है । वण्डव्युत्पेद नहीं है, क्योंकि, वण्डवक नहीं  
हैं ऐसा सुगम कहा गया है । धुवर्षवीण प्रकृतियोंका वण्ड मिच्छाइहियोंमें आपें प्रकारका  
होता है । सासादनविक्रोंमें तीन प्रकारका वण्ड होता है क्योंकि, वहां भूय वण्डका अभाव  
है । दोय प्रकृतियोंका वण्ड सामी व मनुष्य होता है, क्योंकि ये मनुष्यवर्णी हैं ।

हिस्मानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा बोधके समान है ॥ २४७ ॥

विस्थापिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जैसे मूलोपमों की गई है उसी प्रकार करना  
चाहिये क्योंकि मूलोपमोंसे वहां कोर विद्ययता नहीं है ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा बोधके समान है ॥ २४८ ॥

यह वण्ड सुगम है ।

मनुष्याय और देवायुका कौन वण्ड और कौन अवण्ड है ? ॥ २४९ ॥

मुग्धं ।

मिच्छादृष्टी सासणसम्मादृष्टी असजदसम्मादृष्टी वधा । एदे  
बंधा, अवसेसा अमधा ॥ २५० ॥

मुग्धं ।

तित्यपरणामस्स को वधो को अमधो ? ॥ २५१ ॥

मुग्धं ।

असजदसम्मादृष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २५२ ॥

मुग्धं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदसणि-अचक्खुदंसणीणमोघं णेदब्बं जाव  
तित्यपरे त्ति ॥ २५३ ॥

तिग्गं चार्हमादाव भावर-सुद्धम-साहरणाव चक्खुदंसणीसु परेद्वयपुवत्तमादो बोध-

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासणसम्पददृष्टि और असंयतसम्पददृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,  
येव अबन्धक हैं ॥ २५० ॥

यह सब सुगम है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २५१ ॥

यह सब सुगम है ।

असंयतसम्पददृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, येव अबन्धक हैं ॥ २५२ ॥

यह सब सुगम है ।

दर्शनमार्गानुसार चक्षुर्दर्शनी और अचक्षुर्दर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति  
तक बोधके समान जानना चाहिये ॥ २५३ ॥

धृक्—तीन जातियाँ आताप स्वावर, सूक्ष्म और व्यापारज प्रकृतियोंका  
चक्षुर्दर्शनीयोंमें भूँके परेदेव वण्य पाया जाता है, अतः सब 'बन्धकी प्ररूपणा बोधके समान

मिदि न पद ? न, दम्बद्विषयमवर्तयिष्ये द्विरेसामासियमुत्तु विरोहामावादे । पयदि  
वधरागयमेदपदुप्यायणदुमुत्तरमुत्तु मणदि—

णवरि विमेमो, सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ?

॥ २५४ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव स्त्रीणकसायवीयरायछुदुमत्या वधा ।

एदे वधा, अवधा णत्ति ॥ २५५ ॥

सुगममद ।

ओहिदसणी ओहिणाणिभगो ॥ २५६ ॥

सुगम ।

केवलदसणी केवलणाणिभगो ॥ २५७ ॥

सुगम ।

दे पद पटित नहीं होता ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि, द्रष्टव्यार्थक मयकर मयलम्बन कर  
रिचित वरामार्थक सुगमों विराधका समान है ।

प्रकृतिव्याप्यागत मयक प्रकृपणार्थ उत्तर सूत्र कहत हैं—

इतनी विवेचना है कि सात्त्विकेदनीयस्र कोन वधक और कोन अवधक है ? ॥ २५४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याचक्षिमे लेकर धीनकपाय बीनराग छद्मस्य सक वधक है । ये वन्धक है,  
मयवधक नहीं है ॥ २५५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अपिदग्ना जीवोंकी प्ररूपणा अपिदग्नाजियोंके समान है ॥ २५६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

केरलान्नियोंकी प्ररूपणा केरलान्नियोंके समान है ॥ २५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काठलेस्सियाण  
मसजदमंगो ॥ २५८ ॥

किण्हलेस्साण ताव उच्छेदे— पंचपात्रावरणीय छद्मसावरणीय-साक्षात्-वारस  
कसाय-पुरिसवेद-इत्थं रदि-अदि-सोग-मय-दुग्गुप्ता-मनुष्यगद्-देवगद्-पंचिदियमादि-भोरत्तिय-  
वेउत्तिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समजउरसंयत्ताण-भोरत्तिय-वेउत्तियसरीरगोवंग-वज्जरिसइसंयत्त  
वज्जवठक्क-मनुष्यगद्-देवगद्वाजोगाणुपुप्पी-अगुरुवत्तुमजठक्क-पसरपविहायगद् तसवठक्क-  
विराविर-मुहामुह-सुमग-सुत्तर वादेज्ज-असक्खि अजसक्खि-विमिज्जुम्मागोद-पंचतण्डमाणि  
किण्हलेस्सियपउगुणहाणवेहि वज्जमाणाणि । तत्पुत्रयादा षणो पुणं पप्प वा बोधिमज्ज  
ति परिकल्हणं अंसजदमंगो ।

पंचपात्रावरणीय-व उर्द्धसावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वज्जवठक्क-अगुरुवत्तुम-विरा-  
विर-मुहामुह-विमिज्ज-पंचतण्डमाणि षणो सोदमो, पुत्रोदयस्यरो । देवगद्दुग्ग-वेउत्तियदुग्गाणं  
सोदमो, षणोदयान समाजज्जठउत्तिविरोहारे । विहा-वयत्त-साक्षात्-वारसकसाय-पुरिसवेद

लेस्सामार्गणुसार कृष्णलेखावाले, नीललेखावाले और कापोतलेखावाले जीवोंकी  
प्रकृषणा असंपर्तके समान है ॥ २५८ ॥

पहले कृष्णलेखाके आश्रित प्रकृषणा करते हैं— पांच कालावरणीय छद्म  
वर्धमावरणीय साता व मसाता वैदनीय वाच्छ कपाव पुरुषवेद हास्य रति  
मरति शोक, मय दुग्गुप्ता मनुष्यमति वैद्यमति पंचेन्द्रिय ज्ञप्ति, नैवारिक,  
वैदित्तिक, तैजस व अर्मज शरीर, समजगुरसंयत्तान नैवारिक और वैदित्तिक  
शरीरतंगोपाय वज्जरससंहनन वज्जवठक्क वाट, मनुष्यमति और वैद्यमति प्रापोन्मादुपूर्वी  
अगुरुवत्तुमादिक वाट, महास्थविहायोगति वज्जवठक्क वाट, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ  
सुमग सुस्वर, मत्तेव वज्जकीर्ति वज्जकीर्ति निर्माण उच्छेदगोत्र और पांच अन्तरावध व  
मज्जतिपा कृष्णलेखावाले वाट शुभस्थानवर्ती जीवों द्वारा वर्णमान हैं । उन्में उच्छेद वज्ज  
पूर्वमें धुम्भिक होता है या पप्पात् इस प्रकारकी पटीहा वेहां असंपत्त जीवोंके समान है ।

पांच कालावरणीय वाट वर्धमावरणीय तैजस व अर्मज शरीर, वज्जवठक्क वाट,  
अगुरुवत्तु स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तरावध वज्ज लास्य  
हाता है क्योंकि वे सुबोदयी हैं । वैद्यमतिविक और वैदित्तिकविकका परोक्ष वज्ज होता  
है क्योंकि, इनके वज्ज और उच्छेदके समान कर्ममें रहनेका विरोध है । निद्रा मज्जा  
साता व मसाता वैदनीय वाच्छ कपाव पुरुषवेद हास्य रति, मरति शोक, मय,

हस्त-दि-आदि-सोम-मय-दुग्ध-समन्तरसस्यगण-यस्यत्रिहायगह-सुभग-मुत्तर-आदेव-अस-  
 क्रिति-असक्रिति उष्णागोद्राण सोदय-परोदयो, उभयहा वि ऋषुषर्तमात्रे । मधुसगाद्गुगोरा  
 त्रिपद्ग-वज्ररिसहस्रपड्यार्ण मिष्ठादिहि-सासणसम्मादिहीसु सोदय-परोदयो, उभयहा वि  
 ऋषुषर्तमात्रे । सम्मादिष्ठादिहि-असंघदसम्मादिहीसु परोदयो, सोदयर्षपाणमेदेसु गुणद्वयेसु  
 अश्वकमठतिविरोहाद्रे । पर्विदियवादि-तस-बाह्व-पञ्चस्य मिष्ठादिहीसु सोदय-परोदयो,  
 एतस पडिक्कस्यपहीन नि उदयसंभवो । उवरि सोदयो चेव, विगर्तिय-थावर-सुहम  
 अश्वजतणसु सासणारीणमभात्रे । उषाद-परषादुसास-यस्यसरीण मिष्ठादिहि-सासण  
 सम्मादिहीसु सोदय-परोदयो । असंघदसम्मादिहीसु सोदय-परोदयो, छट्पुडवीपञ्चमदाण-  
 मप-असकले असंघदसम्मादिहीन परोदण वषसमवादे । सम्मामिष्ठादिहीसु सोदयो,  
 एतसिमपञ्चतदामात्रे ।

पंचमात्रावरणीय-छट्पुडवीवरणीय-आसकस्याय-अय-दुग्ध-तेवा-कम्मदयसरी-वण्य-  
 अश्वक-अगुगुलद्वय उषाद-विमिण-यवनपात्रार्ण वषो गिरंतरे, पुषर्षिताद्रे । सादासाद-

सुगुप्ता समन्तरसस्यगण प्रचस्त्रिहायगति सुभग सुत्तर, आदेव, अश्वकीर्ति,  
 मयहाकीर्ति और उष्णगोत्रका स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि दोनों प्रकारसे भी  
 इनका पन्ध पाया जाता है । मनुष्यगणितिक बीजारिक्तिक और वज्रपमसंहमनका  
 मिष्ठादिहि और सासादनसम्यगदि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि  
 वहाँ दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है । सम्पत्तिमिष्ठादिहि और असंघतसम्यगदि  
 गुणस्थानोंमें उभका परादय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उन प्रकृतियोंके अपने  
 बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विराघ है । पंचेन्द्रिय जाति प्रम बाह्व और पयोत्तका  
 मिष्ठादिहिओंमें स्त्रोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी  
 उदय सम्भव है । ऊपर स्त्रोदय ही बन्ध होता है क्योंकि चिकित्त्रिय स्थावर, सूक्ष्म  
 और अपर्याजकोंमें नामाद्वैतानिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपपात परपात उच्छ्वास  
 और प्रत्यक्षशीरका मिष्ठादिहि और सासादनसम्यगदि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय-परोदय  
 बन्ध होता है । अमपनसम्यगदिहिओंमें स्त्रोदय-परादय बन्ध होता है क्योंकि, छट्टी पृथिवीसु  
 पीठ भाये हुए असंघतसम्यगदिहिओंके परादयस बन्ध सम्भव है । सम्यमिष्ठादिहिओंमें  
 स्त्रोदय बन्ध होता है क्योंकि उनमें अपर्याजताका अभाव है ।

पंच मात्रावरणीय छट्पुडवीवरणीय आसकस्याय अय सुगुप्ता हैअस व  
 वज्रपम शरीर, पञ्चादिक चार, अगुगुलसु उपपात निर्माण और पंच अश्वत्थका बन्ध  
 विरत्तर होता है क्योंकि, व हृष्यवर्णी हैं । सादा व असादा येदनीय दास्य रति, अरति

इस्स-रदि भारि-सोग-विद्यारि-सुद्धासुद्ध-वसकिरि-वजसकितीर्थ सांतरो, बद्धवविचारो ।  
 पुरिसवेद-देवगाइदुग-वेठविपसरी-वेठविपसरीभंगोवंग-समबतरसंअण-वन्वरिसहसंपडव-  
 पत्तविहायवह-सुमम-सुस्सर-जदेव्हुण्णागोदानं मिम्मइदि-सात्तवसम्मादिहीसु सांतरो ।  
 उवरि मित्तो, विप्विद्वक्खवैवाहो । मणुसमइ-मणुसगइपाजोगानुपुब्बीणं मिम्मइदि-सात्तव-  
 सम्मादिहीसु गिरंतरो । कथं गिरंतरो ? य आरवणुवदेवणं मणुस्सेमुववण्णमं सुक्कटेस्सा-  
 विभासेण किम्हत्तेस्साए परिपदाणमेतोमुहुत्तकत्तं गिरंतरंमुवर्त्तमाहो । सुक्कटेस्साए द्विदो पम्म  
 वेठ-कउ-वीत्तेस्साभो वेत्तिव कवमइमेण किम्हत्तेस्सापरिपदो होव ? य, सुक्कटेस्साहो कमेण  
 कउ-वीत्तेस्सासु परिमिय पम्म किम्बत्तेस्सापमाएण परिममवमुववमाहो । य य मणुसमइ  
 वववदा कउ-वीत्तेस्साकत्तवो योवा, ततो तस्स बहुपुरत्तमाहो । अपवा मव्विमसुक्कत्तस्सिभो  
 देवो जहा इण्णउजो होदण जहण्णमुक्काइया अपरिमिय असुहत्तिस्साए विवददि

शोक, रिपट, अस्थिर हृदय अशुभ यथाधीर्ति और अयथाधीर्तिका साम्तर बन्ध होता है क्योंकि, वे अज्ञचरण्यी हैं। पुनरपेक्ष वेकगतिविक्रि, वैकियिकशरीर, वैकियिकशरीरगोपाय समबतुरसंस्वाय वसर्पमसहजम प्रशस्तविहायोपति सुमग सुस्वर, आत्स्य और उच्चवगावक मिष्पाइदि और सासावसम्यगद्विषीं साम्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ वह मातपस प्रकृतिपौंके बन्धसे दृष्टि है। मनुष्यपति और मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वीक मिष्पाइदि और सासावसम्यगद्विष्ट शुभस्यान्तों निरन्तर बन्ध होता है।

संका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महाँ क्योंकि मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आरव अशुभ देवोंके शुद्धसहचारके विचारसे कृप्यसेह्यामें परिणत होनेपर अन्तर्मुहूर्त काळ तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

संका—शुद्धसेह्यामें स्थित जीव पद्म तेज कपोत और नील मेह्यामौको छांधकर कैसे एक साथ कृप्यसेह्यामें परिणत हो सकता है ?

समाधान—यह कोई श्रेय नहीं है क्योंकि शुद्धसहचारसे अमता कापात और नील मेह्यामौमें परिणमन करके पीछे कृप्यसेह्या पर्यायसे परिणमन स्वीकार किया गया है। भार मनुष्यगतिबन्धकाल कापात और नील मेह्याके कालसे योका नहीं है क्योंकि वह उमसे बहुत पाया जाता है। अथवा मध्यम दुक्कसहचारका देव जिस प्रकार आयुक्त हीन होनेपर अथवा शुद्धसेह्याधिकसे परिणमन न करके अशुभ तीन सेह्यामौमें गिरता

तदा मध्ये दत्ता मुद्रयकसंज्ञेणं चेव अभियमेण अमुहसितेस्सासु निवर्ततेति गहिरे तुम्हदे ।  
अप्ये पुण आहिया किण्णतेस्साए मज्झसगइदुगस्स निरतरं वर्षं पेम्भंति, मणुसगदि  
पंचगदाए क्खटतेस्सापचगदाबहुत्तम्भुवगमादो । तं पि कुदो ? मुद्रयेवार्णं सम्भेसि पि क्खठ  
तेस्साए चेव परिणामम्भुवगमादो । उवरि निरतरो । ओराठियसरीर-भंगोवंगण मिच्छाहि-  
सासणसम्मादिहीमु सांतर-निरतरो । कुदो ? वेरइएमु निरतरंषुवठमादो । उवरि निरतरो,  
पडिक्खत्तपपडिक्खामावादो । पंचिदियवादि-परपादुस्सास-त्तस-वादर-पड्ढत-पत्तेमसरीराण  
मिच्छाहिहीमु सांतर-निरतरो, वेरइएसु निरतरंषुवठमादो । उवरि निरतरो, पडिक्खत्तपपडिक्खी  
वचामावादो ।

पञ्चयानमोचमंगो । गवरि असंजदसम्माहिदिपचएसु वेठवियमित्सपचओ अवपेद्वो ।  
ओराठियदुग-मणुमगइ-मणुसगइपाओगाणुपुव्वीणं सम्मामिच्छाहिदि ओराठियकपवोपिस्वि-

है उर्सा प्रकर सच देव मरणकालमें ही नियम रहित अशुभ चीज छेड़यामें गिरते हैं,  
ऐसा ग्रहण करनेपर उपर्युक्त कथन संगत होता है ।

अन्य आधाय कृष्णछेड़यामें अनुप्यगतिप्रिकका निरन्तर बन्ध नहीं मानते हैं  
क्योंकि, अनुप्यगति बन्धककालसे क्वापातछेड़पाका बन्धककाल बहुत स्वीकार किया  
गया है ।

शंका—यह भी कैसे ?

समाधान—क्योंकि सच ही खूब देखोंका क्वापातछेड़यामें ही परिवर्तन स्वीकार  
किया गया है ।

ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है । भौतारिकशरीर और भौतारिकशरीर-पंगोपांगका  
मिथ्याहृदि य सासादमसम्पगहि शुलस्थानमें सास्तरनिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि  
भारतीयोंमें उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहाँ  
प्रतिपक्ष प्रतियोगिक बन्धका अभाव है । पंचमिद्रय जाति परपात उच्छ्वास वन बादर,  
पयाण और मत्पेकशरीरका मिथ्याहृदियोंमें सास्तरनिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,  
भारतीयोंमें उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि  
यहाँ प्रतिपक्ष प्रतियोगिक बन्धका अभाव है ।

प्रत्ययोंकी प्रकृषा आधक समान है । विनोद इतना है कि अमंयत  
सम्पगहि प्रत्ययोंमें धैर्यधिकमिद्र प्रत्ययका कम करना चाहिये । भौतारिकक,  
अनुप्यगति धार अनुप्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विक सम्पगित्पयाहृदि शुलस्थानमें भौतारिक

१ उर्सा देव मुद्रयकसंज्ञेण आवायवा देवमुद्रयकसंज्ञेण इति पाठः ।

२ शंका सम्मामिच्छाहिदि इति पाठः ।



पुरिसेवेदपञ्चपदि विद्या चात्सीसपञ्चया । देवगद्-देवगद्वापोजोगाणुपुष्पी-वेठभियसरीर-वेठ  
भियसरीरगोर्वाणं वेठभिय-वेठभियमित्सपञ्चया सञ्चगुणद्वापञ्चयसु सञ्चत्य जववेदम्बा ।  
भोराठियदुग-मनुसगद्-मनुसगद्वापोजोगाणुपुष्पीयं असंजदसम्मादिङ्किम्हि चात्सीस पञ्चया,  
वेठभियमित्स-भोराठिय-भोराठियमित्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसेवेदपञ्चयापममावाहो । वज्जि  
सहसपदकस्स सम्मामिच्छइङ्किम्हि चात्सीस पञ्चया, भोराठियकयभोगिरिय-पुरिसेवेदपञ्चयाप-  
ममावाहो । असंजदसम्मादिङ्किम्हि चात्सीस पञ्चया, भोराठिय-भोराठियमित्स-वेठभियमित्स  
कम्मइयकयभोगित्थि-पुरिसेवेदपञ्चयापममावाहो ।

पंचपाणावरणीय-सर्वसपावरणीय-जलावनेदनीय-वारसकसाय-अरुदि-सोम-भय-हुगुंअ-  
परिदिववादि-तेया-कम्मइयसरीर-वण्ण-यंप-रस-फास-अगुस्सत्तुज-ठवघाद-परघाद-उत्सास-  
तस-वाहर-यवत्त-पत्तेयसरीर-अभिर-असुह-अजसत्तिरि-भिमिष-पंचेतगद्वापं मिच्छाङ्किम्हि चठ  
यत्तंसंठये वधो । सासणे तिमत्तंसंठयो, विरयपईए जमावाहो । असंजदसम्मादिङ्किम्हि-सम्मा-  
मिच्छइङ्किम्हि हुपत्तंसंठयो, विरय-त्तिरिक्कगद्वापममावाहो । सावनेदनीय-पुरिसेवेद-इत्स-ए  
समचठरसंठय-पसरयविहम्यम-विर-सुम-सुमग-सुस्सर-आदेव-जसत्तिरीय मिच्छइङ्कि-सास-

कायपोता स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंके विद्या चात्सीस प्रत्यय हैं । देवगति  
देवगतिप्राप्तपणानुपूर्वी वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिकशरीरगोर्वाणके वैकल्पिक और  
वैकल्पिकमित्र प्रत्ययोंके सब गुणस्वात्मके प्रत्ययोंमें सर्वत्र कम करना चाहिये ।  
औद्यारिकमित्र, मनुष्यपति और मनुष्यगतिप्राप्तपणानुपूर्वीके असंप्रतसम्पन्नदि गुणस्वात्ममें  
चात्सीस प्रत्यय हैं क्योंकि वहाँ वैकल्पिकमित्र औद्यारिक औद्यारिकमित्र कर्मज कायपोय  
स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहाँ जमाव है । वज्जिमत्तंसंठनके सम्मामिच्छादि  
गुणस्वात्ममें चात्सीस प्रत्यय हैं क्योंकि, औद्यारिककायपोता स्त्रीवेद और पुरुषवेद  
प्रत्ययोंका वहाँ जमाव है । असंजदसम्पन्नदि गुणस्वात्ममें वसंके चात्सीस प्रत्यय हैं क्योंकि,  
औद्यारिक, औद्यारिकमित्र वैकल्पिकमित्र कर्मज कायपोय स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका  
वहाँ जमाव है ।

पांच जालावरणीय छह वर्णजावरणीय आसारा वेदनीय वारह कपय अरुदि  
शोक, भय भुगुप्ता, पंचमित्रय जाति तैलस व कर्मय शरीर, वन गण्य रस स्पर्श  
अगुलभु, उपघात परघात पञ्चकास जल वाहर, पर्याप्त प्रत्ययशरीर, अस्थिर, अक्षुम  
अपघातार्थ, निर्माण और पांच अन्तरायका मिच्छादि गुणस्वात्ममें वारों गतिपोंसे संयुक्त  
बन्ध होता है । सासात्मन गुणस्वात्ममें तीन पतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ  
नरकपतिका जमाव है । असंजदसम्पन्नदि और धम्ममिच्छादि गुणस्वात्ममें दो गतिपोंसे  
संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ मरकपति और तिर्यग्गतिका जमाव है । साता वेदनीय  
पुरुषवेद दास्य एति, समचठरसंठयाम प्रघसठविहायोपति स्थिर सुम सुमय

सम्मादिहीमु तिगइसंहुतो, गिरयगईय बभावायो । सम्माभिन्नादिहि-असंजदसम्मादिहीमु दुगइ  
संहुतो, गिरय-तिरिक्खगईयमभावायो । मणुसगइ-मणुसगइयाभोगाणुपुप्पीण सम्मगुणहमेसु पचो  
मणुसगइसंहुतो । भोरात्थियसरीर-भोरात्थियसरीरगोपंग-वन्मरिसइसंषण्णार्ण मिष्साइहि-सासण  
सम्मादिहीमु तिरिक्ख-मणुसगइसंहुतो । सम्माभिन्नादिहि-असंजदसम्माइहीमु मणुसगइसंहुतो,  
अण्णगइसंषामावायो । देवगइदुगस्स देवगइसंहुतो । वेठथियदुगस्स मिन्नाइहीमु दुगइ  
संहुतो, तिरिक्ख-मणुसगईयमभावायो । सासणसम्मादिहि-सम्माभिन्नादिहि-असंजदसम्मा-  
दिहीमु देवगइसंहुतो, अण्णगइसंषेण सजेगपिरोहो । उच्चगोदस्स सम्मगुणहमेसु  
देवगइ-मणुसगइसंहुतो पचो ।

पंचपापारणीय-उद्धसपावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-गुरिसवेद-इत्स-रदि-भरदि-  
सोग-भय-दुगुअ-यंभिंदियजादि तेवा-कम्मइयसरीर-समचठरससंयण-बण्ण-गच-रस-फास-  
अगुसवज्जुवचठक-पसरवविहायगइ-तस-बादर-पग्गस-पथेयसरीर-धिराधिर-सुहासुह-सुभग-  
सुत्तर-भाइअ-असक्खिअ-असक्खिअ-णिमिअ-यंभतराहय-उच्चगोदाण चठगइमिष्साइहि-सासण

सुत्तर, भाइय और यशस्वीर्तिका मिथ्याहृदि और सासादनसम्पत्ति गुणस्थानोंमें तीन  
गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि वहां मरकमगति का अभाव है । सम्पत्तिमिथ्याहृदि  
और असंयतसम्पत्ति गुणस्थानोंमें दो गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहां  
मरकमति और तिर्यग्गति का अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायेणानुपूर्वीका सब  
गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर औदारिकशरीरांगोपांग  
और अक्षर्यमसंहननका मिथ्याहृदि और सामाज्यसम्पत्ति गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति और  
मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है । सम्पत्तिमिथ्याहृदि और असंयतसम्पत्ति गुणस्थानोंमें  
मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि वहां अन्य गतिपोंके बन्धका अभाव है ।  
देवगतिद्विकका देवगतिये संयुक्त बन्ध होता है । वैकिथिकद्विकका मिथ्याहृदियोंमें दो  
गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, मिथ्यागति और मनुष्यगतिये बन्धका अभाव है ।  
सासादनसम्पत्ति सम्पत्तिमिथ्याहृदि और असंयतसम्पत्ति गुणस्थानोंमें द्वयगतिये  
संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, अन्य गतिपोंके बन्धके साथ इसके संपागका विरोध है ।  
उच्चगोत्रका सब गुणस्थानोंमें द्वयगति और मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह दर्शनावरणीय साता य असाता वेदनीय चारद कपाय  
पुण्यबद हाव्य रनि अरति शोक मय जुगुप्सा, पेशत्रिद्वय जाति वैज्रम ब क मय दाीर  
ममचतुरस्रसंस्थान यव गण्य रम स्वर्श अगुक्कसु भादिक थार, प्रशस्त्रविहायागति  
अम चारद पत्ताय प्रत्येकशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ सुख सुख, भाइय  
यशस्वीर्ति अयशस्वीर्ति, निर्माण, शोच अमृताय और उच्चगोत्रके चारों गतिपोंके

सम्मादिष्टिभ्यो, त्रिगङ्गसम्माभिष्मङ्गि-असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो सामी, देवगङ्गाय ब्रह्मनादो । मनुसङ्गाय-मनुसङ्गायपाभोग्माणुपूर्वी-भोरालियसरीर-भोरालियसरीरभोग्ग-वन्त्ररिसङ्गसङ्गपानं चतुर्गङ्गमिन्द्रादिष्टि-सामणसम्मादिष्टिभ्यो पिरयङ्गसम्माभिष्मङ्गि-असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो च सामी । देवगङ्गा-वेतपियङ्गाय दुर्गायमिन्द्रादिष्टि सामणसम्मादिष्टि-सम्माभिष्मङ्गि-असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो च सामी, पिरय-देवगङ्गायमनादो ।

वैश्वदेवो मृगम् । ब्रह्मोष्तेदो पतिव 'वैश्वदेव' इति वयपादो । पुत्रवैश्वदेव मिष्ठादिष्टिभिर्ब्रह्मो चतुर्विधो । अन्त्येति विनिहो, पुत्रावनादो । अद्भुतवैश्वदेव सत्वरस्य स्यारि अद्भुतो, अपादि-पुत्रावनादो ।

संपदि दुहायपयवीर्यं पकृष्या कीरदे— ब्रह्मताणुवैश्वदेवस्य ब्रह्मदेवता समं वैश्वदेवमिति, सासङ्गसम्मादिष्टिभिर्ब्रह्म तदुभयवैश्वदेववर्तमादो । एवं तिरिक्त्वमङ्गाभोग्माणुपूर्वीरिति वक्तव्यं । असङ्गदसम्मादिष्टिभिर्ब्रह्म तदुद्भवो ब्रह्म इति च ज, किम्बन्धेत्साप निष्ठाप

मिष्ठादिष्टिभ्यो सासङ्गसम्मादिष्टिभ्यो, तथा तत्र पतिवैश्वदेवस्य मिष्ठादिष्टिभ्यो ब्रह्म असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो स्वामी इति कर्त्तव्यं, यदा वैश्वदेवस्य इत्येकं ब्रह्मक्य अभाव इति । मनुष्यगति मनुष्यगतिमन्त्रोपायानुपूर्वीं ब्रह्मरिक्तादीर, ब्रह्मरिक्तादीरानुपूर्वीं ब्रह्म असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो पतिवैश्वदेवस्य मिष्ठादिष्टिभ्यो सासङ्गसम्मादिष्टिभ्यो ब्रह्म तदुद्भवो ब्रह्म इति च ज, किम्बन्धेत्साप निष्ठाप

ब्रह्मसम्मादिष्टिभ्यो सासङ्गसम्मादिष्टिभ्यो, तथा तत्र पतिवैश्वदेवस्य मिष्ठादिष्टिभ्यो ब्रह्म असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो स्वामी इति कर्त्तव्यं, यदा वैश्वदेवस्य इत्येकं ब्रह्मक्य अभाव इति । मनुष्यगति मनुष्यगतिमन्त्रोपायानुपूर्वीं ब्रह्मरिक्तादीर, ब्रह्मरिक्तादीरानुपूर्वीं ब्रह्म असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो पतिवैश्वदेवस्य मिष्ठादिष्टिभ्यो सासङ्गसम्मादिष्टिभ्यो ब्रह्म तदुद्भवो ब्रह्म इति च ज, किम्बन्धेत्साप निष्ठाप

जन्म इत्येकं ब्रह्मसम्मादिष्टिभ्यो सासङ्गसम्मादिष्टिभ्यो, तथा तत्र पतिवैश्वदेवस्य मिष्ठादिष्टिभ्यो ब्रह्म असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो स्वामी इति कर्त्तव्यं, यदा वैश्वदेवस्य इत्येकं ब्रह्मक्य अभाव इति । मनुष्यगति मनुष्यगतिमन्त्रोपायानुपूर्वीं ब्रह्मरिक्तादीर, ब्रह्मरिक्तादीरानुपूर्वीं ब्रह्म असङ्गदसम्मादिष्टिभ्यो पतिवैश्वदेवस्य मिष्ठादिष्टिभ्यो सासङ्गसम्मादिष्टिभ्यो ब्रह्म तदुद्भवो ब्रह्म इति च ज, किम्बन्धेत्साप निष्ठाप

संपदि दुहायपयवीर्यं पकृष्या कीरदे— ब्रह्मताणुवैश्वदेवस्य ब्रह्मदेवता समं वैश्वदेवमिति, सासङ्गसम्मादिष्टिभिर्ब्रह्म तदुभयवैश्वदेववर्तमादो । एवं तिरिक्त्वमङ्गाभोग्माणुपूर्वीरिति वक्तव्यं । असङ्गदसम्मादिष्टिभिर्ब्रह्म तदुद्भवो ब्रह्म इति च ज, किम्बन्धेत्साप निष्ठाप

सम्मादिष्टिभ्यो च सामी, पिरय-देवगङ्गायमनादो ।

तदुद्भासंमवाधो । अत्रसेसाधं पयडीणं उदयवोच्छेदो जल्वि, वंषवोच्छेदो चेत । सम्पासि  
पयडीण वंषो सोदय-परोदयो, अद्भुतोदयसाधो । धीष्णिगिदितिय-अपताशुषिचठवक-  
तिरिक्खाठवाणं वंषो भिरंतरो, एगसमएण वधुवरमामावाधो । इत्थियेद-चठसठण-चठसपठण-  
उन्वोव-अपसत्त्वविहायगइ-धुमग-हुस्सर अणादेन्मार्णं वधो सांतरो, एगसमएण वि वधुवरसुव  
ठंमाधो । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुण्णी-णीचागोदाणं वधो सांतर भिरंतरो । कुट्टो ?  
सत्तमपुडवीहिइमिप्फाहिइ-सासणसम्मादिहीसु तेउ-वाउक्कइयमिप्फाहिहीसु च भिरंतरंणु-  
वठंमाधो । पच्चया सुगमा । ववरि तिरिक्खाठमस्स मिप्फाहिहिइ वैठवियमिस्स-कम्मइय  
पच्चया अवणेदधा । सासणसम्मादिहिहि ओराठियमिस्स-वैठवियमिस्स-कम्मइयपच्चया वव  
वेदधा । धीष्णिगिदितिय-अनेताशुषिचठवक्कणं वधो चउगइसंहुत्थो । इत्थियेदस्स तिगइसंहुत्थो,  
भिरयगइए अमावादा । चठसठण चठसपठवाणं धुमसंहुत्थो, भिरय-वेवगइमममावाधो ।  
अपसरवविहायगइ-धुमग-हुस्सरं अणादेन्म-णीचागोदाणं मिप्फाहिहीसु तिगइसंहुत्थो, देवमइए

असम्मप है ।

छेत् प्रवृत्तियोंका उदयवोच्छेद नहीं है केवल वधुवोच्छेद ही है । सप्त प्रवृत्तियोंका  
वधु स्योदय परावृत्त होता है क्योंकि, स अद्भुताधी है । स्यामपूद्वित्रय अनन्तानुबन्धित  
चतुष्क भौरतिर्यगायुका वधु निरन्तर होता है क्योंकि एक समयसे उनके वधुविभ्रामका  
समाप्त है । स्त्रीवद्व चार संख्यात चार महान उद्योत अमदास्त्रविहायोगति धुमग  
हुस्वर और अमाव्यका वधु साम्तर होता है क्योंकि, एक समयसे भी उनका वधुविभ्राम  
पाया जाता है । तिपगति तिपगतिप्रयोगानुपूर्वी और तीचगावका वधु साम्तर निरन्तर  
होता है क्योंकि सप्तम पृथिवीमें स्थित मिष्यावदि व सासाधनसम्पत्ति नारकियों  
तथा तत्र स वासु काविक मिष्यावदि जीवोंमें भी उनका निरन्तर वधु पाया जाता है । प्रत्यक्ष  
सुगम है । विशेष इतना है कि तिपगायुके मिष्यावदि गुणस्थानमें वैद्विचिदमिध और  
वर्मन प्रत्ययोंके कम करना चाहिये । सामाधनसम्पत्ति गुणस्थानमें भौरारिकमिध  
वैद्विचिदमिध और वर्मन प्रत्ययोंका कम करना चाहिये । स्यामपूद्वित्रय और  
अनन्तानुबन्धितचतुष्क वधु चार गतियोंमें संयुक्त होता है । स्त्रीवद्वका वधु तीन  
गतियों संयुक्त होता है क्योंकि, उसके साथ अरकगतिक वधुका समाप्त है । चार संख्यात  
और चार संतननका वधु दो गतियों संयुक्त होता है क्योंकि, उनके साथ मरकगतिक और  
वपगतिक वधुका समाप्त है । अमदास्त्रविहायोगति धुमग हुस्वर अमाव्य और तीचगावका  
मिष्यावदिजीवों तीन गतियों संयुक्त वधु होता है क्योंकि, वपगतिका यही समाप्त है ।

ब्रह्मसाधो । सासने दुग्धसंस्तुते, विरय-देवर्गाङ्गममासाधो । तिरिक्खाठ-तिरिक्खग-तिरिक्ख-  
ग-पाभोगाणुपुष्पी-उज्जेत्वाण तिरिक्खगसंस्तुते, सामावियाधो । वीणपिडितिसादीप पयस्सी  
बंभस्त चठगाइमिष्मइहि-सासणसम्मादिहिणो सासी, अवियेहाधो । बंभस्तस्य बंभविपहृष्टस्य  
च सुगमं । सुवर्षणीयं मिष्मइहिहि चठवियेहो बंभो । सासने दुग्धो, जणाइ-सुवर्षणामासाधो ।  
अवसेसाणं बंभो सादि-अदुवो, जदुवणवियाधो ।

एगहापपयसीण परूवणा कीरे— मिष्मतेहिय-वीहिय-तीहिय-चठरियवादि  
विरयाणुपुष्पी-भादाव-वावर-सुदुम-अप-जच-साहारणसतिणं बंभेत्वा समं वोष्मिज्जेति,  
मिष्मइहिहि केव तदुभयवोष्मतेदुवतेमाधो । अवसेसाणं पयसीण उदयवोष्मतेओ वरि,  
बंभवोष्मतेओ केव । मिष्मत्तस्य बंभो सोदवो । विरयाठ-विरयग-विरयग-पाभोगाणुपुष्पी  
परोदवो, सोदपण बंभविरेहाधो । अवसेसाणं पयसीणं बंभो सोदय-परोदवो, उभयहा वि  
अनिरुद्धवमाधो । मिष्मत्त-विरयाठभाण बंभो भित्तो । अवसेसाणं सांतरो, एगससएव वि  
बुक्कमइसमाधो । पयसा सुगम । जवरि विरयाठ-विरयग-विरयाणुपुष्पीं वेठविय

सासात्ममें दो गतियोंसं संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि वहाँ नरकगति और देवगतिक  
जमाव है । तिर्यगायु, तिर्यगगति तिर्यगगतिप्रायेणानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यगगतिसे  
संयुक्त बन्ध हाता है क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । स्वप्नपृथिव्य अग्नि प्रकृतियोंके बन्धके  
चारों गतियोंके मिथ्यावृत्ति और सासात्मनसम्बन्धवृत्ति स्वामी हैं क्योंकि, इसमें कोई विरोध  
नहीं है । ब्रह्मात्मन और बन्धविनयस्थान सुगम है । लुब्धकणी प्रकृतियोंके मिथ्यावृत्ति  
गुणस्थानमें चारों प्रकारके बन्ध होना है । सासात्मन गुणस्थानमें दो प्रकारके बन्ध होता  
है क्योंकि वहाँ अन्नादि और पुत्र बन्धका जमाव है । दोष प्रकृतियोंके बन्ध सातों और  
अज्ञान होता है क्योंकि, वे अज्ञानबन्धी हैं ।

एकस्थान प्रकृतियोंकी प्रकृपणा करते हैं— मिथ्यात्म चक्रेन्द्रिय बीन्द्रिय  
बीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जाति नारकानुपूर्वी जाताप स्वावर, सुदुम अपर्णान्त और  
साधारणशरीरके बन्ध व उदय दोनों साधमें व्युत्थित होते हैं क्योंकि, मिथ्यावृत्ति  
गुणस्थानमें ही उन दोनोंके व्युत्थेय पाया जाता है । दोष प्रकृतियोंके उदयस्युत्थेय  
नहीं है केवल बन्धानुत्थेय ही है । मिथ्यात्मके बन्ध स्वेत्य होता है । नारकानु  
नरकगति और नरकगतिप्रायेणानुपूर्वीके परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, अग्ने उदयके  
साध इनके बन्धका विरोध है । दोष प्रकृतियोंके बन्ध स्वेत्य परोक्ष होता है क्योंकि  
दोनों प्रकारने भी उनके बन्धमें कोई विरोध नहीं है । मिथ्यात्म और नारकानुका बन्ध  
निरन्तर होता है । दोष प्रकृतियोंके बन्ध सान्तर होता है क्योंकि, एक समयसे भी  
उनके बन्धविधामके देखा जाता है । अत्यन्त सुगम है । किन्तु इतना है कि नारकानु,

वेतत्रियमिस्स बोत्तलियमिस्स-कम्मइयपन्चया णत्थि, अपग्गजत्तकाले एदासिं वंशामावादे । एइंदिय आदाव-भावराणं वेतत्रियकयमोगपन्चओ अवणेयओ । बीइंदिय-तीइंदिय-चउत्तिंदिय सुहुम-अपग्गज-साहायणाणं वेतत्रिय-वेतत्रियमिस्सपप्पया अवणेयवा, देव-भेरइएसु एदासिं पवामावादे । मिच्छत्तस्स चउगइसज्जतो । णसुसयवेद-हुंइसंउत्तणाण तिगइसंउत्तो, देवमदीए अमावादे । अंसपत्तमेवइसपइण-अपग्गजणाण दुगइसंउत्तो, णिरय-देवगइणममावादे । णिरयाउ णिरयदुगाण णिरयगइसज्जतो । अवसेसाणं पयडीणं तिक्खिणगइसज्जतो वंशो । णिरयाउ णिरयदुग-बीइंदिय-तीइंदिय-चउत्तिंदियआदि-सुहुम-अपग्गज-साहायणाण तिक्खिण-मणुसा सामी । मिच्छत्त-असुसयवेद-हुंइसंउत्त-असपत्तमेवइसपइणाणं चउगइमिच्छइही सामी । एइंदिय-आदाव भावरण तिगइमिच्छइही सामी । बभदाणं णत्थि, एकइहि नदयाणविरोहादे । बभवोच्छेदो सुगमे । मिच्छत्तस्स वंशो चउत्तिहे । अवसेसाणं सादि-अनुवो, अनुवणत्तिवादे ।

मणुसाउत्तस्स मिच्छइहि-सासपत्तम्मादिहीसु वंशो सेत्तय-परोदओ । असंजइसम्मा दिहीसु परोदओ । सम्मत्थ विरंतो, एगसमण्य वंशुवरमामावादे । पन्चया ओपसिद्धा ।

नरकगति और नारकानुपूर्विक वैश्वियिक, वैश्वियिकमिध और वैश्वियिकमिध और कामज प्रत्यय नहीं हैं क्योंकि अपपात्तकयसमें इनके बन्धका अभाव है । एकत्रिय, आताप और स्वावरक वैश्वियिककययोग प्रत्यय कम करना चाहिये । द्वित्रिय त्रित्रिय अनुत्तित्रिय सूक्ष्म अपपात्त और साधारण शरीरक वैश्वियिक और वैश्वियिकमिध प्रत्ययोंके कम करना चाहिये, क्योंकि, वेध और नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है ।

मिध्यात्वका बन्ध चारों गतियोंमें संयुक्त होता है । मनुसकवेद और दुण्डलसंस्थानका बन्ध तीन गतियोंसं संयुक्त होता है क्योंकि, इनक साथ वेधगतिके बन्धका अभाव है । असंमात्तसुपाटिकासहनम और अपपात्तकय बन्ध दो गतियोंसं संयुक्त होता है क्योंकि, इनक साथ नरक और वध गतिके बन्धका अभाव है । नारकानु और नरकद्विकका बन्ध नरकगतिसं संयुक्त होता है । दोष मृत्तियोंका बन्ध तिषगगनिसं संयुक्त होता है । नारकानु नरकद्विक द्वित्रिय त्रित्रिय अनुत्तित्रिय आति सूक्ष्म अपपात्त और साधारण मृत्तियोंक निर्यव और मनुष्य स्वामी हैं । मिध्यात्व मनुसकवेद दुण्डलस्थान और असंमात्तसुपाटिकासहनमका स्वामी चारों गतियोंके मिध्यात्वहि जीय हैं । एवेत्रिय आताप और स्वावर मृत्तियोंक तीन गतियोंके मिध्यात्वहि स्वामी हैं । बन्धात्पान नहीं है क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विषय है । बन्धधुच्छइ सुगम है । मिध्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है । दोष मृत्तियोंका सादि व असुख बन्ध होता है क्योंकि, व अभुवबन्धी हैं ।

मनुष्यायुका बन्ध मिध्यात्वहि और साप्ताह्नसम्भरहि गुणस्थानोंमें स्वादय परादय होता है । असयनसम्भरहिधियोंमें उत्तक परादय बन्ध होता है । सबत्र निरम्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयमें उत्तक बन्धधिसामका अभाव है । प्रत्यय आपस सिद्ध हैं ।

नवरि मिष्मद्विदि वेअविमिस्स-कम्मइयपचया, सासणे येअविमिस्स-भोरत्थिमिस्स-कम्म-  
इयपचया, अरुंइसम्मदिद्विदि भोरत्थियदुग-वेअविमिस्स-कम्मइय अरि-पुरिसवेइयपचया  
वववेइया; अमुंइतिस्सासु मनुसाउअ वचमाणणं देवासंअइसम्मदिद्विदिमनुवत्तमाओ । व  
च हेवेसु पम्मत्तणु अमुंइतिस्साओ अग्नि, मवणवासिय वाचपेतर-ओमिणिणु  
अपचयवेवेसु, पेव तासिमुवत्तमाओ । व च णा मेरइया वा पञ्चत्तणामकूमाइयमिक्ख  
मनुया अपचयत्तय संता भाउअ ववति, तिरिक्ख-मनुयअपचय सं मासूय अम्मत्त तअवाशु  
त्तमाओ । मनुयाणंसंजुओ । तिग्गमिष्मद्वि-सासणसम्मदिद्विदिओ विरयगइअसंअइसम्मदिद्विदिओ  
च समी । ववदाणं सुगम । ववोच्छेओ पत्थि, किंइहेस्सा वट्ठमायवअइसंअइयावमनु  
त्तमाओ । सादि अदुओ वओ, वहुववचिदाओ ।

देवाउअसु सअत्त वओ परोइओ, वओइणु उइयवचणमअत्तामावाइयाओ ।  
मिंतरो, अंतोसुइओ विया वंजुवरमावाओ । सप्येसि पि वेअविमिस्स-वेअविमिस्स-भोरत्थिय  
मिस्स-कम्मइयपचया सग-सगोपपचयइतो अववेयया । देवगइसजुओ । तिरिक्ख-मनुया

विशेष इतना है कि मिष्सादि गुणस्वात्म में धैर्यविक्रमिभ और कामज प्रत्ययोंको  
साक्षात् गुणस्वात्म धैर्यविक्रमिभ और कामज प्रत्ययोंका तथा असंयत  
सम्पत्ति गुणस्वात्म धैर्यविक्रमिभ, धैर्यविक्रमिभ कामज स्वयं और पुत्रवैद  
प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, अशुभ तीन संस्थाओंमें मनुष्यायुको बांधनबांध  
देव असंयतसम्पत्ति पाय नहीं जाते । और देव पर्याप्तअंश अशुभ तीन संस्थाओं  
नहीं हैं क्योंकि सबनबासी बान्धनभर और ज्योतिगी अपवाप्तक वेधोंमें ही वे पार जाती  
हैं । तथा देव मारकी सबथा पर्याप्त नामकमौल्य युक्त तिर्यक व मनुष्य अपर्याप्त होकर  
आयुको बांधत नहीं हैं क्योंकि, तिर्यक और मनुष्य अपर्याप्तोंको छोड़कर अन्यत्र सबका  
बन्ध पाया नहीं जाता । मनुष्यगतिते संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतिपोंके मिष्सादि  
और साक्षात्सम्पत्ति तथा नरकगतिके असंयत सम्पत्ति यी स्वामी हैं । बन्धाभान  
सुगम है । बन्धभुक्छे नहीं है क्योंकि, कृष्णसंस्थामें वर्तमान संयतसंयत पाय नहीं  
जाते । सादि व मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि वह मज्जगम्यी है ।

देवायुका सर्वत्र परोइव बन्ध होता है क्योंकि, बन्ध और उदपके हाथपर कमसे  
उसके उदय और बन्धका गतव्यतामाव अवस्थित है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि  
अमृतमूर्तके बिना उसके बन्धविग्रहामय नमाव है । सभी जीवोंके धैर्यविक्रम, धैर्यविक्रम  
मिभ और कामज प्रत्ययोंको अपने अपने भोगप्रत्ययोंमेंसे कम करना  
चाहिये । देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यक और मनुष्य ही स्वामी हैं । बन्धाभान

बेव सामी । बधदाण सुगमं । बंधवोन्नेओ गत्थि, ठवत्तिमि बंधुवत्तमाओ । सत्ति-असुवो, असुवपंविताओ ।

तित्थयरस्स बधो परोइओ, बंधे उअयविरोहाओ । पिरंतरो, एगसमणए बधुवरमामावाओ । मोषपञ्चणसु येअअिय-येअअियमिस्स-कम्मइयपण्णया अवणेअवा । देवगत्तिसंजुत्ते, किण्ण ऐस्सियणेअणसु तित्थयरबधामाभेण मणुसगहमजुत्तत्तामावाओ । सामी मणुसा बेव, अण्णत्थां समवाओ । बधदाणं गत्थि, एअमिह असंजइसम्मादिट्ठिक्काणे बधदाणविरोहाओ । बंधवोन्नेओ गत्थि, ठवत्तिं पि बधइसणाओ । सत्ति-असुवो, असुवपंविताओ ।

एव बेव भीठ्ठेसाए परूवेइयं । पवत्ति तिरिक्खगाइ-तिरिक्खगाइपाओमाएणुप्पी-पीचागेत्तापं सासणसम्माइट्ठिमिह सत्तरो बंधो, सत्तमपुइवीसासणसम्माइट्ठियो मोत्तुण्णत्तेइदासिं सासणेसु पिरतबंधाजुवत्तमाओ । ज च सत्तमपुइवीपीळ्ळत्तिसया सासणसम्माइट्ठियो अत्थि, तत्थ किण्णत्तेत्तं मोत्तुण्णत्तेस्सामावाओ । कथ मिक्खाइट्ठिअ भीठ्ठेस्साए पिरंतरो बंधो ? प,

सुगम है । बन्धमुच्छेद नहीं है, क्योंकि ऊपर बन्ध पाया जाता है । सादि य मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि, वह मनुष्यबन्धी है ।

तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध परोक्ष होता है क्योंकि, बन्धके होनेपर उसके उदयका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविग्रामका समाप्त है । भावप्रत्ययोंमें वैकल्पिक, वैद्विषिकमिथ और कर्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । देवगत्तिसंजुक्त बन्ध होता है क्योंकि, कृष्णछेद्याबाळे मापकियोंमें तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका समाप्त होनेसे मनुष्यगतिके उपयोगका समाप्त है । स्वामी मनुष्य ही है क्योंकि, अन्य गणियोंक कृष्णछेद्या युक्त जीवोंमें उसके बन्धकी सम्भावना नहीं है । बन्धाध्यात नहीं है क्योंकि एक असयससम्यग्वादि गुणस्थानमें अध्यातका विरोध है । बन्धमुच्छेद नहीं है क्योंकि, ऊपर भी बन्ध देखा जाता है । सादि य मनुष्य बन्ध होता है, क्योंकि, वह मनुष्यबन्धी है ।

इसी प्रकार ही नीज छेद्यामें प्ररूपणा करना चाहिये । विरोध इतना है कि तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रयोग्यानुपूर्वी और नीजगोत्रका सासादनसम्यग्वादि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, सत्यम पृथिवीके सासादनसम्यग्वादिषियोंको छेड़कर बन्धव इनका सासादनसम्यग्वादिषियोंमें निरन्तर बन्ध पाया नहीं जाता । और सत्यम पृथिवीमें नीजछेद्याबाळे सासादनसम्यग्वादि हैं नहीं क्योंकि यहाँ कृष्णछेद्याको छोड़कर अन्य छेद्याओंका समाप्त है ।

श्रुत्य—नीजछेद्यामें मिथ्यावादिषियोंके उदका निरन्तर बन्ध कैसा होता है ?



तेज-वाउकस्यस्य पीठलेस्सिपस्य तिरिक्खगइदुम-पीजायोवानं विरंतरवपुवत्तमादो । तदियपुव्वीए  
पीठलेस्साए वि संमवाधो तित्थयरसंभस्स मणुस्सा इव वेरइया वि सामिभो होति पि किम्भ वरु  
विम्भदे ? तत्थ हेट्ठिमइए पीठलेस्सासहिणं तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइहीणमुववाइमावाधो ।  
कुटो ? तरव तित्थे पुव्वीए उककस्साउरसपाधो । य य उककस्साउएसु तित्थयरसंतकम्मिय-  
मिच्छाइहीणमुववाधो वरिण, तदोवपसाभावाधो । तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइहीण वेरइएमुववम-  
मापार्य सम्माइहीण य क्खउलेस्सं मोत्तुप वण्णलेस्साभावाधो वा य पीठ-किम्भलेस्साए  
तित्थयरसंतकम्मिया वरिण ।

एवं क्खउलेस्साए वि वत्थं । पवति तित्थयरसं मणुसा इव वेरइया वि सामिभो ।  
मणुस-देवमइसंहुतो वंभो । षोषपच्चएसु एकस्से वि पच्चभो पावभेयम्भो, वेअम्भियदुमोरप्पि-  
मिस्स-कम्मइयपच्चयाणं भावाधो । भोएत्थियदुम-मणुसगइदुम-वज्जरिसइसंघट्ठपारं वसंभइ  
सम्मादिट्ठिमिह वेअम्भियमिस्स-कम्मइयपच्चया पावभेयम्भा । तिरिक्खगइपाओग्गानुपुव्वीए

समाधान—यहाँ क्योंकि तेज व वायु काधिक नीचलेइयावाळे जीवोंमें तिर्यगाति  
हिक और नीचभोजका निरन्तर वण्य पाया जाता है ।

शंभू—तृतीय पुष्पिणीमें नीचलेइयाकी मी सम्पादना होनेसे तीर्थंकर प्रकृतिके  
कण्ठके मनुष्योंके समान नारकी मी स्वामी होते हैं ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि, वहाँ नीचलेइया कुछ अघस्तव इन्द्रकर्म  
तीर्थंकर प्रकृतिके सत्त्ववाळे मिष्णादृष्टियोंकी उत्पत्तिका अभाव है । इसका कारण यह है  
कि वहाँ उस पुष्पिणीकी उत्कृष्ट वायु देखी जाती है । और उत्कृष्ट वायुवाळ जीवोंमें  
तीर्थंकरसंतकर्मिक मिष्णादृष्टियोंका उत्पत्ति है नहीं क्योंकि, ऐसा उपदेश नहीं है । अथवा  
नारकिणोंमें उत्पत्ति होनेवाळे तीर्थंकरसंतकर्मिक मिष्णादृष्टि जीवोंके सम्म्यग्दृष्टियोंके समान  
कपोत छेइयाको छोड़कर अन्य छेइयाभावा अभाव होनेसे नीच और कृष्ण छेइयामें  
तीर्थंकरकी सत्तापाळे जीव नहीं होते ।

इसी प्रकार कपोतछेइयामें मी कहना चाहिये । विशेषता इतनी है कि तीर्थंकर  
प्रकृतिके मनुष्योंके समान नारकी मी स्वामी हैं । मनुष्य और देव गतिसे संबुद्ध वण्य  
होता है । भोषप्रत्यर्पणमेंसे एक मी प्रत्यय कम नहीं करता चाहिये क्योंकि वैदिकविक्रिक,  
औदारिकमिध और कर्मण प्रत्यर्पणका यहाँ सम्भाव है । औदारिकविक्रिक, मनुष्यगतिविक्रिक  
और वज्रवर्मसंहननके धर्मवत्सम्यग्दृष्टि शुणस्यानमें वैदिकविक्रिमिध और कर्मण प्रत्यर्पणको  
कम नहीं करता चाहिये । निर्यग्गतिमायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें वण्य और पद्मान् उदय

धूओ पुब्बमुदओ पच्छ वोप्पिञ्जदि, सासणसम्मादिहि-असवदसम्मादिहीसु षंघोदयवोच्छेदुव  
 ठमादो । अण्णो वि जइ मेदो अत्थि सो वि षितिय यत्थो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय  
 सादावेदणीय-चउसजलण पुरिसवेद-हस्स रदि मय दुगुछा-देवगइ पवि-  
 दियजादिचेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-चेउव्विय-  
 सरीरअगोवग-वण्ण-गध रस-कास-देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुव-  
 लहुव उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-चादर पच्चत्त-पत्तेय-  
 सरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति णिमिशुच्चागोद-पव  
 तराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ २५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अण्णमत्तसजदा वधा । एदे वधा,  
 अवंधा णत्थि ॥ २६० ॥

देवगइ-वेउव्वियवुगाण पुब्बमुदओ पच्छ षंघो वोप्पिञ्जदि । अवसेसाणं पयहीज-

पुप्पिछद होता है क्योंकि, सासाज्जसम्मादिहि और असवदसम्मादिहीसु पुब्बमुदओमै क्रमसे  
 उक्तेके अर्थ और उक्तका पुप्पिछद पाया जाता है । अण्ण मी पत्थि मेइ है तो उसे मी  
 विचारकर कहना चाहिये ।

तेज और पद्म लेख्यावात्त जीवैमि पांच ज्ञानावरणीय, छद दग्गनावरणीय, सात्ता-  
 वेदनीय, चार सम्बलन, पुरुरवेद, हास्य, रति, मय, छुगुप्पा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति,  
 बैक्रियिक, तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरससंस्थान, बैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध,  
 रस, स्पृश, देवगतिप्रायोगमानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपपात, परपात, उष्णवास, प्रशस्तविहायोगति,  
 प्रस, पादर, पर्वाप्त, प्रसेकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय, पञ्चकीर्ति, निर्माण,  
 उष्णगोन और पांच अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २५९ ॥

यह सत्य सुगम है ।

मिप्पाइत्थिसे छेहर अण्णमत्तसंयत तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं  
 ॥ २६० ॥

देवगतिद्विक और बैक्रियिकद्विकका पूर्वमें उक्त और पश्चात् अर्थ पुप्पिछद होता

सुदमावो बंधो पुष्पं पञ्च वा बोधिष्णो सि परिक्रमा जति, एतस्य बंधोदयबोध्येयामात्रो ।  
 पंचपात्रावरणीय-छर्दसजावरणीय-पंचिदियमादि-तेजा-कम्मन्वसरी-वज्र-गज-रस-सम-  
 मगुरुमल्ल-सप्त-बाह-प-जत-विर-सुह-जिमि-पंचंतराष्ट्र्याणं सोदयो बंधो, सुबोदयत्तरो ।  
 निरा पयस-सादवेदणीय ब्रह्मसंज्ञ-गुरिसंवेद-हस्य-रवि-मय-बुधु-समचठरससंज्ञ-पसर-  
 विहाय-सुस्मरणं मध्यगुणद्वयेषु सोदय-परोक्षो बंधो, ब्रह्मबोदयत्तरो । देवग-देवय-  
 पाभोमात्रपुष्पी-वेदधियमरी-वेदधियमपीर-मगोपगणं बंधो परोक्षो, सोदय बंधविरोद्धरो ।  
 त्वपाद-परपाद उस्मास-पत्तयसरीरार्थं मिच्छाद्वि-सासपसम्माद्वि असंज्ञसम्मादिद्विं सोदय-  
 परोक्षो, अपञ्चसंज्ञे उदयामात्रो । ससेषु पचो सोदयो, तेसिप-ब्रह्माप-जमात्रो ।  
 सुभग-आदे-ज-बसकिरी-मिच्छाद्विपुष्टि-ज-जसंज्ञसम्माद्वि-विषयो सोदय-परोक्षो ।  
 त्वरि सोदयो बंध, पञ्चवस्तुदयामात्रो । उष्णोदयस्य मिच्छाद्विपुष्टि-ज-संज्ञसंज्ञ-  
 सि बंधो सोदय-परोक्षो । त्वरि सोदयो, पञ्चवस्तुदयामात्रो ।

पंचपात्रावरणीय-छर्दसजावरणीय-ब्रह्मसंज्ञ-मय-बुधु-देवय-वेदधियदुम-तेजा-

है । शेष मण्डितिके उदयसे बन्ध पूर्वमे वा पश्चात् स्फुटित होता है यह पटीला नहीं है, क्योंकि, यहाँ उनके बन्ध और उदयक स्फुटित-ममात्र है ।

पांच जालावरणीय चार दर्शनावरणीय पंचेन्द्रिय जाति विज्ञस ब कर्मव शरीर, बज्र गज रस स्पर्श मगुरुमल्ल बस बाह पर्याप्त स्थिर शुभ निर्माण और पांच जलरायका स्थाय्य बन्ध जाता है क्योंकि, ये बंधोक्षी हैं । निरा प्रथमा सता-  
 वेदनीय चार संज्ञकन गुरुवेद हास्य रति मय सुगुप्ता समचतुरस्रसंज्ञान  
 प्रद्यस्तविहायगति और सुस्वरस सप्त गुणस्वानोमं स्थाय्य-परोक्ष बन्ध होता है  
 क्योंकि, ये मल्लबोक्षी हैं । देवगति वज्रगतिमात्रामात्रपूर्व, वैदिकिकशरीर और वैदिकिक  
 शरीरानोपायका बन्ध परोक्ष होता है क्योंकि, अपने उदयक साथ इसके बन्धका विरोध  
 है । अपथात परथात ब्रह्मवास और मत्वेकशरीरका बन्ध मिच्छाद्वि, सासत्नसम्माद्वि  
 और असंज्ञसम्माद्विपोंके स्थाय्य परोक्ष होता है क्योंकि, अपर्याप्तकर्मों इसके  
 उदयका ममात्र है । शेष गुणस्वानोमं स्थाय्य बन्ध होता है क्योंकि उनके अपर्याप्त  
 कर्मका ममात्र है । सुभग जात्रेय और पञ्चाङ्गीर्तिका मिच्छाद्विसे छेकर असंज्ञ  
 सम्माद्वि गुणस्थान तक स्थाय्य परोक्ष बन्ध होता है । ऊपर स्थाय्य ही बन्ध होता है  
 क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष मण्डितिके उदयका ममात्र है । उष्णोदयका मिच्छाद्विसं छेकर  
 सत्तासंज्ञत तक स्थाय्य परोक्ष बन्ध होता है । ऊपर स्थाय्य ही बन्ध होता है क्योंकि,  
 यहाँ प्रतिपक्ष मण्डितिके उदयका ममात्र है ।

पांच जालावरणीय छह दर्शनावरणीय चार संज्ञकन मय सुगुप्ता देवगति

कम्माइयसरीर-बण्ण गघ-रस-फस्स-अगुस्सत्तुम्भ उवपाद-परषावुस्सास-याइर-पग्गत्त-पत्तयसरीर  
 विमिण-पघंतराह्याण वधो विरंतरो, एत्थ धुववपिचादो । सादवेदणोय-इस्स-रदि यिर-सुह  
 जसकिष्ठीण मि छाइट्ठिप्पट्टुडि जाव पमतसंजदा सि वंधो सातरो । ठवरि विरंतरो, पडिवक्ख  
 पयडीण वंधामावादो । पचिदियजादि तसणामाण मिच्छाट्ठिम्हि वंधो सांतर-विरंतरो, तिरिक्खेसु  
 सणक्कुमादादिदेवेसु च विरंतरवपुयलंमादो । ठवरि विरंतरो, पडिवक्खपयडीण वंधामावादो ।  
 पुरिसवेदस्स मिच्छाट्ठि-सासणसम्माविट्ठीसु सांतरो, एगसमएण वि वधुवरसुवलंमादो । ठवरि  
 विरंतरो, पडिवक्खपयडिदंभ्यामावादो ।

पञ्चमा सुगमा, ओक्कपञ्चपाईतो विसेसामावादो । जवरि देवगइ-वेउड्वियदुगाव  
 मिच्छाट्ठि-सासणसम्माविट्ठीसु ओरात्तिपमिस्स-वेउड्वियदुग-कम्माइयकायबोगपञ्चया अव  
 वेयव्या, दस-वेरूपसु अपञ्जतविरिक्ख-मणुसेसु च एदासि वंधामावादो । सम्मामिच्छाट्ठिम्हि  
 वेउड्वियकयबोगपञ्चओ, असददस्समादिट्ठिम्हि वेउड्वियदुगपञ्चओ अववेदम्हो । मिच्छ-  
 ट्ठि-सासणसम्माविट्ठीसु सणपयडीण वि ओरात्तिपमिस्सपञ्चओ अववेयव्यो, तिरिक्ख-मणुस

वैकल्पिकवैकल्य वेदस च कर्मण शरीर, वर्य गन्ध रस स्पर्श अगुद्वय उवपात  
 परपात उक्कवास वावर पर्याप्त प्रत्येकशरीर, मित्रांश और पांच अन्तरायका बन्ध  
 निरन्तर होता है क्योंकि वहाँ ये लक्ष्यवर्धी हैं । सातावेदनीय हास्य रति स्थिर शुभ  
 और पशुकीर्तिका मिथ्यावृत्तिसे छेकर प्रमत्तसंयतो तक खान्तर बन्ध होता है । ऊपर  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपल प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पंचन्द्रिय  
 जाति और बस नामकर्मका मिथ्यावृत्ति गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि  
 तिर्य्यों और सनत्सुमापदि देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध  
 होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपल प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पुदगवेदका मिथ्यावृत्ति  
 और सासात्मसम्पगद्वि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे भी  
 उच्चका बन्धविधान पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपल  
 प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं क्योंकि बोधप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । मेव इतना है कि  
 वैयगतिक और वैकल्पिकवैकल्यके मिथ्यावृत्ति और सासात्मसम्पगद्वि गुणस्थानोंमें आदा  
 रिकमिध वैकल्पिकवैकल्य और कर्मण काययोग प्रत्ययोंका कम करना चाहिये क्योंकि,  
 वेच नादिक्यों तथा अपर्णाति तिर्यंच व मनुष्योंमें भी इनके बन्धका अभाव है । सम्प  
 गित्थावृत्ति गुणस्थानमें वैकल्पिक काययोग प्रत्यय तथा असंयतसम्पगद्वि गुणस्थानमें  
 वैकल्पिक और वैकल्पिकमिध प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मिथ्यावृत्ति और सासात्म  
 सम्पगद्वि गुणस्थानोंमें सभी प्रकृतियोंके औदारिकमिध प्रत्यय कम करना चाहिये

मिच्छाद्वि-साधनसम्प्रादिष्टीणमप-जतकन्ते सुहृत्सम्प्राणममावादे ।

पथभाणावरणीय-सदसणावरणीय-सादवेदणीय-चतसंभ्रतण-पुरिसवेद-हस्त-रुद्धि-मव-  
हुपुष्प-पंचिदिय-तेजा-कम्पय-समचतुरसंभ्रतण-वण्णचतक-अगुरुवत्तुवचतक-पसर-  
विद्ययगदि-भिर-सुमग-सुस्तर-अदेन्ज-जसनिचि-मिमिष-पथतरादयाथ मिच्छाद्वि-साधनसम्प्रा-  
दिष्टीसु बंधो तियइसंभ्रतो, भिरयणइ-अमावादे । सम्प्रादिष्टी-असदसम्प्रादिष्टीसु  
हुयमभ्रतो, भिरय तिरिस्सगममावादे । उवरिमेसु देवगइसंभ्रतो, तत्सपण्णमं बंधा  
मावादे । देवम-वेउभियदुगालं देवगसंभ्रतो, अण्णगइहि बंधिरोहइ । उवत्तोदस्स  
मिच्छाद्वि-साधनसम्प्रादिष्टी-सम्प्रादिष्टी-असदसम्प्रादिष्टीसु देव-मनुममइसंभ्रतो ।  
उवरि देवगइसंभ्रतो बंधो ।

सध्वसि पयसीस तिग-मिच्छाद्वि-साधनसम्प्रादिष्टी-सम्प्रादिष्टी-अमवद-  
सम्प्रादिष्टीसो सामी, भिरयसु वेउत्तेस्मायिसुहृत्समावादे । दुगइसअदामअदा, मनुमगदमंअदा

क्योंकि, तिर्येच व मनुष्य मिच्छाद्वि एवं सासाधनसम्प्राद्विषोके अपर्पातकालमें शुभ  
लेखामोंका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह ब्रह्मावरणीय सातवेदनीय चार संभवस्य पुरुषवेद  
हास्य यनि मय सुगुप्ता पंचत्रिपु जाति तैजस व क्षमंज शरीर समचतुरसंभ्रतण  
ब्रह्मादिक चार, अगुरुमयु भादिक चार, अश्वत्थिहापोयति स्थिर, सुमय सुस्तर नादय  
पश्यामि निमात्र भीर पांच अन्तरायक मिच्छाद्वि व सासाधनसम्प्राद्वि शुभस्थानोंमें  
तीन गतिषोंमें संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि वहां नरकगतिका अभाव है । सम्प्रादिष्टी  
द्वि भीर असंयतसम्प्राद्वि शुभस्थानोंमें दो गतिषोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि वहां  
नरकगति भीर तिर्यगगतिका अभाव है । अपरिम शुभस्थानोंमें देवगति संयुक्त बन्ध होता  
है क्योंकि वहां अन्य गतिषोंके बन्धका अभाव है । देवगतिद्वि भीर वैत्रियिद्वि-  
वपगतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, अन्य गतिषोंके साथ इनके बन्धका विरोध है ।  
अधमात्र मिच्छाद्वि, सासाधनसम्प्राद्वि, सम्प्रादिष्टी-असदसम्प्राद्वि भीर असंयतसम्प्राद्वि  
शुभस्थानोंमें बंध व मनुष्य गतिसंयुक्त बन्ध होता है । ऊपर ब्रह्मगतिसे संयुक्त बन्ध  
होता है ।

सब ग्रहनिषेध तीन गतिषोंके मिच्छाद्वि, सासाधनसम्प्राद्वि, सम्प्रादिष्टी  
द्वि भीर असंयतसम्प्राद्वि स्थानी हैं क्योंकि, नारदियोंमें तज्जामरवादि शुभ  
स्थानोंका अभाव है । हा गतिषोंके संयतानीयत भीर मनुष्यगतिके संयत स्थानी हैं ।

सामी । पत्रि वेत्तवियचउक्कस्स तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइहि-सासणसम्माइहि-सम्मा  
मिच्छाइहि-असेनइसम्माइहि-संजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । वषट्ठणं सुगमं ।  
पंपवोच्छेदो पत्थि, 'अवषा पत्थि' सि वषणादा । धुवर्षधीणं मिच्छाइहि पंपो  
चउत्थिहो । अण्णत्थ तिथिहो, धुवाभावावो । अवसेसाण पयडीण सम्बरय सादि-अदुवो,  
अदुवर्षधिच्छो ।

## घेत्ताणी ओघ ॥ २६१ ॥

त जहा—अपंतानुर्षधिचउक्कस्स वषोद्या समं वोच्छिण्णा, सासणसम्मा  
दिहिमि दोण वो छेदुवल्मादो । तिरिक्खगइपाओमाप्पुप्पीए पुणो उदओ चैव पत्थि,  
तेरलेस्साहियारओ । सेसाणं पयडीण वषवोच्छेदो चैव, उदयवोच्छेदामावादो । धीणगिद्धितिय  
अपंतानुर्षधिचउत्थिवेदाण सोदय-परोदओ । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइदुग-चउसअणं-चउसं-  
वहण-उन्नोव-अणसत्थविहायगइ-दूमग-बुस्सर-अणादेअ-णीचागोदाणं दोसु वि गुणहापेसु वषो

विशयता इतनी है कि वैदिकिकचतुष्के तिर्यक् और मनुष्य गतिके सिप्पाइहि सासावन  
सम्पद्गुहि, सम्पतिमप्पाइहि, असंपत्तिसम्पद्गुहि और संपत्तासपत्त, तथा मनुष्यगतिके संपत्त  
स्वामी हैं । वग्याध्यान सुगम है । वग्यभ्युच्छेद नहीं है क्योंकि अवग्न्यक नहीं है  
येसा स्वयं निर्दिष्ट है । भुववग्यी प्रकृतियोंका सिप्पाइहि गुणस्थानमें चारों प्रकारका  
वग्य होता है । अग्न्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वग्य होता है क्योंकि, यहाँ भुव  
वग्यका समावेश है । दोष प्रकृतियोंका सर्वत्र साक्षि व अशुभ वग्य होता है, क्योंकि ये  
अशुभवग्यी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्रकृपणा ओषके समान है ॥ २६१ ॥

यह इस प्रकार है—अनन्तानुवर्षिचतुष्कका वग्य और उदय दोनों साधमें  
भ्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि सासावनसम्पद्गुहि गुणस्थानमें उन दोनोंका भ्युच्छेद पाया  
जाता है । परन्तु तिर्यगगतिप्रायोप्यानुपूर्विका यहाँ उदय ही नहीं है क्योंकि, तेजोसंख्याका  
अधिकार है । दोष प्रकृतियोंका कबल वग्यभ्युच्छेद ही है क्योंकि, उनके उदयभ्युच्छेदका  
अभाव है । स्थानगुहिय अनन्तानुवर्षिचतुष्क और क्षयिक स्वोदय परोदय वग्य होता  
है । तिर्यगायु तिर्यगतिरिक्ख, चार संस्थान चार संहृजन उद्योत अग्रस्तविहायोगति  
उर्मंग बुस्सर, अनादेय और नीलगोनका दोनों ही गुणस्थानोंमें स्थोदय परोदय

१ कीडु वेत्तिअणा इति पाठ ।

२ अ अग्रतो -महदुग्मउव चउगउव काय्ता वरुइयमटावउवका चउववका इति पाठ ।

सोदय-परोक्षो । भीष्मिदितिय-अपतागुषधिविषयक तिरिक्खाउआण वंघो पिरतरो । सेसार्ण सांतरो एयमएण वि धधुवरसुवत्तमादो । सण्णपयदीपे मिच्छाइदि-सासणमम्माइइसु चउअणेगुप्पेवचास पच्चया, ओरअडियमिस्सपच्चयामावादो । पवरि तिरिक्खाउअस्स ओरअडिय-दुग-वेअप्पियमिस्स-कम्मइय-पवुसयवेदपच्चया अवणेय्या, प-अत्तदेवे मोसुण अण्णरव वचामावादो । तिरिक्खगइदुगु जेअ चउसअण-चउसपइण अप्पमरवविहायगइ-दुमग-दुस्स-अण्णदेअ-वीचगोदाण आरान्निअदुग-पवुमयवेदपच्चया अवणेय्या, तिरिक्ख-मअुस्से मोसुण देवापमेदमि प-अत्ताप-अत्तापत्तासु धधुवत्तमादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुजोवाष वंघो तिरिक्खगइसंहुत्ता । चउसअण-चउमपइण अप्पसत्तविहायमइ-दुमग-दुस्स अण्णदेअ-वीचगोदाण दुगइसहुत्तो, पिरय-देवगईणममावात्ता । भीष्मिदितिय अपतागुषधिविषयक तिरिक्खेदाण वंघा तिगइसंहुत्ते, पिरयगईण वमावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगु जेअ-चउसअण-चउसपइण-अप्पसत्तविहायमइ-दुमग-दुस्स-अण्णदेअ-वीचगोदाण वचस्स देवा चेष सामी, सुइतिहेस्सियतिरिक्ख-मअुस्से एदमि

वच्य होता है । स्थानानुविध्य अमन्तानुविध्यतुल्य आर तिपगायुक्त वच्य निरन्तर होता है । दार प्रकृतियाका सास्तर वच्य होता है क्योंकि एक समयसे भी उसका वच्यनिश्चय पाया जाता है । रुच प्रकृतियोंके मिच्छादष्टि और सात्त्विकनम्यगति गुणस्थानात्मक समस्त स्थिति और उल्लास प्रत्यय है क्योंकि आचारिकमिथ प्रत्ययका यहाँ अभाव है । विनाय इतना है कि तिर्यगायुक्त आचारिकद्विक वैशिष्ट्यमिश्र व सामंजस्य वच्यमात्र आर मनुष्यकक्ष प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि पर्याप्त देवोंका छोड़कर अन्यत्र उमक वच्यत्र अभाव है । तिर्यगातिद्विक, उपात आर संस्थान आर संहनन अमशान्तिविदायांगति कुमग नुस्सर अनाद्य और नीचगात्रक आचारिकद्विक एव मनुष्यकक्ष प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि, तिर्यक और मनुष्योंका छोड़कर क्योंकि पशुना आर अपवात्त अस्थानोंमें इनका वच्य पाया जाता है ।

तिर्यगायु तिपगातिद्विक और उपातका वच्य तिर्यगाति संयुक्त होता है । आर संस्थान आर संहनन अमशान्तिविदायांगति कुमग नुस्सर अनाद्य और नीचगात्रक वच्य वा गतिपात संयुक्त होता है क्योंकि वरक और वच्य गतिक भाव इनका वच्यका अभाव है । स्थानानुविध्य अमन्तानुविध्यतुल्य आर स्थानवच्य वच्य तीन गतिपात संयुक्त होता है क्योंकि यहाँ वरकगतिक वच्यका अभाव है । तिपगायु तिपगातिद्विक, उपात आर संस्थान आर संहनन अमशान्तिविदायांगति कुमग नुस्सर अनाद्य और नीच गात्रक वच्यक वच्य ही रहानी है क्योंकि शुभ तीन अस्थानात्त नियम य मनुष्योंमें इनका

वधामात्रादौ । यीजगिद्वितिय अणताणुर्ध्विचउच्चित्तिवेदाण तिगइमिच्छाइद्वि-सासणसम्मादिद्विणो  
सामी, पिरयगइए सुहतिटेस्सामाणो । पयइण पययोच्छिण्णहाण च सुगमं । धुवपपीण  
मिच्छाइद्विद्वि चउच्चिद्वे वधो । सासणे दुविद्वे, अणाइ धुवामावादो । सेसाण पयहीण वधो  
सय्यस्य सादि अरुवो ।

## असादावेदणीयमोघ ॥ २६२ ॥

देवामासियमुत्तज्जेण सुइदत्थपक्खणा कीरदे । तं जहा—अजसकिसीए पुम्भमुदमां  
पच्छ वधो वोरिच्छइदि, पमत्तासज्जदसम्मादिद्वीसु वधोदययोच्छेदवत्तमाणे । असदावेदणीय  
अरदि-सोग अधिरसुहाण पुथ वधो पच्छ उदओ वोरिच्छइदि, तहोवत्तमादो । अधिर  
असुहाण वधो सोइओ, धुवोदयत्तादो । अजसकिसीए मिच्छाइद्विणहुद्वि जाव अयंजदसम्माइद्वि  
वि सोदय परोदओ । उवरि सोइओ चेव । असदावेदणीय अरदि-सोगाण सोदय-परोदओ,  
सम्भरव अमुओदयत्तादो । मानो वधो, सप्पासिमेशमिमेषमण व वि सप्पगुणद्विणेषु  
पंचुवरसुवत्तमादो । पच्छया सुगमा, ओपपच्छण्हितो विसेसामावादो । गवरि मिच्छाइद्वि

वधका अमाय है । सप्पासिद्विद्वय अनन्ताजुग्घिचउच्चि और अविद्वे नान गतिपोंके  
मिच्छाइदि और मातावनगम्यपण्ड राजाणि है क्योंकि सरकगतिमें धुम रान लक्ष्यामोक्ष  
अमाय है । पम्मापण और पम्पपुच्छिउच्च-गाम सुगम है । धुववधो अरतिपोंके  
मिच्छाइदि गुणस्यामम था । प्रका-का वध होता है । सामावन गुणस्याममें वा प्रका-का  
वध होता है क्योंकि वरि मनाणि और भुव वधका अमाय है । दाय अरतिपोंका वध  
मधव सादि व अयुध होता है ।

असादावेदनीयकी प्ररुपणा ओपके सुमान है ॥ २६२ ॥

इन दशमशक मूलमें आद्यत न अरि प्ररुपणा करने हैं । यह इन प्रकार है—  
अवगाहीनिका पूर्वमें उदय भार पछान् वध धुवच्छिण होना है क्योंकि, प्रमत्त और  
भरतपतमम्यइदि गुणस्यानामें अमम उसके वध व उदयक धुवच्छेद पाया जाता है ।  
अमातापदनीय अरति शाक मास्यर और अगुमका पूयम पण्ड व पछान् उदय  
धुवच्छिण होता है क्योंकि, धमा पया जाता है । अम्यर और अगुमका वध स्वादय  
होता है क्योंकि व धुवोदयी हैं । अवगाहीनिका मिच्छाइद्वि मकर अमपतमम्यइदि  
तक म्योदय परादय वध होता है । ऊपर स्वादय ही वध होता है । अमातापदनीय  
अरति भार गावका स्वादय परादय पण्ड न है । क्योंकि, वे सर्वत्र अयजोदधी हैं ।  
गाम्तर वध होता है क्योंकि इन वधका एक समयत मी मय गुणस्यामोंमें वधपिधाम  
पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि आद्यमयपोंय वहां काय अइ मही है । विगणता



सासपसम्मादिद्वीसु बोसत्तियमित्सपण्णयो भवणेयस्यो । तिगइसंजुत्थे षपो मिच्छइहि-  
सासपसम्मादिद्वीसु । सम्माभिच्छइहि असंजइसम्मादिद्वीसु हुगइसंजुत्थे । तपरे देवगइसंजुत्थे ।  
तिगइमिच्छइहि-सासपसम्मादिद्वीसु-सम्माभिच्छइहि-असंजइसम्मादिद्वीसो, हुगइसंजइसंजुत्थे,  
मणुगइसंजइसंजुत्थे च समी । मिच्छइहिपुत्थे जाव पमत्तसंजइसंजुत्थे च अद्याप । षपो अद्याप  
सुपमं । सादि-अनुयो षपो, अनुवर्षचित्तायो ।

मिच्छत्त-णवुसयवेद-एइदियजादि-हुंडसठाण-असपत्तसेवट्टसथ  
इय आदाव-यावरणामाण को वधो को अवंधो ? ॥ २६३ ॥

सुपमं ।

मिच्छइद्वी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ २६४ ॥

मिच्छत्तस वंधाया सम बोधिज्जा । णवुसयवेद-हुंडसठाण-असपत्तसेवट्टसथ-  
एइदिय-आदाव-यावरणामाण षपोअप्येदो वेव, उदयुधापादो । मिच्छत्तस सोदयण षपो,  
अप्येदो वंधाअवंधो । अउसयवेद-हुंडसठाण-असपत्तसेवट्टसथ-एइदिय-आदाव-यावरण

इतनी है कि मिष्पाइदि और सासपससम्माइदि गुणस्वात्मो मे बंधात्तिकमिध प्रत्यय कम  
करवा बाहिये । मिष्पाइदि और सासपससम्माइदि गुणस्वात्मो मे उतका बन्ध तीन गतिपोंसे  
संयुक्त होता है । सम्माभिच्छइहि और असंजइसम्माइदि गुणस्वात्मो मे दो गतिपोंसे संयुक्त  
बन्ध होता है । ऊपर उतका वेवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतिपोंके मिष्पाइदि, सास-  
पससम्माइदि, सम्माभिच्छइदि और असंजइसम्माइदि, दो गतिपोंके सपत्तसेवट्ट तथा  
मनुप्यपतिके संयुक्त स्वाधी है । मिष्पाइदिसे केकर प्रमत्तसंयुक्त तक बन्धाप्येदो है ।  
बन्धनुप्यपतिके संयुक्त स्वाधी है । सादि य अमुच बन्ध होता है क्योंकि, ये अमुचबन्धी है ।

मिष्पात्व, ननुसकवेद एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंजपत्तसुपादिकसंस्थान,  
आदाव और स्थावर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ २६३ ॥

यह सब सुपम है ।

मिष्पाइदि बन्धक है । ये बन्धक है, शेष अनन्धक है ॥ २६४ ॥

मिष्पात्तका बन्ध और उदय जोनों साथ युष्मिध बाते हैं । ननुसकवेद हुण्ड  
संस्थान असंजपत्तसुपादिकसंस्थान एकेन्द्रिय जाताय और स्थावर नामकर्मका केकर  
बन्धनुप्यपतिके ही है, क्योंकि, यहाँ इनके उदयका अभाव है । मिष्पात्तका लोचसे बन्ध  
होता है क्योंकि उदयके अभावमें उदयका बन्ध पाया नहीं जाता । ननुसकवेद हुण्ड-  
संस्थान, असंजपत्तसुपादिकसंस्थान एकेन्द्रिय जाताय और स्थावरका बन्ध पदोदय

पयो परोद्भो, पदासि द्येसु उदयामात्रो । मिच्छतर्षधो गिरतो, ध्रुवविचारो ।  
अभ्यपयडीण मांतरो, गगनमण्य नि बहुवरसुवनमात्रो । पञ्चया सुगमा, शेषपञ्चपदितो  
विस्रामावात्रो । पत्रि ओरात्रियमित्पञ्चयो अवषेयम्भो, तत्त्व मुहुरेम्मात्र अमावात्रो ।  
पञ्चसुपदेद-हुहसत्राण अमपत्तमेवसपदण-गृहिय-आदाय भावराण . ओरात्रियदुग-कम्मइय  
पञ्चसुपदेद-हुहसत्राण अमपत्तमेवद . मिच्छतर्षधो तिगहर्षहुतो । पञ्चसुपदेद-हुहसत्राण अमपत्तमेवद  
सपदणण दुगहर्षहुतो, देवगङ्गा अमावात्रो । पञ्चिय-आदाय भावरार्थं तिरिक्खगहसहुतो ।  
मिच्छतर्षधस्स तिगहमिच्छाहृदिणो सामी । अवसेमाण पयडीण देवा चेव सामी । पञ्चदार्थं  
वंधवोभिय्यद्वानं च सुगम । मिच्छतस्स वंधो वज्रविहो, ध्रुवविचारो । सेमार्थं सादि-अदुवो  
अदुवविचारो ।

### अपञ्चकस्त्राणावरणीयमोघ ॥ २६५ ॥

एदं देसामामियमुत्त । तथेदेण सुहदरपकूषणा करिद — अपञ्चकस्त्राणावरणीयस्स  
पयोदया समं बोधियमिदं असंजदसम्मादिदिग्धिं तदुमपवेच्छेदुषत्तमात्रो । अवसेमाण  
वंधवोभ्येदो . चेव । अपञ्चकस्त्राणवज्रकस्स वंधो मोदय-परोद्भो । मणुमयइदुगोरात्रियदुग

हाता है क्योंकि, इनका बंधोके उक्त्यामाय है । मिथ्याप्यच्छ बन्ध निरन्तर होता है  
क्योंकि, यह भुवबन्धी है । अन्य ग्रहनिर्घोका मान्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे  
ही उनका बन्धविधाम पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि शेषप्रत्ययोंमें कोई भेद  
नहीं है । बिना इतना है कि यहां भीदार्तिकमिध प्रत्ययका कम करना चाहिय क्योंकि उसमें  
शुभ भेदपाका अभाव है । मनुमकवेद हुहसस्यान अमंमानसुपादिछर्मदनन एकेन्द्रिय  
आताप भीर स्वावरक भीतारिकटिक, कामण भीर मनुमकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिय ।  
मिथ्याप्यच्छ बन्ध तीन गतिघोस मनुमक हाता है । मनुमकवेद हुहसस्यान भीर अमंमान  
सुपादिछर्मदननका दो गतिघोस मनुमक बन्ध हाता है क्योंकि, हमक माय इधगनिक  
बन्धका अभाव है । एकत्रिच आताप भीर स्वावरक नियमानिम मनुमक बन्ध हाता है ।  
मिथ्याप्यच्छ बन्ध तीन गतिघोस मिथ्याप्यच्छ स्वामी है । दोय ग्रहनिर्घोका दूध ही स्वामी  
है । पञ्चाप्यान भीर बन्धमुच्छिद्यमान सुगम है । मिथ्याप्यच्छ बन्ध चारों प्रकारका  
हाता है, क्योंकि, यह भुवबन्धी है । शाय ग्रहनिर्घोका नादि व अमय बन्ध हाता है  
क्योंकि, व भुवबन्धी है ।

अत्रान्धानावरणीयकी प्ररूपणा आपक समान है ॥ २६५ ॥

यह देनामनाक मूत्र इ इमंतिव इमं मूषिण अचरि प्ररूपणा करत है—  
अप्रत्याप्यामावरणीयका बन्ध भीर उक्त्य दोनों मायमें व्युच्छिद्य होने है क्योंकि  
अमंयनमगादि गुणमानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । दोय ग्रहनिर्घोका  
बन्धमुच्छेद ही है । अप्रत्याप्यामावरणीयका बन्ध स्वादय परोद्भ होता है ।

बन्धरिसहस्ररारायणसंघटनार्थं षण्चो परोक्ष्यो, सुहृत्सिखतिरिक्ख-मणुस्सेसु एहासि षण्मा-  
मात्तादो । अपञ्चकत्तापचठकक-ओरात्तिपसरीरणं षण्चो विरंतरा । षण्चो मणुसगइदुगस्स मिन्ध-  
इडि-सासणसम्मादिट्ठिसु सांतरो । ठवरि विरंतरो । एवं बन्धरिसहस्रसंघटनस्स वि वत्तणं ।  
ओरात्तिपसरीरसंगोवमस्स षण्चो मिन्धइडिडि सांतरो । ठवरि विरंतरो, एहदियवणामात्तादो ।  
पञ्चया सुगमा । पवति अपञ्चकत्तापचठककस्स होसु गुणहोपेसु ओरात्तिपमिस्सपञ्चओ  
ववपेयणो । मणुसगइदुगोरात्तिपदुग-व-अरिसहस्रसंघटनार्थं ओरात्तिपदुग-पठुंमयपेइपञ्चया  
सिस्स गुणहोपेसु ववपेयणा । सम्मामिन्धइडिडि हो जेव अवपेयणा, ओरात्तिपमिस्सपञ्चमस्स  
पुण्णमेवात्तादो । अपञ्चकत्तापचठककस्स मिन्धइडि-सासणसम्मादिट्ठिसु तिगइसंठुत्थो षण्चो ।  
ठवति दुगइसंठुत्थो, विरय-तिरिक्खगइवममात्तादो । मणुसमइदुगस्स मणुसगइसंठुत्थो ।  
ओरात्तिपदुग-बन्धरिसहस्रसंघटनार्थं मिन्धइडि-सासणसम्मादिट्ठिओ दुगइसंठुत्थुवति मणुसग-  
संठुत्थमण्णमइवणामात्तादो । अपञ्चकत्तापचठककस्स तिगइमिन्धइडि-सासणसम्मादिट्ठि-  
सम्मामिन्धइडि मसजइसम्मादिट्ठिओ सामी । ववसेत्ताप पवडीव देवा सामी । ववत्ताप

मनुष्यगतिश्रिक औदारिकश्रिक और ब्रह्मर्षमर्षजनारायणसहस्रनका बन्ध परोक्ष्य होता है  
क्योंकि शुभ क्षेत्रावासे तिरव्व व मनुष्योंमें इनके बन्धन समाप्त है । अपत्याक्यामावरणचतुष्क  
और औदारिकराटीरका बन्ध निरन्तर होता है । मनुष्यगतिश्रिकका बन्ध मिथ्यादधि  
और सासायनसम्बन्धि गुणस्थानोंमें सान्तर होता है । ऊपर ब्रह्मका निरन्तर बन्ध होता  
है । इसी प्रकार ब्रह्मर्षमर्षजनके भी कहना चाहिये । औदारिकराटीरगांगांगका बन्ध  
मिथ्यादधि गुणस्थानमें सान्तर होता है । ऊपर निरन्तर होता है क्योंकि वहाँ एकेन्द्रियके  
बन्धका समाप्त है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि अपत्याक्यामावरणचतुष्कके  
हो गुणस्थानोंमें औदारिकमिथ प्रत्ययको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिश्रिक औदारिक  
श्रिक और ब्रह्मर्षमर्षजनके औदारिकश्रिक और मनुष्यके प्रत्ययोंको तीन गुणस्थानोंमें  
कम करना चाहिये । सम्मामिन्ध-धि गुणस्थानमें दो प्रत्ययोंको ही कम करना चाहिये  
क्योंकि, औदारिकमिथ प्रत्ययका पहले ही समाप्त हो चुका है । अपत्याक्यामावरणचतुष्कका  
मिथ्यादधि और सासायनसम्बन्धि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है ।  
ऊपर दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ ब्रह्मगति और तिर्यगतिका  
समाप्त है । मनुष्यगतिश्रिकका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । औदारिकश्रिक और  
ब्रह्मर्षमर्षजनका मिथ्यादधि व सासायनसम्बन्धि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त  
तथा ऊपर मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ अन्य गतियोंके बन्धका  
समाप्त है । अपत्याक्यामावरणचतुष्कके तीन गतियोंके मिथ्यादधि, सासायनसम्बन्धि  
सम्बन्धिमिथ्यादधि और अर्धसंघटनसम्बन्धि स्वामी हैं । शेष गतियोंके वच स्वामी हैं ।

बंधवाच्छिन्नहाण च सुगम । ध्रुवबंधीणं मिच्छाद्विद्धि बंधो बज्रविहो । अण्यस्य तिविहो,  
ध्रुवामावाहो । सेसायं बंधो सादि-अनुवो, अनुवणविहाहो ।

**पञ्चक्खाणचउक्कमोर्धं ॥ २६६ ॥**

बधोदया समं ओच्छिण्णा, संजवांसंजदमि तेसिं दोणमक्कमेण वोच्छेनुवलमाहो ।  
सोदय-रोदहो, दोहि नि पयोहि बंधाविरोहाहो । गिरंतेरो, एगसमएण ध्रुवरमामावाहो ।  
पञ्चया सुगमा, अपञ्चक्खाणपञ्चयतुल्लाहो । मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिहीसु बंधो तिगइ  
सजुतो । सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिहीसु दुगइसजुतो । उवरि देवगइसजुतो । तिगइ  
मिच्छाद्वि-सासणसम्मानिद्धि-सम्मामिच्छाजिद्धि-असजदसम्मादिहिणो सामी । दुगइसजदासंजदा  
सामी । बंधदाण बंधवोच्छिन्नहाण च सुगम । मिच्छाद्विद्धि बंधो बज्रविहो । उवरि  
तिविहो, ध्रुवामावाहो ।

**मणुस्ताउमस्स ओघमगो ॥ २६७ ॥**

बन्धाध्वान भीर बन्धन्युच्छिन्नहाण सुगम हैं । ध्रुवबंधी प्रकृतियोंका मिथ्याद्वि  
गुणस्थानमें आये प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता  
ह क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शय प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अनुव होता है  
क्योंकि वे अनुवबंधी हैं ।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्करी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६६ ॥

प्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध भीर उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न हात हैं  
क्योंकि, शयतासयत गुणस्थानमें दोनोंका एक साथ व्युच्छेद् पाया जाता है । सोदय  
परादय बन्ध होता है क्योंकि दोनों भी प्रकारोंमें उसके बन्धमें कोई बिच्छ नहीं है ।  
गिरंतेर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे उसके बन्धविध्वंसका अभाव है । प्रत्यय सुगम  
हैं क्योंकि, ये अप्रत्याख्यानावरणके प्रत्ययोंक समान हैं । मिथ्याद्वि भीर सासादन  
सम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । सम्यग्मिथ्याद्वि भीर  
असंपतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर वेदगतसे  
संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके मिथ्याद्वि, सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिथ्याद्वि  
भीर असंपतसम्यग्द्वि म्यामी हैं । दो गतियोंक संयतासयत खामी हैं । बन्धाध्वान  
भीर बन्धन्युच्छिन्नहाण सुगम हैं । मिथ्याद्वि गुणस्थानमें आये प्रकारका बन्ध होता  
है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध हांगा है क्योंकि वहां ध्रुव बन्धका अभाव है ।

मनुष्यायुकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६७ ॥

वज्ररिसहस्ररत्नायणसंघट्टणं वंधो परोदयो, सुहृदेरिषयतिरिक्त-मनुस्सेसु एवार्थि वपा-  
मावादे । अपञ्चकटाणचठकक-भोराठियसरीरणं पधो गिरंतरो । वंधो मनुसगइदुगस्स मिच्छ-  
इदि-सप्तसप्तममारिहीसु सारतो । उवरि भिरंतरो । एव वज्ररिसहस्रंघट्टणस्स वि पत्तम् ।  
भोराठियसरीरभमेवंमस्स वंधो मिच्छइदिमिह सारतो । उवरि भिरंतरो, एइदिमबंधामावादे ।  
पञ्चपा सुगमा । ववरि अपञ्चकटाणचठककस्स दोसु गुणद्वयेसु भोराठियमिस्सपञ्चभो  
ववपेयणो । मनुसगइदुगोराठियदुम-वज्ररिसहस्रंघट्टणं भोराठियदुग-पुत्तुमयवेदपञ्चपा  
तिसु गुणद्वयेसु ववपेयणा । सम्मामिच्छइदिमिह दो वंध ववपेयणा, भोराठियमिस्सपञ्चयस्स  
पुण्यमेवावावादे । अपञ्चकटाणचठककस्स मिच्छइदि-सप्तसप्तममारिहीसु निगइसत्तुो वंधो ।  
उवरि दुगइसत्तुो, विरय-तिरिक्खणवंधममावादे । मनुसगइदुगस्स मनुसगइसत्तुो ।  
भोराठियदुम-वज्ररिसहस्रंघट्टणं मिच्छइदि-सप्तसप्तममारिहीसु दुपइसत्तुमुवरि मनुसग-  
सत्तुमपञ्चपइंधामावादे । अपञ्चकटाणचठककस्स तिगइमिच्छइदि-सप्तसप्तममारिहि  
सम्मामिच्छइदि वसवदसप्तमारिहिणो सामी । अवसेसाण पयवीण देवा सामी । वंधाणं

मनुष्यगतिशिक्षा औदारिकशिक्षा और ब्रह्मर्षमसंहननका बन्ध परोक्ष होता है क्योंकि, शुभ क्लेशावाले तिर्यक व मनुष्योंमें इनके बन्धका समाव है । अमत्याप्यनावरणचतुष्क और औदारिकशरीरका बन्ध निरन्तर होता है । मनुष्यगतिशिक्षाका बन्ध मिथ्यादृष्टि और साक्षात्सम्पत्ति गुणस्थानोंमें सार्वत्र होता है । ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है । इसी प्रकार ब्रह्मर्षमसंहननके भी क्लेशावाहिये । औदारिकशरीरसंयोगमका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सार्वत्र होता है । ऊपर निरन्तर होता है क्योंकि वहाँ एकत्रियके बन्धका समाव है । अत्यंत सुगम है । विशेष इतना है कि अमत्याप्यनावरणचतुष्कके दो गुणस्थानोंमें औदारिकमिथ्य अत्यंतको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिशिक्षा, औदारिक शिक्षा और ब्रह्मर्षमसंहननका औदारिकशिक्षा और मनुसगइदुम अत्यंतको तीन गुणस्थानोंमें कम करना चाहिये । सम्मामिच्छादृष्टि गुणस्थानमें दो अत्यंतको ही कम करना चाहिये क्योंकि, औदारिकमिथ्य अत्यंतका पहले ही समाव हो चुका है । अमत्याप्यनावरणचतुष्कका मिथ्यादृष्टि और साक्षात्सम्पत्ति गुणस्थानोंमें तीन गतिधर्मोंसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर दो गतिधर्मोंसे संयुक्त बन्ध होता है । क्योंकि वहाँ मरकयति और तिर्यगादिका समाव है । मनुष्यगतिशिक्षाका मनुष्यगतिधर्मसंयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशिक्षा और ब्रह्मर्षमसंहननका मिथ्यादृष्टि व साक्षात्सम्पत्ति गुणस्थानोंमें दो गतिधर्मोंसे संयुक्त तथा ऊपर मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । क्योंकि वहाँ बन्ध गतिधर्मोंके बन्धका समाव है । अमत्याप्यनावरणचतुष्कके तीन गतिधर्मोंके मिथ्यादृष्टि साक्षात्सम्पत्ति, सम्मामिच्छादृष्टि और वसवदसम्पत्ति स्वामी हैं । दोष मरुतिधर्मोंके देव स्वामी है ।

बभसोच्छिष्णद्वाण च सुगम । ध्रुवर्षधीर्ष मिच्छाद्द्विष्टिर्षि बंधो चउन्विहो । अण्णत्प तिविहो,  
ध्रुवामावात्रो । सेसाणं बंधो सारि-अनुवो, अनुवबभित्तात्रो ।

पञ्चक्त्वाणचउत्तकमोघ ॥ २६६ ॥

बधोदया सम बोच्छिष्णा, संजदासंजदमि तेसि दोण्णमक्कमेण वोच्छेदुषत्मादो ।  
सोदय-परोत्तमो, दोहि वि पयोरेहि बधाविरोहत्तो । भित्तरो, एगसमएण ध्रुवरामामावात्रो ।  
पञ्चया सुगमा, अपञ्चक्त्वाणपञ्चयतुत्तत्तादा । मिच्छाद्द्विष्टि-सासणसुम्मादिहीसु बंधो तिगइ  
सजुत्तो । सुम्मामिच्छाद्द्विष्टि-असजदसुम्मादिहीसु दुगइसजुत्तो । उवरि देवगंसजुत्तो । तिगइ  
मिच्छाद्द्विष्टि-सासणसुम्मादिहि-सुम्मामिच्छाद्द्विष्टि-असजदसुम्मादिहिणो सामी । दुगइसजदासंजदा  
सामी । बधद्वाण बभसोच्छिष्णद्वाण च सुगम । मिच्छाद्द्विष्टि बंधो चउन्विहो । उवरि  
तिविहो, ध्रुवामावात्रो ।

मणुस्साउजस्स ओघमगो ॥ २६७ ॥

बन्धाख्यात भीर बन्धयुच्छिष्टप्रस्थान सुगम है । ध्रुवबन्धी प्रकृतिपोंका मिथ्यादृष्टि  
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता  
है क्योंकि, वहाँ ध्रुव बन्धका अभाव है । ज्ञान प्रकृतिपोंका बन्ध सारि व अनुव होता है  
क्योंकि, वे अनुवबन्धी हैं ।

प्रत्याप्यानावरणचतुष्करी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २६६ ॥

प्रत्याप्यानावरणचतुष्करी बन्ध भीर उदय दामो सायमे स्पृच्छिष्ठ हाठ हैं  
क्योंकि, सयमासयत गुणस्थानमें दोनोंका एक साथ स्पृच्छेत् पाया जाता है । स्वादय  
परोदय बन्ध होता है क्योंकि, दोनों भी प्रकारोंमें उसके बन्धमें कोई बिच्छव नहीं है ।  
भित्तर बन्ध हाथा है क्योंकि, एक समयमें उसके बन्धविग्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम  
है क्योंकि, य समत्याप्यानावरणके प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि भीर सासादन  
सम्पगदृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । सम्पगिमिथ्यादृष्टि भीर  
असयतसम्पगदृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगतिस  
संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, व्यामादनसम्पगदृष्टि, सम्पगिमिथ्यादृष्टि  
भीर असयतसम्पगदृष्टि स्वामी हैं । दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं । बन्धाख्यात  
भीर बन्धयुच्छिष्टप्रस्थान सुगम है । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता  
है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध हाथा है क्योंकि, वहाँ ध्रुव बन्धका अभाव है ।

मनुप्यायुकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २६७ ॥

व-अरिसहस्ररणात्मकसप्तदशार्णं षंषो परोदयो, सुहृत्त्रेस्त्रिपतिरिच्छ-मनुस्त्रेसु एवासि षंषा-  
मावाहो । अपञ्चकस्त्राणचठकक-भोरत्त्रियसरीरण षंषो भिरंतरो । षंषो मनुमगइदुमस्स मिष्म-  
इद्धि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो । उवरि भिरंतरो । एवं वन्त्ररिसहस्रपडमस्स वि वट्ठं ।  
भोरत्त्रियसरीरभंगोर्गगस्स षंषो मिष्मइद्धि सांतरो । उवरि भिरंतरो, एवंदियवधामावाहो ।  
पञ्चया सुगमा । अरि अपञ्चकस्त्राणचठककस्स दोसु गुणहाणेषु भोरत्त्रियमिस्सपञ्चओ  
अवनेययो । मनुसमइदुगोरत्त्रियदुग-वन्त्ररिसहस्रपडार्णं भोरत्त्रियदुग-अमुंसयवेइपञ्चया  
तिसु गुणहाणेषु अवनेयया । सम्मादिन्मइद्धि दो भेव अवनेयया, भोरत्त्रियमिस्सपञ्चयस्स  
पुण्यमेवामावाहो । अपञ्चकस्त्राणचठककस्स मिन्मइद्धि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिगइसहुंओ षंषो ।  
उवरि दुगइसहुंओ, भिर-तिरिच्छगईमममावाहो । मनुमगइदुगस्स मनुसगइसहुंओ ।  
भोरत्त्रियदुग-व-अरिसहस्रपडार्ण मिष्मइद्धि-सासणसम्मादिट्ठीयो हुगइसहुंओवरि मनुमगइ-  
सहुंओमगगइवधामावाहो । अपञ्चकस्त्राणचठककस्स विपइमिन्मइद्धि-सासणसम्मादिट्ठी  
सम्मादिट्ठी वसइसम्मादिट्ठीयो सामी । अवसेय्यं पयडीणं देवा सामी । एवंअण

मनुष्यगतिद्विक, भौतारिकद्विक और ब्रह्मर्मसंहननकारकसंहननका बन्ध परोदय होता है  
क्योंकि, शुभ केत्यावच्छेद विषय व मनुष्योंमें इनके बन्धका अभाव है । अमत्याप्यामावरण  
कतुष्क और भौतारिकचट्टीका बन्ध निरन्तर होता है । मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मिष्पादधि  
और सासात्तनसम्पन्नधि गुणस्थानोंमें सान्तर होता है । ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता  
है । इसी प्रकार ब्रह्मर्मसंहननके भी कहना चाहिये । भौतारिकचट्टीरांगोपांगका बन्ध  
मिष्पादधि गुणस्थानमें सान्तर होता है । ऊपर निरन्तर होता है क्योंकि वहाँ एकेन्द्रियक  
बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि अमत्याप्यामावरणकतुष्कके  
दो गुणस्थानोंमें भौतारिकमिध प्रत्ययको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिद्विक भौतारिक  
द्विक और ब्रह्मर्मसंहननके भौतारिकद्विक और मनुसकके प्रत्ययोंको तीन गुणस्थानोंमें  
कम करना चाहिये । सम्मिमिष्पादधि गुणस्थानमें दो प्रत्ययोंको ही कम करना चाहिये  
क्योंकि भौतारिकमिध प्रत्ययका पट्टक ही अभाव हो चुका है । अमत्याप्यामावरणकतुष्कका  
मिष्पादधि और सासात्तनसम्पन्नधि गुणस्थानोंमें तीन गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है ।  
ऊपर दो गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ धरकगति और त्रियगति  
अभाव है । मनुष्यगतिद्विकका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । भौतारिकद्विक और  
ब्रह्मर्मसंहननका मिष्पादधि व सासात्तनसम्पन्नधि गुणस्थानोंमें दो गतिपोंसे संयुक्त  
तथा ऊपर मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ अन्य गतिपोंके बन्धका  
अभाव है । अमत्याप्यामावरणकतुष्क तीन गतिपोंके मिष्पादधि, सासात्तनसम्पन्नधि  
सम्पन्निमिष्पादधि और अक्षयतसम्पन्नधि स्वामी हैं । चोप प्रकृतिपोंके देव स्वामी है ।

सुगमम् । कुरो ? अप्पमत्तसन्दा चेय बंधआ<sup>१</sup>, उवरि तेउलेस्साए नमावहो ।

तित्थयरणामाण को वधो को अवधो ? असजदसम्माहट्टी जाव  
अप्पमत्तसंजदा बधा । एदे बधा, अवसेसा अवधा ॥ २७० ॥

सुगम । णवरि देव-गणससामीओ बधो । एव तेउलेस्साए एसा<sup>२</sup> परूवणा कहा ।  
अहा तेउलेस्साए परूवणा कहा तहा पम्मलेस्साए वि कयय्वा । णवरि पुरिसवेदस्स जम्हि  
सांतरो बधो परूविदो तम्हि सांतर-भित्तरो ति वत्थो, पम्मलेस्सियतिरिक्ख-गणस्सेसु  
पुरिसवेद मोत्तण अण्णवेदस्स बंधामावादे । जंसि पयडीण बंधम्स देवा चेव सामी  
तासिमिरिपेदपरूवओ अवणेयव्वो, देवेषु पम्मलेस्साए इतिपेदाणुवत्तमावो । पबिदिय  
तंसपयडीण बधो भित्तरो ति वत्थो, तेउलेस्साए एदांसि बधस्स सांतर-भित्तरोत्तुवत्तमावो ।  
ओरास्सियमरीरंभोगवस्स बंधो परोदव्वो । भित्तरो, पम्मलेस्साए अगोपेण विजा बंधामावावो ।  
पम्मलेस्साए पयडिबंधगयमेवपरूवणहुमाह—

यह सूत्र सुगम है । कारण कि अप्रमत्तसंयत ॥ बन्धक हैं क्योंकि इससे  
ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोलेख्याया नमाय है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? असंयतसम्पद्यधियेति  
लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सूत्र सुगम है । विशेष इतना है कि इसके बन्धके स्थामी देव व मनुष्य हैं ।  
इस प्रकार तेजोलेख्याका भाग्यप्रकर यह प्ररूपणा की गई है । जिस प्रकार तेजोलेख्यामें  
प्ररूपणा की है उसी प्रकार पद्मलेख्यामें भी करना चाहिये । विशेषतः यह है कि पुरुष  
देवका अहां सात्तर बन्ध कहा गया है यहां सात्तर निरन्तर ऐसा कहना चाहिये  
क्योंकि, पद्मलेख्या कुछ तिर्यक व मनुष्योंमें पुरुषदेवको छोड़कर अन्य देवके बन्धका  
नमाय है । जिस प्रकृतियोंके बन्धके देव ही स्थामी हैं उनके अतिथि प्रत्यपको कम करना  
चाहिये क्योंकि वृत्तोंमें पद्मलेख्यामें अतिथि नहीं पाया जाता । पंचेन्द्रिय जाति और अस  
प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, तेजोलेख्यामें इनके  
बन्धके सात्तर भिरत्तता पाइ जाती है । भौतिकशरीरगोपांगका बन्ध परोक्षसे होता  
है । निरन्तर पण्य होता है क्योंकि पद्मलेख्यामें भोगोपांगके बिना बन्धका नमाय है ।  
पद्मलेख्यामें प्रकृतिबन्धगत भद्रके प्ररूपणार्थ भागेका सूत्र कहत हैं—



तं जहा— वधो परोक्षो, तेजस्साण सप्पगुणहाणेषु सोदण्ण वधविरोहो । भित्तो, भंतोमुहुसेण विणा वधुवरमामावाधो । पञ्चया सुगमा, बोधाविसेसरो । वधरि तिसु वि गुणहाणेषु बोरात्थिदुगवेअभियमित्सु-कम्मण्य-वउत्तयेदपञ्चया अवणेयम्मा । मज्जुसगइसंखुघो । देवा वेष समी । मिप्पदिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि असंखरसम्मादिट्ठि ति वंधद्वारं । वधोपेक्षे सुगमो । वधो सादि-अनुवो ।

देवाउअस्स ओधमगो ॥ २६८ ॥

पदेन सुवस्वपकृषया कीरदे । तं जहा— वधो परोक्षो, सोदण्ण वधविरोहो । भित्तो, भंतोमुहुसेण विणा वधुवरमामावाधो । पञ्चया बोधतुल्य । वधरि आप वि वेअभियदुमोरात्थिमित्सु-कम्मण्यपञ्चया अवणेयम्मा । वधो देवगइसंखुघे । तिरिन्ध मज्जुसगमीवो । वंधद्वारं सुगमं । अपमत्तद्वारं सखेन्दे मागे गंतुं वंधवापेक्षे । सादि-अनुवो वधो ।

आहारसरीर आहारसरीरअगोवगणामाण को वधो को अवंधो ?  
अपमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २६९ ॥

वह इस प्रकार है— वन्ध उसका परोक्ष होता है क्योंकि तेजस्सेइयामें सब गुणस्थानोंमें सादृश्यसे उनका वन्धका विरोध है । निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि अन्तर्मुहूर्तके बिना उसके वन्धविधायका अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, जन्म ओषसे कोई भय नहीं है । विशेष इतना है कि तीनों ही गुणस्थानोंमें औत्पत्तिक, वैदित्थिमिध, कर्मण और अनुपपत्तिप्रसंगिक कर्म करता चाहिये । अनुपपत्तिप्रसंगिक वन्ध होता है । देव ही स्वामी हैं । मिप्पदिट्ठि सासणसम्मादि और असंखरसम्मादि, वह वन्धावधान है । वन्धोपेक्षे सुगम है । सादि व अनुव वन्ध होता है ।

देवावुक्खी प्रकृषया ओषके समान है ॥ २६८ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्रकृषया करते हैं । वह इस प्रकार है— वन्ध उसका परोक्ष होता है क्योंकि, स्वोद्ययसे इसके वन्धका विरोध है । निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके बिना उसके वन्धविधायका अभाव है । प्रत्यय ओषके समान है । विशेषता इतनी है कि ओषमें भी वैदित्थिक, वैदित्थिमिध और कर्मण प्रत्ययोंको कर्म करता चाहिये । देवगतिप्रसंगिक वन्ध होता है । तिरिन्ध और अनुपपत्ति स्वामी हैं । वन्धावधान सुगम है । अपमत्तद्वारके संग्रहात बहुमात्र साकर वन्धोपेक्षे होता है । सादि व अनुव वन्ध होता है ।

आहारकसरीर और आहारकसरीरगोपण नामककरीर वन्ध और वध अपमत्तकरीर है । अपमत्तकरीर वन्ध है । ये वन्धक हैं, वे वधक हैं ॥ २६९ ॥

सुगममर्द । कुरो ? अण्यमत्तसज्जदा वेव वंधमा, उवरि तेठलेस्साए अमावसो ।

तित्ययरणामाण को वधो को अवधो ? असजदसम्माइटी जाव  
अण्यमत्तसज्जदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २७० ॥

सुगम । जवरि वेव-मणुससामीजो यधो । एयं तेठलेस्साए एसा<sup>१</sup> परूवणा कदा ।  
जहा तेठलेस्साए परूवणा कदा तहा पम्मलेस्साए वि कयन्था । जवरि पुरिसवेदस्स अम्हि  
सांतरो बयो परूविदो तम्हि सांतर-भिरंतरो ति वत्तन्थो, पम्मलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु  
पुरिसवेद मोत्तूण अण्यवेदस्स वंधाभावादो । जंसि पयडीणं वंधन्थ देवा वेव सामी  
तासिमित्थिवेदपच्चवो अवघेयन्थो, देवेषु पम्मलेस्साए इत्थिवेदाणुवत्तमादो । पंचिंदिय  
त्तसपयडीण वधो भिरंतरो ति वत्तन्थो, तेठलेस्साए एदासि वंधस्स सांतर-भिरंतरणुवत्तमादो ।  
ओरात्थियमरीरंगोवगस्स वंधो परोदवो । भिरंतरो, पम्मलेस्साए अंगोवगेण विधा वंधाभावादो ।  
पम्मलेस्साए पयडिवंधगयमेवपरूवणइमाह—

यह सूत्र सुगम है । कारण कि अग्रमत्तसयत्त ही वन्धक है क्योंकि, इसके  
ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोलेद्याका अभाव है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवधक है ? असंयतसम्यग्दर्शिसि  
लेकर अग्रमत्तसयत्त तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सूत्र सुगम है । विशेष इतना है कि इसके वन्धके स्थामी वेव व मनुष्य हैं ।  
इस प्रकार तेजोलेद्याका आश्रयकर यह प्ररूपणा की गई है । जिस प्रकार तेजोलेद्यामें  
प्ररूपणा की है वही प्रकार पद्मलेद्यामें भी करना चाहिये । विशेषता यह है कि पुरुष  
वेदका यहां सात्तर वन्ध कहा गया है यहां सात्तर निरन्तर ऐसा कहना चाहिये  
क्योंकि पद्मलेद्या कुछ तिर्थंकर व मनुष्योंमें पुरुषवेदको छोड़कर अन्य वेदके वन्धका  
अभाव है । जिस प्ररूपितियोंके वन्धके वेव ही स्थामी हैं उनके स्वीवेद प्रत्ययको कम करना  
चाहिये क्योंकि, वहाँमें पद्मलेद्यामें स्वीवेद नहीं पाया जाता । पंचेन्द्रिय जाति वीर वत्त  
प्ररूपितियोंका वन्ध निरन्तर होता है ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, तेजोलेद्यामें इसके  
वन्धके सात्तर-निरन्तरता पाई जाती है । औदारिकदरीरांगोपांगका वन्ध परोक्षसे होता  
है । निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि पद्मलेद्यामें अंगोपांगके दिता वन्धका अभाव है ।  
पद्मलेद्यामें प्ररूपितवन्धगत इसके प्ररूपणाथ जागेका सूत्र कहत हैं—

पम्मलेस्सिएसु मिच्छत्तदहओ णेरइयमगो ॥ २७१ ॥

एइय-आदाय-पाकण भवामावादे । एविओ येव मेदो, बन्ने पत्ति । उरि  
अरिय सो पितिय वत्तयो ।

सुक्कलेस्सिएसु जाव सित्तियरे ति ओघमगो ॥ २७२ ॥

एइय सुक्करथपरुवणा कीरे— पंचपात्रावरणीय चउदसपात्राणीय-पंचतरावकाय  
पुण्य बंधो पच्छ उदओ बोधिमिदं, सुसुममापराइय-स्त्रीनकम्माएसु बंधोदमबोप्पेदुपलभादे ।  
असकित्ति-उच्चागोत्तराणि मि एवं येव वत्तं । अवरी उदयवोप्पेदो एत्थ पत्ति, वज्जिमिदं  
उदयवोप्पेददसपाओ । पंचपात्रावरणीय-चउदसपात्राणीय-पंचतरावकायं सादओ बंधो,  
धुवोदवत्तादे । मिच्छाद्विप्पइडि आव असंजदसम्मादिदं ति असकित्तीए सादय-परोदओ ।  
उरि सादओ येव बंधो, एइयवत्तुदयामावादे । मिच्छाद्विप्पइडि आव समदासंजदे ति  
उच्चागोदबंधो सोदय-परोदओ । उरि सोदओ येव, नीचायोदुदयामावादे । पंचपात्रावरणीय  
चउदसपात्राणीय-पंचतरावकायं बंधो निरंतरो, धुवोदवत्तादे । असकित्तीए मिच्छाद्विप्पइडि

पद्मलेस्पावाले जीवोमि मिध्यास्वदग्धकक्षी प्ररूपणा नाकिन्नेके समान है ॥ २७१ ॥

क्योंकि, उनके एकेन्द्रिय आताप और स्वातरक वक्ष्यका समान है । केवल इतना  
ही मेव है, और कुछ मेव नहीं है । यदि कुछ मेव है तो उसे विचारकर करना चाहिये ।

धुक्कलेस्पावाले जीवोमि तीर्णकर प्रकृति तक जोपके समान प्ररूपणा है ॥ २७२ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करने हैं— पांच पात्रावरणीय आर वर्तमान-  
वरणीय और पांच अन्तरायका पूर्वमें वक्ष्य और पश्चात् वक्ष्य स्पुच्छिक होता है क्योंकि,  
सूक्ष्मसाम्प्रदायिक और स्त्रीनकपाय शुद्धवर्णमोमि क्रमसे उनके वक्ष्य और उदयका स्पुच्छेद  
पाया जाता है । यथाधीति और उच्छगावके भी इसी प्रकार करना चाहिये । शिरांय इतना है  
कि उनका वक्ष्यस्पुच्छेद यहां नहीं है क्योंकि, अयोगकेवली शुद्धस्थानमें उदय वक्ष्य  
स्पुच्छेद देखा जाता है ।

पांच पात्रावरणीय आर वर्तमानवरणीय और पांच अन्तरायका स्तोत्रय वक्ष्य  
होता है क्योंकि वे सुबोधनी हैं । मिच्छाद्विप्पे लेकर असंयतसम्पग्रहि तक यथाधीतिका  
स्तोत्रय परोक्ष वक्ष्य होता है । ऊपर स्तोत्रय ही वक्ष्य होता है क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष  
प्रकृतिके वक्ष्यका समान है । मिच्छाद्विप्पे लेकर भयंतासंयत तक उच्छगावका वक्ष्य  
स्तोत्रय परोक्ष होता है । ऊपर स्तोत्रय ही वक्ष्य होता है, क्योंकि वहां नीचागीवके उदयका  
समान है ।

पांच पात्रावरणीय आर वर्तमानवरणीय और पांच अन्तरायका निरन्तर वक्ष्य  
होता है, क्योंकि, वे सुबोधनी हैं । यथाधीतिका मिच्छाद्विप्पे लेकर प्रमत्तसंयत तक

आय समतसंज्ञये त्रि बंधो सांत्तरो, एगसमएण वि मंभुवरमईसपादो । उपरि पिरतरो, पडिक्खसपयइयंधामावादे । मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिहीसु उच्छागोइस्स बधो सत्तर-भिरंतरो, सुक्खेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु भिरंतरोबुवत्तमादो । उपरि गिरंतरो । मच्चया सुगमा । पपरि मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिहीसपञ्जसकाले सुहसितेस्साणममावादे । मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिही-सम्मादिही-असज्जसम्मादिहीसु बंधो देव-मनुसगइसंजुत्ते । उपरि देवगइसंजुत्तो वेव, अण्णगइयंधामावादे । तिगइमिच्छाद्वि-सासणसम्मादिही-सम्मादिही-मसंबदसम्मादिहीसो सुगइसंबदासंबदा मनुसगइसंजुत्ता च सामी । बधद्वान बंधोस्सिच्छणद्वान च सुगमं । पुवबंधीण मिच्छाद्विहि बधो चउम्बिहो । सासणादीसु विविहो, पुवबंधामावादे । सेसणं सारि महुवो, अदुवबंधितादो ।

एगद्वान-वेद्वानपयडीओ उविय उवरिमाओ ताव परूतमो— पिर-पयद्वानं पुष्पं बधो

सात्तर बंध होता है क्योंकि, एक समयसे ही वहाँ उसका बन्धविध्वान होता जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके बन्धका अभाव है । मिथ्याद्वि और सासादनसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें लब्धगोत्रका बन्ध सात्तर-निरन्तर होता है क्योंकि शुक्लसेरपायामे तिर्यच और मनुष्योंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । मत्स्य सुगम है । विदोष इहना है कि मिथ्याद्वि और सासादनसम्यग्द्वि गुणस्थानके मत्स्योर्मिसे औदारिकमिश्र मत्स्यको कम करना चाहिये क्योंकि, तिर्यच और मनुष्य मिथ्याद्वि एवं सासादनसम्यग्द्विओंके अपर्याप्तकालमें शुभ तीन छेदपार्श्वका अभाव है ।

मिथ्याद्वि, सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिथ्याद्वि और मत्स्यतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें दूध व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर ब्रह्मगति संयुक्त ही बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ बन्ध गतियोंके बन्धका अभाव है । तीन गतियोंके मिथ्याद्वि, सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिथ्याद्वि और मत्स्यतसम्यग्द्वि, वा गतियोंके संयतामंयत तथा मनुष्यगतिसे संयत स्वामी हैं । बन्धायान और बन्धपुष्टिसंस्थान सुगम हैं । दूधबन्धी प्रहणियोंका मिथ्याद्वि गुणस्थानमें बार प्रकारका बन्ध होता है । सासादनादिक गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । दोष प्रहणियोंका सादि व अदुष्य बन्ध होता है, क्योंकि ये अदुष्यबन्धी हैं ।

एकस्थानिक और द्विस्थानिक प्रवृत्तियोंको छोड़कर उपरिम प्रवृत्तिओंकी प्रकृपा

पञ्चम उद्गो वोष्मिन्वदि, अपुष्य-शीजकसाप्सु ऋषोदयवोष्मेदुषत्मादो । सोदय-शोदयो  
 पयो, बसुवोदयच्छदो । निरंतरो पयो, पुष्यवोदयच्छदो । पञ्चमया सुगमा । जवरि मिच्छद्दृष्टि  
 सासपसम्मादिष्टीसु जोरातिमिस्तपञ्चओ वयवोदयवो । मिच्छद्दृष्टि सासपसम्मादिष्टि  
 सम्मामिच्छद्दृष्टि-असंजदसम्मादिष्टीसु देव-मनुसगदसंभुतो । उवरि देवगदसंभुतो । तिग  
 मिच्छद्दृष्टि-सासपसम्मादिष्टि-सम्मामिच्छद्दृष्टि-असंजदसम्मादिष्टिओ दुमसजदसंभुत  
 मनुसगदसंभुत य सप्ती । वंशदायं सुगम । अपुष्यकरणदाए संलेख्यदिमामं गतूष वंशो  
 वोष्मिन्वदि ।

असादावेदनीयस्य पुष्यं ऋषो वोष्मिन्वो । उदयवोष्मेदो पत्ति । अरि-सोगायं  
 पुष्यं वंशो पञ्चम उद्गो वोष्मिन्वदि, पमतापुष्येसु ऋषोदयवोष्मेदुषत्मादो । अरि-अमुमानं  
 वंशवोष्मेदो वेव, सुकृतेस्तिरसु सव्यत्पुदयदंजनादो । अदसकिटीए पुष्यमुदयस्य  
 पञ्चम वंशस्य वोष्मेदो, पमतासंजदसम्मादिष्टीसु ऋषोदयवोष्मेदुषत्मादो । असादावेदनीय  
 अरि-सोगायं ऋषो सोदय-शोदयो, बसुवोदयच्छदो । अरि-अमुमानं सोदयो वेव,  
 पुषोदयच्छदो । अदसकिटीए मिच्छद्दृष्टिपुष्टि जाय असंजदसम्मादिष्टि ति सोदय

करतं हि— निद्रा भीर प्रवृत्ताया पूर्वमे वयस्य भीर पञ्चात् उदय व्युत्पिद्य होता है क्योंकि,  
 अपूर्वकरत भीर शीजकसाप्सु गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके वयस्य भीर उदयका व्युत्पेद पाया  
 जाता है । स्तोत्रप-परोक्ष वयस्य होता है क्योंकि ये मनुष्यादी हैं । निरन्तर वयस्य होता है  
 क्योंकि, ये वृक्षवन्धी हैं । मत्स्य सुगम है । विशेष इतना है कि मिच्छादृष्टि भीर सासपस्य  
 सम्मगदृष्टि गुणस्थानोंमें शीवारिकमिन्न प्रत्ययको कम करवा चाहिये । मिच्छादृष्टि, सासपस्य  
 सम्मगदृष्टि, सम्मगिमिच्छादृष्टि और असंयतसम्मगदृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे  
 संयुक्त वयस्य होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त वयस्य होता है । तीन गतिपीठों मिच्छादृष्टि,  
 सासपस्यसम्मगदृष्टि, सम्मगिमिच्छादृष्टि और असंयतसम्मगदृष्टि को गतिपीठों समतासंयत  
 तथा मनुष्यगतिसे संयत स्वामी हैं । वयसावयव सुगम है । अपूर्वकरतका उदय संरपातसे  
 माग जाकर वयस्य व्युत्पिद्य होता है ।

असादावेदनीयस्य पूर्वमे वयस्य व्युत्पिद्य होता है । उदयवोष्मेद नहीं है । अरि  
 भीर शोकाया पूर्वमे वयस्य भीर पञ्चात् उदय व्युत्पिद्य होता है क्योंकि, प्रमत्त भीर अपूर्व  
 करत गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके वयस्य भीर उदयका व्युत्पेद पाया जाता है । अस्तिर भीर  
 अमुमान वयस्य-पुष्पेद ही है क्योंकि, सुकृतेदयावासे जीवोंमें सर्वत्र उमका उदय देखा  
 जाता है । वयसाभित्तिसे पूर्वमे उदयका भीर पञ्चात् वयस्य व्युत्पेद होता है क्योंकि, प्रमत्त  
 भीर असंयतसम्मगदृष्टि गुणस्थानोंमें उसके वयस्य व उदयका व्युत्पेद पाया जाता है ।

असादावेदनीय अरति भीर शोकाया वयस्य स्वावय परोक्ष होता है क्योंकि, ये  
 मनुष्यादी हैं । अस्तिर भीर अमुमान स्वावय ही वयस्य होता है । क्योंकि, ये सुवोदपी  
 हैं । वयसाभित्तिसे मिच्छादृष्टिसे लेकर असंयतसम्मगदृष्टि तक स्तोत्रप परोक्ष वयस्य होता

परोदधो । उवरि परोदधो चैव, असकिर्तीए गियमेणुदधदमपादो । छण्ण पि पयणीण  
 पधो सांतरो, एगममण्ण वि वधुवरमदमपादो । पन्चया ओषधुत्ता । वधरि मिच्छादिदि-  
 सासणसम्मादिदीसु ओराटियमिस्सपन्चयो ववणेमण्यो । मिच्छादिदि-सासणसम्मादिदि-  
 सम्मामिच्छादिदि-ममजदसम्मादिदीसु छण्ण पयणीण पधो देव-मणुसगइसुत्तो । उवरि  
 देवगइसुत्तो । तिगइअमज्झा दुगंअमज्झासज्झा मणुसगइसुत्ता च सामी । वधद्वाप  
 धववेच्छिण्णद्वाप च सुगम । पधो छण्ण पि सादि अट्टो, अनुवधविप्तादो ।

अप चत्खाणत्तरणीयस्स वधादया सुम वोच्छिणा, असज्झसम्मादिदिदिदि दोण्ण  
 वोच्छेदुवत्तादो । सेसणं वधवोच्छेदो चैव, उदयवोच्छेदणुवत्तादो । अपचत्खाणचउत्तस  
 सोदय-परोदधण वि पधो, अनुवोधवत्तादो । अवमेसण वधा परोदधो, सुक्कलेस्साए  
 सम्मगुणद्वापेसु सोदधेदामि पेचविरोहादो । अप चत्खाणचउत्त-मणुसगइदुगोराटियदुगाण  
 वधो गिरंतो, एगममण्ण वधुवरमामावादो । वज्जिसहस्रपडणस मिच्छादिदि-सासण  
 सम्मादिदीसु पधो सांतरो । उवरि विरतरो, पडिवत्तपयन्विधामत्तादो । पन्चया सुगमा ।

हे । ऊपर परादय ही बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ नियमसे पञ्चकीर्तिका उदय देखा जाता  
 है । उहाँ प्रकृतियोंका बन्ध मान्तर होता है क्योंकि एक समयस भी उनका वन्धविभ्राम  
 होता जाता है । प्रत्यय आधक समान है । बिनाय इतना है कि मिथ्यादि और सासाद्वन  
 सम्मगद्वि गुणस्थानोंमें भावार्थिकमिथ प्रत्ययका कम करना है । मिथ्यादि सासाद्वन  
 सम्मगद्वि सम्मगिमिथ्यादि और समपतमम्यगद्वि गुणस्थानोंमें उहाँ प्रकृतियोंका बन्ध रूप  
 और मनुष्य गतिम संयुक्त होता है । ऊपर देवगतिम संयुक्त बन्ध होता है । तान गतियोंका  
 असंपत दा गतियोंका सयतामेयन और मनुष्यगतिम सवत स्थामी है । बन्धाप्यान  
 और बन्धवृत्तउच्छ्रयाम सुगम है । उहाँ प्रकृतियोंका बन्ध सादि व मध्य होता है  
 क्योंकि, व मध्यवर्धी है ।

अमत्पारयानापरर्यावका वन्ध और उदय वानों सायमें व्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि,  
 समपतमम्यगद्वि गुणस्थानमें उन वानोंका व्युच्छिन्न पाया जाता है । १५ प्रकृतियोंका वन्ध  
 व्युच्छेत् ही है क्योंकि, उमम उदय व्युच्छिन्न महीं पाया जाता । अमत्पारयानवतुक्का  
 स्वादय-परादयम वन्ध होता है क्योंकि, यह मध्यवर्धी है । दाव प्रकृतियोंका वन्ध  
 परादय होता है क्योंकि, गुणमन्दयामें सत्र गुणस्थानोंमें स्वादयम इनक वन्धका  
 विराध है । अमत्पारयानापरर्यावतुक् मनुष्यगतिम और भावार्थिकमिथ वन्ध  
 निरन्तर होता है क्योंकि एक समयस उनक वन्धविभ्रामका अभाव है । पञ्चमममममनका  
 मिथ्यादि भाव साम्माद्वनसम्यगद्वि गुणस्थानोंमें मान्तर वन्ध होता है । ऊपर उमका निरन्तर  
 वन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है ।

नरि मिच्छाद्वि-सासवसम्मादिहीनु ओरात्थिमिस्सपञ्चओ नवणेयन्ओ । मणुसगण्डुगोरात्थिमिदुग  
पञ्चरिसहसंघण्णयमेरात्थिदुमिरिय-वर्धुमयवेदपञ्चया नवणेयन्था, देवेषु एवासिमवावाओ ।  
अपञ्चकखानवउत्तस्स दुगइसंस्तुओ ँओ । अपसेसामं मणुसगण्डुगण्णो । अपञ्चकखानवउत्तस्स  
विगइवीवा सामी । नवसेसाम पयडीमं वेवा सामी । ँपञ्चामं ँपणोधिअण्णह्णामं प सुगमं ।  
अपञ्चकखानवउत्तस्स मिच्छाद्विहिदि वओ नउन्विहो । उवरि तिरिहो, पुवाभावओ ।  
अपसेसामं सारि-अनुवो, अनुवणंविवाओ ।

पञ्चकखानवराजीयस्स ँओदमा-समं वोच्छिन्वेति, सज्जसंवरमि तदुहयवोप्येद  
इसप्यओ । ँओ सोदय-परोदओ, नउवोदयप्यओ । गिरंतो एमसमएण ँपुवरामावाओ ।  
पञ्चया सुग्गमा । नरि मिच्छाद्वि-सासवसम्मादिहीनु ओरात्थिमिस्सपञ्चओ नवणेयन्ओ,  
तिरिक्ख-अनुममिच्छाद्वि-सासवसम्मादिहीनु अपञ्चकखाने सुहटेस्सापमवावाओ । नसंवेदु  
ंओ देव-मणुसगण्डुगण्णे, संजसंवेदु देवमइसंस्तुओ । तियइमसवदमुण्डात्थामि, दुव-  
संजसंजस व सामी । ँपञ्चामं ँपणोधिअण्णह्णामं प सुगमं । मिच्छाद्विहिदि ँओ पउन्विहो ।

विशेष इतना है कि मिच्छाद्वि और सासवसम्माद्वि गुणस्थानोंमें बीवारिकमिन्न  
प्रत्ययको कम करना चाहिये । मनुष्यगण्डिक, बीवारिकद्विक और नवर्षमसंहतनके  
बीवारिकद्विक, त्रिविध और अर्धसंस्तुके प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि,  
देवोंमें वहाँ इस प्रत्ययोंका समाव है । अपत्याक्यावावरणवतुष्कस दो गतिपोंसे  
संयुक्त बन्ध होता है । दोष प्रत्ययोंका मनुष्यगण्डिक संयुक्त बन्ध होता है ।  
अपत्याक्यावावरणवतुष्कके तीन गतिपोंके जीव स्वामी हैं । दोष प्रकृतिपोंके देव स्वामी  
हैं । बन्धाव्वाज और बन्धभुक्तिस्थान सुगम हैं । अपत्याक्यावावरणवतुष्कका  
मिच्छाद्वि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता  
है क्योंकि, वहाँ कुछ बन्धका समाव है । दोष प्रकृतिपोंका सारि व अनुव बन्ध होता  
है क्योंकि, व अनुवणंविवा हैं ।

प्रत्याक्यावावरणीयका बन्ध और उदय दोनों साधमें व्युत्पिन्न होते हैं क्योंकि,  
संपत्तासंपत्त गुणस्वाममें वन दोनोंका व्युत्पिन्न देखा जाता है । स्वेदय-परोदय बन्ध  
होता है क्योंकि, वह मनुष्योत्थी प्रकृति है । गिर तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समकसे  
उसके बन्धविधामका समाव है । प्रत्यय सुग्गम हैं । विशेष इतना है कि मिच्छाद्वि और  
सासवसम्माद्वि गुणस्थानोंमें बीवारिकमिन्न प्रत्यय कम करना चाहिये क्योंकि,  
तिरिक्ख और मनुष्य मिच्छाद्वि एवं सासवसम्माद्विपोंमें अपर्षावककमें शुभ देखा-  
ओका समाव है । नसंपत्तोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । संपत्तासंपत्तोंमें  
देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतिपोंके असंपत्त गुणस्थान और दो गतिपोंके  
संपत्तासंपत्त स्वामी हैं । बन्धाव्वाज और बन्धभुक्तिस्थान सुगम हैं । मिच्छाद्वि  
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि,

उपरि तिविहो, पुषामावाधो ।

पुरिसवेद-कोषसंज्ञकण्यार्थं ब्रह्मदेवता समं बोद्धिष्णा, अणियद्विभि तदुद्भवोष्पेद  
वसण्णदो । सोदय-परोदय, उभयहा वि भपुबलमाधो । कोषसंज्ञकण्यस्त ब्रह्मो विरतरो,  
पुषवन्वितादो । पुरिसवेदस्त मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिहीमु सार-विरतरो, पुषकलेस्सिय  
तिरिक्ख-मणुस्सेमु पुरिसवेद मोत्तण्णवेदाण ब्रह्माभावादो । उपरि विरतरो, पडिबक्खपयडि  
ब्रह्माभावादो । पच्छया भुगमा । पवरि मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिहीमु बोत्तलियमिस्सपबभो  
अवणेयवो । चटुसु असंजदगुणहावेसु दुयइसहुतो, उपरि देवगइसंभुतो बभो अगइसहुतो  
वा । तिगइसंजदगुणहावापि दुगइसंजदासज्जो मणुसगइसज्जा च सामी । ब्रह्मद्वयं भुगम ।  
अणियद्वि-मणुस्से सुखेन्ने भामो गंतूण ब्रह्मो योच्छिन्नजि । कोषसंज्ञकण्यस्त मिच्छाद्वि-  
चटविहो ब्रह्मो । उपरि तिविहो, पुषामावाधो । पुरिसवेदस्त सपिद्विहो, भवुव  
वन्वितादो ।

मात्त-माया-लोहसंज्ञकण्यार्थं कोहसंज्ञकण्यमगो । पवरि वंभवोष्पेदपदेसो अणिय  
वत्तवो ।

— — —  
वहाँ भुव ब्रह्मका अभाव है ।

पुरुषवेद और संज्ञकण्यकोषका ब्रह्म व उद्भव दोनों साधर्म्य स्पष्टिष्ठ होते हैं  
क्योंकि, अनिष्टिकरण गुणस्थानमें वह दोनोंका स्पष्टिष्ठ होता जाता है । स्पष्टिष्ठ  
परोदय ब्रह्म होता है क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे ही ब्रह्म पाया जाता है । संज्ञकण्य  
लोभ-अ ब्रह्म निरन्तर होता है क्योंकि, वह भुवब्रह्मी है । पुरुषवेदका मिथ्याद्वि  
और साक्षाद्ब्रह्मसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सात्त्विक निरन्तर ब्रह्म होता है क्योंकि भुवस्त  
केद्वयावासे तिर्यक् व मनुष्योंमें पुरुषवेदको लोभकर अन्य चर्कों ब्रह्मका अभाव है ।  
ऊपर निरन्तर ब्रह्म होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके ब्रह्मका अभाव है ।  
प्रत्यय सुगम है । विरोध इतना है कि मिथ्याद्वि और साक्षाद्ब्रह्मसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
औद्धारिकमिथ प्रत्यय कम करना चाहिये । बार असेयत गुणस्थानोंमें वा गतियोंसे सपुष्क  
और ऊपर देवगतिसे सपुष्क अथवा अगतिसेपुष्क ब्रह्म होता है । तीन गतियोंके असेयत  
गुणस्थान वा गतियोंके संयतासंयत और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । ब्रह्मावसान  
सुगम है । अनिष्टिकरणकायके संख्यात बहुमान आकर ब्रह्म स्पष्टिष्ठ होता है ।  
संज्ञकण्यकोषका मिथ्याद्वि गुणस्थानमें चारों प्रकारका ब्रह्म होता है । ऊपर तीन  
प्रकारका ब्रह्म होता है क्योंकि वहाँ भुव ब्रह्मका अभाव है । पुरुषवेदका सावि व भुव  
ब्रह्म होता है क्योंकि वह भुवब्रह्मी है ।

संज्ञकण्य मान माया और सोमकी प्रकृति संज्ञकण्यकोषके सामान है । विरोधता  
इतनी है कि ब्रह्मपुष्पेदस्थानको जानकर कहना चाहिये ।



हस्त-रति मय-दुर्गुण्यं बंधोदया सम बोधिष्मन्ना, अपुण्यकरणचरिमसमप तदुदय-  
बोधिर्दसनायो । बंधा सोदय परोदयो, बन्धुबोधयत्तायो । मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव भमत्तसंज्ञो  
ति हस्त रतीण संज्ञो सांतरो । उर्वरि भिरंतरो, पद्धिवक्त्रपयडिबंधामात्रो । मय दुर्गुण्यं  
भिरंतरो, ध्रुवबंधितायो । पञ्चया सुगमा । जरति मिच्छाद्विष्टि-सासपसम्मादिष्टीसु बोरात्मिमिस्स-  
पञ्चमो अवणेषत्ता । मिच्छाद्विष्टि-सासपसम्मादिष्टि-सम्माभिच्छादिष्टि-असंजरसम्मादिष्टीसु  
मज्झ-देवगइसत्ता । उर्वरि देवगइसत्ता भगइसत्ता । च । तिगइमिच्छादिष्टि-सासपसम्मादिष्टि-  
सम्माभिच्छादिष्टि-असंजरसम्मादिष्टीसु दुर्गइसत्तामज्झा मज्झसगइसंज्ञा च समी । बंधयत्तं  
बधवेष्टिष्मन्नाप च सुगमं । मय-दुर्गुण्यं मिच्छाद्विष्टि च उर्वरि बंधा, ध्रुवबंधितायो ।  
उर्वरि तिबिहो, ध्रुवामात्रो । हस्त रतीण सन्धत्त सादि बन्धुबो, बन्धुवबंधितायो ।

मणुसाउभस्स बंधोच्छेदो चेव, मुक्कळेस्साए उरयवोच्छेदापुवत्तमादो । परोदयो बंधो,  
मुक्कळेस्साए सन्धत्त सादएण बधविरोहो । भिरंतरो, अंतोमुदुत्तेण विणा बंधुवरमात्रो ।  
पञ्चया सुगमा । जरति मिच्छाद्विष्टि-सासपसम्मादिष्टि असंजरसम्मादिष्टीसु बोरात्मिदुभ-

हास्य रति मय भीर जुगुप्साका बन्ध भीर उदय दासो सापमं स्पुष्टिज हात  
है क्योंकि, अपूर्वतरणके अन्तिम समयमें उन दोषोंका स्पुष्ट्येव वृद्धा जाता है । बन्ध  
उत्पन्न बोधय परोदय होता है क्योंकि, वे मनुबोधयी हैं । मिच्छाद्विष्टिसे छेकर भ्रमत्तसंज्ञ  
तक हास्य व रतिज सास्तर बन्ध होता है । ऊपर निम्नतर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ  
प्रतिपक्ष प्रवृत्तिपक्ष बन्धका अभाव है । मय भीर जुगुप्साका निम्नतर बन्ध होता है  
क्योंकि ये भ्रमबन्धी हैं । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिच्छाद्विष्टि और सासत्त  
सम्पद्विष्टि गुणस्थानोंमें भीवारिकमिध प्रत्ययको कम करना चाहिये । मिच्छाद्विष्टि,  
सासत्तसम्पद्विष्टि, सम्पगिमिच्छाद्विष्टि और असपत्तसम्पद्विष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्य और  
बंध गतिज संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर बन्धगतिसंयुक्त और भगमिसंयुक्त बन्ध होता है ।  
तीन गतिपक्षोंके मिच्छाद्विष्टि सासत्तसम्पद्विष्टि सम्पगिमिच्छाद्विष्टि और असंजरसम्प  
द्विष्टि का गतिपक्ष सपत्तासंज्ञ तया मनुष्यगतिके संज्ञत स्थानी हैं । बन्धायत्तान और  
बन्ध-पुष्टिप्रस्थान सुगम हैं । मय भीर जुगुप्साका मिच्छाद्विष्टि गुणस्थानमें जाते  
प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वे भ्रमबन्धी हैं । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है  
क्योंकि, वहाँ प्रत्ययबन्धका अभाव है । हास्य भीर रतिज सर्वत्र सावि च मनुष्य बन्ध होता  
है क्योंकि ये मनुष्यबन्धी हैं ।

मनुष्यापका केवल बन्धस्पुष्ट्येव ही होता है क्योंकि, शुद्धसंज्ञेयामें उसका उदय  
स्पुष्ट्येव मही पाया जाता । परोदय बन्ध होता है क्योंकि, मुक्कळेस्सापमें सर्वत्र स्त्रोदयसे  
पक्षक पक्षका विरोध है । निम्नतर बन्ध होता है क्योंकि, अन्तर्मुदत्तक दिना उसका बन्ध  
विश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिच्छाद्विष्टि सासत्तसम्पद्विष्टि

वेठम्बियमिस्स-कम्मइय-इत्थि णउंसयवेदपक्कया भवणेदम्भा । मणुसुगइसुत्तो । देवा सामी । मिष्ठाइत्थि-सासणसम्माइत्थि-असंजदसम्मादिट्ठिणो ति वचसाण । वचसोच्छिम्भहाण सुगमे । सादि-अनुवो बंधो, अनुवर्धवितादो ।

देवाठवस्स पुब्बमुदयस्स पच्छा वंधस्स वोच्चेदो, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठिणो वंधोदयवोच्चेदुपत्तादो । परोद्वो बंधो, सोदण वंधविरोहादो । भिरंतो, अतोमुत्तरेण विवा वंधुवरमावादो । पक्कया सुगमा । गवरि मिष्ठादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मा दिट्ठिणो वेठम्बियदुगोपत्थियमिस्स-कम्मइयपक्कया भवणेयम्भा । देवगइसुत्तो बंधो । मिष्ठाइत्थिपुट्ठि जाव संजदासज्जत्ति ति तिक्ख-मणुसा सामी । ठवरि मज्झा वेव । वंधहाण सुगम । अप्पमत्ताए संसेग्गे भागे गत्तुण वधो वोच्छिम्भदि । सादि-अनुवो, अनुवर्धवितादो ।

देवगइ-वेठम्बियदुगणं पुब्बमुदयस्स पच्छा वंधस्स वोच्चेदो, अनुव्वासंजदसम्मादिट्ठिणो वंधोदयवोच्चेदुपत्तादो । अवसेसाणं पयसीणं वंधवोच्चेदो वेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्चेदापुव तमादो । देवगइ-वेठम्बियदुगणं परोद्वो बंधो, सोदण वंधविरोहादो । पंधिदयवादि-सेजा

और असंयतसम्यग्दृष्टि शुभस्थानोंमें औदारिकद्विक, वैकियिकमित्र कामेन कायपोग कावेद और नपुंसकपेद प्रत्ययोंके कम करना चाहिये । मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी है । मिष्याहृष्टि, सासाहमसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि शुभस्थान बन्धाप्त्तान है । बन्धपुच्छेउदस्थान सुगम है । सादि व अग्रव बन्ध होता है क्योंकि, यह अनुवर्धवर्णी है ।

देवायुके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका स्पृच्छेद होता है क्योंकि अग्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि शुभस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध व उदयका स्पृच्छेद पाया जाता है । परोद्वय बन्ध होता है क्योंकि सादयसे उसके बन्धका विरोध है । निरुत्तर बन्ध होता है क्योंकि, अन्तमुद्गर्त के विना उसके बन्धविधायका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । विरोध इतना है कि मिष्याहृष्टि सासाहमसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि शुभस्थानोंमें वैकियिकद्विक, औदारिकमित्र और कामेन प्रत्ययोंका कम करना चाहिये । पयगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मिष्याहृष्टिसे लेकर सयतासंयत तक तिर्येक व मनुष्य स्वामी है । ऊपर मनुष्य ही स्वामी है । बन्धाप्त्तान सुगम है । अग्रमत्तकाहके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध स्पृच्छिद्य होता है । सादि व अग्रव बन्ध होता है क्योंकि, यह अनुवर्धवर्णी है ।

देवगतिद्विक और वैकियिकद्विकके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका स्पृच्छेद होता है क्योंकि, अप्रपकारण व असंयतसम्यग्दृष्टि शुभस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध व उदयका स्पृच्छेद पाया जाता है । दोष महानियोंका केपम बन्धस्पृच्छेद ही है क्योंकि, सुक्कलेदयामें उनका उदयस्पृच्छेद नहीं पाया जाता । देवगतिद्विक और वैकियिकद्विकका परोद्वय बन्ध



संतिरवधुवत्तमादो । उपरि विरंतरो, पडिवक्त्तपयडिवधामावादो । विर-सुमाण मिच्छाद्विष्टिपुडुवि  
भाव पमत्तसज्जदो वि संतिरो । उपरि विरंतरो, पडिवक्त्तपयडिवधामावादो ।

पञ्चया सुगमा । देवगइ-वेठवियदुगाण पधो देवगइसत्तुओ । सेसाण पयडीण  
मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-असंजदसम्मादिद्वीसु देव-मणुसगइसत्तुओ । उपरि देवगइसत्तुओ ।  
देवगइ-वेठवियदुगाण दुगइमिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मादिद्वि-  
सज्जदासंजदा मणुसगइसज्जदा च सामी । अवसेसाण पयडीण पधस्स तिगइमिच्छादिद्वि-  
सासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मादिद्विओ दुगइसज्जदासज्जदा मणुसगइसंजदा च  
सामी । वंचडाण सुगमं । अपुण्यकरणदाण सदेव्हे मागे गंतूण पधो यो उज्जदि । तेदा  
कम्मइयसीर-वप्पचठक्क-अगुरुत्तुव-उवपाद-णिमिणाणं मिच्छाद्विष्टि पधो चउव्विहो ।  
उपरि विविहो, धुववविहादो । सेसाण पयडीण सादि अज्जुओ पधो ।

भाहारदुगस्स ओपमंगो । तित्थपरस्स वि ओपमंगो । दुगइसंजदसम्मादिद्विओ मणुस

पाया जाता है ।

ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियों का वर्णन समाप्त  
है । स्थिर और शुभका मिथ्याहृदि से ऊपर प्रसन्नपक्ष तक सांस्तर बन्ध होता है । ऊपर  
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियों का वर्णन समाप्त है ।

प्रत्यय सुगम हैं । देवगति और धैर्यविकटिकका बन्ध देवगतिसम्बन्ध होता है ।  
द्वेष प्रकृतियों का बन्ध मिथ्याहृदि, सासादनसम्बन्ध विचार अर्थात्तत्त्वसम्बन्ध गुणस्थानों में  
देव व मनुष्य गतिसंयुक्त होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त होता है ।

देवगति और धैर्यविकटिकका दो गतियों के मिथ्याहृदि सासादनसम्बन्ध विचार,  
सम्बन्धमिथ्याहृदि असंयतसम्बन्ध विचार संयतार्थयत्तः तथा मनुष्यगतिक संपत्त करामी  
है । द्वेष प्रकृतियों के बन्धों की गतियों का मिथ्याहृदि सासादनसम्बन्ध विचार सम्बन्धमिथ्या  
हृदि और असंयतसम्बन्ध विचार दो गतियों का संयतार्थयत्त तथा मनुष्यगतिक संपत्त करामी  
है । वर्णनायाम सुगम है । अधुवकरणकासक संयत्त बहुभाग जाकर बन्ध स्पष्टिप  
होता है ।

तैजस व कामण शरीर वणादिक विचार अगुरुत्तु उवपात भार निमाणका  
मिथ्याहृदि गुणस्थानों में वारों प्रकारका वर्णन होता है । ऊपर तीन प्रकारका वर्णन होता है  
क्योंकि, ये भूषवर्ण्य हैं । शय प्रकृतियों का भावि व अधुव वर्णन होता है ।

भाहारविकटिकी प्रकृति आधक समान है । तीर्थेकर प्रकृति की भी प्रकृति  
आधके समान है । विरायता हतनी है कि उसने दो गतियों का अर्थात्तत्त्वसम्बन्ध विचार और

गहस्तंमदांसदपुहिविभो 'च' सामी ।

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिमगो ॥ २७३ ॥

भोचहो को एत्थ विसेसो ? न, भोपमि नर्षपणमुवठमावो । एत्थ पुन ते नत्थि,  
नभोमीसु ठेस्सामावो । का ठेस्सा न्नाम ? जीव-कम्माणं ससिउत्तणयरी, मिच्छत्तसंनम-कस्स  
बोला' ति मन्निं होदि । सेस नसक्खिमंगो ।

वेद्व्याणि-एक्कट्टाणीण णवगेवज्जविमाणवासियदेवाण भगो  
॥ २७४ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स जत्थो उप्पदे । तं जहा— वीणगिद्धितिय-नर्षत्तापुवंपि  
पठक्खित्तिवेद-पठसंनम-पठसंनम-जप्पसत्थविहायगह-धुमग-दुत्तर-अपदेब्ब-वीणा-

मनुष्यगतिके संपत्तासंपत्ताविक स्वामी हैं ।

परन्तु विशेष इतना है कि सात्त्विकेदनीयकी प्ररूपणा मनोयोगियोंके समान है ॥ २७३ ॥

शंकर—भोचले यहां क्या मेह है ?

समाधान—यहाँ कबोंके भोचमें सात्त्विकेदनीयके अग्रगण्य पाये जाते हैं । किन्तु  
यहां के यहीं हैं कारण कि अवांगी जीवोंमें अक्षयाका अभाव है ।

शंकर—अक्षया किससे कहते हैं ?

समाधान—जो जीव न कर्मका अग्रगण्य करती है वह अक्षया कहलाती है ।  
अभिप्राय यह कि मिथ्यात्व सर्वप्रथम कथाय और बोलाये अक्षया हैं ।

शेष विवरण वशाच्छेति के समान है ।

द्विस्त्वानिक और एकस्त्वानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा भी अक्षेयक विमलवासी देवोंके  
समान है ॥ २७४ ॥

इस देशामर्शक सूचक नर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— स्वामपुष्टिपय  
अवस्तापुष्टिपयतुल्य लक्षित्व चार संस्थान चार संस्थान अग्रगण्यविहायोगति धुर्मग

॥ यमजी ईश्वरानन्दपुष्टिईश्वरी च इति वाक्य ।

१ यमजी ईश्वरानन्दपुष्टि वाक्यी वरिष्ठस्त्वैतत् इति वाक्य ।

१ यमजी वशापयौगा इति वाक्य ।

गोदानि वेद्धानपयहीभो । एतस्य अर्णतानुर्बधिवउत्तकस्स वंभोदया सुमं वोन्धिण्णा । सेसाणं पयहीणं पुत्तं ववो पप्पळा उदयो वोन्धि-अदि, तदोवठमादो । एदासिं सम्भासिं पयहीणं पि ववो परोदभो । धीणगिदितिय-अणनानुर्बधिवउत्तकस्स वंभो पित्तरो, धुववंधिच्छादो । इरियवेद-वउत्तगण-वउत्तपडण-अणसरयविहायगइ-दुमग-दुस्सर अणदेवम-पीषागोदानं सांतरो, एगसमरण वि वधुवरमुवठमादो । पथया मुगमा । जवरी चोराठियमिस्सपवभो अवपेयस्यो । इरियवेद-वउत्तगण वउत्तपडण अणसरयविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणदेवम-पीषागोदानं चोराठियदुग्गिरिय-वउत्तपडवेदपन्थया अवपेयस्यो, सुक्कळेस्साए एदासिं' वंभामावादो । धीणगिदितिय-अणनानुर्बधिवउत्तकस्स देव-अणुसगइसंसुत्तो । सेसाणं मणुसगइ सट्ठो, देवगइए सइ ववविरोदादो । धीणगिदितिय-अणनानुर्बधिवउत्तकस्स तिगइसीवा सामी । सेसाण पयहीणं वमस्स देवा सामी । वषट्ठाण वंभवोन्धिण्णस्स वं मुगमं । धुववंधीण मिच्छइहिन्धि वउत्तविदो ववो । सासणे दुविदो, अणए धुवामावादो । सेसाणं पयहीणं

दुस्सर, अमादय और नीचगोत्र ये क्रिस्वाभिक प्रकृतियां हैं । हममें अमस्तानुबन्धिवतुक्कका वण्य और उदय वानों नाथमें धुवविच्छा हाते हैं । दोष प्रकृतियोंका पूर्वमें वण्य और पप्पळा उदय धुवविच्छा हाता है क्योंकि वैया पाया जाता है । इन सब ही प्रकृतियोंका वण्य परोदव हाता है । स्थापनपुष्टित्रय और अमस्तानुबन्धिवतुक्कका वण्य निरम्भर होता है क्योंकि ये धुववन्धी हैं । श्रीविद्धार चार सम्मान चार संहनन अमशस्मविहायोगति दुर्मग दुस्सर, अमादय और नीचगोत्रका सात्तर वण्य होता है क्योंकि, एक समयस भी इनका वण्यविष्णम पाया जाता है । प्रत्यय शुभम हैं । विशेष इतना है कि औदारिकमिन्न प्रत्ययका कम करना चाहिये । श्रीविद्धार चार सम्मान चार संहनन अमशस्मविहायोगति दुर्मग दुस्सर, अमादय और नीचगोत्रके औदारिकवहिक श्रीविद्धार नपुंसकवद् प्रत्ययोंका कम करना चाहिये क्योंकि, शुभप्रत्ययमें इन प्रकृतियोंके वण्यका समाच है । स्थापनपुष्टित्रय और अमस्तानुबन्धिवतुक्कका वण्य व अनुष्णगतिसे संयुक्त वण्य होता है । दोष प्रकृतियोंका अनुष्णगतिसे संयुक्त वण्य हाता है क्योंकि देवगतिसे साय वमके वण्यका विशेष है । स्थापनपुष्टित्रय और अमस्तानुबन्धिवतुक्कके तीन गतियोंका जीव न्यामी हैं । दोष प्रकृतियोंका वण्यके देव न्यामी हैं । वण्यप्रधान और वण्यपुष्टिच्छरयान मुगम हैं । वृषवन्धी प्रकृतियोंका मिष्यारति शुभप्रधानमें चारों प्रकारका वण्य होता है । सासाधम शुभप्रधानमें वा प्रधरका वण्य हाता है क्योंकि वही अमादि और वव वण्यका समाच है । दोष प्रकृतियोंका नादि व अष्टव वण्य हाता है,

१ व धारो- दवचहेस्तार तिरवहलेका वृत्ति धारो दवचहेस्तार तिरवहलेका वृत्ति २७४ २७५ ।



अभवसिद्धिषु पचणाणावरणीय-णवदसणावरणीय सादासाद-  
मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चदुआउ-चदुगह-पचजादि-ओरा-  
लिय-वेठविय-तेजा-कम्महयसरीर-छसठाण-ओरालिय-चेठविय-अगो-  
वग-छसघडण-वणण गध-रस-फास-चत्तारिआणुपुन्नी-अगुरुवलहुव-उव-  
घाद-परघाद उस्सास आदाबुजोव-दोविहायगह-त्तस-चादर थावर-सुहुम  
पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर थिराधिर-सुहासुह-सुभग-दुभग  
सुस्सर दुस्सर आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-  
णीबुन्नागोद-पचत्तराड्याण को वधो को अवधो ? ॥ २७६ ॥

सुगम ।

सन्वे एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ २७७ ॥

एदस्स देसामाप्पियमुत्तस्स अत्थपरुवणा करिदे— एदामु पयद्दीसु एत्थ व कप्पिं पि  
अपोदयवाप्पेदो अत्थि, उवत्तममाणं वोप्पेदविरोद्दहो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय

अविवसिद्धिक जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सात्ता व असात्ता  
वेदनीय, मिथ्यात्त, सोत्तह कप्पाय, नौ लोकपाय, चार आधु, चार गतिपाँ, पाँच अग्निपाँ,  
औदारिक, वैक्रियिक, तेजस व कर्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोलांग,  
छह संहनन, वसं, गध, रस, स्पन्न, चार आनुपूर्वी, अगुरुत्तपु, उपपान, परपान, उप्पहास,  
आनत, उपेत, दो विहायेमातिपाँ, प्रस, वातर, स्थावर, सूक्ष्म, पयाप्त, अपयाप्त, प्रत्येक,  
साधारणशरीर, रिम, अस्तिर, सुम, अशुम, सुभग, दुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनोदेय  
पराधीर्नि, अपराधीर्नि, निमाण, नीच व ऊच गोत्र और पाँच अन्तपाय, इनका कौन कन्थक  
और कौन अणयक है ? ॥ २७६ ॥

एह गूढ सुगम है ।

ये सभी वचक हैं, अवचक नहीं हैं ॥ २७७ ॥

इस दशमस्कन्ध श्लोक अथवी प्रकथना करन हैं— इस अष्टनिर्णयमें यहाँ किन्हीं  
व भी वच आर उदयका व्युत्पत्ति नहीं है अपौरुषिक, विद्यमान ज्ञानन वन दामोद व्युत्पत्ति का  
विषय है । पाँच ज्ञानावरणीय, आर दशमावरणीय विषयस्य तेजस व कर्मण शरीर,



मिच्छत-तेषां कम्मइयसरीर-वण्णवउत्त-अणुमुत्तदुम्भ-विण्णसिर-सुहासुह-गिमिण-पंचत्तावपाव  
मोदमो वंचो । पंचइसपावरणीय-साहासाह-सोत्तमकसाय-अवणोकसाय-तिरिक्ख-अणुस्मउ  
तिरिक्ख-अणुमगह-पंचिदियवादि-मोराटियमरि-अमंत्राण-मोराटियसरीरगेतंय-उत्तपण्ण-  
तिरिक्ख-अणुमगहपावोणाणुपुष्पी उवपाव-परपाव उत्तास-आदासुअवोव-दोविहायगह-उत्त-  
आवर-आवर-सुहुम-अ-अत्त-अत्त-पत्त-साहारणसरीर-सुमग-दुम-सुत्तर-दुम्भ-आदम्भ-  
अमपेदम्भ-असकिटि-अजसकिटि-वीणुवगोवाणं सोदय-परोदमो वंचो । देवाउ-विण्णउ  
देवगह-देवगहपावोणाणुपुष्पि-विण्णयगह-विण्णयगहपावोणाणुपुष्पी-वेठविण्णसरीरमोवगाणं परो  
दमो वंचो, सोदय वंचविरोहादो ।

पंचपाववरणीय-अवउसपावरणीय-मिच्छत-सोत्तमकसाय-अव-दुग्गुह-अत्तरिवाउ-  
तेषां-कम्मइयसरीर-वण्ण-अव-अव-अव-अणुमुत्तदुम्भ-उवपाव विमिण-पंचत्तावपाव विस्तरो  
वंचो, एगममण वंचुवरमावाहो । सत्तासाह-इरिय-अउसयवेद-इत्त-इदि अरि-सोग-विण्णय  
पइदिय-वीइदिय-तीइदिय-अउरिदियवादि-पंचमंत्राण-उत्तपण्ण-विण्णयगहपावोणाणुपुष्पी-आदा-  
उग्गोव अणुसरवनिहायगह-आवर-सुहुम अ-अत्त-साहारणसरीर विण्णसिर-सुहासुह-दुम-दुम्भ-  
अमादम्भ असकिटि अजसकिटि सानरो वंचो, एगममण वंचुवरमदसपाहो ।

वर्णाधिकवार अणुत्तमपु विण्ण, अविण्ण, शुभ अणुम निर्माण और पांच अणुत्तमपु  
स्वाय वच होना है । पांच वचवावरणीय साहा व अमाता वेदनीय सोत्तइ वचाय मो  
आकचाय निर्माणपु अणुत्तापु विर्यगति अणुत्तगति पंचगिर्य जाति औरारिक्खरीर,  
उह रत्तपाव औरारिक्खरीरगोवाणं उह संदमन विर्यगति व अणुत्तगति आवाग्यानुपूर्वी  
उपपात पापात उच्छवास, आता उपात वा विहायोगतिपां वम वचावर, वाह,  
मूहम पर्याज अर्थात् अत्यन्त व माधारण शरीर सुमग दुर्मग सुत्तर, दुम्भ,  
अन्व अमाय वराचर्ति अयशाचर्ति और नीच व ऊंच गोवका वचाय परोद वच होना  
है । वचापु मात्तापु वचगति देवगतिआवाग्यानुपूर्वी अरक्कगति अरक्कगतिआवाग्यानुपूर्वी  
और वैविधिवरणीयगोवाणं परोद वच होना है क्योंकि वचायस इतक वचवा  
विपय है ।

पांच आवावरणीय और वरावावरणीय मिच्छात्त, आत्तइ वचाय अ व अणुत्ता  
वार आयु निम्न व वामन शरीर, अ व गण्य व व वरा अणुत्तमपु उपपात निर्माण  
और पांच अणुत्तावच विर्यगत्त वच होना है क्योंकि एक वचवसे इतक वचविधायक  
अमाय है । साहा व अमाता वेदनीय मूत्राव अणुत्तवच हास्य रति अरति हाक,  
अरक्कगति अरक्कगति औरारिक्ख औरारिक्ख अणुत्तगति जाति पांच रत्तपाव उह संदमन  
अरक्कगतिआवाग्यानुपूर्वी, आता उपात अयशाचर्तिविहायोगति वचावर मूहम अर्थात्  
माधारणशरीर विण्ण अविण्ण शुभ अणुम दुर्मग दुम्भ अमाय वराचर्ति और  
अवउत्तर्तिव आत्तव वच होना है क्योंकि एक वचवसे भी इतका वचविधायक वचा

पुरिसेदस्स पंचो सांतर-भित्तरो । कुदो ? पम्म-सुक्कस्सेसिएसु भित्तरेवधुवत्तमादो । देवगइ-पविंदियवादि-वेअवियसरीर-समपत्तरससंअण वेअवियसरीरंगोवंग-देवगइपाओसमणु-पुब्बी-परमादुत्तास पसरथिहापगइ-तस-बाइर-प-अत्त-पत्तेयसरीर-सुमग-सुस्सर-भादेअ-उच्चायोदाण सांतर-णिगत्तो पंचो । कुदो ? अमयेअवासाउअ-सुहतिउेसियतिरिक्ख मणुस्सेसु च भित्तरेवधुवत्तमादो । मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी पंचो सांतर-भित्तरो । कुदो ? आणदादिदेसु भित्तरेवधुवत्तमादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बी पीपाओदाणं पंचो सांतर-भित्तरो । कुदो ? तेउ-वाउकाइएसु ससमपुडवीभिरएसु च भित्तरेवधुवत्तमादो । ओराटियसरीर-ओराटियसरीरंगोवंगणं सांतर-भित्तरो, सणक्कुमादि देव-भारएसु भित्तरेवधुवत्तमादो ।

सव्वकम्माण पचवेचास पच्चया । णवरि तिरिक्ख-मणुस्माउआणं तेवंचास पच्चया, वेअवियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणममावादो । देव-भिरमाउआण एकक्वंचास पच्चया, वेअवियपुगोराटियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणममावादो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-भिरमगइ भिरमगइपाओग्गाणुपुब्बी-वेअवियसरीर-वेअवियसरीरंगोवंगणमेकक्वंचास पच्चया, वेअविय

जाता है । पुनरवेष्टन साम्तर-निरम्तर बन्ध होता है क्योंकि, पद्म और शुक्ल छेदपायाके जीर्णोत्थनके निरम्तर बन्ध पाया जाता है । देवगति पवेग्गिअगति वैधियिकराटीर, समपत्तरससंस्थान वैधियिकराटीरंगोवांग देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परमाणु उच्छ्वास मन्त्रस्वयिहापागति अष्ट बाइर, पचांत्त, प्रत्यक्काटीर, सुमम सुस्सर, भादेय और उच्छ्वासात्रय साम्तर-निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि अष्टवपातकगणुष्क और सुम तीन छेदपायाके तिर्यक् च मनुष्योत्थे उनका निरम्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीअ साम्तर-निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक द्वौमें उनका निरम्तर बन्ध पाया जाता है । तिर्यगगति, तिर्य गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका साम्तर निरम्तर बन्ध होता है क्योंकि, तत्र च वायु त्रयिक जीर्णोत्थन तथा सप्तम श्रुतिर्वाक नारदिकयोमें उनका निरम्तर बन्ध पाया जाता है । भौतारिकराटीर और भौतारिकराटीरंगोवांगका साम्तर निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि समणुमादि द्वय च नारदिकयोमें उनका निरम्तर बन्ध पाया जाता है ।

सब क्योंकि पचपन प्रत्यय हैं । विज्ञाप इतना है कि तिर्यगायु और मनुष्यायुके निरपन प्रत्यय हैं क्योंकि, यतिविक्रमिध और कर्मण प्रत्ययोच अमाय है । देवायु और नारदायुके इफपायन प्रत्यय हैं क्योंकि, वैधियिकदिक्, बाह्यारिचमिध और कर्मण प्रत्ययोच अमाय है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैधियिकराटीर और वैधियिकराटीरंगोवांगके इफपायन प्रत्यय हैं क्योंकि वैधियिकदिक्,

हुगोरात्मिमिस्स-कम्मइयपच्चयाणममावाधो । बीहदिय-तीहदिय-अउरिदियवादि-सुहुम-अपमप-  
सहारणं तेषंवास पच्चया, वेउअियतुयामावाधो ।

सादावेदीय-इत्थि-पुरिसवेह-इस्स-रदि-पसत्थविहाययइ-समअउरससंख-विर-सुम-  
सुमग-सुखर-आदेम्भ-असकिचीणं तिगइसंहुतो नपो, पिरयगई अमावाधो । पिरयाउ  
पिरयगइ-विरयगइपाओम्याणुपुब्बीणं पिरयगइसंहुतो । देवाउ-देवगइ-देवमइपाओम्याणुपुब्बीणं  
देवमइसंहुतो । मणुसाउ-अणुसगइ-अणुसगइपाओम्याणुपुब्बीणं मणुसगइसंहुतो । तिरिक्खाउ  
तिरिक्खगइ तिरिक्खमइपाओम्याणुपुब्बीणं अणुआदि-आआलुअओल-आवर-सुहुम-सहारणं  
तिरिक्खगइसंहुतो । वेउअियसरीर-वेउअियसरीरअंगोवमां देव-विरयगइसंहुतो । ओरात्मि  
सरीर-ओरात्मिसरीरमेवय-अउसंख-असंघडअ-अपन्नसत्थामकम्मार्थं तिरिक्ख-मणुसगइसंहुतो  
नपो । हुडसंख-अणुसत्थविहाययइ-अकिर-असुह-हुमय-हुस्स-अपादेन्न-पीचामोशार्थं  
तिगइसंहुतो, देवमइ अमावाधो । उअयोउस्स हुगंसंहुतो, पिरय-तिरिक्खगइमममत्ताधो ।  
अवसेसार्थं पयडीयं नपो अउगइसंहुतो ।

देवाउ-विरयाउ-देवगइ-विरयगइ-बीहदिय-तीहदिय-अउरिदियवादि-वेउअियसरीर-

औदारिकमित्र और काम्य प्रत्ययोंका अभाव है । द्वीमित्र भीमित्र चतुर्मित्र आदि  
सुप्त अपर्णत और साधारणके तिरपन प्रत्यय हैं क्योंकि, उनके वैकल्पिकविकल्प  
अभाव है ।

सादावेदीय स्त्रीवेद पुरुषवेद हास्य एव प्रशस्तविहायताति समचतुरस्र-  
संस्थान स्थिर, शुभ सुमग सुखर, आदेश और धराधीनिका तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता  
है क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है । नारकायु नरकगति और नरकगति  
प्रायोग्यायुपूर्वीका नरकगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवायु देवगति और देवगतिप्रायोग्याउ  
पूर्वीका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्याउ  
पूर्वीका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यगायु तिर्यगति य तिर्यगतिप्रायोग्याउपूर्वी  
तथा चार अतिर्ण जातय उठोत स्यावर, सूक्ष्म और सामान्यका तिर्यगतिसंयुक्त  
बन्ध होता है । वैकल्पिकरापीर और वैकल्पिकरापीरगोपार्णका देव एवं नरक गतिसे  
संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकरापीर, औदारिकरापीरगोपार्ण चार संस्थान छह संज्ञक  
और अपर्णत नामकर्मोंका तिर्यगति य मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । हुडसंस्थान  
अप्रशस्तविहायताति अस्थिर, अशुभ दुर्मग दुस्वर, अमादेश और पीचगोत्रका तीन  
गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है ।  
इच्छगोत्रका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, उसके साथ नरकगति और  
तिर्यगतिका बन्ध नहीं होता । दोष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है ।

देवायु नारकायु देवगति नरकगति द्वीमित्र भीमित्र चतुर्मित्र आदि,

बंधोर्वग-निरयगइ-देवगइषाभोगाणुपुष्पी-सुहुम-अपञ्जस-साहारणसरीरण बंधस तिरिफ-  
मनुसा स्यामी । एवंदियबादि-भादाय-भावराण तिगइभिच्छाइही सामी, भेरइयाणममाबादो ।  
अवसेसाय पयडीयं अठगइभिच्छाइही सामी, तेसिं सम्पपविरोहामाबादो ।

बंधदाणं जतिथ, एककहि गुणहाने मद्याजविरोहदो । बंधवोच्छेदो वि जतिथ, एत्थ  
उत्तासेसपयडीयं पपुवर्त्तमादो । बज्जमाणपयडीसु पुनबंधीणमणादिमो पुवो बंधो । अवसेसायं  
सादि अदुवो ।

सम्पत्ताणुवादेण सम्माइहीसु खइयसम्माइहीसु आभिणिबोहिय  
णाणिमंगो ॥ २७८ ॥

जहा आभिनिबोहियणाणपरुवणा कदा तथा विरसेसा अयम्मा, विससामाबादो ।  
पवरि खइयसम्माइहिं संजरासंजदसु उच्चागोदसस सोदभो भिंस्तो बंधो, निरिक्तेसु खइय  
सम्माइहीसु संजरासंजदाणमणुवर्त्तमादो । मनुसाठमं पंचमाणजमिरियवेदपञ्चभो जतिथ, देव  
केइएसु इतिवेदखइयसम्माइहीणममाबादो । एतिमो भेव विसेसो । अम्पो जदि अतिथ सो

बैद्धियकशरीर, बैद्धियकशरीरंगोपांग नरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी सूक्ष्म,  
अपर्याप्त और साधारणशरीर इनके बन्धके तिरिफ व मनुष्य स्वामी हैं । एकेन्द्रिय जाति  
अज्ञात और स्थावरके तीन गतियोंके सिम्प्याइएि स्वामी हैं क्योंकि आरक्तियोंके इनका बन्ध  
नहीं होता । दोष प्रकृतियोंके बन्धके चारों गतियोंके सिम्प्याइएि स्वामी हैं क्योंकि, इनके  
इन प्रकृतियोंके बन्धका कोई विशेष नहीं है ।

बन्धाप्यान नहीं है क्योंकि एक गुणस्थानमें अप्यानका विचार है । बन्धमुच्छेद  
भी नहीं है क्योंकि, यहां सुशोक सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । बन्धमान  
प्रकृतियोंमें सुबबन्धी प्रकृतियोंका अभाव है व सुब बन्ध होता है । दोष प्रकृतियोंका सादि  
व असुब बन्ध होता है ।

सम्पत्तमागणानुसार सम्पगधि और साधिकसम्पगधि जीवोंमें आभिनिबोधिक-  
प्रानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २७८ ॥

त्रिस प्रकार आभिनिबोधिकशाली जीवोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार  
पूर्वरूपस यहां भी करना चाहिये क्योंकि, हमसे यहां कई भेद नहीं  
हैं । विशेष इतना है कि साधिकसम्पगधि संघतासंघतोंमें उच्चगान्ध स्वोदय पर  
निरन्तर पश्य हाता है क्योंकि, तिरिफ साधिकसम्पगधियोंमें संघतासंघत जीव पाय नहीं  
जाते । मनुष्यायुके बांधनेवाल जीवोंके अविबेद प्रत्यय नहीं है क्योंकि, देव व आरक्तियोंमें  
अविबेदी साधिकसम्पगधियोंका अभाव है । इतनी ही यहां विज्ञापता है । अन्य कोई यदि

विशेष वसुधो । पयसिर्वाण्यमेदपुरुषस्तुतं भवति—

णवरि सादावेदणीयस्त को वधो को अवधो ? ॥ २७९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिद्विष्टुहि जाव सजोगिकेवली वधा । सजोगि  
केवलिअद्याए चरिमसमय गतूण वधो वोन्छिज्जदि । एदे वधा,  
अवेसेसा अवधा ॥ २८० ॥

एदं वि सुगम, वहुसो उक्तवचरो ।

वेदयसम्मादिद्विष्टु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय सादावेद  
णीय-वत्संजलण-पुरिसवेद-हम्स रदि भय-दुगुल्ल-देवगदि-पचिदियजादि  
वेठव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचठरससठाण-वेठव्वियअंगोवग-वण्ण-  
गघ-रस-फास-देवगइपाओग्माणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-  
उस्तास-पसत्थविहायगइ-त्तस-घादर-पव्वत्त पत्तेयसरीर-धिर-सुम-सुमग

विशेषता है तो उसे विचारकर कहना चाहिये । प्रकृतिवत्त्वगत अहंके प्रकृपचार्य केतर  
ऐसा करते हैं—

निक्षेप यह कि सातावेदनीयका केन बन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ २७९ ॥

यह छत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दर्शि लेकर सयोगकेवली तक बन्धक है । सयोगकेवलिक्रमके अन्तिम  
समयको जाकर बन्ध भुण्डित होता है । ये बन्धक हैं, अप अवन्धक हैं ॥ २८० ॥

यह छत्र भी सुगम है क्योंकि इसका अर्थ बहुत बार कहा आ चुका है ।

वेदकसम्यग्दर्शियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय छद दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, 'चार  
'संभठन, पुरुषवेद, ह्यस्य, रति, भय दुगुप्सा, देवगति, वंशेन्द्रिय जाति वैश्वस्यिक, वैश्व  
व कर्मण शरीर, समचठरससंस्थान, वैश्वस्यिकशरीरांगोपांग, वण, गन्ध, रस, 'स्पर्श, देवगति  
प्राप्तेपानुप्राप्ति, अगुरुत्तु, उपपत्त, परपत्त, उक्त्वाप्त, प्रसस्तविहायपति, प्रस, वाद,

सुस्तर आर्देज्ज अस्सकित्ति णिमिणं तित्थयकुरुन्नागोद-पंचतराहयाणं को  
वधो को अवधो ? ॥ २८१ ॥

एत्थं अक्खसंसार काउण पण्णारस पण्णमंगा ठप्पाएव्वा । सेसं सुग्गं ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसजदा वधा । एदे  
वंधा, अवधा णत्थि ॥ २८२ ॥

एदस्स देसमावसियसुत्तस्स परूषणा कीरदे— देवगा-वेउन्निवदुमाप्पमत्तसजदसम्मा-  
दिट्ठिम्हि उदमो वोप्पिप्पणो पुब्बमेव । अंचवोप्पेदो णत्थि, उवरिम्हि यधुवत्तमादो । तित्थ  
यस्स मत्थि उदयवोप्पेदो, एदिसु उदयांमावाओ । अंचवोप्पेदो वि णत्थि, उवत्तंमाप्पत्तुओ ।  
अवसेसाप्प पयडीमं वधोदयाणं दोण्णं वि वोप्पिदामावाओ उदयाओ वधो पुब्बं पप्पमा  
वोप्पिप्पणो वि म परीक्खा कीरदे ।

पंचणापावरणीय चतुदसणावरणीय-पंचिन्द्रियबादि-वेजा-कम्मव्यसरीर-वण गध रस-  
प्लस-मधुखलुव-तस-बादर नञ्च-धिर-मुह-मिमिण-पंचतराहयाण सोदमो अंचो, एव बुधो-

पचात्, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्तर, आदेय, यशस्वीति, निमाप, तीर्षकर, उच्छ्वगेज  
और पाँच अन्तराय, इनका कौन कौन कौन कौन अवन्धक है ? ॥ २८१ ॥

यहां भक्तसंसार करके बौद्ध गुणस्थान और सिद्धोंके अग्रगण्य एक सचोटी  
पम्पह प्रभुमंगला उत्पन्न करना चाहिये । शेष स्त्राय सुमम है ।

अस्यतसम्यग्दग्धिमे ठेकर अप्रमत्तस्यत तक-अन्धक है । ये अन्धक हैं, अवन्धक  
नहीं हैं ॥ २८२ ॥

इस देशामर्शक सूचकी प्रकृषणा करते हैं—देवगति-और-वैश्वदेविककला  
उदय अस्यतसम्यग्दग्धि गुणस्थानमें पूर्वमें ही स्पृष्टिष्ठ हो जाता है । अग्न्युच्छेद-अर्ही  
है क्योंकि ऊपर अग्न्य पाया जाता है । तीर्थकर मरुतिष्ठ उदयस्पृष्ट नहीं है । क्योंकि  
शापोपशमिकसम्यग्दग्धिमें उसका उदयका अभाव है । उमक अग्न्यका स्पृष्टिष्ठ भी नहीं है  
क्योंकि वह पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंके अग्न्य और उदय दोनोंके भी स्पृष्टेक्षक  
अभाव होनेसे उदयकी अपेक्षा अग्न्य पूर्वमें अथवा पश्चात् स्पृष्टिष्ठ होता है । वह  
परीक्षा नहीं की जाती है ।

पाँच अनावरणीय चार ईर्ष्यावरणीय वैश्वदेव्य जाति वैजस्र वधर्मण शरीर,  
अण गध, रस, स्थिर, मधुखलु, अंस, बौद्ध, पयात्त, स्थिर, शुभ, निर्माल और एपा

इत्युक्तो । विद्या-पयस्त्र-साक्षिदेवीय-चतुसंयत्न-पुरिसवेद-हस्त-रवि-मय-हुमुंछ-समचतरस-  
 संयत्न-पयस्त्रविद्यामय-मुस्तस्यं सोदय-परोदयो बंधो, सोदि वि पयोदि बंधुवर्त्तमानो ।  
 देवमय-वद्विषयदुर्ग-तित्त्वययानं परोदयो बंधो, सोदय्य बंधविरोहात् । उपपाद-परपाद  
 उस्सास-पदेयसरीरार्थं असंयदसम्प्रादिष्टिहि बंधो सोदय परोदयो । उपरि सोदयो वेव, तत्र  
 अप ब्रतद्वय जमावत् । अपरि पयससंयदमि परपादुस्सासार्थं सोदय-परोदयो । सुमयदेव-  
 वसकिपीपमसंयदसम्प्रादिष्टिहि बंधो सोदय-परोदयो । उपरि सोदयो वेव, पडिबन्धुरवा-  
 यावत् । उपपादोदस्य असंयदसम्प्रादिष्टिमु संयदासंयदेसु बंधो सोदय-परोदयो । उपरि  
 सोदयो वेव, पडिबन्धुरवायावत् ।

बंधभाष्यवरणीय-संयसंयत्नवरणीय-चतुसंयत्न-पुरिसवेद-मय-हुमुंछ-देवमय-पीपविष-  
 यादि-वेदमिव-तेजा-कम्पयसरीर-समचतरसंयत्न-वेदविषयसरीरबंधोक्त-बन्ध-गंध-रस-  
 प्लव-देवमयभाष्योत्पुष्पी-अगुरुवत्तु-उपपाद-परपाद उस्सास-पयस्त्रविद्यामय-तस-आद-  
 पयस-पदेयसरीर-सुमय-मुस्त-आदे-ज-पिमि-तित्त्वययानोद-पर्वतययान बंधो चिंतो,

अन्तराक्षय स्वेत्य बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ ये जुगोपनी हैं । विद्या प्रकटा  
 सतावेदवीय आर संयत्न पुनश्च हस्त रवि मय हुमुंछा समचतुरसंस्याम  
 प्रकटविद्यायोगति और सुप्रतराक्ष स्वेत्य परोत्य बन्ध होता है, क्योंकि दोनों भी  
 प्रकाटोंसे सम्यक् बन्ध पाया जाता है । देवपतिष्ठिक, वैदिकपतिष्ठिक और तीर्थकराक्ष परोत्य  
 बन्ध होता है क्योंकि, स्वेत्यसे इसके बन्धका विरोध है । उपपात परपात उच्छ्वास और  
 प्रत्येकाक्षरीय असंयतसम्प्रादि गुणस्यात्मने स्वेत्य परोत्य बन्ध होता है । ऊपर  
 स्वेत्य ही बन्ध होता है क्योंकि यहाँ अपर्वात्तकाक्ष जमाव है । विरोधता इतनी है  
 कि प्रतत्संयत गुणस्यात्मने परपात और उच्छ्वासाक्ष स्वेत्य परोत्य बन्ध होता है ।  
 सुमय भवेय और पञ्चकीर्तिक्ष असंयतसम्प्रादि गुणस्यात्मने स्वेत्य-परोत्य बन्ध  
 होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिबंध बन्धका  
 जमाव है । उच्छ्वासाक्ष असंयतसम्प्रादि और संयतासंयतोंमें स्वेत्य-परोत्य बन्ध  
 होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके उच्छ्वास  
 जमाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वरीणावरणीय आर संयत्न पुनश्च मय हुमुंछा  
 देवपति पंचेन्द्रिय आति वैदिकपतिष्ठिक तैजस व कर्मय शरीर, समचतुरसंस्याम वैदिक-  
 सरीरपोषां कर्त्त बन्ध रस स्पर्श देवपतिभाष्योत्पुष्पी अगुरुवत्तु उपपात  
 परपात उच्छ्वास प्रकटविद्यायोगति जस आद-पर्वीत्त प्रत्येकाक्षरी, सुमय सुस्त,  
 आदेव, विधीय तीर्थकर, उच्छ्वासीय और पांच अन्तराक्ष विरुद्ध बन्ध होता है, क्योंकि,

एतस्मिन् एव वचसामिहो । सादावेदणीय-हस्त-रति-यिर-मुम-असकिचिण असंजदसम्मादिहि-  
प्यदुहि जाव पमसंयदो ति वंचो सांतरो । उवरि गिरतरो, पडिवकखपयडिबंभाभावादो ।

पण्यया सुगमा, ओषपण्यदितो विसिसामावादो । देवगाइ-वेठपियदुगार्ण देवगाइ  
संतुतो । सेसाणं पयडीण असंजदसम्मादिहिमु वंचो दुगाइसंभुतो । उवरिमेसु देवगाइसंतुतो ।  
देवगाइ-वेठपियदुगार्ण तिरिक्ख-भणुसअसंजदसम्मादिहि-संजदसंजदा सामी । तिरिक्खपरस्स  
तिगाइअसंजदसम्मादिहिओ सामी, तिरिक्खपर्यए जमावादो । उवरिमा मणुसा वेव,  
तेसिमम्पस्यामावादो । सेसाणं पयडीण षठगाइअसंजदसम्मादिहिओ दुगाइसंजदासंजदा मणुसगाइ  
संजदा व सामी । वचट्ठायं सुगमं । वचवोप्पेदो वरिध, 'वचवा वरिध' ति वचवाओ ।  
पुवर्षणीयं तिविदो वंचो, पुवामावादो । सेसाणं सादि-असुवो, असुवर्षणितो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-जसकिचिणामाण  
को वधो को अवधो ? ॥ २८३ ॥

एव पण्यमंगा जालिय वचवा ।

एक समयसे इनके वचसामिह नामका समाव है । सादावेदणीय, हास्य रति स्थिर, मुम  
और वहाकीतिक्ख असंयतसम्पदधिये केकर ममसंयत तक सम्पत्तर वच्य होता है ।  
ऊपर निरन्तर वच्य होता है क्योंकि वही प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वच्यका समाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं क्योंकि, ओषप्रत्ययोंसे खोई बिरोपता नहीं है । देवगतिद्विक और  
वैकिचिकद्विक देवगतिचपुक्क वच्य होता है । शेष प्रकृतियोंका असंयतसम्पदधियेमें  
हो गतियोंसे संयुक्त वच्य होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिचपुक्क वच्य होता है ।  
देवगतिद्विक और वैकिचिकद्विक तिर्यक व मनुष्य असंयतसम्पदधिये एवं संयतासंयत  
सामी हैं । तीर्थकरप्रकृतिक तीन गतियोंके असंयतसम्पदधिये सामी हैं, क्योंकि तिर्यगतिमें  
उसके वच्यका समाव है । उपरिम गुणस्थानपरती मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि, इनका  
अन्य गतियोंमें समाव है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असंयतसम्पदधिये, हो गतियोंके  
संयतासंयत और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । वचवावाच सुगम है । वचप्युक्तेह  
महीं है क्योंकि, अवच्यक महीं है ऐसा स्वयं निर्दिष्ट है । पुवर्षणी प्रकृतियोंका तीन  
प्रकारका वच्य होता है क्योंकि पुव वच्यका समाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व असुव  
वच्य होता है क्योंकि, वे असुववर्षणी हैं ।

असादावेदणीय, अरति, ओक, अस्थिर, अशुम और वयसुविरिध नामकर्मक । क्रीन  
वच्यक और क्रीन वच्यक है ? ॥ २८३ ॥

यहां मममर्गोंको जानकर कहना चाहिये ।



अमंजदसम्मादिद्विष्यहुदि जाव पमत्तसजदा बधा । एदे बधा  
अवसेसा अवधा ॥ २८४ ॥

एवस्त्वो सुत्रे— अयं शोक-असादावेदनीय-अस्मिन्-अनुमाने बंधवोच्छेदो भव ।  
उदयवोच्छेदो पतिरि, उदयिभि उदयस्सुवर्तमादो । अजसकिरीए पुम्बसुदयस्स; पम्बस बंधस  
वोच्छेदो, पमत्तसमदसम्मादिद्विषु बंधोदयवोच्छेदुवर्तमादो । असादावेदनीय-अस्मिन्-सोपान  
बन्धो, सोदय-परोदयो, दोहि । वि पयोहि बंधुवर्तमादो । अस्मिन्-अनुमाने सोदयो केव  
सुबोदममादो । अजसकिरीए असंजदसम्मादिद्विषु सोदय-परोदयो । उदयि-परोदयो केव  
पतिरि-सुदयमादो । एदासि कम्ह पयसीय बंधो सतिरो, एगसमएव वि पनुवरमंसमादो ।

पम्बसा सुग्मा, बहुसो जत्तमादो । देव-मनुसगइसंखो देव, अजसमबंधाममादो ।  
अजसमबंधसम्मादिद्विषो दुगइसजदसंखदा मनुसगइसंखदा च सामी । बंधद्वयं बंध  
वोच्छेदमादो च सुग्म । सम्पासि बंधो सति बंधुवो, अजसमबंधमादो ।

असंयतसम्पत्तिसे ठेकर असंयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, जेव अनन्तक  
हैं ॥ २८४ ॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं—अस्ति शोक असादावेदनीय अस्मिन् और अनुमान  
बन्धवोच्छेद ही है । उदयवोच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर उक्तका उदय पापा जाता है ।  
अपराधीति के पूर्वम उदयका और पन्थाव-बन्धका व्युच्छेद होता है क्योंकि, असंयत  
और असंयतसम्पत्तिसे गुणस्वात्मने क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता  
है । असादावेदनीय अस्ति और शोकका स्वेदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि, दोनों  
ही प्रकाशसे बन्ध पाया जाता है । अस्मिन् और अनुमानका स्वेदय ही बन्ध होता है  
क्योंकि, वे हृत्वायी हैं । अपराधीतिका असंयतसम्पत्तिसे गुणस्वात्मने स्वेदय परोदय  
बन्ध होता है । ऊपर परोदय ही बन्ध होता है क्योंकि वहां प्रतिपत्त प्रकृतिके उदयका  
अभाव है । इस सब प्रकृतियोंका बन्ध सागतर होता है क्योंकि एक समयसे ही  
उदयका बन्धविधायक होता जाता है ।

प्रत्यय सुग्म हैं, क्योंकि, बहुत बार कहे जा चुके हैं । देव और मनुष्य-प्रतिसे  
संपुष्क ही बन्ध होता है क्योंकि, वहां बन्ध प्रतियोगिके बन्धका अभाव है । वार्ते एतिपिके  
असंयतसम्पत्तिसे दो गतिपिके संपत्तासंयत और मनुष्यगतिसे संपत्त स्वामी हैं ।  
बन्धवोच्छेद और बन्धवोच्छेदस्थाय सुग्म हैं । सब प्रकृतियोंका बन्ध सति च अजस  
होता है क्योंकि, वे अजसबन्धी हैं ।

अपञ्चकस्त्राणावरणीयकोह माण-माया-लोह-मणुस्सार-मणुसगह  
ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहस्रघट्टण-मणुसाणु-  
पुन्वीणामाण को धधो को अवधो ? ॥ २८५ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादिट्टी धधा । एदे धधा, अवसेसा अवधा  
॥ २८६ ॥

अपञ्चकस्त्राणावरणीयकोह माण-माया-लोह-मणुस्सार-मणुसगह-मणुसाणु-  
पुन्वीणामाण को धधो को अवधो ? ॥ २८५ ॥  
असजदसम्मादिट्टी धधा । एदे धधा, अवसेसा अवधा  
॥ २८६ ॥

अप्रत्याख्यानावरणीय कोष, मान, माया, लोह, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिक  
सरीर, औदारिकसरीरांगोपांग, वज्रपमसहनन और मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मका कौन वन्धक  
और कौन अपवन्धक है ? ॥ २८५ ॥

यह छत्र सुगम है ।

असयतमस्यगति वन्धक है । ये वन्धक हैं, शेष अपवन्धक हैं ॥ २८६ ॥

अप्रत्याख्यानावरणीयकोष और मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वीका वन्धक व उद्घय दोनों  
छायामें शुद्धिउत्पन्न होते हैं क्योंकि असयतमस्यगति शुद्धस्थानमें उन दोनोंका शुद्धोद्  
पाया जाता है । मनुष्यगति मनुष्यायु औदारिकसरीरांगोपांग और वज्रपमसहननका  
केवल वन्धकमनुष्यगति ही है क्योंकि ऊपर में उनका उद्घय देखा जाता है । अप्रत्याख्याना  
वरणीयकोषका वन्धक स्वोद्घय परोद्घय होता है । दोष प्रकृतियोंका परोद्घय ही वन्धक होता है  
क्योंकि, स्वोद्घयसे इनके वन्धक विरोध है । वदों प्रकृतियोंका वन्धक निरन्तर होता है,  
क्योंकि, एक समयसे इनके वन्धकविधायक अभाव है । अप्रत्याख्यानावरणीयकोषके वादीस  
प्रत्यय हैं । मनुष्यायुका व्याख्यान प्रत्यय है क्योंकि, औदारिकसरीर वैकिकियकमिध और  
कर्मज प्रत्ययोंका अभाव है । दोष प्रकृतियोंके वन्धक प्रत्यय हैं क्योंकि, इनके वन्धक

भेत्तुमिदं दुर्गामादौ । अपञ्चनस्तान्नचउक्तस्त देव-मनुसगाइसह्ये । सेसाण मनुसगाइसह्ये, सामानिवादे । अपञ्चनस्तान्नचउक्तस्त चउगइसह्येसम्मादिहिमो सामी । सेसाण देव-भेत्तुमा । वंचदामं नत्थि, एककमिह मद्यानविरोहादौ । वंचवेत्तिज्जण्डाण सुगमं । अपञ्च-नस्तान्नचउक्तस्त तिबिहो वंचो, धुगामादौ । सेसाणं सादि-अनुवो, मनुववंचिवादे ।

पञ्चनस्तान्नावरणीयकोह माण माया-लोभाण को अधो को अवधो ? ॥ २८७ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादिट्ठी सजदासजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ २८८ ॥

एदासि सजदासजदमिह अक्कमेण वाच्छिण्णवंचोदवाणं, सेत्तय-पदेदमिह विंत्त वंचीयं, असजदसम्मादिट्ठी-सजदासजदेसु जहाक्कमेण ऊवाठ-सत्तसीसपञ्चवाण, देव-मनुसगा-सह्येसवाण, चउगइसह्येसजदसम्मादिट्ठी-सजदासजदसमीवाणं, असजदसम्मादिट्ठी-सजदा-

रिक्किकका अमाव है । अमत्याक्यानावरणचतुष्कका देव व मनुष्य मतिसे समुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतिपौक मनुष्यगतिसे समुक्त बन्ध होता है क्योंकि, देसा इत्यत्र है । अमत्या-क्यानावरणचतुष्कका साहो गतिपौके असंयतसम्पदाहि लामी हैं । शेष प्रकृतिपौके देव व मारकी लामी हैं । बन्धाज्जान नहीं है क्योंकि, एक गुणस्यागमं अज्जानका विरोध है । बन्धमुत्तिष्ठप्रस्थान सुगम है । अमत्याक्यानावरणचतुष्कका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, छुप बन्धका अमान है । शेष प्रकृतिपौका साहि व समुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वे समुक्तबन्धी हैं ।

प्रत्याक्यानावरणीव क्रोध, मान, माया और ऐश्वर्य कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २८९ ॥

यह सब सुगम है ।

असंयतसम्पदाहि और संयतासंयत बन्धक है । व बन्धक है, शेष अवन्धक है ॥ २९० ॥

इस बार प्रकृतिपौका बन्ध और उद्ध्य दाहो एक साथ संयतासंयत गुणस्यागमं उत्तिष्ठत होते हैं । अज्ञान पराज्य सहित निगृह्य बन्ध होता है । असंयतसम्पदाहि गुणस्यागमं उपमास और संयतासंयत गुणस्यागमं संतीस प्रत्यय हैं । व व और मनुष्य गतिसे समुक्त बन्ध दाता है । साहो गतिपौके असंयतसम्पदाहि और व गतिपौके संयता-संयत लामी हैं । असंयतसम्पदाहि और संयतासंयत बन्धाज्जान हैं । संयतासंयत गुण

सजदसम्मादिद्विष्यद्वि जाव अप्पमतसजदा वधा । अप्पमत  
द्वाए संखेज्जे मागे गत्तण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा  
सुगमा ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ २८९ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिद्विष्यद्वि जाव अप्पमतसजदा वधा । अप्पमत  
द्वाए संखेज्जे मागे गत्तण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा  
अवंधा ॥ २९० ॥

एदस्स अत्थो उच्यदे । तं अहा — पुणमुदभो पच्चम [ बंधो ] वोच्छिज्जदि,  
अप्पमतसंभवसम्मादिद्विष्यद्वि वधोदयवोच्छेदुत्तमादो । परोदभो, गिरंतरो, असंभवसम्मादिद्विष्यद्वि  
वेत्तवियदुगोरात्तिमिस्स-कम्मइय-पञ्चयाणममावाधो वादत्तिमिपव्वधो, उवरिमेसु गुणहाप्पेसु  
बोधपव्वधो, देवपइसंखुतो, दुगइअसंभवसम्मादिद्वि-संबवसंभव-मनुसगइसंभवसमीभो,  
असंभवसम्मादिद्वि-संबवसंभव-पमत्त-अप्पमतसंभवद्विष्यद्वि, अप्पमतद्वाए संखेज्जेसु मागेसु  
पव्वविठभो, सादि मत्तुभो, देवाउअस्स बंधो सि अवगंतवो ।

स्थानमें बन्ध व्युत्पिन्न होता है । कुछ बन्धोंके बिना शेष तीन प्रकारका बन्ध होता है ।  
इस प्रकार इनकी प्रकृपणा सुगम है ।

देवासुका कौन बन्धक और कौन अवबन्धक है ? ॥ २८९ ॥

यह सब सुगम है ।

असंयतमप्यग्घटिसे लेकर अप्रमत्तसयत तक बन्धक है । अप्रमत्तसंयतकालके संस्थाप  
बहुभाग आकर बन्ध व्युत्पिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवबन्धक हैं ॥ २९० ॥

इस सबका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है—देवासुका पूर्वमे उक्त और पश्चात्  
बन्ध व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, अप्रमत्त और असंयतसम्पत्तिसे गुणस्थानोंमें क्रमसे वृत्तके  
बन्ध व उत्पत्तिका व्युत्पिन्न पाया जाता है । परोक्ष और गिरन्तर परम होता है । असंयत  
सम्पत्तिपर्यंत वैकल्पिक, औपचारिक और कामज काययोग प्रत्ययोंका समाप हानिसे  
प्यासीस प्रत्यय हैं । उपरिम गुणस्थानोंमें वेषके नामाप्र प्रत्यय हैं । अवगतिस्तुल्य बन्ध  
होता है । दो गतिपर्यंत असंयतसम्पत्ति व संयतान्ययत तथा मनुष्यगतिके मयत स्थायी  
हैं । असंयतसम्पत्ति, संयतान्ययत प्रमत्तसयत और अप्रमत्तमयत बन्धावधान हैं । अप्रमत्त  
कामज संस्थाप बहुभागोंके बीतनेपर बन्धव्युत्पिन्न होता है । सादि व मनुष्य बन्ध होता  
है । इस प्रकार देवासुके बन्धकी प्रकृपणा जानना चाहिये ।

आहारसरीर-आहारसरीरगोवंगणामाण को बधो को अबंधो ?

॥ २९१ ॥

सुगमं ।

अप्यमत्तसजदा वधा । एदे बंधा, अवसेसा अबधा ॥ २९२ ॥

एदस्स बन्धो सुगमो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पचणाणावरणीय-वउदसणावरणीय-जसु

कित्ति-उच्चागोद-पंचतराइयाणं को बधो को अबधो ? ॥ २९३ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादिट्ठिण्हुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा बधा ।

सुहुमसांपराइयउवसमदाए चरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि ।

एदे बंधा, अवसेसा अबधा ॥ २९४ ॥

पंचपाणावरणीय-वउदसणावरणीय-असत्तिष्ठि उच्चागोद-पंचतराइयाणं ; बंधवोच्छेदो

आहारकसरीर और आहारकसरीरगोपांग नामकमोक्ष क्षेत्र बन्धक और क्षेत्र बन्धक है ? ॥ २९१ ॥

एह सृष्ट सुगम है ।

अप्रमत्तसंपत्त बन्धक है । ये बन्धक है, शेष अबन्धक है ॥ २९२ ॥

एह सृष्ट बन्ध सुगम है ।

उपश्रमसम्पत्ति जीवोर्मि पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पञ्चकीर्ति, ऊंच गौत्र और पांच मन्तव्यक क्षेत्र बन्धक और क्षेत्र अबन्धक है ? ॥ २९३ ॥

एह सृष्ट सुगम है ।

असजदसम्पत्ति ठेकर सुहुमसाम्परायिक उपश्रमक तक बन्धक है । सुहुमसाम्परायिक उपश्रमक तक अन्तिम समयको आकर बन्ध खुल्लिख होता है । ये बन्धक है, शेष अबन्धक है ॥ २९४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय पञ्चकीर्ति, उच्चगौत्र और पांच मन्त

येव । उदयबोम्बेदो जस्थि, स्त्रीणरुसायादिसु वि एदासि पयङ्गीर्ण उदयवृत्तपादो । तेण उदय बोम्बेदोदो धंजवोम्बेदो पुन्य पञ्च वा हेदि ति विचारो जस्थि, सतासताणं सण्णियास विरोहो । पञ्चपाणावरणीय-चउदयसपावरणीय-पञ्चतण्डयाण सोदभो धंजो । असकिरीए असजदसम्मादिहीसु सावय परोदभो । उवरि सोदभो धंज, पडिवक्खुदयामावादो । उच्च-सोदस असजदसम्मादिहि-संभवासजेषु सोदय-परोदभो । उवरि सोदभो धंज, पडिवक्खुदयामावादो । पञ्चपाणावरणीय-चउदयसपावरणीय-उच्चगो-पञ्चतण्डयाण धो भिरंतरो, पुन धित्तारो । असकिरीए असजदसम्मादिहिपट्टि आव पमत्तसंजदो ति ध्यो सतंतरो । उवरि भिरंतरो, पडिवक्खुपयडिधामावादो । पञ्चया सुगमा । उवरि असजदसम्मादिहीसु भोरा-ल्लियमिस्सप-धंजो, पमत्तसंजदेषु माहारदुगपञ्चभो जस्थि । असजदसम्मादिहीसु एदासि पयङ्गीर्ण धंजो देव-मनुसगइसंजुतो । उवरिमि सु गुणद्वारेण देवगइसंजुतो अगइसंजुतो वा । चउदयसजदसम्मादिही दुगइसंजदसंजद मनुमगइसज्ज सामीभो । धंजद्वारेण धंजो-उच्च-द्वारेण च सुगमं । धुवधंजीण तिविहो धंजो, धुवामावादो । अबसेसाणं सादि अनुवा, अनुव धंजित्तारो ।

रायका वृत्तानुच्छेद ही है । उच्चानुच्छेद नहीं है क्योंकि ध्वन्यकथापादिक गुणस्थानोंमें भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उच्चानुच्छेदसे वृत्तानुच्छेद पूर्वमें या पश्चात् होता है यह विचार नहीं है, क्योंकि सब और मतस्वी तुल्यताका विरोध है ।

पाँच ध्वनावरणीय चार ध्वनावरणीय और पाँच अन्तरावका स्वरूप वृत्त होता है । पञ्चध्वनिक असंयतसम्यग्दृष्टिोंमें स्वरूप परोक्ष वृत्त होता है । ऊपर स्वरूप ही वृत्त होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके उच्चका अभाव है । उच्चगात्रका असंयतसम्यग्दृष्टि और सयत्तासंयत गुणस्थानोंमें स्वरूप परोक्ष वृत्त होता है । ऊपर स्वरूप ही वृत्त होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक उच्चका अभाव है ।

पाँच ध्वनावरणीय चार ध्वनावरणीय उच्चगात्र और पाँच अन्तरावका वृत्त निरन्तर होता है क्योंकि, वे प्रत्यक्ष हैं । पञ्चध्वनिक असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रत्यक्षसंयत तक मान्य वृत्त होता है । ऊपर निरन्तर वृत्त होता है क्योंकि, ऊपर प्रतिपक्ष प्रकृतिक वृत्तका अभाव है ।

प्रत्यक्ष सुगम है । विशेष हमना है कि असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें आहारिकमित्र प्रत्यक्ष और प्रत्यक्षसंयत आहारिकमित्र प्रत्यक्ष नहीं है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका वृत्त है व मनुष्य गतिसेयुक्त होता है । अपरिगुणस्थानोंमें वृत्तगतिसेयुक्त या गति संयुक्त वृत्त होता है । चार गतिवृत्त असंयतसम्यग्दृष्टि या गतिवृत्त सयत्तासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्थानों हैं । वृत्तस्थान और वृत्तध्वनिकप्रस्थान सुगम है । प्रत्यक्ष ही प्रकृतियोंका तीन प्रकारका वृत्त होता है क्योंकि इनके अर्थ वृत्तका अभाव है । इन प्रकृतियोंका सादि व अनुव वृत्त होता है, क्योंकि, वे अनुववृत्त हैं ।

गिदा-पयलाण को वंधो को अवधो ? ॥ २९५ ॥

सुपर्म ।

असजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अपुब्बकरणउवसमा बधा ।  
अपुब्बकरणउवसमद्वाए संखेज्जदिम भाग गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २९६ ॥

एदसिं वंधो पुब्बं बोच्छज्जदि । उदयवोच्छेरो वरिध, शीमकसणसु वि उदय  
ईसमादो । सोदय-भेदवो वंधो, अज्जवोदयवंधो । मिंतणे, छुवर्धविषयो । असंखदसम्मा-  
दिद्विमु वंधेतास्सिप पच्चया, भोगात्तिमसिस्सपच्चयामावाधो । पमसंसंखदमि वधीस' पच्चया,  
जाह्नरहुयामावाधो । सेसमुपद्धानेसु मावपच्चयो, विसेसामावाधो । असंखदसम्मादिद्विदि  
देव-मनुसगइसंखुणे, उतरिमेसु देवपसंखुणे, अज्जअसंखदसम्मादिद्वि-दुगइसंखदसंखद

निद्रा और प्रवत्तक कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? २९५ ॥

मह छत्र सुगम है ।

असंयतसम्पत्तिसे ठेकर अपूर्वकरण उपद्रमक तक बन्धक है । अपूर्वकरण उपद्रम  
अतक संस्वातर्वा भय आकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक है, सेव अवन्धक  
है ॥ २९६ ॥

रत्नक बन्ध पूर्वमे व्युच्छिन्न होता है । उदयव्युच्छेद यही है क्योंकि, शीमकपाव  
औरोंमे भी उतक उदय देखा जाता है । उदयव्युच्छेद बन्ध होता है क्योंकि, ये  
अपुब्बोदयी हैं । मिरत्तर बन्ध होता है क्योंकि, छुवर्धणी हैं । असंयतसम्पत्तिसे  
पैतासीस प्रत्यय हैं क्योंकि, भौतारिकमिध प्रत्ययक वहां अयाव है । पमसंसंयत गुण  
व्याममे वधीस प्रत्यय हैं क्योंकि, वहां माहारकद्विकका अयाव है । सेव गुणव्यामोंमे जोष  
प्रत्ययोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, जोषसे वहां जोर प्रियेयता यही है । असंयत  
सम्पत्तिसे गुणव्यामोंमे वध व मनुष्य गतिमे संयुक्त तथा अपरिम गुणव्यामोंमे देवगति  
संयुक्त होता है । वारी गतिपोक असंयतसम्पत्तिसे दो गतिवोंके संयतासंयत और मनुष्य

मनुष्यगर्भसंज्ञसामीप्ये, अवगम्यव्यवहार्यो, अपुष्पकरणद्वारे सस्तेज्यदिभि मागे गयविनासो,  
प्रवर्धयित्वाहो तिविहायो मित्र-पयत्त्रण वषो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ॥ २९७ ॥

सुगर्भं ।

असजदसम्पादिष्टिष्यद्बुद्धि जाव उवर्गंतकसायवीयरागछदुमत्या  
वधा । एदे वधा, अवधा णत्ति ॥ २९८ ॥

मधवोच्छेदं मोक्षं उदयवोच्छेदमावाधो, सोदय-परोदयवधो, असंज्ञप्यदुष्टि जाय  
पमत्सज्जो वि सातं वधिदणुविरि जिततरवधिविवाधो, योषपञ्चवर्द्धितो असंज्ञदसम्मादिहि-  
पमत्सज्जो मोक्षं अण्णत्थ समाणपञ्चसयाधो, असंज्ञदसम्मादिहि-पमत्सज्जोसु बोराठिय  
मिस्साहारदुगामावाधो, असंज्ञदसम्मादिहीसु दुगारसंज्ञाधो ठविरि देवगारसंज्ञवधो,  
अथमसंज्ञदसम्मादिहि-दुगारसंज्ञासज्ज-मणुगारसंज्ञदसामिषवाधो, वधेन सादि-अदुष  
वाधो सुपममेव ।

गति के संवत् स्वामी हैं। वन्याभान बात ही है। मनुष्यकरणासक्त संवत्तर्वा भाग  
धीतमेव वन्य मनुष्यता होगा है। भुवनेष्वी हानेसे भिन्ना व प्रचलका तीन प्रकार वन्य  
होता है।

सत्तावेदनीयका केन पथक और केन जग-पथक है ? ॥ २९७ ॥

यह एक सुगम है ।

असंयतप्रमदगच्छिमे लेख उपशान्तिकपाय वीतराम अद्भुतस्य तत्र बन्धक है। ये बन्धक है, अबन्धक नहीं है ॥ २१८ ॥

साताबदनीयके बन्धयुक्तेजको छोड़कर बन्धयुक्तेजका अभाव होनेसे, स्वोदय परोदय बन्ध होनेमें असंयतसम्बन्धविमलकर प्रमत्तसंयत तक साम्प्रत बन्धकर ऊपर निरन्तरबन्धी होनेमें असंयतसम्बन्धविमल और प्रमत्तसंयतोंको छोड़कर अगद्वय प्रोपक समान प्रत्यय युक्त होनेसे असंयतसम्बन्धविमलोंमें प्रौढातिविमिध और प्रमत्तसंयतोंमें माहापट्टिका अभाव होनेसे असंयतसम्बन्धविमलोंमें दो गतिर्गति संयुक्त तथा ऊपर दंपगतिर्गति संयुक्त बन्ध होनेसे, चारों गतिर्गति असंयतसम्बन्धविमल, दो गतिर्गति संयततामय और मधुप्यगति के सदृश स्वामी होनेसे, तथा बन्धसे छानि व अमृद होनेमें यह सब सुख है ।



असादावेदणीय अरदि-सोग अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाण  
को वधो को अवधो ? ॥ २९९ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादिट्ठिण्हुडि जाव पमत्तसजदा वधा । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ ३०० ॥

सुगममेव, मतिज्ञानमार्गाए पक्कवित्त्वसाधो ।

अपच्चक्खणावरणीयमोहिणाणिभगो ॥ ३०१ ॥

अपच्चक्खणावरणक-मनुमगह-भोरात्थिसरीर-भोरात्थिसरीरबंगोबंग-वज्जरिसिद्ध-  
समदण-मनुमगहप्राप्तिमस्तुपुष्पीय एत्थ गहजं कयर्थ, देसामासिपत्ताधो । सेतं सुगमं ।  
गवरि भोरात्थिमिस्सपच्चको अवधेयसो । कचं वेदधियमिस्स-ऊम्मन्यात्तमुवत्तंभो ? तव  
समसम्मत्तं तव समसेहि चडिय क्खत्तं काऊज देवेसुप्पण्णार्थं तदुवत्तंमाधो ।

भमानादेशनीय, अरति, शोक, अस्तिर, अश्रुम और अपसृष्टिर्ति नामकमोका कौन  
पन्थक और कौन अनन्धक है ? ॥ २९९ ॥

यह सुख सुगम है ।

अमपत्तमम्यरदृष्टिसे लेकर प्रमत्तमयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अथ अपचक  
है ॥ ३०० ॥

यह सुख सुगम है क्योंकि, मतिज्ञान मार्गानामे इसके अर्थकी प्रत्यक्षा की  
आधुर्ध है ।

अप्रत्यक्ष्यान्तरणीयकी प्ररूपणा अवभिज्ञानियोंके समान है ॥ ३०१ ॥

अप्रत्यक्ष्यान्तरणीयक, मनुष्यमणि भौतिकदारीर, भौतिकदारीरानोपाय  
बज्ज रमर्तमन धार मनुष्यमतिप्रायोग्यानुपूर्वात्त यहाँ प्रहण करना चाहिये क्योंकि यह  
गूढ वदामात्रक है । अथ प्ररूपणा सुगम है । बिनाय इतना है कि भौतिकमिध प्रत्यक्षको  
कम करना चाहिये ।

उदा—यदिविषमिध और कामज वापयोग यहाँ किस पाथ जात है ?

समाधान—अपशमसम्यक्त्वके साथ उमशममधि अङ्कुर और मरकर इयोंमें  
उत्पन्न हुए जीपाक व जाना प्रत्यथ पाथ जात है ।

णवरि आउव णत्थि ॥ ३०२ ॥

कुरो ? सम्पत्तिष्ठाद्विस्मेष सन्धुषसमसम्माद्विष्णुमाठमस्स वधामावासे ।

पच्चस्त्वाणावरणचउक्कस्स को वधो को अवधो ? ३०३ ॥

सुगमं ।

अमजदसम्माद्विष्णु सजदामजदा [वधा] । एदे वधा, अवसेसा

अवधा ॥ ३०४ ॥

एदं वि सुगम, सुदण्णपक्खणपक्खविदत्तयासे ।

पुरिसवेद-कोधसजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ ३०५ ॥

सुगमं ।

अमजदसम्माद्विष्णुहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वधा । अणि

यट्ठिउवसमद्वाए सेसे सँसेज्जे मागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे

वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३०६ ॥

निरोप इतना है कि उनके मायु कमकर पच नहीं है ॥ ३०२ ॥

क्योंकि सम्पत्तिष्ठाद्विष्णु सामान ही सच उपपन्नसम्पत्तिष्ठाद्विष्णु मायुच पचका  
अभाप है ।

प्रत्याग्यानावरणचउक्क करेन पचक और करेन अवचर है ? ॥ ३०३ ॥

यह गुरु सुगम है ।

अमजदसम्माद्विष्णु सजदामजदा [वधा] है । ये वधा है, अवसेसा  
है ॥ ३०४ ॥

यह भी गुरु सुगम है क्योंकि, इनका अवधो प्रकृष्टा अतमानप्रकृष्टाओं की  
जा चुकी है ।

पुरिसवेद और संयतन प्रोवस करेन पचक और करेन अवचर है ? ॥ ३०५ ॥

यह गुरु सुगम है ।

अमजदसम्माद्विष्णु हुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वधा है । अणियट्ठी  
उवसमद्वाए सेसे सम्पत्तिष्ठाद्विष्णु मागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि है । ये वधा है, अवसेसा  
है ॥ ३०६ ॥

सुगमैर्द ।

माण मायर्सजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ ३०७ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वधा । अणि  
यट्ठिउवसमद्दाए सेसे सेसे सस्सेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३०८ ॥

एद पि सुगम, बहुसो परुमिदत्तावो ।

लौभसजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ ३०९ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा ।  
अणियट्ठिउवसमद्दाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे  
वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१० ॥

एह सख सुगम है ।

सम्पत्त भान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३०७ ॥

एह सख सुगम है ।

वर्षपतसम्पत्तिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण  
उपशमकत्वे केप केमें सत्प्राप्त बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं,  
केप अवन्धक हैं ॥ ३०८ ॥

एह सख भी सुगम है क्योंकि बहुत बार इसकी प्रकरणता की आवश्यकता है ।

संपत्ति स्वयंसे कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३०९ ॥

एह सख सुगम है ।

वर्षपतसम्पत्तिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण  
उपशमकत्वे अन्तिम समयमें जाकर बंध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, केप अवन्धक  
हैं ॥ ३१० ॥

एह पि सुगम ।

हस्त रदि भय दुगुछाण को वधो को अवधो ? ॥ ३११ ॥

सुगम ।

अमजदमम्माइट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा वधा ।  
अपुव्वकरणवसमद्दाए चरिमसमय गतूण वधो वोन्धिच्चदि । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ ३१२ ॥

एह पि सुगम ।

देवगह-पार्चिदियजादि-चेठव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-  
सठण-चेठव्वियअगोवग-वण्ण-गध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ  
उवघाद-परघाद-उस्सास-यसत्थविहायगदि-तम-चादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर  
यिर-सुभ-सुभग-सुस्सर आदेज्ज णिमिण तित्थयरणामाण को वंधो को  
अवधो ? ॥ ३१३ ॥

सुगम ।

यह सुख भी सुगम है ।

हास्य, रति, मय और दुगुप्ताका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३११ ॥

यह सुख सुगम है ।

असपत्तसम्यग्दक्षिण छेकर अपूरकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूरकरण उपशम  
काउंके अन्तिम समयको प्राप्त होकर पांच व्युत्थिष्ठ होता है । ये बन्धक हैं, शेष अपवन्धक  
हैं ॥ ३१२ ॥

यह सुख भी सुगम है ।

देवगति, पैचन्टिय जानि, बैन्त्रियिक, तैय्यम म कयमण गुरीर, समवतुग्गमस्थान,  
बैन्त्रियिकारिगोपांग, वण, गन्ध, रम, स्पश, देवानुपूर्वी, अगुरुअलहुअ, उपपाल, परपाल,  
उप्पत्तास, प्रसन्नविहायोगति, यम, पाइर, पयात्त, प्रमेकअरि, रियार, गुम, सुमग, सुम्बर,  
आदेय, निमाप और तीर्त्तिकर नामकमोस कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३१३ ॥

यह सुख सुगम है ।

असजसम्मादिद्विषद्वि जाव अपुवकरणउवसमा वधा ।  
अपुवकरणवसमद्वाए सखेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे  
वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१४ ॥

एदे पि सुगमं, बहुसो कयफरुवणादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवगाण को वधो को अनधो ?  
॥ ३१५ ॥

सुगमं ।

अप्यमत्तापुवकरणउवसमा वधा । अपुवकरणवसमद्वाए सखेज्जे  
भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा  
॥ ३१६ ॥

एदे पि सुगमं ।

सासणमम्मादिद्वी मदिणाणिभगो ॥ ३१७ ॥

असपत्तसम्पत्तिमे लेकर अपूर्वकरण उपश्रमक तरु बन्धक है । अपूर्वकरण उपश्रम  
करके सत्पत्त बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक है, सेप वबन्धक  
है । ३४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है क्योंकि बहुत बार इसकी प्रकृषणा की जा चुकी है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोवांगका कौन बन्धक और कौन वबन्धक है ?  
॥ ३१५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रपत्त और अपूर्वकरण उपश्रमक बन्धक है । अपूर्वकरण उपश्रमकरके सत्पत्त  
बहुभाग जाकर व-व व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक है, सेप वबन्धक है ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सासदनसम्पत्तिवर्षोंकी प्रकृषणा मदिष्ठाणिपत्ति समान है ॥ ३१७ ॥

पञ्चापावरणीय-अवर्दसपावरणीय-सादासाङ्ग-सोत्सकसाय-अङ्गभोक्तसाय-तिरिक्छ-  
मणुस-देवाङ्ग-तिरिक्छ मणुस-देवगङ्ग पञ्चिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-पञ्च-  
सत्तण्ण बोराणिय वउत्थियनंघोयण-पञ्चसंभङ्गण-वण्ण-गघ रस-कास-तिरिक्छ-मणुस-देवगङ्गाओ-  
माणुपुम्मी-अगुरुमल्लुम उवपाङ्ग-परपाङ्ग उत्सास-उन्नेव-दोविहायगङ्ग-तस-मादर-पञ्चत-पचेय  
सरीर विराधिर-सुहासुह-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर-आङ्ग-अणदेङ्ग-असकिञ्चि-अजसकिञ्चि-  
अमिण्ण वीचुञ्चागोद-पञ्चतरादयपयवीओ सासणसम्मादिङ्गीहि वन्धमाणिपाओ । एदासिमुद्दमाओ  
वओ पुब्ब पच्छा [वा] योष्णिग्गो चि विचारो णत्थि, एय एवासि वंघोदयवोन्नेदामावओ ।।

पञ्चापावरणीय अउंसपावरणीय-पञ्चिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गंघ-रस-  
पास अगुरुमल्लुम-तस-मादर-पञ्चत-विराधिर-सुहासुह-अमिण्ण-पञ्चतरादयपय सोदमा वंघो,  
धुवोदयपाओ । देवाङ्ग-देवगङ्ग-वेउत्थियदुगाणं परोदयो वओ, सोदपण वंघविरोहाओ । अव  
सेसाण पयवीण वओ सोदय-परोदयो, उदयहा वि वंघुवतमाओ ।

पञ्चापावरणीय-अवर्दसपावरणीय-सोत्सकसाय मय-दुग्गुङ्गा-तिरिक्छ-मणुस-देवाङ्ग-  
पञ्चिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गभ-रस-कास-अगुरुमल्लुम-उवपाङ्ग-परपाङ्ग-उत्सास-

पांच ज्ञानावरणीय नौ वर्तमानावरणीय सादा व असादा वैश्वनीय सोलह कथाव  
जल नै कथाय तिर्यगायु मनुष्यायु, देवाङ्ग तिर्यगति मनुष्यगति देवगति पञ्चेन्द्रिय  
जाति औदारिक, धैर्यिक तैजस व कामेय शरीर पांच संस्थास औदारिक व धैर्यिक  
अगोपांग पांच सङ्गम वर्ण गन्ध रस स्पर्श तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मनुष्यगति  
प्रायोग्यानुपूर्वी देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुमल्लु उपायत परपात उचरुवास उद्योत दो  
विहायगतिभो अस वाङ्मर, पयोत्त प्रत्येकशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग  
दुर्मग सुस्वर दुस्वर, माक्ष्य अनाक्ष्य यथासीति मयवासीति निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र  
भीर पांच अन्तराय ये प्रकृतियां साक्षात्सम्पन्नहति जीवो ज्ञाय वध्यमान हैं । इवका वध्य  
उद्ययसे पूर्वसे या पश्चात् व्युत्पिच्छ होता है यह विचार नहीं है । क्योंकि यहाँ इनके  
वध्य भीर उद्ययके व्युत्पिच्छका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय नौ वर्तमानावरणीय पञ्चेन्द्रिय जाति तैजस व कामेय शरीर,  
वर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुमल्लु अस वाङ्मर पयात्त स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ  
निर्माण भीर पांच अन्तरायका स्वोद्यय वध्य होता है क्योंकि ये भ्रुवोदयी हैं । देवाणु  
देवगतिविक्रि भीर धैर्यिकविक्रिका परोक्ष्य वध्य होता है, क्योंकि स्वोद्ययसे इनके वध्यका  
विरोध है । शेष प्रकृतियोंका वध्य स्वोद्यय परोक्ष्यसे होता है क्योंकि दोनों प्रकारसे मी  
उनका वध्य पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय नौ वर्तमानावरणीय सोलह कथाय मय दुग्गुप्ता तिर्यगायु  
मनुष्यायु, देवायु पञ्चेन्द्रिय जाति तैजस व कामेय शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरु

सप्त बाह्य-पञ्चत-पदेयसरीर-विमिष-यन्त्रसहस्राणं विरतरो बंधो, एतत्समएव बंधुवरमाशुव  
 ठंभादो । सादासाह-इत्स-रदि नरदि-सोमिषिवद-मन्त्रिमपउसठ्यण-पंचसवहण-उन्नेष-यो-  
 विहापगह-बिराधिर-सुहासुह-मुमग-मुस्सर-अनादेन्न-नैसकिचि-अजसकिचीयं सांतरो बंधो, एत-  
 त्समएव वि बंधुवरमदंसभादो । पुरिसवेदसस बंधो सांतर-विरतरो, पम्म मुक्कलेस्सिपसु  
 तिरिक्ख-मणुस्सेसु विरतरबधुवठंभादो । इवगह-वेडवियवुग-समवठरसठ्यण-सुमम-मुस्सर  
 आदेन्नुअनागोदायं बंधो सांतर-विरतरो, असंखेअवासाठणसु सुहतिरेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु  
 च विरतरबंधुवठंभादो । मणुसगहवुगसस बंधो सांतर-विरतरो, भाववादिदवेसु विरतरबंधुव-  
 ठंभादो । तिरिक्खमाइदुग-भीषागोदायं बंधो सांतर-विरतरो, सत्तमपुडवीमेअएसु विरत  
 रबंधुवठंभादो । भोरस्सियसठिदुगसस वि सांतर-विरतरो बंधो, देव-मेअएसु विरतरबंधुवठंभादो ।

देवाठ-देवगह-वेडवियवुगारं अशस्सीस पञ्चया, वेडवियवुगोरस्सियमिस्स कम्म-  
 इयाकमभावादो । मणुस-तिरिक्खाठभायं सपेतालीस पञ्चया, भोरस्सिय-वेडवियमिस्स-कम्म  
 इयपञ्चवापमभावादो । अवसेसार्णं पयडीणं पंचस पञ्चया, पंचमिच्छत्तपञ्चयापमभावादो ।

अथ, उपपाठ परपाठ उपह्वास वस बाह्य पर्वाण्य प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच  
 अन्तरायक निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे हमका बन्धविग्राम नहीं पाया  
 जाता । साता व असता वेदनीय हास्य रति अरति शोक क्षीर्ष मध्यम चार संस्थान  
 पांच संज्ञान उद्योग दो विहायोगतिरा स्थिर, अस्थिर शुभ अशुभ दुर्मग दुस्वर,  
 अनादेय पराकीर्ति और मयशाकीर्तिका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे भी  
 हमका बन्धविग्राम इत्ता जाता है । पुटयेवका बन्ध सात्तर निरन्तर होता है क्योंकि, पञ्च  
 और शुक्ल छेद्यावाले तिर्यक व मनुष्यात्मे इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । वेद्यमतिद्विक,  
 वैदिकियद्विक, समवतुरअसंख्यल सुमग सुस्वर, आत्रेय और उच्चगोत्रका सात्तर-विर-  
 त्तर बन्ध होता है क्योंकि अमवसाठवरीपुट्ट और शुभ तीव्र छेद्यावाले तिर्यक व मनुष्योंमें  
 इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगतिद्विकका बन्ध सात्तर-निरन्तर होता है क्योंकि,  
 मानवाधिक धर्मोंमें इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । तिर्यगतिद्विक और भोचगोत्रका  
 बन्ध सात्तर-निरन्तर होता है क्योंकि अत्यम पृथिवीके भारकिरीमे इनका निरन्तर बन्ध  
 पाया जाता है । भौतिक-गणितद्विकका भी सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, देव व  
 मातृकीर्णोंमें इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इहायु देवगतिक और भौतिकद्विकका अगम्यत्व प्रत्यय है क्योंकि वैदिकियद्विक  
 भौतिकमिध और कर्मज कायका प्रत्ययीक अभाव है । मनुष्यायु और निर्यगायुके  
 मीतामील प्रत्यय है क्योंकि भौतिकमिध वैदिकियमिध और कर्मज प्रत्ययीका अभाव  
 है । शय मकृतिपाके पचास प्रत्यय है क्योंकि, सामाज्यसम्यगधिपीक पांच मिप्याय  
 प्रत्ययीका अभाव है ।

देवाउ-देवगइ-वेठभियहुगण धंधो देवगइसंभुतो । मणुसाउ-मणुसगइहुगण मणुस-  
गइसंभुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइहुगुन्धोयण तिरिक्खगइसंभुतो । भोरत्थियसरीर  
मच्छिमचउसंभुत्त-भोरत्थियसरीरभंगोवग-पंचसपइण-अणसत्थविहाभगइ हुमग-हुस्सर-अणदिव-  
मीधलोदाण तिरिक्ख-मणुसगइसंभुतो धंधो । उच्चागोवस्स देव मणुसगइसंभुतो धंधो,  
तिरिक्खेसुच्चागोवाभावादो । अणसेसाण पयसीय बधो तिगइसंभुतो, मिरयगइबंधामत्वादो ।  
देवाउ-देवगइ-वेठभियहुगण तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाण पयसीय बधस्स सामी चउगइ  
सासणा । बंधसाण बधवोच्छेदो च णत्थि । छायासीसपुवर्षपयसीयं तिनिहो बधो, पुवा-  
भावादो । बधसेसाण सावि-अजुवो, अहुववविचादो ।

## सम्मामिच्छाहट्टी असंजदमगो ॥ ३१८ ॥

पंचपाभावरणीय-छदसपावरणीय-साहासाद-भारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-  
सोग-मय-दुगुंहा-मणुसगइ-देवगइ-पचिदियजादि भोरत्थि-वेठभिय-तेवा-वम्मइयसरीर समचउ  
रससंभुत्त-भोरत्थि-वेठभियभंगोवग-वच्चरिसहसंपइण-वण गध-रस-कस-मणुसगइ-देवगइ-

वेवायु, देवगतिद्विक और वैद्विपिकद्विकका बन्ध देवगति सयुक्त होता है । मनुष्यायु  
और मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मनुष्यगति संयुक्त होता है । तिर्यगायु तिर्यग्गतिद्विक और  
उपोत्तरका बन्ध तिर्यग्गति सयुक्त होता है । भौतिकशरीर मध्यम आर संस्थान  
भौतिकशरीरगोपांग पांच संज्ञन अग्रहास्तविहायोगति दुर्मग दुस्वर, अमावस्य और  
मीनगोत्रका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । उच्छगोत्रका देव व  
मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि तिर्यगोत्र उच्छगोत्रका अमावस्य है । दोष  
प्रकृतियोंका बन्ध तीस गतियोंसे संयुक्त होता है क्योंकि सात्त्विकसम्पत्तिपूर्वक नरक  
गतिके बन्धका अमावस्य है ।

वेवायु देवगतिद्विक और वैद्विपिकद्विकके तिर्यक् व मनुष्य हजामी हैं । दोष प्रकृतियोंके  
बन्धके खामी आते गतियोंके सात्त्विकसम्पत्ति हैं । उच्छाश्रम और बन्धम्युच्छेद मही  
हैं । छायासीस पुनर्बन्धी प्रकृतियोंका तीस प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, उनका पुन  
बन्धका अमावस्य है । दोष प्रकृतियोंका सावि य मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि, ये मनुष्य  
बन्धी हैं ।

सम्पत्तिध्यायि जीवोक्ती प्ररूपणा असंयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पांच ज्ञानावरणीय छह दर्शनावरणीय साक्षात् असाक्षात्बेदनीय आरह कथाय  
पुरुषवेद हास्य रति भरति शोक, मय दुगुप्ता मनुष्यगति देवगति पचन्द्रिय जाति  
भौतिक, वैद्विपिक शैलस व बाधन शरीर, समचतुरस्रसंस्थान भौतिक व वैद्विपिक  
भंगोपांग, मरूपमसंज्ञन गण, गण्य, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति मायेमायु



प्रायोग्यानुपूर्वी-अगुस्तपु उवपाद-परपाद उत्सास-यमस्वविद्यायगद-तस-बादर-पञ्च-पतेन  
सरीर-विणविर-सुहासुह सुमग-सुस्सर भादेन असक्तिरि अत्रमक्तिरि-निमिगुषगोत्र-पंचतरा-  
पयदीभो सम्पमिस्त्राहृद्दि वम्भ्याणियाभो । उदयादो वचो पुर्वं पञ्च [ वा ] वोन्मिभ्यो  
वि एसो विचरो परिध, पयदीभमेत्य वचोदयवोन्मेद्राणुवल्पादो ।

पंचपाचावरणीय-चउदंसपाचावरणीय-पंचिदियमादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वज्ज-पंच-रस-  
फस-अगुस्तपु उवपाद-परपाद-उत्सास-तस-बादर-पञ्च-पतेनसरीर-विणविर-सुहासुह-  
निमिग-पंचतरायां सोदयो वचो, परव धुवोदयचादो । निद्य-यमत्त-सादासाद-वारसकमाय  
पुरिसवेद-हस्स-दि-अदि-सोग-मय-गुगुम्भ-समचअससंठाव-पसरवविद्यायगद-सुमग-सुस्सर-  
भादेन असक्तिरि-अत्रमक्तिरि-उत्पागोदां वचो सोदय-परोदयो, उदयहा वि वंजुवल्पादो ।  
मनुप्यगद-देवमद-वेउभियसरीर-ओराठिय वेउभियसरीरभगोवण-वज्जरिसइसयव-मनुसाह-  
देवमदप्रायोग्यानुपूर्वीयं परोदयो वचो, सोदयव वचविरोदादो ।

पंचपाचावरणीय-उदंसपाचावरणीय-चारमरुपाव-पुरिसवेद मय-गुगुम्भ-मनुमगद-देवगद-  
पंचिदियमादि वेउराठिय-वेउभिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचअससंठाव-वेउराठिय वेउभियभयो-

पूर्वी अगुस्तपु उवपाद परपाद उत्पत्त्यास प्रसस्तविहापोपति वन बादर पर्वत  
प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्सर भादेन यशस्वीति अयशस्वीति  
निर्माण उत्पत्त्याग और पांच अन्तराय प्रकृतिपां सम्पमिभ्याहृदि जीर्ण द्वारा वध्यमल है ।  
उदयसे वध्य पूर्वम या पश्चात् स्फुटिउच होता है यह विचार यहां नहीं है। क्योंकि,  
यहां उक्त प्रकृतिवैक वध्य और उद्यक्ता व्युत्पेद नहीं पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार वक्षमानवरणीय पंचेन्द्रिय जाति तिस्रस य कर्मस शरीर,  
यचं गन्ध रस स्पर्श अगुस्तपु उवपाद परपाद उत्पत्त्यास वस बादर, पर्वत  
प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तरायका द्योत्य वध्य  
होता है क्योंकि, यहां ये सुवोक्ष्यी हैं । मित्रा प्रयत्ना साता य वराता वेदनीय बारह  
कथाय पुण्यवेद हास्य एति अरुणि शाक, मय गुगुम्भा समचतुरस्रसंस्थाय प्रसस्त  
विहापोपति सुमग सुम्भर, भादेन यशस्वीति अयशस्वीति और उत्पत्त्यागवध्य वध्य  
स्वात्य परोदय होता है क्योंकि, वानो प्रकारोंम भी वक्ष्य वध्य पाया जाता है । मनुप्य  
गति देवगति वैभिरिषकशरीर, औरारिक य वैभिरिषक शरीरोंगोपोग वज्जममइनन  
मनुप्यगतिमापाग्यानुपूर्वी और देवगतिमापाग्यानुपूर्वीका पराव्य वध्य होता है क्योंकि  
स्वात्यपमे वक्ष्य वध्यका विराय है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वक्ष्यावरणीय बारह कथाय पुण्यवेद मय गुगुम्भा  
मनुप्यगति देवगति वैभिरिष जाति औरारिक वैभिरिषक तिस्रस य वामन शरीर,

वंग-वज्जरिसइसयइण-वण्ण-गंध-रस-फस-मणुसगइ-देवगइपाओग्गानुपुब्बी-अगुस्सत्तहुम-उव-  
 पाद-परपाद उस्सास-पससविहायगइ-तस-आदर-प-मत्त-पत्तेयसरीर-सुमग-सुस्सर-आदेव-  
 विमिणुस्सागोद पंथत्ताइयाण विरत्तेर वषो, एत्थ भुवणवर्द्धसणादो । सादासम्-हस्स-उदि  
 अरि-सोग-विण्णिर-सुहासुह-जसकिंति-अमसकिंतीण सांतरे, एगसमएण वि बंधुवरम  
 इंसपादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गानुपुब्बी-ओराडियसरीर-ओराडियसरीरगोवंग-वज्जरिसइ-  
 संघडणार्ण वाइत्थीस पच्चया, ओराडियकमयभोगामावादो । देवगइ-देवगइपाओग्गानुपुब्बी-  
 वेत्थवियसरीर-वेत्थवियसरीरगोवंग-वाइत्थीस पच्चया, वेत्थवियकमयभोगा  
 मावादो । अवसेसाण तेत्थीस पच्चया, पंचमिच्छाणुबंधिषठक्केराडिय-वेत्थविय  
 मित्त-कम्मइयपच्चयाणममावादो । मणुसगइदुगेराडियदुग-वज्जरिसइसंघडणार्ण बंधो  
 मणुसमइसंहुत्तो । देवगइ-वेत्थवियदुगाण देवगइसंहुत्तो । सेससव्वपयणीण देव  
 मणुसगइसंहुत्तो । मणुसगइदुगेराडियदुग-वज्जरिसइसंघडणार्ण देव-भेत्थया सामी ।  
 देवगइ-वेत्थवियदुगार्ण तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसार्ण पयणीण बंधस्त सामी ।

—

समवतुरअसंस्वाण औदारिक व वैक्रियिक शरीरगोपांग वज्जरमसंहमन वर्य गन्ध रस  
 स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्राप्तेयानुपूर्वी अगुस्सत्तहु उपपत्त, परमात्त उच्छवास  
 प्रशस्तविहायोगति अस्स वादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, सुमग सुस्वर, आदेश निर्माण  
 उच्छवांग और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ इनका प्रबलबन्ध  
 देखा जाता है । अस्सा व अस्सा वेत्थनीष हात्थ एति अरति शोक, स्थिर, अस्थिर,  
 सुम अमुम अशक्ति और अयशकीर्तिक्रम आन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे  
 भी इनका बन्धविधाम देखा जाता है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिप्राप्तेयानुपूर्वी, औदारिक शरीर, औदारिकशरीरगो  
 पांग और वज्जरमसंहमनके व्याखीस प्रत्यय हैं क्योंकि, औदारिकअपयोगका  
 अभाव है । देवगति देवगतिप्राप्तेयानुपूर्वी वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक  
 शरीरगोपांगके भी व्याखीस प्रत्यय हैं क्योंकि, यहाँ वैक्रियिकअपयोगका अभाव है । शेष  
 प्रकृतियोंके तत्तात्मीस प्रत्यय हैं क्योंकि, पांच मिष्यात्त अमस्तानुवृत्तिवतुष्क, औदारिक  
 मित्र वैक्रियिकमित्र और कर्मण प्रत्ययोंका मित्रगुणस्थानमें अभाव है ।

मनुष्यगतिविक्रिक, औदारिकविक्रिक और वज्जरमसंहमनका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त  
 होता है । देवगतिविक्रिक और वैक्रियिकविक्रिक बन्ध देवगति संयुक्त होता है । दोष स्व प्रकृ  
 तियोंका बन्ध देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है । मनुष्यगतिविक्रिक, औदारिकविक्रिक व वज्ज  
 रमसंहमनके देव व मारपी सामी हैं । देवगतिविक्रिक और वैक्रियिकविक्रिकके तिर्येक व मनुष्य  
 सामी हैं । दोष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी आर्ये गतिपोंके सम्प्रतिमव्यावृत्ति हैं । वय्याअण



मुपेसु एवंविहमेदविरोहादो । पयडिबंधद्वानिबंधनमेदपदुपायपदमाह—

णवरि विसेसो' सादावेदणीयस्त चक्खुदसणिमगो ॥ ३२१ ॥

सुगममेद ।

असणीसु अमवसिद्धियमगो ॥ ३२२ ॥

पञ्चापावरणीय-अवर्दसपावरणीय-सादासाद् मिच्छत्त-सोत्तसकसाय-अवभोकसाय-अठ  
आउ-अठगह-पंचआदि-ओराठिय-वेठविय-तेजा-कम्माइयसीर-छसद्वान-ओराठिय-वठम्बियमगो-  
धंग-छसंपहण-अण्य-गंअ-रस-आस-अउआणुपुष्वी-अगुल्लुअ-उवआद-अरआद-उत्तास-आह-  
ठन्नेव-ओविहायगह-तस-थावर-आहर-सुहम-अन्नआपञ्चस-पथेय-साहारमसीर-भिराधिर-सुहा-  
सुह-सुभा-दूम-सुस्सर-दुस्सर-आइअ-अपादेअ-असकिंति-अनसकिंति-मिमिअ-भीउप्पागोद-  
पंचतराइयपयडीओ असणीहि अन्नमाभियाओ । उदाराओ अओ पुष्प पच्छ वा ओम्भिय्णो सि  
परिक्खा अति, एत्वेदासि अओदयओम्भेदामाआओ ।

विरोधता विरोधसे रहित है ।

प्रकृतिपोंके बन्धान्धानमिश्रक भेदके प्ररूपणार्थ सूत्र कहते हैं—

परन्तु विरोधता इतनी है कि सातावेदनीयकी प्ररूपणा चक्खुदसनी जीवोंके समान  
है ॥ ३२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असणी जीवोंमें अचोदयप्युच्छेदादिकी प्ररूपणा अमवसिद्धिक जीवोंके समान है  
॥ ३२२ ॥

पांच आभावरणीय और अठ्ठावरणीय साता अ असाता वेदनीय, मिष्यात्त,  
सोत्तह कपाय और सोकपाय आर आयु आर गतिषां पांच आतिषां औदारिक, धैकियिक,  
तैअस अ अमज दाटीर, छह संस्थान औदारिक अ धैकियिक दाटीरपोपांग एह संज्ञन  
अर्थ गण्य रस स्पर्श आर आयुपूर्वी अगुल्लुअ उपमात्, परमात् अच्छयात् अमात्  
अद्योत्त ओ विहायोगतिषां अस स्वावर, आहर, सुहम पर्याप्त अपर्याप्त प्रत्येक अ सापा  
रण दाटीर, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग दुर्मग सुस्वर, दुस्वर आदेय, अमादेय पदा  
धीर्ति, अपदाधीर्ति मिर्माण मीअ अ अंअ गोन भीर पांच अन्तराप ये प्रकृतिषां असणी  
जीवोंके आरा बन्धमाग हैं । उपपत्ते बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युत्पिन्न होता है यह परीक्षा  
पदा नहीं है, क्योंकि, यहाँ अब प्रकृतिषांके बन्ध और उपपत्ते व्युत्पेदका समाव है ।

पंचपात्रपरणीय-चर्मासृजपरणीय-मिच्छत-तेजा-कर्मइयसरीर-वण्य-गंध रस-पस-  
अगुरुमज्जु-विश्वि-सुहसुह-विमिष-पीथागोद-पंचतराह्य-तिरिक्कसमईय बंधो सोदमो ।  
भिरय-देवाठ-भिरय-देवमह-वेठभियसरीर-वेठभियसरीरभगोर्ग-भिरय-देवगहपाभोगात्रुपुष्पी  
उष्वागोद-भगुसाठ-भगुसगहगुगार्ण परेदमो बंधो । पंचर्मासृजपरणीय-सादासाद-सोत्स  
कसाय-यवभोकसाय-यवभादि-भोगातिमसरीर-उसंठाण भोगातिमसरीरभगोर्ग-उसंठाण-तिरि-  
कसात्रुपुष्पी-भादाउम्योय-भोविहायग-तस-भावर-भावर-सुहसु-प-त्रापाग-पतेय-साहरप-  
सरीर-सुमग-दमग-सुस्तर-दुस्तर-भादेम्ब [ अथादेम्ब- ] असकिपि-असकिपीय बंधो सोदय  
प्रेदमो, उदयहा वि बंधविरोह्याभादो । उवचाद-परपाद उस्त्रासां पि सोदय प्रेदमो,  
अपम्यत्तले उदय वि वि बंधुवर्तमादो ।

पंचपात्रपरणीय-चर्मासृजपरणीय-मिच्छत-सोत्सकसाय-मय-हुगुंठ-चउभाउ तेजा-  
कर्मइयसरीर-वण्य-गंध-रस पस-अगुरुमज्जु-उवचाद विमिष-पंचतराह्यार्ण विरितो बंधो,  
पममम्य बंधुवरमायाभादो । सादासाद-सत्तभोकसाय भिरय-भगुस-देवगह-पंचिदियभादि  
वेठभियसरीर-उसंठाण-भोगातिम-वेठभियसरीरभगोर्ग-उसंठाण भिरय-भगुस देवात्रुपुष्पी-पर

पांच इन्द्रावरणीय और इन्द्रावरणीय मिथ्यात्वं ऐश्वर्य व कर्मण हाटीर बर्ण  
गन्ध, रस स्वर्ण अगुरुमज्जु स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण मीनमोत्र पांच  
अन्तराय और तिर्यगातिका अर्थ स्वरूप होता है । नारकयु देवायु नरकगति देवगति  
वैदिकिकहाटीर वैदिकिकहाटीरंपोपांग नरकगति व देवगति प्रायेणानुपूर्वी उच्यताम्  
अनुप्यायु और अनुप्ययतिरिक्क परोक्ष बन्ध होता है । पांच इन्द्रावरणीय साता व असता  
बेहमीय सोदय कयाय भी भोकयाय पांच जातिर्वा भीहारिकहाटीर उह संस्थान बीदा  
रिक्काटीरंपोपांग उह संस्थान तिर्यगात्रुपूर्वी अज्ञाय उद्योत हो विहायोगतिर्वा वस  
स्थावर, वायु, सूक्ष्म पर्याप्त अर्थात् प्रत्येक व साधारण हाटीर, सुमग दुर्मग सुस्व  
दुस्व, भोव [ अथादेम्ब ] अथादीति और अथादीतिरिक्क बन्ध स्वरूप परोक्ष होता है,  
कपौकि, दोर्वा प्रकटीसे मी इक्के बन्धका कोर बिरोध नहीं है । अपघात परघात और  
उच्यतासक्य मी स्वरूप-परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि अपघातकाकर्म उच्यके विना मी  
इक्क बन्ध पाया जाता है ।

पांच इन्द्रावरणीय मी इन्द्रावरणीय मिथ्यात्वं सोदय कयाय मय हुगुंठा  
आर भाउ, ऐश्वर्य व कर्मण हाटीर, बर्ण गन्ध रस स्वर्ण अगुरुमज्जु, उपघात निर्माण  
और पांच अन्तराय मिश्रित बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इक्के बन्धविधायक  
जमाव है । साता व असता बेहमीय सात भोकयाय नरकगति अनुप्ययति देवगति  
वैदिकिकहाटीर, उह संस्थान भीहारिक व वैदिकिक हाटीरंपोपांग,

वायुस्वाप्त-आदावुज्ज्व-दोषिहायगह-तप्त-वावर वादर-सुहृ-म-पञ्चसापञ्चस-पत्तय-साहारणसरीर-  
मिरभिर-सुहृ-सुह-सुमग-रुमग-सुस्तर-दुस्तर-आदेन्ज-अपादेन्ज-असकिचि-अजसकिचि-उच्चा-  
गोदार्थं संतरो बंधो, एगसमएण वि चपुवरमदसपादो । तिरिक्खमइ-तिरिक्खगइपामोग्गाणु  
पुष्वी-भोरुत्थियसरीर-भीचागोदाण बंधो संतर-पिरतरो, सेउ वाउक्कइएसु विरंतरबंधुवत्तादो ।

असन्धीसु पणदात्तीस पणया सप्यपयदीपं, वेउअियसहृग चउविहमण-तिविहवपिभोग  
मान्सासबमामावादो । भवरि गिरय-देवाउअ-गिरय-देवगइ-गिरयगइ-देवगइपामोग्गाणुपुष्वी  
वेउअियसरीर-वेउअियसरीर-बंगोभंगार्णं तेउत्तीस पणया, भोरुत्थियमिस्स-कम्मइयपण्ययाण  
ममावादो । मनुस्स-तिरिक्खाउआणं चोदात्तीस पण्यया, कम्मइयपण्ययामावादो । साइ  
वेदधीय-इत्थि-गुरिसवेद-इस्स-रदि-समचउरससंठाण-पसत्थविहयगइ-विर-सुह-सुमग-सुस्तर-  
आदेन्ज-असकिचीयं बंधो तिगइसहुत्थो, गिरयगइए अमावादो । गिरयाउ-गिरयगइ-गिरयगइ  
पामेत्ताणुपुष्वीयं गिरयगइसंहुत्थो । मनुसाउ-मनुसगइ-मनुसगइपामोग्गाणुपुष्वीयं मनुसगइ  
संहुत्थो । देवाउ-देवगइ-देवगइपामोग्गाणुपुष्वीयं देवगइसंहुत्थो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ

एह सइवम मारकाणुपूर्वी मनुप्पाणुपूर्वी देवाणुपूर्वी परत्ता उच्छवास आदाय उद्योत,  
को विहायोगतिषां तप्त स्यावर, वादर, सुहृ मर्यात्त अपर्वात्त प्रत्येक न साधारण  
शरीर, स्थिर, अस्थिर शुभ मशुभ सुमग दुर्मग सुस्वर, दुस्वर, मत्वेय अमत्वेय,  
पञ्चकीर्ति अपञ्चकीर्ति और उच्छगोत्रक्य सास्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समवेसे  
भी इनका बन्धविधम देखा जाता है । तिर्यंगाति तिर्यगतिमायोग्याणुपूर्वी भीक्षारिकशरीर  
और भीक्षगोत्रक्य बन्ध सास्तर-निरस्तर होता है क्योंकि वेज न वायुकायिक जीवोंमें  
इनका निरस्तर बन्ध पाया जाता है ।

असंखी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके पैताछीय प्रत्यय हैं क्योंकि, उनके वैश्वियकशरीर,  
चार प्रक्षारक्य मज मज्जमय बज्जयोगके विहा तीन प्रक्षारक्य बज्जम योग और मज अमित  
असंखम प्रत्ययोंका अभाव है । विशेषता यह है कि मारकायु देवायु, मरकगति देवगति  
मरकगति न देवगतिमायोग्याणुपूर्वी वैश्वियकशरीर और वैश्वियकशरीरानोपांगक  
पैताछीय प्रत्यय हैं क्योंकि, भीक्षारिकमिअ और कामेज प्रत्ययोंका अभाव है । मनुप्पायु  
और तिर्यगायुके बजाखीय प्रत्यय हैं, क्योंकि, कामेज प्रत्ययका अभाव है ।

सातावेदनीय औषेइ पुदणवेइ हास्य एति समथतुएकसंस्थान प्रशस्तविहवो-  
गति स्थिर, शुभ सुमग सुस्वर, माहेय और पञ्चकीर्तिक्य बन्ध तीन गतिपोंसे संयुक्त  
होता है क्योंकि, इनके साथ मरकगतिके बन्धका अभाव है । मारकायु, मरकगति और  
मरकगतिमायोग्याणुपूर्वीका बन्ध मरकगतिसंयुक्त होता है । मनुप्पायु, मनुप्पगति और  
मनुप्पगतिमायोग्याणुपूर्वीका मनुप्पगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवायु देवगति और देवगति  
मायोग्याणुपूर्वीका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यगायु तिर्यगति, तिर्यगतिमायोग्याणु

तिरिक्छगइपाभोमाण्णुप्पी-यइदिय-वीइदिय-सीइदिय-चउरिदियवादि-वादाडु-मोव-वावर-  
मुहुम-साइरनसरीरणे तिरिक्छगइसंहुतो बंधो । वेउअियसरीर-वेउअियसरीरबंधो  
बंधाण देव विरयगइसंहुतो । नेताठियसरीरभगोवम-मविहमचउसंअण-असंअण-अणअण  
तिरिक्छ-मणुसमइसंहुतो बंधो । अउंसयवेइ-हुंडसठाण अणसरपविहायगइ-हुमम-हुस्सर  
अणदेव-भीचागोशरणे विगइसंहुतो बंधो, देवगइए अमावादो । उ-चागोइस्स दुपइसंहुते,  
विरय तिरिक्छगइए अमावादो । अवसेसणं पयडीअ बंधो चमाइसंहुते ।

तिरिक्छा पेव सप्पी, अण्णवासण्णीअममावादो । बंधअण अरिअ, एकअण्णि  
अण्णविउहादो । पेवबोअेअो वि अरिअ, वंधुवसंमादो । ससेताअीसधुवबंधियवडीए चउ  
अिहो बंधो । सेसण स्यादि नहुवो, पडिक्छवधाणुवसंमादो ।

### आहाराणुवादेण आहारएसु ओधं ॥ ३२३ ॥

एइस्स सुवस्स जवा भोअम्मि परूवणा कदा तवा कयण्णा । पवरि सम्भरअ कम्म-  
इयपअज्जो अकवेयण्णो । चउण्णमाणुप्पीअ बंधो परोदवो । उवघाइस्स सोइया ।

पूर्वी एकेन्द्रिय द्विमित्रय त्रिमित्रय चतुष्टयिन्द्रियजाति माताए उद्योत स्वागत, सुख और  
साधारणशरीरका तिर्यग्गतिसंयुक्त बंध होता है । वैद्विषिकशरीर और वैद्विषिक  
शरीरचयोपांगका दण्ड नजरक गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीरचयोपांग मध्यम  
कार संस्थान कह संवहन और अवर्य गच्छा तिर्यग्गति ब मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता  
है । मनुष्यकमेव हुण्डसंस्थान अमहास्तविहायोगति दुर्मग तुस्वर, अनदेव और मीन-  
योत्रका तीव्र गतिसे संयुक्त होता है क्योंकि इनके साथ देवगतिसे बन्धका अभाव है ।  
उच्छ्रवणात्रका दो गतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वसुधे साय वरक और तिर्य-  
ग्गतिका बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतिसे संयुक्त होता है ।

तिर्यक् जीव ही स्वामी हैं क्योंकि, अन्य गतिसे असेंजी जीवोंका अभाव है ।  
बन्धापान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अग्रात्मका विरोध है । बन्धमुक्त्येव मी नहीं  
है क्योंकि, बन्ध पाया जाता है । सैतालीस हुण्डबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध  
होता है । शेष प्रकृतियोंका सामि ब मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि, इनके प्रतिपक्ष  
अर्थात् अमादि ब मुक्त बन्ध नहीं पाये जाते हैं ।

आहारमार्गानुसार आहारक जीवोंमें ओषके समान प्ररूपणा है ॥ ३२३ ॥

इस सूत्रकी जैसे ओषमें प्ररूपणा की गई है वही प्रकार यहां भी करता चाहिये ।  
विरोधता केवळ इतनी है कि सर्वत्र कार्यय प्रत्ययको कम करमा चाहिये । चार आनु-  
पूर्वियोंका बन्ध परंप्रय होता है । उपधातका स्वाक्षय बन्ध होता है ।

## अणाहारणसु कम्मइयभगो ॥ ३२४ ॥

पंचपात्रावरणीय-छत्रसणावरणीय-असतावेदनीय-वारसकथाय-पुरिसवेद-इत्स-रदि-  
[यरदि] शोग-मय-दुगुह-मनुमगद-पंचिन्नियजादि-ओराटिय-तेजा कम्मइयसरीर समचउरससंस्थान  
ओराटियभगोवंग-वज्जरिसहसंधण-वण-गंध रस-फस मनुमगइयाओगागुपुम्भी-अगुस्वत्तुभ  
उवषाद-परषाद-उत्सास-पसत्थविद्यायगद-सस-वात्त-पञ्च-पत्तेयसरीर-भिराभिर-सुहासुह-सुमग-  
सुस्सर-आदेव-वसकिंति अन्नसकिंति-मिमिणुवागोइ-पचतटाइयपयडीओ तीहि गुमहापेहि पञ्च  
माभिसाधो । एरासिमुदयपुन्वावरकात्तसंधिर्षवोप्पेइपरीक्खा पत्ति, सप्पासिमेम्भ वंचोद-  
दसपादो ।

पंचपात्रावरणीय-चउदसपावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण-गंध-रस-फस-अगुस्व-  
त्तुव-भिराभिर-सुहासुह-मिमिण-पचतटाइयां सोदओ वंचो, वुवोदयवादो । ओराटियसरीर  
समचउरससंस्थान-ओराटियसरीरभगोवंग-वज्जरिसहसंधण-उवषाद-परषाद-उत्सास-पसत्थ-  
विद्यायगद-पत्तेयसरीर-सुस्सरणं परोदओ वंचो, सोदपण पत्त वचविरोहादो । विद्या-पयत्त  
असाहावेदनीय-वारसकथाय-पुरिसवेद-इत्स-रदि-अदि-शोग-मय-दुगुह-सुमग-आदेव-वस-

अनाहारक जीर्णमि कम्मजकययोगियोके समान प्ररूपणा हे ॥ ३२४ ॥

पांच जामावरणीय छत्र वहांनावरणीय असता वेदनीय वात्त कथाय पुदयवेद,  
हास्य एति [अरति] शोक, मय जुगुप्सा मनुष्यगति पंचेन्द्रिय जाति औदारिक, तेजस व  
कर्मज शरीर, समचतुरस्रसंस्थान औदारिकशरीरगोपांग वज्रर्मसंहनन वर्ण, गन्ध रस  
स्पर्श मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुहस्यु उपमात् परपात् उच्छ्वास प्रगल्भाविहावो  
गति वस वात्त, पपात्त मत्सेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, गुम अगुम सुमग सुम्बर,  
आदेय पशुकीर्ति अयशकीर्ति, मिमाण उच्छगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतिषो तीन  
[मिप्यादि, सासत्तुन अचिरतसम्पन्नादि] गुणस्थानो ज्ञात्त वण्यमान है । इन प्रकृतिषोक्त  
उच्छगुच्छेदके पूर्वोपर कालसम्पन्नी वण्यगुच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, सब  
प्रकृतिषोका यहाँ वण्य और उच्छ वेदा जाता है ।

पांच जामावरणीय चार वहांमावरणीय तेजस व कर्मज शरीर, पय गन्ध रस  
स्पर्श अगुहस्यु स्थिर, अस्थिर, गुम अगुम मिमाण और पांच अन्तरायका स्वेत्य  
वण्य होता है क्योंकि, ये सुचोक्ष्यी हैं । औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान औदारिक  
शरीरगोपांग वज्रर्मसंहनन उपपात्त परपात् उच्छ्वास प्रगल्भाविहायोगति मत्सेक-  
शरीर और सुस्वरक परव्य वण्य होता है क्योंकि, स्वेत्यपत्ते यहाँ इनके वण्यका  
विरोध है । निद्रा प्रकला असाता वेदनीय वात्त कथाय पुदयवेद हास्य एति अरति  
शोक, मय, जुगुप्सा, सुमग, आद्य पशुकीर्ति अयशकीर्ति और उच्छगात्रका स्वेत्य





असंजदसम्मादिहीसु भिरंतरो, पडिवक्खपयडिअभागावातो । पंचिदियमादि-ओरात्थियसरीर  
अगोवेग-परपादुस्सास-सस-बादर-अज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिअइहिहिं सार-भिरंतरो, सप  
अकुमारदिदेव-अरूपसु भिरंतर्बभुवत्तातो । विगाहमपीर कथं भिरंतखा ? अ, ससिं पडुअ  
भिरंतर्बभुवत्तातो । सासअसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु भिरंतरो, पडिवक्खपयडिअ  
भावातो । एवमोत्तमियसरीरस्स वि वत्तव्यं ।

मिअइहिस्स वेदात्थिअ, सासअस्स अट्ठसीअ, असंजदसम्मादिहिस्स वेत्थीअ  
अप्पया । मज्झसंग-अज्झसंग-अभागाजुअणीअं अतो मज्झसंगअट्ठतो । ओरात्थि  
सरीर-ओरात्थियसरीरंगोवेगणं मिअइहि-सासअसम्मादिहीसु तिरिअ-अज्झसंगअट्ठतो ।  
असंजदसम्मादिहीसु मज्झसंगअट्ठतो । एवं अज्जरिअइवअरणाअयअसरीरसंअज्जअस्स वि  
वत्तव्यं । उअागोअस्स मिअइहि-सासअसम्मादिहीसु मज्झसंगअट्ठतो, असंजदसम्मा  
दिहीसु देव-अज्झसंगअट्ठतो । सेअणं पयसीअं अतो मिअइहि-सासअसम्मादिहीसु तिरिअ  
अज्झसंगअट्ठतो, एवेअिमअज्जअट्ठे देव-अिरयगणं अभागावातो । असंजदसम्मादिहीसु देव

असंयतसम्यग्दृष्टिओंमें निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धन  
अभाव है । पंचेन्द्रिय आदि भौतिकशरीरोंगोपांग परपात उच्छ्वास अतः बाह्य, पचाय  
और अलेकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्यात्ममें सात्वर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
सनत्कुमारादि देव और नाटकीयोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शंका—विग्रहगतिमें बन्धकी निरन्तरता कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं क्योंकि दृष्टिकी अपेक्षा उसकी निरन्तरताका उपदेश है ।

सासात्वनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है,  
क्योंकि, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धन अभाव है । इसी प्रकार भौतिकशरीरके भी  
कदा आहिये ।

मिथ्यादृष्टिके ठेठालीअ सासात्वनसम्यग्दृष्टिके अट्ठसीअ और असंयतसम्यग्दृष्टिके  
वेत्थीअ अत्यय हैं । अनुप्यगति और अनुप्यगतिआपोत्पाजुअणीअका बन्ध अनुप्यगतिसंयुक्त  
होता है । भौतिकशरीर और भौतिकशरीरोंगोपांगका मिथ्यादृष्टि और सासात्वनसम्य  
ग्दृष्टियोंमें तिपग्गति अ अनुप्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें  
अनुप्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । इसी प्रकार अज्जरयअज्जआपाअशरीरसंअज्जअतं भी कदा  
आहिये । उअागोअका मिथ्यादृष्टि और सासात्वनसम्यग्दृष्टियोंमें अनुप्यगतिसंयुक्त तथा  
असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें अथ अनुप्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध  
मिथ्यादृष्टि और सासात्वनसम्यग्दृष्टियोंमें तिपग्गति और अनुप्यगतिसंयुक्त होता है  
क्योंकि, इनके अयाप्यअज्जअमें देव अ अरक गतिक बन्धन अभाव है । असंयतसम्य

मनुसगप्रसङ्गो, तस्मिन्मार्गं पथाभावाद्दे ।

मनुसग-मनुसगदशाभोगाणुपुत्री भोताडिबसति भोताडिबसरीभोगोपयाम् चउमर  
मिच्छाद्वि-सासमसम्मादिही सामी, देव-भिरयगदभसमदसम्मादिही सामी । एवं वम्भ  
रिसहसंपदपस वि वत्तम् । सेसार्ण पयडीर्ण चउमरमिच्छाद्वि-सासमसम्मादिही-भसंवर  
सम्मादिहिभो सामी । वंयसाणं सुगम । वंययोच्छेदो च सुगमो । पुवर्षधीर्ण वंयो मिच्छाद्विमु  
चउविहो, सासमसम्मादिहि-भसंवरसम्मादिहीमु तिनिहो । सेसार्ण पयडीर्ण सवत्त  
सादि-भसुवो ।

वीचपिदितिय भवेतापुर्षविचउकिरिक्वेद-तिरिक्खगद-चउमपद्व-चउमद्व-तिरिक्ख  
यदशाभोगाणुपुत्री-उज्जोव भपसत्यविहायगद-दुमग-दुस्सर जणादेज-वीचागोदशने दुहव  
पयडीर्ण सुचदे-— अर्षतापुर्षविचउकिरिक्वेदार्ण वंयोदया समं वोच्छिप्पा । दुमगानदेव-  
वीचागोद-तिरिक्खदुगाण पुर्ष वंयो पच्छ उदमो वोच्छिज्जहि । ववसेसार्ण पयडीर्ण  
वंयवोच्छेदो देव, पत्तुदपविरोहणो । अर्षतापुर्षविचउकिरिक्वेद-तिरिक्खसुदुम-दुमगान-  
देज-वीचागोदार्ण वंयो सोदय-परोदवो, उदयहा ॥ वंयविरोहापावदो । सेसार्ण परोदवो

गतिर्योमै देव व मनुष्य गतिस्तं संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, इनमें बन्ध गतिर्योके बन्धक  
अभाव है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी भौतारिकशरीर और भौतारिकशरीरान्गो-  
पानके चारों गतिबोके मिच्छाद्वि व सासात्तसम्मादि, तथा देवगति व वरक-  
गतिके भसंपतसम्मादि स्वामी हैं । इसी प्रकार वज्रवैतसंहवनके भी कहा जायिये ।  
शेष प्रकृतियोंके चारों गतिर्योके मिच्छाद्वि, सासात्तसम्मादि और भसंपतसम्मादि  
स्वामी हैं । बन्धान्नाम सुगम है । बन्धमुच्छेद भी सुगम है । पुवर्षधी प्रकृतियोंका  
बन्ध मिच्छाद्विर्णोंमें चारों प्रकारका होता है । सासात्तसम्मादि और भसंपतसम्मा  
दिर्णोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व भसुव बन्ध  
होता है ।

स्वान्तरुद्धिदय अनन्तापुर्षविचउच्छ, त्वीवैर् तिर्षगति चार संहवन चार  
संख्याय तिर्षगतिप्रायोग्यानुपूर्वी उद्योत अवशास्तविहायोगति पुर्मग दुस्सर, अनदेय  
और नीचगोव इन द्विरुपाय प्रकृतियोंकी प्रकृपा करते हैं— अनन्तापुर्षविचउच्छ और  
स्वकिक्का बन्ध व उदय दोनों साथ व्युच्छिद्य होते हैं । पुर्मग अनदेय नीचगोव और  
तिर्षगतिद्विकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिद्य होता है । शेष प्रकृतियोंका  
केवल बन्धमुच्छेद ही है क्योंकि, यहां उनके उदयका विरोध है । अनन्तापुर्षविचउच्छ,  
त्वीवैर् तिर्षगतिद्वि, पुर्मग अनदेय और नीचगोवका बन्ध स्वीक्य परोक्ष होता है,  
क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है । शेष प्रकृतियोंका परोक्ष बन्ध

पंचो, एस्सुदयामावादो । धीनगिदितिय-अणताणुबधिसउक्कण निरतरो पंचो, अणगसमय  
 पंचसत्तिंसुत्तुत्तदो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-पीचागोदाणं मिच्छाइहीसु सत्तर  
 निरतरो, तेठ-वाउक्कइएसु विग्गहं कउज्जणुप्पण्णाण तरो विग्गहगइए गयानं सत्तमपुब्बिओ  
 विग्गहं कउज्जण विग्गयाणं च निरंतरपपुवत्तमाओ । सासणम्मि सातरो, एगसमएण वि वधु  
 वरमसत्तिंसपाओ । सेसाणं पयहीण बघो सम्भत्य सतरो, सामाविमाओ । पच्चया सुगमा ।  
 तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि उज्जोवाण तिरिक्खगइसत्तुओ । चउसत्तएण चउसपइपाए तिरिक्ख  
 मज्जुसगइसत्तुओ । इत्थिपेदस्स दुगइसत्तुओ, देव-निरयगइमममावाओ । बप्पसत्थविहापगइ  
 हुमग-वुस्सर-अपादेज्ज-पीचागोदाणं पंचो मिच्छाइहिमिह सासणे दुगइसत्तुओ, देव-निरय  
 गइमममावाओ । धीनगिदितिय अणताणुबधिसउक्कण मिच्छाइहिमिह सासणे दुगइसत्तुओ,  
 निरय-देवगइमममावाओ । चउगइमिच्छाइहि-सासणसम्मादिहिणो सामी । पंचत्थाए पच-  
 बोच्छेदत्थाए च सुगम । धुववधीणं पंचो मिच्छाइहिमिह चउत्थिहो । सासणे तिविहो,

होता है क्योंकि, यहां उनका उद्गमभाव है । स्थानप्रतिष्ठय और अनन्तानुबन्धितुष्कका  
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि ये अनेक समयरूप बन्धदाकिते संयुक्त हैं । तिर्पगति तिर्प  
 गतिप्रायोगयानुपूर्वी और भीषणोक्क मिष्पाइएिणों सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,  
 ठेठकायिक और वायुकायिक जीवोंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए, उनमेंसे विग्रहगतिमें  
 गये हुए, तथा सत्तम पृथिवीसे विग्रह करके निकले हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया  
 जाता है । सासादन गुणस्थानमें उनका सात्तर बन्ध हाता है क्योंकि, एक समयसे भी  
 बन्धविग्रामशक्ति देवी जाती है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध सबत्र सात्तर होता है क्योंकि,  
 देसा स्वभाव है । प्रत्यय सुगम है । तिर्पगतिप्रायोगयानुपूर्वी और उद्योतका तिर्पगतिसे  
 संयुक्त बन्ध होता है । बार सस्थान और बार सहननका तिर्पगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त  
 बन्ध होता है । स्रविदका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, यहां उक्त दो गुणस्थानोंमें  
 देव व मरक गतिके बन्धका अभाव है । अग्नास्तविहायोगति भुर्मग बुस्वर, जनदेय और  
 भीषणोक्क बन्ध मिष्पाइएि व सासादनसम्पगइ गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त होता है  
 क्योंकि, देव व मरक गतिके बन्धका अभाव है । स्थानप्रतिष्ठय और अनन्तानुबन्धितुष्कका  
 मिष्पाइएि व सासादनसम्पगइ गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि,  
 मरक व देव गतिके बन्धका अभाव है । बारो गतियोंके मिष्पाइएि और सासादनसम्पगइ  
 स्वामी हैं । बन्धाप्पान व बन्धनुच्छेदस्थान सुगम हैं । धुववधी प्रकृतियोंका बन्ध  
 मिष्पाइएि गुणस्थानमें बारो प्रकारका होता है । सासादन गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध

पुत्राभावात् ।

मिच्छत-वर्तुस्यवेद-वउआदि-हुंइसंस्थान असंपत्तेवद्वस्यपद्वय-आदाव-धावर-मुहुम-  
अपस्वच-साह्वनसरीरणमेगहाभापं वृष्पदे — उद्यातो वधो पुष्यं पञ्च वा वोष्मिन्वो ति  
[विधाय] मिच्छत-वउआदि-धावर-मुहुम-अपस्वचार्थं पृथि, मङ्गमेव वधोव्यवोष्मदेदसवातो ।  
वर्तुस्यवेदस्स पुष्यं वधो पञ्च उद्यातो वोष्मिन्वति, असंपदसम्मादिद्विद्दि उदयवोष्म  
इसगातो । हुंइसंस्थान-असंपत्तेवद्वस्यपद्वय-आदाव-साह्वनसरीरणं वधोवोष्मदेो वेव, उदय  
वोष्मदेो वरिष, जभातस्स यावपुंगमसदसपातो । य च एहासि पयडीम विगहयदीए  
उद्यातो वरिष, वजुवठंमातो । मिच्छतस्स वधो सोदएण, वर्तुस्यवेद-वउआदि-धावर-मुहुम-  
अपस्वचार्थं सोदय-परोदएण, हुंइसंस्थान असंपत्तेवद्वस्यपद्वय-आदाव-साह्वनार्थं परोदएण ।  
मिच्छतस्स वधो विरितो । सेसानं सारो, विरमायावतो । एव्वया मुग्गमा । मिच्छत  
वर्तुस्यवेद-हुंइसंस्थान-असंपत्तेवद्वस्यपद्वय-अप-वत्तार्थं वधो तिरिक्क-ममुसयइसउत्ते । वउ-  
आदि-आदाव-धावर-मुहुम-साह्वनार्थं तिरिक्कगइसउत्ते । मिच्छत-वर्तुस्यवेद-हुंइसंस्थान  
असंपत्तेवद्वस्यपद्वय वउगइमिच्छतइसी सामी । एववि-आदाव-वावरार्थं तिरिक्कमिच्छतइसी

होता है, क्योंकि वहाँ हुंइसंस्थान अभाव है ।

मिच्छात्व वर्तुस्यवेद आर आतिथी हुंइसंस्थान असंपत्तवृत्तादिकसंहनन  
अभाव स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारणशरीर, इन एकस्याम प्रकृतिवर्ती  
प्रकृषका करते हैं— उद्यपसे वन्ध पूर्व या पश्चात् व्युत्पिन्न होता है यह विचार मिच्छात्व  
आर आतिथी स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त प्रकृतिवर्ती नहीं है क्योंकि इनके वन्ध  
और उद्यपका व्युत्पिन्न एक साथ देखा जाता है । वर्तुस्यवेदका पूर्वमे वन्ध और पश्चात्  
वद्वय व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, असंपत्तसम्पत्ति गुणस्थानमे उद्यपका उदयव्युत्पिन्न  
देखा जाता है । हुंइसंस्थान असंपत्तवृत्तादिकसंहनन अभाव और साधारणशरीरका  
केवल वन्धव्युत्पिन्न ही है उदयव्युत्पिन्न नहीं है क्योंकि, अभाव सावपूर्वक देखा जाता  
है । और इन प्रकृतिवर्ती विमहगतिमे उद्यप है नहीं, क्योंकि, वहाँ यह पाया नहीं जाता ।  
मिच्छात्वका वन्ध कोदयसे, वर्तुस्यवेद आर आतिथी स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तका कोदय  
परोदयसे) तथा हुंइसंस्थान असंपत्तवृत्तादिकसंहनन अभाव और साधारणशरीरका  
परोदयसे वन्ध होता है । मिच्छात्वका वन्ध विरत्तर होता है । दोष प्रकृतिवर्ती सत्तर वन्ध  
होता है क्योंकि, उद्यपके वन्धका विषय नहीं है । अत्यय सुगम है । मिच्छात्व वर्तुस्यवेद,  
हुंइसंस्थान असंपत्तवृत्तादिकसंहनन और अपर्याप्तका वन्ध तिर्यमाति व मनुष्य  
पक्षिसे संयुक्त होता है । आर आतिथी आताप स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्यमाति  
संयुक्त वन्ध होता है । मिच्छात्व वर्तुस्यवेद हुंइसंस्थान और असंपत्तवृत्तादिक-  
संहननके चारों प्रकृतिवर्ती मिच्छादि स्थामी हैं । एवेन्द्रिय, आताप और स्थावरके तीन

सामी, निरपराध अमावादी । भीरुदिय-तीरुदिय-अरुदिय-मुहुम-अपराध-साहसपात्र  
तिरिक्क-मनुसा सामी, देव-अरुदिय-अरुदिय बंधाभावादी । बंधाभावादी, एकद्वि  
अरुदियविरोधारी । बंधोच्छेदार्थं सुगमं । मिच्छासर्वो अरुद्वि । सेषाणि सादि-अनुवो ।

साद्वेदपीयस्य अमावादीसु बंधोच्छेदो वेद, उदयोच्छेदाभावादी । सम्यक्  
बंधो सोदय-परोदयो । मिच्छाद्वि-सासवसम्मादिद्वि-असंजदसम्मादिद्विसु सार्तो, पडिक्क  
पयडिक्कपुवत्तमादी । समोमिदि निरुतो, पडिक्कपयडिक्कबंधाभावादी । पञ्चमा सुगमा ।  
अरुदिय समोमिदि कम्मद्वयकययोगपञ्चमो एकद्वि वेद, अण्णिसिमसंमदादी । मिच्छाद्वि-  
सासवसम्मादिद्विसु तिरिक्क-अनुसमद्विसु । असंजदसम्मादिद्विसु देव-अनुसमद्विसु ।  
समोमिसु अगद्विसु । अरुद्विमिच्छाद्वि-सासवसम्मादिद्वि-असंजदसम्मादिद्विसु मनुसम  
केवळिओ च सामी । बंधाभावादी बंधोच्छेदार्थं च सुगमं । सादि-अनुवो बंधो,  
साधादिवादी ।

देवम-वेदविषयसरीर वेदविषयसरीरभंगोर्ग-देवमद्विषययोगानुबन्धी-तिरुदियसामा-  
-

गतिपोंके मिच्छाद्वि स्वामी हैं, क्योंकि, अरुद्विगतिमें इनके बन्धका अभाव है । द्विद्वि  
भीद्वि अरुद्विद्वि, अरुद्वि अपराध और साधारणके विषय और मनुष्य स्वामी हैं  
क्योंकि, वेद व आरुद्विमें इनके बन्धका अभाव है । अरुद्विगत नहीं है क्योंकि एक  
गुणस्थानमें अभावका विरोध है । अरुद्विगतस्थान सुगम है । मिच्छात्वका बन्ध  
कार्य प्रकरका होता है । वेद अरुद्विगति सादि व अनुव बन्ध होता है ।

साद्वेदपीयस्य अमावादी जीवोंमें केवल अरुद्विगत ही है, क्योंकि, वहां वसके  
अरुद्विगत अभाव है । सर्वत्र वसका स्वोदय परोदय बन्ध होता है । मिच्छाद्वि, सासा  
असंजदसम्माद्वि और असंजदसम्माद्वि गुणस्थानमें सामंजस्य बन्ध होता है क्योंकि, वहां प्रति  
पक्ष अरुद्विगति बन्ध पाया जाता है । सयोगकेवळी गुणस्थानमें वसका निरुद्विगति बन्ध होता  
है क्योंकि वहां प्रतिपक्ष अरुद्विगति बन्धका अभाव है । अरुद्वि सुगम है । विरोध इतना है कि  
सयोगकेवळी गुणस्थानमें केवल एक कार्यका उपयोग अरुद्विगति ही है क्योंकि, अरुद्वि अरुद्विगति  
वहां सम्मावना नहीं है । मिच्छाद्वि और सासाअसंजदसम्माद्वि गुणस्थानोंमें तिरुद्विगति  
व मनुष्यगतिमें संयुक्त बन्ध होता है । असंजदसम्माद्विगतिमें वेदगति और मनुष्यगतिसे  
संयुक्त बन्ध होता है । सयोगकेवळी जीवोंमें गतिसंयोगसे रहित बन्ध होता है । वार्त  
गतिपोंके मिच्छाद्वि सासाअसंजदसम्माद्वि और असंजदसम्माद्वि तथा मनुष्यगतिसे  
केवळी स्वामी हैं । अरुद्विगत और अरुद्विगतिस्थान सुगम है । अरुद्वि व अनुव बन्ध  
होता है क्योंकि, ऐसा अभाव है ।

देवगति वैद्विषयसरीर, वैद्विषयसरीरभंगोर्ग देवगतिमायोगानुबन्धी और

मंसंजदसम्मादिद्विजो बन्धमाणाणे पयसीर्ण उच्छेदे — एवमिं परित्तरण बधो । कुरो, सद्य-  
विपात्रो । विरते, एगसमएण वैपुवरमससीए जमावाधो । पच्चया सुगमा । वपरि देवम  
पउक्कस्स बउंसयपच्चजो पारिब । तित्थपरस्स देव-मणुसममसंजुतो । तिरवपरस्स तिरिक्कसमए  
विष्ठा तिगएवसंजदसम्मादिद्विजो समी । सेषार्ण तिरिक्क-मणुस समी । बंधार्ण पंच  
वेदिम्ववहाल व सुगम । सादि-मज्झो बधो, बसुववर्षिताधो ।

एव ब्रह्मसामिच्चिन्मित्रो समतो ।

तीर्थंकर नामकर्म इस ब्रह्मचरसम्यग्दृष्टि जीनों द्वारा ब्रह्मसामि प्रकृतियोंकी प्रकृपणा करते हैं-  
इसका पदेदपसे बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,  
एक समयसे इसके बन्धविग्रामशक्तिको अभाव है । अतएव संगम है । विशेषता इसकी है कि  
इहमस्तित्वतुल्यके नानुसङ्गके अन्तर्गत नहीं है । तीर्थंकर प्रकृतिको देव और मनुष्य पतिसे  
समुक्त बन्ध होता है । तीर्थंकर प्रकृतिके तिर्यग्गतिके बिना तीर्थगतियोंके ब्रह्मचरसम्यग्दृष्टि  
स्वामी हैं । दोष प्रकृतियोंके तिर्यक् व मनुष्य स्वामी हैं । ब्रह्मचर्य और ब्रह्मचर्यभित्त  
स्वाम सुगम हैं । सादि व मज्झ बन्ध होता है क्योंकि वे मज्झबन्धी प्रकृतिवां हैं ।

इस प्रकार ब्रह्मसामिच्चिन्मित्र समोऽयं भूता ।

पारिशिष्ट





# १ वधसामित्तविचय-सुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	ओ सा वधसामित्तविचयो णाम तस्स इमो बुविदो पियेसो भोघेण भादेसेण य ।	१	गंतूण बघो योच्छिञ्जति । एदे बंधा, अवसेसा बंधधा ।	१३
२	भोघेण वधसामित्तविचयस्स योइसब्बीवसमासाणि णाव व्वापि भवति ।	४	७ विहाणिहा-पयसापयसा-पीण- मिद्धि भजताणुबंधि-कोह-माण- माया सोम इणियेव तिरिक्काव तिरिक्काव वडसहाव वडसंम इण-तिरिक्कावपाभोग्गाणु- पुण्वि डओव मयसत्पविहायपदि कुमग वुस्सर-अणावेज्ज-पीणा- गोवाय को बंधो को बंधो ?	३०
३	मिच्छादुही सासणसम्मादुही सम्मामिच्छादुही अंसज्जसम्मा- दुही संज्जदांसज्जदा पमसमेज्जदा अपमसंसज्जदा अपुण्णकरणपइहु उवसमा क्खवा अभियट्ठिवाहर सांपपाइयपइहुउवसमा क्खवा सुहुमसांपपाइयपइहुउवसमा क्खवा उवसतकसायवीपरापछनुमत्था वीथकसायवीपरापछनुमत्था सज्जागिकेवली सज्जोगिकेवली ।	४	८ मिच्छादुही सासणसम्मादुही बंधा । एदे बधा अवसेसा बंधधा ।	३१
४	एदेसि चोइसर्ण जीवसमासाणं पपडिबंधवोच्छेदो क्खव्वा भवति ।	५	९ गिहा पयसाय को बघो को अबघो ?	३५
५	एवण्णं णावाहरणीयाणं वडुण्हं ईससावरणीयायं जससिद्धि वण्णगोइ-एवण्हमंतराहायणं को बंधो को अबघो ?	७	१० मिच्छादुहिपुडुहि जाव अपुण्ण करणपडिहुसुखिसंज्जेसु उव समा क्खवा बंधा । अपुण्णकरण जाय संजेज्जदिम मर्गं गंतूण बंधो योच्छिञ्जति । एदे बधा अवसेसा बंधधा ।	३६
६	मिच्छादिदुप्यदुहि जाव सुहुम सांपपाइयसुखिसंज्जइसु उवसमा क्खवा बंधा । सुहुमसांपपाइय सुखिसंज्जइजाय अरिमसमयं		११ सामावेणीयस्स को बघो को अबघो ?	३८
			१२ मिच्छादुहिपुडुहि जाव सज्जोगि केवलि ति बंधा । सज्जोगि केवलिमजाय अरिमसमयं गंतूण बंधो योच्छिञ्जति । एदे बंधा अवसेसा बंधधा ।	३९
			१३ असावेणीय-अरु-सोग-	

सूत्र संख्या	सूत्र	सूत्र संख्या	सूत्र	सूत्र संख्या
	अधिर-मसुर-मजसकिति- पामाण का बंधो का मरयो ?	४०	२९ मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव मणि पट्टिबत्तरसापराहपपडुडमसमा रावा बंधा । मणिपट्टि बत्तरजाप सेसे संकरजामार्ग गंतूव बंधो पोच्छिउज्जहि । एद बंधा अवसेसा भबंधा ।	५२
१४	मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव पमत्त संज्जा बंधा । एद बंधा अव- सेसा मरयो ।	४१	३० माण मायसज्जणार्थ को बंधो को भबंधो ?	५३
१५	मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव पिरयाड- भिरयगह-एरिदिव-बहदिय-मी हादय थउट्टिवियज्जाह-हुहमठान- अमंपत्तमंपट्टमरीरसंपडुव- - भिरयगहपामागाणुपुडि मत्ताव धापर मुहुम मयज्जत्त माहारम सरीरकामाण का बंधा का भबंधा ?	४२	३१ मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव मणि पट्टिबत्तरसापराहपपडुडमसमा रावा बंधा । मणिपट्टिबत्तरजाप सेसे सेस संकरजामार्ग गंतूव बंधो पोच्छिउज्जहि । एद बंधा अवसेसा भबंधा ।	५४
१६	मिच्छाहट्टि बंधा । एद बंधा मरमसा मरयो ।	४३	३२ सोमसज्जमज्जम को बंधो को भबंधा ?	५५
१७	अयय सत्तापावरणीय-काय- माण माया मांम मणुमगह भारा मिचमरीर भारामिचमरीरभंगो- पग थउट्टिमहपहरपातपकसंय ज्ज-मणुमगहपामागाणुपुडि पामार्थ का बंधा का भबंधा ?	४४	३३ मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव मणि पट्टिबत्तरसापराहपपडुडमसमा रावा बंधा । मणिपट्टि बत्तरजाप अरिमसमय गंतूव बंधो पोच्छिउज्जहि । एद बंधा अवमसा भबंधा ।	५६
१८	मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव अमंज्ज गम्माहट्टि बंधा । एद बंधा अर- रावा भबंधा ।	४५	३४ हउत्त-रदि मय पुगुंछार्थ का बंधा को भबंधो ?	५७
१९	पयवकयात्रावरणीयकाय माण माया मामार्थ का बंधा का भबंधा ?	४६	३५ मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव अणुम- करणपडिउपमसा रावा बंधा । अणुमकरणजाप अरिमसमय गंतूव बंधा पोच्छिउज्जहि । एद बंधा अवमसा भबंधा ।	५८
२०	मिच्छाहट्ठिपडुडि जाव संज्जा गंज्जा बंधा । एद बंधा अव- रावा भबंधा ।	४७	३६ मणुमगहमज्जम का बंधा का भबंधा ?	५९
२१	पुरिगवद वायमंज्जमार्थ का बंधा का भबंधा ?	४८	३७ मिच्छाहट्टि वायमज्जममाहट्टि अमंज्जगम्माहट्टि बंधा । एद बंधा अवसरा भबंधा ।	६०

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३१	देवाउमस्तस्य को बंधो को बंधधो ?	१८	बंधा । अपुण्यकरण्याय संलेखे भागे गंतुं बंधो बोधिछद्मनि । एदे बंधा भवसेसा बंधधा ।	७३
३२	मिच्छाहृदी सासणसम्माहृदी असंज्जसम्माहृदी सज्जसज्जदा पमत्तसज्जदा अपमत्तसज्जदा बंधा । अपमत्तसंज्जदाय संले खदिमार्गं गंतुं बंधो बोधि छद्मनि । एदे बंधा, भवसेसा बंधधा ।	"	३० कदिहि कारण्याहि जीवा तित्थवर णामगोर्द्धं कम्मं वधति ? ३० तत्थ इमेहि सोलसेहि करणेहि जीवा तित्थवरणामगोर्द्धं कम्मं वधति ?	७४
३३	देवगह-पंचिद्विपजादि-वेडविष- तेजा कम्मइयसरीर ममभउरस- छटाण-वेडविपसरीरभगोवग- बन्ध-गंध एस फास-देवगह- पाभोगाणुपुष्पि-मगुदवड्डुब- उबपाद-परपाद उस्सास-पसत्थ विहायगह-सस-बादर-पगज्ज- पचेयसरीर धिर सुम-सुमग- सुस्तर-आदेज्ज निमिज्जामार्ग को बंधो को बंधधो ?	१९	३१ ईसणविसुत्तमाय विषयसंपण- दाय सीमण्वइसु विरविचारदाय आमानपसु अपरिहीयदाय लज उपपडिपुत्तमाय उद्धिसंवेग संपण्वइय ज्ञापामे तथा तदे साहूण पासुअपरिभागदाय साहूणं समाहिसंघारण्याय साहूणं वेजाबन्धजोगसुत्तदाय अरहत मर्णीय बहुसुद्धमर्णीय पबय मर्णीय पबयणवच्छइय पय यण्यभाषणदाय अमिक्खणं अमिक्खणं णाणोवजोगसुत्तदाय इच्छइहि सोलसेहि करणेहि जीवा तित्थवरणामगोर्द्धं कम्मं बंधति ।	७५
३४	मिच्छाहृद्विपुडि जाब अपुण्य- करण्याहउबसमा एवा बंधा । अपुण्यकरण्याय संलेखे भागे गंतुं बंधो बोधिछद्मनि । एदे बंधा भवसेसा बंधधा ।	"	३२ अस्त इधं तित्थवरणामगोर्द्धं कम्मन्स उव्वणं सदेवासुरमाणु- सस्स लोगस्स अक्खणिज्जा पूज णिज्जा भंणिज्जा णमंसणिज्जा पेवाय अम्मतित्थपण मिणा केवळिणो इवति ।	७६
३५	आहारसरीर आहारसरीरभंगो- भंगणामाण को बंधो को बंधधो ?	७०	३३ आदेसेण गविषाणुआदेण पिरय गदीय गेरहपसु पबपाजायरण छवसपायरण-सादासाद-बारस कसाय-पुरिसवेइ हस्स-रदि- अरदि-साय-अय-सुगुला भणुम- गदि-पंचिद्विपजादि-भोपासि-	७७
३६	अपमत्तसज्जदा अपुण्यकरण परहुउबसमा एवा बंधा । अपुण्यकरण्याय संलेखे भागे गंतुं बंधो बोधिछद्मनि । एदे बंधा भवसेसा बंधधा ।	"		
३७	तित्थवरणामस्त को बंधो को बंधधो ?	७३		
३८	असंज्जसम्माहृद्विपुडि जाब अपुण्यकरण्याहउबसमा एवा			

सूत्र सख्या

सूत्र

शुद्ध सूत्र सख्या

सूत्र

शुद्ध

तेजा कम्महयसरीर-समथउरस-  
संदाज-मोराडिपसरीरभंगोबंग  
वरउरिसहसंघट्टज-वण-गंध-  
रस-फलस मणुसगहपाभोग्गाणु-  
पुन्नि-अगुस्सहुप-उबपाण-पर-  
पाण-उस्सास पसत्पविहायपणि  
तस-बादर-परउस-पसेवसरीर-  
पिपापिर-सुहासुह-सुमग-सुस्सर  
मणेरउ जसकिरि-अजसकिरि-  
मिमिपुण्णपोह-पेवंतउपाण  
को बंधो को बंधो ?

४४ मिच्छाद्विप्पहुडि जाव असंज  
सम्मादिही बंधा । एवे बंधा  
अबंधा गरिण ।

४५ विहाविहा-पपसापपसा-वीज-  
गिदिमर्जतापुर्वधिकप-माण-  
माया-सोम-इतिपेह-तिरिक्काउ  
मिरिक्काह-अउसंदाज-अउसंघ  
ट्टज-तिरिक्कागहपाभोग्गाणु-  
पुप्पी-उरउोव-अपसत्पविहाय-  
माह-सुमग-सुस्सर-अणेरउ-  
जीवापोदान को बंधो को  
अबंधो ?

४६ मिच्छाद्विप्पहुडि सासवसम्माद्वि  
बंधा । एवे बंधा अयसेसा  
अबंधा ।

४७ मिच्छास-अनुसयधेद-हुहसंदाज-  
असंपलसंघट्टसरीरसंघट्टज-  
आमास को बंधो वा अबंधो ?

४८ मिच्छाद्विप्पहुडि बंधा । एवे बंधा  
अयससा अबंधा ।

४९ मणरताउअसह ५० बंधा वा  
अबंधा ?

५० मिच्छाद्विप्पहुडि सासवसम्माद्वि  
असंजवसम्माद्वि बंधा । एवे  
बंधा, अयसेसा अबंधा ।

५१ तित्थपरणामकम्मस्स को बंधो  
को अबंधो ?

५२ असंजवसम्माद्वि बंधा । एवे  
बंधा अयसेसा अबंधा ।

५३ एव तिसु उवरिमासु पुडवीसु  
जेवणं ।

५४ अउरपीय-पंचमीय-सुद्वीय  
पुडवीय एव जेवणं । एवरि  
विसेसो तित्थपरं अतिथि ।

५५ सत्तमाय पुडवीय-उरउया पंच  
आपावरपीय-अनुसयधेद-  
सावासाह-वारसकमाव-पुरिस-  
वेह-अस्स-एवि मयि सोम मव-  
पुराण-वीज-विक्काह-मोराडिप  
तेजा-कम्महयसरीर-समथउरस-  
संदाज-मोराडिपसरीरभंगोबंग-  
वरउरिसहसंघट्टज-वण-गंध-  
रस-फलस मणुसगहपाभोग्गाणु-  
पुप्पी-उरउोव-अपसत्पविहाय-  
माह-सुमग-सुस्सर-अणेरउ-  
जीवापोदान को बंधो को  
अबंधो ?

५६ मिच्छाद्विप्पहुडि जाव असं  
जवसम्माद्वि बंधा । एवे बंधा  
अबंधा गरिण ।

५७ विहाविहा-पपसापपसा-वीज-  
गिदि-मर्जतापुर्वधिकप-माण-  
माया-सोम-इतिपेह-तिरिक्का-  
उ-अउसंदाज-अउसंघट्टज-  
मिमिपुण्णपोह-पेवंतउपाण-  
को बंधो को अबंधो ?

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	तिरिक्खगहपाभोगाणुपुष्पी— उज्जोव भण्यसत्त्वविहायगह-भुमग जुस्सर-मणवेरज-वीणागोदायं को बंधो को बंधो ?	१०९	किंति-विमिज उच्छागोद पंचत- रादयण को बंधो को बंधो ?	११२
५७	मिच्छाहृदी सासणसम्माहृदी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धमा ।	"	१४ मिच्छाहृदियुद्धि जाव संज्जा- संज्जा बंधा । एदे बंधा बन्धमा परिय ।	११३
५८	मिच्छत्त-जुंसयवेद-तिरिक्खाउ हुंसंठाण-मसंपत्तसेवहुंसंघण जामाभं को बंधो को बंधो ?	१११	१५ विहाणिहा-पयसापयसा-पीय- मिहि मणसाणुविमोच-माण- माया-सोम-इतिपेदे-तिरिक्खाउ मजुसाउ-तिरिक्खगह-मजुमगह मोउळियसरीर-जडसंघण मोउ ळियसरीरभंगोद-पंचसंघण- तिरिक्खगह-मजुमगहपामो- गाणुपुष्पी-उज्जोव-भण्यसत्त्व- विहायगह-भुमग-जुस्सर-मजा- वेरज-वीणागोदायं को बंधो को बंधो ?	११४
६०	मिच्छाहृदी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धमा ।	"	१६ मिच्छाहृदी सासणसम्माहृदी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धमा ।	"
६१	मजुसगह-मजुसगहपामोमाणु- पुष्पी-उच्छागोदायं को बंधो को बंधो ?	"	१७ मिच्छत्त-जुंसयवेद-भिरपाउ- भिरयगह-परिदिय-वीरिय-वीरि- दिय-जडरिदियमाणि-हुंसंठाण- मसंपत्तसेवहुंसंघण-भिरय- गहपामोमाणुपुष्पि-भादाव- यावर-सुद्धम-अपरजत्त-साहारण सरीरणामाभं को बंधो को बंधो ?	१२३
६२	सम्माभिच्छाहृदी मसंज्जसम्मा- हृदी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धमा ।	११२	१८ मिच्छाहृदी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धमा ।	"
६३	तिरिक्खगहीए तिरिक्खा पंचि दियतिरिक्खा पंचिदियतिरिक्ख पज्जसा पंचिदियतिरिक्खजोपि वीसु पंचपायावरणीय-उरसंजा- वरणीय-साहासाउ-मजुससाय- पुरिसवेद-इस्स-रवि-मउवि-सोग मय-जुगुळा-वेवगाह पंचिदिय- जावि-वेठभिय-सोमा-कम्मइय- सरीर-समजउरससंघण-वेउ- ळियसरीरभंगोदंण वण्ण-रंघ- रत्त-पज्ज-वेवगादिपामोमाणु- पुष्पी-मजुससहुव-उच्छाण-पर- भाउ-उस्मास-पसत्त्वविहायगह- उस-जत्तर-पज्जत्त-पसेयसरीर- [ पिय ] भिर-सुहासुह-भुमग जुस्सर भवेज्ज जसकिंति भज्जस		१९ मिच्छाहृदियुद्धि जाव भसं- ज्जसम्माहृदी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धमा ।	"



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
८२	मिच्छाद्वी बंधा । एदे बंधा अवसेसा बंधा ।	१४३	असकिति-असकिति मिमि- उच्छागोत् पबंधराह्याय को बंधो को बंधो ?	१४२
८३	मणुस्साउमस्स को बंधो को अबंधो ?	१४४	११ मिच्छाद्वीपुद्गुडि जाय असज्ज सम्माविद्दी बंधा । एदे बंधा अबधा परिध ।	"
८४	मिच्छाद्वी सासणसम्माद्वी असज्जसम्माद्वी बंधा । एदे बंधा अवसेसा बंधा ।	"	१२ विहाविहा-ययकापयसा यीय— मिहि अणतापुबधिकोय-मान— माया-सोम इत्थिवेद-अउसंठाण- अउससण्डण अणसत्थिविहायगाह हुमग हुस्सर अणदेउज्ज पीणा- गोत्तण को बंधो को अबंधो ?	१४५
८५	तित्थपरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ?	१४५	१३ मिच्छाद्वी सासणसम्माद्वी बंधा । एदे बंधा अवसेसा अबधा ।	"
८६	असंज्जसम्माद्वी बंधा । एदे बंधा अवसेसा बंधा ।	"	१४ मिच्छस णुत्तमवेद-हुइसंठाण- असपत्तसेवहुत्तमवज्जणयामाण को बंधो को अबंधो ?	१४६
८७	अबधवासिप-वाणवेत्तर-ओदि- सिपदेवाण वेधमंगो । णवदि विसेसो तित्थपर णत्थि ।	१४६	१५ मिच्छाद्वी बंधा । एदे बंधा अवसेसा बंधा ।	"
८८	साहमीसाणकण्ठान्निबन्धवाण वेधमंगो ।	१४७	१६ मणुस्साउमस्स को बंधो को अबंधो ?	१४७
८९	अणकुमारण्यद्वि जाय सद्ध सहस्सारकण्ठवासिपदेवाण एह माय पुइवीय णेरपण मयो ।	१४८	१७ मिच्छाद्वी सासणसम्माद्वी असज्जसम्माद्वी बंधा । एदे बंधा अवसेसा बंधा ।	"
९०	आण्ड जाय णवगेवज्जनिमाण वासिपदेवेसु पण्णाणावरणीय सहसजावरणीय—सावासाह— वारसकसाय-पुरिसवेह इस्स— रवि मय पुगुंठा मणुसगह पबि- सियज्जदि ओरसिय तेजा कम्म- इयसरीर समअउरससंठाण ओरा अियसरीरमगोबेण-अउरसिह- सयण्डण बण्ण-मंधरस फलस— मणुसगइपामोत्तापुपुष्पी अणुस्स अणुव अणधाह परधाह-उस्सास- पसत्थिविहायगाह तथ—आण्ड- पउज्ज पसेपसरीर यिराधिर- सुहासुह सुमग हुस्सर मणेउज्ज		१८ अणुदिस जाय सम्मदुसिहि विमाणवासिपदेवेसु पण्णाणा वरणीय-अउसपणवरणीय सत्ता- साह-वारसकसाय-पुरिसवेह—	१४८





मूल सङ्ख्या

सूत्र

वृष्ट सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

११३ मिच्छन्न-वसुसयवेत्तिरियात्  
निरयगद-परिधि-वीरिधि-सीरि  
धि-वदरिधि-वदरि-कुटसंठान  
असंपन्नसेवदसंपन्न-निरयात्  
पुष्पी आद्यान-पावर-सुद्धम अय-  
उद्ध-साहारवसरीरजामार्ग  
को वंधो को अर्धयो ?

१८०

११४ मिच्छन्नद्वि वंधा । एवे वंधा  
अवसेसा अर्धधा ।

११५ अपञ्चकलापावरणीयकोष —  
मात्र-माया कोम-मनुसगद—  
भोराधियसरीर—भोराधिय—  
सरीरमगोवग-वदरिसहवार  
पाठयजसरीरसंघटन-मनुस  
गदपामोम्यात्पुष्पिवामार्ग को  
बंधो को अर्धयो ?

१८२

११६ मिच्छन्नद्विपुद्गुडि जाव अर्ध-  
अर्धसम्माद्वि वंधा । एवे वंधा  
अवसेसा अर्धधा ।

१८३

११७ पञ्चकलापावरणकोष-मात्र —  
माया-कोमार्ग को वंधो को  
अर्धयो ?

१८४

११८ मिच्छन्नद्विपुद्गुडि जाव संज्ञा  
संज्ञा वंधा । एवे वंधा अय  
सेसा अर्धधा ।

११९ पुरिसवेत्ति कोषसंज्ञकणार्थ को  
बंधो को अर्धयो ?

"

१२ मिच्छन्नद्विपुद्गुडि जाव अणि  
वद्विवात्तरसापराधयपविद्वज  
समा वंधा । अणिवद्वि  
वात्तरसाप सेसे संज्ञकणामार्गे  
यत्तु वंधो बोधियज्जति । एवे  
बंधा अवसेसा अर्धधा ।

"

१२१ मात्र मायासंज्ञकणार्थ को वंधो  
को अर्धयो ?

१८५

१२२ मिच्छन्नद्विपुद्गुडि जाव अणि  
वद्वि वात्तरसाप सेसे संज्ञक  
सेसे मागे यत्तु वंधो  
बोधिज्जति । एवे वंधा  
अवसेसा अर्धधा ।

"

१२३ कामसंज्ञकणार्थ को वंधो को  
अर्धयो ?

"

१२४ मिच्छन्नद्विपुद्गुडि जाव अणि  
वद्वि वात्तरसाप सेसे संज्ञक  
समर्थ यत्तु वंधो बोधिज्जति ।  
एवे वंधा अवसेसा अर्धधा ।

"

१२५ हस्त-वद्वि-अय-युग्मार्थ को  
बंधो को अर्धयो ?

१८६

१२६ मिच्छन्नद्विपुद्गुडि जाव अपुञ्ज  
वरणवद्विवात्तरसाप सेसे संज्ञक  
अपुञ्जवरणार्थ अणिसमर्थ  
यत्तु वंधो बोधिज्जति । एवे  
बंधा अवसेसा अर्धधा ।

१२७ मनुस्सारवस्स को वंधो को  
अर्धयो ?

"

१२८ मिच्छन्नद्वि साधनसम्माद्वि  
अर्धसंज्ञकसम्माद्वि वंधा । एवे  
बंधा अवसेसा अर्धधा ।

"

१२९ वेवाडमस्स को वंधो को  
अर्धयो ?

१८७

१३० मिच्छन्नद्वि साधनसम्माद्वि  
अर्धसंज्ञकसम्माद्वि संज्ञासंज्ञा  
पमससंज्ञा अपमससंज्ञा  
बंधा । अपमससंज्ञा सेसे

सूत्र संख्या

सूत्र

शृष्ट सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

अभिर्म मायं यत्तु बंधो बोधित  
पञ्चि । एते बंधा, भवसेसा  
अर्वा ।

१८७

१११ देवपर-यैविविधजाति-बंधविय  
तेजा कम्मरूपसरीर समचउत्त  
संठाव देवविभवरीरभंगोर्ध्व-  
बन्ध गंध रस फल-वचपह  
पाभोगालुपुष्पी-मगुरबद्धुव-  
उचपात् परमात्-उत्सास-  
पसत्पविहापगह-सस बाहर-  
पञ्च-यत्तेपसरीर धिर-सुम  
सुभग-सुस्सर मनेज्ज विविध  
जामार्थ को बंधो को अर्वा ?

११२ मिच्छारुपिपुह्नि जाव मपुष्प-  
करजपरहुडवसमा कवा बंधा ।  
मपुष्पकरजजाय संसेजे माये  
यत्तु बंधो बोधितपञ्चि । एते  
बंधा, भवसेसा अर्वा ।

१८८

११३ आहारसरीर आहारभंगोर्ध्व-  
जामार्थ को बंधो को  
अर्वा ?

१८९

११४ अप्यमत्तसंज्ञा : मपुष्पकरज  
परहुडवसमा कवा बंधा ।  
मपुष्पकरजजाय संसेजे माये  
यत्तु बंधो बोधितपञ्चि । एते  
बंधा भवसेसा अर्वा ।

११५ तित्थवरत्तामाय को बंधो को  
अर्वा ?

११६ मत्तंजसम्मार्तिपुपुह्नि जाव  
मपुष्पकरजपरहुडवसमा कवा  
बंधा । मपुष्पकरजजाय संसेजे  
माये यत्तु बंधो बोधितपञ्चि ।  
एते बंधा भवसेसा अर्वा ।

॥

११७ कायाजुवाण पुडविकारव  
आडकाइय-बजण्णिकाइय-  
विगोव्जीव-बाहर-सुहुम-  
पञ्चसापञ्चसाव बाहरव  
पुडविकाइयपत्तेपसरीरपञ्चसा  
पञ्चसाव व पविधियनिरिक्क  
अपञ्चसर्मगो ।

१९०

११८ तेजकाइय-बाडकाइय-बाहर-  
सुहुम पञ्चसापञ्चसाव सा  
बन्ध मंगो । जवरि विसेसो  
मनुस्साड मनुसगह मनुसगह  
पाभोगालुपुष्पी-उचपागार्थ  
वत्थि ।

१९१

११९ तसकाइय तसकाइयपञ्चसाव  
मोर्ध्व वेदण्णं जाव तित्थवेरे  
त्ति ।

१९२

१२० जोगालुवदेव ऐवमयजोमि  
ऐववजिजोगि-कयजोगीसु मोर्ध्व  
वेपण्णं जाव तित्थवेरे त्ति ।

१९३

१२१ सत्तावेव्जीवस्स को बंधो को  
अर्वा ? मिच्छारुपिपुह्नि  
जाव उजोगिकेवही बंधा ।  
एते बंधा अर्वा वत्थि ।

१९४

१२२ गोपक्षिपत्तवजोगीणं मनुस  
गहर्मगो ।

१९५

१२३ जवरि विसेसा सादावेव  
जीवस्स मयजोमिर्मगो ।

१९६

१२४ गोपक्षिपमिस्सकायजोगीसु  
ऐववापावरजीव छर्त्तसजावर-  
जीव-असादावेव्जीव-बारस-  
कसाय-पुरिसवेव-वस्स-एवि-  
जट्ठि-सोप मय-जुगुह-ऐवि-  
मियजाति-तेजा-कम्मरूपसरीर-  
समचउत्तसंठाव-बन्ध-गंध

सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	रस-कास-अगुरुबलहृद्य-उब- घात-परघात उस्सास-पसत्य- विहायग-रस-बाध-परजस- पसेयसरीर पिपायिर-सुहासुह सुमग-सुस्तर-भादेज-जस- किशि-विमिय उष्णागो-यं- तपहयार्थ को बंधो को बन्धो ?	२०५	साहारणसरीरनामार्थ को बंधो को बन्धो ?	२१३
१४५	मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी मसंजसम्माहृद्दी बंधा । एदे बंधा अबसेसा बन्ध्या ।	२०६	१५१ मिच्छाहृद्दी बंधा । एदे बंधा अबसेसा बन्ध्या ।	"
१४६	मिहाविहा-पयलापयका र्थिज गिहि-अर्थतापुर्बधिक्षेप माज माया-सोम-इतिपेदे-तिरिक्क- ग-मजुसग-भोपलियसरीर- जडसंठाप भोपलियसरीरमंगो वेग-यं-जसंघडव तिरिक्कग- मजुसग-पामोमगापुष्पी- जज्जो-अपसत्यविहायग- जुमग-जुस्तर मयदेज-वीजा- गोदार्थ को बंधो को बन्धो ?	२०७	१५२ देवग-वेठभियसरीर-वेठविय सरीरमयोयंग-देवग-पामो- मगापुष्पी-तित्यपरमामार्थ को बंधो को बन्धो ?	२१४
१४७	मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी बंधा । एदे बंधा अबसेसा बन्ध्या ।	"	१५३ मसंजसम्माहृद्दी बंधा । एदे बंधा अबसेसा बन्ध्या ।	२१५
१४८	साहवेद्वीयस्स को बंधो को बन्धो ?	२१२	१५४ वेठभियकायजोगीज देवग-प मंगो ।	"
१४९	मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी मसंजसम्माहृद्दी सजोगि केवळी बंधा । एदे बंधा, बन्ध्या बन्ध्या ।	"	१५५ वेठभियमिस्सकायजोगीज देव- ग-मंगो ।	२१६
१५०	मिच्छा-जसंघडवे-तिरि- क्का-मजुसाठ-जुज्जो-विह- सडाप मसंघडवे-जसंघडव- भावा-पावर-जुजुम मज्जस-		१५६ यवति विसेतो वेडुमियासु तिरिक्काठम बन्ध्या मजु- स्साठम बन्ध्या ।	२१७
			१५७ साहारणपजोगि-साहारमिस्स कायजोगीसु पं-जयाजावरवीप जसंघडवे-परीय-सावासा- जुसंजसज-पुरिसेवे-इस्स- एवि-अरवि-सोग-मय-जुगुंठा- वेवाड-वेवग-यं-विदियज- ज-वेठभिय-वेजा-कम्म-पसरीर- समजठरसंजस-वेठभिय- सरीरमयोयंग बन्ध-वीय-रस- कास-देवग-पामोमगापुष्पी- अगुरुबलहृद्य-उबघात-परघात स्सास पसत्यविहायग-रस- बाध-परजस-पसेयसरीर- पिपायिर-सुहासुह-सुमग- सुस्तर-भादेज-जस-किशि- मज्जसकिशि-विमिय-तित्यपर- उष्णागो-यं-जसंघडवे- तपहयार्थ को	

सूत्र सङ्ख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

अविर्मं मायं गंतुं बंधो बाधित्वा  
पुनरिति । एते बंधा, भवसेसा  
अर्था ।

१८७

१११ वेदपरं पश्चिमिपञ्चादि वेदभिव्य  
तेजा कम्महयसरीरं समचउरस  
संठाप्य वेदभिवसरीरं भंगोभंग-  
बन्ध-गंध एव फास-वेदगह  
पाभोगासुपुष्पी-मगुरुवसहुव-  
वचसाह परपाह-उत्सास-  
पसत्पविहापगह-सस-बाह-  
पञ्चस-पसेवसरीरं पिरं सुभ  
सुभग-सुस्तरं मनेरु-विमिश्र  
आमार्थं को बंधो को अर्था ?

११२ मिच्छासहृदियदुष्टिं ज्ञाव अणुप  
करणपरदुष्टवसमा ज्ञाव बंधा ।  
अणुपकरणज्ञाह संश्लेखे माये  
गंतुं बंधो बाधित्वापुनरिति । एते  
बंधा, भवसेसा अर्था ।

१८८

११३ आहारसरीरं आहारगंधाभंग-  
आमार्थं को बंधो को  
अर्था ?

१९१

११४ अप्यमलसंज्ञदा अणुपकरण  
परदुष्टवसमा ज्ञाव बंधा ।  
अणुपकरणज्ञाह संश्लेखे मागे  
गंतुं बंधो बाधित्वापुनरिति । एते  
बंधा भवसेसा अर्था ।

११५ तिर्यक्तरजामाह को बंधो को  
अर्था ?

११६ अर्धज्वरसम्माहृदियदुष्टिं ज्ञाव  
अणुपकरणपरदुष्टवसमा ज्ञाव  
बंधा । अणुपकरणज्ञाह संश्लेखे  
माये गंतुं बंधो बाधित्वापुनरिति ।  
एते बंधा, भवसेसा अर्था ।

॥

११७ कायाशुभावेन पुनरिक्काह  
आहकाहय-वचपपिक्काह-  
विगोषजीव-बाह-सुहुम-  
पञ्चसतापञ्चसार्थं बाह-वच  
पपिक्काहयपसेवसरीरपञ्चस  
पञ्चसार्थं व पश्चिमिनिरिक्का  
अपञ्चसार्थं ।

१९२

११८ तद्वकाहय-बाहकाहय-बाह-  
सुहुम पञ्चसतापञ्चसार्थं सो  
वेव भंगो । अत्रि विसेसो  
मनुस्साह मनुसगह मनुसगह  
पाभोगासुपुष्पी-उत्सापाह  
अति ।

१९३

११९ तसकाहय तसकाहयपञ्चसार्थं  
मोषं वेदवर्धं ज्ञाव तिर्यक्ते  
ति ।

२००

१२० जोगासुभावेन पंचमज्जोपि  
पंचमज्जोपि-अपञ्चोपि-सु  
मोषं ज्ञाव तिर्यक्ते ति ।

२०१

१२१ सत्तावेवपीयस्स को बंधो को  
अर्था ? मिच्छासहृदियदुष्टिं  
ज्ञाव संश्लेखेकेवही ज्ञाव ।  
एते बंधा अर्था अति ।

२०२

१२२ मोरुपिपकमज्जोपि मनुस  
गहभंगो ।

२०३

१२३ अत्रि विसेसो सत्तावेद  
पीयस्स मज्जोपिभंगो ।

२०४

१२४ मोरुपिपमिस्सकापज्जोपि  
पंचमावावरणीयं छन्दसवावर-  
णीय-असादावर्णीय-वारस-  
असाह-पुरिसवेद-इस्स-रु-  
अरि-साय मयं सुहुम-पश्चि-  
मिक्काह तेजा-कम्महयसरीर-  
समचउरससंठाप-बन्ध-गंध-

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सस्या	सूत्र	पृष्ठ	
	रस-कास-मगुदमकहुम-डव- धा-परधा इस्तास-पसतय- विहायग-सस-बावर-पञ्चस- पसेयसरीर-यिरायिर-मुहासुह सुमग-सुस्तर-मादेरज-जस- किसि-मिमिष उचवागोह-यैव- तराहयार् को वैषो को अवषो ?		साहारणसरीरणामार्ण को वैषो को अवषो ?	२१३	
१४५	मिच्छाहृद्दी सासवसम्माहृद्दी मसंजदसम्माहृद्दी वधा । एदे वधा अवसेसा अवधा ।	२०५	१५१ मिच्छाहृद्दी वधा । एदे वधा अवसेसा अवधा ।	"	
१४६	धिरायिरा-पयसापयसा यी- गिदि-मयंतापुर्बधिकोष मान मापा-डोम-इरिपवे-तिरिक्क- ग-मनुसग-ओरुधियसरीर- कडसंठाप मोरुधियसरीरमंगो वंग-यैवसंघडय तिरिक्कग- मनुसग-पामेगापुपुम्भी- उज्जोव-मयसतपविहायग- डुमग-सुस्तर मयवे-ज यीवा- गोदार्ण को वैषो को अवषो ?	२०६	१५२ वेवगह वेडभियसरीर-वेडविप सरीरमंगोवंग वेवगहपामो- गापुपुम्भी-तिरिक्कपणामार्ण को वैषो को अवषो ?	२१४	
१४७	मिच्छाहृद्दी सासवसम्माहृद्दी वधा । एदे वधा अवसेसा अवधा ।		१५३ मसंजदसम्माहृद्दी वधा । एदे वधा अवसेसा अवधा ।	२१५	
१४८	सादेवेद्वीयस्त को वैषो को अवषो ?		१५४ वेडभियकपजोगीर्ण वेवगह मंगो ।	"	
१४९	मिच्छाहृद्दी सासवसम्माहृद्दी मसंजदसम्माहृद्दी सजोगि केवडी वधा । एदे वधा अवधा परिप ।	२०७	१५५ वेडभियमिस्तकपजोगीर्ण वेव गहमंगो ।	२१६	
१५०	मिच्छा-यैवसयवे-तिरि- पका-मनुसा-कपुमादि-हृ- संठाप मसंघसंघेवहृदसंघ- भावा-पावर-सुहुम मयज- स-		१५६ यवरि विसेसो वेवविपासु तिरिक्काडमं जतिप मनु स्ताडमं जतिप ।	२१७	
			१५७ साहारकपजोगि-साहारमिस्त कपजोगीसु पैवपावावरवीय सरीरसपावरवीय-सादास- कपुसंजकप-पुतेसवे-हस्त- एवि-मरवि-सोग-मय-पुगुण- वेवाठ-वेवगह-यैवविपज- वेडभिय-तेजा-कम-यसरीर- समकडरससंठाप-वेडभिय- सरीरमंगोवंग वण-गी-य-रस- पास-वेवगहपामोमापुपुम्भी- मगुदमकहुम-डवपा-परपा- स्तास-पसतयविहायग-स- बावर-पञ्चस-पसेयसरीर- यिरायिर-मुहासुह-सुमग- सुस्तर मादे-ज-जसकिसि- मजसकिसि-मिमिष-तिरिक्क- उचवागोह-यैवतराहयार् को	२१८	

सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या
	बंदो को बर्बंदो ?	२१९	१११ साक्षादेवजीयस्स को बंदो को बर्बंदो ?	२३८
१५८	पमससेवडा बंधा । एदे बंधा बर्बंदा जत्थि ।	२३०	११४ मिच्छाद्वि सासवसम्माद्वि असंखसम्माद्वि सज्जाणि केवसी बंधा । एदे बंधा बर्बंदा जत्थि ।	२३९
१५९	कम्मदपचयजोयीसु पंचपाणा- वरणीय—अहंसपावरणीय— अमहावेदणीय—वारसउसाय- पुरिसवेद इस्स एदि—अएदि— सोण-अय दुर्गुण मनुजयह— पंचिदिपज्जसि मोचयि पेजा- कम्मदपसरीर—समवहरस— संज्ञा मोचयिचसरीरअगोबय असंखरिसइसचइय बन्ध-बंध- रस-अस मनुजयहपाभोगातु- पुष्पी अगुदबड्डुच-अवयत्— परयउसास पसत्पिहापयह वस बहंर पज्जस-पसेपसरीर यिउयिर सुहासुह—सुमग— सुस्सर आदेअ—असकिंति— अससकिंति—मिमिपुष्पावेज पंचेउरपाव को बंधो को बर्बंदो ?	२३२	११७ वेकाह केअविपसरीर—वेड— विपसरीरअयोवग—वेवयह— पाभोगातुपुष्पि—तिपयर— आमाव को बंधो को बर्बंदो ?	२४०
१६०	मिच्छाद्वि सासवसम्माद्वि असंखसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा बर्बंदा जत्थि ।		११८ असंखसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा बर्बंदा जत्थि ।	
१६१	विहापिह-अपकापयसा चीज- मिद्धि-अर्पतातुबंधिओन-आय माता कोय-इतिपवेद-तिरिक्क- गह-असंज्ञा—असंखइय— तिरिक्कयहपाभोगातुपुष्पि— पज्जोअ-अपसत्पिहापयह— सुमग सुस्सर अजादेअ जीवा पोत्ता को बंधो को बर्बंदो ?	२३३	११९ वेकाजुबलेय इतिपवेद-पुरिस वेद-अनुसववेदयसु पचपाणा वरणीय—अहंसपावरणीय— साक्षादेवजीय—अनुसंखइय— पुरिसवेद असकिंति—अयागेह पंचउरपाव को बंधो को बर्बंदो ?	२४१
१६२	मिच्छाद्वि सासवसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा बर्बंदा जत्थि ।	२३४	१२० मिच्छाद्विपुष्पि जाव अयि पट्टिअवसमा कथा बंधा । एदे बंधा, बर्बंदा जत्थि ।	
			१२१ वेदुणी ओय ।	२४२
			१२२ मिहा पयसा व ओय ।	२४३
			१२३ असाक्षादेवजीययोय ।	२४४
			१२४ पक्कणी ओय ।	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७५	मपचकनकापावरणीयमोष ।	२५१	१८६	कोमसंज्ञकणस्स को बंधो को अवधो ?	२६४
१७६	पचकनकापावरणीयमोष ।	२५४	१८७	अभियट्टी उवसमा खवा बंधा । अभियट्टिवावरजाए करिम समय गंतून बंधो बोधियज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ।	२६९
१७७	हस्स रदि आब तित्थपरे ति मोष ।	"	१८८	कसापाजुवादेण कोयकसारसु पंचपापावरणीय- [ अट्टईसपा- वरणीय-सादावेद्वीय ] कहुसंज्ञ कण अलकिति उव्वागोद-यंच पुइयार्ण को बंधो को अवधो ?	
१७८	अवगद्वेद्वयसु पंचपापावर णीय-अट्टईसपावरणीय अल- किति-उव्वागोद-यंचतपइयार्ण को बंधो को अवधो ?	२६४	१८९	मिच्छाहट्ठियज्जुडि आब अवि- यट्टि ति उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा अवंधा जत्थि ।	२७०
१७९	अभियट्टियज्जुडि आब सुइम सांपपइयउवसमा खवा बंधा । सुइमसांपपइयसुसिसंज्ञकजाए करिमसमय गंतून बंधो बोधिय ज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ।	"	१९०	बेहुणी मोष ।	२७२
१८०	सादावेद्वीयस्स को बंधो को अवधो ?	२६५	१९१	आब पचकनकापावरणीयमोष ।	२७४
१८१	अभियट्टियज्जुडि आब सज्जोमि केयली बंधा । सज्जोमिकेयलि अज्जाए करिमसमय गंतून बंधो बोधियज्जदि । एदे बंधा अव- सेसा अवंधा ।		१९२	पुरिसवेदे मोष ।	२७५
१८२	कोमसंज्ञकणस्स को बंधो को अवधो ?	२६६	१९३	हस्स रदि आब तित्थपरे ति मोष ।	"
१८३	अभियट्टी उवसमा खवा बंधा । अभियट्टिवावरजाए सेसेउजे मारे गंतून बंधो बोधियज्जदि । एदे बंधा अवसेसा अवंधा ।	"	१९४	मायकसारसु पंचपापावर णीय-अट्टईसपावरणीय सादा- वेद्वीय सिम्भिसंज्ञकण-अल- किति-उव्वागोद-यंचतपइयार्ण को बंधो को अवधो ?	"
१८४	माय-मायासंज्ञकणार्ण को बंधो को अवधो ?	२६७	१९५	मिच्छाहट्ठियज्जुडि आब अवि- यट्टी उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा अवंधा जत्थि ।	२७६
१८५	अभियट्टी उवसमा खवा बंधा । अभियट्टिवावरजाए सेसे सेसे सेसेउजे मारे गंतून बंधो बोधियज्जदि । एदे बंधा, अव- सेसा अवंधा ।	"	१९६	बेहुणी आब पुरिसवेद-कोय संज्ञकणामोष ।	"
			१९७	हस्स-रदि आब तित्थपरे ति मोष ।	२७७
			१९८	मायकसारसु पंचपापावर णीय अट्टईसपावरणीय सादा- वेद्वीय-सिम्भिसंज्ञकण-अल-	





सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला
२१४	मल्लज्जसम्मन्निद्विप्यहुडि जाव लीजकसापवीररागछुमत्था वधा । एदे वंधा भवंधा गरिय ।	२८८	२१४	सज्जागिकवधी बंधा । सज्जागि केवलिमहाए करिमसमय गंतून बंधा बोधिउज्जदि । एदे वधा भवसेसा भवंधा ।
२१५	संसमोय जाव तित्थयेरे ति । ववरि मल्लज्जसम्मन्निद्विप्यहुडि ति मायिद्वर्ध ।	२८९	२१५	संज्जागुपादेण संज्जेसु मज्ज पज्जसपाणिमंगो ।
२१६	मज्जपज्जवणापीसु पञ्चपाणा वरणीय-अउरसपावरणीय- असकिप्ति उच्चायोद्द पंचसराह- याण को बंधो को भवंधो ?	२९५	२१६	ववरि विसंसा सत्तापेद्वीपमस को बंधो को भवंधो ?
२१७	पमत्तसंज्जव्यहुडि जाव सुहुम सापराहयवसमा कथा बंधा । सुहुमसापराहयसंज्जव्यहुडि करिमसमय गंतून बंधो बोधि- उज्जदि । एदे वधा भवसेसा भवंधा ।	"	२१७	पमत्तसंज्जव्यहुडि जाव सज्जागि केवली बंधा । सज्जागिकवन्नि महाए करिमसमय गंतून बंधो बोधिउज्जदि । एदे वधा भवसेसा भवंधा ।
२१८	विहा पयच्छाण को बंधा को भवंधो ?	"	२१८	सामादयछेदोचमवज्जुहि— सज्जेसु पंचपाणावरणीय— सत्तापेद्वीय सोमसज्जण— असकिप्ति उच्चायोद्द-यवत्तरा- हयाण को बंधो को भवंधो ?
२१९	पमत्तसंज्जव्यहुडि जाव मपुज्ज- करयपइहुडवसमा कथा बंधा । मपुज्जकरयहुड संजेगज्जिर्म मार्ग गंतून बंधो बोधिउज्जदि । एदे वधा भवसेसा भवंधा ।	२९६	२१९	पमत्तसंज्जव्यहुडि जाव भंभि महिउवसमा कथा बंधा । एदे बंधा भवंधा गरिय ।
२२०	सत्तापेद्वीयस्स को बंधो को भवंधो ?	"	२२०	सेसे मज्जपज्जवणाणिमंगो ।
२२१	पमत्तसंज्जव्यहुडि जाव लीण कमायपीपरायछुमत्था बंधा । एदे वंधा भवंधा गरिय ।	"	२२१	परिहारसुदिंसंज्जेसु पंच पाणावरणीय छईसपावरणीय सत्तापेद्वीय-अपुसंज्जण— पुरिसवेह इस्स-एदि-मय- हुहुंछा देववद-पंचिद्विपयादि- येद्विपयसेजा-कम्मवसरीर- समज्जवरससदाण-अउधिय- सरीरमंगोवंग वण्ण गंध-रस- कास-देवाणुपुधि अगुदवज्जुध अवथाव परयापुस्सास-पसत्थ- विहापगह-सस-वाहर पज्जस- पसेयसरीर पिर-सुह-सुमग-
२२२	सेसमोय जाव तित्थयेरे ति । ववरि पमत्तसंज्जव्यहुडि ति मायिद्वर्ध ।	"		
२२३	केवळपापीसु सत्तापेद्वीयस्स का बंधो को भवंधो ?	२९७		



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	पाभोगाणुपुष्पी भगुरुमल्लुम उवपाद्-परपाद्-उवसास- पसत्यविहापगद्-तस-बाद्- परज्ज-यतेयसरीर-यिरापर- सुहासुद् सुमग-सुस्तर भाद्- जसकित्ति मज्जसकित्ति-मिदिणु प्यागोद्-पंचठरायार्ण को बंघो को बंघो ?		णीछलस्विय-अउलस्वियानम सेज्जमेगो ।	३२०
२४६	मिच्छाहट्ठिपुड्डि जाव मय अउसम्माहट्ठि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मयसा ।	३१८	२५९ तेउलस्विय-पम्मसेस्वियसु- पंचवाणावरणीय छर्त्तसणावर- णीय-सात्ताकणीय-अउसंज- अम-पुरिसपेद्-हस्स-रत्ति-मय- बुगुछा देवगाद्-पमिदिणमादि- बडिदिण-सेजा-कम्महयसरीर- समअउरससठाण-वेडिदिण- सरीरमंगअण घण्य-नीच-रस- कास-देवगद्-पाभागाणुपुष्पी- भगुरुमल्लुम-उवपाद्-परपाद् उवसास पसत्यविहापगद्-तस- बाद्-परज्ज-पचयसरीर- यिर-सुह-सुमग-सुस्तर-भादेज्ज असकित्ति मिदिणुप्यागोद्-पंच ठरायार्ण को बंधो को मयसा ?	३१९
२४७	वेदुणी भोष ।	३१७	२६० मिच्छाहट्ठिपुड्डि जाव मय मउसंज्जा बंधा । एदे बंधा मयसा मयसा ।	३१९
२४८	एकदुणी भोष ।	"	२६१ वेदुणी भोष ।	३१७
२४९	मणुस्साउ-देवाउभानं का बंधो को मयसा ?	"	२६२ असत्तवेदुणीयमोष ।	३१९
२५०	मिच्छाहट्ठि सासणसम्माहट्ठि मउसंज्जसम्माहट्ठि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मयसा ।	३१८	२६३ मिच्छल-अणुसयधद् एहिय- आदि दुंदुमंडाण मयपचसेबहु संधरण-भाद्वा-यावरणामाये का बंधो को मयसा ?	३४०
२५१	तिरयपरआमस्म को बंधो को मयसा ?	"	२६४ मिच्छाहट्ठि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मयसा ।	"
२५२	मउसंज्जसम्माहट्ठि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मयसा ।	"	२६५ मयपचकणायावरणीयमोष ।	३४१
२५३	ईमवाणुवादेण अकणुत्तमणि अकणुत्तसणीयमोष वेदुणी आव तिरयरे ति ।	"	२६६ एकककलाणअउककमाये ।	३४३
२५४	णवरि विससे। सात्तावेदुणी यस्स का बंधो को मयसा ?	३१७	२६७ मणुस्साउमस्स भोषमंगा ।	"
२५५	मिच्छाहट्ठिपुड्डि जाव न्नीण कसायवीयणयछुमरया बंधा । एदे बंधा मयसा मयसा ।	"	२६८ देवाउमस्म भापममा ।	३४५
२५६	आहिबंसणी आहिणाणिमंगा ।	"		
२५७	कवककलाण कवकलाणिमंगा ।	"		
२५८	मस्साणुवाद्दण किण्हमस्विय ४ ६. ५१			

सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

२१९ आहारसरीर-आहारसरीरमगो-  
बन्धयामार्ग को बन्धो को  
बन्धयो? अथमत्तसंज्ञा बन्धा।  
एवं बन्धा अबसेसा बन्धयो।

१४४

२२० तिर्यपरूपामार्ग को बन्धो को  
बन्धयो? अथमत्तसंज्ञा बन्धा। एवं  
बन्धा, अबसेसा बन्धयो।

१४५

२२१ पम्भेस्तिरसु मिच्छत्तर्हमो  
अत्यमर्गो।

१४६

२२२ सुक्कभेस्तिरसु जाव तिर्यपरे  
ति मायमर्गो।

"

२२३ जवरि बिसेसो सत्तावेदपीयस्स  
मज्जेगिमर्गो।

१४७

२२४ वेदुमि-एक्कदुमार्गं जवगेवज्ज  
विमाज्जासिपदेवार्थं मर्गो।

"

२२५ मविपायुवत्तं मवसिद्धिपाय  
मोषे।

१४८

२२६ ममवसिद्धिपसु पंचपाणावर-  
णीय-अवर्णसमावरणीय सत्ता-  
सत् मिच्छत्त-सोससकसाप-  
जवभोक्साप-अनुमाज-अनुमाह  
पंचत्राणि-ओराक्षिप-वेदभिय  
तेजा-कम्मइयसरीर-उत्तंदाव-  
ओराक्षिप-वेदभियमर्गो-  
बेग-उत्तंदाव जवण रीय-रस-  
फास-अत्तरिमाज्जुपुणी मगुदय  
सदुव उवपात्-परपाद्-उस्मान  
आहुत्तोज्जोव-वेविहायमह तस-  
वार-वार-सुदुम-पज्जत्त-  
अपज्जत्त पत्त-सत्तावेदसरीर  
पिपपिर-सुहासुह-सुमय-  
सुमय-सुस्सर-सुस्सर-आवेग्ग-

अपावेग्ग असकिप्ति-अज्जत्त-  
किप्ति विमिण पीयुक्कागेह-  
पंचतराहयार्थ को बंधो को  
बन्धयो?

१४९

२२७ सन्धे एवे वथा बन्धया जतिथ।

"

२२८ सम्मत्ताणुवत्तं सम्माद्वीसु  
अवयसम्माद्वीसु आमिणि  
बोद्धियथाविमर्गो।

१५३

२२९ जवरि सादावेदपीयस्स को  
बंधो को बन्धयो?

१५४

२३० अत्तंज्जसम्माविद्विपुड्डि जाव  
सज्जेगिकेवळी बन्धा। सज्जेगि  
केवळिमहाए जरिमसमर्प  
वत्तु बन्धा बोद्धिज्जदि। एवं  
बन्धा, अबसेसा बन्धयो।

"

२३१ वेदवसम्माविद्वीसु पंचपाणा  
वरणीय उद्वसजावरणीय-सत्ता-  
वेदवत्त-अवर्णसंज्ञ-पुरिस्स  
वेद-इस्स-इदि मव दुगुह-वेव  
गणि-वन्धियज्जदि-वेदभिय  
तेजा-कम्मइयसरीर समवत्तत्त  
संज्ञाव वेदभियमर्गोवेग बन्ध-  
गंध-रस-फास-वेवमइयामो-  
गालुपुव्वी मगुदयसदुव उव  
पाद्-परपाद् उस्मान-पसत्त-  
विहायमह तस वत्त-पज्जत्त-  
पत्तेयसरीर पिर-सुम-सुमय-  
सुस्सर आवेग्ग-असकिप्ति  
विमिण तिर्यपरूपकागेह पंच  
तराहयार्थ को बन्धो को बन्धयो?

"

२३२ अत्तंज्जसम्माविद्विपुड्डि जाव  
अवयसमज्जत्त बन्धा। एवं  
बन्धा अबधा जतिथ।

१५५

सूत्र संख्या	सूत्र	शृष्ट सूत्र संख्या	सूत्र	शृष्ट
२३३	असत्त्वावेदणीय वरणीय सोग— अधिर-असुह—अज्ञसकिति— पामाण को बंधो को भर्षयो ?	३३७	२३३ उबसमसम्मादिट्टिपुह्णि पवणाजा वरणीय-अवर्द्धसपावरणीय— असकिति-अवागोद्ध-पवठराह- पार्ण की बंधो को भर्षयो ?	३७३
२८४	असंज्ञसम्मादिट्टिपुह्णि जाव पमत्तसंज्ञा बंधा । एदे बंधा अवसेसा भर्षथा ।	३३८	२९४ असंज्ञसम्मादिट्टिपुह्णि जाव सुद्धमसांपराहयउबसमा बंधा । सुद्धमसांपराहयउबसमदाय अरिमत्तमव गंतुय बंधो बोधिउ- उज्झदि । एदे बंधा, अवसेसा भर्षथा ।	
२८५	अपक्वकखाजावरणीयकोह— माण—माथा छोह मणुस्साह— मणुसगाह—ओपसिपसरीर— ओपसिपसरीरमगोवंग बखरि सहसंपहम—मणुसाणुपुम्भी— पामाण को बंधो को भर्षयो ?	३३९	२९५ विहा-पयकार्य को बंधो को भर्षयो ?	३७४
२८६	असंज्ञसम्मादिट्टि बंधा । एदे बंधा अवसेसा भर्षथा ।		२९६ असंज्ञसम्मादिट्टिपुह्णि जाव अपुण्यकरणउबसमा बंधा । अपुण्यकरणउबसमदाय संज्ञे उज्झिमं भारं गंतुय बंधो बोधिउउज्झदि । एदे बंधा अव- सेसा भर्षथा ।	
२८७	अपक्वकखाजावरणीयकोह माण मायाओमाण को बंधो को भर्षयो ?	३४०	२९७ सात्त्वावेदणीयस्स को बंधो को भर्षयो ?	३७५
२८८	असंज्ञसम्मादिट्टि सज्ज- संज्ञा बंधा । एदे बंधा अव- सेसा भर्षथा ।	"	२९८ असंज्ञसम्मादिट्टिपुह्णि जाव अवसंतकसापवीयरागअदुमत्था बंधा । एदे बंधा भर्षथा गतिथि ।	
२८९	देवाउमस्स को बंधो को भर्षयो ?	३४१	२९९ असत्त्वावेदणीय-अरणि-सोग- अधिर-असुह-अज्ञसकिति— पामाण को बंधो को भर्षयो ?	३७६
२९०	असंज्ञसम्मादिट्टिपुह्णि जाव अप्यमत्तसंज्ञा बंधा । अप्य मत्तदाय संज्ञेके यागे पंतुय बंधो बोधिउउज्झदि । एदे बंधा, अवसेसा भर्षथा ।	"	३०० असंज्ञसम्मादिट्टिपुह्णि जाव पमत्तसंज्ञा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा भर्षथा ।	
२९१	माहारसरीर-माहारसरीरगो- वंगणामाण को बंधो को भर्षयो ?	३४२	३०१ अपक्वकखाजावरणीयमोहि— पाणिमंगो ।	
२९२	अप्यमत्तसंज्ञा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा भर्षथा ।	"	३०२ अवरि जाउव गतिथि ।	३७६

सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र संख्या

मूल

पृष्ठ

- १०३ एकमभयगणपरणवज्जस्म को  
बंधो को बंधो ? ३७३
- १०४ अर्धवज्जस्मादिद्विगुणवज्जस्म को  
[ बंधा ] : एव बंधा अबसेसा  
बंधा ।
- १०५ पुरिस्वेद कोधर्मवज्जस्म को  
बंधो को बंधो ?
- १०६ अर्धवज्जस्मादिद्विगुणवज्जस्म को  
अधिबद्धी उचसमा बंधा । अणि  
पट्टिवज्जस्मको ससे संखेगे  
भागे गंतु बंधो बोधिसज्जि ।  
एव बंधा अबसेसा बंधा ।
- १०७ माजभापसंज्जणार्थ को बंधो  
को बंधो ? ३७८
- १०८ अर्धवज्जस्मादिद्विगुणवज्जस्म को  
अधिबद्धी उचसमा बंधा । अणि  
पट्टिवज्जस्मको ससे संखेगे  
भागे गंतु बंधो बोधिसज्जि । एव बंधा अब  
सेसा बंधा ।
- १०९ कोमर्धवज्जस्म को बंधो को  
बंधो ?
- ११० अर्धवज्जस्मादिद्विगुणवज्जस्म को  
अधिबद्धी उचसमा बंधा । अणि  
पट्टिवज्जस्मको ससे संखेगे  
भागे गंतु बंधो बोधिसज्जि । एव  
बंधा अबसेसा बंधा ।
- १११ इत्थ-रवि-मव बुगुणार्थ को  
बंधो को बंधो ? ३७९
- ११२ अर्धवज्जस्मादिद्विगुणवज्जस्म को  
अपुण्यकरणुबसमभा बंधा ।  
अपुण्यकरणुबसमभा अरिम  
समर्ध गंतु बंधो बोधिसज्जि ।  
एव बंधा, अबसेसा बंधा ।

- ११३ देवगद-वैधियज्जि-वेड-  
भिय-मज्जा-कम्मदयमपीर सम  
अडरममभा-वेडभियमंगो  
बंग वज्ज गंध रम-पत्त देधानु  
पुष्पी-मगुणमज्जुम उचपाद-  
परपाद इत्थमास पमायविहाय  
गदि-सस बाहुर पज्जस पत्तय-  
सपीर पिर सुह सुभग सुत्तर-  
आदिअ विमिअ सिन्धवरभाभा  
को बंधो को बंधो ? ३७९
- ११४ अर्धवज्जस्मादिद्विगुणवज्जस्म को  
अपु-उकरणुबसमभा बंधा ।  
अपुण्यकरणुबसमभा संखेगे  
भागे गंतु बंधो बोधिसज्जि ।  
एव बंधा अबसेसा बंधा । ३८०
- ११५ आहारसपीर आहारसपीरममा-  
बंगार्थ को बंधो को बंधो ? "
- ११६ अण्यमत्तापुण्यकरणुबसमभा बंधा ।  
अपुण्यकरणुबसमभा संखेगे  
भागे गंतु बंधो बोधिस-  
ज्जि । एव बंधा अबसेसा  
बंधा । "
- ११७ सासनसममादिद्वि मदि  
अण्यमत्तापुण्य । "
- ११८ सम्मामिद्विगुणवज्जस्म को ३८३
- ११९ मिद्विगुणवज्जस्म को ३८९
- १२० सज्जिपाणुबाणेन सज्जीसु  
जाव सिन्धपरे सि भोधमयो ।
- १२१ अवरि विसेसो साद्वेद  
वीयस अणुवसज्जिमंगो । ३८७
- १२२ असज्जीसु अणुवसज्जिमंगो । "
- १२३ आहाराणुबाणेन आहारपद  
मोय । ३९
- १२४ अणुआहारपद कम्मदयमंगो । ३९१

## २ अवतरण-गाथा-सूची

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अथवा पत्र क्रमांक	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अथवा पत्र क्रमांक
११	अगुदमकडु उलघाव	१७	२२	पणवण्णा हर वण्णा	२४
१४	भागमकडु साहू	२१४ प्र मा. ३ ३४	९	पण्वरस कसापा पिणु	१८
१७	इतिप-वर्धसपेक्षा	१८	१८	पंवासुहर्षघडणा	१८
२१	उपरिस्तरपंचप पुण	२४ गो. क. ७८	१०	पुण्डुसवसेसाधो	१३
२०	अनुपपन्नगो बंधो	" " ७८७	१	बंधेण व संजोगो	३
१५	जावतरायवसय	१७	३	बंधोवय पुर्ण वा	८
१२	व्यावतरायवसय	१५	५	" "	"
११	वित्पयव-विरय-वैवाहम	१४	८	बंधो बंधविही पुण	"
२३	इस अमुरस इसय	२८ गो. क. ७९२	८	मिच्छत मय गुगुंछा	१२
३	इस अनुविमो सत्तारस	११ " २९३	१३	सत्तावीसेवाधो	१५
७	देवाउ देवकडकडहार	"	१४	सत्तताळ पुवाधो	१६
४	पकवयमामिसविही	८	१९	सांवरविमारेण व	१९

## ३ न्यायोक्तियां

क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ
१	अहा उहेसो तहा विहेसो ति आपावकडुमोयेजे ति उत।	४	इति हो वि जण अविर्लविर्लण विहेगमणयस्स आपापावकडुहार विरोहामावाहो।	१
२	परस्ति न तद् दयमतिर्कण्य वसत			



४ ग्रन्थोल्लेख

## १ क्षमायिपादक

इमावपाहसुतत्वं सुत विनामसि सि इतं सत्त्वं विनामसि सि । ५१

## २. वर्णिसूत्र

सुखिमुत्तमप्राप्यमुपपत्तेः पञ्चमे पयडीपमुपपाद्यते बहुवर्ग  
प्राप्त्यर्थं सासपमम्मादिभिर्हि उदयचोष्टेऽस्मृतामात्रा ।

२ महाकर्मपुरुतिप्राभृत

[illegible]

## ४ व्याकरणसूत्र

एष उच्यते सामानां हि सुतंज आदिपुत्रीय कथनकारणम् । १०

#### ५. सद्यः प्रस्तावः

मयमत्तदाय लंकाग्रेषु मातासु मयेसु देवाग्रमदन यथो बोधिगुणानि सि  
केसु वि मुत्तपोष्यसु ब्रह्ममाह । १५

## ५ पारिभाषिक शब्दसूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अक्षतमिष्यात्	२०
अग्निसंयुक्त	८	अतिथार	८९
अगुल्कपु	१	अप्यात	८११
अक्षरपी	३१८	अपुष	८
		अवस्तालवर्धी	९

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अमरित	३	अप्सर्यामिक	२०५
अमादिक	८	असंख्यातकर्पायुष्क	११९
अमाद्वेप	९	असंखी	३८७
अमाहारक	३९१	असंभाव्यसुपाटिकासंहमन	१०
अमिहृषिकरुच	४	असंयत	३१९
अनुमाप बन्ध	२	असंयतसम्पन्निधि	४
अनेकान्त	१४५	असंयम	२, १९
अन्तर	६३	असंयम प्रत्यय	२५
अन्तरकरण	५३	असाताद्वन्द्वक	२४२, २४४
अन्तराय	१०	अस्थिर	१०
अपगतवेद	२६८, २६९		
अपमान्त	९	आ	
अपूर्वकरण	४	आचार्य	७२, ७३
अप्यायिक	१९२	आलाप	९, २००
अप्रत्यय	८	आद्वेप	११
अप्रत्याख्यानाद्वन्द्वक	३५१, ३७४	आदेश	९३
अप्रमत्तसंयत	४	आनुपूर्वी	९
अमम्पसिद्धिक	३५९	आमिनिबोधिकाज्ञानी	२८९
अमिषेप	१	आम्यन्तर तप	८९
अमीक्ष्य अमीक्ष्यज्ञानोपयोगयुक्तता	७९, ९१	आवक्ष्यक	८४
अयहाक्रीति	९	आवक्ष्यकपरिहर्निता	७९, ८३
अयोगिकेवली	४	आहारक	३९०
अरति	१०	आहारककापयोगी	२२९
अरहन्त	८९	आहारकमिषकापयोगी	"
अरहन्तमक्ति	७९, ८९	आहारकरादौपक्षिक	९
अर्चना	९८		
अर्थापत्ति	३७४	इ	
अर्धनाराचर्महमन	१०	इन्द्रियासंयम	३१
अर्पणासूत्र	१९९, १९९, २००	उ	
अर्पित	५	उच्छ्वास	११
अर्धमि	२६४	उच्छ्वास	१०
अर्धमिज्ञानी	२८९	उत्तरमिहृषिकरुच	२
अर्धमिदर्शनी	३१९	उत्तर प्रत्यय	२०
अध्यागाहमूलप्रकृतिबंध	३	उपोत	९, २००
अनुम	१०	उपमात	१०

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अपशमक	२३२	अपक	२१५
अपशमसम्प्रादित्ति	३७२	आधिकसम्प्रादित्ति	३१३
अपशान्तकपाय	४	हीनकपाय	४
अपसंहार	५७		
ए		ग	
एक एक मूलमकृतिबन्ध	२	यतिसंयुक्त	८
एकस्यामद्वन्द्वक	२७४	गीत	१
एकस्यानिक	२४९	घ	
एकान्तमित्यात्म	२	कल्लुवशांती	३१८
एकेन्द्रिय	९	कलुटिमित्र	९
ऐ		कारिबधिनय	८ ८१
देन्द्रध्वज	१२	कर्मिस्त	९
झी		ख	
झीवृत्तिककपायोपी	२ ३	जीवसमाप्त	४
झीवृत्तिकमित्रकपायभागी	३०५	जीवस्याप्त	५
झीवृत्तिकहाटीर	१०	कुगुप्ता	१
झीवृत्तिकहाटीरगोपांग		कानधिय	८
क		कानावरणीय	१
कन्दरवृक्ष	१२	क्योतिपी	१४१
कपाय	३ १९	त	
कपायमत्तय	२१ ३५	तिर्बगायु	९
कपोतसङ्घा	३२ ३३२	तिर्यगाति	११
कर्ममित्रकपायभागी	१३९	तिर्थक	१२९
कामगहाटीर	१	तीर्थ	९२
कौस्तुभसंहार	३३	तीर्थकर	११ ७२ ७३
कृति	२	तीर्थकरजामयोऽर्थकर्म	७४, ७८
कृष्णध्वजा	३२	तीर्थकरसङ्गतकर्मिक	३३२
केवळ	२३४	तेज	२००
कवचहानी	२९३	तेजकायिक	१९२
कवचहानी	३१९	तेजाखेदना	३३३
कवचसंहानी	३१९	तेजसहाटीर	१०
कवचसंहानी	३१९	तस	११
कवचसंहानी	३१९	नीमिय	९

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
द		मिरस्तबन्धप्रकृति	१७
दर्शनविनय	८०	निर्माण	१०
दर्शनविधुसता	७७	नीचगोच	२
दर्शनमापरणीय	१०	मीछसेदया	३२० ३३६
दुर्मग	९	मैगमनय	६
दुस्वर	१०		
देवमति	९		
देवामु	"	पद्मसेदया	३३३, ३४५
देशप्रती	२५५, ३११	परमात	१०
द्रव्यसुत	९१	पछिआरुमिरसयत	३०३
द्रव्यार्थिकमय	३	परेन्ध	७
द्रिस्वामिद्वन्द्वक	२७४	पर्याप्त	११
द्रिस्वामी	२७५, २७६	पर्याय	५, ३
द्विम्बिप	९	पर्यापार्थिकमय	३ ७८
		पंचेन्द्रियजाति	११
धर्म	९३	पंचेन्द्रियतिर्यक	११२
धुब	८	पंचेन्द्रियतिर्यकमपर्याप्त	१२७
धुबबन्ध	१७	पंचेन्द्रियतिर्यकपर्याप्त	११३
धुबबन्धमकृति	"	पंचेन्द्रियतिर्यकपोनिमती	"
धुबबन्धी	"	पुरुषवेद	१०
		पुरुषवेदवृष्टक	२७५
		पृथिवीकपिक	१९३
न		प्रकृतिबन्ध	२, ७
नपुंसकवेद	१०	प्रकृतिबन्धमुच्छेद	५
नर्मसब	९३	प्रकृतिस्तमुत्पतिना	७
नरकगति	९	प्रकृतिस्थानबन्ध	३
नारकामु	"	प्रकला	१०
नापकसंज्ञाम	१०	प्रकलप्रकला	९
निगोचजीव	१९९	प्रतिष्ठाप्रथ	८३ ८४
निद्रा	१०	प्रत्यक्षाली	५७
निद्रावृष्टक	२७४	प्रत्ययविधि	८
निद्रानिद्रा	९	प्रत्याख्यान	८३ ८५
निरतिआरता	८९	प्रत्याख्यामवृष्टक	२७४
निरस्त	८	प्रत्याख्यामापरण	९
निरस्तबन्ध	१७	प्रत्यासृति	३

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
प्रत्येकशरीर	१०	म	
प्रवेदावगच्छ	२	मतिमहाती	२७९
प्रमत्तसंयत	४	मनापर्यवहारी	२९५
प्रमोक्ष	६	मनुष्यत्रयार्पाप्त	१३
प्रयोजन	१	मनुष्यमति	११
प्रवचन	७२, ७३, ९	मनुष्यमी	१३
प्रवचनप्रमाणना	७९, ९१	मनुष्यपर्याप्त	"
प्रवचनमिति	७९, ९०	मनुष्यायु	११
प्रवचनप्रत्यक्षता	"	महाकर्मकृतिप्राप्त	९
प्रान्वर्तकम	२१	महामह	२२
प्रानुपपत्तिप्रामता	७९, ८०	महामती	२५५, २५६
व		मातृवृष्टक	२७५
वन्द्य	२, ३, ८	मार्गीयात्पान	८
वन्द्यक	२	मिथ्यात्व	२, ९, १९
वन्द्यम	"	मिथ्यावृष्टि	४, ३८९
वन्द्यमीय	"	मूत्रमकृतिवन्ध	२
वन्द्यविधान	"	मूत्रप्रत्यय	२
वन्द्यविधि	८	य	
वन्द्यधुक्के	५	वयाववातसंयत	३९
वन्द्यत्वमित्त्वविषय	३	वयावकितप	७९, ८९
वन्द्याभ्यास	८	वरादीति	११
वहुपुत्र	७९, ७३, ८९	वोता	२, २
वहुपुत्रमक्ति	७९, ८९	वोताप्रत्यय	२१
वात्सर	११	र	
वाक्प्रत्यय	८९	रति	१०
य		रस	"
मय	१	उ	
मयमवासी	१४९	सन्धि	८९
मयसिद्धि	१५८	सन्धिसंवेगसम्प्रदा	७९, ८९
मैग	१७१	मेहता	१५९
मावधुत	९१	मोमवृष्टक	१७९
मुत्रगात्रवन्ध	२		

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
ब्रह्मापराधसंहार	१०	भुतमहानी	२७९
ब्रह्मपराधसंहार	"	भुतकेवली	५७
बनस्पतिकायिक	१९९	भुतहानी	२८६
बन्धना	८९, ८४, ९९		
बर्गधा	२	स	
बर्ग	१०	समता	८६, ८४
बालव्यपार	१४६	समाधि	८८
बायुधायिक	१९९	सम्बन्ध	१ २
बिम्बगति	१९०	सम्बन्ध	३३३
बिम्ब	८०	सम्पत्तिप्रपाद	४ ३८३
बिम्बसम्बन्धता	७९, ८०	सपोगकेवली	४
बिम्बितमिम्बान्न	१०	सर्वतोमद्र	९२
बिम्बगह्वरी	२७९	सरपातबर्गयुक्त	११६
बिरति	८९	संकी	३८६
बिहायोगति	१०	संयत्न	१०
बेवृक्तसम्बन्ध	"	संयत	२९८
बेवृक्तसम्बन्ध	३३४	सयतासंयत	४ ३१०
बेवृता	२	संवेग	८६
बेवृतीय	११	संस्थान	१०
बैकिकिककाययोमी	२१५, २१६	सादिक	८
बैकिकिकशरीर	९	साधारण	९
बैकिकिकशरीरगोपांग	"	साधु	८७ २६४
बैकिकिकमिम्बान्न	२०	साधुसमाधि	७९, ८८
बैकिकिक	८८	साम्तर	७
बैकिकिकसाधुयुक्तता	७९, ८८	साम्तर निरन्तर	८
बैकिकिक	१०८	साम्तरसम्बन्ध	१०
बैकिकिक	८९	सामायिककेवलीपस्यापनशुद्धिसंयत	२९८
बैकिकिक	८९	सासाधनसम्बन्ध	४, ३८०
शु		सांशयिकमिम्बान्न	२०
शील	८९	सुभग	११
शीलवतेषु निरतिबारता	७९, ८९	सुस्वर	१०
शुद्धसेव्या	३४६	सूत्र	९
शुभ	१०	सूत्रसाधनप्राप्तिक	४
शोक	"	सूत्रसाधनप्राप्तिकसंयत	३०८
		सूत्र	५७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
वलय	८३, ८४	स्वामित्व	८
वत्पात्रपुष्टि	९	स्वामित्व	९
क्रीडा	१०	स्वोदय	९
वभाषण	९	स्वोदय-यरोदय	९
विमतिवन्ध	९		
विभर	१०	ह	
वर्ग	१०	हास्य	१०



भय  
 भयभयानी  
 भयभयिनिधि  
 भय  
 भयभुत  
 भयभयभय

